Bihar School Examination Board (BSEB)

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वैद्यनाथं नमस्कृत्य कार्यसिद्धिदपुस्तकम् ।
लक्ष्यबिहारनाम्नेदमभ्यर्थिभ्यः समर्प्यते।।

लक्ष्य बिहार

S-TET

माध्यमिक (पेपर I, वर्ग- 9 से 10) **TGT**

उच्चमाध्यमिक (पेपर II, वर्ग -11 से 12) **PGT**

लेखक
सर्वज्ञभूषण

सह-लेखिका
सुमन सिंह

- **पुस्तक का नाम–** लक्ष्य बिहार
- **लेखक एवं सम्पादक -** सर्वज्ञभूषण
- **प्रकाशनाधिकारी संस्था**
  संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
  59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
  (कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
  email-Sanskritganga@gmail.com
- **मुद्रक-** एकेडमी प्रेस दारागञ्ज प्रयागराज
- मुख्यवितरक
  राजू पुस्तक केन्द्र
  अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
  मो० 9453460552, www.bookpaper.in
- पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–
  Mob. : 8004545095
  8004545096
- **अक्षर संयोजक- संदीप कुमार, यश कुमार**
- **पृष्ठ विन्यास- नितिन कुमार**
  संस्कृतगंगा प्रयागराज

- **© सर्वाधिकार सुरक्षित लेखकाधीन**

- प्रथमसंस्करण – 14 फरवरी, 2024
  (वसन्तपञ्चमी सरस्वतीपूजनम्)
- **मूल्य – ₹ 475/-** (चार सौ पचहत्तर रुपये मात्र)

- **वैधानिक चेतावनी–**
- लेखक या सम्पादक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक की कोई भी सामग्री किसी भी माध्यम से प्रकाशित या उपयोग करने की अनुमति नहीं होगी,
- इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गयी है, फिर भी किसी भी त्रुटि के लिए प्रकाशक व लेखक जिम्मेदार नहीं होंगे।
- किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र केवल प्रयागराज ही होगा।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, प्रयागराज
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2460638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज - 8004545096
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल (M.P)
35. ज्ञानगंगा, राँची, झारखण्ड

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रियसंस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय।

- मैं हर्षित हूँ यह सोचकर कि संस्कृत जगत् के कई छात्र BPSC TRE-1 एवं TRE-2 की परीक्षा में सफल होकर बिहार राज्य में शिक्षक हो पा चुके हैं। इसी परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए इस पुस्तक को लिखने की हमें प्रेरणा मिली।
- TRE-2 की परीक्षा में कई छात्र बिहार में आवेदन नहीं कर पाये थे। इसबार सभी को अवसर मिला है, अतः यह मौका हाथ से निकलने न पाए, ऐसा हम सभी का प्रयास होना चाहिए। इसीलिए आपकी सफलता के लिए एक सार्थक प्रयास **'लक्ष्य बिहार'** की इस पुस्तक के माध्यम से किया जा रहा है।
- बिहार S-TET का पाठ्यक्रम 15 यूनिट में बँटा है इसीलिए इस पुस्तक में भी 15 अध्याय बनाये गए हैं। प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में ग्रन्थ का सामान्य-परिचय, कवि-परिचय एवं अन्त में बहुविकल्पीय-प्रश्न जोड़े गए हैं। विगतवर्षों के बिहार S-TET एवं BPSC के प्रश्नपत्र भी पुस्तक में दिए गए हैं।
- इस पुस्तक को बिहार S-TET के पाठ्यक्रम के आधार पर लिखा गया है परन्तु बिहार TRE-3 की परीक्षा के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी; ऐसा विश्वास है।
- इस पुस्तक का लेखन बड़े ही सौम्य मन, अत्यन्त स्नेह, आप सबकी प्रेरणा एवं सरस्वती को साक्षी मानकर किया गया है, इसीलिए मैं मानता हूँ कि यह पुस्तक आपके हाथ में भाग्यरेखा की तरह 'सफलरेखा' साबित होगी, क्योंकि इसमें **सुमन** की सौम्यता, **नेहा** का स्नेह, **साक्षी** का समर्पण, **प्रेरणा** की अन्तःप्रेरणा एवं **सुरेखा** का सफल मार्गदर्शन सम्मिलित है; साथ ही इस पुस्तक-लेखन में सहयोगी रहे सभी साथियों को साधुवाद; विशेषकर- **शालिनी, बन्दना, अंकिता, पूजा बाजपेयी, अमितसामवेदी, दीपक शास्त्री, ब्रह्मा जी द्विवेदी, मस्तराम, एवं दीपू जी** को।
- प्रकाशकीय कार्यों के सहयोगी एवं मुख्य वितरक **राजू पुस्तक केन्द्र, अल्लापुर, प्रयागराज** के स्वामी श्री राजकुमार गुप्ता (राजू) भी धन्यवाद के पात्र हैं। यह प्रयास किया गया है कि पुस्तक पूर्णरूपेण शुद्ध हो, फिर भी प्रमाद या अज्ञानवशात् कुत्रचित् मुद्रणदोष या गलत उत्तर छप गया हो तो कृपया हमें सूचित करें - **9839852033, 8004545095**

दिनाङ्क

14 फरवरी 2024 (वसन्तपञ्चमी)

भवदीय

सर्वज्ञभूषण

निदेशक

संस्कृतगङ्गा, प्रयागराज

माध्यमिक (पेपर–I) एवं उच्चमाध्यमिक (पेपर–II) S-TET 2024

संस्कृत पाठ्यक्रम

100 Marks

♦ **Unit-1. व्याकरण**

लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराजाचार्य)

(क) संज्ञा प्रकरण

(ख) सन्धि प्रकरण

♦ **Unit-2. उपजीव्यकाव्य का सामान्य परिचय**

पाठ्य अंश-रामायण, महाभारत, पुराण

♦ **Unit-3. संस्कृत साहित्य का इतिहास**

महाकाव्य, नाटक, गद्य, कथासाहित्य, गीतिकाव्य और काव्यशास्त्र

♦ **Unit-4. पद्य-साहित्य**

मेघदूतम् (पूर्वमेघ) - कालिदास

रघुवंशम् (द्वितीय सर्ग) - कालिदास

किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) - भारवि

♦ **Unit-5.** वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी-भट्टोजिदीक्षित

पाठ्यांश-कारक प्रकरण, वाच्य परिवर्तन

♦ **Unit-6. गद्य-साहित्य**

कादम्बरी (शुकनासोपदेश)-बाणभट्ट

♦ **Unit- 7. गद्य-साहित्य**

शिवराजविजय-पण्डित अम्बिकादत्तव्यास

♦ **Unit- 8. नाट्य-साहित्य**

अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कालिदास

♦ **Unit- 9. नाट्य-साहित्य**

स्वप्नवासवदत्तम्-भास

♦ **Unit-10. (i) ऋग्वेद संहिता पाठ्यांश**

(i) अग्निसूक्त (ii) सवितृसूक्त (iii) विष्णुसूक्त (iv) इन्द्रसूक्त (v) उषस्सूक्त (vi) सूर्यसूक्त

(ii) कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय)

♦ **Unit- 11. व्याकरण**

(क) शब्दरूप

राम, लता, साधु, फल (नपु.), नदी, मति, मधु, राजन् , वारि, वधू, गौ, मातृ, पितृ, युष्मद् , अस्मद् (तीनों लिङ्गों में) तत् , किम्, सर्व, अदस् , संख्यावाचक शब्दों के रूप

(ख) धातुरूप- (पाँच लकारों में)

भू, गम् , सेव् , हृ, लभ् , रम् , शीङ् , श्रु, स्था, दृश् , पठ् , दा, कृ।

♦ **Unit- 12. वैदिक साहित्य का इतिहास**

वेदों का काल, वेदों की विषय-वस्तु का संक्षिप्त परिचय, संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदाङ्गों का सामान्य परिचय।

♦ **Unit- 13 व्याकरण**

लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराज)

1. माहेश्वरसूत्र, प्रत्याहार
2. समास प्रकरण

♦ **Unit- 14. काव्यदीपिका** -श्री कान्तिचन्द्रभट्टाचार्य

काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यभेद, शब्द-शक्ति, काव्यगुण, काव्य-रीति।

♦ **Unit- 15. (i) अलङ्कार-परिचय**

अनुप्रास, यमक, उपमा, अनन्वय, रूपक, सन्देह, अपह्नुति, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, दीपक, दृष्टान्त, व्यतिरेक, समासोक्ति, अप्रस्तुतप्रशंसा, अर्थान्तरन्यास, विभावना, विशेषोक्ति, संकर तथा संसृष्टि।

(ii) छन्द-परिचय

अनुष्टुप् , आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, वसन्ततिलका, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, हरिणी, शार्दूलविक्रीडित एवं स्रग्धरा।

विषयानुक्रमणी

Unit-1 **लघुसिद्धान्तकौमुदी-** संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण 07

Unit-2 **उपजीव्यकाव्य का सामान्य परिचय-** रामायण, महाभारत, पुराण 42

Unit-3 **संस्कृतसाहित्य का इतिहास** 74

महाकाव्य, नाटक, गद्य, कथासाहित्य, गीतिकाव्य, काव्यशास्त्र

Unit-4 **पद्य-साहित्य** मेघदूतम् (पूर्वमेघ), रघुवंशम् (द्वितीय सर्ग) 103

Unit-5 **वैयाकरण** सिद्धान्तकौमुदी-कारक प्रकरण, वाच्यपरिवर्तन 136

Unit-6 **गद्यसाहित्य** कादम्बरी शुकनासोपदेश-बाणभट्ट 177

Unit-7 **गद्यसाहित्य** शिवराजविजय-अम्बिकादत्त व्यास 189

Unit-8 **नाट्यसाहित्य** -अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कालिदास 199

Unit-9 **नाट्य-साहित्य-** स्वप्नवासवदत्तम्-भास 222

Unit-10 **(i) ऋग्वेद संहिता पाठ्यांश एवं (ii) कठोपनिषद्** (प्रथम अध्याय) 234

अग्निसूक्त, सवितृसूक्त, विष्णुसूक्त, इन्द्रसूक्त, उषस्सूक्त, सूर्यसूक्त

Unit-11 **शब्दरूप एवं धातुरूप** 291

Unit-12 **वैदिक साहित्य का इतिहास** 318

वेदों का काल, वेदों की विषय-वस्तु का संक्षिप्त परिचय, संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदाङ्गों का सामान्य परिचय।

Unit-13 **व्याकरण-** लघुसिद्धान्तकौमुदी **(i)** माहेश्वर सूत्र, प्रत्याहार **(ii)** समास प्रकरण 373

Unit-14 **काव्यदीपिका-** श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य 408

काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यभेद, शब्द-शक्ति, काव्यगुण, काव्य-रीति।

Unit-15 **अलङ्कार-परिचय** तथा **छन्द-परिचय** 419

■ **बिहार S-TET एवं BPSC के हल प्रश्न-पत्र** 459-508

मत चूको यार,
करो प्रहार।
अबकी बार,
लक्ष्य बिहार।।

1 Unit

लघुसिद्धान्तकौमुदी
संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण

वर्णविचार - स्वर व्यञ्जन

संस्कृत- सम् + कृ + क्त (सुट् का आगम) 'संस्कृत' शब्द का अर्थ है- शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित, परिनिष्ठित। अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है- शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा।

व्याकरण- वि + आङ् + √कृ + ल्युट् 'व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते अनेन इति व्याकरणम्' जिसके माध्यम से शब्दों की व्युत्पत्ति या निष्पत्ति बतायी जाय, वह व्याकरण है। व्याकरण 'शब्दशास्त्र' या 'पदशास्त्र' है।

त्रिमुनि- संस्कृत व्याकरण के त्रिमुनि हैं-

1. पाणिनि 2. कात्यायन/वररुचि 3. पतञ्जलि

अष्टाध्यायी- व्याकरणशास्त्र का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है- अष्टाध्यायी जो महर्षि पाणिनि की रचना है।

- अष्टाध्यायी में 8 अध्याय, प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद हैं, तो कुल मिलाकर 8×4 = 32 पाद हैं, तथा 3978 अर्थात् लगभग 4000 सूत्र हैं। इसीलिए पाणिनि को **'सूत्रकार'** कहा गया है।
- अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र- 'वृद्धिरादैच्' (1.1.1) तथा अन्तिम सूत्र 'अ अ' (8.4.67) है।
- महर्षि कात्यायन या वररुचि ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक लिखा, इसीलिए इन्हें **'वार्तिककार'** कहते हैं।
- महर्षि पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी के 4000 सूत्रों पर एक विस्तृत भाष्य लिखा; जिसे **'महाभाष्य'** कहते हैं। इसीलिए व्याकरण शास्त्र के **'भाष्यकार'** के रूप में पतञ्जलि प्रसिद्ध हैं। महाभाष्य में कुल 84 'आह्निक' हैं।
- भट्टोजिदीक्षित ने सूत्रों पर वृत्ति लिखी इसीलिए इन्हें **'वृत्तिकार'** के नाम से जानते हैं। 'सिद्धान्तकौमुदी' इनकी प्रसिद्ध रचना है।

वर्ण विचार

- **वर्ण अथवा अक्षर-** हम मुख से जिन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें 'वर्ण' अथवा 'अक्षर' कहते हैं। वैसे तो 'न क्षरति इति अक्षरः' ऐसा 'अक्षर' शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है। अर्थात् जिनका क्षरण या विनाश न हो वे अक्षर हैं, जैसे- अ, इ, उ, क्, ख्, ग् आदि, परन्तु सामान्यतया 'वर्ण' या 'अक्षर' समानार्थी समझे जाते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं- (i) स्वर और (ii) व्यञ्जन

स्वर (अच्)

स्वर - 'स्वयं राजन्ते इति स्वराः' -

स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण के लिए किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती। जैसे- 'अ' के उच्चारण में किसी अन्य स्वर या व्यञ्जन वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती इसीलिए 'अ' स्वर है। इसप्रकार अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ- ये सभी स्वर हैं।

1. **स्वरों की संख्या-** संस्कृत व्याकरणशास्त्र में स्वरों की संख्या 09 मानी गयी है।
   जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ। ये सभी स्वर 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित हैं इसीलिए स्वरों को 'अच्' भी कहा जाता है।
2. **मूल स्वर-** मूल स्वर 05 हैं। अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये पाँच मूलस्वर कहे जाते हैं।
3. **संयुक्त स्वर-** ए, ओ, ऐ, औ - ये 4 संयुक्त या मिश्रित स्वर कहे जाते हैं।

जैसे- अ + इ = ए
अ + उ = ओ
अ + ए = ऐ
अ + ओ = औ

नोट- ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः (1.2.27) सूत्र से एकमात्रिक , द्विमात्रिक तथा त्रिमात्रिक स्वरों की क्रमशः ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत संज्ञा होती है।

स्वरों के भेद- स्वरों के मुख्यतया तीन भेद हैं-

1. ह्रस्व स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं-

जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये सभी ह्रस्व स्वर हैं।

2. दीर्घ स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, वे दीर्घस्वर कहे जाते हैं-

जैसे- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ।

3. प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा से अधिक अर्थात् तीन मात्रा का समय लगे इन्हें प्लुतस्वर कहते हैं। प्लुतस्वरों की पहचान के लिए '३' यह चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- अ-३, इ-३, उ-३ आदि।

'ओ३म्'- यह स्वर त्रैमात्रिक है, जिसका प्रयोग प्रायः वेदों में होता है। यहाँ 'ओ' प्लुतस्वर है।

- अ इ उ ऋ प्रत्येक वर्ण के 18 भेद होते हैं।
- ऌ ए ओ ऐ औ के 12 भेद होते हैं।
- ऋ एवं ऌ के कुल 30 भेद होते हैं।

वर्णों का उच्चारण काल

एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्॥

अर्थात्- ह्रस्व स्वर की एकमात्रा, दीर्घस्वर की दो मात्रा एवं प्लुत स्वरों को त्रिमात्रिक समझना चाहिए। व्यञ्जन वर्णों की आधी मात्रा जाननी चाहिए।

एकमात्रिक स्वर- अ, इ, उ, ऋ, ऌ (ह्रस्व स्वर)।
द्विमात्रिक स्वर- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ (दीर्घ स्वर)
त्रिमात्रिक स्वर- अ-३, इ-३, उ-३, ऋ-३ आदि। (प्लुत स्वर)
अर्द्धमात्रिक वर्ण- क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् (सभी व्यञ्जनवर्ण)।
मात्राकाल- पलक झपकने के समय को एकमात्राकाल कहते हैं।

व्यञ्जन (हल् वर्ण)

व्यञ्जन- 'अन्वग् भवति व्यञ्जनम्'

व्यञ्जन वे वर्ण हैं, जो स्वतन्त्र रूप से न बोले जा सकें; अर्थात् जिनका उच्चारण स्वर की सहायता के बिना नहीं हो सकता।

जैसे- क् + अ = क
ख् + अ = ख
ग् + अ = ग आदि।

- व्याकरण में जो शुद्ध व्यञ्जन वर्ण होंगे उन्हें हलन्त के साथ ही लिखा जाता है। जैसे- क् च् ट् त् प् आदि। इसीलिए इन्हें अर्धमात्रिक वर्ण कहा गया है। **'व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्'।**
- सभी व्यञ्जन वर्ण 'हल्' प्रत्याहार में समाहित होते हैं अतः व्यञ्जनों को **'हल्'** भी कहते हैं। कुल **व्यञ्जन वर्ण 33** माने गये हैं। जो कि माहेश्वर सूत्रों के 'हयवरट्' से लेकर 'हल्' तक 10 सूत्रों में कहे गये हैं।

व्यञ्जन के प्रकार- मुख्यरूप से व्यञ्जन के तीन प्रकार होते, हैं; जो माहेश्वरसूत्रों में गिने गये हैं।

1. स्पर्श व्यञ्जन 2. अन्तःस्थ व्यञ्जन 3. ऊष्म व्यञ्जन।

चतुर्थ प्रकार है 4. संयुक्त व्यञ्जन (जो माहेश्वर सूत्रों में परिगणित नहीं है)

(1) स्पर्श व्यञ्जन- जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न अवयवों (भागों) - कण्ठ, तालु, मूर्धा आदि का स्पर्श होता है; उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इसकी संख्या 25 होती है- क से लेकर म तक के वर्ण स्पर्श व्यञ्जन हैं। ये वर्ण कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि स्थानों को स्पर्श करने के बाद उच्चरित होते हैं इसीलिए **'स्पर्श'** हैं।

'कादयो मावसानाः स्पर्शाः'	
क वर्ग	क् ख् ग् घ् ङ्
च वर्ग	च् छ् ज् झ् ञ्
ट वर्ग	ट् ठ् ड् ढ् ण्
त वर्ग	त् थ् द् ध् न्
प वर्ग	प् फ् ब् भ् म्

वर्ग- इनमें से 5-5 वर्णों के जो समूह बने हैं, इन समूहों का नाम है- वर्ग। ये वर्ग उच्चारणस्थान के आधार पर बने हैं।

जैसे-

(i) क् ख् ग् घ् ङ् ये पाँच व्यञ्जन कण्ठ से बोले जाते हैं, अतः इन सबका एक वर्ग बनाया गया जिसका नाम रखा गया **'कवर्ग'**। कण्ठ से उच्चरित होने के कारण इन्हें **'कण्ठ्यवर्ण'** भी कहते हैं।

इसीप्रकार-

(ii) च् छ् ज् झ् ञ् ये पाँच व्यञ्जन तालु से बोले जाने के कारण **'तालव्यवर्ण'** कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम है- **'चवर्ग'**।

(iii) ट् ठ् ड् ढ् ण् - मूर्धा से उच्चारण होने के कारण **'मूर्धन्यवर्ण'** हैं। इस वर्ग का नाम है- **'टवर्ग'**।

(iv) त् थ् द् ध् न् - दन्त से उच्चारण होने के कारण **'दन्त्यवर्ण'** हैं। इस वर्ग को **'तवर्ग'** कहते हैं।

(v) प् फ् ब् भ् म् - ये पाँच व्यञ्जन ओष्ठ से बोले जाते हैं, अतः ये **'ओष्ठ्यवर्ण'** कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम **'पवर्ग'** है। इसप्रकार कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग कुल **पाँच वर्ग** होते हैं, तथा प्रत्येक वर्ग के अन्तर्गत 5-5 वर्ण आते हैं अतः 5×5 = **25 वर्ण** वर्गाक्षर या वर्गीय व्यञ्जन, या स्पर्श व्यञ्जन कहे जाते हैं।

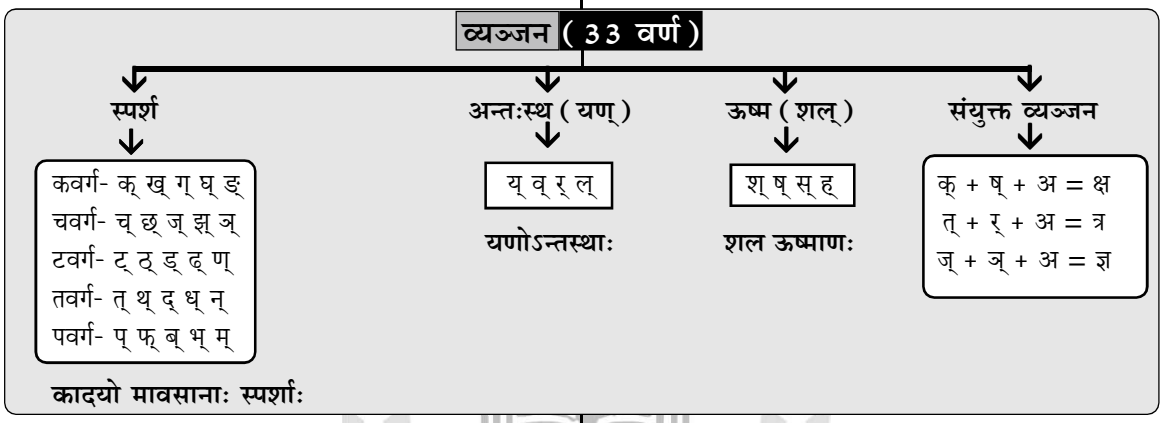
उदित् - **'कु चु टु तु पु एते उदितः'।** इन्हीं पाँच वर्गों का लघुनाम या दूसरा नाम कु चु टु तु पु भी है। इनमें 'उ' की इत् संज्ञा होती है, अतः ये उदित् कहलाते हैं।

संस्कृत व्याकरण में जब भी 'कु' कहा जाएगा तो उसका अर्थ होगा- कवर्ग अर्थात् क् ख् ग् घ् ङ्।

'चु' का मतलब चवर्ग अर्थात् - **च् छ् ज् झ् ञ्।**
'टु' का अर्थ होगा टवर्ग अर्थात्- **ट् ठ् ड् ढ् ण्**
'तु' का अर्थ है- तवर्ग अर्थात् - **त् थ् द् ध् न्।**
'पु' का अर्थ है- पवर्ग अर्थात् - **प् फ् ब् भ् म्।**

जैसे- (i) 'कुहोश्चुः' सूत्र में 'कु' का अर्थ 'कवर्ग' है और 'चु' का अर्थ 'चवर्ग' है।

(ii) 'चुटू' सूत्र में 'चु' का अर्थ चवर्ग है और 'टु' का अर्थ टवर्ग है।



(2) अन्तःस्थ व्यञ्जन- 'यणोऽन्तःस्थाः' यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले य् व् र् ल् ये चार वर्ण अन्तःस्थ व्यञ्जन कहे जाते हैं। इन्हीं वर्णों को **'अर्धस्वर'** भी कहा जाता है।

(3) ऊष्म व्यञ्जन- 'शल ऊष्माणः' शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित श् ष् स् ह् ये चार वर्ण ऊष्म व्यञ्जन कहे जाते हैं।

(4) मिश्रित या संयुक्त व्यञ्जन- दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो वर्ण बनते हैं उन्हें संयुक्त या मिश्रित व्यञ्जन कहते हैं।

जैसे- क् + ष् + अ = क्ष
त् + र् + अ = त्र
ज् + ञ् + अ = ज्ञ

अयोगवाह- वर्णमातृका (वर्णमाला) में पढे हुए वर्णों के अतिरिक्त चार वर्ण और भी हैं-

(i) अनुस्वार (ii) विसर्ग (iii) जिह्वामूलीय (iv) उपध्मानीय

➢ वर्णमाला तथा माहेश्वरसूत्रों में न पढे जाने के कारण ये अयोगवाह कहलाते हैं।

* **अनुस्वार तथा विसर्ग-**''अं अः इत्यचः परावनुस्वारविसर्गौ'' अं और अः ये अच् के बाद आने पर क्रमशः अनुस्वार और विसर्ग कहलाते हैं।

➢ बालकं, रामं, श्यामं आदि में मकार के बाद अकार के ऊपर जो बिन्दु (ं) है उसका नाम अनुस्वार है। इसका उच्चारणस्थान 'नासिका' है। **''नासिकाऽनुस्वारस्य''**

➢ रामः, श्यामः, ग्रामः आदि में मकारोत्तर अकार के बाद जो दो बिन्दु (:) है, उसी को विसर्ग (:) कहते हैं।

➢ विसर्ग का उच्चारणस्थान 'कण्ठ' है- **''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।''**

* **जिह्वामूलीय-**''ऽक, ऽख इति कखाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृशो जिह्वामूलीयः'' ऽक, ऽख के पहले जो आधे विसर्ग ऽ के समान लिखा जाता है, उसे जिह्वामूलीय वर्ण कहते हैं।

यथा- बालक ऽक्रीडति। बालक ऽखेलति।

➢ इसका उच्चारण कण्ठ के भी नीचे 'जिह्वामूल' से होता है- **''जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्''**

➢ ''कुप्वोः ऽक ऽपौ च'' सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से जिह्वामूलीय बन जाता है, नहीं तो विसर्ग भी रह सकता है।

* **उपध्मानीय-** ''ऽप ऽफ इति पफाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृश उपध्मानीयः''

➢ ऽप ऽफ के पहले जो आधे (ऽ) विसर्ग के समान लिखा जाता है, उसे 'उपध्मानीय वर्ण' कहते हैं।

जैसे- वृक्ष ऽपतति। वृक्ष ऽफलति।

➢ इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है। **''उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ''**

➢ ''कुप्वोः ऽक ऽपौ च'' सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से उपध्मानीय बन जाता है।

*** कार और इफ प्रत्यय-** ''वर्णात्कारः'' संस्कृत व्याकरण में वर्णों में 'कार' प्रत्यय लगाकर बोलना चाहिए।

यथा- अ + कार = अकार

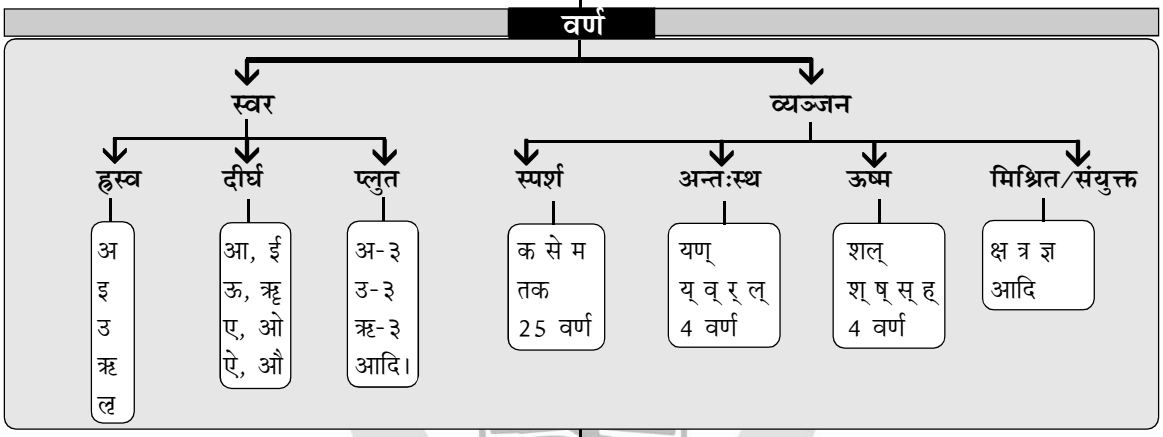
क + कार = ककार, ख से खकार, ग से गकार आदि।

'र' में 'इफ' प्रत्यय (र + इफ) लगाकर 'रेफ' कहना चाहिए।

*** आनुपूर्वी या पदों का अन्तक्रम-** किसी भी शब्द में वर्ण जिस क्रम से व्यवस्थित रहते हैं; उस क्रम का नाम आनुपूर्वी होता है। जैसे 'बालक' शब्द में छह वर्ण हैं- ब् आ ल् अ क् अ।

'राम' शब्द में चार वर्ण हैं- र् आ म् अ।

- 'बालक' और 'राम' के अन्त में अकार है अतः ये अकारान्त शब्द हैं।
- इसीप्रकार हरि, कवि, रवि, ऋषि, कपि आदि इकारान्त हैं।
- भानु, गुरु, शिशु आदि उकारान्त शब्द हैं।
- पितृ, भ्रातृ, मातृ, जामातृ आदि ऋकारान्त शब्द हैं।
- राजन्, आत्मन् आदि नकारान्त हैं, मनस्, पयस्, यशस् आदि सकारान्त शब्द हैं, सरित्, जगत् आदि तकारान्त शब्द हैं।



(क) सञ्ज्ञा प्रकरण

➲ **संज्ञा सूत्र- ''संज्ञाकरणं व्यवहारार्थं लोके''**

- व्याकरणशास्त्र के व्यवहार के लिए 'संज्ञा' की आवश्यकता होती है। जो सूत्र संज्ञाओं का विधान करते हैं, ऐसे सूत्र **'संज्ञासूत्र'** या **'संज्ञाविधायक सूत्र'** कहलाते हैं।
- अष्टाध्यायी में लगभग **280 संज्ञासूत्र** हैं।
- यथा- **वृद्धिरादैच्**, **अदर्शनं लोपः**, **अदेङ्गुणः**, आदि।
- महर्षिपाणिनि ने अनेक प्रकार की संज्ञाओं का प्रयोग किया है-
- **अन्वर्थसंज्ञा-** सर्वनाम, सम्प्रदान, अपादान, अव्यय आदि अन्वर्थ संज्ञायें हैं।
- **कृत्रिमसंज्ञा- टि, घु, घ,** तथा **भ** इत्यादि कृत्रिम संज्ञायें हैं।
- **परम्परागतसंज्ञा-**सर्वनामस्थान, प्रातिपदिक, आर्धधातुक, सार्वधातुक, अङ्ग इत्यादि परम्परागत संज्ञायें हैं।
- ''तत्र नामकरणम् इति संज्ञा'' अर्थात् किसी वस्तु व्यक्ति स्थानादि के व्यवहार के लिये अथवा शब्दार्थ बोध कराने हेतु जिस शब्द विशेष का प्रयोग किया जाता है, और वह शब्द उसी अर्थ में प्रसिद्ध होता है, वही संज्ञा कहलाता है। सम् उपसर्गपूर्वक ज्ञा धातु से अङ् + टाप् प्रत्यय जोड़ने पर संज्ञा शब्द की निष्पति हुई है। 'शक्तिम् उद्बोधकत्वं संज्ञासूत्रत्वम्' इस नियम के अनुसार व्याकरणशास्त्र में जो शक्ति अर्थात् शब्दार्थ बोध कराने में समर्थ शब्द है वही संज्ञा है, यहाँ दो पक्ष है एक संज्ञा और दूसरा संज्ञी, संज्ञा के द्वारा ही संज्ञी का बोध होता है।

जैसे- पुस्तकम् ये संज्ञा शब्द है और जो वास्तविक किताब का स्वरूप प्रत्यक्ष होता जिसे पढ़ा जाये वह संज्ञी है, अर्थात् अर्थ (वस्तु)।

'इत्संज्ञायोग्यत्वम् अनुबन्धत्वम्' अर्थात् इत्संज्ञा करने के योग्य जो वर्ण या अक्षर हों, उन्हें अनुबन्ध कहते हैं, अनुबन्धों की इत्संज्ञा करने वाले कुछ सूत्र/वार्तिक दिये गए हैं, हम उनका

यहाँ विश्लेषण करेंगे। धातु, प्रत्यय, आगम, आदेश आदि में किसकी इत्संज्ञा की जाए और किस परिस्थिति में की जाए इसका निर्देश निम्न सूत्रों में किया गया है -

➲ **उपदेशेऽजनुनासिक इत्- (1.3.2)** उपदेशावस्था में जो अनुनासिक स्वर होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है।

* अनुनासिक का अर्थ होता है- ऐसा स्वर जिसे मुख सहित नासिका से बोला जाय। (मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः)।

जैसे- वसँ, आसँ, एधँ, तुमुँन्, आदि में (ँ) यह चिह्न अनुनासिक की सूचना देता है। यहाँ जिन स्वरों में अनुनासिक (ँ) का चिह्न लगा है, उनकी इस सूत्र से इत्संज्ञा होगी तथा उसका लोप होगा। अर्थात् वसँ में वस् तथा तुमुँन् में तुम् शेष बचेगा।

उपदेशावस्था किसे कहेंगे- 'उपदेश' को परिभाषित करते हुए वरदराज कहते हैं- **उपदेश आद्योच्चारणम्** अर्थात् पाणिनि, कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण या प्रथम पाठ किया है उसे 'उपदेश' कहते हैं। उपदेश के सन्दर्भ में एक पद्य भी प्रसिद्ध है-

धातुसूत्रगणोणादिवाक्यलिङ्गानुशासनम् ।
आगमप्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः ॥

भू आदि धातु, अइउण् आदि सूत्र, गणपाठ, उणादिसूत्र, वार्तिक, लिङ्गानुशासन, आगम, प्रत्यय और आदेश ये उपदेश माने जाते हैं। **जैसे-** डुकृञ् करणे, एधँ वृद्धौ, तुमुँन्, शतृँ ये पाणिनि द्वारा प्रथम उच्चारण करने के कारण उपदेश कहे जायेंगे। इस प्रकार उपदेशावस्था में विद्यमान अनुनासिक स्वरों की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इस सूत्र से इत्संज्ञा होगी। इत्संज्ञा के बाद इनका 'तस्य लोपः' सूत्र से लोप होता है।

निष्कर्षतः पाणिनि आदि आचार्यों ने धातु, प्रत्यय, आगम, आदेश आदि को मूलतः जिस रूप में कहा है, वही उपदेश है। जैसे 'कृ' धातु की उपदेशावस्था है- **डुकृञ्**। 'मिद्' धातु की उपदेशावस्था है- **ञिमिदा**। 'तुम्' प्रत्यय की उपदेशावस्था है- **तुमुँन्**। इत्यादि।

➲ **हलन्त्यम् (1.3.3) -** उपदेशावस्था में जो अन्तिम हल् = व्यञ्जन होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है। **जैसे-** डुपचष् में 'ष्' है। यह धातु का अन्तिम व्यञ्जन है इसकी इत्संज्ञा इसी सूत्र से होती है। इसी प्रकार 'तुमुन्' में 'न्' की, 'शप्' प्रत्यय में 'प्' की, 'ल्यप्' में 'प्' की, 'घञ्' में 'ञ्' की, 'णिच्' में 'च्' की इत्संज्ञा इसी 'हलन्त्यम्' सूत्र से होती है। जिसकी भी इत्संज्ञा होगी उस वर्ण का 'तस्य लोपः' से लोप होगा।

* **इर् इत्संज्ञा वाच्या (वा.)** 'धातु' में स्थित इर् की इत्संज्ञा होती है। **जैसे-** भिदिर् , छिदिर्, विजिर्, शुचिर् आदि धातुओं में जो अन्तिम में इर् है, इसकी इत्संज्ञा इस वार्तिक से होती है। ये धातु इरित् कहलाते हैं। इस प्रकार भिद्, छिद्, विज्, शुच् आदि शेष बचता है।

* **न विभक्तौ तुस्माः (1.3.4)** 'सुप्' और 'तिङ्' प्रत्ययों को विभक्ति कहा जाता है। (विभक्तिश्च) इन विभक्ति प्रत्ययों के अन्त में यदि तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) अथवा स् या म् हो तो 'हलन्त्यम्' सूत्र से इनकी इत्संज्ञा नहीं होती है। इसीलिए तस्, थस्, भिस्, जस्, शस् आदि के स् की इत्संज्ञा 'हलन्त्यम्' सूत्र से नहीं होती। भ्याम्, ध्वम्, आथाम्, आम् आदि में म् की इत्संज्ञा नहीं होती।

➲ **आदिर्ञिटुडवः (1.3.5)** धातुओं के आदि में स्थित ञि, टु तथा डु की इत्संज्ञा होती है। **जैसे -** ञिमिदा में 'ञि' की इत्संज्ञा टुनदि में 'टु' की, डुकृञ् में 'डु' की इत्संज्ञा इसी सूत्र से होती है।

* आगे के ये तीन सूत्र धातुओं में नहीं लगेंगे केवल प्रत्ययों की इत्संज्ञा करने के लिए कहे जा रहें हैं।

➲ **षः प्रत्ययस्य (1.3.6)** प्रत्यय के आदि में स्थित 'ष्' की इत्संज्ञा होती है। अतः षाकन्, ष्वुन्, ष्फ आदि प्रत्ययों के आदि षकार की इत्संज्ञा यह सूत्र करता है।

विशेष- ष्वद, ष्णिवु आदि धातुओं के आदि षकार की इत्संज्ञा इस सूत्र से नहीं होगी, क्योंकि यह सूत्र प्रत्ययों के आदि षकार की इत्संज्ञा के लिए है। धातुओं में यह सूत्र नहीं लगता है।

➲ **चुटू (1.3.7)** प्रत्ययों के आदि में स्थित चु = चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) की तथा टु = टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) की इत्संज्ञा 'चुटू' सूत्र से होती है। **जैसे-** 'जस्' प्रत्यय में 'ज्' की,'टा' में 'ट्' की, ण्यत् और ण्वुल् में 'ण्' की, इत्संज्ञा इसी सूत्र से होती है।

➲ **लशक्वतद्धिते (1.3.8)** तद्धित से भिन्न प्रत्ययों के आदि में स्थित ल्, श् तथा कवर्ग (क् ख् ग् घ् ङ्) की इत्संज्ञा होती है। **जैसे-** शप्, श्यन्, श्ना, शतृ, शानच् - इन प्रत्ययों के आदि में श् है; इनकी इत्संज्ञा इसी सूत्र से होगी। ल्यप्, ल्युट्, ल्यु आदि प्रत्ययों के आदि लकार की इत्संज्ञा इसी सूत्र से होती है।

क्त, क्तवतु, क्त्वा, क्तिन्, क्यप्, केलिमर्, में 'क्' की इत्संज्ञा, घञ् में 'घ्' की, खश् और ख्युन् में 'ख्' की, ङस् में 'ङ्' की इत्संज्ञा इसी सूत्र से होगी।

विशेष- लच्, ख, घ, आदि प्रत्ययों में ल् ख् घ् आदि की इत्संज्ञा इस सूत्र से नहीं हुई क्योंकि ये तद्धित प्रत्यय हैं। यह सूत्र तद्धित प्रत्ययों में नहीं लगेगा।

➢ ध्यान रहे केवल 'लशक्वतद्धिते' यही एक मात्र ऐसा सूत्र है, जो तद्धित प्रत्ययों में नहीं लगता।

*** तस्य लोपः (1.3.9)** उपर्युक्त सूत्रों से जिसकी भी इत्संज्ञा होती है, उन सभी वर्णों का लोप हो जाता है। **'अदर्शनं लोपः'** जो दिखाई न दे वह लोप है। अर्थात् जिन-जिन वर्णों की इत्संज्ञा होती है, वे 'तस्य लोपः' से लोप होकर हट जाते हैं, अर्थात् दिखाई नहीं पड़ते हैं।

जैसे- 'क्त' प्रत्यय में क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा होती है, तथा 'तस्य लोपः' से लोप होकर केवल 'त' शेष बचता है। जिसका भी इत्संज्ञा होकर लोप हो जाएगा वह दिखाई नहीं पड़ेगा।

इस प्रकार 'तस्य लोपः' सूत्र तो लोप का विधान करने के कारण विधिसूत्र हुआ, शेष सूत्र इत्संज्ञा करने के कारण संज्ञा सूत्र कहे जायेंगे। **'न विभक्तौ तुस्माः'** इत्संज्ञा का निषेध करने के कारण निषेध सूत्र कहा जाएगा।

➢ इन सूत्रों से धातुओं एवं प्रत्ययों के अनुबन्धों की इत्संज्ञा होकर शुद्ध रूप ही बचता है। **जैसे-** डुकृञ् में 'कृ', शपँ में 'शप्', तुमुन् में 'तुम्', शतृ में 'अत्', शानच् में 'आन' आदि शेष बचेगा।

➢ जिनमें 'क्' की इत्संज्ञा हुई है, वे प्रत्यय कित् कहलाते हैं, **जैसे-** क्त, क्तवतु, क्यप्, क्त्वा, क्तिन् आदि कित् प्रत्यय हैं।

➢ जिनमें श् की इत्संज्ञा हुई है, वे शित् कहलाते हैं, **जैसे-** शतृ, शानच् आदि शित् प्रत्यय हैं।

➢ जिनमें 'ल्' की इत्संज्ञा हुई है वे लित् प्रत्यय कहे जाते हैं, जैसे- ल्युट्, ल्यु, ल्यप् आदि।

2. संयोगसंज्ञा

सूत्र- हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)

पदच्छेद- हलः (1.3), अनन्तराः (1.3), संयोगः (1.1)

वृत्ति- अज्भिरव्यवहिता हलः संयोगसञ्ज्ञाः स्युः।

सूत्रार्थ- ऐसे दो या दो से अधिक व्यञ्जन जिनके बीच में कोई स्वर न आया हो, उसे **संयोग** कहते हैं।

उदाहरण- (i) पुष्प में ष् + प् का संयोग है।(ii) अग्नि में ग् + न् का संयोग है।(iii) राष्ट्र में ष् + ट् + र् का संयोग है।(iv) बुद्धि में द् + ध् का संयोग है।

3. संहितासंज्ञा

सूत्र- परः सन्निकर्षः संहिता (1.4.108)

पदच्छेद- परः (1.1), सन्निकर्षः (1.1), संहिता (1.1)

वृत्ति- वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञा स्यात् ।

सूत्रार्थ- वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की **संहिता संज्ञा** होती है।

उदाहरण- मधु + अरिः = मध्वरिः में उ + अ की संहिता संज्ञा

रमा + ईशः = रमेशः में आ + ई की संहिता संज्ञा

4. सवर्णसंज्ञा

सूत्र- तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् (1.1.9)

पदच्छेद- तुल्यास्यप्रयत्नम् (1.1), सवर्णम् (1.1)।

वृत्ति- ताल्वादिस्थानमाभ्यन्तरप्रयत्नश्चेत्येतद् द्वयं यस्य येन तुल्यं तन्मिथः सवर्णसंज्ञं स्यात् ।

सूत्रार्थ- तालु आदि उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तर प्रयत्न ये दोनों जिस वर्ण के साथ तुल्य हों, वे अक्षर समूह परस्पर सवर्णसंज्ञक होते हैं।

समास- * आस्ये (मुखे) भवम् = आस्यम्

* प्रकृष्टो यत्नः = प्रयत्नः/अथवा प्राक्तनो यत्नः = प्रयत्नः (प्रादि समास)

* आस्यञ्च प्रयत्नञ्च आस्यप्रयत्नौ (इतरेतर द्वन्द्व)

* तुल्यौ आस्यप्रयत्नौ यस्य वर्णसमूहस्य तत् = तुल्यास्यप्रयत्नम् (बहुव्रीहि समास)

भावार्थ- जिस वर्णसमूह का पारस्परिक कण्ठ ताल्वादि उच्चारणस्थान तथा स्पृष्ट आदि आभ्यन्तरप्रयत्न समान हों वे वर्ण परस्पर सवर्णसंज्ञक होते हैं।

विशेष-(i) उच्चारणस्थान कण्ठ से शुरू होते हैं अतः 'ताल्वादि' की अपेक्षा 'कण्ठादि' कहना ही अधिक समीचीन होता, किन्तु वरदराज सदृश महापुरुषों का जो भी कथन है, वह हम सभी के लिए समादरणीय है।

(ii) व्याकरणशास्त्र में आभ्यन्तर तथा बाह्य दोनों यत्नों के लिए'यत्न' शब्द का ही प्रयोग हुआ है - **यत्नो द्विधा।** किन्तु इस सूत्र में 'यत्न' शब्द के साथ 'प्र' उपसर्ग जोड़ा गया है, जो बाह्ययत्न को हटाकर आभ्यन्तर यत्न का ही बोध कराता है। **प्राक्तनो यत्नः प्रयत्नः।** अथवा **प्रकृष्टो यत्नः प्रयत्नः।** अर्थात् जो पहला यत्न अथवा उत्कृष्ट यत्न है, वह प्रयत्न है। इस दृष्टि से वर्णों की उत्पत्ति से पूर्व का यत्न या वर्णों की उत्पत्ति का कारण होने से उत्कृष्ट यत्न आभ्यन्तर यत्न ही है।

(iii) जब तक सम्पूर्ण उच्चारणस्थान और सम्पूर्ण प्रयत्न तुल्य न हों तब तक सवर्णसंज्ञा नहीं होती। **यथा-** 'इ' और 'ए' वर्णों का विवृत आभ्यन्तर प्रयत्न तुल्य है तथा 'इ' और 'ए' का उच्चारणस्थान तालु भी समान है किन्तु कण्ठ स्थान 'ए' का अधिक है। अतः इनकी सवर्णसंज्ञा नहीं हुई, इसीलिए भवति + एव में सवर्णदीर्घ नहीं हुआ।

(iv) 'क' और 'ङ' की सवर्णसंज्ञा होगी क्योंकि 'क' और 'ङ' दोनों वर्णों का आस्य अर्थात् 'मुख में होने वाला स्थान' कण्ठ तुल्य है यद्यपि 'ङ' का कण्ठ और नासिका उच्चारणस्थान है परन्तु 'नासिका' तो मुख से बाहर का उच्चारणस्थान है। क और ङ दोनों का आभ्यन्तर प्रयत्न भी स्पृष्ट होने से तुल्य है। इसीप्रकार च और ञ, ट-ण, त-न तथा प-म परस्पर सवर्णी होंगे।

(v) ए और ऐ की तथा ओ और औ की सम्पूर्ण उच्चारणस्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न समान होने पर भी सवर्णसंज्ञा नहीं होती क्योंकि पाणिनि ने एओङ् और ऐऔच् दोनों सूत्रों का पृथक्-पृथक् निर्देश किया है। **(वा.) 'ऋऌवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्'**

ऋकार और ऌकार वर्णों की परस्पर 'सवर्णसंज्ञा' कहनी चाहिए।
* 'तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्' सूत्र के अनुसार ऋकार और ऌकार की परस्पर सवर्णसंज्ञा नहीं हो सकती, क्योंकि ऋकार का उच्चारणस्थान मूर्धा और ऌकार का उच्चारणस्थान दन्त है परन्तु 'तवल्कारः' आदि प्रयोगो के लिए इनकी सवर्णसंज्ञा आवश्यक थी। इस वार्तिक के आधार पर ऋ और ऌ, का उच्चारणस्थान साम्य न होने पर भी सवर्णसंज्ञा सिद्ध हो जाती है।

5. उदात्तसंज्ञा

सूत्र- उच्चैरुदात्तः (1.2.29) मुख के भीतर जो कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थान हैं उनमें ऊर्ध्व भाग से बोले जाने वाले अच् (स्वर) की उदात्त संज्ञा होगी।

6. अनुदात्तसंज्ञा

सूत्र- नीचैरनुदात्तः (1.2.30) कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थानों के निम्न (अधोभाग) भाग से उच्चरित अच् (स्वर) की अनुदात्त संज्ञा होती है।

7. स्वरितसंज्ञा

सूत्र- समाहारः स्वरितः (1.2.31) जहाँ उदात्त और अनुदात्त दोनों का समाहार होता है, उस अच् (स्वर) की स्वरित संज्ञा होगी।

- उदात्त अनुदात्त और स्वरित प्रयत्न केवल स्वरों के होते हैं।
- उदात्त अनुदात्त और स्वरित को समझने के लिए वैदिकग्रन्थों में विशेष चिह्नों का प्रयोग किया गया है। अनुदात्त अक्षर के नीचे पड़ी लाइन, स्वरित के ऊपर खड़ी लाइन होती है जबकि उदात्त के लिए कोई चिह्न नहीं होता।

जैसे- **स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव ।** (ऋ. 1.1.9)

8. लोप संज्ञा

सूत्र- अदर्शनं लोपः (1.1.59)

पदच्छेद- अदर्शनम् (1.1), लोपः (1.1)

वृत्ति- प्रसक्तस्यादर्शनं लोपसंज्ञं स्यात्।।

सूत्रार्थ- विद्यमान का (अदर्शनम्) न सुनाई देना लोप होता है।

9. प्रत्याहार संज्ञा

सूत्र- आदिरन्त्येन सहेता (1.1.70)

पदच्छेद-आदिः (1.1), अन्त्येन (3.1), सह इत्यव्ययपदम् । इता (3.1), स्वस्य (6.1)

वृत्ति- अन्त्येनेता सहित आदिर्मध्यगानां स्वस्य च सञ्ज्ञा स्यात्। यथाण् इति 'अ इ उ' वर्णानां सञ्ज्ञा। एवमक्, अच्, हल्, अल् इत्यादयः।।

सूत्रार्थ- अन्त्य इत्संज्ञक वर्ण के साथ उच्चारित आदि वर्ण मध्य के वर्णों का और अपना भी संज्ञा बोधक होता है।

उदाहरण- यथाण्- जैसे **अण्** यह अ इ उ वर्णों की सञ्ज्ञा है। इसी प्रकार अक्, अच्, हल्, अल् आदि भी जान लेने चाहियें।

सूत्र- अणुदित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः (1.1.68)

पदच्छेद- अण् (1.1), उदित् (1.1), सवर्णस्य (6.1), च इत्यव्ययपदम् । अप्रत्ययः (1.1), स्वस्य (6.1)।

वृत्ति- प्रतीयते- विधीयत इति प्रत्ययः। अविधीयमानोऽण् उदिच्च सवर्णस्य सञ्ज्ञा स्यात् ।

सूत्रार्थ- अप्रत्यय अण् और उदित् ये सवर्ण के बोधक अर्थात् ग्राहक होते हैं।

10. ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत संज्ञा

सूत्र- ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः (1.2.27)

पदच्छेद-ऊकालः (1.1), अच् (1.1), ह्रस्व-दीर्घ-प्लुतः (1.1)

वृत्ति- उश्च ऊश्च ऊ३श्च =वः। वां काल इव कालो यस्य सोऽच् क्रमाद् ह्रस्व-दीर्घ-प्लुतसंज्ञः स्यात् । स प्रत्येकमुदात्तादिभेदेन त्रिधा।।

सूत्रार्थ- एकमात्रिक उकार, द्विमात्रिक ऊकार और त्रिमात्रिक उ३कार के उच्चारण काल के समान उच्चारण काल वाले अचों की क्रमशः ह्रस्वसंज्ञा, दीर्घसंज्ञा और प्लुतसंज्ञा होती है।

11. पद संज्ञा

सूत्र- सुप्तिङन्तं पदम् (1.4.14)

पदच्छेद- सुप्तिङन्तम् (1.1), पदम् (1.1)- सूत्र में दो पद हैं।

वृत्ति- सुबन्तं तिङन्तञ्च पदसञ्ज्ञं स्यात् ।

सूत्रार्थ- सुबन्त अर्थात् सु औ जस् आदि सुप् प्रत्यय जिसके अन्त में हैं और तिङन्त अर्थात् तिप् तस् झि आदि प्रत्यय जिनके अन्त में होते हैं उनकी पदसंज्ञा होती है।

समास- सुप् च तिङ् च सुप्तिङौ (इतरेतर द्वन्द्व)
सुप्तिङौ अन्तौ यस्य तत् - सुप्तिङन्तम् (बहुव्रीहि)

उदाहरण- (i) सुबन्त (सुप् अन्त वाला) - देवः
देव सु - यहाँ रुत्व तथा विसर्ग होकर 'देवः' शब्द बनता है। सुबन्त होने के कारण इस सम्पूर्ण शब्द स्वरूप की पदसञ्ज्ञा है। इसीप्रकार रामः रामौ रामाः इत्यादि सभी शब्द सुबन्त होने से पदसंज्ञक होते हैं।

(ii) तिङन्त- (तिङ् अन्त वाला) - **पठति**
पठ् शप् तिप् = पठति, यहाँ तिङ् प्रत्ययान्त होने से 'पठति' पदसञ्ज्ञक हुआ। इसीप्रकार भवति, भवतः, भवन्ति आदि सभी धातुरूप, तिङन्त होने के कारण पदसञ्ज्ञक होते हैं।

महत्त्वपूर्ण तथ्य- 'सुप्तिङन्तम्' में स्थित 'अन्त' पद 'सुप्' तथा 'तिङ्' दोनों पदों के साथ जुड़ता है; जिसका अर्थ होता है सुबन्त और तिङन्त।

➢ 'स्वौजसमौट् .....' सूत्र के द्वारा कहे गए 21 प्रत्यय 'सुप्' कहलाते हैं। तिप्तस्झि... सूत्र के द्वारा कहे गए 18 प्रत्यय तिङ् प्रत्यय हैं। ये प्रत्यय जिसके अन्त में होते हैं, उस समग्र समुदाय की पदसञ्ज्ञा होती है।

➢ प्रातिपदिकों में प्रथमा से सप्तमी तक सुप् विभक्तियाँ लगाकर जो शब्दरूप बनते हैं, वें सुबन्त पद हैं। धातुओं से लट् आदि विभिन्न लकारों में तिङ् विभक्तियाँ लगाकर जो धातुरूप बनते हैं, वे तिङन्त पद हैं। इसप्रकार पद दो प्रकार के हैं-

(i) सुबन्त पद = शब्दरूप **जैसे-** रामः रामौ रामाः आदि।

(ii) तिङन्त पद = धातुरूप **जैसे-** पठति पठतः पठन्ति आदि।

***** सुप् प्रत्याहार के अन्तर्गत (1) सु औ जस्, (2) अम् औट् शस्, (3) टा भ्याम् भिस्, (4) ङे भ्याम् भ्यस्, (5) ङसि भ्याम् भ्यस्, (6) ङस् ओस् आम्, (7) ङि ओस् सुप्- ये 21 प्रत्यय आते हैं।

***** तिङन्त के अन्तर्गत **परस्मैपद-** तिप् तस् झि, सिप् थस् थ, मिप् वस् मस्। **आत्मनेपद-** त आताम् झ, थास् आथाम् ध्वम्, इड् वहि महिङ्- ये 18 प्रत्यय आते हैं।

***** सुबन्त को 'कारकपद' और तिङन्त को 'क्रियापद' भी कहा जा सकता है।

➢ पदसंज्ञा करने के बाद ही कोई शब्द या प्रातिपदिक -'पद' कहलाता है पद होने के बाद ही उसका व्यवहार भाषा में होता है। **'अपदं न प्रयुञ्जीत'** अर्थात् जो पद नहीं है वह लोक या भाषा में व्यवहार के योग्य नहीं होता।

➢ सुप् और तिङ् प्रत्ययों से युक्त सम्पूर्ण समुदाय की ही पदसंज्ञा होती है; केवल प्रकृति या प्रत्यय की नहीं। जैसे- बालकः, पुरुषः, देवस्य, मानवस्य इत्यादि सुप् प्रत्ययान्त होने के कारण पदसञ्ज्ञक हैं। इसी प्रकार पठति, लिखति, अपठत्, अपचत् आदि तिङ् प्रत्ययान्त होने के कारण पद हैं।

8- वर्णों का उच्चारणस्थान

उच्चारणस्थान- मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण किया जाता है, वही उस वर्ण का उच्चारणस्थान कहा जाता है।

क्र.	सूत्रम्	उच्चारित वर्ण (वर्णों के नाम)	उच्चारण स्थान
1.	**अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः**	अ, आ (18 प्रकार), कु = कवर्ग = क् ख् ग् घ् ङ्, ह् और विसर्ग (:) (कण्ठ्य वर्ण)	कण्ठ
2.	**इचुयशानां तालु**	इ, ई (18 प्रकार) चु अर्थात् चवर्ग = च् छ् ज् झ् ञ्, य् और श् (तालव्य वर्ण)	तालु
3.	**ऋटुरषाणां मूर्धा**	ऋ, ॠ (18 प्रकार) टु अर्थात् टवर्ग = ट् ठ् ड् ढ् ण्, र् और ष् (मूर्धन्यवर्ण)	मूर्धा
4.	**ऌतुलसानां दन्ताः**	ऌ (12 प्रकार) तु अर्थात् तवर्ग = त् थ् द् ध् न्, ल् और स् (दन्त्यवर्ण)	दन्त
5.	**उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ**	उ, ऊ (18 प्रकार) पु अर्थात् पवर्ग = प् फ् ब् भ् म्, उपध्मानीय ५प ५फ (ओष्ठ्य वर्ण)	ओष्ठौ
6.	**ञमङणनानां नासिका च**	ञ् म् ङ् ण् न् (अनुनासिक वर्ण)	नासिका भी
7.	**एदैतोः कण्ठतालु**	ए, ऐ (कण्ठतालव्य वर्ण)	कण्ठतालु
8.	**ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**	ओ, औ (कण्ठोष्ठ्य वर्ण)	कण्ठोष्ठ
9.	**वकारस्य दन्तोष्ठम्**	व (दन्तोष्ठ्य वर्ण)	दन्तोष्ठ

10.	**जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**	५क ५ख (जिह्वामूलीय वर्ण)	जिह्वामूलम्
11.	**नासिकाऽनुस्वारस्य**	(ं) अनुस्वार (नासिक्य वर्ण)	नासिका

➢ उच्चारणस्थान और प्रयत्न को अष्टाध्यायी सूत्रों में नहीं बताया गया है अपितु पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रन्थों में उच्चारणस्थान आठ प्रकार के माने गये हैं-

अष्टौ स्थानानि वर्णानाम् उरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलं च दन्तश्च नासिकोष्ठौ च तालु च॥

(पाणिनीय शिक्षा -13)

वर्णों के उरः, कण्ठ, मूर्धा, जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु ये आठ उच्चारण स्थान हैं।

अभ्यास प्रश्न (संज्ञा प्रकरण)

1. 'लोप'- संज्ञासूत्रं विद्यते-
(A) अदर्शनं लोपः (B) तस्य लोपः
(C) हलन्त्यम् (D) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्

2. ''परः सन्निकर्षः .....'' किम् ?
(A) संयोगः (B) प्रयत्नः
(C) संहिता (D) वियोगः

3. ऋटुरषाणाम् उच्चारणस्थानं किम् ?
(A) कण्ठः (B) मूर्धा
(C) तालु (D) दन्तोष्ठः

4. उच्चारणयत्नः कतिविधोऽस्ति?
(A) पञ्चधा (B) त्रिविधः
(C) षड्विधः (D) द्विधा

5. सुबन्तस्य तिङन्तस्य च संज्ञा भवति-
(A) पदम् (B) सम्मेलनम्
(C) स्वरितम् (D) विवृतम्

6. वर्णानां कति उच्चारणस्थानानि सन्ति?
(A) दश (B) नव
(C) अष्टौ (D) सप्त

7. मूर्धन्यसंज्ञकाः वर्णाः के सन्ति?
(A) इ चवर्ग य श (B) ऋ टवर्ग रेफ ष
(C) उ पवर्ग उपध्मानीयः (D) ऌ तवर्ग ल स

8. केषां वर्णानामुच्चारणस्थानं नासिका अस्ति?
(A) अनुस्वारयमानाञ्च (B) स्वराणाम्
(C) अन्तःस्थानाम् (D) ऊष्मणाम्

9. ''आदिरन्त्येन सहेता'' इति सूत्रेण किं भवति?
(A) संहिता (B) इत्कार्यम्
(C) अन्वयः (D) प्रत्याहारविधानम्

10. ''अ इ उ'' ऋ एषां वर्णानां प्रत्येकं कति भेदाः सन्ति?
(A) द्वादश (B) अष्टादश
(C) चतुर्दश (D) नव

11. ताल्वादिस्थानमाभ्यन्तरप्रयत्नश्चेत्येतद्द्वयं यस्य येन तुल्यं तन्मिथः कीदृशः संज्ञः स्यात् ?
(A) उदात्तसंज्ञः
(B) लोपसंज्ञः
(C) सवर्णसंज्ञः
(D) मिथः संज्ञः

12. 'ऌतुलसानाम्' एषां वर्णानाम् उच्चारणस्थानं किम् ?
(A) दन्ताः (B) कण्ठतालुः
(C) कण्ठः (D) अनुनासिकः

13. ''न वेति .....'' (निषेध विकल्पयोः .....) का संज्ञा?
(A) उपसर्ग-संज्ञा
(B) निपात-संज्ञा
(C) विभाषा-संज्ञा
(D) न कापि

14. वर्णानामदर्शने का संज्ञा भवति?
(A) अभावः
(B) संहिता
(C) लोपः
(D) संयोगः

1. (A) **2.** (C) **3.** (B) **4.** (D) **5.** (A) **6.** (C) **7.** (B) **8.** (A) **9.** (D) **10.** (B) **11.** (C) **12.** (A) **13.** (C) **14.** (C)

15. 'डुकृञ् करणे' धातौ अन्तिमस्य 'ञ्' वर्णस्य इत्संज्ञा केन सूत्रेण भवति?
(A) हलन्त्यम् (B) तस्य लोपः
(C) आदिर्ञिटुडवः (D) उपदेशेऽजनुनासिक इत्

16. स्वराणाम् आभ्यन्तरप्रयत्नं किम् ?
(A) स्पृष्टम् (B) ईषत्स्पृष्टम्(C) विवृतम् (D) संवृतम्

17. ईषद्- विवृतप्रयत्नाः वर्णाः सन्ति?
(A) य, र, ल, व (B) ग, ज, ड, द, ब
(C) श, ष, स, ह (D) अ, इ, उ, ए

18. वकारस्य उच्चारणस्थानं वर्तते।
(A) कण्ठतालू (B) कण्ठौष्ठम्
(C) दन्तोष्ठम् (D) मूर्धा

19. सुबन्तानां तिङन्तानां च का संज्ञा?
(A) संहिता (B) अवसानम्
(C) पदम् (D) इत्

20. व्याकरणे संहिता पदेन सूच्यते?
(A) सन्धिः (B) समासः
(C) लोपः (D) कारकः

21. इत्संज्ञाविधायकं सूत्रमस्ति-
(A) अदर्शनं लोपः (B) आदिरन्त्येन सहेता
(C) हलन्त्यम् (D) तस्य लोपः

22. संयोगसंज्ञा भविष्यति-
(A) द्वयोः स्वरयोः मध्ये (B) द्वयोः व्यञ्जनयोः मध्ये
(C) द्वयोः वाक्ययोः मध्ये (D) द्वयोः पदयोः मध्ये

23. अधोलिखितानां कस्मिन् पदे संहिता संज्ञा प्रयुक्ता?
(A) उपेन्द्रः (B) रामस्य
(C) कमलम् (D) अचलः

24. 'त' - वर्गस्य उच्चारणस्थानमस्ति-
(A) ओष्ठौ (B) तालु (C) दन्ताः (D) कण्ठः

25. निम्नलिखितेषु पदसंज्ञकः शब्दः अस्ति-
(A) लता (B) हरि (C) गुरु (D) भानु

26. विसर्गस्य उच्चारणस्थानमस्ति-
(A) तालु (B) कण्ठः
(C) कण्ठोष्ठौ (D) दन्ताः

27. सवर्णसंज्ञा भवति-
(A) मुखनासिकावचनयोः (B) द्वयोः स्वरितयोः
(C) द्वयोः अनुदात्तयोः (D) तुल्यास्यप्रयत्नयोः

28. निम्नलिखितवर्णेषु ईषत्स्पृष्टाः वर्णाः चेतव्याः -
(A) क, ख, ग, घ (B) य, व, र, ल,
(C) अ, इ, उ, ऋ (D) श, ष, स, ह

29. अ-क-ख-ग-घ- एतेषामुच्चारणस्थानं किम् ?
(A) तालुः (B) मूर्धा
(C) कण्ठः (D) नासिका

30. मूर्धा उच्चारणस्थानं कथ्यते –
(A) 'ल' वर्णस्य (B) 'र' वर्णस्य
(C) 'य' वर्णस्य (D) 'न' वर्णस्य

31. व्यञ्जनवर्णस्य इत्संज्ञकं सूत्रं निर्धारयत-
(A) उपदेशेऽजनुनासिक इत् (B) हलन्त्यम्
(C) इतश्च (D) इतश्च लोपः

32. संयोगसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?
(A) संयोगान्तस्य लोपः (B) संयोगे गुरुः
(C) हलोऽनन्तराः संयोगः (D) अलोऽन्त्यस्य

33. 'संहिता' इत्यस्याः संज्ञाविधायकं सूत्रं निर्धारयत-
(A) संयोगान्तस्य लोपः (B) परः सन्निकर्षः
(C) संहितैकपदे (D) सुप्तिङन्तम्

34. 'यण्' प्रत्याहारस्य वर्णानां का संज्ञा भवति?
(A) ऊष्मसंज्ञा (B) अन्तःस्थसंज्ञा
(C) जिह्वामूलीयसंज्ञा (D) कण्ठोष्ठसंज्ञा

35. आभ्यन्तरप्रयत्नः कतिविधः?
(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) सप्तविधः (D) पञ्चविधः

36. स्वराः कति ?
(A) पञ्च (B) अष्टौ
(C) एकादश (D) नव

37. अज्झिरव्यवहिताः हलः सन्ति-
(A) महाप्राणसंज्ञकाः (B) सवर्णसंज्ञकाः
(C) संयोगसंज्ञकाः (D) पदसंज्ञकाः

38. वर्णानाम् उच्चारणस्थानानां च सुमेलनं कृत्वा समीचीनं समूहं चिनुत-

(1)	च्	(अ) मूर्धा
(2)	ल्	(ब) दन्ताः
(3)	र्	(स) दन्तोष्ठम्
(4)	व्	(द) तालु

	(1)	(2)	(3)	(4)
(A)	अ	ब	स	द
(B)	स	द	ब	अ
(C)	द	ब	अ	स
(D)	द	अ	ब	स

15. (A) **16.** (C) **17.** (C) **18.** (C) **19.** (C) **20.** (A) **21.** (C) **22.** (B) **23.** (A) **24.** (C) **25.** (A)
26. (B) **27.** (D) **28.** (B) **29.** (C) **30.** (B) **31.** (B) **32.** (C) **33.** (B) **34.** (B) **35.** (D) **36.** (D)
37. (C) **38.** (C)

39. तुल्यास्यप्रयत्नं किम्?
(A) सवर्णम् (B) वृद्धिः
(C) संयोगः (D) लोपः

40. 'विसर्जनीयस्य सः' सूत्रेण विधीयते-
(A) सकारस्य लोपः (B) विसर्गस्य सकारः
(C) सकारस्य विसर्गः (D) विसर्गस्य अनुस्वारः

41. ईदूदेदन्तं द्विवचनं स्यात्-
(A) प्लुतसंज्ञम् (B) सवर्णसंज्ञम्
(C) घिसंज्ञम् (D) प्रगृह्यसंज्ञम्

42. माहेश्वरसूत्राणि सन्ति-
(A) चत्वारिंशत् (B) चतुर्दश
(C) चतस्रः (D) चत्वारः

43. 'ञ् , म् , ङ् , ण् , न् ' इति वर्णानाम् उच्चारणस्थानं भवति
(A) नासिका (B) मूर्धा
(C) कण्ठः (D) तालुः

44. 'श' वर्णस्य उच्चारणस्थानं किमस्ति?
(A) मूर्धा (B) तालु
(C) दन्ताः (D) कण्ठः

45. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क)	शकारः	(i)	दन्त्यम्
(ख)	सकारः	(ii)	मूर्धन्यः
(ग)	षकारः	(iii)	कण्ठ्यः
(घ)	गकारः	(iv)	तालव्यः

	(क)	**(ख)**	**(ग)**	**(घ)**
(A)	iii	ii	iv	i
(B)	ii	iii	i	iv
(C)	iii	i	iv	ii
(D)	iv	i	ii	iii

46. 'उ' स्वरस्य उच्चारणस्थानं भवति –
(A) कण्ठः (B) तालु
(C) मूर्धा (D) ओष्ठौ

47. 'ऋ' स्वरस्य उच्चारणस्थानं भवति –
(A) दन्ताः (B) जिह्वा (C) मूर्धा (D) कण्ठः

48. 'चवर्गस्य' उच्चारणस्थानं भवति –
(A) मुखम् (B) हस्तौ
(C) तालु (D) दन्ताः

49. 'य' वर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते –
(A) कण्ठः (B) मूर्धा
(C) तालु (D) दन्ताः

50. 'ऌ' वर्णस्य उच्चारणस्थानं भवति –
(A) नासिका (B) दन्ताः
(C) ओष्ठौ (D) कण्ठः

51. 'ओ' स्वरवर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते –
(A) कण्ठोष्ठम् (B) दन्तोष्ठम्
(C) कण्ठतालु (D) जिह्वामूलम्

52. ऊष्मवर्णः वर्तते –
(A) र् (B) ह् (C) प् (D) व्

53. 'व' व्यञ्जनस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति –
(A) कण्ठोष्ठम् (B) कण्ठ - तालु
(C) दन्तोष्ठम् (D) जिह्वामूलम्

54. तवर्गस्य उच्चारणस्थानं भवति –
(A) नासिका (B) मूर्धा
(C) कण्ठः (D) दन्ताः

55. 'अ' स्वरस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति –
(A) ओष्ठौ (B) कण्ठः
(C) दन्ताः (D) मुखम्

56. 'मूर्धा' उच्चारणस्थानम् अस्ति –
(A) वकारस्य (B) षकारस्य
(C)ककारस्य (D) पकारस्य

57. 'ए' स्वरवर्णस्य उच्चारणस्थानं भवति –
(A) कण्ठोष्ठम् (B) दन्तोष्ठम्
(C) कण्ठतालु (D) नासिका

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *

39. (A) **40.** (B) **41.** (D) **42.** (B) **43.** (A) **44.** (B) **45.** (D) **46.** (D) **47.** (C) **48.** (C) **49.** (C)
50. (B) **51.** (A) **52.** (B) **53.** (C) **54.** (D) **55.** (B) **56.** (B) **57.** (C)

(ख) सन्धि प्रकरण

- सम् + √धा + कि = सन्धिः (पुँल्लिङ्ग)
- 'सन्धि' शब्द का अर्थ है- मेल या योग अर्थात् मिलना।
- **''वर्णानां परस्परं विकृतिमत् सन्धानं सन्धिः''** अर्थात् वर्णों का आपस में विकारसहित मिलना 'सन्धि' कहलाता है। 'विकृति' का मतलब है- वर्णपरिवर्तन।
- इसप्रकार दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे 'सन्धि' कहते हैं।

जैसे-

(i) रमा + ईशः = रमेशः
(ii) रम् आ ईशः (आ + ई का मेल)
(iii) रम् ए शः (आ + ई = 'ए' हो गया)
(iv) रमेशः (गुण सन्धि)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरण में रमा के 'मा' में विद्यमान 'आ' तथा ईशः का 'ई' मिलकर 'ए' (वर्णपरिवर्तन) हो गया।
यह वर्णविकार या वर्णपरिवर्तन ही सन्धि है।

- **संहिता-** 'सन्धि' के लिए अनिवार्य तत्त्व है- संहिता।

सूत्र - ''परः सन्निकर्षः संहिता''
अर्थात् दो वर्णों का अत्यन्त सन्निकट हो जाना ही 'संहिता' है।

- 'संहिता' के विषय में व्याकरणशास्त्र में एक नियम प्रसिद्ध है कि-

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

(i) संहिता (सन्धि) एक पद में नित्य होती है।

जैसे-

नै + अकः = नायकः
पौ + अकः = पावकः
भो + अनम् = भवनम्

(ii) उपसर्ग और धातु में संहिता नित्य (अनिवार्य) होती है-

जैसे-

नि + अवसत् = न्यवसत्
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
अधि + आगच्छति = अध्यागच्छति

(iii) सामासिक पदों में संहिता अनिवार्य (नित्य) होगी-

जैसे-

देवस्य आलयः (सामासिक विग्रह)
देव + आलयः = देवालयः
कृष्णस्य अस्त्रम् (सामासिक विग्रह)
कृष्ण + अस्त्रम् = कृष्णास्त्रम्

(iv) वाक्य में संहिता (सन्धि) विवक्षाधीन होती है अर्थात् आपकी इच्छा के अधीन है कि आप चाहें तो सन्धि करें या चाहें तो न करें-

जैसे-

☆ रामः गच्छति वनम्। (सन्धि नहीं हुई)
रामो गच्छति वनम्। (सन्धि कार्य हुआ)
☆ अत्र कः अस्ति। (सन्धि नहीं हुई)
अत्र कोऽस्ति (सन्धि हुई)
☆ द्वाविंशे एव वर्षे इन्दुमती अधिजगाम स्वर्गम्। (सन्धि नहीं हुई)

- **सन्धि विच्छेद-** सन्धि युक्त वर्णों को अलग-अलग करना ही सन्धि विच्छेद है।

सन्धि = मिलना **विच्छेद** = अलग करना।
जैसे- 'गणेशः' का सन्धिविच्छेद होगा = गण + ईशः।
'विद्यार्थी' का विच्छेद होगा = विद्या + अर्थी।

- **सन्धि में क्या होगा-----?**

1. दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण हो जाता है-

जैसे-

रवि + ईशः = रवीशः (इ+ई=ई)
सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः (अ+इ=ए)
सदा + एव = सदैव (आ+ए=ऐ)

'एकः पूर्वपरयोः' (6.1.84)- पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश होगा।

2. दो वर्णों के निकट आने से केवल पूर्व वर्ण में ही विकार (परिवर्तन) होता है।

जैसे-

इति + आदिः = इत्यादिः (इ के स्थान पर य्)
मधु + अरिः = मध्वरिः (उ के स्थान पर व्)
ने + अनम् = नयनम् (ए के स्थान पर अय्)

'एकस्थाने एकादेशः' - एक के स्थान पर एक आदेश होगा।

3. दो वर्णों में से किसी वर्ण का लोप हो जाता है-

जैसे- रामः आगच्छति = राम आगच्छति (विसर्ग का लोप)
दोषो अस्ति = दोषोऽस्ति (अकार का लोप)

4. दो वर्णों में से किसी एक वर्ण का द्वित्व हो जाना।
जैसे- एकस्मिन् + अवसरे = एकस्मिन्नवसरे

5. कभी कभी दोनों वर्णों में साथ-साथ परिवर्तन होगा–
जैसे- तत् + शिवः = तच्छिवः

यहाँ 'त् + श्' वर्णों में सन्धि हुई तो त् को 'च्' तथा श् को 'छ्' हो गया।

6. कभी कभी दोनों वर्णों के बीच कोई तीसरा वर्ण चला आएगा– जैसे- वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
यहाँ 'क्ष' एव 'छ' के बीच 'च्' के रूप में एक नया वर्ण आ गया।

सन्धि के प्रकार

सन्धि तीन प्रकार की होती है-

(1) स्वर सन्धि (अच् सन्धि)

- स्वर + स्वर = स्वरसन्धि
- दो स्वरों के निकट आने से जो परिवर्तन (विकार) होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।
- संक्षेप में स्वर के स्थान पर होने वाले आदेश को ही स्वर सन्धि कहेंगे।

(i) इति + अलम् = **इत्यलम्** (इ+अ)
(ii) कवि + इन्द्रः = **कवीन्द्रः** (इ+इ)
(iii) नर + ईशः = **नरेशः** (अ+ई)
(iv) तव + एव = **तवैव** (अ +ए)
(v) पो + इत्रम् = **पवित्रम्** (ओ+इ)

- अर्थात् स्वर वर्ण का स्वर वर्ण के साथ मेल स्वर सन्धि है।
- स्वर सन्धि को **अच् सन्धि** भी कहा जाता है; क्योंकि 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत ही सभी स्वर आते हैं।

(2) व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)

- व्यञ्जन + स्वर = व्यञ्जन सन्धि
  व्यञ्जन + व्यञ्जन = व्यञ्जन सन्धि
- व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होगा, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।
- संक्षेप में व्यञ्जन (हल्) के स्थान पर होने वाले आदेश को ही व्यञ्जन सन्धि कहेंगे।

जैसे- वाक् + ईशः = **वागीशः** (हल् + अच् = क् + ई)
जगत् + ईशः = **जगदीशः** (हल् + अच् = त् + ई)
तत् + लयः = **तल्लयः** (हल् + हल् = त् + ल्)
सत् + जनः = **सज्जनः** (हल् + हल् = त् + ज्)

स्पष्ट है कि उपर्युक्त उदाहरणों में व्यञ्जन के बाद स्वर तथा व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन वर्ण आये हैं; अतः यहाँ व्यञ्जन सन्धि है।

(3) विसर्ग सन्धि

: + स्वर = विसर्ग सन्धि।
: + व्यञ्जन = विसर्ग सन्धि।

- जब विसर्ग के बाद कोई स्वर या व्यञ्जन वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर जो विकार (परिवर्तन) होगा, वह विसर्ग सन्धि कही जायेगी। विसर्ग के बाद विसर्ग नहीं आएगा क्योंकि विसर्ग से किसी शब्द का प्रारम्भ नहीं होता।
- संक्षेप में ऐसा कह सकते हैं कि विसर्ग के स्थान पर होने वाले आदेश को ही विसर्ग सन्धि कहेंगे।

जैसे-
बालकः + गच्छति = **बालको गच्छति।** (: + व्यञ्जन)
नमः + करोति = **नमस्करोति** (: + व्यञ्जन)
अलिः + अयम् = **अलिरयम्** (: + स्वर)
यहाँ विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन आ रहा है अतः विसर्ग सन्धि है।

1. स्वर सन्धि (अच् सन्धि) -

- पूर्व तथा पर स्वरों के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वरसन्धि कहेंगे। जैसे-
  हिम + आलयः = हिमालयः (अ + आ)
  उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः (अ + इ)

स्पष्टीकरण- यहाँ प्रथम उदाहरण में पूर्व वर्ण है हिम के 'म' में विद्यमान - 'अ' तथा पर वर्ण है आलयः का 'आ'।
इसीप्रकार दूसरे उदाहरण में - उप के प में विद्यमान 'अ' पूर्ववर्ण है तथा इन्द्रः का 'इ' परवर्ण है। अतः यहाँ स्वर सन्धि हो रही है।

स्वरसन्धि के प्रमुख भेद

1. दीर्घ सन्धि

सूत्र- अकः सवर्णे दीर्घः (6.1.101)
सूत्रार्थ- अकः - 'अक्' एक प्रत्याहार है जिसमें पाँच वर्ण आते हैं- अ इ उ ऋ ऌ इसी प्रत्याहार से इनके दीर्घ वर्णों (आ ई ऊ ॠ) का भी बोध होगा।
सवर्णे - सवर्ण अक् (अ इ उ ऋ ऌ) आने पर।
दीर्घः - दीर्घ आदेश (आ ई ऊ ॠ) हो जाता है।
'ऌ' वर्ण का दीर्घ नहीं होता अतः उसका सवर्णी 'ॠ' हो जाता है।
संक्षेप में- अक् + अक् = दीर्घ

अकः (पूर्व वर्ण)	सवर्णे (पर वर्ण)	दीर्घः (आदेश वर्ण)
अ आ	अ आ	आ
इ ई	इ ई	ई
उ ऊ	उ ऊ	ऊ
ऋ ॠ	ऋ ॠ	ॠ

- दीर्घ सन्धि में केवल पाँच वर्णों (अ, इ, उ, ऋ ऌ) में ही सन्धि कार्य होगा।
- ह्रस्व और दीर्घ स्वरों का मिलना चार प्रकार से हो सकता है-
  (i) अ + अ = आ। जैसे- अद्य + अपि = **अद्यापि**
  (ii) आ + आ = आ। जैसे- विद्या + आलयः = **विद्यालयः**
  (iii) अ + आ = आ। जैसे- हिम + आलयः = **हिमालयः**
  (iv) आ + अ = आ। जैसे- विद्या + अर्थी = **विद्यार्थी**
  इसीप्रकार इ, उ, ऋ, ऌ में भी चार प्रकार से दीर्घ सन्धि हो सकती है।

दीर्घ सन्धि के उदाहरण

1. हिम + आलयः (सन्धि विच्छेद)
   हिम् अ + आलयः (वर्ण विच्छेद)
   हिम् आ लयः (दो वर्णों के स्थान पर दीर्घ 'आ' आदेश)
   हिमालयः (सन्धियुक्त पद)
   - उपर्युक्त उदाहरण में 'हिम' के म में विद्यमान 'अ' आलयः के 'आ' से मिलकर दीर्घ 'आ' हो गया।

2. पुस्तक + आलयः (अ + आ = आ)
   पुस्तक् अ + आलयः
   पुस्तक् आ लयः
   = पुस्तकालयः

3. रवि + इन्द्रः (इ + इ = ई)
   रव् इ + इन्द्रः
   रव् ई न्द्रः
   = रवीन्द्रः

4. भानु + उदयः (उ + उ = ऊ)
   भान् उ + उदयः
   भान् ऊ दयः
   = भानूदयः

5. मातृ + ऋणम् (ऋ + ऋ = ॠ)
   मात् ऋ + ऋणम्
   मात् ॠ णम्
   मातृणम्

अ + अ = आ

वाचन + आलयः = **वाचनालयः** देव + आलयः = **देवालयः**
शस्त्र + आगारः = **शस्त्रागारः** विद्या + आलयः = **विद्यालयः**

इ + इ = ई

कपि + ईशः = **कपीशः** इति + इव = **इतीव**
गौरी + ईशः = **गौरीशः** नदी + ईशः = **नदीशः**
मुनि + इन्द्रः = **मुनीन्द्रः** परि + ईक्षा = **परीक्षा**
श्री + ईशः = **श्रीशः** हरि + ईशः = **हरीशः**
मही + इन्द्रः = **महीन्द्रः** भूमि + ईशः = **भूमीशः**
गिरि + ईशः = **गिरीशः** पृथ्वी + ईशः = **पृथ्वीशः**

उ + उ = ऊ

वधू + उत्सवः = **वधूत्सवः** सु + उक्तिः = **सूक्तिः**
लघु + ऊर्मिः = **लघूर्मिः** भू + ऊर्ध्वम् = **भूर्ध्वम्**
विधु + उदयः = **विधूदयः** विष्णु + उदयः = **विष्णूदयः**
गुरु + उपदेशः = **गुरूपदेशः** गुरु + उत्साहः = **गुरूत्साहः**
साधु + उक्तम् = **साधूक्तम्** साधु + उदयः = **साधूदयः**
भू + ऊर्जा = **भूर्जा** वधू + उल्लासः = **वधूल्लासः**

ऋ + ऋ = ॠ

मातृ + ऋणम् = **मातॄणम्** मातृ + ऋकारः = **मातॄकारः**
पितृ + ऋणम् = **पितॄणम्** पितृ + ऋषभः = **पितॄषभः**
होतृ + ऋकारः = **होतॄकारः** मातृ + ऋद्धिः = **मातॄद्धिः**
होतृ + ऌकारः = **होतॄकारः** कृ + ऋकारः = **कॄकारः**

2. गुण सन्धि

सूत्र- आद्गुणः (6.1.87)
सूत्रार्थ- अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ आयें तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् हो जाता है।
संक्षेप में कहें तो - आत् + अचि = गुण

पूर्ववर्ण + परवर्ण = सन्धिवर्ण
(i) अ/आ + इ/ई = ए
(ii) अ/आ + उ/ऊ = ओ
(iii) अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
(iv) अ/आ + ऌ = अल्

गुण सन्धि के उदाहरण

1. उप + इन्द्रः (सन्धि विच्छेद)
   उप् अ + इन्द्रः (वर्ण विच्छेद)
   उप् ए न्द्रः (अ + इ = ए)

2. हित + उपदेशः
हित् अ + उपदेशः
हित् ओ पदेशः
हितोपदेशः

3. देव + ऋषिः
देव् अ + ऋषिः
देव् अर् षिः (अ + ऋ = अर्)
देवर्षिः

4. तव + ऌकारः
तव् अ + ऌकारः
तव् अल् कारः
तवल्कारः

गुणसन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ + इ = ए

सुर + ईशः = **सुरेशः**	कमल + ईशः = **कमलेशः**
राजा + इन्द्रः = **राजेन्द्रः**	गङ्गा + ईशः = **गङ्गेशः**
रमा + ईशः = **रमेशः**	दिन + ईशः = **दिनेशः**
गण + ईशः = **गणेशः**	महा + ईश्वरः = **महेश्वरः**
महा + इन्द्रः = **महेन्द्रः**	न + इयम् = **नेयम्**
उमा + ईशः = **उमेशः**	अम्बिका + ईशः = **अम्बिकेशः**

अ + उ = ओ

महा + उत्सवः = **महोत्सवः**	गङ्गा + उदयः = **गङ्गोदयः**
पीन + ऊरुः = **पीनोरुः**	जल + ऊर्मिः = **जलोर्मिः**
गङ्गा + ऊर्मिः = **गङ्गोर्मिः**	नर + उत्तमः = **नरोत्तमः**
सूर्य + उदयः = **सूर्योदयः**	पर + उपदेशः = **परोपदेशः**
सूर्य + ऊष्मा = **सूर्योष्मा**	नील + उत्पलम् = **नीलोत्पलम्**

अ + ऋ = अर्

महा + ऋषिः = **महर्षिः**	सप्त + ऋषिः = **सप्तर्षिः**
ग्रीष्म + ऋतुः = **ग्रीष्मर्तुः**	हेमन्त + ऋतुः = **हेमन्तर्तुः**
वसन्त + ऋतुः = **वसन्तर्तुः**	शीत + ऋतुः = **शीतर्तुः**
वर्षा + ऋतुः = **वर्षर्तुः**	वेद + ऋचः = **वेदर्चः**

अ + ऌ = अल्

तव + ऌकारः = **तवल्कारः** मम + ऌकारः = **ममल्कारः**

शंका 1- अ के बाद इ आने पर 'ए' ही क्यों होता है?
समाधान
(i) क्योंकि 'अदेङ् गुणः' सूत्र से ''अ, ए, ओ'' ये तीन वर्ण ही गुणसंज्ञक हैं इसलिए -
(ii) अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ
इ का उच्चारणस्थान है- तालु
इसीलिए अ+इ=ए हुआ क्योंकि 'ए' का उच्चारणस्थान है- कण्ठतालु
''एदैतोः कण्ठतालु''

शंका 2- अ के बाद उ आने पर 'ओ' ही क्यों होता है?
समाधान- चूँकि गुणसंज्ञक वर्ण तीन ही होते हैं- अ, ए, ओ। गुणसन्धि में गुणवर्ण ही होंगे। इसका भी जवाब पहले जैसा ही है।
अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ
उ का उच्चारणस्थान है- ओष्ठ
इसीलिए अ+उ=ओ होगा क्योंकि 'ओ' का उच्चारणस्थान हैं- कण्ठोष्ठ। **'ओदौतोः कण्ठोष्ठम्'**

➢ इसीप्रकार अ+ऋ के बाद अ होगा। 'अ' गुण वर्ण है। परन्तु एक सूत्र है **''उरण् रपरः''** जो कहता है कि यदि ऋ या ऌ के स्थान पर अ, इ, उ आदेश होगा तो रेफ या लकार के साथ होगा। अतः यहाँ जो अ+ऋ के स्थान पर 'अ' आदेश है पर रेफ के साथ मिलकर 'अर्' हो जाएगा।
इसीप्रकार अ+ऌ = अल् हो आएगा।

3. वृद्धि सन्धि

सूत्र- वृद्धिरेचि (6.1.88)
सूत्रार्थ- जब अ या आ के बाद ए या ऐ आये तो = **ऐ**
और ओ या औ वर्ण के आने पर = **औ** हो जाता है।
संक्षेप में -
आत् + एचि = वृद्धि
अ/आ + ए/ऐ = ऐ
अ/आ + ओ/औ = औ

➢''वृद्धिरादैच्'' सूत्र से वृद्धिसंज्ञक तीन वर्ण बताये गये हैं- आ, ऐ, औ। अतः वृद्धि सन्धि में पूर्व और पर दोनों वर्णों के मिलने से वृद्धि (आ, ऐ, औ) वर्ण ही होंगे।

वृद्धि सन्धि का सूत्र है- वृद्धिरेचि। इस सूत्र का अर्थ करने के लिए 'आद्गुणः' से 'आत्' पद ले लेंगे।
तो अर्थ होगा- **आत् + एचि = वृद्धिः।**

अ/आ + ए ओ ऐ औ = ऐ औ

वृद्धि सन्धि के उदाहरण -

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

(i) सदा + एव (सन्धि विच्छेद)
(ii) सद् आ + एव (वर्ण विच्छेद)
(iii) सद् ऐ व (आ + ए = ऐ)
(iv) **सदैव** (सन्धियुक्त पद)
उपेन्द्रः (गुणसन्धि)

अ आ + ओ औ = औ

(i) जल + ओघः (सन्धि विच्छेद)
(ii) जल् अ + ओघः
(iii) जल् औ घः (अ + ओ = औ)
(iv) **जलौघः** (सन्धि पद)

वृद्धि सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ आ + ए ऐ = ऐ

न + एवम् = **नैवम्** अद्य + एव = **अद्यैव**
या + एवम् = **यैवम्** अत्र + एव = **अत्रैव**
लता + एषा = **लतैषा** एक + एकम् = **एकैकम्**
देव + ऐश्वर्यम् = **देवैश्वर्यम्** तथा + एव = **तथैव**
मत + ऐक्यम् = **मतैक्यम्** तदा + एव = **तदैव**
धन + एषणा = **धनैषणा** मम + एव = **ममैव**
पञ्च + एते = **पञ्चैते** न + एतत् = **नैतत्**
विद्या + ऐश्वर्यम् = **विद्यैश्वर्यम्** तत्र + एव = **तत्रैव**

अ आ + ओ औ = औ

वन + औषधिः = **वनौषधिः** परम + औषधिः = **परमौषधिः**
देव + औदार्यम् = **देवौदार्यम्** महा + ओजस्वी + **महौजस्वी**
महा + औषधिः = **महौषधिः** गङ्गा + ओघः = **गङ्गौघः**
वन + ओकसः = **वनौकसः** उष्ण + ओदनम् = **उष्णौदनम्**
पुष्प + ओकः = **पुष्पौकः** कृष्ण + औत्कण्ठ्यम् = **कृष्णौत्कण्ठ्यम्**
कन्या + ओदनम् = **कन्यौदनम्** यमुना + ओघः = **यमुनौघः**

4. यण् सन्धि

सूत्र- इको यणचि (6.1.77)
इस सूत्र में तीनों पद प्रत्याहार हैं-
इक् = इ उ ऋ ऌ
यण् = य् व् र् ल्
अच् = अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ
सूत्रार्थ- यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ इक् के बाद कोई भी असमान अच् (स्वर) आये तो इ के स्थान पर य्, उ के स्थान पर व्, ऋ के स्थान पर 'र्', 'ऌ' के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।
संक्षेप में कहें तो-

इक् + अच् = यण्

इ/ई + स्वर = य्
उ/ऊ + स्वर = व्
ऋ/ॠ + स्वर = र्
ऌ + स्वर = ल्

नोट- ध्यान रहे पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एकादेश नहीं होगा केवल इक् (इ उ ऋ ऌ) के स्थान पर क्रमशः यण् (य् व् र् ल्) होगा।

यण् सन्धि के उदाहरण

इ ई + अच् = य्

(1) इति + आदिः (सन्धि विच्छेद)
इत् इ + आदिः (वर्ण विच्छेद)
इत् य् + आदिः (इ + अच् = य्)
इत्यादिः (सन्धियुक्त पद)
(2) मधु + अरिः
मध् उ + अरिः
मध् व् अरिः
मध्वरिः
(3) पितृ + आदेशः
पित् ऋ + आदेशः
पित् र् आदेशः
पित्रादेशः
(4) ऌ + आकृतिः **(5)** घस्ऌ + आदेशः = **घस्लादेशः**
ल् + आकृतिः **(6)** ऌ + आदेशः = **लादेशः**
लाकृतिः **(7)** ऌ + आकारः = **लाकारः**

यण् सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

इ/ई के स्थान पर 'य्'

यदि + अपि = **यद्यपि** अति + अधिकम् = **अत्यधिकम्**
सुधी + उपास्यः = **सुध्युपास्यः** अति + अन्तम् = **अत्यन्तम्**
नदी + ऊर्मिः = **नद्यूर्मिः** अति + आचारः = **अत्याचारः**
अभि + उदयः = **अभ्युदयः** अति + उत्तमः = **अत्युत्तमः**

उ/ऊ के स्थान पर 'व्'

सु + आगतम् = **स्वागतम्** अनु + अयः = **अन्वयः**
वधू + आदेशः = **वध्वादेशः** गुरु + आदेशः = **गुर्वादेशः**

ऋ / ॠ के स्थान पर र्

धातृ + अंशः = **धात्रंशः** मातृ + आज्ञा = **मात्राज्ञा**
पितृ + आज्ञा = **पित्राज्ञा** मातृ + उपदेशः = **मात्रुपदेशः**

5. अयादि सन्धि (अयवायाव सन्धि)

सूत्र- 'एचोऽयवायावः' (6.1.78)

सूत्रार्थ 'एचः' यह प्रत्याहार है, जिसमें ए, ओ, ऐ, औ- ये चार वर्ण आते हैं।

- अय् अव् आय् आव् - ये चार आदेश वर्ण हैं।
- इसप्रकार ए ओ ऐ औ (एच्) के बाद कोई स्वर वर्ण (अच्) आयें तो 'ए' के स्थान पर '**अय्**' ओ के स्थान पर '**अव्**' 'ऐ' के स्थान पर '**आय्**' औ के स्थान पर '**आव्**' होगा।

संक्षेप में- **एच् + अचि = अयवायावः**
ए + अच् = अय्
ओ + अच् = अव्
ऐ + अच् = आय्
औ + अच् = आव्

ध्यान दें- ए + अच् दोनों के स्थान पर 'अय्' आदेश नहीं हो रहा है; केवल 'ए' के स्थान पर 'अय्' होगा।

अयादि सन्धि के उदाहरण-

ए + अच् = अय्

1.चे + अनम् (सन्धिविच्छेद)
च् ए + अनम् (वर्ण विच्छेद)
च् अय् अनम् (ए के स्थान पर 'अय्')
चयनम् (सन्धियुक्त पद)

2. ने + अनम् = **नयनम्** कवे + ए = **कवये**
3. शे + अनम् = **शयनम्** शे + आनः = **शयानः**
4. हरे + ए = **हरये** हरे + इह = **हरयिह**
5. मुने + ए = **मुनये** क्रे + अनम् = **क्रयणम्**

ओ + अच् = अव्

1. पवनः
पो + अनः सन्धिविच्छेद
प् ओ + अनः वर्णविच्छेद
प् अव् + अनः 'ओ' के स्थान पर 'अव्'
पवनः सन्धियुक्त पद बना।

2. भो + अनम् = **भवनम्** गो + ईश्वरः = **गवीश्वरः**
3. साधो + ए = **साधवे** गो + ईशः = **गवीशः**
4. श्रो + अनम् = **श्रवणम्** वटो + ऋक्षः = **वटवृक्षः**
5. लो + अनम् = **लवणम्** स्तो + अनम् = **स्तवनम्**
6. गुरो + ए = **गुरवे** गो + इच्छा = **गविच्छा**
7. भो + अति = **भवति** गो + उदयः = **गवुदयः**
8. गो + एषणा = **गवेषणा** श्रो + अनः = **श्रवणः**
9. पो + इत्रम् = **पवित्रम्** लो + इत्रम् = **लवित्रम्**

ऐ + अच् = आय्

1. नै + अकः सन्धि विच्छेद
न् ऐ + अकः वर्ण विच्छेद
न् आय् अकः 'ऐ' के स्थान पर 'आय्'
नायकः सन्धियुक्त पद

2. गै + इका = **गायिका** नै + इका = **नायिका**
3. शै + अकः = **शायकः** श्रियै + उत्सुकः = **श्रियायुत्सुकः**
4. दै + अकः = **दायकः** गै + अति = **गायति**
5. गै + अनम् = **गायनम्** गै + अन्ति = **गायन्ति**
6. गै + अकः = **गायकः** ग्लै + अति = **ग्लायति**

औ + अच् = आव्

1. पौ + अकः (सन्धिविच्छेद)
प् औ + अकः (वर्णविच्छेद)
प् आव् + अकः (औ के स्थान पर 'आव्' आदेश)
पावकः (सन्धियुक्त पद)

2. एतौ + अपि = **एतावपि** अग्नौ + इह = **अग्नाविह**
3. द्वौ + एव = **द्वावेव** उभौ + एतौ = **उभावेतौ**
4. बालकौ + अपि = **बालकावपि** तौ + अपि = **तावपि**
5. पौ + अनः = **पावनः** द्वौ + अपि = **द्वावपि**
6. भौ + उकः = **भावुकः** तौ + अत्र = **तावत्र**
7. नौ + इकः = **नाविकः** करौ + एतौ = **करावेतौ**

6.पूर्वरूप सन्धि

सूत्र- एङः पदान्तादति (6.1.109)

सूत्रार्थ - जब पदान्त ए या ओ के बाद ह्रस्व 'अ' आये तो 'अ' को पूर्वरूप हो जाता है।

सूत्र विश्लेषण- एङ् = ए, ओ (यह एक प्रत्याहार है)
पदान्तात् = पद के अन्त में
अति = ह्रस्व 'अ' के आने पर

पूर्वरूप- अपने रूप को छोड़कर पूर्व वर्ण जैसा हो जाना- पूर्वरूप है। अर्थात् 'अ' वर्ण ए या ओ में जाकर मिल जायेगा,

और ह्रस्व 'अ' की जगह अवग्रह (ऽ) का चिह्न लग जाता है।

संक्षेप में - पदान्त एङ् + अ = पूर्वरूप

ए/ओ + अ = ऽ

पूर्वरूप सन्धि के उदाहरण

हरे + अव (सन्धिविच्छेद)

हर् ए + अव (वर्ण विच्छेद)

हर् ए + ऽव ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ए' में मिल गया)

हरेऽव (सन्धियुक्त पद)

विष्णो + अव (सन्धिविच्छेद)

विष्ण् ओ + अव (वर्ण विच्छेद)

विष्ण् ओ ऽ व ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ओ' में मिल गया)

विष्णोऽव (सन्धियुक्त पद)

ए + अ = ऽ

रमे + अत्र = **रमेऽत्र** ते + अद्य = **तेऽद्य**

वने + अत्र = **वनेऽत्र** बालके + अपि = **बालकेऽपि**

ओ + अ = ऽ

को + अपि = **कोऽपि** नमो + अस्तु = **नमोऽस्तु**

बालको + अपि = **बालकोऽपि** को + अयम् = **कोऽयम्**

को + अवादीत् = **कोऽवादीत्** प्रभो + अहम् = **प्रभोऽहम्**

बालो + अवदत् = **बालोऽवदत्** गुरो + अत्र = **गुरोऽत्र**

7. पररूप सन्धि

सूत्र- एङि पररूपम् (6.1.94)

सूत्रार्थ- अकारान्त उपसर्ग के बाद ए या ओ (एङ्) से प्रारम्भ होने वाली धातुओं के आने पर पररूप हो जाता है।

पररूप- पर (बाद) वाले वर्ण के समान हो जाना ही पररूप है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धियुक्तवर्ण
अवर्णान्त उपसर्ग +	ए ओ से प्रारम्भ होने वाले धातुरूप	पररूप (ए, ओ के समान रूप)

पररूप सन्धि के उदाहरण

(1) प्र + एजते (सन्धि विच्छेद)

प्र् अ + एजते (वर्ण विच्छेद)

प्र् एजते (परवर्ण 'ए' में 'अ' मिल गया)

प्रेजते (सन्धियुक्त पद)

(2) उप + ओषति (सन्धि विच्छेद)

उप् अ + ओषति (वर्ण विच्छेद)

उप् अ + ओषति ('अ' जाकर परवर्ण 'ओ' में मिल गया)

उपोषति (सन्धियुक्त पद)

(3) प्र + ओषति = **प्रोषति** (4) अव + एहि = **अवेहि**

8. प्रकृतिभाव सन्धि

सूत्र- प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् (5.1.125)

सूत्रार्थ- प्लुत और प्रगृह्य संज्ञक वर्णों को प्रकृतिभाव होता है, यदि बाद में स्वर वर्ण आयें तो।

प्रकृतिभाव- प्रकृतिभाव का अर्थ है- कोई भी सन्धि न होना अर्थात् ज्यों का त्यों रहना।

संक्षेप में- प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव

उदाहरण- प्रगृह्य का प्रकृतिभाव

हरी + एतौ = **हरी एतौ**

विष्णू + इमौ = **विष्णू इमौ**

गङ्गे + अमू = **गङ्गे अमू**

पचेते + इमौ = **पचेते इमौ**

भानू + एतौ = **भानू एतौ**

प्लुत का प्रकृतिभाव

आगच्छ कृष्ण३ अत्र गौश्चरति

इ + इन्द्रः = **इ इन्द्रः**

अहो + ईशाः = **अहो ईशाः**

विशेष- दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अतः **हरी, विष्णू, गङ्गे** की प्रगृह्यसंज्ञा है। प्रगृह्यसंज्ञा होने के कारण यहाँ प्रकृतिभाव हुआ।

नहीं तो हरी +एतौ = हर्येतौ बन जाता यण् सन्धि से।

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *

Sanskritganga Official

New App Download from Google Play Store

स्वरसन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. यण् सन्धि	इको यणचि	**इक् + अच् = यण्**	
		इ/ई + अच् (असमान) =य्	यदि + अपि = यद्यपि
		उ/ऊ + अच् (असमान) = व्	मधु + अरिः = मध्वरिः
		ऋ ॠ + अच् (असमान) = र्	पितृ + आदेशः = पित्रादेशः
		ऌ + अच् (असमान) = ल्	ऌ + आकृतिः = लाकृतिः
2. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	**एच् + अच् = अयवायाव**	
		ए + अच् = अय्	ने + अनम् = नयनम्
		ओ + अच् = अव्	पो + अनः = पवनः
		ऐ + अच् = आय्	नै + अकः = नायकः
		औ + अच् = आव्	पौ + अकः = पावकः
3. गुण सन्धि	आद्गुणः	**आत् + अच् = गुण**	
		अ/आ + इ/ई = ए	रमा + ईशः = रमेशः
		अ/आ + उ/ऊ = ओ	हित + उपदेशः = हितोपदेशः
		अ/आ + ऋ/ॠ = अर्	देव + ऋषिः = देवर्षिः
		अ/आ + ऌ = अल्	तव + ऌकारः = तवल्कारः
4. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	**आत् + एच् = वृद्धि**	
		अ/आ + ए/ऐ = ऐ	सदा + एव = सदैव
			महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्
		अ/आ + ओ/औ = औ	जल + ओघः = जलौघः
			महा + औषधिः = महौषधिः
5. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	**अक् + अक् = दीर्घः**	
		अ/आ + अ/आ = आ	हिम + आलयः = हिमालयः
		इ/ई + इ/ई = ई	रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः
		उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ	भानु + उदयः = भानूदयः
		ऋ ॠ + ऋ/ॠ = ॠ	मातृ + ऋणम् = मातॄणम्
6. पूर्वरूप सन्धि	एङः पदान्तादति	**एङ् + अ = पूर्वरूप**	
		ए + अ = (ऽ) पूर्वरूप	हरे + अव = हरेऽव
		ओ + अ = (ऽ) पूर्वरूप	विष्णो + अव = विष्णोऽव
7. पररूप सन्धि	एङि पररूपम्	**अवर्णान्त उपसर्ग + एङादिधातु = पररूप**	प्र + एजते = प्रेजते
		प्र, उप + ए, ओ धातु = पररूप	उप + ओषति = उपोषति
8. प्रकृतिभाव	प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव	हरी + एतौ = हरी एतौ
		एकारान्त/ओकारान्त धातु=पररूप	विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ
			आगच्छ कृष्ण३ अत्र गौश्चरति

स्वरसन्धि के कुछ अपवाद सूत्र/वार्तिक

(1) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् (वा.) 'अक्ष' शब्द के बाद 'ऊहिनी' शब्द के आने पर पूर्व और पर दोनों के (अ+ऊ) स्थान पर वृद्धिसंज्ञक 'औ' वर्ण आदेश होता है।

अक्ष + ऊहिनी

अक्ष् अ + ऊहिनी

अक्ष् औ हिनी

अक्षौहिणी

नोट- पूर्वपदात्संज्ञायामगः (8.4.3) सूत्र से 'नकार' के स्थान पर 'णकार' आदेश होकर 'अक्षौहिणी' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

➢ अक्षौहिणी सेना होती है, जिसमें 21870 रथ, 21870 हाथी, 65610 घोड़े और 109350 पैदल सैनिक होते हैं।

(2) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु (वा.) - 'प्र' उपसर्ग के बाद ऊहः, ऊढः, ऊढिः, एषः, और एष्यः पद आयें तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण आदेश होते हैं।

(i) प्र + ऊहः

प्र् अ + ऊहः

प्र् औ हः

प्रौहः (उत्तम अर्थ करने वाला)

(ii) प्र + ऊढः

प्र् अ + ऊढः

प्र औ ढः

प्रौढः (परिपक्व)

(iii) प्र + ऊढिः

प्र् अ + ऊढिः

प्र् औ ढिः

प्रौढिः (परिपक्वता, प्रौढता)

उपर्युक्त उदाहरणों में गुण सन्धि हो रही थी, किन्तु यहाँ गुण को बाधकर वृद्धिसन्धि हो रही है।

(iv) प्र + एषः

प्र् अ + एषः

प्र् ऐ षः

प्रैषः (प्रेरणा)

(v) प्र + एष्यः

प्र् अ + एष्यः

प्र् ऐ ष्यः

प्रैष्यः (प्रेरणीय/सेवक आदि)

नोट- इन दोनों उदाहरणों में वृद्धि सन्धि तो हो रही थी किन्तु "एङि पररूपम्" सूत्र से पररूप भी प्राप्त हो रहा था। यदि पररूप हो जाता तो प्रेषः, प्रेष्यः ऐसे अशुद्ध रूप बन जाते।

(3) ऋते च तृतीयासमासे (वा.) - यदि पूर्व में अवर्ण हो और बाद में 'ऋत' शब्द हो और दोनों शब्दों में तृतीया तत्पुरुष समास हुआ हो तो पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

सुखेन ऋतः = **सुखार्तः** (तृतीया तत्पुरुष समास)

सुख + ऋतः = **सुखार्तः** (सुख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

दुःख + ऋतः = **दुःखार्तः** (दुःख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

कष्ट + ऋतः = **कष्टार्तः** (कष्ट से युक्त) - वृद्धिसन्धि

किन्तु परमश्चासौ ऋतः = परमर्तः यहाँ वृद्धि नहीं हुई क्योंकि यहाँ तृतीया तत्पुरुष समास नहीं, बल्कि कर्मधारय समास है।

परम + ऋतः = परमर्तः (गुण सन्धि)

4. प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे (वार्तिक)- प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण तथा दश- इन छह शब्दों के बाद यदि 'ऋण' शब्द आये तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

(i) प्र + ऋणम्

प्र् अ + ऋणम्

प्र आर् णम्

प्रार्णम् (अधिक ऋण)

(ii) वत्सतर + ऋणम् = **वत्सतरार्णम्** (बछड़े के लिए ऋण)

(iii) कम्बल + ऋणम् = **कम्बलार्णम्** (कम्बल के लिए ऋण)

(iv) वसन + ऋणम् = **वसनार्णम्** (वस्त्र के लिए ऋण)

(v) ऋण + ऋणम् = **ऋणार्णम्** (ऋण चुकाने के लिए ऋण)

(vi) दश + ऋणम् = **दशार्णम्** (दस प्रकार के जल वाला देश)

5. उपसर्गादृति धातौ- अवर्णान्त उपसर्ग के बाद 'ऋ' से प्रारम्भ होने वाली धातु हो तो पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक एक आदेश होता है।

जैसे-

प्र + ऋच्छति = **प्रार्च्छति**

उप + ऋच्छति = **उपार्च्छति**

प्र + ऋणोति = **प्रार्णोति**

प्र + ऋञ्जते = **प्रार्ञ्जते**

(6) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् (वार्तिक)- शकन्धु आदि गण में टिसंज्ञक पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर पररूप सन्धि होती है।

जैसे-

(i) शक + अन्धुः = **शकन्धुः** (शक नामक देश का कूप)

(ii) कर्क + अन्धुः = **कर्कन्धुः** (कर्क नामक राजा का कूप)

(iii) मनस् + ईषा = **मनीषा** (बुद्धि)

(iv) मार्त + अण्डः = **मार्तण्डः** (सूर्य)

(v) पतत् + अञ्जलिः = **पतञ्जलिः** (पतञ्जलि)

(7) स्वादीरेरिणोः (वार्तिक)- जब 'स्व' शब्द के बाद 'ईर' और 'ईरिन्' आदि शब्द आयें तो 'स्व' के अकार 'ईर' और 'ईरिन्' के ईकार के स्थान में ''ऐ'' वृद्धि हो जाता है।

जैसे-

स्व + ईरः = **स्वैरः** (स्वेच्छाचारी)

स्व + ईरिणी = **स्वैरिणी** (स्वेच्छाचारिणी)

स्व + ईरम् = **स्वैरम्** (स्वेच्छाचारिता)

स्व + ईरी = **स्वैरी** (स्वेच्छाचारी)

व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन सन्धि- व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

जैसे-

(i) वाक् + ईशः = वागीशः (व्यञ्जन + स्वर)

(ii) सत् + चित् = सच्चित् (व्यञ्जन + व्यञ्जन)

स्पष्टीकरण- यहाँ प्रथम उदाहरण में 'क्' व्यञ्जन के बाद 'ई' स्वर है तथा दूसरे उदाहरण में 'त्' व्यञ्जन के बाद 'च्' व्यञ्जन है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यञ्जन वर्णों के बाद स्वर आये चाहे व्यञ्जन दोनों ही स्थितियों में व्यञ्जन सन्धि होगी।

1. श्चुत्व सन्धि

सूत्र- स्तोः श्चुना श्चुः

सूत्र विश्लेषण-

स्तु - सकार तवर्ग = स् त् थ् द् ध् न्

श्चु - शकार चवर्ग = श् च् छ् ज् झ् ञ्

सूत्रार्थ- सकार या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के पहले या बाद में शकार या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) का योग होने पर स् के स्थान पर श् तथा तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग (पहले हो या बाद में)
स्	श्	श् या
त्	च्	चवर्ग का
थ्	छ्	योग (पहले हो या बाद में)
द्	ज्	
ध्	झ्	
न्	ञ्	

उदाहरण-

रामस् + शेते = **रामश्शेते**

स्पष्टीकरण- इस उदाहरण में 'रामस्' में विद्यमान सकार के स्थान पर शकार हो गया; क्योंकि 'शेते' में शकार आ रहा था इसलिए।

ध्यान दें- इस सूत्र में सकार के बाद शकार आये ऐसा नहीं कहा गया है; अपितु योग होने पर कहा गया है। 'योग' का अर्थ है- 'मिलना'। तात्पर्य यह हुआ कि- 'स्तु' (सकार तवर्ग) पहले हो श्चु बाद में हो या श्चु (शकार चवर्ग) पहले हो 'स्तु' बाद में हो, बदलेगा 'स्तु' ही। जैसे-

(i) सत् + चित् = **सच्चित्**

(ii) याच् + ना = **याच्ञा**

- उपर्युक्त उदाहरण में 'सत्' के त् का 'चित्' के 'च्' से योग होने पर 'सत्' के 'त्' के स्थान पर 'च्' होकर 'सच्चित्' बन गया।
- दूसरे उदाहरण में 'याच्' के 'च्' का 'ना' के 'न्' से योग होने पर 'न्' के स्थान पर चवर्ग का 'ञ्' हो गया। जबकि 'ना' परवर्ण है तब भी।
- इससे सिद्ध हुआ कि सकार और तवर्ग चाहे पूर्व में हो चाहे पर में

उनके स्थान पर ही शकार या चवर्ग आदेश के रूप में होंगे।

अवश्य देखें- श्चुत्व सन्धि में हमेशा-

स् के स्थान पर **श्**
त् के स्थान पर **च्**
थ् के स्थान पर **छ्**
द् के स्थान पर **ज्**
ध् के स्थान पर **झ्**
न् के स्थान पर **ञ्** होगा।

स्तु (सकार तवर्ग) स्थानी हैं, श्चु (शकार चवर्ग) आदेश हैं।

अन्य उदाहरण- सद् + जनः = **सज्जनः**
कस् + चित् = **कश्चित्**
शार्ङ्गिन् + जयः = **शार्ङ्गिञ्जयः**
बृहद् + झरः = **बृहज्झरः**
दुस् + चरित्रः = **दुश्चरित्रः**
उद् + ज्वलः = **उज्ज्वलः**
उत् + चारणम् = **उच्चारणम्**

2. ष्टुत्व सन्धि

सूत्र- 'ष्टुना ष्टुः' (8.4.41)

सूत्रार्थ- स्तु (सकार तवर्ग) के स्थान पर 'ष्टु' (षकार टवर्ग) होता है, 'ष्टु' (षकार टवर्ग) के योग में।

स्तु = सकार तवर्ग- स् त् थ् द् ध् न्

ष्टु = षकार टवर्ग- ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

अर्थात् सकार या तवर्ग के पहले या बाद में षकार या टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) का योग होने पर स् को ष् तथा तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	ष्	षकार या
त्	ट्	टवर्ग का योग
थ्	ठ्	होने पर
द्	ड्	
ध्	ढ्	
न्	ण्	

ध्यान रहे- सकार तवर्ग के पहले या सकार तवर्ग के बाद में षकार टवर्ग होने पर **स्** के स्थान पर **'ष्'**, **'त्'** के स्थान पर **'ट्'**, **'थ्'** के स्थान पर **'ठ्'**, **'द्'** के स्थान पर **'ड्'**, **'ध्'** के स्थान पर **'ढ्'** तथा **'न्'** के स्थान पर **'ण्'** होता है।

उदाहरण-

1. तत् + टीका
   तट् + टीका (त् के स्थान पर ट्)
   तट्टीका
2. रामस् + षष्ठः
   रामष् + षष्ठः (स् के स्थान पर ष्)
   रामष्षष्ठः
3. उद् + डयनम्
   उड् + डयनम् (द् के स्थान पर ड्)
   उड्डयनम्
4. कृष् + नः
   कृष् + णः (न् के स्थान पर ण्)
   कृष्णः
5. दुष् + तः
   दुष् + टः (त् के स्थान पर ट्)
   दुष्टः
6. चक्रिन् + ढौकसे
   चक्रिण् + ढौकसे (न् के स्थान पर ण्)
   चक्रिण्ढौकसे
7. विष् + नुः
   विष् + णुः (न् के स्थान पर ण्)
   विष्णुः
8. पेष् + ता
   पेष् + टा (त् के स्थान पर ट्)
   पेष्टा

3. (i) जश्त्व सन्धि

सूत्र- झलां जशोऽन्ते (8.2.39)

सूत्रार्थ- पदान्त झल् के स्थान पर 'जश् ' आदेश होता है।

➢ 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें - वर्णों के पहले, दूसरे, तीसरे,

चौथे और ऊष्म वर्ण आते हैं-

झल् = झ भ घ ढ ध
ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ
च ट त क प
श ष स ह

जश् = ज ब ग ड द (वर्गों के तीसरे अक्षर)

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
(i) च् छ् ज् झ् श्	ज्
(ii) प् फ् ब् भ्	ब्
(iii) क् ख् ग् घ् ह	ग्
(iv) ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
(v) त् थ् द् ध् स्	द्

ध्यान रहे- झल् प्रत्याहार के बाद अच् हो, या हल् हो, या कोई वर्ण हो या न हो तो भी जश् होगा।

नोट- जश्त्व सन्धि दो प्रकार की होती है-

(i) पदान्त जश्त्व सन्धि

(ii) अपदान्त जश्त्व सन्धि

उदाहरण-

1. अच् + अन्तः
   अज् + अन्तः
   अजन्तः

2. वाक् + ईशः
   वाग् + ईशः
   वागीशः

3. षट् + आननः
   षड् + आननः
   षडाननः

4. दिक् + अम्बरः
   दिग् + अम्बरः
   दिगम्बरः

5. एतत् + मुरारिः
   एतद् + मुरारिः
   एतद् मुरारिः

6. सुप् + ईशः
   सुब् + ईशः
   सुबीशः

7. जगत् + ईशः
   जगद् + ईशः
   जगदीशः

8. वाक् + अत्र
   वाग् + अत्र
   वागत्र

9. दिक् + गजः
   दिग् + गजः
   दिग्गजः

10. चित् + आनन्दः
    चिद् + आनन्दः
    चिदानन्दः

11. सुप् + अन्तः
    सुब् + अन्तः
    सुबन्तः

12. कृत् + अन्तः
    कृद् + अन्तः
    कृदन्तः

13. तिप् + अन्तः
    तिब् + अन्तः
    तिबन्तः

14. अप् + जम्
    अब् + जम्
    अब्जम्

15. महत् + दानम्
    महद् + दानम्
    महद्दानम्

3. (ii) अपदान्त जश्त्व सन्धि

सूत्र- झलां जश् झशि (8.4.53)

सूत्रार्थ- झल् वर्णों के बाद झश् वर्णों के आने पर झल् के स्थान पर जश् होगा।

सूत्रविश्लेषण- झलाम् - झल् वर्णों के स्थान पर

जश् - जश् वर्ण होते हैं

झशि - झश् वर्णों के (बाद) में आने पर

(i) 'झल्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के 1,2,3,4 और श् ष् स् ह् आते हैं।

झल् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ च ट त क प
श ष स ह

(ii) 'जश्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के तीसरे वर्ण आते हैं

जश् = ज ब ग ड द।

(iii) 'झश्' भी एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के तीसरे और चौथे वर्ण आते हैं।

झश् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
क् ख् ग् घ् ह	ग्
च् छ् ज् झ् श्	ज्
ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
त् थ् द् ध् स्	द्
प् फ् ब् भ्	ब्

ध्यान दें- 'स्थानेऽन्तरतमः' की सहायता से उच्चारणस्थान की साम्यता को लेकर ज् ब् ग् ड् द् (जश्) आदेश होता है।

उदाहरण-

(1) क्रुध् + धः
क्रुद् + धः
क्रुद्धः

(2) शुध् + धः
शुद् + धः
शुद्धः

(3) युध् + धः
युद् + धः
युद्धः

(4) लभ् + धः
लब् + धः
लब्धः

(5) दुह् + धम्
दुग् + धम्
दुग्धम्

(6) वृध् + धिः
वृद् + धिः
वृद्धिः

(7) रुणध् + धिः
रुणद् + धिः
रुणद्धिः

(8) बोध् + धा
बोद् + धा
बोद्धा

4. चर्त्व सन्धि

सूत्र- खरि च (8.4.55)

सूत्रार्थ- यदि झल् के बाद खर् आये तो झल् के स्थान पर 'चर्' होगा।

- 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ, एवं श ष स ह वर्ण आते हैं।
- **झल्** = झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द् ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स् ह्
- 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण और श् ष् स् आते हैं।
  खर् = ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स्
- 'खरि च' सूत्र का सम्पूर्ण अर्थ करने के लिए 'झलाम्' और 'चर्' की अनुवृत्ति आती है।

स्थानी (झल्)	आदेश (चर्)	साम्य (उच्चारण स्थान)	परवर्ण (खर्)
क् ख् ग् घ्	क्	कण्ठ	ख् फ् छ्
च् छ् ज् झ्	च्	तालु	ठ् थ् च्
ट् ठ् ड् ढ्	ट्	मूर्धा	ट् त् क्
त् थ् द् ध्	त्	दन्त	प् श् ष्
प् फ् ब् भ्	प्	ओष्ठ	स्

- श् ष् स् के स्थान पर श् ष् स् आदेश होगा

उदाहरण-

(1) सद् + कारः
सत् + कारः
सत्कारः

(2) सद् + पात्रम्
सत् + पात्रम्
सत्पात्रम्

(3) दिग् + पालः
दिक् + पालः
दिक्पालः

(4) भेद् + तुम्
भेत् तुम्
भेत्तुम्

(5) छेद् + तव्यम्
छेत् + तव्यम्
छेत्तव्यम्

(6) लिभ् + सा
लिप् + सा
लिप्सा

5. अनुस्वार सन्धि

सूत्र- मोऽनुस्वारः (8.3.23)

सूत्रार्थ- पदान्त 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन (हल्) आये तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
पदान्त मकार	हल्	ं अनुस्वार

उदाहरण-

(i) हरिम् + वन्दे = **हरिं वन्दे**
(ii) त्वम् + करोषि = **त्वं करोषि**
(iii) रामम् + भजामि = **रामं भजामि**
(iv) जलम् + वहति = **जलं वहति**
(v) धनम् + यच्छ = **धनं यच्छ**
(vi) दुःखम् + सहते = **दुःखं सहते**

6. तोर्लि सन्धि

सूत्र- तोर्लि (8.4.60)

सूत्रार्थ- यदि तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के बाद 'ल्' वर्ण आये तो तवर्ग के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।

सूत्रविश्लेषण- तोः - तवर्ग के बाद

लि - ल् वर्ण हो तो

➢ **परसवर्ण -** परसवर्ण 'ल्' हो जाता है।

➢ 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से 'परसवर्ण' की अनुवृत्ति।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
त् थ् द् ध् न्	ल्	ल्

उदाहरण-

(i) उद् + लिखितम्
उल् + लिखितम्
उल्लिखितम्

(ii) तद् + लीनः
तल् + लीनः
तल्लीनः

(iii) उद् + लेखः
उल् + लेखः
उल्लेखः

(iv) विद्वान् + लिखति
विद्वाल्ँ + लिखति
विद्वाँल्लिखति

(v) तद् + लयः
तल् + लयः
तल्लयः

(vi) महान् + लाभः
महाल्ँ + लाभः
महाल्ँलाभः

(vii) विपद् + लीनः
विपल् + लीनः
विपल्लीनः

(viii) जगद् + लीयते
जगल् + लीयते
जगल्लीयते

(ix) यद् + लक्षणम्
यल् + लक्षणम्
यल्लक्षणम्

(x) विद्युद् + लेखा
विद्युल् + लेखा
विद्युल्लेखा

(xi) धनवान् + लुनीते
धनवाल्ँ लुनीते
धनवाल्ँलुनीते

7. परसवर्ण सन्धि

सूत्र- अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (8.4.58)

सूत्रार्थ- अपदान्त अनुस्वार के बाद यदि यय् प्रत्याहार का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार को परसवर्ण हो जाता है।

सूत्रविश्लेषण-

अनुस्वारस्य- अनुस्वार (ं) के स्थान पर

परसवर्णः - परसवर्ण होता है।

ययि - 'यय्' प्रत्याहार का वर्ण बाद में आये तो।

➢ **परसवर्ण-** परस्य सवर्णः परसवर्णः। परसवर्ण का अर्थ है- पर = (बाद) में जो वर्ण हैं उसके सवर्णियों में से आदेश होना।

➢ अर्थात् अनुस्वार के बाद किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

यय् - 'यय्' एक प्रत्याहार है जिसमें श् ष् स् ह् को छोड़कर सभी व्यञ्जन वर्ण आते हैं।

यय् = य् व् र् ल्
ञ् म् ङ् ण् न्
झ् भ् घ् ढ् ध्
ज् ब् ग् ड् द्
ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्।

पूर्ववर्ण (अनुस्वार)	परवर्ण (यय्)	सन्धिवर्ण (परसवर्ण)
अनुस्वार (ं)	क् ख् ग् घ् ङ्	ङ्
अनुस्वार (ं)	च् छ् ज् झ् ञ्	ञ्
अनुस्वार (ं)	ट् ठ् ड् ढ् ण्	ण्
अनुस्वार (ं)	त् थ् द् ध् न्	न्
अनुस्वार (ं)	प् फ् ब् भ् म्	म्

उदाहरण-

(1) गं + गा = **गङ्गा/गङ्गा**

(2) शं + खः = **शङ्खः/शङ्खः**

(3) अं + कः = **अङ्कः/अङ्कः**

(4) अं + कितः = **अङ्कितः**

(5) लं + घनम् = **लङ्घनम् / लङ्घनम्**

(6) अं + चितः = **अञ्चितः**

(7) मं + चः = **मञ्चः**

(8) झं + झा = **झञ्झा**

(9) खं + जः = **खञ्जः**

(10) लां + छनम् = **लाञ्छनम्**

(11) कुं + ठितः = **कुण्ठितः**

(12) घं + टा = **घण्टा**

(13) मुं + डा = **मुण्डा**

(14) दं + डः = **दण्डः**

(15) खं + ड = **खण्डः**

(16) शां + त = **शान्तः**

(17) मं + दः = **मन्दः**

(18) बं + धनम् = **बन्धनम्**

(19) मं + थनम् = **मन्थनम्**

(20) नं + दति = **नन्दति**

(21) कं + पनम् = **कम्पनम्**

(22) गुं + फितः = **गुम्फितः**

(23) लं + बः = **लम्बः**

(24) स्तं + भः = **स्तम्भः** (25) पं + पा = **पम्पा**

➢ **विशेष-** अनुस्वार तभी अनुस्वार रह सकता है, जब उसके बाद य् व् र् ल् या श् ष् स् ह् हों। जैसे-

संयमः, संवारः, संरम्भः, संलापः, संयोगः, संशयः, संसारः, संहारः आदि।

➢ **वा पदान्तस्य-** पदान्त अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण विकल्प से होता है, यय् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो।

अर्थात् पदान्त अनुस्वार में यह नियम वैकल्पिक है। जैसे-

(i) कार्यं करोति = **कार्यं करोति / कार्यङ्करोति।**

(ii) किं करोषि = **किं करोषि / किङ्करोषि**

(iii) किं चित् = **किंचित् / किञ्चित्**

(iv) कथं चलसि = **कथं चलसि / कथञ्चलसि।**

(v) त्वं करोषि = **त्वं करोषि / त्वङ्करोषि**

8. अनुनासिक सन्धि

सूत्र- यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)

सूत्रार्थ- अनुनासिक वर्ण यदि बाद में आयें तो पदान्त यर् वर्णों के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है।

सूत्र विश्लेषण- यरः = पदान्त यर् के स्थान पर

अनुनासिके = अनुनासिक वर्ण बाद में आये तो

अनुनासिकः = अनुनासिक वर्ण होगा।

वा = विकल्प से।

➢ **अनुनासिक होने का अर्थ है-** उसी वर्ग का पञ्चमाक्षर हो जाना

यर् - यर् एक प्रत्याहार है जिसमें ह को छोड़कर सभी व्यञ्जन (हल्) वर्ण आते हैं।

पूर्ववर्ण पदान्त यर्	परवर्ण अनुनासिक वर्ण	सन्धिवर्ण अनुनासिक
क् ख् ग् घ् ङ्	ङ् ञ् ण् न् म्	ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्	में से कोई भी	ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्	अनुनासिक वर्ण	ण्
त् थ् द् ध् न्	बाद में आये	न्
प् फ् ब् भ् म्		म्
य् व् र् ल्		
श् ष् स्		

जैसे-

(i) प्राक् + मुखः
प्राङ् + मुखः
प्राङ्मुखः

(ii) षट् + मासाः
षण् + मासाः
षण्मासाः

(iii) षट् + मुखः
षण् + मुखः
षण्मुखः

(iv) सद् + मतिः
सन् + मतिः
सन्मतिः

(v) दिक् + नागः
दिङ् + नागः
दिङ्नागः

(vi) जगत् + नाथः
जगन् + नाथः
जगन्नाथः

(vii) तत् + मित्रम्
तन् + मित्रम्
तन्मित्रम्

(viii) एतद् + मुरारिः
एतन् + मुरारिः
एतन्मुरारिः

ध्यान रहे- यह सन्धि वैकल्पिक है, सन्धि न होने पर जो सन्धि विच्छेद है, वही रूप रहेगा।

प्रत्यये भाषायां नित्यम् - (वार्तिक)

अनुनासिक वर्णों से प्रारम्भ होने वाले प्रत्ययों के बाद में आने पर पदान्त यर् के स्थान पर नित्य से अनुनासिक होता है।

(i) तत् + मात्रम्
तन् मात्रम्
= तन्मात्रम्

(ii) चित् + मयम्
चिन् + मयम्
= चिन्मयम्

(iii) वाक् + मयम्
वाङ् मयम् **= वाङ्मयम्**

व्यञ्जन सन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. श्चुत्वसन्धि	स्तोः श्चुना श्चुः	स् तवर्ग + श् चवर्ग = श् चवर्ग	रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति सत् + चित् = सच्चित्
2. ष्टुत्व सन्धि	ष्टुना ष्टुः	स् तवर्ग + ष् टवर्ग = ष् टवर्ग	रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः रामस् + टीकते = रामष्टीकते तत् + टीका = तट्टीका
3. जश्त्व सन्धि	(i) झलां जशोऽन्ते (ii) झलां जश् झशि	झल् को जश् आदेश	जगत् + ईशः = जगदीशः क्रुध् + धः = क्रुद्धः
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	झल् + खर् = चर्	छेद् + ता = छेत्ता लिभ् + सा = लिप्सा
5. अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	पदान्त म् + हल् = अनुस्वार (ं)	हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे त्वम् करोषि = त्वं करोषि
6. लत्व सन्धि	तोर्लि	तवर्ग + ल् = ल्	उद् + लेख = उल्लेखः तद् + लीनः = तल्लीनः
7. परसवर्ण सन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार + यय् = परसवर्ण (पञ्चमाक्षर)	गं + गा = गङ्गा मं + चः = मञ्चः
8. अनुनासिकसन्धि	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	यर् + अनुनासिक = अनुनासिक	जगत् + नाथः = जगन्नाथः दिक् + नागः = दिङ्नागः

विसर्ग सन्धि

विसर्ग सन्धि- विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर विसर्ग (:) में जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग सन्धि** कहते हैं।

जैसे- मनः + रथः = मनोरथः

- विसर्ग हमेशा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे- 'रामः' में 'अ' के बाद, हरिः में 'इ' के बाद, गुरुः में 'उ' के बाद विसर्ग आया है।
- विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले आने वाले स्वर तथा विसर्ग के बाद आने वाले स्वर और व्यञ्जन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

1. सत्व सन्धि

विसर्जनीयस्य सः (8.3.34) - यदि विसर्ग के आगे कोई खर् प्रत्याहार का वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है।

विसर्ग (:) + खर् = स्

खर् - खर् एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय अक्षर और श ष स आते हैं। खर् में कुल 13 वर्ण आते हैं।

खर् = क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, श ष स।

ध्यान रखें-

इस नियम को समझने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-

(i) यदि विसर्ग के बाद च् या छ् आये तो ''विसर्जनीयस्य सः'' सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है और इस 'स्' को ''स्तोः श्चुना श्चुः'' सूत्र से 'श्' हो जाता है।

जैसे-

☆ रामः + चलति
रामस् + चलति
रामश्चलति

☆ निः + छलम्
निस् + छलम्
निश्छलम्

☆ निः + चलम्
निस् + चलम्
निश्चलम्

☆ गौः + चरति
गौस् + चरति
गौश्चरति

☆ कः + चित्
कस् + चित्
कश्चित्

☆ बालः + चलति
बालस् + चलति
बालश्चलति

☆ निः + चयः
निस् + चयः
निश्चयः

☆ पूर्णः + चन्द्रः
पूर्णस् + चन्द्रः
पूर्णश्चन्द्रः

☆ हरिः + छलति
हरिस् + छलति
हरिश्छलति

☆ हरिः + चलति
हरिस् + चलति
हरिश्चलति

(ii) यदि विसर्ग के बाद ट् या ठ् हो तो **''विसर्जनीयस्य सः''** सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है, और उस 'स्' को ''ष्टुना ष्टुः'' सूत्र से 'ष्' हो जाता है—

जैसे-

☆ रामः + टीकते
रामस् + टीकते
रामष्टीकते।

☆ धनुः + टङ्कारः
धनुस् + टङ्कारः
धनुष्टङ्कारः

☆ रामः + ठकारः
रामस् + ठकारः
रामष्ठकारः

(iii) यदि विसर्ग के बाद त् और थ् आये तो ''विसर्जनीयस्य सः'' सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है और वह 'स्' जैसा का तैसा रहता है अर्थात् 'स्' ही रहता है। जैसे-

☆ हरिः + त्राता
हरिस्त्राता

☆ विष्णुः + तत्र
विष्णुस्तत्र

☆ बालः + तिष्ठति
बालस्तिष्ठति

☆ विष्णुः + त्रायते
विष्णुस्त्रायते

☆ इतः + ततः
इतस्ततः

☆ कृतः + तथा
कृतस्तथा

☆ गजाः + तिष्ठन्ति
गजास्तिष्ठन्ति

☆ विष्णुः + त्राता
विष्णुस्त्राता

☆ बालकः + थुडति
बालकस्थुडति

☆ मनः + तापः
मनस्तापः

☆ नमः + ते
नमस्ते

(iv) यदि विसर्ग के बाद क् या ख् आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा ''कुप्वोः ५क ५पौ च'' (8.3.37) सूत्र से विकल्प से जिह्वामूलीय हो जाता है।

विसर्ग को 'स्' नहीं होता है जैसे-

☆ बालकः क्रीडति अथवा बालक५ क्रीडति।

☆ बालकः खेलति अथवा बालक५ खेलति।

नोट-

☆ जिह्वामूलीय वर्णों को कण्ठ के भी नीचे जिह्वामूल से बोला जाता है।

☆ जिह्वामूलीय को आधे विसर्ग५ के समान लिखा जाता है।

(v) यदि विसर्ग के बाद प या फ आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा ''कुप्वोः ५क ५पौ च'' (8.3.37) सूत्र से विसर्ग के स्थान पर उपध्मानीय होता है। विसर्ग को 'स्' नहीं होता। जैसे-

वृक्षः पतति = वृक्ष५ पतति।

वृक्षः फलति = वृक्ष५ फलति।

नोट-

☆ उपध्मानीय वर्ण का उच्चारण 'ओष्ठ' से होता है।

☆ उपध्मानीय को भी आधे विसर्ग ५ के समान लिखा जाता है।

(vi) यदि विसर्ग के बाद शर् (श् ष् स्) आये तो ''वा शरि'' (8.3.36) सूत्र से विसर्ग को विसर्ग ही रहता है अथवा विसर्ग के स्थान पर 'स्' होकर परवर्ण श् ष् स् की तरह हो जाता है।

जैसे-

☆ हरिः + शेते
हरिस् + शेते
हरिश्शेते

☆ रामः + षष्ठः
रामस् + षष्ठः
रामष्षष्ठः/रामःषष्ठः (विकल्प से)

हरिःशेते (विकल्प से)

☆ निः + सन्देहम्
निस् + सन्देहम्

☆ वायुः + सरति
वायुस् + सरति

निस्सन्देहम् **वायुस्सरति**

निःसन्देहम् (विकल्प से) **वायुःसरति** (विकल्प से)

☆ बालकः + शयानः
बालकस् शयानः
बालकश्शयानः
बालकः शयानः (विकल्प से)

☆ मुनिः + शेते - मुनिस् + शेते = मुनिश्शेते

☆ कृष्णः + सर्पः - कृष्णस् + सर्पः = कृष्णस्सर्पः

2. रुत्व सन्धि

सूत्र - ससजुषो रुः (8.2.66) पदान्त सकार और 'सजुष्' के षकार के स्थान पर 'रु' आदेश होता है।

☆ 'रु' में 'उ' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है 'र्' शेष बचता है।

☆ जब 'रु' (र्) के ठीक पहले ह्रस्व 'अ' न हो और रु (र्) के ठीक बाद में खर् न हो, तो यह 'र्', 'र्' ही रहता है। इसे ही 'रुत्वसन्धि' कहते हैं।

☆ कविस् + अयम्
कवि रु + अयम्
कवि र् अयम्
कविरयम्

☆ हरेस् + इदम्
हरे रु + इदम्
हरे र् + इदम्
हरेरिदम्

☆ गौस् + अयम्
गौ रु + अयम्
गौ र् + अयम्
गौरयम्

☆ प्रातस् + अहम्
प्रात रु + अहम्
प्रात र् + अहम्
प्रातरहम्

☆ पाशैस् + बद्धः
पाशै रु + बद्धः
पाशै र् + बद्धः
पाशैर्बद्धः

☆ पितुस् + आज्ञा
पितु रु + आज्ञा
पितु र् + आज्ञा
पितुराज्ञा

☆ निस् + धनम्
नि रु + धनम्
नि र् + धनम्
निर्धनम्

☆ ऋषिस् + वदति
ऋषि रु + वदति
ऋषि र्+ वदति
ऋषिर्वदति

☆ मातुस् + आज्ञा
मातु रु + आज्ञा
मातु र् आज्ञा
मातुराज्ञा

☆ भानोस् + अयम्
भानो रु + अयम्
भानो र् अयम्
भानोरयम्

☆ मुनिस् आगच्छति
मुनि रु आगच्छति
मुनि र् आगच्छति
मुनिरागच्छति

☆ हरिस् + जयति
हरि रु + जयति
हरि र्+ जयति
हरिर्जयति

☆ कैस् + उक्तम्
कै रु + उक्तम्
कै र्+ उक्तम्
कैरुक्तम्

☆ साधुस् + गच्छति
साधु रु + गच्छति
साधु र् + गच्छति
साधुर्गच्छति

☆ भानुस् + उदेति
भानु रु + उदेति
भानु र् + उदेति
भानुरुदेति

☆ हरिस् + अवदत्
हरि रु + अवदत्
हरि र् + अवदत्
हरिरवदत्

☆ लक्ष्मीस् + इयम्
लक्ष्मी रु + इयम्
लक्ष्मी र् + इयम्
लक्ष्मीरियम्

☆ पितुस् + इच्छा
पितु रु + इच्छा
पितु र् + इच्छा
पितुरिच्छा

☆ गुरोस् + भाषणम्
गुरो रु + भाषणम्
गुरो र् + भाषणम्
गुरोर्भाषणम्

अन्य उदाहरण-

☆ कविस् + आगच्छति = **कविरागच्छति**
☆ मुनिस् + इव = **मुनिरिव**
☆ निस् + दयः = **निर्दयः**
☆ पतिस् + उवाच = **पतिरुवाच**
☆ हरेस् + जन्म = **हरेर्जन्म**
☆ गुरोस् + आगमनम् = **गुरोरागमनम्**
☆ मुनिस् + गच्छति = **मुनिर्गच्छति**
☆ भानुस् + उदेति = **भानुरुदेति**
☆ प्रातस् + एव = **प्रातरेव**
☆ मातृस् + आदेशः = **मातृरादेशः**

3. उत्व सन्धि

अतो रोरप्लुतादप्लुते (6.1.13)

यदि 'रु' के ठीक पहले 'ह्रस्व अ' हो और 'रु' के ठीक बाद में पुनः 'ह्रस्व अ' हो, तो ऐसे दो ह्रस्व अ के बीच बैठे 'रु' (र्) को

'उ' हो जाता है। इसे ही उत्व सन्धि कहते हैं।

➢ ध्यान रहे कि 'रु' के स्थान पर 'उ' नही होता, किन्तु उकार की इत्संज्ञा होकर लोप होने पर शेष बचे 'र्' के स्थान पर ही 'उ' होता है। सूत्र में 'रु' के कथन का यह तात्पर्य है कि 'रुँ' के 'र्' को ही उत्व हो, अन्य 'र्' को नहीं।

जैसे-

☆ शिवस् + अर्च्यः
शिव रु + अर्च्यः ('ससजुषो रुः' से 'रु')
शिव र् + अर्च्यः ('रु' के 'उ' का लोप)
शिव उ + अर्च्यः (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'उ')
शिवो + अर्च्यः (आद् गुणः से अ+उ = ओ गुण)
शिवोऽर्च्यः (''एङः पदान्तादति'' से पूर्वरूप)

☆ देवस् + अपि (पदान्त सकार)
देव रु + अपि ('ससजुषो रुः' से स् को 'रु' आदेश)
देव र्+ अपि ('रु' के 'उ' का लोप, 'र्' शेष)
देव उ + अपि (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'र्' को 'उ')
देवो + अपि (आद्गुणः से 'ओ' गुण)
देवोऽपि (''एङः पदान्तादति'' सूत्र से पूर्वरूप)

☆ शिवस् + अत्र = **शिवोऽत्र**

☆ सस् + अहम् = **सोऽहम्**

☆ सस् + अपि = **सोऽपि**

☆ रामस् + अयम् = **रामोऽयम्**

☆ रामस् + अवदत् = **रामोऽवदत्**

☆ देवस् + अधुना = **देवोऽधुना**

☆ कस् + अयम् = **कोऽयम्**

☆ सस् + अयम् = **सोऽयम्**

☆ रामस् + अस्ति = **रामोऽस्ति**

☆ सस् + अवदत् = **सोऽवदत्**

''हशि च'' (6.1.114) - यदि 'रु' (र्) के पूर्व ह्रस्व 'अ' हो और बाद में हश् प्रत्याहार के वर्ण आयें तो रु (र्) के स्थान पर 'उ' हो जाता है फिर अ+उ में गुण सन्धि हो जाती है। यह भी उत्व सन्धि है।

➢ हश् प्रत्याहार में वर्णों के तीसरे, चौथे और पाँचवे वर्ण तथा य व र ल ह वर्ण आते हैं।

जैसे-

☆ शिवस् + वन्द्यः (पदान्त सकार)
शिव रु + वन्द्यः (''ससजुषो रुः'' से 'रु' आदेश)
शिव र् + वन्द्यः ('रु' के 'उ' का लोप 'र्' शेष)
शिव उ + वन्द्यः (''हशि च'' से 'र्' के स्थान पर 'उ' आदेश)
शिवो + वन्द्यः (अ + उ = ओ गुण हुआ)
शिवो वन्द्यः (उत्व सन्धि)

☆ मनस् + रथः (पदान्त सकार)
मन रु + रथः (''ससजुषो रुः'' से 'रु' आदेश)
मन र् + रथः ('रु' के ('उ') का लोप 'र्' शेष)
मन उ + रथः (''हशि च'' से 'र्' के स्थान पर 'उ' आदेश)
मनो + रथः (अ + उ = ओ गुण हुआ)
मनोरथः (उत्व सन्धि)

☆ रामस् + नमति = **रामो नमति**

☆ रामस् + हसति = **रामो हसति**

☆ मृगस् + धावति = **मृगो धावति**

☆ मेघस् + गर्जति = **मेघो गर्जति**

☆ सरस् + वरः = **सरोवरः**

☆ पयस् + धरः = **पयोधरः**

☆ रामस् + जयति = **रामो जयति**

☆ बालकस् + हसति = **बालको हसति**

☆ वीरस् + गच्छति = **वीरो गच्छति**

☆ पुरुषस् + वदति = **पुरुषो वदति**

☆ अधस् + गतिः = **अधोगतिः**

☆ यशस् + दा = **यशोदा**

☆ मनस् + भावः = **मनोभावः**

4. रलोप सन्धि

सूत्र- रो रि (8.3.14)

सूत्रार्थ- 'र्' के बाद 'र्' आये तो पूर्व 'र्' का लोप होता है।

जैसे-

☆ बालकास् + रमन्ते (पदान्त सकार)
बालका रु + रमन्ते ('ससजुषो रुः' से 'स्' के स्थान पर रु')
बालका र् + रमन्ते (''रो रि'' से पूर्व रेफ का लोप)

बालका रमन्ते ('र' लोप सन्धि)

☆ गौस् + रम्भते (पदान्त सकार)

गौरु + रम्भते (ससजुषो रुः)

गौर् + रम्भते (रो रि)

गौ रम्भते (र लोप सन्धि)

सूत्र- ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (6.3.111)

सूत्रार्थ-'ढ्' या 'र्' का लोप हुआ हो तो उससे पूर्ववर्ती अण् (अ इ उ) को दीर्घ हो जाता है। जैसे-

☆ लिढ् + ढः = लीढः

☆ पुनर् + रमते = पुना रमते

☆ हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः

☆ शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते

☆ गुरुर् + रुष्टः = गुरू रुष्टः

☆ निर् + रोगः = नीरोगः

☆ निर् + रसः = नीरसः

☆ अन्तर् + राष्ट्रियः = अन्ताराष्ट्रियः

5. रेफ को विसर्ग

सूत्र- खरवसानयोर्विसर्जनीयः (8.3.15) -

सूत्रार्थ- पदान्त रेफ (र्) के स्थान पर विसर्ग आदेश होता है यदि खर् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो अथवा अवसान (विराम) हो तो।

र् + खर् = विसर्ग (:)

र् + ----- = विसर्ग (:)

➢ 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें - क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, तथा श ष स आते हैं।

➢ **अवसान में पदान्त 'र्' को विसर्ग-**

☆ पुनर् = पुनः

☆ शनैर् = शनैः

☆ उच्चैर् = उच्चैः

☆ नीचैर् = नीचैः

➢ **'खर्' बाद में आये तो पदान्त 'र्' को विसर्ग-**

☆ रामस् + करोति (पदान्त स्)

राम रु + करोति (ससजुषो रुः)

राम र् + करोति (रु को 'र्')

रामः + करोति ('र्' को विसर्ग)

☆ रामर् + खादति = रामः खादति

पुनर् + पृच्छति = पुनः पृच्छति

☆ वृक्षर् + फलति = वृक्षः फलति

☆ गुरु र् + पाठयति = गुरुः पाठयति

❑❑

अभ्यास प्रश्न (सन्धि प्रकरण)

1. ''शुभा + उक्तिः'' इत्यस्य सन्धिपदमस्ति-
   (A) शुभाक्तिः (B) शुभौक्तिः
   (C) शुभोक्तिः (D) शुभावक्तिः
2. '' 'द्वावपि' इत्यत्र सन्धिरस्ति .....'' रिक्तस्थाने सन्धिर्नाम स्यात् -
   (A) गुण-सन्धिः (B) अयादि-सन्धिः
   (C) यण्-सन्धिः (D) वृद्धि-सन्धिः
3. ''एङि पररूपम्'' इति सूत्रस्योचितम् उदाहरणमस्ति-
   (A) उपोषति (B) श्रावकः
   (C) प्राच्छति (D) प्रार्णम्
4. ''स्तोः श्चुना श्चुः'' इति सूत्रेण शब्दसिद्धिरस्ति-
   (A) दुस्साहसम् (B) दुश्शासनम्
   (C) निस्छलम् (D) निस्तब्धः
5. ''तत् + टंकणम्'' इत्यत्र सन्धिरूपं स्यात् -
   (A) तदंकणम् (B) तद्टंकणम्
   (C) तत्टंकणम् (D) तट्टंकणम्
6. ''झलां जशोऽन्ते'' इति सूत्रस्य समीचीनमुदाहरणम् अस्ति-
   (A) वाकीशः (B) आबन्तः
   (C) उत्थानम् (D) चिन्मयः

1. (C) **2.** (B) **3.** (A) **4.** (B) **5.** (D) **6.** (B)

7. ''वाग्घरिः'' इति कृते उचितं सूत्रमस्ति-
(A) झलां झश् जशि (B) नश्चापदान्तस्य झलि
(C) झयो होऽन्यतरस्याम् (D) वा पदान्तस्य

8. गुणसंज्ञाविधायकं सूत्रम् अस्ति-
(A) आद्गुणः (B) ओर्गुणः
(C) अतो गुणे (D) अदेङ् गुणः

9. सुधी + उपास्यः = सु ध् ध् य् + उपास्यः इत्यत्र धकारस्य द्वित्वं केन सूत्रेण भवति?
(A) अलोऽन्त्यस्य (B) लिट् च
(C) लिटि धातोरनभ्यासस्य (D) अनचि च

10. 'कृष्ण + ऋद्धिः' इत्यस्य सन्धिरूपं भवति?
(A) कर्ष्णृद्धिः (B) कृष्णाद्धिः
(C) कृष्णृद्धिः (D) कृष्णर्द्धिः

11. रामस् + चिनोति इत्यस्य सन्धिस्वरूपं किम् ?
(A) रामःचिनोति (B) रामस्चिनोति
(C) रामश्चिनोति (D) रामष्चिनोति

12. तल्लयः - तद् + लयः अत्र परसवर्णः भवति-
(A) झयो होऽन्यतरस्याम्
(B) तोर्लि
(C) खरि च
(D) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा

13. 'एङः पदान्तादति' सूत्रस्योदाहरणमस्ति-
(A) हरेऽव (B) हरऽव
(C) हरेय (D) हरये

14. 'वाग्घरिः' पदस्य वैकल्पिकं सन्धिपदमस्ति-
(A) वाज्घरिः (B) वाग्हरिः
(C) वाक्घरिः (D) वाध्घरिः

15. 'मधु + अरिः' इत्यस्य सन्धिपदं निर्णेयम् -
(A) मधूरिः (B) मधारिः
(C) मध्वारिः (D) मध्वरिः

16. 'स्तोः श्चुना श्चुः' इति सूत्रस्योदाहरणं वर्तते-
(A) वागीशः (B) एतन्मुरारिः
(C) रामश्चिनोति (D) तल्लयः

17. 'सुगण् + ईशः' इत्यस्य सन्धिपदमस्ति-
(A) सुगणीशः (B) सुगनीशः
(C) सुगन्नीशः (D) सुगण्णीशः

18. 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' इत्यस्य सूत्रस्योदाहरणमस्ति-
(A) वाङ्मयम् (B) उल्लेखः
(C) वागीशः (D) जगदीशः

19. 'पठत्वत्र' इत्यस्य सन्धिविच्छेदः निर्णेयः।
(A) पठ + त्वत्र (B) पठतु + अत्र
(C) पठत्व + त्र (D) पठत् + वत्र

20. 'हरिः + रम्यः' इत्यस्य सन्धिपदमस्ति-
(A) हरि रम्यः (B) हरी रम्यः
(C) हरिररम्यः (D) हरिर्रम्यः

21. अधोलिखितेषु यण्-सन्धिरूपं विद्यते-
(A) प्रत्युपकारः (B) गङ्गौघः
(C) मार्तण्डः (D) विद्यालयः

22. 'भावकः' पदस्य सन्धिविच्छेदः भविष्यति-
(A) भो + अकः (B) भौ + अकः
(C) भावि + अकः (D) भू + अकः

23. श्चुत्व प्रकरणे 'कतिचिज्जनाः' पदस्य सन्धिविच्छेदः स्यात्-
(A) कतिचिद् + जनाः (B) कतिचिद् + जन
(C) कतिचिज् + जनाः (D) कतिचिच् + जनाः

24. 'ष्टुना ष्टुः' सूत्रानुसारेण 'अधिष्ठाता' पदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति-
(A) अधिः + ठाता (B) अधिष् + थाता
(C) अधिस् + ठाता (D) अधिः + थाता

25. 'शम्भुः + राजते' इत्यत्र सन्धिपदमस्ति-
(A) शम्भुर् राजते (B) शम्भुस् राजते
(C) शम्भो राजते (D) शम्भू राजते

26. कस्मिन् पदे दीर्घसन्धिः अस्ति?
(A) नास्ति (B) चैव
(C) पावकः (D) रमेशः

27. 'झलां जशोऽन्ते' सूत्रस्य उदाहरणमस्ति-
(A) तल्लयः (B)रामष्टीकते
(C) प्रश्नः (D) वागीशः

7. (C) **8.** (D) **9.** (D) **10.** (D) **11.** (C) **12.** (B) **13.** (A) **14.** (B) **15.** (D) **16.** (C) **17.** (D)
18. (A) **19.** (B) **20.** (B) **21.** (A) **22.** (B) **23.** (A) **24.** (B) **25.** (D) **26.** (A) **27.** (D)

28. अधोलिखितेषु हल्सन्धेः शुद्धरूपं नास्ति-
(A) तल्लीनः (B)सुगण्णीशः
(C) वागीशः (D)प्रनश्यति

29. अधोलिखितेषु पररूपसन्धेः रूपमस्ति-
(A) एतावागतौ (B) नवोढा
(C) दध्यत्र (D) मनीषा

30. 'अनु + अयः' इत्यस्य सन्धिरूपमस्ति-
(A) अन्वयः (B) अनूयः
(C) अनयः (D) अन्यः

31. 'हरी एतौ' इत्यस्य सन्धिरूपमस्ति-
(A) हर्येतौ (B) हरेतौ
(C) हरी एतौ (D) हर्यातौ

32. 'दिक् + नागः' इत्यस्य सन्धिरूपमस्ति-
(A) दिक्नागः (B) दिञ्नागः
(C) दिङ्नागः (D)दिण्णागः

33. 'सच्छीलः' इत्यस्य सन्धिविच्छेदोऽस्ति-
(A) सच् + छिलः (B) सच् + शिलः
(C) सम् + शीलः (D) सत् + शीलः

34. 'उल्लेखः' इत्यस्य सन्धिविच्छेदोऽस्ति-
(A) उद् + लेखः (B) उल् + लेखः
(C) उल् + लखः (D) उङ् + लेखः

35. 'लाकृतिः' इत्यत्र कः सन्धिः?
(A) दीर्घसन्धिः (B) यण्-सन्धिः
(C) गुणसन्धिः (D) वृद्धिसन्धिः

36. 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन सूत्रेण 'अव्' इत्यादेशः कस्य वर्णस्य स्थाने भवति?
(A) ओ (B) ए
(C) ऐ (D) औ

37. निम्नलिखितेषु 'मात्रादेशः' इति अस्य प्रयोगस्य सिद्धयर्थं शुद्धसन्धिविच्छेदः कः?
(A) मात्र + त्रादेशः (B) मातृ + रादेशः
(C) मातृ + आदेशः (D) मात्रा + देशः

38. 'उपोषति' इत्यत्र कः सन्धिः?
(A) पूर्वरूपसन्धिः (B) गुणसन्धिः
(C) वृद्धिसन्धिः (D) पररूपसन्धिः

39. 'तट्टीका' इत्यस्य प्रयोगस्य शुद्धसन्धिविच्छेदः कः?
(A) तन् + टीका (B) तद् + टीका
(C) तात + टीका (D) तत् + टीका

40. 'वागीशः' प्रयोगोऽयं कस्य सन्धेः उदाहरणं वर्तते?
(A) दीर्घसन्धेः (B) श्चुत्वसन्धेः
(C) पररूपसन्धेः (D) जश्त्वसन्धेः

41. 'ष्टुना ष्टुः' सूत्रसम्बद्धं सन्धिविच्छेदं निर्धारयत।
(A) उद् + ज्वलः (B) उत् + देश्यम्
(C) उद् + डीनः (D) सत् + चरित्रः

42. 'सत्यं वद' इत्यत्र कः सन्धिः भविष्यति-
(A) श्चुत्वसन्धिः (B) अनुस्वारसन्धि
(C) पूर्वरूपसन्धिः (D) गुणसन्धिः

43. 'कः + अयम् = कोऽयम्' इत्यत्र सूत्रनिर्देशः करणीयः-
(A) हशि च
(B) रोरि
(C) अतो रोरप्लुतादप्लुते
(D) खरवसानयोर्विसर्जनीयः

44. 'रामो जयति' इत्यस्य शुद्धसन्धिविच्छेदः कः?
(A) रामश् + जयति (B) रामः + जयति
(C) रामम् + जयति (D) राम + जयति

45. 'विद्यैश्वर्यम्' इति केन सूत्रेण भवति-
(A) वृद्धिरादैच् (B) वृद्धिरेचि
(C) वृद्धस्य च (D) आद्गुणः

46. 'झयो होऽन्यतरस्याम्' सूत्रेण सिद्धं भवति-
(A) वाग्घरिः (B) तच्छिवः
(C) गुम्फ़ितः (D) वागीशः

47. कस्मिन् विकल्पे 'हशि च' न प्रवृत्तम्?
(A) शिवो वन्द्यः (B) मूर्खो मुह्यति
(C) शिवोऽर्च्यः (D) नृपो दास्यति

48. 'लाकृतिः' इति पदस्य सन्धि-विच्छेदः-
(A) ल + आकृतिः (B) ला + कृतिः
(C) ले + आकृतिः (D) लो + आकृतिः

49. विद्वान् + लिखति इत्यत्र सन्धियुक्तं पदं वर्तते-
(A) विद्वाल्लिखति (B) विद्वत्लिखति
(C) विद्वाल्ँ लिखति (D) विद्वान्लिखति

28. (D)	**29.** (D)	**30.** (A)	**31.** (C)	**32.** (C)	**33.** (D)	**34.** (A)	**35.** (B)	**36.** (A)	**37.** (C)	**38.** (D)
39. (D)	**40.** (D)	**41.** (C)	**42.** (B)	**43.** (C)	**44.** (B)	**45.** (B)	**46.** (A)	**47.** (C)	**48.** (A)	**49.** (A)

50. सारिणीमेलनं कुरुत-

(क)	मोऽनुस्वारः	(i)	तल्लयः
(ख)	तोर्लि	(ii)	तट्टीका
(ग)	झयो होऽन्यतरस्याम्	(iii)	हरिं वन्दे
(घ)	ष्टुना ष्टुः	(iv)	वाग्घरिः

	क	ख	ग	घ
(A)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(D)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

51. अधोलिखितेषु यण्सन्धेः उदाहरणमस्ति-
(A) अद्य (B) लभ्यम्
(C) यद्यपि (D) विद्यालयः

52. आदुपसर्गादेङादौ धातौ परे पररूपमेकादेशविधायकं सूत्रम्-
(A) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्
(B) एङः पदान्तादति
(C) एङि पररूपम्
(D) उपसर्गादृति धातौ

53. ''चक्रिण्ढौकसे'' इत्यस्य सन्धि-विच्छेदः-
(A) चकिञ् + ढौकसे (B) चक्रिन् + ढौकसे
(C) चक्रिण्ढ + औकसे (D) चक्रिण्ढा + औकसे

54. पदान्तादेङो अति परे पूर्वरूपैकादेश-विधायकं सूत्रम्-
(A) एङः पदान्तादति
(B) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्
(C) अमि पूर्वः
(D) एङि पररूपम्

55. ''यज् + नः'' इत्यत्र सन्धियुतं रूपं स्यात्-
(A) यग्नः (B) यज्ञः
(C) यत्नः (D) यज्नः

56. ''विष्णुस्त्राता'' इत्यत्र विसर्जनीयस्य 'स्' भवति-
(A) झलि (B) खशि
(C) जशि (D) खरि

57. ''पुना रमते'' इत्यस्य सन्धिविच्छेदोऽस्ति-
(A) पुनर् + रमते (B) पुनार् + अमते
(C) पुना + रमते (D) पुन + आरमते

58. मान्तस्य पदस्य हलि जायते-
(A) अनुस्वारः (B) जश्त्वम्
(C) पररूपम् (D) पूर्वरूपम्

59. 'प्रेजते' इति पदं केन सूत्रेण सिध्यति?
(A) वृद्धिरेचि (B) आद्गुणः
(C) एङि पररूपम् (D) अदेङ्गुणः

60. 'सच्चित्' अस्य सन्धिविच्छेदः वर्तते –
(A) सत् + चित् (B) सद् + चित्
(C) सस् + चित् (D) सश् + चित्

61. 'च + एकदा' पदयोः सन्धिर्भवति-
(A) चेकदा (B) चकदा
(C) चैकदा (D) चौकदा

62. 'पावकः' इत्यत्र प्रकृतिप्रत्ययौ विद्येते-
(A) पौ + अक (B) पा + ठक्
(C) पूञ् + ण्वुल् (D) पौ + ढक्

63. 'चयनम्' अस्य शब्दस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति –
(A) च + अयनम् (B) चि + अयनम्
(C) चे + अयनम् (D) चे + अनम्

64. 'मनीषा' इत्यस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति-
(A) मन + ईषा (B) मनसः + ईषा
(C) मनस्य + ईषा (D) मनस् + ईषा

65. 'ग्रामाच्चलितः' पदस्य सन्धिविच्छेदः भवेत्-
(A) ग्रामान् + चलितः (B) ग्रामाद् + चलितः
(C) ग्रामात् + चलितः (D) ग्रामाज् + चलितः

66. 'सुगण्णीशः' इति पदे सन्धिविधायकं सूत्रमस्ति-
(A) अनुनासिकात् परोनुस्वारः
(B) यरोनुनासिकेनुनासिको वा
(C) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः
(D) ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्

67. 'शिवच्छाया' पदस्य विच्छेदः भवेत्?
(A) शिवद् + छाया (B) शिव + छाया
(C) शिवत् + छाया (D) शिवज् + छाया

68. 'विसर्जनीयस्य सः' कदा भवति?
(A) खरि परे (B) शरि परे
(C) झलि परे (D) हशि परे

50. (A) **51.** (C) **52.** (C) **53.** (B) **54.** (A) **55.** (B) **56.** (D) **57.** (A) **58.** (A) **59.** (C) **60.** (A)
61. (C) **62.** (C) **63.** (D) **64.** (D) **65.** (C) **66.** (D) **67.** (B) **68.** (A)

69. 'शिवो वन्द्यः' इत्यत्र सन्धिः अस्ति-
(A) पूर्वरूप-सन्धिः (B) हल्-सन्धिः
(C) अच्-सन्धिः (D) विसर्ग-सन्धिः

70. 'एङः पदान्तादति' सूत्रस्योदाहरणमस्ति-
(A) हरेऽव (B) हरऽव
(C) हरेय (D) हरये

71. 'रो रि' सूत्रस्य उदाहरणं नास्ति-
(A) शम्भू राजते (B) हरी रम्यः
(C) पुना रमते (D) नरो हन्ति

72. 'देव + ऐश्वर्यम्' अत्र सन्धिः भविष्यति –
(A) देवेश्यर्यम् (B) देवैश्वर्यम्
(C) देवश्वर्यम् (D) देवऽवर्यम्

73. 'पेष्टा' अत्र सन्धिः अस्ति –
(A) श्चुत्व (B) ष्टुत्व
(C) जश्त्व (D) पूर्वरूप

74. 'अन्तर् + राष्ट्रियः' अत्र सन्धिः अस्ति –
(A) अन्ताराष्ट्रियः (B) अन्तर्राष्ट्रीयः
(C) अन्तरराष्ट्रीयः (D) अन्तरराष्ट्रियः

75. ''कोऽस्ति'' इत्यत्र कः सन्धिः?
(A) पूर्वरूपसन्धिः (B) पररूपसन्धिः
(C) गुणसन्धिः (D) वृद्धिसन्धिः

76. 'धात्रंशः' पदस्य सन्धिविच्छेदः स्यात्-
(A) धातरि + अंशः (B) धात्र + अंशः
(C) धातृ + अंशः (D) धात् + त्रंशः

77. 'एचोऽयवायावः' सूत्रानुसारेण 'ओ' वर्णस्य स्थाने अचि किं भवति?
(A) आव् (B) अव्
(C) अय् (D) आय्

78. 'वृद्धिरेचि' सूत्रस्य उदाहरणरूपेण भवितुं शक्यते-
(A) उपेन्द्रः (B) देवैश्वर्यम्
(C) गङ्गोदकम् (D) अनेकता

79. लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारेण 'वागीशः' पदस्य सन्धिविच्छेदः स्यात्-
(A) वाङ् + ईशः (B) वाच् + ईशः
(C) वाक् + ईशः (D) वाज् + ईशः

80. 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' सूत्रसन्दर्भे अं + चितः पदस्य सन्धिः स्यात् -
(A) अङ्चितः (B) अञ्चितः
(C) अण्चितः (D) अन्चितः

81. 'शिवोऽर्च्यः' पदस्य सन्धिविच्छेदः स्यात्-
(A) शिव + अर्च्यः (B) शिवो + अर्च्यः
(C) शिवु + अर्च्यः (D) शिवस् + अर्च्यः

82. 'पुना रमते' पदस्य सन्धिसूत्रानुसारेण सन्धिविच्छेदः स्यात्-
(A) पुन + रमते (B) पुनश्च + रमते
(C) पुनर् + रमते (D) पुनु + रमते

83. 'नायकः' इत्यस्य पदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति –
(A) ने + अकः (B) नै + अकः
(C) नो + अकः (D) नौ + अकः

84. 'इति + अपि' अत्र सन्धिः भविष्यति –
(A) इत्यपि (B) इत्यापि
(C) इतिपि (D) इतीपि

85. 'वागीशः अत्र सन्धिः अस्ति' –
(A) श्चुत्व (B) जश्त्व
(C) ष्टुत्व (D) उत्व

86. 'वनौषधिः' अत्र सन्धिविच्छेदः अस्ति –
(A) वनौ + षधिः (B) वनो + ओषधिः
(C) वन + औषधिः (D) वने + ओषधिः

87. 'प्रेजते' सन्धिविच्छेदः कार्यः –
(A) प्र + ऐजते (B) प्रे + जते
(C) प्र + एजते (D) पर् + एजते

88. 'वधूत्सवः' अस्य सन्धिविच्छेदः विद्यते –
(A) वधु + उत्सवः (B) वधू +ऊत्सवः
(C) वधूत + सवः (D) वधू + उत्सवः

89. पतञ्जलि का सन्धिविच्छेद है –
(A) पत + अञ्जलि (B) पतत् + अञ्जलि
(C) पतन् + अञ्जलि (D) पतद् + अञ्जलि

90. हरे + अव सन्धिरूप होगा –
(A) हरेव (B) हरौ
(C) हरेऽव (D) हरऽव

69. (D)	**70.** (A)	**71.** (D)	**72.** (B)	**73.** (B)	**74.** (A)	**75.** (A)	**76.** (C)	**77.** (B)	**78.** (B)	**79.** (C)
80. (B)	**81.** (D)	**82.** (C)	**83.** (B)	**84.** (A)	**85.** (B)	**86.** (C)	**87.** (C)	**88.** (D)	**89.** (B)	**90.** (C)

2 Unit

उपजीव्यकाव्य का सामान्य परिचय
रामायण,महाभारत,एवं पुराण

रामायण का सामान्य परिचय

- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है।
- इसमें सात काण्ड हैं।

काण्ड का नाम	सर्ग संख्या
1. बालकाण्ड	77सर्ग
2. अयोध्याकाण्ड	119 सर्ग
3. अरण्यकाण्ड	75 सर्ग
4. किष्किन्धाकाण्ड	67 सर्ग
5. सुन्दरकाण्ड	68 सर्ग
6. युद्धकाण्ड	128 सर्ग
7. उत्तरकाण्ड	111 सर्ग
कुलसर्ग	**645 सर्ग**

- इसमें 24000 श्लोक हैं, अतः इसे चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता भी कहते हैं।
- रामायण में मुख्यतः अनुष्टुप्/श्लोक छन्द हैं।
- गायत्री मन्त्र में 24 वर्ण होते हैं, अतः यह मान्यता है कि इसको आधार मानकर रामायण में 24,000 श्लोक लिखे गये हैं।
- प्रत्येक 1000 श्लोक के बाद गायत्री मन्त्र के नये वर्ण से नया श्लोक प्रारम्भ होता है।
- संस्कृत साहित्य में इतिहास- सञ्ज्ञक दो ग्रन्थ प्राप्त होते हैं- एक रामायण और दूसरा महाभारत।
- रामायण तथा महाभारत दोनों महाकाव्य के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- वाल्मीकिकृत रामायण आदिकाव्य है।
- यह संस्कृतवाङ्मय में प्राप्त रामकथाओं के अतिरिक्त संसार के अनेक रामकथाओं जैसे- अध्यात्मरामायण,अद्भुत रामायण, आनन्द-रामायण आदि राम विषयक काव्यों का मूल उपजीव्य स्वीकार किया जा सकता है।
- राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इतिहास के दो भेद किये हैं-

1. परक्रिया **2. पुराकल्प**

- परक्रियात्मक इतिहास एक नायक से सम्बद्ध है, पुराकल्पात्मक इतिहास अनेक नायकों से सम्बद्ध होता है।
- इस प्रकार रामायण केवल एक नायक विषयक होने से परक्रियात्मक इतिहास स्वीकार किया जा सकता है।
- महाभारत में अनेक नायक विषयणी कथायें होने से उसे पुराकल्पात्मक इतिहास माना जाना चाहिए।
- वेदों के बाद सर्वप्रथम अनुष्टुप् वाणी का प्रवर्तन आदिकाव्य रामायण में ही है।
- ऋषि वाल्मीकि के द्वारा विरचित होने के कारण इसे **आर्षकाव्य** भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि ने नारदजी से राम का वृत्तान्त सुना जो रामायण के बालकाण्ड का प्रथम सर्ग है, जिसे **मूलरामायण** भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि राम के समकालीन थे, अतः उन्होंने राम के चरित्र को काव्यबद्ध किया।
- ब्रह्मा की आज्ञा से वाल्मीकि ऋषि ने रामायण को रचा-

न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति।
कुरु रामकथां पुण्यां श्लोकबद्धां मनोरमाम्॥

(वा.रा.-1/3/35)

- महाभारत में प्राप्त रामोपाख्यान वाल्मीकि रामायण पर ही आधारित प्रतीत होता है। इससे वाल्मीकि रामायण की प्राचीनता प्रमाणित होती है।
- महाभारत के खिलभाग हरिवंश पुराण में रामायण महाकाव्य को लक्षित करके नाटक रचने का उल्लेख मिलता है- **'रामायणं महाकाव्यमुद्दिश्य नाटकं कृतम्'।**
- स्कन्दमहापुराण में 'रामायणमाहात्म्य', पद्मपुराण के पातालखण्ड में 'रामकथा', अग्निपुराण का 'रामायणसार', गरुडपुराण के पूर्वखण्ड में 'रामायणसार' का वर्णन,भागवतपुराण तथा बृहद्धर्मपुराण में रामविषयक आख्यान, आदिकवि वाल्मीकि रचित रामायण से आविर्भूत हुए हैं।
- यह सनातन काव्य बीज होने से परवर्ती काव्यों का उपजीव्य

है।'**काव्यबीजं सनातनम्** '-बृहद्धर्मपुराण में प्राप्त होता है।

- रामायण ने अपने को वेदों का उपबृंहण करने वाला बतलाया है-
  स तु मेधाविनौ दृष्ट्वा वेदेषु परिनिष्ठतौ।
  वेदोपबृंहणार्थाय तावग्राहयत प्रभुः।।
- रामायण का महत्त्व एक शास्त्रीय ग्रन्थ के रूप में भी अङ्गीकार किया जा सकता है। कथाओं के मध्य-मध्य में धर्मशास्त्रीय, नीतिशास्त्रीय तथा राजनीतिकविषयक श्लोक आये हैं। जिनमें शास्त्रीयता दृष्टिगत होती है।
- बालकाण्ड में विश्वामित्र के साथ रहने वाले साधु महात्मा पितृ- देवताओं का तर्पण करके अग्निहोत्र करने के पश्चात् अमृत के समान हविष्य का भक्षण करते थे।
- इतिहास पुराण को भी पञ्चमवेद की सञ्ज्ञा प्राप्त है-
  ''इतिहासपुराणं पञ्चम वेदानां वेदः।''
- रामायण महाकाव्य में राम धीरोदात्त क्षत्रिय नायक हैं।
- रामायण में '**तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्**' (बालकाण्ड-1)

इत्यादि मङ्गलाचरणात्मक पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।

- सर्गान्त में छन्द परिवर्तन की परम्परा का निर्वाह रामायण में सर्वत्र किया गया है।
- रामायण में प्रायः सभी रसों का वर्णन आया है परन्तु करुणरस प्रधान है।
- बुद्धचरित में अश्वघोष वाल्मीकि का नाम लेकर उन्हें प्रथम अनुष्टुप् छन्द का रचयिता स्वीकार करते हैं।
  '**वाल्मीकिरादौ च ससर्ज पद्यम्** ' (बुद्धचरित-1.43)

रामायण के विविध संस्करण

1. बम्बई संस्करण (देवनागरी संस्करण)-

- इसका प्रकाशन बम्बई के निर्णयसागर प्रेस से **1902** ई. में **के. पी. परब** के सम्पादन में हुआ।
- यह संस्करण भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय है।
- इस संस्करण पर नागेश द्वारा अपने आश्रयदाता राम के नाम से लिखी '**तिलक**' टीका मिलती है।
- '**शिरोमणि**' और '**भूषण**' नामक टीकाएँ भी प्राप्त होती हैं।
- इसी संस्करण के आधार पर R.T.H ग्रिफिथ महोदय ने अंग्रेजी पद्यानुवाद किया।
- इसे '**देवनागरी संस्करण**' भी कहते हैं।

2. बंगाल संस्करण

- इस संस्करण का प्रकाशन इटालियन विद्वान् **जी. गोरेशियो** ने 1843 ई. से 1867ई. तक अनेक खण्डों में किया।
- इसी संस्करण के आधार पर इटालियन व फ्रेंच अनुवाद हुए।
- इसे गौडीय संस्करण भी कहते हैं।

3. पश्चिमोत्तर या काश्मीर संस्करण

- 1923 ई. में डी. ए. वी. कालेज लाहौर के अनुसन्धान विभाग से प्रकाशित हुआ।
- इसमें कटक टीका भी दी गयी है।

4. दाक्षिणात्य संस्करण

- यह संस्करण मद्रास के कुम्भकोणम् से 1929 ई. में प्रकाशित हुआ।
- बम्बई संस्करण से मिलता-जुलता संस्करण है।

रामायण की विषयवस्तु

1. बालकाण्ड -77 सर्ग

- बालकाण्ड के आरम्भ के 4 सर्गों में रामायण की रचना की पूर्व पीठिका दी गयी है कि नारद ने महर्षि वाल्मीकि को राम कथा सुनायी।
- क्रौञ्चवध की घटना, अयोध्यापुरी का वर्णन , ऋषिशृङ्ग तथा शान्ता के विवाह का वर्णन।
- दशरथ द्वारा अश्वमेध यज्ञ।
- ऋषिशृङ्ग द्वारा दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ कराया गया।
- श्रीरामावतार, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न का जन्म।
- ताटका वध, विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा।
- गङ्गा से कार्तिकेय की उत्पत्ति का प्रसङ्ग।
- सगर के पुत्रों की उत्पत्ति तथा यज्ञ की तैयारी।
- भगीरथ की तपस्या, गङ्गावतरण।
- मिथिला गमन, अहल्या का उद्धार।
- त्रिशङ्कु का यज्ञ, श्रीराम द्वारा धनुर्भङ्ग।
- श्रीरामादि चारों भाइयों का विवाह।
- वामनावतार,सागरमन्थन वर्णन।

2. अयोध्याकाण्ड-119 सर्ग

- श्रीराम के राज्याभिषेक का प्रस्ताव।
- मन्थरा एवं कैकेयी प्रसङ्ग। दशरथ विलाप वर्णन।
- राम की वन यात्रा, स्त्रियों का विलाप।
- निषादराज गुह का वर्णन।
- प्रयाग भरद्वाज आश्रम में राम का अतिथि सत्कार।
- चित्रकूट की महत्ता एवं शोभा का वर्णन।
- राजा दशरथ का दिवंगत होना एवं रानियों का करुण विलाप।
- दशरथ का अन्त्येष्टि संस्कार एवं भरत का राज्य न स्वीकार करना।
- भरत की वनयात्रा एवं चित्रकूट यात्रा का वर्णन।
- भरतसन्ताप एवं राजचिह्न-स्वरूप चरण-पादुका लेकर अयोध्या आगमन।
- जाबालि का नास्तिक मत एवं राम द्वारा खण्डन।
- अनसूया द्वारा सीता का सत्कार एवं पातिव्रत्य धर्म का उपदेश,अन्तिम सर्ग में दण्डकारण्य में प्रवेश।

3. अरण्यकाण्ड-75 सर्ग

- राम-लक्ष्मण-सीता का दण्डकारण्य में निवास।
- पञ्चवटी निवास, विराध आदि राक्षसों का वध।
- सुतीक्ष्ण एवं अगस्त्य आश्रम में राम आदि का जाने का वर्णन।
- पम्पासरोवर, पञ्चाप्सरतीर्थ एवं माण्डकर्णि मुनि की कथा।
- पञ्चवटी में लक्ष्मण द्वारा सुन्दर पर्णकुटी (पर्णशाला) निर्माण।
- हेमन्त ऋतु वर्णन।
- शूर्पणखा का वर्णन एवं लक्ष्मण का उसके नाक-कान काट लेना।
- खरदूषण सहित चौदह सहस्र राक्षसों का वध,त्रिशिरा वध।
- रावण द्वारा छल से सीता हरण,रावण द्वारा जटायु की हत्या
- राम का करुण विलाप।
- राम की कबन्ध से भेंट तथा उनके द्वारा सुग्रीव से मैत्री करने का परामर्श।

4. किष्किन्धाकाण्ड-67 सर्ग

- पम्पासरोवर के वसन्तऋतु दर्शन से श्रीराम की व्याकुलता।
- हनुमान् द्वारा राम और सुग्रीव की मैत्री कराना।
- राम द्वारा बालि का वध, तारा का विलाप, सुग्रीव तथा अङ्गद का राज्याभिषेक।
- राम का प्रस्रवण पर्वत पर चातुर्मास यापन।
- वर्षाऋतुवर्णन, सम्पाति कथा, जाम्बवान् द्वारा हनुमान् का उद्बोधन-

5. सुन्दरकाण्ड -68 सर्ग

- हनुमान् द्वारा सागर लांघकर लङ्का में प्रवेश।
- सीता की खोज, अशोकवन में सीता दर्शन, अङ्गुलीयक वृत्तान्त (अँगूठी वर्णन)।
- अशोक वाटिका विध्वंस, अक्षयकुमार वध एवं हनुमान् का बन्दी होकर रावण सभा में जाना।
- विभीषण द्वारा दूतवध निषेध तथा हनुमान् की पूँछ में आग लगाना तथा लङ्का-दहन।
- हनुमान् का लौटना तथा वानरों का मधुवन घर्षण।
- राम को हनुमान् द्वारा सीता की चूडामणि दिया जाना तथा सीता का वृत्तान्त सुनाना।
- इस काण्ड को 'सुन्दर' कहे जाने का कारण नायक है दोनों को संकट के विषम काल में शुभ समाचार प्राप्त होना है।
- हनुमान् इस काण्ड के नायक हैं, जिनका एक नाम 'सुन्दर' भी है।
- अन्य काण्डों से अधिक काव्यात्मक होने से भी इसे 'सुन्दरकाण्ड' कहते हैं।

6. युद्धकाण्ड-128 सर्ग

- राम द्वारा हनुमान् प्रशंसा।
- श्रीराम के साथ वानर-सेना का प्रस्थान समुद्र तट पर पड़ाव।
- समुद्र से प्रार्थना, सेतु निर्माण।
- राम और रावण के बीच युद्ध का वर्णन।
- सभी काण्डों की अपेक्षा सबसे बड़ा काण्ड।
- इसमें रावण को मारकर सीता सहित अयोध्या आगमन तथा प्रजा का प्रसन्न होना वर्णित है।
- रावण को सभा में मन्त्रणा, विभीषण परित्याग।
- विभीषण का राम की शरण में आना।
- रावण द्वारा गुप्तचर प्रयोग।
- अङ्गद दूत बनकर रावण के पास जाते हैं।
- कुम्भकर्ण को जगाना, कुम्भकर्ण वध।
- ब्रह्मास्त्र का प्रयोग, माया सीता का वध देखकर राम की मूर्च्छा।
- शक्ति से लक्ष्मण मूर्च्छा और सञ्जीवनी बूटी से मूर्च्छा समाप्त।
- राम द्वारा सूर्य पूजा (सर्ग-105)।
- रावण वध, विभीषण का राज्याभिषेक।
- सीता की अग्निपरीक्षा, ब्रह्मा द्वारा राम की स्तुति।
- सीता सहित राम का अयोध्या लौटना।
- राम का राज्याभिषेक और प्रजापालन।

नोट- पाश्चात्त्य विद्वानों का मत है कि रामायण की यहीं समाप्ति हो गयी थी, उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है।

7. उत्तरकाण्ड-111 सर्ग

- बालकाण्ड के समान ही अनेक इतिहास पुराणात्मक आख्यान हैं।
- राम द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर अगस्त्य ऋषि द्वारा रावण के वंश की कथा सुनाते हैं।
- अगस्त्य ऋषि पुनः हनुमान् की कथा भी कहते हैं।
- सीता परित्याग।
- राजा नृग-उर्वशी-वशिष्ठ-ययाति के आख्यान।
- लवणासुर का शत्रुघ्न द्वारा वध तथा शत्रुघ्न का राज्याभिषेक।
- लव-कुश जन्म,रामचरित की रचना और गान,शम्बूक वध।
- इला-पुरुरवा आख्यान एवं राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान।
- शपथ लेकर सीता का पाताल प्रवेश।
- कुश लव का राज्याभिषेक तथा राम का महाप्रस्थान।
- अन्तिम सर्ग में रामायण का पाठफल कहा गया है।

प्रक्षिप्त अंश

- भारत में रामायण के विभिन्न संस्करणों में पाठ-भेद होने पर ऐसा भी माना गया है कि पूरी रामायण एक ही व्यक्ति महर्षि

वाल्मीकि के द्वारा लिखी गयी थी जो मौखिक परम्परा से प्रचलित होने के कारण पृथक् संस्करणों में मिलती है।

- यूरोपीय विद्वानों का मत है कि बालकाण्ड एवम् उत्तरकाण्ड बाद में जोड़े गये हैं। इन आलोचकों में वेबर तथा याकोबी प्रमुख हैं।
- प्रक्षिप्त मानने के इन्होंने निम्न तर्क दिये-
  1. मूलकथा से असम्बद्धता
  2. भाषा शैली का अन्तर होना
  3. प्रक्षिप्त काण्डों में ही राम को विष्णु का अवतार बताना
  4. महाभारत के रामोपाख्यान में तथा अन्य राम-काव्यों में उत्तरकाण्ड की कथा नहीं है।
  5. पाश्चात्त्य विद्वानों के मत में बड़ी त्रुटियाँ हैं। वस्तुतः रामायण की दीर्घकालीन मौखिक परम्परा के कारण कुछ सर्ग या श्लोक प्रक्षिप्त हुए हैं।
- सम्पूर्ण काण्डों को प्रक्षिप्त कहना पूर्वाग्रह तथा भ्रान्ति का द्योतक है।
- श्री वी. वरदाचार्य ने मूलग्रन्थ और प्रक्षिप्त अंश के विषय में पर्याप्त विवेचन किया और सारांश दिया है कि रामायण के सातों काण्ड मौलिक हैं।
- प्रसिद्ध समालोचक आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक में सीतापरित्याग तक की कथा को मूल रामायण की कथा माना है।

रामायण में रस

- यद्यपि रामायण में करुण, शृङ्गार और वीर रस का व्यापक प्रयोग है, तथापि कवि का विशेष प्रयोग करुण की ओर ही है। अतः रामायण में करुण रस को ही अङ्गी रस स्वीकार किया गया है।
- आचार्य **आनन्दवर्धन ने (850ई॰)** ध्वन्यालोक में स्पष्ट रूप से रामायण में करुण रस की पुष्टि की है -

  रामायणे हि करुणो रसः स्वयम् आदिकविना सूत्रतः।

  (ध्वन्यालोक 4/5 के बाद)
- रस उद्भावना के कारण ही वाल्मीकि **'रससिद्ध-कवीश्वर'** कहलाते हैं।
- आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की प्रेरणा करुण रस के प्रसङ्ग से ही प्राप्त की थी।
- क्रौञ्च पक्षी के युगल में से एक के मारे जाने से कवि का हृदय शोकाकुल हो उठा था और वही शोक श्लोक बनकर निर्गत (निकला) हुआ-

  'सोऽनुव्याहरणाद् भूयः शोकः श्लोकत्वमागतः'

  (रामायण -1.2.41)
- वाल्मीकि ने रामायण की समाप्ति सीता के आत्यन्तिक वियोग तक की कथा का समावेश करते हुए की है, जैसा कि आनन्दवर्धन ने लिखा है -

  'निर्व्यूढश्च स एव सीतात्यन्तवियोगपर्यन्तमेव स्वप्रबन्धमुपरचयता ' (ध्वन्यालोक 4/5 के बाद)
- महाकवि भवभूति ने भी रामायण के प्रसङ्ग को ध्यान में रखकर **'एको रसः करुण एव'** का उद्घोष किया है।

अतः स्पष्ट है आदिकाव्य रामायण का अङ्गी रस करुण ही है।

रामायण की भाषा शैली

- महर्षि वाल्मीकि की शैली वैदर्भी है।
- प्रसाद, ओज और माधुर्य शैली गत तीनों गुण उनमें सन्निविष्ट हैं।
- आदिमहाकाव्य रामायण की भाषा सरस, प्राञ्जल, ललित और परिष्कृत है। यद्यपि कहीं-कहीं आर्ष प्रयोग भी प्राप्त होते हैं।

रामायण में छन्दयोजना

- आदिकाव्य में अनुष्टुप् छन्द का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है।
- अनुष्टुप् के सर्वाधिक प्रयोग से ज्ञात होता है कि अनुष्टुप् उनका प्रिय छन्द है।
- रामायण के सर्गान्त में प्रायः इन्द्रवज्रा तथा उपजाति छन्द बद्ध पद्य हैं।

रामायण का समय निर्धारण

- रामायण की रचना समय के निर्धारण में विद्वानों में बहुत मतभेद है।
- तथापि अनेक विद्वद्गण की समीक्षा पर आधारित निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि -
- रामायण वैदिक साहित्य के अन्तिम पड़ाव अर्थात् 700ई॰पू॰ तथा बौद्ध धर्म (500ई॰पू॰) उदय के मध्य रचा गया।
- निष्कर्षतः रामायण का समय वर्तमान स्वरूप के साथ द्वितीय शताब्दी ई॰पू॰में स्थिर हो चुका था।

रामायण का वर्तमान स्वरूप

- श्लोकों की संख्या -24000
- चौबीस हजार श्लोक होने से इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्री-संहिता' कहते हैं।
- रामायण में 7काण्ड और 500सर्ग हैं।
- बालकाण्ड में कहा गया है -

चतुर्विंशत्सहस्त्राणि श्लोकानामुक्तवान् ऋषिः।
तथा सर्गशतान् पञ्च षट् काण्डानि तथोत्तरम्॥

(वा. रा. 1/4/2)

रामायण के प्रसिद्ध पद्य एवं सुभाषित रत्न

- वाल्मीकि के सुभाषित अर्थान्तरन्यास, अत्यन्त-भाव-युक्त एवं हृदयङ्गम करने योग्य संवेदना एवं व्यञ्जना प्रधान है।
- उत्साहवन्तः पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु। (वा. रा. 4/1/122)
- सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
  अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभः।। (वा. रा. 3/37/2)
- कुलीनमकुलीनं वा, वीरं पुरुषमानिनम्।
  चारित्रमेव व्याख्याति, शुचिं वा यदि वाऽशुचिम्।। (वा. रा. 2/109/4)
- सत्ये लोकः प्रतिष्ठितः (वा. रा. 3/109/10)
- आत्मा हि दाराः सर्वेषां दारासंग्रहवर्तिनाम् (वा. रा. 2/37/24)
- ऋद्धियुक्ता हि पुरुषा न सहन्ते परस्तवम्। (वा. रा. 2/261/25)
- आम्रं छित्त्वा कुठारेण, निम्बं परिचरेत्तु कः। (वा. रा. 2/35/16)
- राम द्वारा रावण की मृत्यु के बाद विभीषण को उपदेश -
  मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नः प्रयोजनम्।
  क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव॥

(युद्धकाण्ड 109/25)

रामायण की उपजीव्यता

- किसी काव्य की कथावस्तु के मूल स्रोत को उस काव्य का उपजीव्य कहा जाता है।
- रामायण की राम कथा ने लोगों पर ऐसा प्रभाव किया कि किसी कवि के लिये रामकथा से सम्बद्ध कथानक का आश्रय अपने काव्य की प्रसिद्धि और गौरव के लिये आवश्यक सा हो गया।
- रामायण से परकालीन कवियों, नाट्यकारों तथा चम्पूकारों ने रामायण को उपजीव्य बनाया।
- रामायण के उत्तरकाण्ड में स्वयं वाल्मीकि जी रामकथा की उपजीव्यता इन शब्दों में कहते हैं-

''न ह्यन्योऽर्हति काव्यानां यशोभाग् राघवाद् ऋते।''

रामायण पर आश्रित ग्रन्थ

रामायण ग्रन्थ

1. योगवासिष्ठ (वासिष्ठरामायण)।
2. अध्यात्मरामायण।
3. कम्बरामायण - तमिल भाषा में।
4. अद्भुतरामायण।
5. अगस्त्यरामायण।
6. रङ्गनाथरामायण - तेलुगु में।
7. कृत्तिवासरामायण - बङ्गला भाषा में
8. रामचरितमानस (तुलसीकृत) - अवधीभाषा में।

रामायण आधारित महाकाव्य

1. रघुवंशम् - कालिदास।
2. रामचरित - कवि अभिनन्द।
3. सेतुबन्ध - प्रवरसेन।
4. रामायणमञ्जरी - क्षेमेन्द्र।
5. जानकीहरण -कुमारदास।
6. राघवपाण्डवीय - माधवभट्ट।
7. रघुनाथाभ्युदय-वामनभट्ट बाण।
8. रामायणसार - रघुनाथ।
9. रावणवध (भट्टिकाव्य)- भट्टि कवि।

रामायण आधारित रूपक ग्रन्थ

1. भास - प्रतिमानाटकम्
2. भास - अभिषेकनाटकम्
3. दिङ्नाग - कुन्दमाला
4. भवभूति - उत्तररामचरितम्
5. भवभूति - महावीरचरितम्
6. राजशेखर - बालरामायण
7. मुरारि - अनर्घराघव
8. जयदेव - प्रसन्नराघव
9. शक्तिभद्र - आश्चर्यचूड़ामणि
10. रामभद्र - जानकीपरिणय
11. महादेव - अद्भुतदर्पण
12. दामोदर मिश्र - हनुमन्नाटक (महानाटक)

रामायण आश्रित चम्पू ग्रन्थ

1. रामायणचम्पू - भोज
2. उत्तरचम्पू - वेंकटाध्वरि
3. चम्पूराघव - अनन्ताचार्य
4. अमोघराघव - दिवाकर
5. रामचन्द्रचम्पू - विश्वनाथ सिंह

रामायण विषयक महत्त्वपूर्ण तथ्य

- संस्कृत साहित्य में रामायण और महाभारत आधारभूत ग्रन्थ है।
- रामायण को काव्य तथा महाभारत को इतिहास कहा जाता है।
- बौद्ध साहित्य पर भी रामायण का प्रभाव दिखायी पड़ता है - 'दशरथ जातक' नामक बौद्धग्रन्थ में राम कथा प्राप्त होती है।
- जैन-ग्रन्थों पर भी रामायण का प्रभाव मिलता है -
  जैन कवि विमलसूरि ने रामायण का प्रथम रूपान्तरण 118 सर्गात्मक प्राकृत काव्य **''पउमचरिउ'' (पद्मचरित)** में किया था।
- रामायण की अमरता का वर्णन रामायण के बालकाण्ड में की गयी है-
  यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
  तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

(वा0रा0 1/3/37)

- नलचम्पूकार त्रिविक्रमभट्ट ने वाल्मीकि को नमन किया और कहा- **सदूषणाऽपि निर्दोषा सखराऽपि सुकोमला।**
  नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा।

(नल0 1/11)

- संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् प्रो0 सत्यव्रतशास्त्री ने थाईलैण्ड की रामकथा पर आधारित संस्कृत महाकाव्य ''श्रीरामकीर्ति महाकाव्य'' लिखा।
- प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम संस्कृत विद्वान् हैं।
- कुश और लव ने ही सर्वप्रथम रामायण का मञ्चगान किया था।

अभ्यास प्रश्न (रामायण)

1. रामायण के रचयिता हैं?
(A) व्यास (B) वाल्मीकि
(C) मनु (D) तुलसीदास

2. वाल्मीकि ने किस ग्रन्थ की रचना की?
(A) महाभारत (B) गीता
(C) रामायण (D) उत्तररामचरित

3. रामायणे श्लोकाः सन्ति –
(A) लक्षश्लोकाः (B) चतुर्विंशतिसहस्रश्लोकाः
(C) षड्विंशतिसहस्रश्लोकाः (D) चत्वारिंशत्सहस्रश्लोकाः

4. संस्कृतसाहित्ये किं काव्यम् आदिकाव्यं कथ्यते–
(A) श्रीमद्भागवतम् (B) श्रीमद्रामायणम्
(C) श्रीमद्भगवद्गीता (D) श्रीमन्महाभारतम्

5. 'चतुर्विंशतिसाहस्री-संहिता' अस्ति–
(A) जयः (B) रामायणम्
(C) महाभारतम् (D) अग्निपुराणम्

6. 'वाल्मीकि-रामायणम्' कीदृशं ग्रन्थमस्ति?
(A) चम्पूकाव्यम् (B) महाकाव्यम्
(C) खण्डकाव्यम् (D) गीतिकाव्यम्

7. 'रामचरितमानसे' कति काण्डानि सन्ति?
(A) सप्त (B) द्वादश
(C) अष्टम (D) पञ्चदश

8. 'वाल्मीकि-रामायणे' कति काण्डानि सन्ति?
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) दश

9. आर्षकाव्यमस्ति–
(A) भागवतपुराणम् (B) रामायणम्
(C) रघुवंशम् (D) उत्तररामचरितम्

10. 'रामायण' को कहते हैं–
(A) खण्डकाव्य (B) चम्पूकाव्य
(C) महानाटक (D) आदिकाव्य

11. वाल्मीकिरामायणे प्रधानरसः-
(A) वीरः (B) रौद्रः
(C) शान्तः (D) करुणः

12. 'शोकः श्लोकत्वमागतः' किसके लिये कहा गया है–
(A) सीता (B) भवभूति
(C) वाल्मीकि (D) व्यास

13. अधस्तनेषु सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–
(a) भवभूतिना महाभारतं लिखितम्
(b) रामायणे रामस्य कथा वर्तते
(c) दशरथः अजस्य पुत्र आसीत्
(d) दशरथस्य माता अरुन्धती आसीत्
(A) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(B) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(C) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(D) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

14. रामचरितज्ञानार्थं वाल्मीकये को वरमदात्–
(A) नारदः (B) गौतमः (C) ब्रह्मा (D) गालवः

15. हनुमतो लङ्कायात्रा कस्मिन् काण्डे वर्णिता–
(A) अरण्यकाण्डे (B) लङ्काकाण्डे
(C) युद्धकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे

16. किसका शोक श्लोक में परिणत हो गया–
(A) कालिदास का (B) शकुन्तला का
(C) सीता का (D) वाल्मीकि का

17. रामायणकाव्यस्य रचनाकालः अस्ति–
(A) त्रेतायुगम् (B) द्वापरयुगम्
(C) सतयुगम् (D) कलियुगम्

18. वाल्मीकिकृत 'रामायण' किसकी कथा पर आधारित है–
(A) कृष्णकथा (B) बलरामकथा
(C) रामकथा (D) शिवकथा

19. महर्षिवाल्मीकिना रामायणं वर्णितम्–
(A) किष्किन्धाकाण्डं यावत् (B) सुन्दरकाण्डं यावत्
(C) युद्धकाण्डं यावत् (D) उत्तरकाण्डं यावत्

20. रामायणकथां वाल्मीकये कः उपदिदेश?
(A) भरद्वाजः (B) नारदः
(C) वसिष्ठः (D) विश्वामित्रः

21. रामायणं ..... भाषायां लिखितम्–
(A) वैदिके (B) प्राकृते (C) संस्कृते (D) अपभ्रंशे

22. वाल्मीकिरामायणे पञ्चमं काण्डमस्ति?
(A) अरण्यकाण्डम् (B) सुन्दरकाण्डम्
(C) किष्किन्धाकाण्डम् (D) युद्धकाण्डम्

23. सुन्दरकाण्डे सर्गाणां संख्या–
(A) 68 (B) 80 (C) 71 (D) 65

24. नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥
अयं श्लोकः-
(A) रघुवंशस्य (B) महाभारतस्य
(C) रामायणस्य (D) उत्तररामचरितस्य

1. (B) **2.** (C) **3.** (B) **4.** (B) **5.** (B) **6.** (B) **7.** (A) **8.** (B) **9.** (B) **10.** (D) **11.** (D) **12.** (C)
13. (A) **14.** (C) **15.** (D) **16.** (D) **17.** (A) **18.** (C) **19.** (C) **20.** (B) **21.** (C) **22.** (B) **23.** (A) **24.** (C)

25. 'वाल्मीकि-रामायण' में कितने सर्ग हैं?
(A) 325 (B) 500
(C) 250 (D) 255

26. रामायणे कस्मिन् काण्डे 'अहल्याशाप विमोचन'–वृत्तान्तोऽस्ति–
(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) बालकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे

27. रामायणे श्रीरामस्य ऋष्यमूकपर्वतनिवासो वर्णितः-
(A) किष्किन्धाकाण्डे (B) बालकाण्डे
(C) सुन्दरकाण्डे (D) युद्धकाण्डे

28. 'जटायुरावणयुद्धम्' रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्तते–
(A) अरण्यकाण्डे (B) सुन्दरकाण्डे
(C) किष्किन्धाकाण्डे (D) बालकाण्डे

29. रामायणे हनुमतः अङ्गुलीयकप्रदानवृत्तान्तः कस्मिन् काण्डे वर्तते–
(A) सुन्दरकाण्डे (B) युद्धकाण्डे
(C) किष्किन्धाकाण्डे (D) उत्तरकाण्डे

30. रामायणे हनुमतः समुद्रतरणं कस्मिन् काण्डे वर्णितम्-
(A) किष्किन्धाकाण्डे (B) युद्धकाण्डे
(C) सुन्दरकाण्डे (D) उत्तरकाण्डे

31. बालिवधम् रामायणे कस्मिन् काण्डे वर्तते?
(A) सुन्दरकाण्डे (B) किष्किन्धाकाण्डे
(C) अरण्यकाण्डे (D) बालकाण्डे

32. 'रामायणे' शबरीवृत्तान्तः कस्मिन् काण्डे अस्ति–
(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) किष्किन्धाकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे

33. रामायणे गङ्गावतरणकथा कुत्र वर्णिता?
(A) अयोध्याकाण्डे (B) सुन्दरकाण्डे
(C) अरण्यकाण्डे (D) बालकाण्डे

34. ऋष्यशृङ्गमुनेः चरितं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्णितम्–
(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) सुन्दरकाण्डे (D) बालकाण्डे

35. 'सुन्दरकाण्डम्' कुत्र निबद्धम्–
(A) महाभारते (B) भागवते
(C) पद्मपुराणे (D) वाल्मीकिरामायणे

36. सुन्दरकाण्डे चन्द्रोदयस्य वर्णनमस्ति–
(A) शोभनम् (B) अशोभनम्
(C) रुक्षम् (D) अतिकठिनम्

37. वाल्मीकिरामायणानुसारं दशरथस्य पुत्रेष्टियज्ञे पुरोहितः आसीत्?
(A) वसिष्ठः (B) ऋष्यशृङ्गः
(C) भरद्वाजः (D) विश्वामित्रः

38. वाल्मीकिरामायणानुसारं शम्बूकः केन हतः?
(A) दशरथेन (B) रामेण
(C) परशुरामेण (D) भरतेन

39. का सीतायै दिव्यवस्त्रभूषणानि प्रददाति–
(A) सुमित्रा (B) अनसूया
(C) कौसल्या (D) अरुन्धती

40. इन्द्रजित् केन हतः?
(A) लक्ष्मणेन (B) रामेण
(C) सुग्रीवेण (D) हनुमता

41. रामः ताडकावधं कस्य आज्ञया चकार–
(A) याज्ञवल्क्यस्य (B) जनकस्य
(C) दशरथस्य (D) विश्वामित्रस्य

42. केन ऋषिणा रामलक्ष्मणौ यज्ञरक्षार्थं याचेते?
(A) शृङ्गेण (B) विश्वामित्रेण
(C) अत्रिणा (D) पुलस्त्येन

43. अशुद्धं युग्मं चिनुत–
(A) रामायणम्–प्रतिमानाटकम्
(B) रामायणम्–अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) रामायणम्–उत्तररामचरितम्
(D) रामायणम्–अनर्घराघवम्

44. निम्नलिखित में से कौन काव्य रामायण का उपजीवी नहीं है–
(A) उत्तररामचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) रघुवंशम् (D) महावीरचरितम्

45. रामायणमाश्रित्य यस्य कथास्ति–
(A) कुन्दमालायाः (B) रत्नावल्याः
(C) मालविकाग्निमित्रस्य (D) पञ्चरात्रस्य

46. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति–
(A) महावीरचरितस्य (B) अभिषेकनाटकस्य
(C) मृच्छकटिकस्य (D) उत्तररामचरितस्य

47. बाली कहाँ का राजा था–
(A) लङ्का का (B) अयोध्या का
(C) कैकय का (D) किष्किन्धा का

48. सुग्रीवनामकं पात्रं कस्मिन् ग्रन्थे विद्यते–
(A) महाभारते (B) वाल्मीकिरामायणे
(C) शिवपुराणे (D) देवीभागवतपुराणे

25. (B) **26.** (C) **27.** (A) **28.** (A) **29.** (A) **30.** (C) **31.** (B) **32.** (B) **33.** (D) **34.** (D) **35.** (D) **36.** (A)
37. (B) **38.** (B) **39.** (B) **40.** (A) **41.** (D) **42.** (B) **43.** (B) **44.** (B) **45.** (A) **46.** (C) **47.** (D) **48.** (B)

49. श्रीरामचन्द्रः एनं व्याकरणशास्त्रज्ञ इति प्रशंसति
(A) सुग्रीवम् (B) भरतम्
(C) लक्ष्मणम् (D) हनूमन्तम्

50. स्वर्णमृगरूपेण 'पञ्चवट्याम्' उपस्थितस्य राक्षसस्य नाम–
(A) खरः (B) कबन्धः
(C) दूषणः (D) मारीचः

51. 'रुमा' इति कस्याः नाम –
(A) सुग्रीवपत्न्याः (B) विभीषणपत्न्याः
(C) अङ्गदमातुः (D) नलनीलयोः मातुः

52. सुन्दरकाण्डस्य क्रमसंख्या का वर्तते?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

53. सागरलङ्घने के त्रयो जनाः समर्थाः–
(A) नीलो नलो द्विविदश्च (B) हनुमान् गरुडो वायुश्च
(C) मैनाकः प्रवर्षणः कैलासश्च (D) प्रवेको विवेको अरुणश्च

54. अजस्य पितुः नाम किम्–
(A) दिलीपः (B) रघुः
(C) दीर्घबाहुः (D) इक्ष्वाकुः

55. अश्वमेधयज्ञवर्णनं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्तते?
(A) बालकाण्डे (B) उत्तरकाण्डे
(C) सुन्दरकाण्डे (D) अयोध्याकाण्डे

56. मन्दोदर्याः पतिः कः?
(A) रावणः (B) कुम्भकर्णः
(C) विभीषणः (D) पुलस्त्यः

57. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–
(a) रामायणीया कथा महाभारते न प्राप्यते
(b) रामायणीया कथा महाभारते प्राप्यते
(c) महाभारतकथा रामायणे न प्राप्यते
(d) महाभारतकथा रामायणे प्राप्यते
(A) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(B) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(C) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(D) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

58. रामलक्ष्मणयोः अध्ययनं कुत्र जातम्?
(A) पितुः गृहे (B) तक्षशिलाविश्वविद्यालये
(C) दण्डकारण्ये (D) वशिष्ठस्य आश्रमे

59. ''यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले'' इत्येतत् वाक्यं कमनुसरति?
(A) रामायणम् (B) भगवद्गीता
(C) महाभारतम् (D) ईशावास्योपनिषद्

60. दशरथस्य कति पुत्राः आसन्–
(A) एकः (B) द्वौ
(C) त्रयः (D) चत्वारः

61. सीतास्वयंवरे शिवधनुः केन भग्नम् कृतम्–
(A) रावणेन (B) बाणेन
(C) रामेण (D) लक्ष्मणेन

62. सीता केन अपहृता–
(A) रावणेन (B) खरेण
(C) कुम्भकर्णेन (D) दूषणेन

63. वाली केन हतः–
(A) सुग्रीवेण (B) हनुमता
(C) रामेण (D) रावणेन

64. रावणस्य भार्या का–
(A) सीता (B) सुलोचना
(C) त्रिजटा (D) मन्दोदरी

65. रामेण को लङ्काधिपतिः कृतः–
(A) सुग्रीवः (B) विभीषणः
(C) खरः (D) दूषणः

66. एकपत्नीव्रतधरः कः–
(A) दशरथः (B) रामः
(C) रघुः (D) दिलीपः

67. मथुरानामपुरीं कश्चक्रे–
(A) रामः (B) भरतः
(C) लक्ष्मणः (D) शत्रुघ्नः

68. कुशः कस्य सुतः–
(A) रामस्य (B) भरतस्य
(C) लक्ष्मणस्य (D) शत्रुघ्नस्य

69. सागरलङ्घनसमये हनूमतो बलपरीक्षा कया कृता–
(A) सुरसया (B) सीतया
(C) राजलक्ष्म्या (D) आदित्येन

70. सूक्ष्मरूपं धृत्वा लङ्काप्रवेशकाले हनुमान् कया अवरुद्धः–
(A) सुरसया (B) सिंहिकया
(C) लङ्किन्या (D) त्रिजटया

71. 'रामकथा' में जटायु-आख्यान कौन-सी अर्थप्रकृति है–
(A) बीज अर्थप्रकृति (B) पताका अर्थप्रकृति
(C) प्रकरी अर्थप्रकृति (D) कार्य अर्थप्रकृति

72. रामायणे 'सुग्रीवादिवृत्तम्' अस्ति–
(A) पताका (B) प्रकरी
(C) पताकास्थानकम् (D) आधिकारिकम्

49. (D) **50.** (D) **51.** (A) **52.** (D) **53.** (B) **54.** (B) **55.** (B) **56.** (A) **57.** (D) **58.** (D) **59.** (A) **60.** (D)
61. (C) **62.** (A) **63.** (C) **64.** (D) **65.** (B) **66.** (B) **67.** (D) **68.** (A) **69.** (A) **70.** (C) **71.** (C) **72.** (A)

73. 'देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवाः।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः॥'
उपर्युक्त श्लोक में महत्त्व प्रतिपादित है–
(A) कलत्र का (B) बन्धु का
(C) देश का (D) सहोदरभ्राता का

74. वशिष्ठ गुफा कहाँ स्थित है–
(A) चमोली (B) उत्तरकाशी
(C) टिहरी (D) पिथौरागढ़

75. क्रौञ्चद्वन्द्वियोगोत्थः..... श्लोकत्वमागतः–
(A) दुःखम् (B) शोकः
(C) रोषः (D) क्रोधः

76. कस्य पक्षिणः वधात् शोकः श्लोकत्वम् अजायत?
(A) गृध्रस्य (B) क्रौञ्चस्य
(A) शुकस्य (D) कोकिलस्य

77. रावणात् सीतायाः विमुक्तिः अनया स्वप्नेन दृष्टा-
(A) मन्दोदर्या (B) तारया
(C) त्रिजटया (D) कैकेय्या

78. ''धर्मसारमिदं जगत्'' इस वाक्य वाला ग्रन्थ है–
(A) गीता (B) वाल्मीकीयरामायणम्
(C) नीतिशतकम् (D) उत्तररामचरितम्

79. कस्मिन् युगे रामो राज्यं चकार–
(A) सत्ययुगे (B) त्रेतायुगे
(C) द्वापरे (D) कलियुगे

80. रावणेन सीता कुत्र स्थापिता आसीत्–
(A) गृहवाटिकायाम् (B) अशोकवाटिकायाम्
(C) अन्तःपुरवाटिकायाम् (D) रावणान्तःपुरे

81. 'मा निषाद प्रतिष्ठाम्' उक्ति किससे सम्बद्ध है–
(A) व्यास से (B) कालिदास से
(C) भास से (D) वाल्मीकि से

82. रामायणे श्लोकसंख्या भवति–
(A) 31000-40,000 (B) 22000-25000
(C) 11000-15000 (D) 5000-10,000

83. रामायणाश्रितं काव्यमेतत् भवति–
(A) नैषधीयचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) शिशुपालवधम् (D) रघुवंशम्

84. 'अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यं कुर्यां पापमहं यदि।
इक्ष्वाकूणामहं लोके भवेयं कुलपांसनः॥' केन इदम् उच्यते?
(A) रामेण (B) लक्ष्मणेन
(C) भरतेन (D) दशरथेन

85. 'शोकः श्लोकत्वमागतः' इति कस्मिन्काण्डे वर्णितम्?
(A) युद्धकाण्डे (B) बालकाण्डे
(C) अरण्यकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे

86. रामायणस्य समीक्षितावृत्तिः कया संस्थया प्रकाशिता–
(A) प्राच्यविद्यामन्दिरं, वडोदरा
(B) भाण्डारकर-संशोधन-संस्था, पुणे
(C) निर्णयसागरसंस्था, मुम्बई
(D) गीताप्रेस, गोरखपुर संस्था

87. 'सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥'
श्लोकममुं रावणं प्रति कः उक्तवान्–
(A) कुम्भकर्णः (B) सुग्रीवः
(C) वाली (D) मारीचः

88. 'प्रतिपत्पाठशीलस्य विद्येव तनुतां गता' इयमुक्तिः कुत्रोपलभ्यते–
(A) श्रीमद्भागवते (B) विष्णुपुराणे
(C) रामायणे (D) भगवद्गीतायाम्

89. ''सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥''
श्लोकममुं रावणासुरम्प्रति कः उक्तवान्–
(A) कुम्भकर्णः (B) सुग्रीवः
(C) विभीषणः (D) वाली

90. ''तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति'' उत्तरे रामायणकाण्डे केनोक्तम्–
(A) सीतया (B) कैकेय्या
(C) कौशल्यया (D) पृथिव्या

73. (D) **74.** (B) **75.** (B) **76.** (B) **77.** (C) **78.** (B) **79.** (B) **80.** (B) **81.** (D) **82.** (B) **83.** (D) **84.** (C)
85. (B) **86.** (A) **87.** (D) **88.** (C) **89.** (C) **90.** (A)

महाभारत का सामान्य परिचय

- महाभारत के लेखक का नाम व्यास (कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास) है।
- इनके पिता का नाम - पराशर ऋषि।
- इनकी माता का नाम - सत्यवती।
- वेदव्यास को यमुनाद्वीप में जन्म के कारण - द्वैपायन भी कहा जाता है।
- शरीर से कृष्ण वर्ण होने के कारण - कृष्णमुनि भी कहा जाता है।
- वैदिक मन्त्रों को याज्ञिक उपयोग के लिये चार वेदों में विभक्त करने के कारण - वेदव्यास कहा जाता है।

विव्यास वेदान् यस्मात् स तस्मात् व्यास इति स्मृतः

- व्यास जी ने तीन वर्षों में महाभारत जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की थी।

वंशावली -
- → वसिष्ठ
- → शक्ति
- → पराशर + सत्यवती
- → व्यास
- → शुकदेव

- जन्म स्थान - उत्तरापथ हिमालय
- भारतीय जनमानस की विश्वास परम्परा के आधार पर व्यास को कौरवों और पाण्डवों के समकालीन माना जाता है।
- वेदव्यास वेदों के विभाजन कर्त्ता, महाभारत, ब्रह्मसूत्र, भागवत पुराण सहित सभी अठारह पुराणों के कर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- भारतीय विश्वास में प्रत्येक द्वापर में आकर वेदव्यास वेदों का विभाजन करते हैं। अट्ठाईसवें व्यास का नाम 'कृष्ण द्वैपायन व्यास' है , इन्होंने 18 पुराणों की रचना की है।
- पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार 'व्यास' किसी का नाम न होकर प्रतीकात्मक कल्पना है।

व्यास का अन्य नाम-

1. बादरायण व्यास (बदरिकाश्रम में ज्ञान की साधना की थी।)
2. पराशर्य (पराशर के पुत्र)

महाभारत का परिचय एवं महत्त्वपूर्ण तथ्य

- विश्ववाङ्मय में सर्वाधिक विशाल ग्रन्थ महाभारत है।
- एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
- यह भारतीय जीवन शैली की समग्र और यथार्थ प्रस्तुति है।
- यह आकरग्रन्थ है, इसकी मान्यताएँ शाश्वत अर्थात् सार्वकालिक और सार्वदेशिक हैं।
- भारतीय परम्परा महर्षि व्यास की गणना सप्त चिरंजीवियों में करती है।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥

- महाभारत भारतीय संस्कृति और आचार परम्परा का सर्वोत्तम विश्वसनीय और आदर्श और महानतम ग्रन्थ है।
- महाभारत एक आर्ष महाकाव्य है।
- ऋषि प्रणीत काव्यों को आर्ष काव्य कहा जाता है।
- महाभारत को एक लाख श्लोक होने के कारण **शतसाहस्त्री-संहिता** भी कहा जाता है।
- महाभारत वाल्मीकि**रामायण** से चार गुना विशाल है।
- महाभारत में लेखक ने अपने युग के समस्त उल्लेखनीय विषयों को उल्लिखित किया है-**'यन्न भारते तन्न भारते।'**
- भारतवर्ष के समस्त पक्ष महाभारत में निहित हैं-

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥ (महा. 1/62/53)

- अनेक आध्यात्मिक तथा भक्तिपूर्ण ग्रन्थ (पञ्चरत्न) महाभारत के ही भाग हैं- **गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, गजेन्द्रमोक्ष, भीष्मस्तवराज।**
- वैदिक धर्म और सिद्धान्तों का व्यावहारिक रूप हमें महाभारत में उपलब्ध होता है।
- महाभारत जीवित भारतीय संस्कृति का प्रकाश स्तम्भ है।

'महाभारत' का समय

- बालगंगाधर तिलक -ई.पू. 5000
- डॉ. वचनदेव कुमार -ई.पू. 3100 वर्ष
- विण्टरनित्स-ई.पू. चौथी शताब्दी से पहले।
- रामजी उपाध्याय ई.पू. 600 से 1200 के मध्य
- चन्द्रशेखर पाण्डेय एवं डॉ. नानूराम व्यास-320 ई.पू. से 50 ई. के मध्य मानते हैं।

काल विषयक प्रमाण

- कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने महाभारत की कथा का संक्षिप्त रूप ग्यारहवीं शताब्दी ई. के 'भारतमञ्जरी' के रूप में प्रस्तुत किया है।
- ब्यूलर ने भारतमञ्जरी को महाभारत से मिलती जुलती कथा बताया है।
- कुमारिलभट्ट (8वीं शताब्दी ई. का आरम्भ) ने महाभारत के दस पर्वों का उल्लेख किया।
- आठवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शङ्कराचार्य ने महाभारत को स्त्रियों और शूद्रों की स्मृति कहा है।
- कम्बोज प्रदेश (कम्पूचिया) में प्राप्त 600 ई. के एक अभिलेख में वहाँ के एक मन्दिर के लिये रामायण और महाभारत की प्रतिलिपियों को उपहार के रूप में प्रदान किये जाने का उल्लेख मिलता है।

- जावा और बालिद्वीप में भी महाभारत छठी शताब्दी में प्रचलित था।
- 445 ई. के एक गुप्तकालीन अभिलेख में महाभारत को 'शतसाहस्त्रीसंहिता' कहा गया है।
- गुप्तकाल के दानपात्रों में भी यही उल्लेख है-

'शतसाहस्त्रयां संहितायां वेदव्यासेनोक्तम्'

- शान्तिपर्व के सीरियन-भाषीय रूपान्तर के तीन अध्यायों के आधार पर हर्तेल ने भी इसे प्राचीन स्वीकार किया।
- यूनानी लेखक दिया क्रिसोस्तोम (Dio chrysostom) 50 ई. में भारत आया था, उसने लिखा है कि भारत में एक लाख श्लोकों का 'इलियड' प्रचलित था।
- विन्टरनित्ज ने 'इलियड' से उसका तात्पर्य महाभारत ही माना है।
- अनेक गृह्यसूत्रों में महाभारत के पर्वों की कथाएँ तथा भारत, महाभारत का उल्लेख प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

- महाभारत का मूल रूप तो वैदिक युग की समाप्ति 800 ई.पू. में 'जय' नाम से बन चुका था।
- 'भारत' की रचना 500 ई.पू. हुई।
- वर्तमान महाभारत-200ई. पू. से 100 ई. पू. तक बना होगा।

महाभारत का स्वरूप

- एक लाख से अधिक श्लोक।
- शत-साहस्त्री-संहिता कहते हैं।
- अठारह पर्वों में विभक्त।
- कृष्ण इस ऐतिहासिक काव्य के नायक हैं।
- सबसे बड़ा पर्व- शान्तिपर्व (14 हजार श्लोक)
- सबसे छोटा पर्व- महाप्रस्थानिक पर्व (115 श्लोक)।
- अठ्ठारह पर्वों के अलावा अन्त में इसके परिशिष्ट के रूप में हरिवंश पर्व में कृष्ण जीवन चरित्र वर्णित है, इसे मिलाकर श्लोकों की संख्या एक लाख होती है।

महाभारत के संस्करण

1. कलकत्ता संस्करण- (1834-39 ई.)

- चार भागों में प्रकाशित।
- बिना किसी टीका के प्रकाशित।
- हरिवंश पर्व सम्मिलित।
- 1875 ई. में अनुज मिश्र तथा नीलकण्ठ की टीका के साथ प्रकाशित हुआ।

2. बम्बई संस्करण (1862 ई.)

- नीलकण्ठी टीका के साथ प्रकाशित।
- कलकत्ता संस्करण की अपेक्षा उत्कृष्ट।
- गीताप्रेस गोरखपुर से यही संस्करण छह खण्डों में सुन्दर हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित।
- इस संस्करण के साथ हरिवंश पर्व नहीं है।
- गीताप्रेस से हरिवंश पर्व अलग ग्रन्थ के रूप में हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित।

3. मद्रास संस्करण (1855-60 ई.)

- दाक्षिणात्य पाठ का यह संस्करण मद्रास से तेलुगू लिपि में प्रकाशित।
- हरिवंश पर्व तथा नीलकण्ठी टीका के उद्धरण भी शामिल है।

विशेष- भारतवर्ष के बाहर महाभारत का कोई संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ।

- आलोचनात्मक संस्करण का सम्पादन तथा प्रकाशन पुणे (महाराष्ट्र) के भण्डारक ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट (BORI) के तत्त्वावधान में प्रकाशित।
- 24 जिल्दों में प्रकाशित।
- संस्कृतशोध का एक मानदण्ड माना जाता है।
- 1923 ई. में विराटपर्व से प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।
- सम्पादक प्रारम्भ में उतगीकर थे, बाद में अन्य सम्पादक हुए।
- यह प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक संस्करण है।

महाभारत का विकास

(i) जय

- महाभारत का मूलरूप जय के नाम से प्रसिद्ध था।

जयोनामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा।
(महाभारत 1/62/20)

- महाभारत के मङ्गल श्लोक में भी स्पष्ट उल्लेख है-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

- वर्तमान महाभारत के आदिपर्व के 65वें अध्याय से जय की सामग्री का आरम्भ हुआ था।
- क्षत्रिय उत्पत्ति का वर्णन इसी में है।
- इस ग्रन्थ में 8800 श्लोक थे।
- व्यास ने वैशम्पायन को इसे सुनाया था।
- धर्म-चर्चा मुख्य विषयवस्तु थी।

(ii) भारत

- द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार भारत के रूप में हुआ।
- इस ग्रन्थ में 24000 श्लोक थे।

- इसमें उपाख्यानों को सम्मिलित नहीं किया गया था।
- जनमेजय के समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर किया था।

(iii) महाभारत

- अन्तिम अवस्था में एक लाख से अधिक श्लोकों का महाभारत ग्रन्थ।
- भारत को 'महाभारत' के रूप में परिणत करने का अवसर नैमिषारण्य नामक पवित्र स्थान पर होने वाला यज्ञ था।
- इस यज्ञ को शौनक ऋषि ने अनुष्ठित किया। यह द्वादशवार्षिक सत्र था।
- प्रवक्ता सौति नामक ऋषि थे।
- बारह वर्षों के दीर्घकाल में सौति ने अपने श्रोताओं की जिज्ञासा शान्त की।
- भारतवर्ष का विश्वकोष - महाभारत।

महत्वाद् भारवत्त्वाच्च महाभारतमुच्यते। (1/1/274)

- पूना संस्करण के सम्पादक डॉ. सुक्थनकर के अनुसार इसके उपबृंहण का कार्य भृगुवंशी ब्राह्मणों ने मुख्यतः किया
- कुलपति शौनक स्वयं भार्गव थे।
- नायक कृष्ण की कथा से अलङ्कृत करने के लिए इसमें हरिवंश खिलपर्व (परिशिष्ट) के रूप में जोड़ा गया
- सौति ने विशालकाय महाभारत को अठारह मुख्य एवं दीर्घकाय पर्वों में विभक्त किया।
- वैशम्पायन के अनुसार उसमें दो सहस्र अध्याय हैं।
- वर्तमान संस्करण में 1925 अध्याय प्राप्त होते हैं।

महाभारत की विषय वस्तु

1. आदि पर्व

- 19 उपपर्व, 233 अध्याय, 9000 श्लोक।
- तीसरा पौष्य उपपर्व -गद्यात्मक है, जिसमें जनमेजय के सर्प यज्ञ की पृष्ठभूमि है।
- पैलोम तथा आस्तीक उपपर्व में महाभारत की भूमिका।
- शकुन्तला आख्यान - पुरूवंशी राजाओं का वर्णन।
- धृतराष्ट्र का अपनी पत्नी गान्धारी से 100 पुत्रों की प्राप्ति।
- पाण्डु की पत्नियों (कुन्ती+माद्री) से नियोग द्वारा 5 पुत्रों के जन्म की घटनाएँ।
- कौरवों और पाण्डवों की शिक्षा, दीक्षा तथा विवाहादि का वर्णन।

2. सभा पर्व

- 10 उपपर्व, 81 अध्याय।
- पाण्डवों की दिग्विजय यात्रा, जरासन्ध वध।
- युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ,शिशुपाल वध।
- द्रोपदी का चीर हरण, द्यूत क्रीड़ा में युधिष्ठिर का हारना।
- 12 वर्ष का वनवास, एक वर्ष का अज्ञातवास।

3. वन पर्व

- 22 उपपर्व, 315 अध्याय।
- नल और राम के आख्यान प्राप्त होते हैं।
- सावित्री तथा सत्यवान् की कथा।
- जयद्रथ द्वारा द्रौपदी का हरण।
- इन्द्र द्वारा कर्ण के कवच-कुण्डल का ले लिया जाना।
- मनोरञ्जन के विविध आख्यान हैं।
- पाण्डवों की तीर्थ यात्रा।

4. विराट पर्व

- 5 उपपर्व, 72 अध्याय, 2700 श्लोक
- पाण्डव वेश बदलकर मत्स्यराज विराट के राजप्रासाद में अज्ञातरूप में रहते थे।
- द्रौपदी के प्रति आसक्त कीचक का भीम द्वारा वध।
- विराट की गायों का कौरवों द्वारा हरण पर अर्जुन और कौरवों का भीषण युद्ध होता है। कौरव पराजित होते हैं।
- अन्तिम उपपर्व (वैवाहिक पर्व) में विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन पुत्र अभिमन्यु के साथ हुआ।

5. उद्योग पर्व

- 10 उपपर्व, 196 अध्याय, 7100 श्लोक
- इसका मुख्य वृत्त शान्ति के लिये वार्तालाप एवं युद्ध की पूर्व पीठिका की प्रस्तुति।
- दोनों पक्ष मित्रसंग्रह में सन्नद्ध होते हैं।
- कृष्ण के पास सहायता हेतु अर्जुन और दुर्योधन जाते हैं। दुर्योधन को पूरी सेना और अर्जुन को शस्त्र न धारण करने की प्रतिज्ञा वाले कृष्ण मिलते हैं।
- शान्ति प्रस्ताव जो पाण्डव केवल पाँच गाँव लेकर भी सन्तुष्ट रहने की बात करते हैं।
- कृष्ण का भी शान्ति दूत बनना व्यर्थ हो जाता है।
- 'अम्बोपाख्यान' के रूप में पूर्व कथा सुनायी गयी है।
- काशिराज की पुत्री अम्बा का हरण भीष्म ने किया था।
- दूसरे जन्म में अम्बा द्रुपद के घर में शिखण्डी के रूप में जन्म लेती है।
- शिखण्डी में भीष्म से बदला लेने की भावना, महाभारत युद्ध की प्रस्तावना इस पर्व में सम्यक् रूप से दी गयी है।

6. भीष्म पर्व

- 5 पर्व,122 अध्याय, 6100 श्लोक
- भीष्म के सेनापतित्व में10 दिनों तक महाभारत युद्ध का वर्णन।
- सञ्जय धृतराष्ट्र को समस्त युद्ध-वृत्तान्त दिव्य दृष्टि से देखकर बताता है।

- सभापर्व के समान इस पर्व के आरम्भ में भूगोल वर्णन है।
- युद्ध के आरम्भ में कृष्णार्जुन-संवाद के रूप में 18 अध्यायों का अंश है, जिसे **श्रीमद्भगवद्गीता** कहते हैं।
- युद्ध के तीसरे दिन भीष्म के पराक्रम से विवश होकर कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर भीष्म के वध के लिए रणभूमि में उद्यत होते हैं। भीष्म कृष्ण की स्तुति करते हैं।
- शिखण्डी को आगे करके भीष्म को बाणों की शय्या पर सुला दिया गया।
- भीष्म को प्राण त्यागने के लिए उत्तरायण की प्रतीक्षा।

7. द्रोण पर्व

- 8 उपपर्व,202 अध्याय ,10000 श्लोक
- द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में कौरवों तथा पाण्डवों के साथ 5 दिनों तक के भीषण तथा अन्यायपूर्ण युद्ध का वर्णन है।
- युद्ध में क्रमशः संशप्तकों, अभिमन्यु, जयद्रथ, घटोत्कच, तथा द्रोणाचार्य का वध होता है।
- अभिमन्यु की मृत्यु पर व्यास युधिष्ठिर के दुःख को कम करने के लिए 16 राजाओं का चरित सुनाते हैं।
- द्रोण का वध छल पूर्वक होने से उनका पुत्र अश्वत्थामा कुपित होकर 'नारायणास्त्र ' का प्रयोग करता है।
- द्रोणपर्व के पाठ और श्रवण का फल भी बताया गया है।

8. कर्ण पर्व

- कौरव-सेना का अध्यक्ष कर्ण बनता है, जो दो दिनों (16 वें 17वें) तक युद्ध करके मारा जाता है।
- कर्ण के अहम् की तुष्टि के लिए मद्रनरेश शल्य को उसका सारथि बनाया जाता है।
- कर्ण और शल्य का परस्पर रोचक वाग्युद्ध (वाणी युद्ध)।

9. शल्य पर्व

- 2 उपपर्व (ह्रदपर्व , गदापर्व),65 अध्याय,3700 श्लोक
- इसमें भारत युद्ध के अन्तिम दिन (18 वें दिन) के युद्ध का वर्णन है।
- शल्य कौरवों का सेनापति बना था।

  द्रोणे च निहते कर्णे भीष्मे च विनिपातिते।
  आशा बलवती राजन् शल्यो जेष्यति पाण्डवान्॥
- शल्य का वध।
- दुर्योधन का गदायुद्ध और ऊरुभङ्ग इस पर्व की मुख्य घटना है।
- इस पर्व के साथ युद्ध समाप्त हो जाता है।
- शल्यपर्व के आख्यानों में तीर्थों का माहात्म्य वर्णित है।

10. सौप्तिक पर्व

- 1-उपपर्व (ऐषीक), 18 अध्याय , 810 श्लोक
- मुख्य कथा पाण्डवों की सोयी हुई सेना पर आक्रमण करके द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के मारे जाने की है।
- यह कुकर्म -**कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा ने किया।**
- इस समाचार से दुर्योधन की सन्तोष पद मृत्यु।
- पाण्डव अश्वत्थामा को पकड़कर उसके सिर की मणि निकाल लेते हैं।

11. स्त्री पर्व

- 3-उपपर्व (जलप्रदानिक, स्त्रीविलाप, श्राद्ध)
- 27 अध्याय, 820 श्लोक
- श्राद्ध उपपर्व में कुन्ती युधिष्ठिर को कर्ण के जन्म का वृत्तान्त सुनाकर उसका भी श्राद्ध करने को कहती है।
- इस घटना पर युधिष्ठिर स्त्रीजाति को शाप देते हैं कि अब स्त्रियों के मन में रहस्य की कोई बात छिपी नहीं रहेगी।
- गान्धारी द्वारा कृष्ण के वंश के विनाश का शाप।

12. शान्ति पर्व

- 3 उपपर्व - (राजधर्मानुशासन, आपद्धर्म, मोक्षधर्म)
- 365 अध्याय,14725 श्लोक
- यह महाभारत में बाद में जोड़ा गया पर्व प्रतीत होता है।
- जय और भारत में नहीं था।
- यह महाभारत का सबसे बड़ा पर्व है।
- धार्मिक और दार्शनिक सामग्री सर्वाधिक इसी पर्व में है।
- राजधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, दण्डनीति, आपद्धर्म आदि की विवेचना।
- मोक्षधर्म के अन्तर्गत सृष्टि, जीव, आत्मा, कर्मज्ञान, पुरुषार्थ आदि का प्रतिपादन। इस प्रसङ्ग में पराशरगीता।
  - (अध्याय-290-98) हंस गीता (अध्याय -299) आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।
- यह पर्व अपने आप में स्वतन्त्र पुराण जैसा है।
- शय्या में भीष्म के द्वारा युधिष्ठिर आदि को उपदेश।

13. अनुशासन पर्व

- 2 उपपर्व, 168 अध्याय
- 10000 श्लोक, मुख्य रूप से धर्मशास्त्रीय उपदेश।
- विषयवस्तु की दृष्टि से शान्तिपर्व के समान।
- प्रथम उपपर्व - दान धर्म (166 अध्याय)
- द्वितीय उपपर्व - भीष्म का स्वर्गारोहण (2अध्याय)
- ब्राह्मणों की महत्ता तथा उन्हें दान करने का वर्णन जैसा महाभारत में है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं है।
- इस पर्व के 17वें अध्याय में '**शिवसहस्त्रनामस्तोत्र**' तथा 149 वें अध्याय में - '**विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र**'।

14. आश्वमेधिक पर्व

- 92 अध्याय, 4250 श्लोक

- व्यास के आदेश पर युधिष्ठिर अश्वमेध-यज्ञ करते हैं।
- अर्जुन द्वारा एक वर्ष तक यज्ञाश्व की रक्षा की जाती है।
- 'अनुगीता' नामक उपपर्व में दर्शनशास्त्र की सकल सामग्री वर्णित है।
- दक्षिणभारतीय संस्करण में 21 अध्यायों का एक अतिरिक्त उपपर्व -वैष्णव धर्म।

15. आश्रमवासिक पर्व

- 3 उपपर्व, 39 अध्याय, 110 श्लोक।
- मुख्यवस्तु- धृतराष्ट्र के साथ गान्धारी, कुन्ती और विदुर का वन में आश्रम बनाकर निवास करना।
- धृतराष्ट्र के 15 वर्षों तक युधिष्ठिर परामर्श दाता बने रहे, उसके बाद वनवास।

16. मौसल पर्व

- 304 श्लोक
- युधिष्ठिर के सिंहासनारोहण के 36 वर्ष बाद गान्धारी का शाप सत्य होता है।
- यादव वंश के लोग परस्पर युद्ध करके समाप्त हो जाते हैं।
- कृष्ण भी एक व्याध द्वारा भ्रमवश मारे जाते हैं।
- यदुवंश के विनाशक 'मूसल' के कारण ही इस पर्व का नाम मौसल पर्व पड़ा।

17. महाप्रस्थानिक पर्व

- 3 अध्याय, 115 श्लोक
- पाण्डवों की हिमालय यात्रा का वर्णन।
- हिमालय में क्रमशः द्रौपदी,सहदेव आदि गिरते जाते हैं और युधिष्ठिर उनके पतन का कारण बतलाते हैं।
- युधिष्ठिर पार्थिव शरीर से ही स्वर्ग जाते हैं।

18. स्वर्गारोहण पर्व

- 5 अध्याय, 220 श्लोक
- इसमें युधिष्ठिर के स्वर्ग पहुँचने तथा देवदूत के साथ नरक में जाकर अपने अनुजों के करुण-क्रन्दन सुनने का वृत्तान्त है।
- आश्वासन पाकर दिव्य लोक जाकर कृष्ण अर्जुन आदि से मिलते हैं।
- अन्तिम अध्याय में महाभारत का माहात्म्य तथा उपदेश।
- इसे महाभारत का सार - 'भारत-सावित्री ' कहते हैं।

महाभारत की प्रमुख टीकाएँ

- कुल 36 टीकाएँ प्राप्त होती हैं, जिनमें मुख्य टीकाएँ निम्नलिखित हैं-

टीकाकार	टीका
1. देवबोध	ज्ञानदीपिका
2. वैशम्पायन	मोक्षधाम
3. विमलबोध	विषमश्लोकी
4. नारायणसर्वज्ञ	भारतार्थप्रकाश
5. चतुर्भुज मिश्र	भारतोपाय प्रकाश
6. आनन्दपूर्ण	जयकौमुदी
7. अर्जुन मिश्र	भारत-संग्रहदीपिका
8. वादिराज	लक्षाभरण
9. नीलकण्ठ चतुर्धर	भारतभावदीप

महाभारत के प्रमुख उपाख्यान

1. **शकुन्तलोपाख्यान -** आदिपर्व (अध्याय 68-74 तक)।
2. **मत्स्योपाख्यान -** मत्स्य द्वारा प्रलय में मनु को बचाने की कथा।
3. **रामोपाख्यान -** वनपर्व (अध्याय 274-291 तक)। वाल्मीकिरामायण की कथा संक्षेप में।
4. **शिवि-उपाख्यान -** वनपर्व (अध्याय 292-299 तक)।
   - शिवि अपने प्राण देकर भी शरणागत कपोत की बाज से रक्षा करता है।
5. **सावित्री उपाख्यान -** वनपर्व में, पतिव्रत धर्म की पराकाष्ठा।
6. **नलोपाख्यान -** वनपर्व (अध्याय 53 से 79 तक)।
   - राजा नल- दमयन्ती की प्रणय कथा। 'नैषधीयचरितम्' का उपजीव्य।
7. **अम्बोपाख्यान** -उद्योगपर्व में।
8. **हरिवंश पुराण -** यादवों की विस्तारपूर्वक कथा।

इसमें तीन पर्व -
(i) हरिवंशपर्व - श्रीकृष्ण के पूर्वजों का वर्णन।
(ii) विष्णुपर्व - श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन।
(iii) भविष्यपर्व - कलियुग के प्रभाव का वर्णन।

महाभारत में अङ्गीरस

- महाभारत में **शान्त रस** की प्रधानता है।
- मोक्ष नामक पुरुषार्थ का अङ्गीत्वेन वर्णन है।

महाभारत आश्रित ग्रन्थ

महाकाव्य -

1. किरातार्जुनीयम्	-	भारवि	बृहत्त्रयी
2. शिशुपालवधम्	-	माघ	
3. नैषधीयचरितम्	-	श्रीहर्ष	
4. भारतमञ्जरी	-	क्षेमेन्द्र	
5. नलाभ्युदय	-	वामनभट्ट बाण	

नाटक -

1. दूतघटोत्कच	-	भास
2. मध्यमव्यायोग	-	भास
3. बालचरित	-	भास

4. ऊरुभङ्ग - भास
5. पञ्चरात्र - भास
6. दूतवाक्य - भास
7. कर्णभार - भास
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कालिदास
9. वेणीसंहार - भट्टनारायण
10. बालभारत - राजशेखर
11. किरातार्जुनीयव्यायोग - वत्सराज

चम्पूग्रन्थ

1. नलचम्पू - त्रिविक्रमभट्ट
2. भारतचम्पू - अनन्तभट्ट
3. भारतचम्पू - राजचूडामणि दीक्षित
4. पाञ्चालीस्वयंवरचम्पू - नारायण चम्पू

महाभारत का अंश 'श्रीमद्भगवद्गीता'

- स्मार्त परम्परा में एकमात्र ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता स्वीकृत है।
- यह भीष्मपर्व (अध्याय 25-42) में है।
- इसमें 18 अध्याय, 700श्लोक, 5 छन्दों का प्रयोग। सर्वाधिक अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग।
- अपने आपमें संस्कृत भाषा की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना।
- दार्शनिक चिन्तन के तीन प्रस्थान हैं- श्रौतप्रस्थान, सौत्रप्रस्थान व स्मार्तप्रस्थान।
- गीता का अर्थ - गायी गयी / कही गयी।
- भीष्म पर्व के अनुसार - **'या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनि:सृता। '**
- उपनिषद् शब्द स्त्रीलिङ्ग है, अतः गीता शब्द में स्त्रीलिङ्ग का प्रयोग।
- गीता में उपनिषत्सु शब्द का प्रयोग है। यह आदरार्थ प्रयोग है।
- गीता का रचनाकाल महाभारत का प्रारम्भिक दिवस है।
- मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी को **गीता जयन्ती** मनाई जाती है।
- गीता पर सर्वाधिक प्राचीन भाष्य **'शाङ्करभाष्य'** है।

गीता के अध्यायों का नाम

श्लोक		संख्या
1. अर्जुनविषादयोग	-	47
2. सांख्ययोग	-	72
3. कर्मयोग	-	43
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	-	42
5. कर्मसंन्यासयोग	-	29
6. आत्मसंयमयोग	-	47
7. ज्ञानविज्ञानयोग	-	30
8. अक्षरब्रह्मयोग	-	28
9. राजविद्याराजगुह्ययोग	-	34
10. विभूतियोग	-	42
11. विश्वरूपदर्शनयोग	-	55
12. भक्तियोग	-	20
13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	-	34
14. गुणत्रयविभागयोग	-	27
15. पुरुषोत्तमयोग	-	20
16. दैवासुरसम्पद्विभागयोग	-	24
17. श्रद्धात्रयविभागयोग	-	28
18. मोक्षसंन्यासयोग	-	78
कुल		700 श्लोक

महाभारत के प्रमुख पद्य

- धर्मे चार्थे च कामे च ....। (महा. 1/62/53,18/5/50)
- प्रकाशलक्षणदेवा मनुष्याः कर्मलक्षणाः। (महा. 14/43/21)
- अहो सिद्धार्थता तेषां सन्तीह पाणयः।
  न पाणिलाभादधिको लाभः कश्चन विद्यते।। (महा. 12/180/11)
- न नः समितिं गच्छेद् यश्च नो निर्वपेत् कृषिम्। (महा. 5/30/33)
- गुह्यं ब्रह्म तदितं ब्रवीमि, न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्। (महा. 12/299/20)
- यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यस्तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः।
  मायाचारो मायया वर्तितव्यः साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः।। (महा. 5/37/7)
- वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।
  अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।। (महा. 5/30/30)
- सुलभाः पुरुषा राजन्, सततं प्रियवादिनः।
  अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभः।। (महा. 5/37/15)
- अक्रोधेन जयेत् क्रोधम् असाधुं साधुना जयेत्।
  जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्।। (महा. 5/39/72)
- न च शत्रुरवज्ञेयो दुर्बलोऽपि बलीयसा।
  अल्पोऽपिहि दहत्यग्निर्विषमल्पं हिनस्ति च।।
- धर्मः कामश्च स्वर्गश्च, हर्षः क्रोधः श्रुतं दमः।
  अर्थादेतानि सर्वाणि, प्रवर्तन्ते नराधिप।। (महा. 12/8/21)
- धनमाहुः परं धर्मं धने सर्वं प्रतिष्ठितम्।
  जीवन्ति धनिनो लोके, मृता ये त्वधना नराः।। (महा. 5/72/23)
- राजा प्रजानां प्रथमं शरीरं प्रजाश्च राज्ञोऽप्रतिमं शरीरम्।
  राज्ञा विहीना न भवन्ति देशा, देशैर्विहीना न नृपा भवन्ति। (महा. 12/70/58)

- बन्धुरात्मात्मनस्तस्य, येनैवात्माऽऽत्मनाजितः।
  स एव नियतो बन्धुः स एवायतो रिपुः।। (महा. 5/34/65)
- रथः शरीरं पुरुषस्य राजन् आत्मा नियन्तेन्द्रियाण्यस्य चाश्वाः।
  तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वैर्दान्तैः सुखं याति रथीव धीरः।।
  (महा. 5/34/59)
- शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा।
  ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं, तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः।
- यस्मिन् सर्वं यतः सर्वं यः सर्वं सर्वतश्च यः
  यश्च सर्वमयो नित्यं तस्मै सर्वात्मने नमः।। (महा. 12/47/84)
- उपदेशेन वर्तामि नानुशास्मीह कञ्चन। (महा. 12/178/6)
- आत्मनस्तु क्रियापायो नान्यत्रेन्द्रियनित्हात्।
- यथा बीजं विना क्षेत्रमुप्तं भवति निष्फलम्।
  तथापुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति।। (महा. 13/6/6)
- ''अहिंसा परमो धर्मः'' (महा. 14/43/21)
- चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। (महा. 6/4/13)
- 'धर्म एव ततो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः। (महा. 3/313/128)
- प्रज्ञा प्रतिष्ठा भूतानां प्रज्ञा लाभः परो मतः।
  प्रज्ञाः निः श्रेयसी लोके प्रज्ञास्वर्गो मतः सताम्।।
  (महा. 12/180/2)

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य

- गन्धारी किसकी माँ थी - दुर्योधन की।
- सुभद्रा किसकी बहन थी - कृष्ण की।
- माद्री किसकी माता थी - नकुल एवं सहदेव की।
- भीष्मस्य पितृकृतं नाम किम् - देवव्रतः।
- सैवलोऽस्ति -शकुनिः।
- द्रौणिः अस्ति- अश्वत्थामा।
- दासीपुत्रः कः - विदुरः।
- वैरोचनिः कः - बलिः।
- द्रोणाचार्यस्य वधं कः अकरोत् - धृष्टद्युम्नः।
- बृहन्नला .....आसीत्। - अर्जुनः।

अभ्यास प्रश्न (महाभारत)

1. महाभारत के लेखक कौन हैं?
(A) मनु (B) कौत्स
(C) नारद (D) व्यास

2 'महाभारत' क्या है–
(A) पुराण (B) इतिहास
(C) आख्यान (D) काव्य

3. महाभारत कैसा ग्रन्थ है?
(A) ऐतिहासिक (B) सामाजिक
(C) धार्मिक (D) नैतिक

4. 'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्' इत्युक्तिः कस्य वर्तते?
(A) विष्णुपुराणस्य (B) महाभारतस्य
(C) रामायणस्य (D) ऋग्वेदस्य

5. इनमें प्राचीनतम कौन हैं?
(A) रामाभिषेकम् (B) महाभारतम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) रघुवंशम्

6. महर्षिः वेदव्यासः कतिभिः वर्षैः महाभारतं कृतवान्–
(A) चतुर्भिः (B) पञ्चभिः
(C) त्रिभिः (D) षड्भिः

7. 'पञ्चमवेद' कौन-सा ग्रन्थ है–
(A) आयुर्वेद (B) धनुर्वेद
(C) महाभारत (D) सर्पवेद

8. महाभारत को कहा जाता है?
(A) जयसंहिता (B) आदिकाव्य
(C) सौप्तिकसंहिता (D) अरण्यसंहिता

9. 'जय' इति कस्य महाकाव्यस्य नामान्तरम् –
(A) रामायणस्य (B) महाभारतस्य
(C) रघुवंशस्य (D) किरातार्जुनीयस्य

10. 'महाभारतस्य' कः क्रमः–
(A) जयः, भारतम्, महाभारतम्
(B) भारतम्, जयः, महाभारतम्
(C) महाभारतम्, जयः, भारतम्
(D) जयः, विजयः, महाभारतम्

11. महाभारतस्य प्रथमं नाम आसीत्–
(A) जयः (B) विजयः
(C) लघुभारतम् (D) बालभारतम्

12. महाभारतस्य आलोचनात्मकसंस्करणं कुतः प्रकाशितम्–
(A) पूनातः (B) बडौदातः
(C) मुम्बईतः (D) मद्रासतः

1. (D) **2.** (B) **3.** (A) **4.** (B) **5.** (B) **6.** (C) **7.** (C) **8.** (A) **9.** (B) **10.** (A) **11.** (A) **12.** (A)

13. महाभारतस्य आलोचनात्मकसंस्करणस्य सम्पादकः अस्ति–
(A) एस0 आर0 भट्टः (B) जी0 एच0 भट्टः
(C) एस0 के0 सुकथंकरः (D) वी0 एस0 सुक्थणकरः

14. 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः' इत्युक्तम्?
(A) अर्थशास्त्रे (B) रामायणे
(C) याज्ञवल्क्यस्मृतौ (D) महाभारते

15. समुचितसम्बद्धविकल्पं चिनुत–
(A) वाल्मीकिः - पञ्चरात्रम् (B) विदुरनीतिः - महाभारतम्
(C) प्रतिसर्गः - कालिदासः (D) मन्वन्तराणि - भारविः

16. द्यूतक्रीडावर्णनं कस्मिन् पर्वणि विद्यते–
(A) सभापर्वणि (B) कर्णपर्वणि
(C) आदिपर्वणि (D) स्त्रीपर्वणि

17. विश्वसाहित्यस्येतिहासे बृहत्तमं महाकाव्यमस्ति–
(A) रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) शिशुपालवधम् (D) श्रीमद्भगवद्गीता

18. महाभारते कति श्लोकाः वर्तन्ते–
(A) अयुतश्लोकाः (B) पञ्चविंशतिसहस्रश्लोकाः
(C) लक्षश्लोकाः (D) द्विलक्षश्लोकाः

19. 'शतसाहस्त्रीसंहिता' नाम किस ग्रन्थ का है?
(A) श्रीमद्रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) विष्णुपुराणम् (D) श्रीमद्भागवतम्

20. महाभारतस्य श्लोकानां संख्या अस्ति–
(A) पञ्चदशसहस्रम् (B) विंशतिसहस्रम्
(C) चतुर्विंशतिसहस्रम् (D) शतसहस्रम्

21. ''धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्॥''
कस्य परिचयः उक्तः?
(A) रामायणस्य (B) महाभारतस्य
(C) मनुस्मृतेः (D) सर्वदर्शनसंग्रहस्य

22. महाभारत का युद्ध कितने दिनों तक चला–
(A) अठारह दिन (18) (B) आठ दिन (8)
(C) बारह दिन(12) (D) सोलह दिन (16)

23. व्यास प्रणीत महाभारत में कितने पर्व हैं?
(A) अष्टादश (B) त्रयोदश
(C) द्वादश (D) चतुर्दश

24. महाभारतस्य विषयवस्तुविभक्तं वर्तते–
(A) काण्डेषु (B) अध्यायेषु
(C) सर्गेषु (D) पर्वसु

25. महाभारतस्य द्वितीयं पर्व किम्–
(A) वनपर्व (B) सभापर्व
(C) भीष्मपर्व (D) विराटपर्व

26. महाभारतस्याष्टादशसु पर्वसु इदं द्वादशतमं भवति–
(A) अनुशासनपर्व (B) सौप्तिकपर्व
(C) शान्तिपर्व (D) स्त्रीपर्व

29. पाण्डवाः वनवासाय किं वनं प्रविविशुः?
(A) दण्डकारण्यम् (B) काम्यकवनम्
(C) नागवनम् (D) नैमिषारण्यम्

28. महाभारत में 'पर्व' है–
(A) आरण्यकपर्व (B) आश्रमवासिकपर्व
(C) साकमेधिकपर्व (D) वनवासिकपर्व

29. 'महाभारत' का दूसरा नाम है–
(A) शतसाहस्री (B) दशसाहस्री
(C) साहस्री (D) द्विशतसाहस्री

30. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति–
(A) द्रोणपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) युधिष्ठिरपर्व (D) शल्यपर्व

31. महाभारताश्रितं न भवति–
(A) वेणीसंहारम् (B) दूतवाक्यम्
(C) मध्यमव्यायोगः (D) अभिषेकनाटकम्

32. अष्टसहस्त्रश्लोकात्मकस्य भारतस्य नाम किम्?
(A) भारतम् (B) महाभारतम्
(C) जयः (D) पञ्चमवेदः

33. महाभारतस्य बृहत्तमं पर्व ..... अस्ति?
(A) शान्तिपर्व (B) द्रोणपर्ण
(C) शल्यपर्व (D) कर्णपर्व

34. महाभारते राधिकापुत्रः कः कथ्यते?
(A) शल्यः (B) दुश्शासनः
(C) कर्णः (D) नकुलः

35. महाभारतस्य मौलिकरूपम् आसीत्–
(A) जयनाम्ना (B) विजयनाम्ना
(C) भारतनाम्ना (D) आर्षकाव्यनाम्ना

36. महाभारते उद्योगपर्व वर्तते-
(A) तृतीयम् (B) पञ्चमम्
(C) चतुर्थम् (D) षष्ठम्

13. (D) **14.** (D) **15.** (B) **16.** (A) **17.** (B) **18.** (C) **19.** (B) **20.** (D) **21.** (B) **22.** (A) **23.** (A) **24.** (D)
25. (B) **26.** (C) **27.** (D) **28.** (B) **29.** (B) **30.** (C) **31.** (D) **32.** (C) **33.** (A) **34.** (C) **35.** (A) **36.** (B)

37. महाभारते अन्तिमं पर्व किम्?
(A) विराटपर्व (B) स्वर्गारोहणपर्व
(C) उद्योगपर्व (D) शल्यपर्व

38. 'भगवद्गीता' किस ग्रन्थ का भाग है–
(A) महाभारत का (B) भागवत का
(C) रामायण का (D) स्कन्दपुराण का

39. 'शान्तिपर्व' वर्तते–
(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) भागवते (D) मार्कण्डेयपुराणे

40. शान्तिपर्वणि बलस्य अङ्गानि सन्ति–
(A) षट् (B) सप्त
(C) पञ्च (D) नव

41. महाभारतस्य भीष्मपर्वणि वर्तते–
(A) दुर्गासप्तशती (B) श्रीमद्भागवतम्
(C) देवीभागवते (D) श्रीमद्भगवद्गीता

42. 'शाकुन्तलोपाख्यानम्' अस्मिन् उपलभ्यते-
(A) श्रीमद्रामायणे (B) महाभारते
(C) देवीभागवते (D) अग्निपुराणे

43. महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि गीताया उपदेशः?
(A) उद्योगपर्वणि (B) वनपर्वणि
(C) भीष्मपर्वणि (D) शान्तिपर्वणि

44. 'मौसलपर्वणः' उल्लेखोऽस्ति–
(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) भगवद्गीतायाम् (D) रघुवंशे

45. मौसलपर्व–
(A) अष्टादशम् (B) षोडशम्
(C) सप्तदशम् (D) पञ्चदशम्

46. महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि 'नलोपाख्यानम्' वर्णितम्?
(A) आदिपर्वणि (B) वनपर्वणि
(C) कर्णपर्वणि (D) अनुशासनपर्वणि

47. 'विष्णुसहस्रनामस्तोत्रं' कुत्र वर्तते–
(A) श्रीमद्भागवते (B) रामायणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे (D) महाभारते

48. 'नलोपाख्यानम्' वर्णितमस्ति-
(A) रामायणे (B) कथासरित्सागरे
(C) विष्णुपुराणे (D) महाभारते

49. 'आश्रमवासी' इति भागः वर्तते–
(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) सामवेदे (D) दशकुमारचरिते

50. अक्षुद्रान् दानशीलांश्च सत्यशीलाननास्तिकान्।
कार्ष्णं वेदमिमं विद्वान् श्रावयित्वार्थमश्नुते॥
इत्यस्मिन् श्लोके प्रस्तुतीकृतः 'कार्ष्णः वेदः' कः–
(A) भगवद्गीता (B) श्रीमद्रामायणम्
(C) जानकीहरणम् (D) महाभारतम्

51. 'अहिंसा परमो धर्मः' वाक्यमिदं वर्तते–
(A) उपनिषदि (B) कालिकापुराणे
(C) महाभारतस्य शान्तिपर्वणि (D) अनुशासनपर्वणि

52. महाभारते भीष्मस्य प्राणत्यागः कुत्र वर्णितः –
(A) भीष्मपर्वणि (B) शान्तिपर्वणि
(C) अनुशासनपर्वणि (D) स्वर्गारोहणपर्वणि

53. ''प्रज्ञा प्रतिष्ठा भूतानां प्रज्ञा लाभः परो मतः।
प्रज्ञा निःश्रेयसी लोके प्रज्ञा स्वर्गो मतः सताम्॥''
इति ..... वर्तते –
(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) विष्णुपुराणे (D) हरिवंशे

54. 'ऊर्ध्वबाहुः विरौम्येष' इति वाक्यं ..... कथयति–
(A) व्यासः (B) सञ्जयः
(C) विदुरः (D) अश्वत्थामा

55. महाभारते समीक्षितावृत्तिः ..... संस्थया प्रकाशिता–
(A) प्राच्यविद्यामन्दिरम्, बडोदरा
(B) विश्वेश्वरानन्दशोधसंस्थानम्, होशियारपुरम्
(C) गीताप्रेस, गोरखपुर
(D) भण्डारकर-प्राच्यविद्याशोधसंस्थानम्, पूना

56. महाभारतस्य चतुर्थपर्वणः नाम किम्?
(A) सभापर्व (B) भीष्मपर्व
(C) विराटपर्व (D) उद्योगपर्व

57. 'विदुरनीतिः' समुल्लिखितं वर्तते–
(A) रामायणे (B) हरिवंशपुराणे
(C) महाभारते (D) पद्मपुराणे

58. श्रीकृष्णः कस्मिन् पर्वणि दूतस्य कार्यम् अकरोत्–
(A) सभापर्वणि (B) भीष्मपर्वणि
(C) उद्योगपर्वणि (D) वनपर्वणि

59. गान्धारी किसकी माँ है–
(A) धृतराष्ट्र की (B) विदुर की
(C) दुर्योधन की (D) कर्ण की

60. सुभद्रा किसकी बहन थी–
(A) अर्जुन की (B) कृष्ण की
(C) अश्वत्थामा की (D) नकुल की

37. (B) **38.** (A) **39.** (B) **40.** (A) **41.** (D) **42.** (B) **43.** (C) **44.** (B) **45.** (B) **46.** (B) **47.** (D) **48.** (D)
49. (B) **50.** (D) **51.** (C) **52.** (C) **53.** (B) **54.** (A) **55.** (D) **56.** (C) **57.** (C) **58.** (C) **59.** (C) **60.** (B)

61. माद्री माता थी–
(A) युधिष्ठिर की (B) नकुल की
(C) भीम की (D) द्रोण की

62. भीष्मस्य पितृकृतं नाम किम्–
(A) देवव्रतः (B) भद्ररथः
(C) देवदत्तः (D) वज्रदत्तः

63. कृष्ण की जन्मदात्री माता थी–
(A) देवकी (B) यशोधरा
(C) कौशल्या (D) यशोदा

64. सैवलोऽस्ति–
(A) विदुरः (B) कर्णः
(C) दुःशासनः (D) शकुनिः

65. महाभारतयुद्धे पाण्डवानां सैन्यप्रमाणं किम्?
(A) एकादश-अक्षौहिणी (B) दश-अक्षौहिणी
(C) सप्त-अक्षौहिणी (D) पञ्च-अक्षौहिणी

66. भीष्मस्य पिता–
(A) व्यासः (B) बाह्लिकः
(C) शान्तनुः (D) विचित्रवीर्यः

67. को द्रौणिः–
(A) अर्जुनः (B) दुर्योधनः
(C) युधिष्ठिरः (D) अश्वत्थामा

68. दासीपुत्रः कः–
(A) विदुरः (B) मैत्रेयः
(C) धृतराष्ट्रः (D) पाण्डुः

69. वैरोचनिः कः?
(A) इन्द्रः (B) वरुणः
(C) बलिः (D) प्रह्लादः

70. द्रोणाचार्यस्य वधं कः अकरोत्–
(A) अर्जुनः (B) धृष्टद्युम्नः
(C) भीमः (D) घटोत्कचः

71. बृहन्नला ..... आसीत्।
(A) भीमः (B) अर्जुनः
(C) युधिष्ठिरः (D) नकुलः

72. कर्णः कवचकुण्डलौ कस्मै प्रदत्तवान्–
(A) अर्जुनाय (B) युधिष्ठिराय
(C) इन्द्राय (D) कृष्णाय

73. जयद्रथं को हतवान्-
(A) कृष्णः (B) बलरामः
(C) अर्जुनः (D) भीमः

74. भीष्मस्य निर्वाणं कस्मिन्पर्वणि विद्यते?
(A) अनुशासनपर्वणि (B) उद्योगपर्वणि
(C) भीष्मपर्वणि (D) शान्तिपर्वणि

75. सावित्रीकथा कुत्र वर्णिता–
(A) वनपर्वणि (B) आदिपर्वणि
(C) उद्योगपर्वणि (D) भीष्मपर्वणि

76. शान्तनोः पुत्रस्य नाम किम्?
(A) भीष्मः (B) अर्जुनः
(C) जनमेजयः (D) आरुणिः

77. महाभारतस्य खिलपर्व किं विद्यते?
(A) विष्णुपुराणम् (B) नारदपुराणम्
(C) भागवतपुराणम् (D) हरिवंशपुराणम्

78. महाभारतस्य सौप्तिकपर्वणः प्रमुखा घटनास्ति–
(A) शल्यस्य सेनापतित्वम् (B) द्रोणवधः
(C) अश्वत्थाम्ना द्रौपदीपुत्राणां वधः (D) जयद्रथवधः

79. महाभारतकथा केन कथिता–
(A) वाल्मीकिना (B) शुकेन
(C) सौतिना (D) शौनकेन

80. शान्तिपर्वणि दुर्गसंख्या वर्तते-
(A) पञ्च (B) नव
(C) षट् (D) दश

81. महाभारते यक्षप्रश्नानाम् उपयुक्तानि उत्तराणि कः दत्तवान्–
(A) कृष्णः (B) विदुरः
(C) कुबेरः (D) युधिष्ठिरः

82. हस्तिनापुर राजधानी थी–
(A) कौरवों की (B) पाण्डवों की
(C) सहस्रार्जुन की (D) प्रद्युम्न की

83. परीक्षितस्य पितामहः कः आसीत्?
(A) भीमः (B) शान्तनुः
(C) अर्जुनः (D) भरतः

84. महाभारत युद्ध के समय दिव्य दृष्टि किसको प्राप्त थी–
(A) सञ्जय को (B) धृतराष्ट्र को
(C) युधिष्ठिर को (D) भीम को

85. महाभारत के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सत्य है–
(A) इसमें तीन लाख श्लोक हैं।
(B) इसकी कथावस्तु अठारह पर्वों में विभक्त है।
(C) यह पौराणिक उपन्यास है।
(D) यह विश्व का सबसे बड़ा खण्डकाव्य है।

61. (B) **62.** (A) **63.** (A) **64.** (D) **65.** (C) **66.** (C) **67.** (D) **68.** (A) **69.** (C) **70.** (B) **71.** (B) **72.** (C) **73.** (C) **74.** (A) **75.** (A) **76.** (A) **77.** (D) **78.** (C) **79.** (C) **80.** (C) **81.** (D) **82.** (B) **83.** (C) **84.** (A) **85.** (B)

86. अधोलिखितेषु इदं महाभारतस्योपजीवी नास्ति-
(A) दशकुमारचरितम् (B) ऊरुभङ्गम्
(C) नलचम्पूः (D) शिशुपालवधम्

87. आख्यानोपाख्यानैः उपबृंहितं काव्यम् अस्ति–
(A) रामायणम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) महाभारतम् (D) श्रीमद्भागवतम्

88. निम्नलिखितेषु आख्यानमिदं महाभारते विद्यते–
(A) ऋष्यशृङ्गाख्यानम् (B) शुनःशेपाख्यानम्
(C) रामोपाख्यानम् (D) गङ्गावतरणम्

89. ''यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'' इयमुद्घोषणा स्वरचनाविषये केन कृता–
(A) वाल्मीकिना (B) श्रीमद्भागवतकृता व्यासेन
(C) महाभारतकृता व्यासेन (D) श्रीहर्षेण

90. युद्ध में पाण्डवों की सहायता किसने की–
(A) भीष्म ने (B) द्रोणाचार्य ने
(C) धृतराष्ट्र ने (D) कृष्ण ने

91. कालान्तर में द्रौपदी सहित पाण्डव कहाँ गये–
(A) वन में (B) राजभवन में
(C) हिमालय में (D) प्रयाग में

92. पाण्डवों तथा कौरवों के मध्य युद्ध हुआ–
(A) मालवा में (B) विन्ध्यक्षेत्र में
(C) कुरुक्षेत्र में (D) मथुरा में

93. युद्ध में कौन पराजित हुआ–
(A) दुर्योधन (B) अर्जुन
(C) कृष्ण (D) युधिष्ठिर

94. अज्ञातवासे अर्जुनस्य नाम आसीत्–
(A) कङ्कः (B) धनञ्जयः
(C) विजयः (D) बृहन्नला

95. महाभारतयुद्धे सर्वाधिकदिवसपर्यन्तं कौरवसेनापतिः कः आसीत्–
(A) द्रोणः (B) कर्णः
(C) शल्यः (D) भीष्मः

96. 'दमयन्तीकथा' महाभारते कस्मिन् पर्वणि वर्तते–
(A) सभापर्वणि (B) वनपर्वणि
(C) कर्णपर्वणि (D) स्त्रीपर्वणि

97. नैमिषारण्ये महाभारतीयां कथां क उक्तवान्–
(A) वैशम्पायनः (B) उग्रश्रवाः
(C) शौनकः (D) व्यासः

98. देवीं.....नत्वा ततो जयमुदीरयेत् –
(A) सरस्वतीम् (B) भगवतीम्
(C) हैमवतीम् (D) प्रभावतीम्

99. अकबर के दरबार में संस्कृत रचना जिसका फारसी में 'रज्मनामा' के नाम से अनुवाद हुआ था–
(A) रामायण (B) महाभारत
(C) वेद (D) गीता

100. कीचकस्य वधं महाभारतस्य कस्मिन् पर्वण्युपवर्णितम्–
(A) उद्योगपर्वणि (B) विराटपर्वणि
(C) शल्यपर्वणि (D) द्रोणपर्वणि

101. 'यक्ष संवाद' कहाँ से लिया गया है–
(A) पुराण से (B) महाभारत से
(C) रामायण से (D) भागवत से

102. अर्जुनेन सह युद्धं कर्तुम् अश्वत्थामा कस्य अस्त्रस्य प्रयोगम् अकरोत्–
(A) ब्रह्मास्त्रस्य (B) पाशुपतास्त्रस्य
(C) विषास्त्रस्य (D) सहस्रास्त्रस्य

103. धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥
..... वर्तते?
(A) द्रोणपर्वणि (B) विराटपर्वणि
(C) आदिपर्वणि (D) सभापर्वणि

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *

86. (A) **87.** (C) **88.** (C) **89.** (C) **90.** (D) **91.** (C) **92.** (C) **93.** (A) **94.** (D) **95.** (D) **96.** (B)
97. (B) **98.** (A) **99.** (B) **100.** (B) **101.** (B) **102.** (A) **103.** (C)

पुराणों का सामान्य परिचय

- व्याकरण की व्युत्पत्ति के अनुसार **'पुरा भवं पुराणम्'** अर्थात् **'पुरानी घटनायें'**।
- महर्षि व्यास वेदों के संस्थापक एवं पुराणों के कर्ता रहे हैं।
- पुराणों में 29 व्यासों के नाम पाये जाते हैं।
- देवी भागवत के अनुसार 28 व्यासों के नाम मिलते हैं।

''अष्टादशपुराणां कर्ता सत्यवतीसुतः''

- अथर्ववेद के अनुसार पुराण का आविर्भाव ऋक्, साम, छन्द और यजुस् के साथ हुआ था।

ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।

- शतपथ-ब्राह्मण में पुराण को वेद कहा गया है।
- छान्दोग्योपनिषद् में इतिहास तथा पुराण को संयुक्त रूप से नारद ने पञ्चमवेद कहा है- **इतिहासपुराणां पञ्चमं वेदानां वेदम्।**
- महाभारत में भी कहा गया है- इतिहासपुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृंह्येत् अर्थात् वेद के अर्थ का पल्लवन इतिहास और पुराण के द्वारा करना चाहिए।
- पुराण के बल पौराणिक (पुरातत्त्वविषयक) ग्रन्थों के रूप में परिणत हुआ।
- **पुराणमाख्यानं पुराणम्** - प्राचीन आख्यानों को पुराण कहते हैं।
- वायुपुराण के अनुसार प्राचीन काल में जो घटनाएँ घटी थी, उन्हें पुराण कहते हैं- **यस्मात्पुरा ह्यनति।**

पुराण की परिभाषा-

(1) पुराणम् आख्यानं पुराणम्
(2) यस्मात् पुरा हि अनति पुराणम्
(3) पुरार्थेषु आनयतीति पुराणम्

पुराणों के लक्षण

- पुराण के लक्षण तथा विषयवस्तु के सम्बन्ध में श्लोक-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

- इस श्लोक के अनुसार पुराण ग्रन्थ के पाँच विषयों का प्रतिपादन है-

1. सर्ग 2. प्रतिसर्ग, 3. वंश 4. मन्वन्तर 5. वंशानुचरित

- विष्णुपुराण एकमात्र ऐसा पुराण है, जिसमें ये पाँचों लक्षण घटित होते हैं।

विषय-वस्तु

साकल्य रूप से पुराणों में प्रतिपादित विषय-वस्तु का निर्देश-

(1) धार्मिक सामग्री (2) भौगोलिक सामग्री
(3) दार्शनिक सामग्री (4) आचार-विषयक सामग्री
(5) ऐतिहासिक सामग्री (6) ज्ञान-विज्ञान की सामग्री

पुराणों की संख्या तथा विभाजन-

- पुराण/महापुराण की संख्या 18 है।

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि पृथक्-पृथक्॥

महापुराण (प्राचीन पुराण)	
म से दो पुराण	मत्स्य, मार्कण्डेय
भ से दो पुराण	भविष्य,भागवत
ब्र से तीन पुराण	ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त
व से चार पुराण	विष्णु, वामन, वराह,वायु
अ से	अग्नि
ना से	नारद
प से	पद्म
लि से	लिङ्ग
ग से	गरुड
कू से	कूर्म
स्क से	स्कन्द

उपपुराण-इसकी भी संख्या 18 हैं-

(1) सनत्कुमार	(2) नारसिंह	(3) स्कन्द (शिव)
(4) शिवधर्म	(5) आश्चर्य	(6) नारदीय
(7) कापिल	(8) औशनस	(9) वारुण
(10) कल्कि	(11) कालिका	(12) माहेश्वर
(13) साम्ब	(14) सौर (सूर्य)	(15) पाराशर
(16) मारीच	(17) भार्गव	(18) नन्द

पुराणों का अन्य विभाजन

सात्त्विक	तामस	राजस
(विष्णु महत्त्व)	(शिवमहत्त्व)	(ब्रह्मामहत्त्व)
	मत्स्यपुराण	ब्रह्माण्डपुराण
विष्णुपुराण	कूर्मपुराण	ब्रह्मवैवर्तपुराण
नारदीयपुराण	लिङ्गपुराण	मार्कण्डेयपुराण
भागवतपुराण	शिवपुराण	ब्रह्मपुराण
गरुडपुराण	अग्निपुराण	वामनपुराण
वराहपुराण	स्कन्दपुराण	भविष्यपुराण

* स्कन्दपुराण में 10 का सम्बन्ध शिव से, 4 का सम्बन्ध ब्रह्मा से और 2-2 का देवी और विष्णु से सम्बन्ध है-

अष्टादशपुराणेषु दशभिर्गीयते शिवः।
चतुर्भिर्भगवान् ब्रह्मा द्वाभ्यां देवी तथा हरिः॥

* मत्स्यपुराण में कहा गया है कि-

सात्विक पुराण में - **विष्णु का**

राजस पुराण में - **ब्रह्मा का**

तामस पुराण में - **अग्नि और शिव का**

सङ्कीर्ण पुराणों में- **सरस्वती और पितरों का महत्त्व वर्णित है।**

* विषय वस्तु के आधार पर पुराणों को 6 वर्गों में रखा गया-

प्रथम वर्ग में- गरुड, अग्नि और नारद पुराण रखे गये हैं। संस्कृत भाषा के ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी श्रेष्ठ ग्रन्थों का सार प्रस्तुत है।

द्वितीय वर्ग में- इसमें पद्म, स्कन्द तथा भविष्य पुराण हैं। तीर्थों और व्रतों की विवेचना है।

तृतीय वर्ग में- इसमें ब्रह्म, भागवत और ब्रह्मवैवर्त पुराण आते हैं। इस वर्ग में पुराणों में दो बार सामान्य संशोधन किये गये।

चतुर्थ वर्ग में- यह वर्ग ऐतिहासिक पुराणों का है, जिसमें ब्रह्माण्ड तथा लुप्त हो चुका वायु पुराण दोनों निहित है।

पञ्चम वर्ग में- इसमें साम्प्रदायिक पुराणों की गणना है- लिङ्ग, वामन तथा मार्कण्डेय पुराण का।

षष्ठ वर्ग में- वाराह, कूर्म तथा मत्स्य पुराण हैं।

पुराणों का रचनाकाल

- सभी पुराण संशोधक 'व्यास' के नाम से ही प्रसिद्ध हुए।
- प्राचीन धर्मसूत्र तथा महाभारत में पुराणों का उल्लेख है जिसमें पुराणों की रचना का आरम्भ 600ई.पू. माना जा सकता है।
- बालगङ्गाधर तिलक ने पुराणों की रचना का समापन-काल दूसरी शताब्दी ई. माना है।
- पार्टिजर के अनुसार पुराण अपने मूलरूप में प्रथम शताब्दी ई. में आ गये थे।
- डॉ आर. सी. हाजरा ने विष्णुपुराण की रचना तृतीय-चतुर्थशताब्दी ई. में मानी है।
- ब्रह्माण्ड तथा मार्कण्डेय पुराण को तृतीय से पञ्चम शताब्दी में रचना हुई।
- वायु पुराण प्रायः 500 ई. में
- भागवत पुराण 600 ई. में
- कूर्मपुराण 700 ई. में
- हरिवंशपुराण 400 ई. में
- अग्निपुराण प्रायः 800 ई. में।
- डॉ. हाजरा ने नारदीयपुराण को दशमशताब्दी ई. में स्कन्दपुराण को अष्टम शताब्दी ई. में, गरुड पुराण को एवं ब्रह्मपुराण को दशमशताब्दी में रचित माना है।
- ब्रह्म वैवर्तपुराण की रचना 700 ई. में हो गयी थी, किन्तु इसे वर्तमान स्वरूप 1600 ई. में प्राप्त हुआ।
- इस प्रकार पुराणों का रचना-काल को एक निश्चित कालखण्ड मे नहीं रखा जा सकता है।
- अलबरूनी (1000ई.) नामक अरब यात्री ने अपनी पुस्तक 'भारत वर्ष का इतिहास' (तारीख-उल-हिन्द) में 18 पुराणों का उल्लेख किया है।

* पुराणों की पूर्व सीमा 600 ई.पू. के लगभग और अन्तिम सीमा 500ई. के लगभग है।

18 पुराणों का परिचय

(1) ब्रह्मपुराण

- यह पुराण 'आदि ब्राह्म' के नाम से प्रसिद्ध है।
- इस पुराण को 'आदिपुराण' भी कहते हैं। प्राचीन माने गये सभी पुराणों में इसका उल्लेख है। मान्यता है कि व्यास ने इसे सर्वप्रथम लिखा था।
- विष्णु, शिव, भागवत, नारद, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय तथा देवीभागवत पुराण में इसकी श्लोक संख्या- 10 सहस्र बतायी गयी है।
- लिङ्ग, वराह, कूर्म, मत्स्य और पद्मपुराण के अनुसार 13 सहस्र श्लोक हैं।
- बम्बई से प्रकाशित संस्करण में 13787 श्लोक हैं।
- नैमिषारण्य में समागत ऋषियों को सूत लोमहर्षण ने इसका प्रवचन किया था।
- इसमें कुल 245 अध्याय हैं।

ब्रह्मपुराण में वर्ण्य-विषय

- जगत् की सृष्टि, मनु की उत्पत्ति, उनके वंश का वर्णन, देवों, देव-योनियों तथा अन्य प्राणियों की उत्पत्ति, पृथ्वी का भूगोल, नरक तथा स्वर्ग का वर्णन है।
- शिव-पार्वती के विवाहादि, आख्यान एवं कृष्ण बाललीला वर्णन है।
- **इसका परिशिष्ट सौर उपपुराण है**, जिसमें 1250 ई. के बने कोणार्क के सूर्य मन्दिर का वर्णन है।

(2) पद्मपुराण

- यह विशाल पुराण 641 अध्यायों तथा 48000 श्लोकों का है।

मत्स्यपुराण के अनुसार- **55 सहस्र श्लोक हैं।**

ब्रह्मपुराण के अनुसार- **59 सहस्र श्लोक हैं।**

पद्मपुराण पाँचखण्डों में विभक्त है–

1. सृष्टिखण्ड 2. भूमिखण्ड 3. स्वर्गखण्ड
4. पातालखण्ड 5. उत्तरखण्ड

प्रथमं सृष्टिखण्डं हि, भूमिखण्डं द्वितीयकम्।
तृतीयं स्वर्गखण्डञ्च, पातालञ्च चतुर्थकम्॥
पञ्चमं चोत्तरं खण्डं, सर्वपापप्रणाशनम्।

- नैमिषारण्य में इसका प्रवचन सूत उग्रश्रवा के द्वारा किया गया था। उग्रश्रवा लोमहर्ष के पुत्र थे।

(1) सृष्टिखण्ड- इसमें कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति और पूरे ब्रह्माण्ड की रचना का वर्णन है।

- सृष्टि खण्ड में पाँच पर्व हैं। पाँच पर्व- पौष्कर पर्व, तीर्थपर्व, तृतीय पर्व, राजाओं का वंशानुकीर्तन, मोक्षपर्व।

(2) भूमिखण्ड- सोमशर्मा की कथा देकर उसी का प्रह्लाद के रूप में पुनर्जन्म बताया गया है।

- विष्णुभक्ति, च्यवनऋषि कथा एवं विष्णु-शिव की एकता निरूपित है।

(3) स्वर्गखण्ड- देव, भूत आदि श्लोकों का विवरण है, जिनमें शकुन्तला और उर्वशी के आख्यान भी हैं।

- कर्मकाण्ड में भी प्रकाश डाला गया है।

(4) पातालखण्ड-

- नागलोक की कथा प्रसङ्ग में रावण का उल्लेख होने से रघुवंश पर आश्रित रामकथा है।
- वाल्मीकि आश्रम में ही व्यास द्वारा अष्टादश पुराण की रचना वर्णन है।

(5) उत्तरखण्ड-

- यह सबसे बड़ा भाग है, जिसमें विष्णु भक्ति पर बल दिया गया है।
- भगवद्गीता की महत्ता भी अङ्कित है।
- उत्तरखण्ड का परिशिष्ट ''**क्रियायोगसार**'' है।

(3) विष्णुपुराण

- यह भागवतपुराण का तृतीयांश मात्र है।
- यह पुराण 6 खण्डों में विभक्त है।
- इसमें 126 अध्याय हैं।
- पुराणों में इसकी श्लोक संख्या 23 या 24 सहस्र है परन्तु मुद्रित संस्करण में 6000 ही श्लोक मिलते हैं।
- इसके प्रवक्ता पराशर तथा श्रोता मैत्रेय कहे गये हैं।
- इसमें अवतारों के वर्णनों द्वारा विष्णु की स्तुति है।
- यह वैष्णव-दर्शन का मूल आलम्बन है।

प्रथम भाग (अंश)- सृष्टि वर्णन, देव-राक्षस-मनु आदि की उत्पत्ति, समुद्रमन्थन, ध्रुव व प्रह्लाद चरित वर्णित है।

द्वितीय भाग- पृथ्वी, नरक, सूर्य तथा ग्रहों का वर्णन है।

तृतीय भाग- मनुवों तथा मन्वन्तरों, व्यास द्वारा वेदों के विभाजन , वेदशाखाओं, वर्णाश्रमों, जन्म और विवाह संस्कारों का वर्णन है , जैन-बौद्ध आदि नास्तिकों के उद्भव की कथाएँ हैं।

चतुर्थ भाग- सूर्यवंश तथा चन्द्रवंश के राजाओं की सूची है। उर्वशी, ययाति, राम तथा महाभारत की कथाएँ हैं। कल्कि-अवतार की भविष्यवाणी है।

पञ्चम भाग- हरिवंशानुसार कृष्ण-कथा है।

षष्ठ भाग- चारों युगों का वर्णन करके बन्धन और मोक्ष का वैष्णव-दर्शन के अनुसार विवेचन है।

(4) वायु पुराण

- बाणभट्ट कादम्बरी में इसका वर्णन 'पुराणे वायुप्रलपितम्' लिखकर किया है।
- इसमें शिव का वर्णन होने से बहुधा इसे 'शिवपुराण' से अभिन्न समझा जाता है, किन्तु शिवपुराण एक पृथक् ग्रन्थ है।
- पाशुपति की पूजा से सम्बद्ध 'पाशुपत योग'का निरूपण है।
- वायुपुराण में 112 अध्याय हैं।
- प्रायः 11 सहस्र श्लोक हैं।

वायुपुराण चार भागों (पादों) में विभक्त है-

1.प्रक्रियापाद (1-6अध्याय) 2. उपोद्घातपाद (7-64अध्याय) 3. अनुषङ्गपाद (65-99अध्याय)
4. उपसंहारपाद (100-112 अध्याय)

- इस पुराण में सृष्टिक्रम, भूगोल, खगोल, युगों, ऋषियों तथा तीर्थों का वर्णन एवं राजवंशों, ऋषिवंशों, वेद की शाखाओं का निरूपण है।
- शिवपुराण को पुसलकर ने उपपुराण बताया है।
- वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से मुद्रित शिव पुराण में 7 खण्ड और 24000 श्लोक हैं।
- सातों खण्डों को संहिता कहा गया है जो-

क्रमशः

(1) विद्येश्वर (25 अध्याय) (2) रुद्र (187 अध्याय)
(3) शतरुद्र (42 अध्याय) (4) कोटिरुद्र (43 अध्याय)
(5) उमा (51 अध्याय) (6) कैलास (23 अध्याय)
(7) वायवीय (76 अध्याय)

- यह पण्डितपुस्तकालय, काशी से भी हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित है।

(5) भागवतपुराण

- वैष्णव आचार्यों ने प्रस्थानत्रयी के समान भागवत पुराण को भी अपना उपजीव्य माना है।
- पुराण साहित्य में सर्वाधिक प्रचलित कृति भागवत पुराण ही है।

इसका पारायण विष्णु भक्तों के द्वारा किया जाता है।

➢ अन्य पुराणों की अपेक्षा इसकी भाषा-शैली अत्यधिक परिष्कृत, लालित्यपूर्ण कवित्वमय एवं प्रौढ़ है।

➢ इसे दर्शनों का सार तथा विद्वानों का परीक्षास्थल कहा गया है।

निगमकल्पतरोर्गलितं फलम्।
विद्यावतां भागवते परीक्षा।

➢ इसमें श्रीकृष्ण को ही ब्रह्म, परमात्मा और भगवान् बताया गया है।

भागवत पुराण में- → 12 स्कन्ध, 335 अध्याय, 18000 श्लोक हैं।

प्रथम स्कन्ध- इसमें भागवत पुराण की उत्पत्ति की कथा शुकदेव ने परीक्षित को सुनाया था, बाद में नैमिषारण्य में सूत ने ऋषि मण्डली को सुनाया।

द्वितीय स्कन्ध- विराट् पुरुष, देवताओं की सकामोपासना, सृष्टिक्रम तथा भागवत के 10 लक्षणों का वर्णन है।

तृतीय स्कन्ध- उद्धव द्वारा कृष्णलीला विदुर को बताना। मैत्रेय का विदुर को सृष्टिक्रम सुनाना, वाराहावतार कथा, हिरण्याक्ष वध, कपिल का जन्म, सांख्य दर्शन उत्पत्ति वर्णित है।

चतुर्थ स्कन्ध- स्वायम्भुव मनु की कन्याओं की वंश परम्परा, दक्ष-शिव कथा, ध्रुव, राजावेन, राजापृथु, पुरञ्जन के आख्यान, 10 प्रचेताओं के वृत्त वर्णित हैं।

पञ्चम स्कन्ध- प्रियव्रत आदि राजाओं के वृत्तान्त वर्णित हैं। इसमें गद्य का भी प्रयोग है।

षष्ठ स्कन्ध- अजामिल, दक्ष तथा उनकी सन्तति, विश्वरूप तथा वृत्रासुर वध, दिति-अदिति की कथाएँ वर्णित हैं।

सप्तम स्कन्ध- प्रह्लाद की कथा 10 अध्यायों में वर्णित है, शेष भाग में वर्णाश्रम-धर्म का विवेचन है।

अष्टम स्कन्ध- मन्वन्तरों की कथाएँ, गजेन्द्र मोक्ष, समुद्रमन्थन, बलि-वामन-कथा एवं मत्स्यावतार वर्णित है।

नवम स्कन्ध- सूर्य-चन्द्र वंश वर्णन, भरतवंश वर्णन, पाञ्चाल-मगध राजाओं का वर्णन है।

➢इसमें हरिश्चन्द्र, राम, परशुराम, दुष्यन्त आदि की कथाएँ मुख्य हैं।

दशम स्कन्ध- पुराण का बृहत्तम भाग (90 अध्याय) है।

➢ सर्वाधिक लोकप्रिय भी यही भाग है।

➢ कृष्ण का जन्म से लेकर पूरी जीवनकथा तथा लीला वर्णन है।

एकादश स्कन्ध- यादवों के विनाश तथा कृष्ण-उद्धव संवाद को अनेक धार्मिक-दार्शनिक विषयों का वर्णन है।

➢ अन्त में कृष्ण का स्वलीला संवरण (मृत्यु) वर्णित है।

द्वादश स्कन्ध- कलियुग के राजाओं तथा इस युग के धर्म का वर्णन करके वेदों और पुराणों का विभाजन, भागवत पुराण की विषय वस्तु तथा अन्य पुराणों के श्लोक संख्या निर्दिष्ट है।

➢ कुछ विद्वान् 'भागवत' से 'देवीभागवत' पुराण ग्रहण करते हैं।

भगवत्या इदं भागवतम्।

➢ देवीभागवत में देवी या शक्ति की महिमा वर्णित है।

श्रीमद्भागवत टीका-

रामानुज मत में सुदर्शनसूरि कृत	-	शुकपक्षीय
वीरराघवाचार्य कृत	-	भागवतचन्द्रचन्द्रिका
माध्वमत-विजयध्वजकृत	-	पदरत्नावली
निम्बार्कमत में शुकदेवाचार्य कृत	-	सिद्धान्तप्रदीप
वल्लभ मत में आचार्य वल्लभकृत	-	सुबोधिनी
गिरिधराचार्यकृत	-	आध्यात्मिक टीका
श्रीसनातनकृत	-	बृहद्वैष्णवतोषिणी
जीवगोस्वामीकृत	-	क्रमसन्दर्भ
विश्वनाथ चक्रवर्तीकृत	-	सारार्थदर्शिनी
श्रीधरकृत	-	श्रीधरी
श्रीहरिकृत	-	हरिभक्त रसायन

देवीभागवत में- → 12 स्कन्ध, 18000 श्लोक, 318 अध्याय हैं।

➢ भागवत का रचनाकाल छठी शताब्दी ई.से 10वीं शताब्दी ई. माना जाता है।

➢ देवी भागवत का रचनाकाल 9वीं शताब्दी से 11वीं शताब्दी माना जाता है।

➢ वल्लभाचार्य भागवत को महर्षि व्यासदेव की ''समाधिभाषा'' कहते हैं।

➢ त्रयोदशशतक में उत्पन्न बोधदेव को भागवत का कर्ता मानना एक भयङ्कर ऐतिहासिक भूल है।

(6) नारद (बृहन्नारदीय) पुराण

➢ बृहन्नारदपुराण नामक एक उपपुराण भी मिलता है।

➢ यह 'नारद' उपपुराण से भिन्न महापुराण है।

➢ पुराण के लक्षण इसमें नहीं हैं।

➢ वैष्णव धर्म के उत्सवों और व्रतों का इसमें व्यापक विवरण है।

नारदपुराण के दो खण्ड हैं-

- पूर्वखण्ड (125 अध्याय)
- उत्तरखण्ड (82 अध्याय)

- नारद पुराण में 18 सहस्र श्लोक हैं।
- इस पुराण में मोक्ष, धर्म, नक्षत्र एवं कल्प का निरूपण, व्याकरण, ज्योतिष आदि विवरण मुख्य हैं।
- इसके 40 अध्यायों में रुक्माङ्गद राजा का उदात्त चरित वर्णित है जिसने एकादशी व्रत तोड़ने की अपेक्षा पुत्र वध स्वीकार किया।

(7) मार्कण्डेयपुराण

- यह प्राचीनतम पुराणों में अन्यतम है क्योंकि इसके कुछ भागों में न विष्णु का महत्त्व वर्णित है न शिव का।
- इसमें इन्द्र, अग्नि, सूर्य आदि वैदिक देवताओं की महत्ता दिखायी गयी है।
- इसमें मार्कण्डेय ऋषि अपने शिष्य क्रोष्टिकि को सृष्टि, मन्वन्तर, वंशावली आदि का उपदेश देते हैं।
- मार्कण्डेय पुराण में 137 से 138 अध्याय हैं तथा लगभग 7-9 सहस्र तक श्लोक हैं।
- इसका आरम्भ महाभारत की कथा के विषय में चार प्रश्नों से होता है और इन प्रश्नों का उत्तर जैमिनी को चार ज्ञानी पक्षियों ने दिया।
- गृहस्थधर्म, श्राद्ध, दिनचर्या, नित्यकर्म, व्रत, उत्सव आदि के विषय में शुद्ध उपदेशात्मक वाक्य हैं।
- अनसूया नामक पतिव्रता की कथा है जिसने पति को ऋषि के शाप से बचाने के लिये सूर्योदय होना रोक दिया था।
- इस पुराण में **दुर्गा-माहात्म्य** का एक स्वतन्त्र प्रकरण है।
- यह पुराण 'कल्याण' के विशेषाङ्क के रूप में हिन्दी अनुवाद द्वारा प्रकाशित है।

(8) अग्निपुराण

- अग्नि के द्वारा वसिष्ठ को उपदेश दिये जाने के कारण इसे 'अग्निपुराण' कहा गया है।
- यह भारतीय संस्कृति तथा विद्याओं का महाकोश है।
- पुराणों के अनुसार इसमें 15400 श्लोक हैं। किन्तु अग्निपुराण में 383 अध्याय तथा 11500 श्लोक हैं।
- इस पुराण में विष्णु के अवतारों का वर्णन है।
- प्रारम्भ में वैष्णव ग्रन्थ का स्वरूप लेने पर भी यह प्रधानतः शैव धर्म का ग्रन्थ है जिसमें शिवलिङ्ग, दुर्गा, गणेश, सूर्य आदि की रहस्यात्मक पूजापद्धति का वर्णन है।
- विश्वकोशात्मकता इस पुराण की विशिष्टता है।
- इस पुराण में अनुष्टुप् छन्द का ही बाहुल्य है।
- स्रग्धरा आदि दीर्घ छन्द इस पुराण में अनुपलब्ध हैं।

(9) भविष्यपुराण

- इसके नाम से ही प्रकट है कि यह भविष्य की घटनाओं से सम्बद्ध पुराण है।
- ऑफ्रेख्त ने 1903 ई. में एक लेख के द्वारा इस पुराण को 'साहित्यिक प्रपञ्च' की संज्ञा दी थी।
- नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित भविष्यपुराण के दो खण्ड हैं-

(i) पूर्वार्ध (41 अध्याय) (ii) उत्तरार्ध (171 अध्याय)

- अग्निपुराण के अनुसार भविष्यपुराण के श्लोकों की संख्या 15 सहस्र है।
- नारदीय पुराण में इसकी विषयवस्तु पाँच पर्वों में विभक्त है-

1.ब्रह्मपर्व 2.विष्णुपर्व 3.शिवपर्व 4.सूर्यपर्व 5. प्रतिसर्गपर्व

- इसमें ब्राह्मण-धर्म, आचार, वर्णाश्रम-धर्म आदि का वर्णन है।
- नाग सम्बन्धित कुछ कथाएँ नागपञ्चमी वर्णन क्रम में है।
- शाकद्वीप में सूर्यपूजा की पद्धति पर एक पूरा प्रकरण है।
- इस पुराण का हिन्दी अनुवाद 'कल्याण' के विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित है।
- भविष्यपुराण सम्बन्धि डॉ. राजकुमार अरोड़ा की पुस्तक है- **'Historical and cultural data from the Bhavishya purana'**

(10) ब्रह्मवैवर्तपुराण

- यह वैष्णव पुराण है, जिसमें श्रीकृष्ण के चरित का वर्णन करते हुए वैष्णव धर्म का विवरण है।
- राधा-कृष्ण लीला वर्णन से यह पुराण कृष्णमूलक वैष्णव सम्प्रदायों का उपजीव्य है।
- राधा को यहाँ सृष्टि का आधारभूत शक्ति और कृष्ण को बीज कहा गया है- **सृष्टेराधारभूता त्वं बीजरूपोऽहमच्युतः।**
- पुराणों के अनुसार ब्रह्मवैवर्तपुराण में 18 हजार श्लोक हैं।

ब्रह्मवैवर्तपुराण के 4 खण्ड-

1. ब्रह्मखण्ड
2. प्रकृतिखण्ड
3. गणेशखण्ड
4. श्रीकृष्णजन्मखण्ड

(1) ब्रह्मखण्ड- इसमें सृष्टिवर्णन है, श्रीकृष्ण ने ही परमात्मा के रूप में सृष्टि रचना की है। इसमें 30 अध्याय हैं। इसके 16वें अध्याय में आयुर्वेद शास्त्र का वर्णन है।

(2) प्रकृति खण्ड- इसमें मूल-प्रकृति का वर्णन है। कृष्ण की आज्ञा से प्रकृति पाँच देवियों के रूप में बदल जाती है- दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री तथा राधा।

(3) गणेशखण्ड- गणेश को कृष्ण का अवतार बताकर उनका वर्णन।

(4) श्रीकृष्णजन्मखण्ड- यह सबसे बड़ा है। कृष्ण-लीलाओं, उनके युद्धों तथा गोपियों के प्रति उनका अनुराग विस्तार से वर्णित है।

- यह पुराण भी हिन्दी अनुवाद के रूप में 'कल्याण' के विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित है।
- दक्षिण भारत में यह पुराण 'ब्रह्मवैवर्त' के नाम से प्रसिद्ध है।

(11) लिङ्गपुराण

- इसमें शिवोपासना के विविध रूपों तथा शिवलिङ्ग की पूजा का वर्णन है।
- महाशिव से ही सृष्टि-रचना का वर्णन है।
- विष्णु के अवतारों के समान इस पुराण में शिव के 28 अवतारों की कथाएँ दी गयी हैं। लिङ्ग की पूजा से चतुर्वर्ग की प्राप्ति बतायी गयी है।

इस पुराण में — 11 हजार श्लोक,163 अध्याय हैं। (कहीं-कहीं 133 अध्याय है)

लिङ्गपुराण के दो भाग- पूर्वभाग, उत्तरभाग

पूर्वभाग- इसमें शिव द्वारा सृष्टि का तथा वैवस्वत मन्वन्तर से कृष्ण के काल तक के राजवंशों का वर्णन है।

उत्तरभाग- शैवमन्त्रों के अनुसार पशु, पाश और पति का वर्णन है। इस भाग में कई अध्याय गद्यात्मक हैं।

शिवपुराण का कहना है कि-

''लिङ्गस्य चरितोक्तत्वात् पुराणं लिङ्गमुच्यते''

- शङ्कर के 28 अवतारों का वर्णन भी यहाँ उपलब्ध होता है।
- इस पर गणेश नातू कृत टीका 'शिवतोषिणी' है।

(12) वराहपुराण

- इसमें विष्णु के वराह अवतार का वर्णन है।
- पाताललोक से पृथ्वी का उद्धार करके वराह ने इस पुराण का प्रवचन किया था।
- यह वैष्णव पुराण है फिर भी दुर्गा, शिव एवं गणेश की कथाएँ हैं।

वराहपुराण में-

- 24 हजार श्लोक (पुराणों के अनुसार), 11 हजार श्लोक (वर्तमान संस्करण में) तथा 217-218 अध्याय हैं।
- इसमें सृष्टि, वंशावली आदि की चर्चा है किन्तु मुख्यरूप से विष्णुभक्तों के लिए सङ्कलित स्तोत्रों तथा पूजाविधियों का यह संग्रह-ग्रन्थ है।
- मातृपूजा और देवियों की पूजा, गणेश कथा, श्राद्ध, प्रायश्चित्त, मथुरामाहात्म्य का वर्णन है।
- इस पुराण में कुछ अध्याय गद्यात्मक हैं।
- **दो अंश विशेष महत्त्वपूर्ण हैं-** (1) मथुरामाहात्म्य (2) नचिकेतोपाख्यान

(13) स्कन्दपुराण

- भगवान् शिव के पुत्र स्कन्द (कार्तिकेय, सुब्रह्मण्य) के नाम पर आश्रित यह पुराण सबसे बड़ा है।
- इस पुराण में स्वामी कार्तिकेय के शैव तत्त्वों का निरूपण है।
- इस पुराण में 81 सहस्र (81000) श्लोक हैं।

स्कन्दपुराण का विभाजन दो प्रकार से-

1. संहिताओं में 2. खण्डों में

1. संहिताओं में- सनत्कुमार (36000 श्लोक), सूत (6000), शङ्कर (30000), वैष्णव (5000), ब्राह्म (3000), सौर (1000)

2. खण्डों में- माहेश्वरखण्ड, वैष्णवखण्ड, ब्रह्मखण्ड, काशीखण्ड, अवन्तीखण्ड (रेवा खण्ड), नागखण्ड (तापीखण्ड), प्रभास खण्ड

- संहिताओं में सूतसंहिता महत्त्वपूर्ण है, इसमें 6000 श्लोक हैं।
- सूत संहिता में शिवपूजा की वैदिक एवं तान्त्रिक विधियों का वर्णन हैं।
- सूत संहिता पर माधवाचार्य ने 'तात्पर्य-दीपिका' नामक टीका लिखी है। यह आनन्दाश्रम ग्रन्थावली में प्रकाशित सूत संहिता चार खण्डों में विभाजित है।
- सूतसंहिता के अन्त में दो गीताएँ- ब्रह्मगीता (12 अध्याय) , सूतगीता (18 अध्याय)
- खण्डों को माहात्म्यों तथा उपखण्डों में पुनः विभक्त किया गया है।
- खण्डों में काशीखण्ड बहुत महत्त्वपूर्ण है इसमें काशी के तथा आस-पास के शिवमन्दिरों एवं पूजा-विधियों का सूक्ष्म वर्णन है।
- काशीखण्ड में **'गङ्गासहस्त्रनाम स्तोत्र'** भी है।
- विन्टरनित्स का कथन है कि मूल स्कन्दपुराण नष्ट हो गया है तथा अनेक ग्रन्थ इसके अङ्ग बनकर विकसित हुए हैं।
- स्कन्दपुराण की प्राचीन पाण्डुलिपि महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री को नेपाल से मिली थी।
- यह गुप्तलिपि में थी तथा इसका काल 7वीं शताब्दी ई. कहा गया है।
- इस पुराण का संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद 'कल्याण' के विशेषाङ्क में प्रकाशित है।

(14) वामनपुराण

- ग्रन्थारम्भ विष्णु के वामनावतार के वर्णन से होता है।
- इसका एक बड़ा भाग शिवलिङ्ग की पूजा, गणेश-कार्तिकेय के आख्यान तथा शिव-पार्वती के विवाह से सम्बद्ध है।
- यह पुराण अपने मूल में नही मिलता है।

वामन पुराण

- 95 अध्याय, 10 सहस्र श्लोक

वामन पुराण का विभाजन 4 संहिताओं में

1. माहेश्वरी 2. भागवती 3.सौरी 4.गाणेश्वरी

➢ कल्याण के विशेषाङ्क के रूप में हिन्दी अनुवाद प्रकाशित है।

(15) कूर्मपुराण

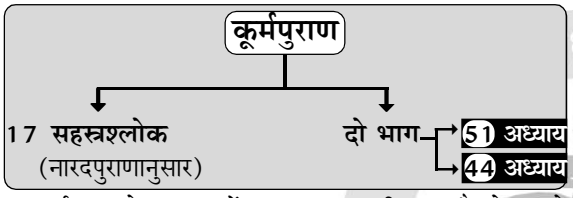
➢ विष्णु के कूर्म अवतार का इसमें वर्णन है। विष्णु इस अवतार में समुद्र-मन्थन में मुख्य भूमिका ग्रहण की थी।

कूर्मपुराण के अनुसार इसकी 4 संहिताएँ

1. ब्राह्मी 2.भागवती 3.सौरी 4.वैष्णवी

➢ कूर्मपुराण के नाम से अभी केवल प्रथम (ब्राह्मी) संहिता ही मिलती है- जिसमें 6 हजार श्लोक हैं।

➢ मत्स्यपुराण के अनुसार इसमें (18000 श्लोक हैं।)



➢ कूर्मपुराण के आरम्भ में राजा इन्द्रद्युम्न की कथा है जो अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ। इसे कूर्मरूप में विष्णु ने इस पुराण का उपदेश दिया।

➢ शिव की शक्ति (देवी) की **'आठ सहस्त्र'** नामों से स्तुति की गयी है।

➢ इस पुराण में पञ्चलक्षण भी मिलते हैं।

➢ ईश्वरगीता तथा व्यासगीता के नाम से स्वतन्त्र ग्रन्थ भी इसमें सम्मिलित हैं।

➢ डॉ. हाजरा के अनुसार कूर्मपुराण **'पाञ्चरात्र'** मत का प्रतिपादक प्रथम पुराण है।

(16) मत्स्यपुराण

➢ पञ्चलक्षण की सङ्गति होने से इसे प्राचीन माना गया है।

मत्स्यपुराण		
19 सहस्त्र लगभग (पुराणों के अनुसार)	14000-15000 श्लोक हैं (वर्तमान संस्करण में)	291 (अध्याय)

➢ इसमें जल प्रलय का वर्णन है जिसमें सभी प्राणियों की रक्षा मत्स्यरूपधारी विष्णु ने की थी।

➢ मत्स्य और मनु के संवाद के रूप में पुराण का प्रकाशन हुआ है।

➢ इसमें पितरों, तीर्थयात्रा, भुवनकोश, दानमाहात्म्य, राजधर्म आदि का वर्णन है।

➢ धार्मिक विषयों की दृष्टि से इसे शैव या वैष्णव दोनों कहा जा सकता है।

➢ डॉ. हाजरा इसका रचनाकाल तीसरी शताब्दी ई. के उत्तरार्ध या चौथी शताब्दी के पूर्वार्ध में माना है।

➢ पी.वी. काणे इसकी उत्तरकाल सीमा छठवीं शताब्दी ई. तक मानते हैं।

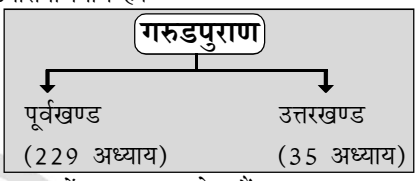
➢ इस पुराण का हिन्दी अनुवाद के साथ गीताप्रेस से दो खण्डों में प्रकाशित हैं जो 'कल्याण' के अङ्कों में प्रकाशित है।

(17) गरुडपुराण

➢ यह एक वैष्णव पुराण है।

➢ इस पुराण का प्रवचन विष्णु ने गरुड के समक्ष सुनाया था, गरुड ने कश्यप के समक्ष सुनाया था।

➢ शक्तिपूजा तथा पञ्चदेवों (विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्य और गणेश) की उपासना विधि है।



➢ गरुड पुराण में 18000 श्लोक हैं।

➢ अग्निपुराण के समान इसका पूर्वखण्ड विश्वकोशात्मक है जिसमें रामायण- महाभारत-हरिवंश की विषय-वस्तु, सृष्टिक्रम, ज्योतिष, शकुन, छन्द, आयुर्वेद, व्याकरण आदि समावेश है।

➢ इसका उत्तरखण्ड 'प्रेतकल्प' कहलाता है। इस खण्ड का वाचन मृत्यु के अनन्तर मृतक के घर में किया जाता है।

➢ गरुड पुराण की रचना हाजरा ने नवम शताब्दी ई. में मानी है।

➢ याज्ञवल्क्यस्मृति के अनेक श्लोक इस पुराण में कुछ परिवर्तन के साथ आये हैं।

➢ गरुडपुराण के 107 वें अध्याय में 'पराशरस्मृति' का सार प्रस्तुत है।

(18) ब्रह्माण्डपुराण

➢ नारदपुराण तथा मत्स्यपुराण में इसकी विषय सूची से ज्ञात होता है कि इसमें 109 अध्याय तथा 12000 श्लोक हैं।

➢ ब्रह्माण्ड के महत्त्व का वर्णन करने के लिये ब्रह्मा ने जिस पुराण का उपदेश दिया और जिसमें भविष्य एवं कल्पों का वृत्तान्त विस्तार से दिया गया वह 'ब्रह्माण्डपुराण' है।

नारदपुराण के अनुसार ब्रह्माण्डपुराण के 4 पाद (खण्ड)

1. प्रक्रिया 2. अनुषङ्ग 3. उपोद्घात 4.उपसंहार

➢ वेंकटेश्वर प्रेस (बम्बई) से प्रकाशित संस्करण में केवल प्रक्रिया तथा उपोद्घात है।

➢ उपोद्घात पाद में क्षत्रियों के वंशों का वर्णन है।

➢ ब्रह्माण्डपुराण का उपदेश वायु ने व्यास को दिया था।

➢ 'अध्यात्मरामायण' को ब्रह्माण्डपुराण का अंश माना जाता है किन्तु किसी प्रतिलिपि में यह उपलब्ध नहीं है, अपितु एक पृथक् ग्रन्थ ही है।

➢ इस पुराण में नचिकेता की कथा को विकृत रूप देकर 'नाचिकेतोपाख्यान' के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

➢ ब्रह्माण्डपुराण की रचना 400 ई. तथा 600 ई. के बीच हो गयी थी।

अभ्यास प्रश्न (पुराण)

1. पुराण के कितने लक्षण हैं-
(A) 14 (B) 05
(C) 11 (D) 18
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

2. सर्ग,प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित संकेतक है-
(A) नाटकस्य (B) महाकाव्यस्य
(C) गद्यकाव्यस्य (D) पुराणस्य
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

3. पञ्चलक्षणम् अस्ति -
(A) महाभारतम् (B) पुराणम्
(C) रामायणम् (D) गीता
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.– कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

4. उपपुराणेषु अन्तर्गतमस्ति -
(A) मार्कण्डेयपुराणम् (B) नारदपुराणम्
(C) गणेशपुराणम् (D) ब्रह्माण्डपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-177

5. पुराणशब्दस्य अर्थः -
(A) पौराणिकः (B) प्राचीनः
(C) प्राचीनः यः नवीनः अस्ति (D) निरर्थकं वस्तु
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

6. उपदेशप्रधानं भवति -
(A) वेदः (B) पुराणम्
(C) कर्मकाण्डम् (D) सांख्यदर्शनम्
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 11

7. पुराण लक्षणों में नहीं आता है -
(A) सर्गः (B) वंशानुचरितम्
(C) विधिः (D) प्रतिसर्गः
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

8. 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च ..... पुराणं पञ्चलक्षणम्' इस श्लोक में 'प्रतिसर्गः' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) उत्पत्तिः (B) स्थितिः
(C) प्रलयः (D) देवभूमिः
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

9. पुराणपञ्चलक्षणे नास्ति -
(A) वंशः (B) उत्सर्गः
(C) सर्गः (D) प्रतिसर्गः
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

10. 'पुराणं पञ्चलक्षणम्' में एक है -
(A) वंशः (B) देशः
(C) कालः (D) ज्ञानम्
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

11. 'पुरा नवं भवति' इति पुराणशब्दनिर्वचनं कः कृतवान्?
(A) गार्ग्यः (B) मधुसूदनसरस्वती
(C) व्यासः (D) यास्कः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति. – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 174

12. ब्रह्मखण्डस्य ब्रह्मारण्यखण्ड-ब्रह्मोत्तर-खण्डरूपेण विभागद्वयं कस्मिन् पुराणे वर्तते -
(A) ब्रह्मपुराणे (B) ब्रह्माण्डपुराणे
(C) स्कन्दपुराणे (D) मार्कण्डेयपुराणे
स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-154-157

13. पुराणों के विषय में यह कथन असत्य है?
(A) पुराणेषु चतुर्विधसृष्टिविद्याया एव वर्णनमस्ति
(B) पुराणं पञ्चलक्षणमस्ति
(C) पुराणेषु सृष्टिविद्यायाः वैशद्येन वर्णनमस्ति
(D) भागवतपुराणे पुराणस्य दशलक्षणानि वर्णितानि
स्रोत–(i) पुराण-विमर्श-बलदेव उपाध्याय, पेज–125, 274, 128
(ii) श्रीमद्भागवत् (3.10), पेज–278

14. पुराणलक्षणस्य घटकम् अस्ति -
(A) वंशानुचरितम् (B) आयुः
(C) उन्नतिः (D) तात्पर्यम्
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

1. (B)	**2. (D)**	**3. (B)**	**4. (C)**	**5. (B)**	**6. (B)**	**7. (C)**	**8. (C)**	**9. (B)**	**10. (A)**
11. (D)	**12. (C)**	**13. (A)**	**14. (A)**						

15. ''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च'' इत्याद्युक्ति केन सम्बद्धा -

(A) वेदलक्षणेन (B) ज्योतिषलक्षणेन

(C) महाकाव्यलक्षणेन (D) पुराणलक्षणेन

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

16. पुराणमिदमष्टादशमहापुराणेषु न गण्यते -

(A) नृसिंहपुराणम् (B) विष्णुपुराणम्

(C) ब्रह्मपुराणम् (D) कूर्मपुराणम्

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

17. उपपुराण है -

(A) स्कन्दपुराणम् (B) वायुपुराणम्

(C) कालिकापुराणम् (D) गरुडपुराणम्

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

18. अठारह पुराणों में नहीं है-

(A) केदारखण्डपुराणम् (B) भविष्यपुराणम्

(C) अग्निपुराणम् (D) वायुपुराणम्

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

19. शैव पुराण हैं -

(A) एकादश (B) द्वादश

(C) दश (D) नव

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इति. (खण्ड-13)-बलदेव उपाध्याय, भू.पेज–22

20. तामस पुराण है -

(A) ब्रह्मपुराणम् (B) नारदीयपुराणम्

(C) वामनपुराणम् (D) मत्स्यपुराणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

21. सात्त्विक पुराण है -

(A) भविष्यपुराणम् (B) शिवपुराणम्

(C) श्रीमद्भागवतपुराणम् (D) लिङ्गपुराणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

22. उपपुराण में अन्तर्भाव है -

(A) श्रीमद्भागवतपुराण (B) कल्किपुराण

(C) लिङ्गपुराण (D) स्कन्दपुराण

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 176

23. गरुडपुराण है-

(A) राजस पुराण (B) सात्त्विक पुराण

(C) तामस पुराण (D) इतिहासात्मकपुराण

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

24. राजस पुराण है -

(A) भविष्यपुराणम् (B) मत्स्यपुराणम्

(C) नारदीयपुराणम् (D) वराहपुराणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

25. तीन 'ब्र' के अन्तर्गत नहीं है -

(A) ब्रह्माण्डपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्

(C) ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् (D) वामनपुराणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 176

26. महापुराणेषु न गण्यते -

(A) पद्मपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्

(C) साम्बपुराणम् (D) स्कन्दपुराणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 176

27. खिलभागत्वेनाभिधीयते -

(A) नारदपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्

(C) कूर्मपुराणम् (D) हरिवंशपुराणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 159

28. वामनपुराणदिशा भागवतस्य पुराणस्य वैशिष्ट्येषु को विद्यते–

(A) रावणवधः (B) बकासुरवधः

(C) कंसवधः (D) वृत्रवधः

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 676

29. ''मद्वयं भद्वयम्'' इत्यादि श्लोक में 'मद्वयम्' से दो पुराणों को ग्रहण किया जाता है-

(A) महापुराण मनुस्मृति

(B) मार्कण्डेयपुराण और आदिपुराण

(C) मत्स्यपुराण और मार्कण्डेयपुराण

(D) मत्स्यपुराण और महापुराण

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

15. (D) 16. (A) 17. (C) 18. (A) 19. (C) 20. (D) 21. (C) 22. (B) 23. (B)
24. (A) 25. (D) 26. (C) 27. (D) 28. (D) 29. (C)

30. देवीभागवत ग्रन्थ है -

(A) स्मृतिग्रन्थ (B) पुराणग्रन्थ

(C) उपनिषद्ग्रन्थ (D) महापुराणग्रन्थ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 183

31. उपपुराणम् अस्ति -

(A) भागवत (B) मत्स्य

(C) अग्नि (D) औशनस्

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

32. महापुराण नहीं है -

(A) मार्कण्डेयपुराणम् (B) पद्मपुराणम्

(C) नारदीयपुराणम् (D) कूर्मपुराणम्

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

33. 'पञ्चविंशतिसहस्राणि'' कहा जाता है-

(A) मायवीयम् (B) नारदीयम्

(C) मार्कण्डेयम् (D) गारुडीयम्

स्रोत–पुराण-विमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 150

34. 'मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्' इति ..... वर्तते?

(A) देवीभागवतपुराणे (B) ब्रह्माण्डपुराणे

(C) मत्स्यपुराणे (D) लिङ्गपुराणे

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 75

35. पुराणों की संख्या कितनी है -

(A) 16 (B) 17

(C) 18 (D) 20

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 75

36. मत्स्यपुराण में दुर्ग की संख्या हैं -

(A) पञ्च (B) नव

(C) षट् (D) एकादश

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इति. (खण्ड-13), पेज–478

37. पद्मपुराण के प्रथम सृष्टिखण्ड में अध्यायों की संख्या है

(A) 85 (B) 24

(C) 26 (D) 82

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 141

38. पद्मपुराण में अवतारों की संख्या है-

(A) द्वादश (B) नव

(C) दश (D) एकादश

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 175

39. उपपुराणों की संख्या -

(A) पन्द्रह (B) अठारह

(C) बीस (D) उन्नीस

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

40. देवीभागवत में स्कन्ध हैं -

(A) तेरह (B) बारह

(C) अठारह (D) बीस

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 183

41. 'अवन्तिखण्ड' है -

(A) श्रीमद्भागवत में (B) ब्रह्मवैवर्तपुराण में

(C) स्कन्दपुराण में (D) पद्मपुराण में

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 187

42. 'शिवपुराण' में मुख्य रूप से वर्णन है -

(A) राम का (B) विष्णु का

(C) देवी का (D) शिव का

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 182

43. दुर्गासप्तशती अंश विशेष है-

(A) देवीभागवतस्य (B) मार्कण्डेयपुराणस्य

(C) रामायणस्य (D) शिवपुराणस्य

संस्कृत साहित्य का इति.– उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 184

44. नृसिंहावतारस्य वर्णनम् अस्ति -

(A) श्रीमद्भागवते (B) अग्निपुराणे

(C) वायुपुराणे (D) कालिकापुराणे

स्रोत– श्रीमद्भागवत्, प्रथमखण्ड, पेज–847

45. पद्मपुराण के ..... जगन्नाथवर्णन है-

(A) तृतीयस्वर्गखण्डे (B) चतुर्थपातालखण्डे

(C) द्वितीयभूमिखण्डे (D) प्रथमसृष्टिखण्डे

स्रोत–पुराण-विमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 629

30. (B)	**31. (D)**	**32. (C)**	**33. (B)**	**34. (A)**	**35. (C)**	**36. (C)**	**37. (D)**	**38. (C)**
39. (B)	**40. (B)**	**41. (C)**	**42. (D)**	**43. (B)**	**44. (A)**	**45. (B)**		

46. वायुपुराण में माहात्म्य वर्णित है -
(A) विष्णु का (B) वायु का
(C) सूर्य का (D) शिव का
संस्कृत साहित्य का इति. – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 182

47. कस्मिन् पुराणे विविधशास्त्रसम्बन्धिनो विषयाः वर्तन्ते-
(A) ब्रह्मपुराणे (B) ब्रह्माण्डपुराणे
(C) नारदपुराणे (D) अग्निपुराणे
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

48. मौर्यवंशराज्ञां चरितं कस्मिन् पुराणे वर्णितम् -
(A) वायुपुराणे (B) वराहपुराणे
(C) वामनपुराणे (D) विष्णुपुराणे
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

49. अठारह पुराणों में किसकी गणना नहीं होती?
(A) भागवतपुराण की (B) नारदपुराण की
(C) विष्णुपुराण की (D) लक्ष्मीपुराण की
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

50. रेवाखण्डं कस्य पुराणस्य भागः -
(A) शिवमहापुराणस्य (B) स्कन्दपुराणस्य
(C) विष्णुपुराणस्य (D) वायुपुराणस्य
संस्कृत साहित्य का इति. – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 187

51. ललितासंग्रहनामस्तोत्रं कुत्र वर्तते -
(A) श्रीमद्भागवते (B) रामायणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे (D) अग्निपुराणे
स्रोत–ललितासहस्रनामस्तोत्रम् - देवेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, पेज–79

52. तीर्थानां सविस्तारं वर्णनमुपलभ्यते-
(A) मत्स्यपुराणे (B) वायुपुराणे
(C) स्कन्दपुराणे (D) शिवपुराणे
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इति. (खण्ड-13), पेज-278

53. ब्रह्मवैवर्तपुराणं निबद्धं वर्तते -
(A) खण्डेषु (B) पर्वसु
(C) काण्डेषु (D) स्कन्धेषु
संस्कृत साहित्य का इति.–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 185

54. कस्मिन् पुराणे 'काशीखण्डः' समुपलभ्यते?
(A) लिङ्गपुराणे (B) शिवपुराणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे (D) स्कन्दपुराणे
संस्कृत साहित्य का इति. – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 186

55. अलङ्कार सामग्री मिलती है -
(A) महापुराण में (B) अग्निपुराण में
(C) रामायण में (D) आगम में
संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 578

56. गरुडपुराण के अनुसार दूर्वाष्टमी होती है-
(A) मार्गशीर्षशुक्लाष्टमी (B) भाद्रशुक्लाष्टमी
(C) आषाढशुक्लाष्टमी (D) पौषशुक्लाष्टमी
स्रोत–गरुडपुराण – गीताप्रेस, पृष्ठ- 230

57. 'आश्रमो वैष्णवो ब्राह्मो हराश्रम इति त्रयः' इति त्रयाणामाश्रमाणां विधानमस्ति-
(A) लिङ्गपुराणे (B) ब्रह्मपुराणे
(C) कूर्मपुराणे (D) वामनपुराणे
स्रोत–कूर्मपुराण (पूर्वार्द्ध श्लोक)– शिवजीत सिंह, पृष्ठ- 22

58. भारतस्य महिमा कस्मिन् पुराणे अस्ति -
(A) श्रीमद्भागवतपुराणे (B) देवलपुराणे
(C) विष्णुपुराणे (D) अग्निपुराणे
अग्निपुराण (अध्याय-118)–तारिणीश झा/घनश्याम त्रिपाठी, पृष्ठ- 430

59. भ्रमरगीतम् अत्र मिलति -
(A) रामायणे (B) विष्णुपुराणे
(C) श्रीमद्भागवते (D) देवीभागवते
स्रोत–भागवतमहापुराण (10.47) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 421

60. श्रीमद्भागवतपुराणस्य सुबोधिनी टीका लिखिता-
(A) निम्बार्काचार्येण (B) रामानुजाचार्येण
(C) माध्वाचार्येण (D) वल्लभाचार्येण
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इति. (खण्ड-10), पेज-421

61. श्रीकृष्णचरित मिलता है-
(A) शिवपुराण में (B) ब्रह्मवैवर्तपुराण में
(C) अग्निपुराण में (D) श्रीमद्भागवतपुराण में
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

62. श्रीमद्भागवत पुराण में स्कन्ध हैं -
(A) नव (B) दश
(C) ग्यारह (D) बारह
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

46. (D)	**47. (D)**	**48. (D)**	**49. (D)**	**50. (B)**	**51. (C)**	**52. (C)**	**53. (A)**	**54. (D)**	**55. (B)**
56. (B)	**57. (C)**	**58. (D)**	**59. (C)**	**60. (D)**	**61. (D)**	**62. (D)**			

63. रासपञ्चाध्यायी है -
(A) महाभारत में (B) अग्निपुराण में
(C) श्रीमद्भागवत में (D) श्रीमद्रामायण में
स्रोत–पुराण-विमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 149

64. श्रीकृष्णचरितं ..... दशमस्कन्धे अस्ति -
(A) महाभारते (B) रामायणे
(C) श्रीमद्भागवते (D) विष्णुपुराणे
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

65. भागवतपुराण को माना जाता है?
(A) क्षेत्रीयपुराणम् (B) उपपुराणम्
(C) महापुराणम् (D) इतिहासपुराणम्
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

66. मत्स्यपुराणोक्तेषु दिव्यावतारेषु को न गण्यते -
(A) नारायणः (B) नरसिंहः
(C) वामनः (D) बुद्धः
स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 173

67. भ्रमरगीतकाव्य का मूलस्रोत है-
(A) श्रीमद्भागवत का पञ्चम स्कन्ध
(B) श्रीमद्भागवत का तृतीय स्कन्ध
(C) श्रीमद्भागवत का सप्तम स्कन्ध
(D) श्रीमद्भागवत का दशम स्कन्ध
स्रोत–भागवत-महापुराण (10.47) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 421

68. पुराणे लक्षणे एतत् न अन्तर्भवति–
(A) सर्गः (B) प्रतिसर्गः
(C) वंशः (D) जन्मान्तराणि
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 174

69. वकारादिपुराणानि कति–
(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) द्वे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 176

70. अम्बरीषोपाख्यानम् अस्ति -
(A) वराहपुराणे (B) वामनपुराणे
(C) भागवतपुराणे (D) भविष्यपुराणे
स्रोत–भागवत-महापुराण (9/4) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 20

71. श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णलीला वर्तते -
(A) अष्टमस्कन्धे (B) दशमस्कन्धे
(C) द्वादशस्कन्धे (D) नवमस्कन्धे
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ-97

72. 'विद्यावतां भागवते परीक्षा' अनया सुभाषितवल्या सम्बद्धग्रन्थः -
(A) भगवद्गीता (B) ब्रह्मवैवर्तपुराणम्
(C) मार्कण्डेयपुराणम् (D) भागवतपुराणम्
संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 182

73. हरिवंश है -
(A) पुराण (B) काव्य
(C) इतिहास (D) खिल
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 159

74. भगवान् विष्णु के अवतार होते हैं -
(A) दश (B) पञ्चदश
(C) अष्टौ (D) अष्टाविंशति
स्रोत–पुराण-विमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 175

75. कः पञ्चमो वेदः -
(A) वाल्मीकिरामायणम् (B) इतिहासपुराणम्
(C) भगवद्गीता (D) छान्दोग्योपनिषद्
स्रोत–पुराणविमर्श– बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 10,11

76. प्रह्लादः कस्य पितामहः -
(A) बाणस्य (B) विरोचनस्य
(C) बलेः (D) रावणस्य
स्रोत–भागवतमहापुराण (8.15) खण्ड-1–गीताप्रेस, पृष्ठ- 974

77. अधोलिखितेषु तामसपुराणं किम्–
(A) पद्मपुराणम् (B) लिङ्गपुराणम्
(C) ब्रह्माण्डपुराणम् (D) मार्कण्डेयपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

78. पौराणिक-भूगोलानुसारेण कति समुद्राः -
(A) सप्त (B) नव
(C) अष्ट (D) पञ्च
स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 323

79. पुराणानुसारेण मन्वन्तराणि कति संख्यानि?
(A) द्वादश (B) चतुर्दश
(C) षोडश (D) अष्टादश
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-13)-बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-8

63. (C)	**64. (C)**	**65. (C)**	**66. (D)**	**67. (D)**	**68. (D)**	**69. (B)**	**70. (C)**	**71. (B)**	**72. (D)**
73. (D)	**74. (A)**	**75. (B)**	**76. (C)**	**77. (B)**	**78. (A)**	**79. (B)**			

3 Unit

संस्कृत साहित्य का इतिहास

महाकाव्य | नाटक | गद्य | कथासाहित्य | गीतिकाव्य | काव्यशास्त्र

काव्य का सामान्य परिचय

- काव्य शब्द संस्कृत भाषा में बहुत प्राचीन है जिसे कवि के कर्म के रूप में जाना जाता हैं-
  'कवेः कर्म काव्यम्' (कवि +ण्यत्)
- 'कवि' शब्द 'कु' अथवा 'कव्' धातु (भ्वादिगण, आत्मनेपदी - कवते) से बना है। जिसका अर्थ है-
  ध्वनि करना, विवरण देना, चित्रण करना।
- महाकाव्य साहित्यविधा का उद्भव वैदिकसूक्तों से ही मिलता है । जैसे-स्तुतिपरक नाराशंसियाँ, दान-स्तुतियाँ, संवादसूक्त आदि द्वारा।
- रामायण और महाभारत जैसे आर्षकाव्य महाकाव्यसाहित्य विधा के भास्कर हैं। जिन्होंने परवर्ती काव्यों को विषयवस्तु शैली, भाषा-शैली, वर्णनविधि आदि की उपजीव्यता दी।
- वाल्मीकि से कालिदास की रचना तक आने में काव्यकला को कई शताब्दियाँ लगी।
- रामायण, महाभारत के बाद कालिदास की उत्पत्ति तक जो महाकाव्य लिखे गये थे, वे केवल नाम मात्र ही शेष हैं। इस काल के कुछ ग्रन्थों के नाम निम्नलिखित हैं-
  जाम्बवतीजय या **पातालविजय** (पाणिनि -450 ई॰पू॰)
- 18 सर्गों में श्रीकृष्ण द्वारा पाताल जाकर जाम्बवती के विजय और परिणय की कथा वर्णित है।
- राजशेखर के नाम से जल्हण की सूक्तिमुक्तावली (1247) में उद्धृत-
  नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।
  आदौ व्याकरणं काव्यमनुजाम्बवतीजयम्॥
- वररुचि (350ई॰पू॰) ने **'स्वर्गारोहण'** नामक काव्य बनाया था। जिसे पतञ्जलि ने - **वाररुचं काव्यम्** कहा है।
  समुद्रगुप्त के 'कृष्णचरित' काव्य में इसका उल्लेख है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि -150 ई॰पू॰ में 'महानन्द -काव्य' की रचना की थी।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित में इसकी चर्चा की है।
- इसके बाद महाकवि कालिदास का युग प्रारम्भ होता है।
- मनोहारिणी शैली के प्रवर्तक कालिदास हैं।
- इसी शृंखला में महाकवि भारवि, माघ और श्रीहर्ष का नाम उल्लेखनीय है।

काव्य के प्रकार

- काव्य के मुख्यतः दो भेद होते हैं- **श्रव्य और दृश्य।**

काव्य का वर्गीकरण

श्रव्य-

(1) पद्य -
1. महाकाव्य - रघुवंशम् आदि
2. खण्डकाव्य - मेघदूतम् आदि
3. मुक्तककाव्य - नीतिशतकम् आदि

(2) चम्पू - नलचम्पू आदि
(3) कथा - कादम्बरी आदि
(4) आख्यायिका - हर्षचरितम् आदि

दृश्य-

1. रूपक - 10

1. नाटक	-	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2. प्रकरण	-	मृच्छकटिकम्
3. भाण	-	लीलामधुकरम्
4. प्रहसन	-	धूर्तचरितम्
5. डिम	-	त्रिपुरदाह
6. व्यायोग	-	सौगन्धिकाहरणम्
7. समवकार	-	समुद्रमन्थन
8. वीथी	-	मालविका
9. अङ्क	-	शर्मिष्ठा-ययाति
10. ईहामृग	-	कुसुमशेखरविजय

2. उपरूपक - 18

1. नाटिका	2. त्रोटक	3. गोष्ठी
4. सट्टक	5. नाट्यरासक	6. प्रस्थानक
7. उल्लाप्य	8. काव्य	9. प्रेंखण
10. रासक	11. संलापक	12. श्रीगदित
13. शिल्पक	14. विलासिका	15. दुर्मल्लिका
16. हल्लीश	17. प्रकरणिका	18. भाणिका

(i) महाकाव्य का सामान्य परिचय

- महाकाव्य को सर्वप्रथम आचार्य **भामह** ने परिभाषित किया।
- भामह के बाद **आचार्य दण्डी** ने काव्यादर्श में महाकाव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।
- 'अग्निपुराण' में भी महाकाव्य के लक्षण प्राप्त होते हैं।
- महाकाव्य के विषय में विस्तृत वर्णन **विश्वनाथ** ने साहित्यदर्पण में किया।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य का लक्षण -

- महाकाव्य सर्गों में विभक्त होता है।
- महाकाव्य का नायक देवता, कुलीन क्षत्रिय, धीरोदात्त आदि गुणों से युक्त हो सकता है अथवा एक वंशज अनेक कुलीन राजा भी नायक हो सकते हैं।

  सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
  सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः।।
  एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा। (सा. 6/316)
- शृङ्गार, वीर और शान्त रस में से कोई एक प्रधान रस होता है और अन्य रस उसके सहायक।
- इसमें सभी नाटकसंधियाँ होती हैं।

  शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गीरस इष्यते।
  अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः। (सा. 6/317)
- महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक अथवा किसी सज्जन व्यक्ति से सम्बद्ध होता है।
- धर्मार्थकाममोक्ष का वर्णन होता है तथा इनमें से किसी एक फल की प्राप्ति का वर्णन होता है।

इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेद्।। (सा. 6/317)

- प्रारम्भ में तीन प्रकार के मङ्गलाचरणों में से एक होता है नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक अथवा आशीर्वादात्मक में से एक।
- कहीं कहीं पर दुर्जन निन्दा या सज्जन प्रशंसा भी होती है।
- प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्दोबद्ध पद्य होते हैं। सर्गान्त में छन्द परिवर्तन होता है।
- सर्ग संख्या 8 से अधिक होनी चाहिए अथवा न्यूनतम 8 होनी चाहिए।
- सर्ग न बहुत छोटे न बहुत बड़े होने चाहिए।
- कहीं कहीं विविध छन्दों से युक्त सर्ग भी होते हैं।
- महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय, वन-विहार, नगर, मार्ग, जलक्रीड़ा, वन, सागर, संयोग, वियोग, अन्धकार , दिन, प्रातः, शिकार, पर्वत, ऋतु, ऋषि, युद्ध, विजय, विवाह, पुत्र-जन्मोत्सव आदि विषयों का अवसरानुकूल वर्णन होना चाहिए।
- महाकाव्य का नामकरण वर्णनीय चरित्र के नाम से या कवि के नाम से अथवा किसी दूसरे के नाम से होना चाहिए।
- सर्ग का नाम सर्ग में वर्णनीय कथा के नाम से होना चाहिए।
- लक्ष्य ग्रन्थों को ध्यान में रखकर ये लक्षण बने हैं।

महाकाव्यों का शैलीगत विकास-

- संस्कृत महाकाव्यों का विकास दो पृथक् मार्गों से हुआ है - 1. सुकुमारमार्ग 2. विचित्रमार्ग

(1) सुकुमार मार्ग

- आरम्भ में महाकाव्य सुकुमार मार्गी थे।
- सुकुमारमार्ग को **रसमयी पद्धति** भी कहते हैं।
- प्रसादगुणपूर्ण शैली में निरूपित मार्ग।
- वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष आदि कवियों की यही पद्धति है।
- रस और ध्वनि को काव्य की आत्मा मानकर अलंकारों का समुचित प्रयोग होता है।

(2) विचित्रमार्ग

- विचित्रमार्ग के रूप में पाण्डित्यपूर्ण शैली संस्कृत-महाकाव्यों में मिलती है।
- शास्त्रीय वैदुष्यपूर्ण भाषा से युक्त महाकाव्य को अलंकार पद्धति या **विचित्रमार्ग** कहा गया।
- इस मार्ग में आनुषाङ्गिक वर्णनों की प्रधानता।
- कविगण द्वारा वैदुष्य (विद्वता) का प्रदर्शन।
- विचित्रमार्ग के प्रवर्तक भारवि थे।
- भारवि का अनुसरण माघ ने किया।

- दोनों महाकवियों ने मूलकथा को बीच में छोड़कर प्रसक्तानुप्रसक्त वर्णनों में अपने को बाँध लिया।
- इस मार्ग में भाषा और विषय दोनों क्षेत्रों में विशेषता रहती है।
- इस पद्धति में चित्रकाव्य तक कवि पहुँच जाते हैं।
- श्लेषालंकार के प्रयोग से यह शैली दुरुह हो जाती है।
- ओज गुण को प्रमुख स्थान दिया।
- विचित्रमार्गी कवि कथानक की चिन्ता नहीं करते। भारवि ने अल्प कथानक को वर्णनों से भरकर 18 सर्गों का महाकाव्य बना दिया।
- जबकि सुकुमारमार्गी कालिदास ने रघुवंश के 19 सर्गों में अनेक पीढ़ियों के बड़े कथानक को समेट दिया।
- बाद के कवियों के लिए **वाल्मीकि की रसमयी पद्धति** तथा **भारवि की अलंकृत पद्धति** विद्यमान थी।
- बाद के कवियों ने अपनी रुचि के अनुसार दोनों में से एक को अपनाया।
- श्रीहर्ष ने दोनों के समन्वय का सफल प्रयास किया।

(ii) नाटक का सामान्य परिचय

- साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को कवित्व की अन्तिम सीमा कहा जाता है- **'नाटकान्तं कवित्वम्।'**
- रूपक में गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण तो रहता ही है, इसे सुनने के अतिरिक्त देखा जाता है। श्रव्य की अपेक्षा 'दृश्य' का अधिक सघन प्रभाव होता है।
- भरत ने नाट्यशास्त्र (6/31) में कहा है कि इस नाट्य-संसार में सब कुछ रसमय होता है, रस के बिना यहाँ कुछ भी प्रवृत्त नहीं होता- **'न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।'** कोई व्यक्ति किसी भी रुचि का क्यों न हो, उसे अपना अनुकूल विषय नाट्य-जगत् में अवश्य मिल जायेगा। इसीलिए कालिदास ने इसकी प्रशंसा में कहा है-

  नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।

  (मालविकाग्निमित्रम्- 1/4)
- काव्य को संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने दृश्य और श्रव्य के रूप में दो वर्गों में रखा है। दृश्यकाव्य के दो भेद हैं- रूपक तथा उपरूपक। रूपक दस तथा उपरूपक अठारह प्रकार के होते हैं। रूपकों का एक प्रमुख भेद 'नाटक' है जो अपने अर्थ का विस्तार करके सामान्यतः आधुनिक भारतीय भाषाओं में नाट्यमात्र या दृश्यकाव्य मात्र (Drama) का अर्थ देता है।
- धनञ्जय ने नाट्य,रूप और रूपक-इन तीन शब्दों के प्रयोग के हेतुओं का निरूपण किया है जो वस्तुतः एकार्थक हैं।
- विविध पात्रों की अवस्थाओं का चतुर्विध अभिनय (आङ्गिक,वाचिक,सात्त्विक तथा आहार्य) के द्वारा जब नट अनुकरण करता है तो इसे **'नाट्य'** कहते हैं।

नाटक

- नाटक का कथानक प्रसिद्ध (इतिहास या पुराण में निर्दिष्ट) होता है, उसका नायक विख्यात वंश में उत्पन्न राजर्षि या राजा रहता है, उसे धीरोदात्त श्रेणी का होना चाहिए। कभी-कभी वीर रस या शृङ्गार रस के अनुरूप वह धीरोद्धत या धीरललित भी हो सकता है किन्तु धीरप्रशान्त नहीं। श्रीकृष्ण जैसे दिव्यादिव्य नायक भी होते हैं।
- नाटक का मुख्य रस शृङ्गार या वीर होता है **(एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा)**। अन्य सभी रसों का यथावसर प्रयोग किया जाता है।
- नाटक में पाँच से लेकर दस अङ्क तक रखे जाते हैं। उसमें कथानक का स्वाभाविक विकास दिखाने के लिए पाँच अर्थप्रकृतियाँ (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य), पाँच अवस्थाएँ (आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम) तथा इनके योग से होने वाली पाँच सन्धियाँ (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण) यथासाध्य रखी जाती हैं।
- जिस नाटक में इन सब के प्रयोग के साथ दस अङ्क हों उसे 'महानाटक' कहते हैं। **बालरामायण, हनुमन्नाटक** आदि महानाटक हैं।
- नाटक की अन्तिम सन्धि में 'अद्भुत रस' का प्रयोग हो इससे रोचकता आती है **(कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः)**
- नाटक की रचना गोपुच्छाग्रवत् होनी चाहिए अर्थात् आरम्भ और अन्त सूक्ष्म(पतला) हो, मध्यभाग स्थूल (दीर्घ) हो।
- क्रमशः कार्यों का संक्षिप्त उपसंहार होना चाहिए। नाटक को काव्यमात्र में श्रेष्ठ कहा गया है-

  'काव्येषु नाटकं रम्यम्, नाटकान्तं कवित्वम्।'
- भास, कालिदास, भवभूति, शूद्रक आदि के नाटक संस्कृत-जगत् में विख्यात हैं।

प्रकरण

- इसका कथानक कविकल्पित होता है। प्रायः लोककथाओं से कथानक लेकर इसकी रचना की जाती है।
- इसका नायक धीरप्रशान्त कोटि का मन्त्री, ब्राह्मण या वणिक्

में से कोई एक होता है **(अमात्य-विप्र-वणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्** -दशरूपक 3/39)। मृच्छकटिक में ब्राह्मण, मालतीमाधव में अमात्य तथा पुष्पदूतिका में वैश्य नायक हैं। इसमें नायिका दो प्रकार की होती है-कुलीना और वेश्या (गणिका)। किसी प्रकरण में कोई एक ही नायिका रहती है, (जैसे-मालतीमाधव में) तो किसी में दोनों प्रकार की नायिकाएं होती है (जैसे- मृच्छकटिक में)।

- धूर्त,जुआरी,विट,चेट आदि अनेक पात्रों से युक्त प्रकरण **'संकीर्ण'** कहलाता है। नाट्यदर्पण (2/68) में नायिका के आधार पर प्रकरण के इक्कीस भेद कहे गये हैं। रस की दृष्टि से इसमें शृङ्गाररस प्रधान होता है।

भाण

- इसमें कोई अत्यन्त चतुर तथा बुद्धिमान् विट अपने या दूसरे के अनुभव के आधार पर धूर्त के चरित का वर्णन करता है। यह एक अङ्क तथा एक ही पात्र का रूपक है। वह पात्र विट ही रहता है जो आकाशभाषित के रूप में स्वयं प्रश्न-उत्तर (उक्ति-प्रत्युक्ति) का प्रयोग करता है।
- इसमें मुख और निर्वहण सन्धियाँ रहती हैं, अन्य सन्धियाँ नहीं।

प्रहसन

- यह हास्यरस-प्रधान रूपक होता है, जिसमें कथानक कल्पित रहता है। इसमें धर्म का पाखण्ड करने वाले (जैन-बौद्ध) साधुओं, केवल जाति से ब्राह्मण कहलाने वाले धूर्तों एवं सेवक-सेविकाओं का चरित्र दिखाया जाता है।
- प्रहसन में वेशभूषा तथा भाषा की विकृति से भी हास्योत्पादन होता है। भाण के समान इसमें भी दो सन्धियों (मुख एवं निर्वहण) एवं 10 लास्याङ्गों का प्रयोग होता है। विश्वनाथ ने इसमें एक या दो अङ्क माने हैं।
- प्रहसन के तीन भेद होते हैं-शुद्ध, विकृत और संकीर्ण।

डिम

- इसका कथानक प्रसिद्ध होता है। नाट्य की कैशिकी वृत्ति वर्जित है, शेष तीनों वृत्तियाँ (भारती, सात्त्वती, आरभटी) प्रयुक्त होती हैं।
- इसमें नायक देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि होते हैं जो मानवेतर हैं, भूत, प्रेत, पिशाच आदि पात्रों का भी इसमें समावेश होता है। उद्धत कोटि के 16 पात्र इसमें रहते हैं। इसका प्रधान रस रौद्र होता है। माया, इन्द्रजाल, युद्ध,भगदड़ आदि के दृश्यों से यह भरा होता है।
- विमर्श सन्धि का प्रयोग नहीं होता। इसमें चार अङ्क रहते हैं।
- भरत ने **'त्रिपुरदाह'** नामक डिम का उल्लेख किया है।

व्यायोग

- इसका कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है, जो किसी विख्यात उद्धत व्यक्ति (भीम, दुर्योधन आदि) पर आश्रित रहता है।
- इसमें गर्भ एवं विमर्श नामक सन्धियाँ नहीं होती हैं। रसों की दीप्ति डिम के समान होती है।
- इसकी कथावस्तु एक दिन की घटनाओं से सम्बद्ध होती है।
- इसमें एक ही अंक रहता है तथा पुरुष-पात्रों की संख्या अधिक होती है।भास का **'मध्यमव्यायोग'** इसका मुख्य उदाहरण है।

समवकार

- इसका इतिवृत्त इतिहास-पुराण में प्रसिद्ध होता है, जिसमें देवताओं और दैत्यों की कथा होती है। कैशिकी को छोड़कर अन्य वृत्तियाँ एवं विमर्श को छोड़कर अन्य सन्धियाँ होती हैं। इसमें तीन अङ्क रहते हैं जिनमें तीन बार कपट, तीन बार धर्म-अर्थ-काम का शृङ्गार एवं तीन बार पात्रों में भगदड़ दिखायी जाती है।
- इसके पात्र देवता और दानव होते हैं जिनकी संख्या 12 होती है, सभी वीररस से भरे रहते हैं और सब को पृथक्-पृथक् फल मिलता है।
- 'बिन्दु' नामक अर्थप्रकृति एवं 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक का इसमें प्रयोग नहीं किया जाता।
- नाट्यशास्त्र में **'समुद्रमन्थन'** नामक समवकार के अभिनय का उल्लेख है। भास के 'पञ्चरात्र' में भी कुछ लक्षण मिलते हैं।

वीथी

- यह शृङ्गाररस-युक्त एकाङ्की रूपक है। इसके कई लक्षण भाण के समान हैं। जैसे-केवल दो सन्धियाँ (मुख और निर्वहण) होना, शृङ्गाररस का सूच्य होना।

अङ्क

- इसे संशय-निवारणार्थ **'उत्सृष्टिकाङ्क'** भी कहते हैं क्योंकि रूपकों के खण्ड भी 'अङ्क' होते हैं। इस रूपक-भेद में कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है, किन्तु कवि उसमें यथेष्ट परिवर्तन भी करता है। भाण के समान सन्धि (मुख और निर्वहण) भारती वृत्ति-भाग तथा अङ्क केवल एक होते हैं।
- इसके नायक और अन्य पात्र साधारण होते हैं। इसमें करुणरस की प्रधानता होती है। अतः स्त्रियों का रोदन होना चाहिए।
- पात्रों में वाग्युद्ध एवं जय-पराजय की योजना होती है।
- कुछ आचार्यों ने इसमें एक से लेकर तीन अङ्कों तक का विधान किया है।

ईहामृग

- इसका कथानक प्रख्यात और कल्पित का मिश्रित रूप होता है। इसमें चार अङ्क तथा तीन सन्धियाँ होती हैं (गर्भ और विमर्श सन्धियाँ नहीं होती)।

उपरूपक

- विश्वनाथ ने 18 उपरूपकों का यह क्रम रखा है-
  1. नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्ठी 4. सट्टक 5. नाट्यरासक 6. प्रस्थान 7. उल्लाप्य 8. काव्य 9.प्रेंखण 10.रासक 11. संलापक 12.श्रीगदित 13. शिल्पक 14.विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16. प्रकरणिका 17. हल्लीश और 18. भाणिका

नाटिका

- नाटिका में चार अङ्क होते हैं।
- स्त्री-पात्रों का बाहुल्य एवं शृङ्गाररस की प्रधानता इसकी विशिष्टता है।
- इसका नायक धीरललित श्रेणी का कोई प्रसिद्ध राजा होता है।
- शृङ्गाररस के कारण कैशिकी वृत्ति एवं तदनुकूल गीत,नृत्य, वाद्य, हास्य आदि इसमें दिखाये जाते हैं।
- इसमें दो नायिकाएँ होती हैं-देवी (बड़ी रानी) तथा मुग्धा कन्या।
- उदयन को नायक बनाकर हर्ष ने **'प्रियदर्शिका'** और **'रत्नावली'** नामक नाटिकाओं की रचना द्वारा इस विधा का प्रयोग किया है।

सट्टक

- सट्टक भी नाटिका के समान होता है।
- इसमें सम्पूर्ण पाठ प्राकृत में होता है।
- प्रवेशक-विष्कम्भक का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- अद्भुत रस का प्राचुर्य होता है।
- अङ्कों को 'जवनिकान्तर' कहते हैं।
- राजशेखर की **'कर्पूरमञ्जरी'** सट्टक है।

त्रोटक

- तोटक या त्रोटक में सात,आठ, नव या पाँच अङ्क रहते हैं।
- प्रधानरस शृङ्गार होता है।
- कालिदास का **'विक्रमोर्वशीयम्'** त्रोटक है।

नाट्योत्पत्ति

- संस्कृत दृश्यकाव्य का उद्भव कब और किस प्रकार से हुआ, इस प्रश्न का निश्चित समाधान करना कठिन है। फिर भी कुछ सिद्धान्तों का परिचय तो दिया ही जा सकता है।

भरत का मत

- नाट्य विज्ञान पर सर्वप्रथम ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' ही है जिसका काल 100 ई॰ पू॰ से 300 ई॰ के बीच माना जाता है।
- भरत का मत 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है कि सभी देवताओं ने मिलकर ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि हमें ऐसे मनोरंजन का साधन प्रदान करें जो दृश्य और श्रव्य दोनों हो और जिसे सभी वर्णों के लोग ग्रहण कर सकें, ब्रह्मा ने इस प्रार्थना पर चारों वेदों से सार भाग लेकर 'नाट्यवेद' के रूप में पञ्चम वेद का निर्माण किया (**नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसम्भवम्** 1/16) उन्होंने ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद,कथनोपकथन), सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस-तत्त्व लेकर 'नाट्यवेद' की रचना की।

संवाद-सूक्तों से नाट्य की उत्पत्ति

- मैक्समूलर, सिल्वाँलेवी,फॉन श्रोएदर, हर्टल आदि यूरोपीय विद्वानों ने यह सिद्धान्त दिया कि ऋग्वेद के कतिपय संवाद-सूक्त ही नाटकों के प्राचीनतम रूप हैं।
- इन संवाद-सूक्तों में इन्द्र-मरुत् संवाद(ऋ0 1/165,170), अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद (ऋ0 1/179), विश्वामित्र-नदी संवाद (ऋ. 3/33), वसिष्ठ-सुदास संवाद (ऋ0 7/83), यम-यमी संवाद (ऋ.10/10), इन्द्र-इन्द्राणी-वृषाकपि संवाद (ऋ. 10/86), पुरूरवा-उर्वशी संवाद (ऋ. 10/95) तथा सरमा-पणि संवाद (ऋ. 10/108) प्रमुख है।

यूनानी रूपकों से उत्पत्ति

- वेबर तथा विन्डिश ने संस्कृत रूपकों का उद्भव यूनानी रूपकों से सिद्ध किया है।
- जर्मनी के ही विद्वान् पिशेल ने इस मत का प्रबल खण्डन किया है।

पुत्तलिका-नृत्य-सिद्धान्त

- प्रो. पिशेल ने यह विचार दिया है कि प्राचीन भारत में कठपुतलियों का नृत्य दिखाया जाता था। उसे ही सजीव रूप देने के लिए मानवों को मंच पर प्रस्तुत करके नाटकों का अभिनय प्रारम्भ हुआ।

मृतात्म-श्राद्ध-सिद्धान्त (वीर-पूजा)

- डॉ. रिजवे ने यह मत रखा था कि अपने मृत पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए जिस प्रकार यूनानी दुःखान्त रूपकों का उद्भव हुआ था, उसी प्रकार भारत में भी अपने दिवंगत वीर पुरुषों के प्रति आदर-भाव दिखाने के लिए नाटक अभिनीत होते थे।
- रामलीला और कृष्णलीला इसी प्रवृत्ति के पोषक दृष्टान्त हैं।

उत्सव-सिद्धान्त

- यूरोप के कुछ विद्वानों ने अपने यहाँ होने वाले मे-पोल-नृत्य को संस्कृत रूपकों का ही प्रथम रूप कहा है।

छाया-नाटक-सिद्धान्त

- जर्मन विद्वान् ल्यूडर्स तथा स्टेन कोनो का मत है कि छाया - नाटकों में जो छाया-चित्रों का प्रदर्शन होता है, वही संस्कृत रूपकों के मूल रूप रहे होंगे।

संस्कृत नाट्य की विशिष्टताएँ

- भारतीय रूपक मनोरंजन-प्रधान या आनन्दपरक होते हैं।
- भरत ने इसकी व्याख्या की कि दुःखी, श्रान्त, शोकाकुल एवं तपःखिन्न लोगों को सही समय पर विश्रान्ति प्रदान करने वाला यह 'नाट्य' है-

  दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
  विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥

  (ना.शा. 1/114)
- संस्कृत रूपकों में 'दुःखान्त' की व्यवस्था नहीं है।
- यहाँ दस प्रकार के रूपक और अठारह प्रकार के उपरूपक होते हैं।
- इनमें 'नाटक' बहुत लोकप्रिय है।
- प्रकरण,प्रहसन,भाण,नाटिका, सट्टक आदि भी बहुत संख्या में लिखे गये हैं। इस प्रकार संस्कृत दृश्य काव्य का क्षेत्र व्यापक है।
- नाट्य-भेदों में कथानक प्रसिद्ध या कल्पित भी होता है।
- संस्कृत रूपकों में कथानक का विकास कुछ सिद्धान्तों पर आश्रित होता है। कथानक को अर्थप्रकृतियों, अवस्थाओं और सन्धियों में विभक्त किया जाता है।
- पात्रों की व्यवस्था भी रूपकों के विभाजन का आधार है। मुख्य पात्र नायक और नायिका हैं। जिनके भेदोपभेद माने गये हैं। नायकों को धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरप्रशान्त और धीरललित के रूप में चार प्रकार का माना गया है।
- संस्कृत रूपकों का पारस्परिक भेद रस प्रयोग के कारण भी है। नाटकों में शृङ्गार, वीर या शान्त-रस को मुख्य (अङ्गी) रस के रूप में रखा जाता है।
- भवभूति ने करुणरस को प्रधान स्थान दिया है, अन्य सभी रसों का यथोचित निवेश होता है।
- नाट्यशास्त्रियों ने जीवन की कुछ क्रियाओं का मञ्चन की दृष्टि से वर्जन किया है। अनुचित, असभ्य और अशुभ दृश्य मञ्च पर नहीं दिखाये जाते। जैसे-युद्ध, मृत्यु, निद्रा, सम्भोग, शाप, चुम्बन, भोजन आदि।
- भाषा प्रयोग का विधान संस्कृत रूपकों की महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है। भरत ने ही विधान किया था कि उच्च और मध्य वर्ग के पात्रों की भाषा संस्कृत होगी। प्राकृत में भी क्षेत्रीय प्रभेदों के विधान की दृष्टि से सामान्यतः महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी प्राकृतों का प्रयोग किया गया है।
- रूपक भी धर्म के उपकरणों का यथेष्ट उपयोग करते हैं जैसे नान्दी या प्रस्तावना में देवस्तुति और भरतवाक्य में आशीर्वाद देना।
- पाश्चात्त्य नाट्य-विज्ञान में स्वीकृत अन्वितित्रय संस्कृत रूपकों में मान्य नहीं है।
- संस्कृत रूपकों में रसोद्भावन की दृष्टि से उचित स्थानों पर पद्य-प्रयोग किया जाता है।
- कथनोपकथन का मुख्य रूप तो गद्य ही रहता है किन्तु कुछ आवश्यक स्थलों में रोचकता, प्रकृति-वर्णन, नीति-शिक्षा, सुभाषित, विस्तृत घटनाओं का संक्षेपण आदि उद्देश्यों से पद्यों का भी प्रयोग होता है।
- विदूषक का प्रयोग संस्कृत रूपकों में हास्य-व्यंग्य के निवेश के लिए तो होता ही है,वह कथानक का भी एक अङ्ग होता है। वह कथा-प्रवाह को आगे बढ़ाता है।
- शुद्ध हास्य की दृष्टि से 'प्रहसन' और 'भाण' नामक रूपक-भेद संस्कृत में होते हैं जिसमें समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य होता है।
- संस्कृतभाषा के रूपकों के प्रारम्भ में प्रस्तावना होती है। जिसमें कवि-परिचय के साथ नाटक के अभिनय के अवसर का भी संकेत रहता है।
- नान्दीपाठ से नाटक का प्रारम्भ एवं भरतवाक्य से समाप्ति, अङ्कों की योजना, बीच-बीच में विष्कम्भक, प्रवेशक आदि देना ये सब रचना-प्रक्रिया के मुख्य अङ्ग हैं।
- बीच में मञ्च से पात्रों का निर्गम,प्रवेश,स्वागत-भाषण, जनान्तिक भाषण आदि संकेत नाटकों के अभिनय और मञ्चन को सुविधायुक्त कर देते हैं।

(iii) गद्य का सामान्य परिचय

- 'गद्य' शब्द गद्-धातु (व्यक्तायां वाचि) से यत् प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ है मानव की अभिव्यक्ति की मौलिक प्रक्रिया।
- दण्डी ने काव्यादर्श में 'गद्यकाव्य' की परिभाषा देकर इसे आख्यायिका और कथा के रूप में विभाजित किया है।

  'अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा।' (1/23)
- गद्यकाव्य इतना कठिन और विरल हो गया कि आठवीं शताब्दी ई0 में एक उक्ति चल पड़ी-**'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** अर्थात् गद्यकाव्य लिखना कवियों की कड़ी परीक्षा है।
- गद्य का प्रथम रूप हमें यजुर्वेद की संहिताओं में मिलता है।
- यजुर्वेद की परिभाषा ही दी गयी है- **'अनियताक्षरावसानं यजुः'** तथा **'गद्यात्मकं यजुः।'**
- कृष्ण-यजुर्वेद की तैत्तिरीय, काठक और मैत्रायणी संहिताएँ अधिकांशतः गद्यात्मक हैं।

- ब्राह्मण और आरण्यक (जो पूर्णतः गद्य में ही हैं), पतञ्जलि का महाभाष्य, शबरस्वामी का शाबरभाष्य (मीमांसा-दर्शन पर),शंकराचार्य का शारीरकभाष्य (ब्रह्मसूत्र पर) इत्यादि उत्कृष्ट शास्त्रीय गद्य के रूप हैं।
- आचार्य शंकर की गद्यशैली प्रसन्न-गम्भीर है,इसका परिमाण भी प्रचुर है क्योंकि दस उपनिषदों, गीता तथा ब्रह्मसूत्र पर उन्होंने भाष्य लिखे हैं।
- साहित्यिक गद्य के प्रयोग का अनुमान कात्यायन और पतञ्जलि के द्वारा दी गयी सूचनाओं से होता है।
- पतञ्जलि ने तो तीन आख्यायिकाओं के नाम भी दिये हैं- **वासवदत्ता, सुमनोत्तरा** तथा **भैमरथी**।
- साहित्यिक गद्य का स्पष्ट उदाहरण अभिलेखों में प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन का गिरिनार अभिलेख (150ई.) तथा हरिषेणकृत समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (प्रयाग स्तम्भलेख 360 ई.) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- समुद्रगुप्त की विजय-यात्राओं और व्यक्तिगत गुणों का वर्णन प्रयाग-प्रशस्ति में हुआ है। इस प्रशस्ति के लेखक हरिषेण हैं।
- साहित्यिक गद्य का विकासशील रूप **दण्डी, सुबन्धु** या **बाण** की रचनाओं में प्राप्त होता है।

गद्यकाव्य के भेद

- संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं-कथा और आख्यायिका।
- आख्यायिका ऐतिहासिक विषयों पर एवं कथा पूर्णतः काल्पनिक विषयों पर आश्रित होती है।
- बाणभट्ट की गद्य-रचनाओं में 'हर्षचरित' आख्यायिका तथा 'कादम्बरी' कथा के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- कथा में कथावस्तु कविकल्पित होती है।
- आख्यायिका में ऐतिहासिक होती है।
- कथा के आरम्भ में पद्यों के द्वारा सज्जनों की प्रशंसा, दुष्टों की निन्दा तथा कवि के वंश का वर्णन होता है।
- कथा का विभाजन नहीं होता, आख्यायिका उच्छ्वासों या निःश्वासों में विभक्त होती है।
- उच्छ्वासों के आरम्भ में भावी घटना का परोक्ष निर्देश करने वाले पद्य भी होते हैं।
- कथा में मुख्य कथानक को लाने के लिए दूसरी कथा से आरम्भ किया जाता है।
- आख्यायिका में कवि अपना वृत्तान्त देकर मुख्य कथा को आरम्भ करता है। इन दोनों में समानता के तथ्य भी बहुत हैं। जैसे- 1. दोनों की रचना संस्कृत गद्य में होती है। 2. गद्य की शैली दोनों में समान रहती है। 3. रसों और भावों का समान रूप से प्रयोग होता है। 4. नगर,वन,सरोवर,राजा,राजसभा,मृगया प्रेम आदि का समान रूप से वर्णन दोनों में होता है।

गद्य के प्रकार

समास के प्रयोग तथा वृत्तभाग के निवेश की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गये हैं-

1. मुक्तक
2. वृत्तगन्धि
3. उत्कलिकाप्राय
4. चूर्णक

- समास से रहित गद्य-रचना को मुक्तक कहते हैं।
- जहाँ गद्य में छन्द के अंश आ जाएँ उसे वृत्तगन्धि कहते हैं।
- लम्बे समासों से युक्त गद्य उत्कलिकाप्राय कहलाता है तथा अल्प समासों से युक्त गद्य को चूर्णक कहा जाता है।

(iv) गीतिकाव्य का सामान्य परिचय

- गीतिकाव्य का उद्गम ऋग्वेद की ऋचाओं से माना जाता है।
- अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि देवों के प्रति ऋषियों द्वारा स्तुतियाँ वेदों में ही की गयी हैं।
- इन्द्र के प्रति एक ऋचा में कहा गया है-
  तुञ्जे- तुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।
  न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्॥ (ऋ.-1.7.7)
  (अर्थात् विविध वस्तुओं का दान करने वाले अन्य देवों के लिए जो स्तोत्र है, मैं इन्द्र की स्तुति के लिए उपयुक्त स्तोत्र नहीं मानता)
- प्रजापति की स्तुति में हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ. -10.12.1) उत्कृष्ट गीतिकाव्य है जिसके प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आया है- **'कस्मै देवाय हविषा विधेम।'**
- इन्द्र के कई स्तोत्रों में उनके वीरकर्मों का वर्णन है जिससे ओजस्विता का संचार होता है। जैसे-
  यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्,
  यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
  यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो,
  यो द्यामस्तम्नात्स जनास इन्द्रः। (ऋ0- 2.12.2)
- ऋग्वेद में ही प्रभात काल की देवी उषा का वर्णन उसके सौन्दर्यपक्ष को विशेष रूप से अङ्कित करके किया गया है। **'जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः।'** (ऋ0-1.124.7)
- इसी प्रकार अथर्ववेद में भूमि की स्तुति में गीतिकाव्य का विन्यास है।

- पृथ्वी देवी के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति 63 मन्त्रों में अथर्वा ऋषि ने की है।
- सामवेद का सङ्गीत पक्ष गीतिकाव्य के अनन्यगुण को विशेष रूप से धारण करता है।
- इसलिए वैदिक युग ही संस्कृत गीतिकाव्य के उद्भव के लिए ठोस धरातल देता है।
- रामायण का उदय गीतिकाव्य के रूप में ही हुआ है। इसमें विरह-वर्णन, देवस्तुति आदि गीतितत्त्व को ही स्पष्ट करता है।
- महाभारत में प्राप्त होने वाली स्तुतियाँ भी गीतिकाव्य के रूप में स्वीकृत हैं।
- गीता के 11वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण का विराट् रूप वर्णन प्रकृष्टस्तोत्र काव्य है।
- भागवतपुराण, विष्णु तथा नारदपुराणादि में उपास्य देवों की स्तुतियाँ मिलती हैं।
- अध्यात्म रामायण में राम की ब्रह्म के रूप में स्तुति वर्णित है।
- लौकिक साहित्य में कालिदास से गीतिकाव्य का प्रारम्भ होता है। अतः **कालिदास संस्कृत गीतिकाव्य के प्रवर्तक हैं।**

- **गीतिकाव्य के दो भेद हैं-**
  1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य
  2. आध्यात्मिक या नैतिक गीतिकाव्य

शृङ्गारिक गीतिकाव्य

- शृङ्गार मूलक संस्कृत गीतिकाव्यों का वर्ण्य विषय जीवन का भौतिक सुख है जिसमें स्त्रियों के सौन्दर्य, हाव-भाव, विलास आदि का वर्णन करते हुए उनके प्रति पुरुष के आकर्षण का चित्रण हुआ है।
- कुछ प्रमुख गीतिकाव्यों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. ऋतुसंहार

- ऋतुसंहार संस्कृत वाङ्मय का प्रथम गीतिकाव्य है।
- यह कालिदास की प्रामाणिक रचना के रूप में छः सर्गों में निबद्ध है, जिसमें ग्रीष्म से वसन्त तक के छहों ऋतुओं का शृङ्गारिक वर्णन है।
- इसमें 144 पद्य हैं।

2. मेघदूत

मेघदूत कालिदास की प्रौढ़ एवं परिष्कृत गीति रचना है।

- यह **मन्दाक्रान्ता छन्द** में रचित एवं **दो खण्डों** में विभाजित है।
- टीकाकार मल्लिनाथ ने मेघदूत के **121** पद्यों की व्याख्या की है, किन्तु 6 श्लोक को प्रक्षिप्त मानकर **115** श्लोकों को प्रामाणिक माना है।
- इसमें यक्ष- यक्षिणी की प्रणय कथा का वर्णन है।

3. गाथा-सप्तशती

- यह **'हालकवि'** द्वारा रचित, **सात सौ मुक्तक पद्यों** की प्राकृत रचना है।
- इसका प्राकृत नाम- **'गाहासत्तसई'** है।

4. भर्तृहरि के शतकत्रय

- **भर्तृहरि** ने तीन शतकों की रचना की है जो गीतिकाव्य के अन्तर्गत वर्णित हैं-

1. नीतिशतक- (111 पद्य)
2. शृङ्गारशतक- (103 पद्य)
3. वैराग्यशतक- (111 पद्य)

5. अमरुकशतक

- इसके रचयिता **'अमरुक'** हैं। यह मुक्तक काव्य है।
- इसके पद्यों की संख्या 90 से 115 तक मिलती है।

6. भल्लटशतक

- यह अन्योक्ति पूर्ण नीतिमूलक पद्यों का संग्रह है।
- यह कश्मीरी कवि **'भल्लट'** की रचना है।

7. गीतगोविन्द

- **'गीतगोविन्द'** संस्कृतभाषा का श्रेष्ठ गीतिकाव्य है।
- इसके रचनाकार **'जयदेव'** हैं।
- इसमें 12 सर्ग तथा 24 प्रबन्ध हैं।

8. भामिनीविलास

- यह पण्डितराज जगन्नाथ के स्फुट पद्यों का संग्रह है।
- यह चार भागों (विलासों) में विभक्त है।

स्तोत्रकाव्य या धार्मिक गीतिकाव्य

- स्तोत्रकाव्य में भक्ति तथा वैराग्य दोनों विषयों का ग्रहण होता है।
- कुछ प्रमुख स्तोत्रकाव्य निम्नलिखित हैं-

1. पुष्पदन्त का शिवमहिम्न-स्तोत्र

- मुख्यतः शिखरिणी छन्द में रचित शिव की महिमा का वर्णन है।

2. मयूरभट्ट का सूर्यशतक

- स्रग्धरा छन्द का प्रथम स्तोत्रकाव्य है।
- 100 पद्यों में सूर्य-महिमा वर्णित है।

3. बाणभट्ट का चण्डीशतक

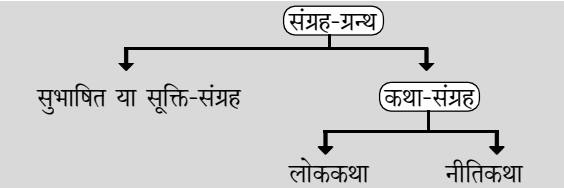
- इसमें भगवती दुर्गा की स्तुति है।
- इसमें भी स्रग्धरा छन्द के 100 पद्य हैं।

अन्य स्तोत्र ग्रन्थ-

- आनन्दलहरी, मुकुन्दमाला, वरदराजस्तव, नारायणीय, मूकपञ्चशती, सौन्दर्यलहरी, शिवताण्डवस्तोत्र आदि।

(v) कथासाहित्य का सामान्य परिचय

संस्कृत साहित्य के इतिहास में हमें दो प्रकार के संग्रह ग्रन्थों का वर्णन प्राप्त होता है-



कथा संग्रह

उद्भव और विकास

- कथा का बीज वैदिक वाङ्मय में विस्तृत रूप से मिलता है।
- पुरूरवा-उर्वशी, सरमा-पणि आदि संवाद सूक्तों में तत्कालिक कथाओं को संवादों में प्रस्तुत किया गया है।
- 'बृहद्देवता' में अनेक देवताओं की कथाएँ हैं।
- उपनिषदों में भी जीव- जन्तुओं की कथाएँ कुछ विशिष्ट उद्देश्य से दी गयी हैं। जैसे- दो हंसों के वार्तालाप ।
- महाभारत तथा पुराण-साहित्य तो कथाओं का अक्षय- कोश है।
- बौद्ध जातक कथाएं पालि साहित्य में प्रसिद्ध हैं।
- जैनों ने भी अपने कथा साहित्य का पर्याप्त विकास किया था।
- हरिषेण का '**बृहत्कथाकोश**' जैन सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है।
- इसप्रकार कथा का सम्पूर्ण विकास ईसापूर्व में ही हो चुका था।

(क) लोक कथाएँ

- संस्कृत का दुर्भाग्य है कि लोक कथाएँ मुख्यतः पैशाची भाषा में लिखित '**गुणाढ्य**' की **बृहत्कथा** (बड्डकहा) पर आश्रित हैं।

बृहत्कथा-

- लोक कथाओं का प्राचीनतम संग्रह 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में किया गया था।
- बृहत्कथा की भूमिका से पता चलता है कि पहले इसमें सात लाख श्लोक थे किन्तु बाद में केवल एक लाख ही बचे।
- वर्तमान समय में बृहत्कथा उपलब्ध नहीं है।
- महाभारत की भाँति बृहत्कथा भी उपजीव्य ग्रन्थ है।
- बृहत्कथा के उपजीवी ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

1. बृहत्कथाश्लोकसंग्रह

- नेपाल के **बुधस्वामी** इसके लेखक हैं।
- बृहत्कथा की नेपाली वाचना का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ यही है।
- इसके 28 सर्गों में 4539 श्लोक हैं किन्तु यह ग्रन्थ अपूर्ण है।

2. बृहत्कथामञ्जरी

- यह **क्षेमेन्द्र** कृत ग्रन्थ है, जो बृहत्कथा का ही संक्षिप्त रूप है, इसमें कथाओं का संग्रह है।
- इसमें 19 अध्याय और 7500 श्लोक हैं।

3. कथासरित्सागर

- इसकी रचना **सोमदेव** ने किया है। यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विश्वविख्यात है।
- 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार यह वस्तुतः कथाओं का समुद्र है।
- यह 18 लम्बकों तथा 124 तरङ्गों में विभाजित है।
- इसमें 21388 (लगभग बाइस हजार) श्लोक हैं।

4. वेतालपञ्चविंशति

- इसमें भी कथाओं का संकलन है। वेताल और विक्रम से सम्बद्ध 25 शिक्षाप्रद एवं रोचक कथाओं का संग्रह है।
- पञ्चतन्त्र के समान यह भी विश्वसाहित्य बन गया है।
- हिन्दी में इसे **वैतालपचीसी** कहते हैं।

5. सिंहासनद्वात्रिंशिका

- इसे '**द्वात्रिंशत्पुत्तलिका**' या '**विक्रमचरित**' भी कहा गया है।
- इसमें बत्तीस कथाओं के माध्यम से विक्रमादित्य के गुणों का वर्णन किया गया है।
- दक्षिण भारतीय इसे '**विक्रमार्कचरित**' के नाम से जानते हैं।

6. शुकसप्तति

- यह सत्तर कथाओं का रोचक संग्रह- ग्रन्थ है।
- यह भी विश्व- साहित्य में गणनीय है।

अन्य कथा-संग्रह ग्रन्थ-

शिवदास- **कथार्णव** (35 कथाएं)
विद्यापति- **पुरुष-परीक्षा** (44 कथाएं)
श्रीवीर- **कथा-कौतुक**
बल्लालसेन- **भोजप्रबन्ध**

(ख) नीतिकथाएँ

- नीतिकथाएँ हमें नैतिक उपदेश देती हैं।
- इन कथाओं का उपयोग मनुष्य के व्यक्तित्त्व को सुधारने के लिए किया जाता है।
- भारतीय नीतिकथाएँ विश्वभर में अपना स्थान बना चुकी हैं।

1. पञ्चतन्त्र

- यह **विष्णुशर्मा** द्वारा रचित नीतिकथाओं का संग्रह है।
- मूल रूप से यह विलुप्त है।
- इसे अर्थशास्त्र का सार भी कहा जाता है।
- वर्तमान पञ्चतन्त्र में कुल 75 कथाओं का संकलन है, पद्यों की संख्या प्रायः 1100 है।
- पञ्चतन्त्र का मुख्य भाग गद्यात्मक है।

➢ यह भी विश्व साहित्य की श्रेणी में आता है। इसके 250 संस्करण विश्व की 50 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

2. हितोपदेश

➢ पञ्चतन्त्र पर आश्रित नीतिकथाओं में 'हितोपदेश' सर्वाधिक प्रचलित एवं महत्त्वपूर्ण है।
➢ इसकी रचना **नारायण पण्डित** ने की।
➢ हितोपदेश चार भागों में विभक्त है, इसमें 39 कथाएँ हैं।
➢ प्रत्येक भाग की एक मुख्य कथा को जोड़ने पर कुल 43 कथाएं हैं।
➢ इसके पद्यों की संख्या 726 है।

अन्यनीति कथाएँ-

➢ बौद्ध तथा जैन कवियों ने अनेक नीतिकथाएँ संस्कृत में लिखी हैं जिनमें-
आर्यशूर - **जातकमाला** (34 जातक-कथाएँ)
सिद्धर्षि (जैन)- **उपमितिभवप्रपञ्चकथा**
हेमविजयगणि- **कथारत्नाकर** (256 कथाएँ)

सुभाषित-संग्रह या सूक्ति-संग्रह

➢ चमत्कारी संस्कृत के सूक्तियों के लेखन एवं संग्रह का प्रयास प्राचीनकाल से होता रहा है।
➢ इन संग्रहों में मुक्तक-पद्यों तथा प्रबन्ध-काव्यों के रमणीय पद्यों का भी संकलन बहुधा मूलकवि के नाम के साथ हुआ है।
➢ कुछ सूक्ति संग्रहों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. कवीन्द्रवचनसमुच्चय

➢ यह कवि '**विद्याकर**' की कृति है। इसे '**सुभाषितरत्नकोष**' भी कहा जाता है।
➢ यह संस्कृत का प्राचीनतम सूक्ति-संग्रह है।
➢ इस संग्रह का विभाजन 50 व्रज्याओं में है।

2. सदुक्तिकर्णामृत

➢ यह '**श्रीधरदास**' की रचना है। यह संग्रह पाँच प्रवाहों में विभक्त है।
➢ पुनः '**प्रवाह**' वीचियों में विभक्त है। प्रत्येक वीचि में पाँच-पाँच पद्य हैं।
➢ पूरे संग्रह में 476 वीचियाँ एवं 2380 पद्य हैं।

3. सूक्तिमुक्तावली

➢ यह '**जल्हण**' द्वारा सङ्कलित है। इसे '**सुभाषितमुक्तावली**' भी कहते हैं।
➢ इसमें 133 खण्डों में विभाजित 2790 पद्य सङ्कलित हैं।

4. शार्ङ्गधर-पद्धति

➢ यह '**शार्ङ्गधर**' कवि की कृति है। यह भाग स्वतन्त्र रूप में प्रयाग से प्रकाशित है।
➢ इसमें 163 परिच्छेद तथा 6300 पद्य थे किन्तु प्रकाशित संस्करण में परिच्छेद उतने ही हैं। केवल पद्य 4689 हो गये।

5. सुभाषितावली

➢ इसके सङ्कलनकर्ता '**वल्लभदेव**' हैं।
➢ इस सूक्ति संग्रह में 101 पद्धतियों में 3527 पद्य सङ्कलित हैं।
6. पद्यावली- रूपगोस्वामी (386 पद्य)
7. सूक्तिमुक्तावली- सोमप्रभाचार्य
8. सुभाषित-नीवी- वेदान्तदेशिक
9. सुभाषितरत्न-सन्दोह- अमितगति
10. सुभाषित- सुधानिधि तथा **पुरुषार्थसुधानिधि-** सायणाचार्य
➢ सूक्ति ग्रन्थों में '**सुभाषितरत्नभाण्डागार**' सबसे बड़ा है। इसमें 10000 (दस हजार) से अधिक पद्य हैं।

(vi) काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय

➢ काव्यशास्त्र का ही एक नाम '**साहित्यशास्त्र**' है आधुनिक युग में अन्य सब नामों की अपेक्षा यह नाम अधिक प्रचलित है।
➢ राजशेखर ने तो इसे 'साहित्यविद्या' नाम से अभिहित किया है।
➢ साहित्यशास्त्र का प्रमुख तत्त्व 'आत्मतत्त्व' है। प्राचीन आचार्य इसी आत्मतत्त्व के चिन्तन में सक्रिय रहे हैं और अपने-अपने चिन्तन के आधार पर अलग-अलग रूपों में अवलोकन करते रहे है। इसप्रकार विभिन्न आचार्यों द्वारा काव्य के विभिन्न तत्त्वों का काव्यात्म रूप में दर्शन के कारण छः सम्प्रदायों अथवा सिद्धान्तों का जन्म हुआ। इसप्रकार साहित्यशास्त्र के मुख्यतः छः सिद्धान्त/ सम्प्रदाय बन गये-

1. रस सम्प्रदाय
2. अलङ्कार सम्प्रदाय
3. रीति सम्प्रदाय
4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय
5. ध्वनि सम्प्रदाय
6. औचित्य सम्प्रदाय

1. रस-सम्प्रदाय - आचार्य भरत

➢ इस सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य '**भरत**' माने जाते हैं।
➢ **राजशेखर**, **नन्दिकेश्वर** को रस का मूल व्याख्याता मानते हैं। किन्तु उनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।
➢ आचार्य भरत की दृष्टि में साहित्य रचना के लिए रस इतना महत्त्वपूर्ण है कि उसके बिना कोई अर्थ ही नहीं प्रवृत्त होता।
➢ विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव ही रस के निष्पादक होते हैं-

नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।
विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।।

यह रससूत्र ही रससिद्धान्त का प्राणभूत है।

- भरत के रस-सिद्धान्त के इस सूत्र में 'संयोग' और 'निष्पत्ति' शब्दों की व्याख्या में बड़ा मतभेद है। जिसके परिणामस्वरूप अनेक सिद्धान्तों का जन्म हुआ।
- भट्टलोल्लट, शङ्कुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त ही भरत के रससूत्र के प्रमुख व्याख्याकार हैं।
- भट्टलोल्लट का मत **'उत्पत्तिवाद'** है।
- श्रीशङ्कुक का मत **'अनुमितिवाद'** है।
- भट्टनायक का मत **'भुक्तिवाद'** है।
- अभिनवगुप्त का मत **'अभिव्यक्तिवाद'** के नाम से प्रसिद्ध है।
- आचार्य मम्मट भी अभिनवगुप्त के 'अभिव्यक्तिवाद' का समर्थन करते हैं।
- काव्याश्रित रस के सम्बन्ध में प्रथम बार व्याख्या 'अग्निपुराण' में हुई।
- आचार्य भरत आठ रसों को ही स्वीकार करते हैं।
  'अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।'
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रस तथा सातवें अध्याय में स्थायीभावों का विस्तार से वर्णन किया है, वही रस सिद्धान्त का आधार है।

  प्रवर्तक- आचार्य भरत

  समर्थक- शारदातनय, शिङ्गभूपाल, भानुदत्त, रूपगोस्वामी, भोजराज, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र आदि।

2. अलङ्कार-सम्प्रदाय - आचार्य भामह

- रस सम्प्रदाय के बाद दूसरा स्थान अलङ्कार-सम्प्रदाय का आता है।
- आचार्य **'भामह'** इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं।
- अलङ्कार-सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं, किन्तु उसे प्रधानता नहीं देते।
- उनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्त्व अलङ्कार ही है।
  'रसवद्दर्शितस्पष्टशृङ्गारादिरसं यथा।'

  भामह (काव्यालङ्कार 3/6)
- अलङ्कार-सम्प्रदायवादी काव्य में अलङ्कारों को ही प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं।
- रसवत्, प्रेय, ऊर्जस्विन् और समाहित चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं।
- भामह के अतिरिक्त दण्डी भी इन रसवदलङ्कारों के भीतर ही रस का अन्तर्भाव करते हैं।

  'मधुरे रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसस्थितिः।' दण्डी (का.1/51)
- इस सिद्धान्त की भी व्याख्या अग्निपुराण में मिलती है।
- जयदेव के अनुसार अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना वैसी ही है जैसे 'उष्णताविहीन अग्नि की कल्पना।'
- सर्वप्रथम भरत ने चार अलङ्कारों (उपमा, रूपक,दीपक, यमक) का उल्लेख किया है।
- अग्निपुराणकार ने 23 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- भामह ने 38 अलङ्कारों का विवेचन किया है।
- उद्भट 41 अलङ्कार मानते हैं।
- रुद्रट ने 68 अलङ्कारों का निरूपण किया है।
- भोज ने 72 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- मम्मट 67 अलङ्कारों का उल्लेख करते हैं। 6 शब्दालङ्कार और 61 अर्थालङ्कार।
- रुय्यक और विश्वनाथ ने 78 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- जयदेव अपने चन्द्रालोक में 100 अलङ्कार मानते हैं।
- अप्पयदीक्षित ने 'कुवलयानन्द' में 120 अलङ्कारों का विवेचन किया है।

  समर्थक- इस सम्प्रदाय के समर्थकों में दण्डी, उद्भट, रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित, पण्डितराज जगन्नाथ, तथा विश्वेश्वर पाण्डेय आदि प्रमुख हैं।

3. रीति-सम्प्रदाय - आचार्य वामन

- कालक्रम में अलङ्कार-सम्प्रदाय के बाद रीति-सम्प्रदाय का स्थान आता है।
- रीति-सम्प्रदाय के संस्थापक **आचार्य वामन हैं।**
- वामन ने काव्य में अलङ्कार की प्रधानता के स्थान पर रीति की प्रधानता का प्रतिपादन किया है- **'रीतिरात्मा काव्यस्य'**
- यह आचार्य वामन का सिद्धान्त है, इसीलिए उन्हें रीति-सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।
- इन्होंने 'रीति' को इस प्रकार बताया है- **'विशिष्टपदरचना रीतिः।'** अर्थात् विशिष्ट पद रचना का नाम 'रीति' है।
- वाक्य में आये 'विशिष्ट' शब्द की व्याख्या- **'विशेषो गुणात्मा'** है।
- इस प्रकार काव्य में माधुर्यादि गुणों का समावेश ही उसकी विशेषता है और यह विशेषता ही 'रीति' है।
- इस सिद्धान्त में 'गुण' और 'रीति' का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसलिए 'रीति-सम्प्रदाय' को **'गुण-सम्प्रदाय'** के नाम से भी जाना जाता है।
- वामन ने निम्न दो सूत्रों के माध्यम से गुण और अलङ्कार का भेद स्पष्ट किया है, तथा अलङ्कार की अपेक्षा गुण को अधिक महत्त्व दिया है।

  सूत्र-1- **'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।'**
  (काव्यालङ्कार सूत्र - 3.2.1)

सूत्र-2- **'तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।'** (काव्यालङ्कार सूत्र-3.1.2)

- गुण काव्यशोभा के उत्पादक होते हैं तथा अलङ्कार केवल उस शोभा के अभिवर्धक होते हैं।
- अतः काव्य में अलङ्कारों की अपेक्षा गुणों का स्थान अधिक महत्त्वपूर्ण है।
- राजशेखर ने रीति का सर्वप्रथम अधिकारी **'सुवर्णनाभ'** को बताया है, किन्तु 'सुवर्णनाभ' कौन थे? उनकी रचना कौन सी है? इसके बारे में कुछ पता नहीं है।
- 'रीति' का व्यापक अर्थ लेने पर वेदों में भी रीति की झलक दिखलाई देती है।
- रीति का शास्त्रीय विवेचन भरत के 'नाट्यशास्त्र' से प्रारम्भ होता है।
- रीति के चार भेद स्वीकार किये गये हैं- वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली और लाटी।
- रीति एक रचना शैली है जिसके अन्तर्गत रस, गुण, अलङ्कार आदि समाविष्ट हैं।

4. वक्रोक्ति-सम्प्रदाय - आचार्य कुन्तक

- कालक्रमानुसार रीति के बाद वक्रोक्ति-सम्प्रदाय आता है।
- वक्रोक्ति-सम्प्रदाय के संस्थापक वक्रोक्तिजीवितकार आचार्य **'कुन्तक'** माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने काव्य में रीति की प्रधानता को समाप्त कर 'वक्रोक्ति' की प्रधानता को स्थापित किया।
- यद्यपि काव्य में 'वक्रोक्ति' की महत्ता भामह ने भी स्वीकार किया है-

  सैषा सर्वैव वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते।
  यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलङ्कारोऽनया विना॥

  (भामह- काव्यालङ्कार- 2/85)
- दण्डी ने काव्य में 'वक्रोक्ति' का महत्त्व इस प्रकार वर्णित किया है-

  'भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम्'

  (काव्यादर्श- 2/363)
- आचार्य वामन ने भी काव्य में 'वक्रोक्ति' का स्थान माना है- **'सादृश्याल्लक्षणा वक्रोक्तिः'** (काव्यालङ्कार सूत्र- 4.3.8)
- तथापि इन आचार्यों के मत से 'वक्रोक्ति' सामान्य अलङ्कार आदि रूप ही है।
- आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति को जो गौरव प्रदान किया है, वह गौरव इन आचार्यों ने नहीं दिया है।
- इसलिए 'कुन्तक' ही इस सम्प्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने इस सिद्धान्त के ऊपर भी 'वक्रोक्तिजीवित' नामक विशाल एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की है।
- आचार्य कुन्तक ने 'रीति-सम्प्रदाय' को भी परिमार्जित करके अपने यहाँ स्थान दिया है।
- वामन की वैदर्भी आदि रीतियाँ देश भेद के आधार पर मानी जाती थीं, किन्तु कुन्तक ने उनका आधार देश को न मानकर रचनाशैली को माना है और उनके 'रीति' के स्थान पर मार्ग शब्द का प्रयोग किया है।
- आचार्य कुन्तक वामन की 'वैदर्भी' रीति को 'सुकुमारमार्ग', गौडी रीति को 'विचित्रमार्ग' तथा पाञ्चाली रीति को 'मध्यम मार्ग' कहते हैं।
- कुन्तक के अनुसार वक्रोक्ति छः प्रकार के हैं-
  1. वर्ण-विन्यास वक्रता
  2. पदपूर्वार्द्ध वक्रता
  3. पदोत्तरार्द्ध वक्रता
  4. वाक्य वक्रता
  5. प्रकरण वक्रता
  6. प्रबन्ध वक्रता
- अतः उक्ति वैचित्र्य के आधार पर कुन्तक का यह 'वक्रोक्ति सिद्धान्त', अलङ्कार सिद्धान्त की ही एक शाखा है।

5. ध्वनि-सम्प्रदाय-आचार्य आनन्दवर्धन

- वक्रोक्ति-सम्प्रदाय के बाद ध्वनि-सम्प्रदाय का उदय हुआ।
- इस सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य **'आनन्दवर्धन'** माने जाते हैं।
- आनन्दवर्धन के मत में 'काव्य की आत्मा ध्वनि है-

  'काव्यस्यात्मा ध्वनिरति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः।'
- सभी सम्प्रदायों में ध्वनि-सम्प्रदाय सबसे प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त रहा है।
- विद्वानों के अत्यन्त विरोध पर भी ध्वनि-सिद्धान्त वैसे ही प्रफुल्लित रहा है।
- ध्वनि-सिद्धान्त के विरोधी समूह में वैयाकरण, साहित्यक, वेदान्ती, मीमांसक आदि प्रमुख हैं।
- आचार्य मम्मट ने विरोधियों का खण्डन करके ध्वनि-सिद्धान्त की पुनः स्थापना की, इसीलिए मम्मट को **'ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचार्य'** कहा जाता है।
- आनन्दवर्धन ने आत्मा का अर्थ 'तत्त्व' किया है और तत्त्व का अर्थ है-'जिसके स्वरूप का कभी बाध न हो'।
- काव्य का वह आत्म-स्थानीय अर्थ 'प्रतीयमान' कहलाता है। यही प्रतीयमान अर्थ काव्य की आत्मा है।
- इनके अनुसार प्रतीयमान अर्थ वह है जो अङ्गना के प्रसिद्ध अवयवों से भिन्न लावण्य के समान महाकवियों की वाणी में वाच्यार्थ से भिन्न भासित होता है। सहृदयी जनों को यही अर्थ आनन्दित करता है-

  प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।

यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु॥

(ध्वन्यालोक-1/4)

- यही प्रतीयमान अर्थ ध्वन्यर्थ या व्यङ्ग्यार्थ है जो तीन प्रकार से होता है-

  1. रसादि रूप में 2. अलङ्कार रूप में 3. वस्तु रूप में

  'एवं वस्त्वलङ्काररसभेदेन त्रिधा ध्वनिः'
- इसमें वस्तुध्वनि और अलङ्कारध्वनि की अपेक्षा रसध्वनि श्रेष्ठ है और यही काव्य की आत्मा है।
- आनन्दवर्धन के अनुयायी अभिनवगुप्त भी रसध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकारते हैं। **'सर्वत्र रसध्वनेरेवात्मभावः।'**

  समर्थक- इस सिद्धान्त के समर्थक रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त और पण्डितराज जगन्नाथ हैं।

6. औचित्य-सम्प्रदाय - आचार्य क्षेमेन्द्र

- औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य **क्षेमेन्द्र** माने जाते हैं। उन्होंने औचित्य को काव्य का **जीवितत्त्व** कहा है-

  'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'
- इसी आधार पर क्षेमेन्द्र को औचित्य सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है किन्तु उनके पहले भी इस पर विचार हो चुका था।
- सर्वप्रथम भरत के ' नाट्यशास्त्र' में औचित्य की चर्चा की गयी है।
- भरत के पश्चात् भामह ने औचित्य को काव्य का सबसे बड़ा गुण बताया है।
- दण्डी ने भी गुण, दोष के विधान में औचित्य और अनौचित्य को कारण स्वीकार किया है।
- रुद्रट ने अनौचित्य को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। उनके अनुसार रस का उन्मेष, परमरहस्य औचित्य है और अनौचित्य ही रसभङ्ग का प्रधान कारण है।

  'अनौचित्यादृते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्।'
- महिमभट्ट ने काव्य में औचित्य को अनिवार्य तत्त्व बताया है।
- आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं, ''जो वस्तु जिसके अनुरूप होती है उसे 'उचित' कहते हैं और उचित का जो भाव है, वह औचित्य कहलाता है''-

  उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्।
  उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते॥

  (औचित्यविचारचर्चा, 7)
- यह औचित्य ही रस का जीवितभूत है, उसका प्राण है और काव्य में चमत्कारी तत्त्व हैं।

  'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'

  (औचित्यविचारचर्चा)
- क्षेमेन्द्र के अनुसार - अलङ्कारों में अलङ्कारत्व तभी होता है जबकि उनका विन्यास उचित स्थान पर होता है और गुणों में गुणत्व तभी होता है जबकि औचित्य से च्युत नहीं होते हैं-

  उचितस्थानविन्यासादलङ्कृतिरलङ्कृतिः।
  औचित्यादच्युता नित्यं भवन्त्येव गुणा गुणाः॥

  (औचित्यविचारचर्चा)
- क्षेमेन्द्र ने- 'औचित्यविचारचर्चा' में औचित्य के सत्ताइस (27) भेदों का निरूपण किया है, किन्तु काव्य के प्रत्येक अङ्गों में औचित्य के व्याप्त होने के कारण उसके अनेक भेद हो सकते हैं।

संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम्

UP. TGT, PGT (संस्कृत) के छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तक में हर प्रश्न का महामंथन

आपके शिक्षक बनने का सपना हम करेंगे साकार

TGT प्रश्न मीमांसा

PGT प्रश्न मीमांसा

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करने के लिए हमें कॉल करें 8004545095, 8004545096

ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अनुमानित समय
1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500 ई.-550ई./300-600ई./6वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी/600ई.
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई. लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध/850ई.
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी/880ई. से 920ई. तक
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. (i) अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी/980ई. से 1020ई. तक
(ii) ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
(ii) 'काव्यकौतुकविवरण ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
13. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
14. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य/1020-1050ई.
15. (i) सरस्वतीकण्ठाभरण	भोजराज	एकादशशताब्दी 1050 ई. लगभग/1018-1056ई.
(ii) शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	
16. (i) औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादशशताब्दी का उत्तरार्द्ध
(ii) कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
17. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी
18. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050 ई. (एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध)
19. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादशशताब्दी/1100-1150ई. तक
20. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
21. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/1088-1143ई.
22. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/1100-1175ई.
23. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी/1175-1250ई. तक
24. चन्द्रालोक	पीयूषवर्ष जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
25. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी/1300-1386ई. तक
26. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य/13वीं उत्तरार्द्ध
27. (i) कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडशशताब्दी/1553-1625ई. तक
(ii) चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
(iii) वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
28. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग/1590-1670ई.

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख महाकाव्य

महाकाव्य	सर्ग	लेखक
1. कुमारसम्भवम्	17 (अन्यमत 8)	कालिदास
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
6. शिशुपालवधम्	20	माघ
7. नैषधीयचरितम्	22	श्रीहर्ष
8. भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22	भट्टि
9. जानकीहरणम्	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. हरविजयम्	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. धर्मशर्माभ्युदय	21 सर्ग	हरिश्चन्द्र
12. राघवपाण्डवीयम्	13 सर्ग	कविराज (माधवभट्ट)

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. जाम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)	पाणिनि
2. स्वर्गारोहणम्	कात्यायन (वररुचि)
3. महानन्दकाव्य	पतञ्जलि
4. प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण
5. सेतुबन्ध	प्रवरसेन
6. हयग्रीववध	भर्तृमेण्ठ
7. गउडवहो	वाक्पति
8. रामचरित	अभिनन्द
9. नवसाहसाङ्कचरित	पद्मगुप्त
10. पारिजातहरणम्	कविकर्णपूर
11. नरनारायणानन्द	वस्तुपाल
12. रघुनाथचरित	वामनभट्टबाण
13. सेतुकाव्य	मातृगुप्त
14. कादम्बरीसार	अभिनन्द (काश्मीरी कवि)
15. रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. भारतमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. विक्रमाङ्कदेवचरित	बिल्हण (काश्मीरी)
18. श्रीकण्ठचरितम्	मंखक (काश्मीरी)
19. राजतरङ्गिणी	कल्हण (काश्मीरी)
20. जातकमाला	आर्यशूर (बौद्ध कवि)
21. गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्	डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
22. सीताचरितम्	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
23. जानकीजीवनम्	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	4	भास
2. स्वप्नवासवदत्तम्	6	भास
3. ऊरुभङ्गम्	एकाङ्की	भास
4. दूतवाक्यम्	एकाङ्की	भास
5. पञ्चरात्रम्	3	भास
6. बालचरितम्	5	भास
7. दूतघटोत्कचम्	एकाङ्की	भास
8. कर्णभारम्	एकाङ्की	भास
9. मध्यमव्यायोगः	एकाङ्की	भास
10. प्रतिमानाटकम्	7	भास
11. अभिषेकनाटकम्	6	भास
12. अविमारकम्	6	भास
13. चारुदत्तम्	4	भास
14. मृच्छकटिकम् (प्रकरण)	10	शूद्रक (शिमुक)
15. मालविकाग्निमित्रम्	5	कालिदास
16. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	5	कालिदास
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7	कालिदास
18. मुद्राराक्षसम्	7	विशाखदत्त
19. प्रियदर्शिका (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. रत्नावली (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. नागानन्द	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. वेणीसंहारम्	6	भट्टनारायण
23. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	10	भवभूति
24. महावीरचरितम्	7	भवभूति
25. उत्तररामचरितम्	7	भवभूति
26. शारिपुत्रप्रकरण् (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. अनर्घराघवम्	7	मुरारि
28. बालरामायणम् (महानाटक)	10	राजशेखर
29. बालभारत (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
30. विद्धशालभञ्जिका (नाटिका)	4	राजशेखर
31. कर्पूरमञ्जरी (सट्टक)	4	राजशेखर
32. कुन्दमाला	6	दिङ्नाग
33. प्रबोधचन्द्रोदय	6	कृष्ण मिश्र
34. प्रसन्नराघवम्	7	जयदेव

कुछ अन्य नाट्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक
1. आश्चर्यचूडामणि	शक्तिभद्र
2. रामाभ्युदय	यशोवर्मा
3. महानाटक	हनुमान्
4. हनुमन्नाटक	दामोदर मिश्र
5. रुक्मिणीहरणम्	वत्सराज
6. त्रिपुरदाह	वत्सराज
7. समुद्रमन्थन	वत्सराज
8. सौगन्धिकाहरणम्	विश्वनाथ
9. सामवतम्	अम्बिकादत्तव्यास
10. दूताङ्गद (छायानाटक)	सुभट
11. सुभद्रापरिणय (छायानाटक)	व्यासरामदेव
12. पार्वतीपरिणय	बाणभट्ट
13. मुकुटताडितक	बाणभट्ट

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
1. दशकुमारचरितम्	दण्डी
2. अवन्तिसुन्दरी कथा	दण्डी
3. वासवदत्ता (कथा)	सुबन्धु
4. कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट
5. हर्षचरितम् (आख्यायिका)	बाणभट्ट
6. मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय
7. शिवराजविजय (ऐतिहासिक उपन्यास)	अम्बिकादत्तव्यास
8. प्रबन्धमञ्जरी	हृषीकेश भट्टाचार्य
9. कथापञ्चकम्	पण्डिता क्षमाराव
10. ग्रामज्योतिः	पण्डिता क्षमाराव
11. कथामुक्तावलिः	पण्डिता क्षमाराव
12. कौमुदीकथाकल्लोलिनी	डॉ. रामशरणत्रिपाठी
13. तिलकमञ्जरी	धनपाल
14. गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह
15. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण
16. द्वासुपर्णा	डॉ. रामजी उपाध्याय
17. गद्यरामायणम्	वरददेशिक
18. गाँधीचरितम्	चारुदेवशास्त्री
19. रामचरितम्	देवविजयगणी

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्यम्	लेखक
1. ऋतुसंहारम्	कालिदास
2. मेघदूतम्	कालिदास
3. नीतिशतकम्	भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
6. अमरुशतकम्	अमरुक
7. गीतगोविन्दम्	जयदेव
8. गङ्गालहरी/पीयूषलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
9. अमृतलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
10. सुधालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
11. लक्ष्मीलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
12. करुणालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
13. आसफविलास	पण्डितराज जगन्नाथ
14. जगदाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
15. प्राणाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
16. यमुनावर्णनम्	पण्डितराज जगन्नाथ
17. भामिनीविलास (गीतिकाव्य)	पण्डितराज जगन्नाथ
18. गाथासप्तशती	हाल
19. चौरपञ्चाशिका	बिल्हण
20. आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
21. चाणक्यशतकम्	चाणक्य
22. घटकर्परकाव्यम्	घटकर्पर
23. नीतिसार	घटकर्पर
24. चण्डीशतकम्	बाणभट्ट
25. सूर्यशतकम्	मयूरभट्ट
26. भल्लटशतकम्	भल्लट
27. वक्रोक्तिपञ्चाशिका	रत्नाकर
28. देवीशतकम्	आनन्दवर्धन
29. कुट्टिनीमतम्	दामोदरगुप्त
30. बल्लालशतकम्	बल्लाल
31. चारुचर्या	क्षेमेन्द्र
32. सेव्यसेवकोपदेश	क्षेमेन्द्र
33. समयमातृका	क्षेमेन्द्र
34. कथाविलास	क्षेमेन्द्र
35. दर्पदलन	क्षेमेन्द्र
36. पवनदूत	धोयी
37. नेमिदूतम्	विक्रमकवि
38. शुकसन्देश	लक्ष्मीदास
39. भृङ्गसन्देश	वासुदेव
40. हंसदूतम्	रूपगोस्वामी
41. चन्द्रदूतम्	विमलकीर्ति

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख स्तोत्रकाव्यम्

1. शिवताण्डवस्तोत्रम्	रावण
2. सौन्दर्यलहरी	शङ्कराचार्य
3. चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्	शङ्कराचार्य
4. श्रीकृष्णाष्टकम्	शङ्कराचार्य
5. आनन्दलहरी	शङ्कराचार्य
6. शिवमहिम्नस्तोत्रम्	पुष्पदन्त
7. आलबन्दारस्तोत्रम्	यामुनाचार्य (आलबन्दार)
8. गङ्गास्तव	जयदेव
9. कृष्णकर्णामृतम्	बिल्वमङ्गल (कृष्णलीलाशुक)
10. वरदराजस्तव	अप्पयदीक्षित
11. नारायणीयम्	नारायणभट्ट
12. आनन्दमन्दाकिनी	मधुसूदन सरस्वती
13. गन्धर्वप्रार्थनाष्टकम्	रूपगोस्वामी

सुभाषितग्रन्थाः

सुभाषितग्रन्थाः	ग्रन्थकारः
1. कवीन्द्रवचनसमुच्चयः	विद्याकरपण्डितः
2. सदुक्तिकर्णामृतम् (सूक्तिकर्णामृतम्)	श्रीधरदास
3. सूक्तिमुक्तावली (सुभाषितमुक्तावली)	सिद्धचन्द्रमणि
4. सूक्तिरत्नाकरः	सिद्धचन्द्रमणि
5. सुभाषित सुधानिधि	सायण
6. शार्ङ्गधरपद्धति	शार्ङ्गधर
7. सुभाषितरत्नभाण्डागार	शिवदत्त एवं नारायणराम आचार्य
8. सूक्तिमुक्तावली	डॉ. नरेन्द्रदेव शास्त्री
9. संस्कृतसूक्तिरत्नाकर	डॉ. रामजी उपाध्याय

ऐतिहासिक काव्य

ऐतिहासिक काव्य	लेखक
1. बुद्धचरितम्	अश्वघोष
2. हर्षचरितम्	बाणभट्ट
3. गउडवहो (गौडवधः)	वाक्पतिराज
4. नवसाहसाङ्कचरितम्	पद्मगुप्त (परिमल)
5. विक्रमाङ्कदेवचरितम्	बिल्हण
6. राजतरङ्गिणी	महाकवि कल्हण
7. सोमपालविजयम्	जल्हण
8. प्रबन्धकोष	राजशेखर
9. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण

कथासाहित्यम्

कथाग्रन्थः	लेखकः
1. पञ्चतन्त्रम्	विष्णुशर्मा
2. हितोपदेश	नारायणपण्डित
3. बृहत्कथा	गुणाढ्य
4. बृहत्कथाश्लोकसंग्रह	बुधस्वामी
5. बृहत्कथामञ्जरी	क्षेमेन्द्र
6. कथासरित्सागर	सोमदेव
7. वेतालपञ्चविंशतिका	शिवदास एवं जम्भलदत्त
8. सिंहासनद्वात्रिंशिका द्वात्रिंशत्पुत्तलिका विक्रमचरित विक्रमार्कचरित	लेखक का नाम अज्ञात
9. शुकसप्ततिः	अज्ञात
10. पुरुषपरीक्षा	विद्यापति
11. भोजप्रबन्ध	बल्लाल सेन
12. जातकमाला	आर्यशूर
13. प्रबन्धकोष	राजशेखर
14. उदयसुन्दरीकथा	सोड्ढल

चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य	लेखक
1. नलचम्पू (दमयन्तीकथा)	त्रिविक्रमभट्ट
2. मदालसाचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट
3. जीवन्धरचम्पू	हरिश्चन्द्र
4. यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि
5. रामायणचम्पू	राजाभोज (भोजराज)
6. भागवतचम्पू	अभिनवकालिदास
7. भारतचम्पू	अनन्तभट्ट
8. वरदाम्बिकापरिणयचम्पू	रानी तिरुमलाम्बा
9. भरतेश्वराभ्युदयचम्पू	पं. आशाधरसूरि
10. रुक्मिणीपरिणयचम्पू	अमलाचार्य (अम्मल)
11. आनन्दवृन्दावनचम्पू	कवि कर्णपूर

अभ्यास प्रश्न

1. महाकाव्यं कीदृशम्?

(A) सर्गबन्धम् (B) वृत्तबन्धम्

(C) पद्यबन्धम् (D) रीतिबन्धम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

2. अयं रसः महाकाव्यस्य अङ्गिरसत्वेन न अभिमतः?

(A) शृङ्गारः (B) वीरः

(C) शान्तः (D) रौद्रः

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

3. महाकाव्ये न्यूनातिन्यूनं कति सर्गाः भवेयुः?

(A) 28 (B) 35

(C) 8 (D) 12

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-196

4. महाकाव्ये नायकः कीदृशः स्यात्–

(A) धीरोदात्तः (B) धीरललितः

(C) धीरोद्धतः (D) धीरप्रशान्तः

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

5. बृहत्त्रय्याम् अस्य ग्रन्थस्य गणना न भवति–

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्

(C) रघुवंशम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

6. बृहत्त्रयीमध्ये महाकाव्यानां कालाश्रितः क्रमोऽस्ति?

(A) शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्

(B) नैषधीयचरितम्, शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्

(C) किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, शिशुपालवधम्

(D) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-184,201,224

7. संस्कृतसाहित्ये बृहत्तमं महाकाव्यमस्ति–

(A) शिशुपालवधम् (B) नैषधीयचरितम्

(C) हरविजयम् (D) जानकीहरणम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-248

8. अधोलिखितेषु बृहत्त्रय्यां परिगण्यते–

(A) रामायणम् (B) रघुवंशम्

(C) शिशुपालवधम् (D) महाभारतम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-202

9. अधस्तनेषु विरूपं विचिनुत–

(A) रघुवंशम् (B) जानकीहरणम्

(C) प्रतिमानाटकम् (D) सेतुबन्धम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-466-467

10. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

(a) रघुवंशस्योपरि सञ्जीवनी टीका वर्तते।

(b) किरातार्जुनीयस्योपरि घण्टापथटीका वर्तते।

(c) शिशुपालवधमहाकाव्ये 'विंशतिः सर्गाः' सन्ति।

(d) स्वप्नवासवदत्ते विद्यमानस्य विदूषकस्य नाम 'वसन्तकः' इति।

(A) सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

(B) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

(C) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

(D) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

स्रोत–(i) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-202

11. अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

(क) मारविजयः	1. नैषधीयचरितम्
(ख) दमयन्ती	2. रघुवंशम्
(ग) अलकानगरी	3. मेघदूतम्
(घ) दिलीपसिंहसंवादः	4. बुद्धचरितम्

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	3	2
(B)	1	2	3	4
(C)	2	1	4	3
(D)	3	4	1	2

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा, पेज-230,287,332,213

1. (A) 2. (D) 3. (C) 4. (A) 5. (C) 6. (D) 7. (C) 8. (C) 9. (C) 10. (A) 11. (A)

12. अधोलिखितेषु लघुत्रय्यां नास्ति–

(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्

(C) कुमारसम्भवम् (D) मेघदूतम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

13. बृहत्त्रयीवर्गं चिनुत–

(A) रघुवंशम्-मेघदूतम्-शिशुपालवधम्

(B) किरातार्जुनीयम्-नैषधम्-रघुवंशम्

(C) शिशुपालवधम्-मेघदूतम्-नैषधम्

(D) किरातार्जुनीयम्-शिशुपालवधम्-नैषधम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

14. 'नातिस्वल्पा नातिदीर्घा सर्गा अष्टाधिका इह' कस्य लक्षणम् अस्ति-

(A) महाकाव्यस्य (B) गद्यकाव्यस्य

(C) खण्डकाव्यस्य (D) रूपकस्य

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/320)

15. एतेषु महाकाव्यं किम्?

(A) नैषधीयचरितम् (B) दशकुमारचरितम्

(C) हर्षचरितम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

16. बुद्धचरितमहाकाव्ये प्रमुखो रसः कः?

(A) शृङ्गारः (B) करुणः

(C) शान्तः (D) रौद्रः

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-235

17. लघुत्रय्यां कस्य काव्यस्य गणना भवति?

(A) किरातार्जुनीयस्य (B) मेघदूतस्य

(C) नैषधस्य (D) शिशुपालवधस्य

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

18. युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

(क) किरातार्जुनीयम् 1. राजवाहनः

(ख) नैषधीयचरितम् 2. खण्डकाव्यम्

(ग) मेघदूतम् 3. दमयन्ती

(घ) दशकुमारचरितम् 4. द्रौपदी

	क	ख	ग	घ
(A)	4	2	1	3
(B)	4	3	2	1
(C)	1	2	3	4
(D)	3	4	1	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशंकर शर्मा,पेज-243,287,332,383

19. ग्रन्थान् कालानुक्रमेण लिखत–

(क) किरातार्जुनीयम् (ख) नैषधीयचरितम्

(ग) शिशुपालवधम् (घ) रघुवंशम्

(A)	क	ग	ख	घ
(B)	ग	ख	क	घ
(C)	ख	ग	घ	क
(D)	घ	क	ग	ख

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151,180,199,224

20. बुद्धचरितम् एकं ..... अस्ति–

(A) रूपकम् (B) खण्डकाव्यम्

(C) महाकाव्यम् (D) चम्पूकाव्यम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-229

21. यस्य विभाजनं सर्गेषु भवति, तत् किम् ?

(A) चम्पूकाव्यम् (B) महाकाव्यम्

(C) श्रव्यकाव्यम् (D) मुक्तककाव्यम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/325)

22. अधस्तनवर्गयोः समीचीनं विचिनुत–

(क) दिलीपः 1. रघुवंशम्

(ख) यक्षः 2. किरातार्जुनीयम्

(ग) द्रौपदी 3. मेघदूतम्

(घ) उपहारवर्मा 4. दशकुमारचरितम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	2	4	1	3
(C)	4	2	1	3
(D)	1	3	2	4

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151,528,184,475

12. (B) 13. (D) 14. (A) 15. (A) 16. (C) 17. (B) 18. (B) 19. (D) 20. (C) 21. (B) 22. (D)

23. रूपकं कतिविधम् ?

(A) 10 (B) 7

(C) 3 (D) 5

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इति.– उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज- 576

24. अधोलिखितेषु ऐतिहासिकमहाकाव्यमस्ति–

(A) नैषधीयचरितम् (B) जानकीहरणम्

(C) विक्रमाङ्कदेवचरितम् (D) बुद्धचरितम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' , पेज-311

25. 'जानकीहरणम्' इति महाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति–

(A) 18 (B) 20

(C) 22 (D) 21

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-257

26. कस्य काव्यस्य अष्टमसर्गपर्यन्तम् एव मल्लिनाथेन व्याख्यानं रचितम्–

(A) रघुवंशस्य (B) किरातार्जुनीयस्य

(C) कुमारसम्भवस्य (D) नैषधस्य

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-150

27. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत–

(क) द्वाविंशति-सर्गात्मकम् (1) शिशुपालवधम्

(ख) विंशतिसर्गात्मकम् (2) रघुवंशमहाकाव्यम्

(ग) एकोनविंशति-सर्गात्मकम् (3) किरातार्जुनीयम्

(घ) अष्टादश-सर्गात्मकम् (4) नैषधमहाकाव्यम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	3	1	4	2
(B)	2	3	1	4
(C)	1	4	3	2
(D)	4	1	2	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-262,212,243,287

28. दृश्यश्रव्यत्वभेदेन काव्यस्य कति भेदाः ?

(A) द्वौ (B) पञ्च

(C) अष्टौ (D) नव

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/1)

29. सातवाहनप्रणीता 'गाथासप्तशती' कस्यां भाषायामस्ति?

(A) संस्कृते (B) प्राकृते

(C) अपभ्रंशे (D) भूतभाषायाम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-343

30. आख्यायिकायाः कथावस्तु अस्ति–

(A) ऐतिहासिकम् (B) कविकल्पितम्

(C) मिश्रितम् (D) चमत्कारपूर्णम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-390

31. शिवलीलार्णवकाव्ये सर्गाः–

(A) 20 (B) 22

(C) 21 (D) 23

स्रोत–संस्कृत सा. का अभिनव इति.-राधावल्लभ त्रिपाठी, पेज-506

32. वाल्मीकिरामायणमाश्रित्य कथा नास्ति –

(A) रघुवंशे (B) कुन्दमालायाम्

(C) मालतीमाधवे (D) जानकीहरणे

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-116

33. लघुत्रय्यां परिगण्यते–

(A) रघुवंशम् (B) शिशुपालवधम्

(C) किरातार्जुनीयम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

34. समुचितं सम्बद्धं विकल्पं चिनुत–

(A) गौडीयसंस्करणम् – रामायणम्

(B) पश्चिमोत्तरीयसंस्करणम् – महाभारतम्

(C) अनर्घराघवम् – गरुडपुराणम्

(D) शतसाहस्त्रीसंहिता - रामायणम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

35. अधोलिखितेषु रामायणाश्रितं काव्यं नास्ति?

(A) रघुवंशम् (B) भट्टिकाव्यम्

(C) सेतुबन्धम् (D) बुद्धचरितम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–116

23. (A) 24. (C) 25. (B) 26. (C) 27. (D) 28. (A) 29. (B) 30. (A) 31. (B) 32. (C)
33. (A) 34. (A) 35. (D)

36. 'विक्रमोर्वशीयम्' नामकरूपकमस्ति-

(A) चम्पूकाव्यम् (B) खण्डकाव्यम्

(C) नाटकम् (D) त्रोटकम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-329

37. 'प्रियदर्शिकायाः' नायकः कः?

(A) वस्तुमित्रः (B) उदयनः

(C) मित्रावस्तुः (D) दृढवर्माः

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-369

38. प्रहसनस्य उदाहरणम्–

(A) प्रियदर्शिका (B) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्

(C) मत्तविलासः (D) मृच्छकटिकम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-548

39. 'प्रबोधचन्द्रोदयः'–

(A) चम्पूकाव्यम् (B) पद्यकाव्यम्

(C) गद्यकाव्यम् (D) रूपकम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-543

40. मालतीमाधवनाटकस्य इतिवृत्तं वर्तते–

(A) प्रसिद्धम् (B) कविकल्पितम्

(C) उत्पाद्यम् (D) चारित्रकम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-बलदेव उपाध्याय, पेज-543

41. मुद्राराक्षसनाटकस्य कथावस्तु भवति–

(A) प्रसिद्धम् (B) चारित्रकम्

(C) उत्पाद्यम् (D) कविकल्पितम्

स्रोत–मुद्राराक्षसम्-परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0 पेज-6

42. 'डिम' इति रूपके अङ्काः भवन्ति?

(A) 5 (B) 6

(C) 10 (D) 4

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/242) -शालिग्रामशास्त्री, पेज-216

43. ऊरुभङ्गे नायकः कः?

(A) दुर्योधनः (B) भीमः

(C) धृतराष्ट्रः (D) श्रीकृष्णः

स्रोत–संस्कृतकवि-दर्शन-भोलाशंकर व्यास, पेज--193

44. उन्मत्तराघवं कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

(A) अङ्कस्य (B) डिमस्य

(C) वीथ्याः (D) एकांकी

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-445

45. सोपहासानिगूढार्था नालिकैव–

(A) नाटिका (B) प्रकरणिका

(C) प्रहेलिका (D) भाणिका

स्रोत–दशरूपकम् -रमाशङ्कर त्रिपाठी,पेज-215

46. अधस्तनेषु एकाङ्किरूपकमस्ति?

(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (B) चारुदत्तम्

(C) कर्णभारम् (D) अविमारकम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

47. नाटके आमुखः कस्य भेदः?

(A) भारतीवृत्तेः (B) अर्थोपक्षेपकस्य

(C) सन्धेः (D) पताकास्थानकस्य

स्रोत–दशरूपक (3/5)-रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-204

48. संस्कृतसाहित्ये प्रतीकात्मकस्य नाटकस्य नाम अस्ति–

(A) विद्धशालभञ्जिका (B) प्रबोधचन्द्रोदयः

(C) प्रसन्नराघवम् (D) आश्चर्यचूडामणिः

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-543

49. महाभारतकथामाश्रित्य भासेन किं नाटकं लिखितम्?

(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्

(C) प्रतिमानाटकम् (D) कर्णभारम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-466

50. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

(क) मृच्छकटिकम्	1. नाटकम्
(ख) दशकुमारचरितम्	2. प्रकरणम्
(ग) उत्तररामचरितम्	3. नाटिका
(घ) रत्नावली	4. गद्यकाव्यम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	4	2	3
(B)	2	1	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	2	4	1	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-क. 495, ख. 381, ग. 528, घ. 515

36. (D) 37. (B) 38. (C) 39. (D) 40. (B) 41. (A) 42. (D) 43. (B) 44. (D) 45. (C)
46. (C) 47. (A) 48. (B) 49. (D) 50. (D)

51. अधोनिर्दिष्टानां ग्रन्थानां कालानुक्रमेण समीचीनं पर्यायं विचिनुत–

1. स्वप्नवासवदत्तम् 2. मुद्राराक्षसम्
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4. उत्तररामचरितम्

(A) 2 1 4 3
(B) 1 2 3 4
(C) 1 3 2 4
(D) 3 1 2 4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275, 326, 355, 395

52. अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

(क) राजवाहनः 1. कादम्बरी
(ख) महाश्वेता 2. मृच्छकटिकम्
(ग) यौगन्धरायणः 3. दशकुमारचरितम्
(घ) शकारः 4. स्वप्नवासवदत्तम्

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	1	2
(B)	3	1	4	2
(C)	4	3	1	2
(D)	2	1	3	4

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज– क-475,ख-494, ग-275, घ,-309

53. 'यत्र उत्पाद्यं लोकसंश्रयञ्च वृत्तं भवति तदस्ति ' रूपकम्?

(A) नाटकम् (B) प्रकरणम्
(C) डिमः (D) व्यायोगः

स्रोत–दशरूपक-(3/39)-रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-226

54. निम्नलिखितेषु कतमो ग्रन्थो नाटकग्रन्थो नास्ति–

(A) हर्षचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

55. 'महानाटकम्' इति कथ्यते?

(A) हनुमन्नाटकम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) मुद्राराक्षसम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-540

56. दशरूपकानुसारेण कीदृशो नायकः जीमूतवाहनः?

(A) धीरोदात्तः (B) धीरप्रशान्तः
(C) धीरोद्धतः (D) धीरललितः

स्रोत–दशरूपक-रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-116

57. द्वे नायिके कस्मिन् रूपके भवतः?

(A) त्रोटके (B) नाटिकायाम्
(C) ईहामृगे (D) वीथ्याम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–515

58. नाटके कति अवस्थाः भवन्ति?

(A) 4 (B) 5
(C) 3 (D) 6

स्रोत- उत्तररामचरितम्–कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-9

59. महाकविभासकृते कस्मिन्नाटके भरतवाक्यं नोपलभ्यते?

(A) स्वप्नवासवदत्ते (B) चारुदत्ते
(C) दूतवाक्ये (D) अविमारके

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–276

60. भासकृतानि महाभारताश्रितानि रूपकाणि सन्ति?

(A) त्रीणि (B) पञ्च
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-466

61. केनाचार्येण प्रोक्तं 'सर्वशुक्ला सरस्वती' –

(A) भामहेन (B) विश्वनाथेन
(C) दण्डिना (D) भोजराजेन

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-472

62. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत–

(क) कादम्बरी 1. प्रकरणम्
(ख) हर्षचरितम् 2. कथा
(ग) मृच्छकटिकम् 3. नाटिका
(घ) रत्नावली 4. आख्यायिका

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	1	4
(B)	2	4	1	3
(C)	1	4	2	3
(D)	3	2	4	1

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-क-463,ख-463,ग-307,घ-373

51. (C) 52. (B) 53. (B) 54. (A) 55. (A) 56. (A) 57. (B) 58. (B) 59. (B) 60. (C) 61. (C) 62. (B)

63. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(क) मुद्राराक्षसम्	1. नाटिका
(ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	2. चारित्रिकरूपकम्
(ग) उत्तररामचरितम्	3. महाभारताधारितं रूपकम्
(घ) रत्नावली	4. करुणरसरूपकम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	3	4	2	1
(C)	2	3	4	1
(D)	4	3	1	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-क 358, ख-335, ग-403, घ-373

64. कर्णभाररूपकं कत्यङ्कात्मकम्?

(A) एकाङ्कात्मकम् (B) चतुरङ्कात्मकम्
(C) दशाङ्कात्मकम् (D) पञ्चाङ्कात्मकम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

65. 'कर्पूरमञ्जरी' इति कृतिः कस्य उपरूपकप्रभेदस्य उदाहरणम्?

(A) नाटिकायाः (B) त्रोटकस्य
(C) सट्टकस्य (D) नाट्यरासकस्य

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-441

66. 'प्रस्तावनायाः' नामान्तरं किम्?

(A) सुमुखम् (B) प्रमुखम्
(C) आमुखम् (D) दुर्मुखम्

स्रोत–दशरूपक-रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-206

67. उत्तमाधमशिक्षकयोः लक्षणं कस्मिन् काव्ये उक्तम्?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) मालविकाग्निमित्रे
(C) मुद्राराक्षसे (D) प्रतिज्ञायौगन्धरायणे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-328

68. नाटके विदूषकः –

(A) सूत्रधारस्य कर्म करोति (B) मञ्चसज्जां करोति
(C) सञ्चालनकर्म करोति (D) हास्यविनोदं करोति

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/42)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–68

69. मालविकाग्निमित्रस्य विदूषकः–

(A) गौतमः (B) मैत्रेयः
(C) वसन्तकः (D) माढव्यः

स्रोत–संस्कृत-साहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज-304

70. कर्णभारनाटकस्य नायकः अस्ति–

(A) कर्णः (B) दुष्यन्तः
(C) चारुदत्तः (D) रामः

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

71. नाटके अङ्कानाम् अधिकतमा संख्या का?

(A) अष्टौ (B) पञ्च
(C) दश (D) षट्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-437

72. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(क) स्वप्नवासवदत्ते	1. धीवरवृत्तान्तः
(ख) अभिज्ञानशाकुन्तले	2. लवकुशवृत्तान्तः
(ग) मृच्छकटिके	3. लावाणकग्रामप्रसङ्गः
(घ) उत्तररामचरिते	4. शर्विलकप्रसङ्गः

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	4	3
(B)	3	1	4	2
(C)	3	4	1	2
(D)	4	2	1	3

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–46

73. 'अपरीक्षितकारकम्' कस्य पुस्तकस्य भागः–

(A) मृच्छकटिकस्य (B) गीतगोविन्दस्य
(C) पञ्चतन्त्रस्य (D) विक्रमोर्वशीयस्य

स्रोत-संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-575

74. पञ्चतन्त्रस्य रचनायाः उद्देश्यम् आसीत्–

(A) सामान्यजनान् नीतिज्ञान् कर्तुम्
(B) बालकान् नीतिज्ञं कर्तुम्
(C) राज्ञः अमरकीर्तेः पुत्रान् शिक्षितुम्
(D) विष्णुशर्मणः स्वविद्वतां निवेदितुम्

स्रोत-संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-578

75. 'हितोपदेशः' कति भागेषु विभक्तः–

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) नव

स्रोत-संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-582

63. (C) 64. (A) 65. (C) 66. (C) 67. (B) 68. (D) 69. (A) 70. (A) 71. (C)
72. (B) 73. (C) 74. (C) 75. (A)

76. हितोपदेशे कति कथाः सन्ति–

(A) 43 (B) 25

(C) 30 (D) 10

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-582

77. 'हितोपदेशे' पञ्चतन्त्रात् कति कथाः समुद्धृताः–

(A) 43 (B) 20

(C) 25 (D) 28

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-433

78. पशुपक्षिविषयकाः कथाः यस्मिन् सन्ति सः वर्तते–

(A) हितोपदेशः (B) गीता

(C) बालरामायणम् (D) चित्रमीमांसा

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-582

79. पशुपक्षिविषयकाभिः कथाभिः के मुदिताः भवन्ति–

(A) गर्दभाः (B) वानराः

(C) बालाः (D) मत्स्याः

स्रोत-संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–578-579

80. 'समासबहुलता' इति वैशिष्ट्यं कस्याः विधायाः–

(A) संस्कृतगद्यस्य (B) संस्कृतनाटकस्य

(C) संस्कृतव्याकरणस्य (D) संस्कृतपद्यस्य

स्रोत–संस्कृत सा. का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज-378

81. बृहत्कथा मूलतः विरचिताः–

(A) संस्कृतभाषायाम् (B) प्राकृतभाषायाम्

(C) हिन्दीभाषायाम् (D) पैशाचीप्राकृतभाषायाम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशंकर शर्मा, पेज–422

82. श्रव्यं श्रोतव्यमात्रं तत्पद्यगद्यमयं.....?

(A) पञ्चविधम् (B) त्रिविधम्

(C) द्विधा (D) सप्तविधम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/313)

83. वासवदत्ताकथायाः नायकोऽस्ति–

(A) कन्दर्पकेतुः (B) मकरन्दः

(C) विद्याधरः (D) किरातः

स्रोत-संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-485

84. ''प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिर्निबन्धम्'' इति कथनमस्ति–

(A) बाणभट्टस्य (B) सुबन्धोः

(C) दण्डिनः (D) वादीभसिंहस्य

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-392

85. शास्त्रीयं गद्यं प्राप्यते–

(A) पञ्चतन्त्रे (B) हितोपदेशे

(C) रूपकेषु (D) महाभाष्ये

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-374

86. .....कवीनां निकषं भवति–

(A) गद्यम् (B) श्यामलादण्डकम्

(C) शास्त्रम् (D) छन्दोयोजनम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-372

87. आख्यायिकायाः कथावस्तु अस्ति–

(A) चमत्कारपूर्णम् (B) कविकल्पितम्

(C) मिश्रितम् (D) ऐतिहासिकम्

स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

88. गद्यकाव्यत्रय्याम् आयान्ति –

(A) दशकुमारचरितम्, वासवदत्ता, कादम्बरी

(B) कादम्बरी, शूद्रककथा, हर्षचरितम्

(C) हर्षचरितम्, दशकुमारचरितम्, शूद्रककथा

(D) शिवराजविजयः, कादम्बरी, हर्षचरितम्

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-तारिणीश झा, भू0पेज-11

89. गद्यकाव्यं नास्ति–

(A) कादम्बरी (B) दशकुमारचरितम्

(C) बुद्धचरितम् (D) हर्षचरितम्

स्रोत–संस्कृत सा. का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-229

90. ऐतिहासिकोपन्यासकारः कः

(A) अम्बिकादत्तः (B) बाणभट्टः

(C) सुबन्धुः (D) मम्मटः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा, पेज-412

76. (A)	**77. (C)**	**78. (A)**	**79. (C)**	**80. (A)**	**81. (D)**	**82. (C)**	**83. (A)**	**84. (B)**	**85. (D)**
86. (A)	**87. (D)**	**88. (A)**	**89. (C)**	**90. (A)**					

91. प्राचीनाचार्याणां मते गद्यकाव्यस्य कति भेदाः?

(A) 2 (B) 3

(C) 1 (D) 8

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा,पेज-375

92. अग्निपुराणे गद्यकाव्यस्य कति भेदाः प्रदर्शितः-

(A) 2 (B) 1

(C) 3 (D) 5

स्रोत- अग्निपुराण (337/12)

93. गद्यकाव्यभेदानां विस्तृतविवरणं कुत्र प्राप्यते-

(A) गद्यकाव्यमीमांसायाम् (B) पद्यकाव्यमीमांसायाम्

(C) दृश्यकाव्यमीमांसायाम् (D) उपर्युक्त-सर्वेषु

94. गद्यकाव्यमीमांसाकारः कः?

(A) अम्बिकादत्तः (B) माघः

(C) कालिदासः (D) मम्मटः

स्रोत–शिवराजविजयः - रमाशङ्कर मिश्र, भू.- पेज-1

95. 'खण्डकाव्यम्' इति कथ्यते यत् -

(A) काव्यस्य एकदेशस्य अनुसरणं करोति

(B) खण्डेषु विभक्तः भवेत्

(C) खण्डितानायिकायाः चरित्राधारितः भवेत्

(D) महाकाव्येषु केषाञ्चन सर्गाणां निबद्धीकरणं भवेत्

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/329)

96. यस्य कथानकं लघुतथा प्रायः स्वल्पो भवेत् तत् किम् -

(A) चम्पूकाव्यम् (B) श्रव्यकाव्यम्

(C) खण्डकाव्यम् (D) प्रबन्धकाव्यम्

स्रोत- संस्कृत साहित्य का अभिनव इति.–राधावल्लभ,पेज-183

97. खण्डकाव्यस्य रचना का?

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्

(C) मेघदूतम् (D) कादम्बरी

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा,पेज-332

98. विश्वनाथानुसारं खण्डकाव्यस्य परिभाषा का?

(A) खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च

(B) सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको...

(C) पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन....

(D) उपर्युक्तं सर्वम्

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/329)

99. नाट्यस्य आद्यप्रवर्तकः कः ?

(A) भगवान् नटराजः (B) भगवान् भरतः

(C) पाणिनिः (D) व्यासः

स्रोत-नाट्यशास्त्र–भरतमुनि, पेज-23

100. काव्येषु किं रम्यम्भवति-

(A) महाकाव्यम् (B) चम्पूकाव्यम्

(C) नाटकम् (D) रामायणम्

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी भू, पेज-1

101.अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

(क) शार्ङ्गरवः	1. उत्तररामचरितम्
(ख) शकारः	2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(ग) दुर्मुखः	3. वेणीसंहारम्
(घ) भीमः	4. मृच्छकटिकम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	4	3	2
(B)	2	1	4	3
(C)	2	1	3	4
(D)	2	4	1	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-338,309,404,388

102.अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

(क) कादम्बरी	1. नाटकम्
(ख) रघुवंशम्	2. गद्यकाव्यम्
(ग) मुद्राराक्षसम्	3. गीतिकाव्यम्
(घ) मेघदूतम्	4. महाकाव्यम्

	क	ख	ग	घ
(A)	2	4	1	3
(B)	2	3	4	1
(C)	2	3	1	4
(D)	2	4	3	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज–398, 208, 504, 332

91. (A) 92. (D) 93. (A) 94. (A) 95. (A) 96. (C) 97. (C) 98. (A) 99. (A) 100. (C) 101. (D) 102. (A)

103. मध्यमव्यायोगे 'मध्यम' पदेन कस्य सङ्केतः अस्ति?
(A) अर्जुनस्य (B) नकुलस्य
(C) भीमस्य (D) भीष्मस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज–466

104. दृश्यकाव्यं कतिविधम् –
(A) 1 (B) 3
(C) 2 (D) 4
स्रोत- शिवराजविजयः - रमाशङ्कर मिश्र, भू.,पेज-6

105. रूपकस्य दशभेदा इति कस्य मतौ?
(A) विश्वनाथस्य (B) मम्मटस्य
(C) आनन्दवर्धनाचार्यस्य (D) उपर्युक्तेषु सर्वेषाम्
स्रोत- साहित्यदर्पण (6/3)

106. भरतस्य मतौ रूपकस्य कति भेदाः?
(A) 12 (B) 10
(C) 23 (D) 18
स्रोत- नाट्यशास्त्र (18/1,2)

107. श्रव्यकाव्यस्य भेदः वर्तते -
(A) गद्यकाव्यम् (B) पद्यकाव्यम्
(C) चम्पूकाव्यम् (D) उपर्युक्तं सर्वम्
स्रोत- संस्कृत सा. का इति.–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-576

108. किं काव्यम् ?
(A) शब्दप्रयोगः (B) कवेः कर्म
(C) वार्तालापः (D) अर्थबोधः
स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/2)-परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-5

109. 'शब्दार्थयोः सहभावः' कथ्यते-
(A) व्याकरणम् (B) साहित्यम्
(C) दर्शनम् (D) ज्योतिषम्
स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/17) राधेश्याम मिश्र-पेज-57

110. रससम्प्रदायस्य प्रवर्तकः कः?
(A) भामहः (B) क्षेमेन्द्रः
(C) विश्वनाथः (D) भरतः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-591

111. साहित्य में औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन हैं?
(A) अभिनवगुप्त (B) आनन्दवर्धन
(C) क्षेमेन्द्र (D) विश्वनाथ
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-596

112. वक्रोक्ति-सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं?
(A) वामन (B) कुन्तक
(C) बाणभट्ट (D) क्षेमेन्द्र
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-595

113. रीतिसम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य कौन हैं?
(A) वामन (B) रुद्रट
(C) कुन्तक (D) दण्डी
संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-592-593

114. वक्रोक्ति-सम्प्रदाय के विरोधी आचार्य हैं–
(A) भामह (B) आचार्य विश्वनाथ
(C) रुद्रट (D) मम्मट
स्रोत– साहित्यदर्पण-भवानी शंकर शर्मा, पेज-138

115. आचार्य कुन्तक काव्यशास्त्र में किस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं–
(A) औचित्य (B) वक्रोक्ति
(C) ध्वनि (D) रीति
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-595

116. साहित्यशास्त्र में कितने सम्प्रदाय हैं–
(A) 3 (B) 2
(C) 6 (D) 9
स्रोत– संस्कृत साहित्य का इति.–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-591

117. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' प्राप्यते-
(A) नाट्यशास्त्रे (B) काव्यालङ्कारसूत्रे
(C) साहित्यदर्पणे (D) काव्यमीमांसायाम्
स्रोत–काव्यप्रकाश- श्रीनिवास शास्त्री, भू0पेज-15

118. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' मतमिदं वर्तते -
(A) वामनस्य (B) विश्वनाथस्य
(C) मम्मटस्य (D) दण्डिनः
स्रोत– काव्यालङ्कारसूत्र (1.2.6)-हरगोविन्द मिश्र, पेज–14

119. 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्' इयं परिभाषा वर्तते?
(A) कुन्तकस्य (B) मम्मटस्य
(C) भामहस्य (D) दण्डिनः
स्रोत–काव्यप्रकाश - श्रीनिवास शास्त्री, भू0 पेज-19

103. (C) 104. (C) 105. (A) 106. (B) 107. (D) 108. (B) 109. (B) 110. (D) 111. (C) 112. (B)
113. (A) 114. (B) 115. (B) 116. (C) 117. (B) 118. (A) 119. (A)

120. ''चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि'' कस्येयमुक्तिः?
(A) मम्मटस्य (B) विश्वनाथस्य
(C) वामनस्य (D) दण्डिनः
स्रोत–साहित्यदर्पण (1.2) - भवानीशंकर शर्मा, पेज-103

121. 'अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः' इति उद्धृतम्?
(A) ध्वन्यालोकात् (B) काव्यप्रकाशात्
(C) नाट्यशास्त्रात् (D) दशकुमारचरितात्
स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-312

122. ''वैदग्ध्यभङ्गीभणितिः'' कस्य मतं वर्तते?
(A) कुन्तकस्य (B) भोजस्य
(C) राजशेखरस्य (D) पण्डितराजजगन्नाथस्य
स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/10)-राधेश्याम मिश्र, पेज-47

123. औचित्य को काव्य की आत्मा किसने माना है?
(A) रुय्यक (B) अप्पयदीक्षित
(C) क्षेमेन्द्र (D) मनुष्य
स्रोत–औचित्यविचारचर्चा- व्रजमोहन झा, पेज-4

124. काव्यशास्त्र में 'भुक्तिवाद' किसका सिद्धान्त है?
(A) अभिनवगुप्त (B) भट्टलोल्लट
(C) शंकुक (D) भट्टनायक
स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-105

125. संस्कृतसाहित्य के अनुसार निम्नलिखित में से क्या सत्य कथन है?
(A) शृङ्गारः-रसः (B) करुणः-दुःखम्
(C) वीरः-सैनिकः (D) हास्यः-स्वभावः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

126. 'इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' काव्यलक्षणमिदं कुत्र उल्लिखितम् ?
(A) काव्यादर्शे (B) काव्यप्रकाशे
(C) ध्वन्यालोके (D) साहित्यदर्पणे
स्रोत–काव्यादर्श (1/10)-रामचन्द्र मिश्र, पेज–9

127. ''इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली काव्यम्'' – यह काव्यलक्षण है?
(A) भामह का (B) दण्डी का
(C) मम्मट का (D) विश्वनाथ का
स्रोत–काव्यादर्श (1/10)-रामचन्द्र मिश्र, पेज–09

128. ''शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि। बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि।'' काव्यलक्षणमिदं विद्यते-
(A) आनन्दवर्धनस्य (B) भामहस्य
(C) मम्मटस्य (D) कुन्तकस्य
स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/7) – राधेश्याम मिश्र, पेज-17

129. कुन्तक के मतानुसार काव्य की आत्मा है–
(A) अलंकार (B) वक्रोक्ति
(C) औचित्य (D) रस
स्रोत–काव्यप्रकाश-पारसनाथ द्विवेदी, भू0 पेज-82

130. आचार्य वामन की काव्य परिभाषा है-
(A) काव्यस्यात्मा ध्वनिः (B) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(C) रीतिरात्मा काव्यस्य(D) रमणीयार्थप्रतिपादकःशब्दः काव्यम्
स्रोत–काव्यालङ्कारसूत्र (1.2.6)-हरगोविन्दमिश्र, पेज–14

131. 'धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः' इति वाक्यम् ..... उक्तम्?
(A) भरतेन (B) विश्वनाथेन
(C) जगन्नाथेन (D) कुन्तकेन
स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/3)- राधेश्याम मिश्र,पेज-10

132. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किसका कथन है–
(A) विश्वनाथ (B) राजशेखर
(C) श्रीहर्ष (D) भास
स्रोत– साहित्यदर्पण-राजेन्द्र मिश्र, पेज-133

133. काव्यं शरीरं किम् ?
(A) शब्दार्थौ (B) रसः
(C) कथावस्तु (D) व्यङ्ग्यार्थः
स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-25

134. ''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'' किसने कहा है–
(A) रुद्रट ने (B) भामह ने
(C) विश्वनाथ ने (D) आनन्दवर्धन ने
स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-24

135. रसगङ्गाधरस्य कर्ता कः?
(A) कल्हणः (B) विश्वनाथः
(C) आनन्दवर्धनः (D) पण्डितराजजगन्नाथः
संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-174

120. (B) 121. (A) 122. (A) 123. (C) 124. (D) 125. (A) 126. (A) 127. (B) 128. (D) 129. (B)
130. (C) 131. (D) 132. (A) 133. (A) 134. (B) 135. (D)

136. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' यह परिभाषा किसने दी है–

(A) दण्डी (B) पण्डितराजजगन्नाथ

(C) मम्मट (D) विश्वनाथ

स्रोत–रसगंगाधर (1/1) - मदनमोहन झा, पेज-10

137. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' काव्य का यह लक्षण किस ग्रन्थ में दिया गया है?

(A) काव्यालङ्कार में (B) रसगङ्गाधर में

(C) नाट्यशास्त्र में (D) सरस्वतीकण्ठाभरण में

स्रोत–रसगंगाधर (1/1) - मदनमोहन झा, पेज–60

138. 'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्'–यह काव्यलक्षण है–

(A) भोजराज का (B) क्षेमेन्द्र का

(C) हेमचन्द्र का (D) कुन्तक का

स्रोत–औचित्यविचारचर्चा (1/5)- व्रजमोहन झा, पेज-4

139. 'कविकण्ठाभरणम्' इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता कः?

(A) कल्हणः (B) बिल्हणः

(C) क्षेमेन्द्रः (D) भोजः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास - अमरनाथ पाण्डेय,पेज-115

140. भारतीय काव्य-शास्त्र के प्रमुख काव्यशास्त्रियों का सही क्रम क्या है?

(A) आनन्दवर्धन - भरतमुनि - जगन्नाथ - विश्वनाथ

(B) भरतमुनि - आनन्दवर्धन - विश्वनाथ - जगन्नाथ

(C) जगन्नाथ - विश्वनाथ - आनन्दवर्धन - भरतमुनि

(D) विश्वनाथ - आनन्दवर्धन - भरतमुनि - जगन्नाथ

स्रोत–सं.काव्यशास्त्र का आलोच. इति.-अमर,पेज--3,42,157,174

141. निम्नलिखित आचार्यों का सही अनुक्रम क्या है?

(A) भरतमुनि - भामह - विश्वनाथ - अभिनवगुप्त

(B) भरतमुनि - विश्वनाथ - भामह - अभिनवगुप्त

(C) भरतमुनि - भामह - अभिनवगुप्त - विश्वनाथ

(D) भरतमुनि - अभिनवगुप्त - विश्वनाथ - भामह

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज- अ-03, ब-8, स-96, द-157

142. निम्नलिखित आचार्यों का कालानुसार सही अनुक्रम लिखिये–

(A) पंडितराज जगन्नाथ - कुन्तक - भामह - रूपगोस्वामी

(B) भामह - कुन्तक - रूपगोस्वामी - पंडितराज जगन्नाथ

(C) कुन्तक - भामह - पंडितराजजगन्नाथ - रूपगोस्वामी

(D) रूपगोस्वामी - कुन्तक - भामह - पंडितराज जगन्नाथ

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज- 8, 88, 161, 174

143. निम्न में से कौन किसके लिए प्रसिद्ध नहीं है?

(A) उपमा के लिए कालिदास (B) करुण के लिए भवभूति

(C) अलङ्कार के लिए भामह (D) वक्रोक्ति के लिए क्षेमेन्द्र

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज-88

144. निम्न अलङ्कारशास्त्रियों में से कौन कश्मीर निवासी नहीं थे?

(A) विश्वनाथ (B) अभिनवगुप्त

(C) मम्मट (D) आनन्दवर्धन

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-157

145. रचनाकाल के आधार पर निम्नलिखित ग्रन्थों का सही अनुक्रम है–

(A) ध्वन्यालोक, काव्यमीमांसा, काव्यादर्श, साहित्यदर्पण

(B) काव्यादर्श, ध्वन्यालोक, काव्यमीमांसा, साहित्यदर्पण

(C) काव्यादर्श, काव्यमीमांसा, ध्वन्यालोक, साहित्यदर्पण

(D) ध्वन्यालोक, काव्यादर्श, साहित्यदर्पण, काव्यमीमांसा

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ, पाण्डेय, पेज- 19, 41, 81, 157

146. पण्डितराजः कः?

(A) जयदेवः (B) विश्वनाथः

(C) जगन्नाथः (D) कालिदासः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज-173

147. काव्यशास्त्रियों में आचार्य मम्मट हैं?

(A) ध्वनिवादी (B) रीतिवादी

(C) अलङ्कारवादी (D) समन्वयवादी

भारतीयकाव्यशास्त्र (संस्कृत) का इतिहास-राजवंश सहाय 'हीरा',पेज–166

148. आचार्यविश्वनाथस्य पितुर्नामास्ति?

(A) चन्द्रशेखरः (B) शशिशेखरः

(C) विधुशेखरः (D) इन्दुशेखरः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-157

136. (B) 137. (B) 138. (B) 139. (C) 140. (B) 141. (C) 142. (B) 143. (D) 144. (A) 145. (B) 146. (C) 147. (D) 148. (A)

149. 'उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम् इति यायावरीयः।' उक्तिरियं कुत्रास्ति–
(A) नाट्यशास्त्रे (B) काव्यप्रकाशे
(C) काव्यमीमांसायाम् (D) वक्रोक्तिजीविते
स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, पेज-4

150. आनन्दवर्धनाचार्यस्य स्थितिकालोऽस्ति?
(A) नवमशताब्दी (B) अष्टमशताब्दी
(C) दशमशताब्दी (D) सप्तमशताब्दी
संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-42

151. संस्कृतसाहित्यशास्त्रे 'यायावरीयः' कः कथ्यते?
(A) क्षेमेन्द्रः (B) राजशेखरः
(C) पण्डितराजजगन्नाथः (D) अभिनवगुप्तः
संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-80

152. कालानुसारेण कस्तावत् अर्वाचीनः?
(A) भरतः (B) जगन्नाथः
(C) विश्वनाथः (D) भामहः
संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-174

153. 'भावप्रकाशन' ग्रन्थ के रचयिता हैं?
(A) शिङ्गभूपाल (B) शारदातनय
(C) रामचन्द्र (D) गुणचन्द्र
संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-152

154. काव्यमीमांसायाः रचयिता कोऽस्ति?
(A) भरतमुनिः (B) भोजः
(C) मम्मटः (D) राजशेखरः
स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, भू0 पेज-1

155. सही युग्म चिह्नित कीजिए?
(A) वैदर्भी – माधुर्य (B) गौडी – माधुर्य
(C) पाञ्चाली – ओज (D) गौडी – प्रसाद
स्रोत–काव्यालङ्कारसूत्र (1.2.11-13)-हरगोविन्द शास्त्री,पेज–17-21

156. प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास में सर्वमान्य हेतु है–
(A) प्रतिभा (B) अभ्यास
(C) व्युत्पत्ति (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–(i) काव्यप्रकाश (1/3)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

157. काव्यहेतवः सन्ति-
(A) प्रतिभा - व्युत्पत्ति - मोक्षाः
(B) धर्म - मोक्षः - कामाः
(C) धर्म - अर्थ - काम - व्युत्पत्तयः
(D) प्रतिभा - व्युत्पत्ति - अभ्यासाः
स्रोत–(i) काव्यप्रकाश (1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-1

158. 'उत्तमोत्तममध्यमाधमभेदेन चत्वारः' भेदाः प्रकीर्तिताः–
(A) भामहेन (B) कविराजविश्वनाथेन
(C) मम्मटेन (D) पण्डितराजजगन्नाथेन
स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-37

159. चार काव्यभेदों का निरूपण किया है?
(A) भामह ने (B) मम्मट ने
(C) जगन्नाथ ने (D) विश्वनाथ ने
स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-37

160. रससिद्धान्तस्य ''स्थिरं काव्यस्य जीवितम्'' अस्ति–
(A) वैचित्यम् (B) औचित्यम्
(C) सौभाग्यम् (D) लावण्यम्
स्रोत–औचित्यविचारचर्चा (1/5) - व्रजमोहन झा, पेज-4

161. ..... वाक्यं भवति?
(A) ध्वनिसमूहः (B) साकांक्षपदसमूहः
(C) शब्दसमूहः (D) वर्णसमूहः
स्रोत–तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री पेज-122

162. वामनमतानुसारेण काव्यास्यात्मा अस्ति?
(A) वृत्तिः (B) अलङ्कारः
(C) रसः (D) गुणाः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज–44

163. रसगङ्गाधरे काव्यलक्षणमस्ति–
(A) तददोषौ शब्दार्थौ काव्यम्
(B) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(C) गुणालङ्काररसान्वितः काव्यम्
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
स्रोत–रसगंगाधर (1/1) - मदनमोहन झा, पेज-10

164. विश्वनाथ कविराज किसके लेखक नहीं हैं?
(A) साहित्यदर्पण (B) काव्यप्रकाशदर्पण
(C) चन्द्रकला (D) चन्द्रालोक
स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर, भू0 पेज–III

149.(C) 150.(A) 151.(B) 152.(B) 153.(B) 154.(D) 155.(A) 156.(A) 157.(D) 158.(D)
159.(C) 160.(B) 161.(B) 162.(A) 163.(D) 164.(D) 165.(A)

4 Unit

पद्य-साहित्य

मेघदूतम् | रघुवंशम् | किरातार्जुनीयम्

महाकवि कालिदास का सामान्य परिचय

- **पत्नी** – विद्योत्तमा
- **श्वसुर** – शारदानन्द
- **मित्र** – लङ्का के राजा कुमारदास
- **समय** – ईसापूर्व प्रथम शताब्दी
- **जन्मस्थान** – उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **आश्रयदाता** – चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र** – ब्राह्मण
- **रचनायें कालक्रम की दृष्टि से**– 1. ऋतुसंहार (गीतिकाव्य), 2. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य), 3. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक), 4. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक), 5. मेघदूतम् (खण्डकाव्य), 6. रघुवंशम् (महाकाव्य), 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक)
- **उपासक** – शिव के
- **प्रिय छन्द** – उपजाति/अनुष्टुप्
- **प्रिय अलङ्कार** – उपमा
- **कालिदास की रीति एवं गुण** – वैदर्भी रीति एवं प्रसादगुण
- **कालिदास का प्रिय रस** – शृङ्गार रस
- **कालिदास की अन्य कृतियाँ**– (i) कालीस्तोत्र, (ii) गङ्गाष्टक, (iii) ज्योतिर्विदाभरण, (iv) राक्षसकाव्य, (v)श्रुतबोध

कालिदासीय जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन– **'अनावृतकपाटं द्वारं देहि'** (दरवाजा खोलो)
- इसके उत्तर में पत्नी **विद्योत्तमा** का कथन– **'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'** (लगता है कोई विद्वान् है)
- **'अस्ति' से कुमारसम्भवम्** – ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा...."
- **'कश्चित्' से मेघदूतम्** – ''कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा...."
- **'वाग्' से रघुवंशम्** – ''वागर्थाविव सम्पृक्तौ....."
- **विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न** थे, जिसमें से एक कालिदास भी थे–

धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह -शङ्कु-
वेतालभट्ट-घटकर्पर-कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

(ज्योतिर्विदाभरण 22-10)

- एक किंवदन्ती के अनुसार धारा के राजा भोज के प्रधानकवि कालिदास थे।
- एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास का अन्तिम समय लंका के महाराज कुमारदास के यहाँ बीता, वहाँ धन के लोभ में एक वेश्या ने उनकी **हत्या करा दी**।
- कालिदास ने वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, छन्दःशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि का गम्भीर अध्ययन किया था।
- बाद में राजकवियों को 'कालिदास' कहने की परम्परा चल पड़ी। **राजशेखर** ने ऐसे तीन कालिदासों का उल्लेख किया है–

एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु॥

- **कालिदास की उपाधियाँ**–(i) दीपशिखा कालिदास (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनीविलास (v) उपमासम्राट्
- महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में **''प्रथितयशसां भाससौमिल्ल....."** के द्वारा भास, सौमिल्ल आदि अपने पूर्ववर्ती कवियों को सादर स्मरण किया है।

कालिदास की प्रशस्तियाँ

1. निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।

– बाणभट्ट-हर्षचरित

2. साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये।
शिक्षासमयेऽपि मुदे रतलीला-कालिदासोक्ती।।

– गोवर्धनाचार्य-आर्यासप्तशती–35

3. कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः – **जयदेव-प्रसन्नराघवम्**
4. लिप्ता मधुद्रवेणासन् यस्य निर्विषया गिरः।
तेनेदं वर्त्म वैदर्भं कालिदासेन शोधितम्।।
– दण्डी-अवन्तिसुन्दरीकथा
5. अस्पृष्टदोषा नलिनीव दृष्टा, हारावलीव ग्रथिता गुणौघैः।
प्रियाङ्कपालीव प्रकामहृद्या, न कालिदासादपरस्य वाणी।।
– श्रीकृष्ण
6. ख्यातः कृतीसोऽपि च कालिदासः, शुद्धा सुधा स्वादुमती च यस्य।
वाणीमिषाच्चन्द्रमरीचिगोत्रसिन्धोः परं पारमवाप कीर्तिः।।
– सोड्ढल (उदयसुन्दरी कथा)
अमृतेनेव संसिक्ताश्चन्दनेनेव चर्चिताः।
चन्द्रांशुभिरिवोद्घृष्टाः कालिदासस्य सूक्तयः।।
– जयन्त-न्यायमञ्जरी
7. एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।।
–राजशेखर-सूक्तिमुक्तावली
8. वैदर्भी कविता स्वयं वृतवती श्रीकालिदासं वरम्। **–अज्ञात**
9. पुष्पेषु चम्पा नगरीषु काञ्ची, नदीषु गङ्गा नृवरेषु रामः।
नारीषु रम्भा पुरुषेषु विष्णुः, काव्येषु माघः कविकालिदासः।।
– घटकर्पर
10. महिषं दधि सशर्करं पयः कालिदासकविता नवं वयः।
शारदेन्दुरबला च कोमला स्वर्गशेषमुपभुञ्जते जनः।।
– आचार्य उद्भट
11. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या 'शकुन्तला'।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम्।। – **अज्ञात**
12. Wouldst thou the young year
blossoms and the fruits of its decline
And all by which the soul is charmed
enraptured, fearted, fed.
Wouldst thou the earth and heaven
itself in one sole name combine?
I name the, O' Shakuntala
And all atonce is said. – **(Goethe)**

(संस्कृत-अनुवाद)

13. वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद्, ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।
– (जर्मन कवि गेटे का अनुवाद) **वी. वी. मिराशी**
14. अस्मिन्निति विचित्रकविपरम्परावाहिनि-संसारे–
कालिदासप्रभृतयो द्वित्राः पञ्चषा वा महाकवय इति गण्यन्ते।
– आचार्य आनन्दवर्धन
15. वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते। – **अज्ञात**
16. उपमा कालिदासस्य – **उद्भट**
17. कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः यत्र याति शकुन्तला।। – **अज्ञात**
18. श्रीकालिदासकविवर्य-सरस्वतीयं
किं वर्णयाम्यतितरां रसवाहिनीति।
यत् कालिका भगवती शुचिभावयोगाद्
यस्यामहो मुहुरनुग्रहमादधाति।। – **विठोबा अण्णा**
19. पुरा कवीनां गणना-प्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावा-
दनामिका सार्थवती बभूव।। – **मल्लिनाथ**
20. रसभार-भारोद्भिन्नां भारतीममरादृते।
श्रीमतः कालिदासस्य विज्ञातुं कः क्षमः पुमान् – **स्थिरदेव**
21. स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः।।
– ऐहोल शिलालेख
22. कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती।
चतुर्मुखोऽथवा साक्षाद् विदुर्नान्ये तु मादृशाः।।– **मल्लिनाथ**
23. सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गति।
– क्षेमेन्द्र (सुवृत्ततिलक)
24. भासयत्यपि भासादौ कविवर्गे जगत्त्रयम्।
के न यान्ति निबन्धारः कालिदासस्य दासताम्।। **–अज्ञात**
25. ``Kalidas may be considered as the brightest star in the firmament of indian artificial poetry"
– Prof. Lassen
26. कवयः कालिदासाद्याः कवयो वयमप्यमी।
पर्वते परमाणौ च पदार्थत्वं प्रतिष्ठितम्।। – **अज्ञात**
27. वाल्मीकिमिव सभासं यशःशरीरेण सर्वदा सन्तम्।
रसवद्वचनविकासं नमत कविं कालिदासं तम्।। – **अज्ञात**
28. कविरचलः कविरभिनन्दश्च कालिदासश्च।
अन्ये कवयः कपयश्चापलमात्रं परं दधाति।। – **अज्ञात**
29. कवयः कवयः कवयोऽपि च कालिदासाद्याः।
दृषदो भवन्ति दृषदाश्चिन्तामणयोऽपि हा दृषदः।। – **अज्ञात**
30. मेघे माघे गतं वयः। – **मल्लिनाथ**
31. कालिदासादीनामिव यशः। – **मम्मट**
32. धन्वन्तरिक्षपणकाऽमरसिंहशंकु-वेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः।
– ज्योतिर्विदाभरण
33. महाकविकालिदासं वन्दे वाग्देवतागुरुम्।
यज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिम्बितम्।। – **हलायुध**
34. क इह रघुकारे न रमते। – **आलोचक**

1. मेघदूतम् (खण्डकाव्य/गीतिकाव्य)

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – खण्डकाव्य/गीतिकाव्य
- **दो भागों में**–(i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ
- **प्रधानरस** – विप्रलम्भशृङ्गार
- **छन्द** – मन्दाक्रान्ता
- **मेघदूतम् की रीति** – वैदर्भी रीति
- **उपजीव्य** – कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से एवं दूत की कल्पना वाल्मीकीयरामायण से
- **नायक** – यक्ष (हेममाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार
- **नायिका** – यक्षिणी (विशालाक्षी)
- **कथानक** – दूतकाव्य के रूप में एक 'गीतिकाव्य' है, जिसमें एक यक्ष का विरह वर्णित है।
- **50** से अधिक संस्कृत टीकायें।
- मल्लिनाथ की **(सञ्जीवनी टीका)**
- जर्मन विद्वान् **मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद** और **श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद** किया है।
- **आर्थर राइडर और एच. जी रूक** ने अंग्रेजी में मेघदूतम् का पद्यानुवाद किया है।
- हिन्दीभाषा में मेघदूतम् के **6 पद्यानुवाद** हो चुके हैं।
- क्षेमेन्द्र ने कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की–**'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता विराजते' –सुवृत्ततिलक**
- मेघदूत में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारों का सुन्दर प्रयोग है।
- डॉ. कीथ ने मेघदूत को **Elegy (शोकगीत)** कहा है।
- भारतीय मत में मेघदूत शोकगीत या करुणगीत न होकर **विरहगीत** या **विप्रलम्भगीत** है।
- **प्रमुखपात्र**–यक्ष (हेममाली) यक्षिणी (विशालाक्षी) मेघ (बादल) कुबेर (यक्षाधिपति)
- संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिमग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है।
- दक्षिणावर्तनाथ और मल्लिनाथ ने मेघदूत लिखने में रामायण से प्रेरणा मानी है।
- यक्ष को अलकाधीश्वर कुबेर ने जो शाप दिया उसका आधार पद्मपुराण है।
- वहाँ के योगिनी नामक आषाढ़-कृष्ण-एकादशी-महात्म्य-प्रसंग में यह कथा संक्षेप में है।
- 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' को भी मेघदूत का उपजीव्य माना जाता है।
- मेघदूत में 115 पद्य हैं। यह दो भागों पूर्वमेघ और उत्तरमेघ में विभक्त है।
- पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 पद्य हैं।
- मल्लिनाथ ने 115 पद्य स्वीकार किये हैं किन्तु 6 श्लोकों को प्रक्षिप्त माना है।
- मेघदूत का **मुख्य रस विप्रलम्भ शृङ्गार** है।
- पूरे मेघदूत में **मन्दाक्रान्ता छन्द** प्रयुक्त है।
- यक्षों के अधिपति कुबेर हैं। उन्होंने अपने कार्य में प्रमाद करने के कारण किसी अपने अनुचर 'यक्ष' को शाप दे दिया।
- यद्यपि कालिदास ने मेघदूत में कहीं भी इस यक्ष का नाम नहीं लिया परन्तु ब्रह्मवैवर्तपुराण में इस **यक्ष का नाम हेममाली तथा यक्षिणी का नाम विशालाक्षी** मिलता है।
- यक्ष अपनी पत्नी में आसक्ति के कारण अपने कार्य में प्रमाद करता है इसलिये कुबेर ने एक वर्ष तक अपनी पत्नी से वियुक्त रहने का शाप दिया।
- शाप के कारण नष्ट महिमा वाला **यक्ष रामगिरि में** रहता है।
- मेघदूत के आरम्भ में यक्ष अपने शापावधि के 8 माह काट चुका है और चार माह शेष हैं।
- मेघदूत का नायक **यक्ष धीरललित नायक** है। **यक्षिणी स्वकीया एवं पद्मिनी नायिका** है।
- मेघदूत में **प्रसाद एवं माधुर्य गुण** की प्रधानता है और **वैदर्भीरीति** प्रयुक्त है।
- **मेघः एव दूतः यस्मिन् काव्ये तत् 'मेघदूतम्'।**
  इस प्रकार 'मेघदूतम्' पद में बहुव्रीहि समास प्राप्त है।
- यक्षों के अधिपति **कुबेर की राजधानी 'अलका'** है। इसकी स्थिति हिमालय पर्वत श्रृंखला के कैलाश नामक शिखर पर बतलायी गयी है।
- **रामगिरि पर्वत** की स्थिति मल्लिनाथ तथा वल्लभ ने **चित्रकूट** मानी है जो बुन्देलखण्ड में है।
- प्रो. विल्सन ने नागपुर से कुछ दूरी पर स्थित रामटेक का प्राचीन नाम रामगिरि माना है।
- रामगिरि सीताजी के स्नान से पवित्र जल वाला तथा घने छायादार वृक्षों से युक्त है।
- आषाढ़ के पहले ही दिन यक्ष पर्वतों से क्रीड़ा करने वाले गजों के तुल्य 'मेघ' को देखता है।
- 'कश्चित्' पद ब्रह्म का वाचक (कः = ब्रह्म, चित् = ब्रह्म) है इस प्रकार दो बार श्रवण होने से मङ्गलाचरण हो जाता है।
- मेघदूत का मङ्गलाचरण **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।**
- प्रिया के वियोग के कारण दुर्बल यक्ष की कलाई से स्वर्णनिर्मित कङ्कन के गिरने से वह रिक्त कलाई वाला हो गया है।
- अपनी कुशलवार्ता अपनी प्रिया तक पहुँचाने के लिये, अपने निवेदन से पूर्व यक्ष कुटज (गिरिमल्लिका) के पुष्पों से मेघ को अर्घ्य देता है।
- धुआँ, अग्नि, जल एवं वायु से बने जड़ मेघ से भी वह कामार्तता के कारण सन्देश ले जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष, मेघ को विश्वविदित **पुष्कर और आवर्तक वंश** में उत्पन्न बताता है।
- यक्ष, मेघ को **इन्द्र का प्रमुख व्यक्ति** और स्वेच्छानुसार आकृति धारण करने में समर्थ बताता है।
- मेघ को सन्तप्तों का एकमात्र शरण बताता है और उसे सन्देश

लेकर अलका भेजना चाहता है। अलका के बाहरी उद्यान में स्थित भगवान् शिव के मस्तक पर सुशोभित चन्द्र की चाँदनी से वहाँ के महल धवल हैं।

- चातक (पपीहा) मेघ के बायीं ओर शब्द कर रहा है।
- गर्भाधान उत्सवकाल के परिचय से आकाश में बगुलियाँ पंक्तिबद्ध होकर मेघ का सेवन करती हैं।
- यक्ष को विश्वास है कि वियोग के दिनों की गणना में एकाग्रचित्त यक्षिणी को मेघ अवश्य देखेगा।
- यक्ष मेघ की भाभी (भ्रातृजाया) 'यक्षिणी' को कहता है।
- मानसरोवर जाने को उत्सुक तथा मार्ग में भूख मिटाने के लिये चोंच में मृणाल लिये हुए राजहंस मेघ के साथी होंगे।
- श्रीरामचन्द्र के चरणचिह्नों से युक्त रामगिरि से मेघ विदाई लेता है।
- मेघ 'उत्तरदिशा' की ओर मुख करके अपनी यात्रा का आरम्भ करता है।
- दिङ्नागाचार्य वसुबन्धु के शिष्य थे।
- मल्लिनाथ ने 'दिङ्नाग' को कालिदास का प्रतिद्वन्द्वी माना है। जिन पर कालिदास ने व्यङ्ग्य किया है।
- रामगिरि आश्रम 'गीले स्थल बेतों' से युक्त है।
- इन्द्रधनुष से युक्त श्यामल मेघ की उपमा गोपवेषधारी भगवान् श्रीकृष्ण से की गयी है।
- मेघ की यात्रा में सर्वप्रथम माल प्रदेश पड़ता है।
- थोड़ा पश्चिम में पड़ने वाले माल प्रदेश में वर्षा कर वहाँ की भूमि को सुगन्धित करता हुआ मेघ पुनः उत्तर की ओर चल देता है।
- मेघ ने आम्रकूट पर्वत की दावाग्नि पहले बुझाई थी इसलिये मित्रता के कारण आम्रकूट मेघ को सिर (चोटी) पर धारण करेगा।
- मेघ की यात्रा का **पहला पर्वत आम्रकूट** है। प्रो. विल्सन आधुनिक अमरकण्टक, जो नर्मदा का उद्गम है उसको ही आम्रकूट मानते हैं।
- आम्रकूट पके हुए आम्र से युक्त आम्र वृक्षों वाला पर्वत है।
- मेघ द्वारा चोटी पर आसीन हो जाने के कारण आम्रकूट पर्वत पृथ्वी के स्तन के समान शोभा प्राप्त करता है। जो देव-दम्पत्तियों द्वारा दर्शनीय है।
- आम्रकूट पर्वत के कुञ्ज वनवासियों की स्त्रियों द्वारा उपभुक्त हैं।
- मेघ के मार्ग में **पहली नदी रेवा (नर्मदा)** मिलती है जो विन्ध्य पर्वत की तलहटी में हाथी के शरीर पर बने चित्र के समान फैली है।
- नर्मदा का जल हाथियों के मदजल से सुगन्धित तथा जामुन के कुञ्जों से अवरुद्ध है।
- सिद्ध जनों की स्त्रियाँ मेघ के कम्पन से भयभीत होकर अपने प्रेमियों का आलिङ्गन करेगी।
- रेवा को पार कर मेघ दशार्ण देश पहुँचता है जिसे **विल्सन** ने आधुनिक छत्तीसगढ़ माना है। यह एक प्राचीन जनपद है। इसकी राजधानी 'विदिशा' थी।
- दशार्ण को **'दशदुर्गों का प्रदेश'** कहा जाता है।
- विदिशा वेत्रवती नदी के तट पर स्थित है।
- वेत्रवती नदी की उपमा भ्रूभङ्गयुक्त नायिका से की गयी है।
- आजकल भोपाल से 26 मील पर स्थित मालवा के 'भिलसा' नामक स्थान को ही विदिशा माना जाता है।
- विदिशा में मेघ **'नीचैः'** नामक पर्वत पर ठहरता है। यह पर्वत वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त सुगन्धित पदार्थों से युक्त गुफाओं वाला है।
- मेघ का मार्ग उज्जयिनी जाते हुए कुछ टेढ़ा होगा परन्तु तब भी यक्ष उसे वहाँ जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष का मानना है कि यदि उज्जयिनी की स्त्रियों की चञ्चल कटाक्षों के साथ मेघ ने क्रीड़ा नहीं किया तो वह ठगा गया।
- उज्जयिनी जाते हुए मेघ मार्ग में निर्विन्ध्या नदी से मिलता है जो पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी वाली है।
- निर्विन्ध्या अपनी भँवर रूपी नाभि दिखाती है और उसके द्वारा दिखाया गया विभ्रम ही प्रथम प्रणयवचन है।
- यक्ष कहता है निर्विन्ध्या को पार कर मेघ सिन्धु नदी के समीप पहुँचेगा जो मेघ के विरह में कृश हो गयी है और मेघ को वह उपाय करना चाहिए जिससे वह दुर्बलता त्याग दे।
- 'अवन्ती' में वृद्धजन वत्सराज उदयन की कथा कहा करते हैं।
- उज्जयिनी को **दैदीप्यमान स्वर्ग का टुकड़ा** कहा गया है। उज्जयिनी को विशाला भी कहा जाता है।
- वायु को 'शिप्रा नदी' के चाटुकार प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। इसी नदी के तट पर उज्जयिनी है।
- उज्जयिनी के बाजार को अत्यन्त वैभवशाली बताया गया है।
- उज्जयिनी में उदयन ने **महाराज 'प्रद्योत' की पुत्री वासवदत्ता** का अपहरण किया था।
- उज्जयिनी में प्रद्योत का स्वर्णमय ताल वृक्षों का वन था जिसे प्रद्योत के ही इन्द्र प्रदत्त **'नलगिरि' नामक हाथी** ने नष्ट कर दिया था।
- अलकापुरी के घोड़े पत्तों के समान श्याम वर्ण के हैं और वहाँ के योद्धागण रावण के तलवार से किये गये घावों के निशान को ही आभूषण मानते हैं।
- महाकाल के उद्यान गन्धवती नदी की वायु से कम्पित होते हैं।
- यक्ष महाकाल मंदिर पहुँचे मेघ को शाम के समय तक रुक कर शिव की सन्ध्या पूजन के समय नगाड़े का कार्य करने के लिये कहता है।
- मेघ के सायंकालीन जपाकुसुम के समान लाल रंग की कान्ति से ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने भगवान् शिव की गजासुर के काले चर्म को धारण करने की इच्छा पूरी कर दी।
- मेघ उज्जयिनी के महल की छतों पर रात्रि व्यतीत करता है।
- उज्जयिनी के पश्चात् मेघ के मार्ग में गम्भीरा नदी आती है।
- **ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः**। प्रसिद्ध

सूक्ति गम्भीरा नदी के वर्णन में आती है।
- यक्ष जल को 'गम्भीरा' का वस्त्र, किनारों को नितम्ब तथा बेंत की शाखाओं को उसका हाथ बताता है।
- जङ्गल के गूलरों को पकाने वाली वायु देवगिरि के मार्ग में बहती है।
- **देवगिरि** में निवास करने वाले **स्वामी कार्तिकेय** हैं। जिनका वाहन मयूर है। इनको **स्कन्द भगवान्** भी कहा जाता है।
- महाराजरन्तिदेव का यशरूप **चर्मण्वती (चम्बल)** नदी है।
- चर्मण्वती नदी पार करके मेघ 'दशपुर' की स्त्रियों के उत्सुकता का विषय बनेगा।
- दशपुर से बढ़ते हुए मेघ ब्रह्मवर्त प्रदेश होता हुआ महाभारत की युद्धभूमि कुरुक्षेत्र पहुँचेगा।
- बलराम महाभारत के युद्ध से विमुख रहे। उनकी पत्नी रेवती के आँखों की उपमा सरस्वती नदी से की गयी है। लाङ्गली बलराम का नाम है।
- सरस्वती नदी के जल का सेवन करके अंदर से पवित्र मेघ वर्ण मात्र से श्याम रह जायेगा। बलराम ने भी इसका जलपान किया था।
- कुरुक्षेत्र के आगे कनखल पर्वत के समीप पार्वती जी का उपहास करती सी गङ्गा नदी बहती है।
- गङ्गा का नाम 'जह्नुकन्या' प्रयुक्त है।
- कनखल हरिद्वार का समीपवर्ती माना जाता है।
- कनखल में मेघ की छाया गङ्गा में पड़ने पर प्रयाग के अतिरिक्त वहाँ भी सङ्गम (गङ्गा + यमुना) प्रतीत होगा।
- हिमालय पर मेघ शिव जी के बैल द्वारा उछाले गये कीचड़ की तुल्य शोभा को प्राप्त करेगा।
- हिमालय पर मेघ 'शरभों' को ओलों की वृष्टि से नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।
- हिमालय के किसी शिलातल पर भगवान् शिव के चरणों की सिद्ध जन पूजा करते हैं मेघ भी उनकी परिक्रमा करता है।
- हिमालय पर मेघ के मृदङ्ग जैसी आवाज से शिव का सङ्गीत पूर्ण हो जायेगा।
- हिमालय पर्वत पर क्रौञ्चरन्ध्र भगवान् परशुराम के पराक्रम का प्रमाण है।
- इसी रन्ध्र से हंस मानसरोवर जाते हैं।
- क्रौञ्चरन्ध्र से गुजरता हुआ मेघ राजा बलि को बाँधने के लिए उठाये गये विष्णु के पैर की तरह प्रतीत होगा।
- क्रौञ्चरन्ध्र का दूसरा नाम हंसद्वार है।
- क्रौञ्चरन्ध्र पार करके मेघ हिमालय का अतिथि बनेगा।
- हिमालय पर भ्रमण करती हुई पार्वती जी के लिये मेघ सीढ़ी का कार्य करता है।
- कैलाश पर देवस्त्रियाँ कङ्कणों के अग्रभाग से मेघ को फौव्वारा बना डालेंगी।
- हिमालय पर चीड़ वृक्षों के तनों की रगड़ से लगी आग को मेघ बुझाता है।

उत्तरमेघ

- उत्तरमेघ के प्रथम श्लोक में अलकानगरी की तुलना मेघ के साथ की गयी है।
- मेघ की बिजली की तुलना अलकापुर की स्त्रियों से, इन्द्रधनुष की तुलना सुंदर चित्रों से, मेघ के गर्जन की तुलना अलका में बजाये जाने वाले मृदङ्गों से, जलधारण की मणिजटित फर्शों से तथा मेघ की ऊँचाई की तुलना गगनचुम्बी शिखरों से की गयी है।
- अलका में सदैव छः ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं।
- अलका की स्त्रियाँ क्रीड़ा के लिये हाथों में कमल लिये रहती हैं, बालों में कुन्दपुष्प का तथा मुख पर लोध्रपुष्प का रज लगाये रहती हैं।
- वे जूड़ों में कुरबक का तथा कानों में सुन्दर शिरीष पुष्प लगाकर और माँग में कदम्ब पुष्प सजाती हैं।
- अलका में नित्य फूल खिलते हैं और रात्रियाँ सदैव चाँदनीयुक्त रहती हैं।
- अलका में यक्ष सदैव ही युवावस्था को प्राप्त रहते हैं वहाँ अन्य अवस्थाएँ नहीं हैं।
- कुबेर को रावण का भाई माना जाता है इन्हीं का पुष्पक विमान रावण के पास था।
- कल्पवृक्ष से रतिफल नामक मद्य प्राप्त होता है जिसका सेवन 'यक्षगण' मृदङ्ग आदि के ध्वनि के साथ करते हैं।
- आकाशगङ्गा (मन्दाकिनी) के जल से शीतल तथा किनारे पर मन्दार के वृक्षों से प्राप्त छाया में यक्ष कन्यायें स्वर्णिम बालुका में मणि छिपाने का खेल खेलती हैं।
- चन्द्रमा की किरणों से पिघलायी गयी झालरों में लटकी चन्द्रकान्त मणि स्त्रियों के सुरतजन्य थकावट को दूर करती है।
- अलका के बाह्य उद्यान का नाम **'वैभ्राज'** है।
- कामदेव भगवान् शङ्कर के डर से अपने भौरों की डोरी वाले धनुष का प्रयोग नहीं करता। स्त्रियों के चितवन से काम चलाता है।
- अलका में अलङ्करण की समस्त सामग्री एकमात्र कल्पवृक्ष प्रदान करता है।
- यक्ष का घर **कुबेर के घर से उत्तर दिशा में** स्थित है।
- यक्ष के घर में इन्द्रधनुष के सदृश रंग-बिरंगा फाटक लगा है।
- यक्ष के घर के समीप उसकी पत्नी द्वारा दत्तक पुत्र की तरह पाला गया पुष्पगुच्छ से युक्त मन्दारवृक्ष है।
- रावण की तलवार का नाम **'चन्द्रहास'** है।
- यक्ष के घर में मरकतमणि की शिलाओं से निर्मित सीढ़ी वाली बावली है।
- यहाँ के हंस वर्षाकाल में भी मानसरोवर नहीं जाते।
- उस बावली के किनारे पर नीलम नामक मणियों से बने शिखरवाला क्रीड़ाशैल है। इस पर सुन्दर केले की बाड़ है।

- क्रीड़ाशैल पर रक्त अशोक और मौलश्री (वकुल) नाम के दो वृक्ष हैं।
- क्रीड़ा शैल पर माधवीलता का कुञ्ज है।
- अशोक यक्षिणी के 'बायें पैर' और बकुल 'मुख की मदिरा' के अभिलाषी हैं।
- दोनों वृक्षों के मध्य में मरकत मणि की वेदी है।
- शैल पर ही स्फटिक के पटरे वाली सोने की वासयष्टि (अड्डा) है जहाँ मोर सायंकाल में बैठता है।
- यह मयूर यक्षिणी की तालियों और कंगनों द्वारा नचाया गया है।
- यक्ष के द्वार के दोनों तरफ **शंख और पद्म का चित्र** बना है।
- 'मेघ' अलकापुरी में यक्ष के घर में बने क्रीड़ा शैल पर बैठता है और जुगनुओं की पंक्ति की सदृश मन्द प्रकाश यक्ष के घर में डालता है।
- यक्ष 'यक्षिणी' को युवतियों की रचना के विषय में ब्रह्मा की प्रथम कृति बताता है।
- यक्ष के घर पर पिंजड़े में **मैना** पाली गयी है।
- यक्ष मेघ से कहता है वह यक्षिणी को देवपूजा करते अथवा यक्ष का चित्र बनाते या मैना से बात करते देखेगा।
- यक्षिणी वीणा बजाते हुए गीत गाने का प्रयत्न करती है।
- यक्षिणी देहली के पुष्पों को भूमि पर रखकर विरह के दिनों की गणना करती है।
- यक्षिणी विरह के दिनों में भूमि पर ही सोती है।
- यक्ष मेघ से खिड़की पर बैठकर यक्षिणी को देखने के लिये कहता है।
- मेघ के पहुँचने पर यक्षिणी की बायीं आँख फड़कती है।
- मेघ अपने जल बिन्दुओं से शीतल बने वायु से यक्षिणी को जगाता है।
- यक्ष के शाप का अंत हरिप्रबोधिनी या देवोत्थान एकादशी के दिन होता है।
- उसी दिन भगवान् विष्णु अपनी शेष शय्या से उठेंगे।
- यक्ष मेघ को पहचान (चिह्न) के रूप में यक्षिणी के साथ घटित एक घटना को बताता है।
- अंतिम श्लोक में यक्ष मेघ के लिये यह कामना करता है कि उसका उसकी पत्नी 'बिजली' के साथ कभी वियोग न हो।
- मेघदूत पर 50 से अधिक टीकाएं लिखी जा चुकी हैं।

मेघदूत की प्रमुख सूक्तियाँ (पूर्वमेघ)

1. कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। 5॥
भावार्थ – काम से व्याकुल (जन) चेतन एवं अचेतन के विषय में स्वभाव से ही दीन हो जाते हैं।

2. याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥ 6॥
भावार्थ – अधिक गुण वाले व्यक्ति से की गयी याचना फलवती न होने पर भी उत्तम है, नीच व्यक्ति से फलीभूत हुई याचना भी अच्छी नहीं है।
- यहाँ अधिक गुण वाला 'मेघ' है।

3. आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥ 9॥
भावार्थ – आशा का बन्धन ही प्रेम से ओत-प्रोत, पुष्प सदृश कोमल तथा वियोग से शीघ्र टूटने वाले अबलाओं के हृदय को प्रायः रोके रहता है।

4. न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥ 17॥
भावार्थ – नीच व्यक्ति भी पहले किये गये उपकार के कारण मित्र से विमुख नहीं होता फिर जो महान् है वह कैसे (विमुख होगा)?
- आम्रकूट के मित्र मेघ के आम्रकूट पर्वत पर अतिथि रूप में पहुँचने पर यह सूक्ति कही गयी है।

5. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय॥ 20॥
भावार्थ – सभी रिक्त पदार्थ हल्के तथा पूर्णता गौरव के लिये होती है।

6. स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥ 29॥
भावार्थ – स्त्रियों का प्रिय के प्रति विलास प्रारम्भिक प्रार्थना वाक्य होता है।
- मेघ के प्रति निर्विन्ध्या द्वारा दिखाये गये विभ्रम के संदर्भ में।

7. ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः॥ 45॥
भावार्थ – रस का अनुभव किया हुआ कौन-सा पुरुष जंघा प्रदेश को प्रकट करने वाली स्त्री का परित्याग करने में समर्थ होगा।
- ज्ञातास्वाद से मेघ का और विवृतजघना से गम्भीरा का संकेत।

8. आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्॥ 57॥
भावार्थ – श्रेष्ठ जनों की सम्पत्तियाँ आर्त्तजनों के कष्टों को दूर कर देने वाली होती है।
- हिमालय की दावाग्नि को मेघ बुझाता है अतः उसे 'उत्तम' कहा गया है।

9. के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः॥ 58॥
भावार्थ – निष्फल कर्म में प्रयत्न करने वाले कौन से व्यक्ति तिरस्कार के पात्र नहीं होते (अर्थात् अवश्य होते हैं)
- मेघ पर आक्रमणरूपी निष्फल प्रयास करने वाले 'शरभों' के संदर्भ में।

उत्तरमेघ की प्रमुख सूक्तियाँ

1. सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्॥ 20॥
भावार्थ – सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल निश्चित रूप से अपनी शोभा को धारण नहीं करता।

2. प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा॥ 35॥
भावार्थ – प्रायः सभी कोमल हृदय वाले व्यक्ति दयालु स्वभाव वाले होते हैं।

3. कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः॥ 40॥
भावार्थ – मित्र से लिया गया प्रियतम का संदेश स्त्रियों के लिये मिलने से कुछ ही कम होता है।

4. नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥ 49॥

भावार्थ – सुख-दुःख की दशा पहिए की धार (तीलियों) के समान ऊपर-नीचे होती रहती है।

5. प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥ 54॥

भावार्थ – प्रेमी याचकों के अभीष्ट प्रयोजन को सिद्ध करना ही सज्जनों का उत्तर होता है।

मेघदूतम्-बिन्दुवार अध्ययन

- ऋतुओं का वर्णन किसमें पाया जाता है? - **ऋतुसंहार में**
- ऋतुसंहार है - **गीतिकाव्य**
- ऋतुसंहारे कियद् ऋतूनां वर्णनमस्ति - **6 (षट्)**
- महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'ऋतुसंहार' कहलाता है - **गीतिकाव्य**
- राजन्ते ऋतुसंहारे सर्गाः कति वदाधुना - **षट्**
- मेघदूतम् के रचयिता हैं? - **कालिदास**
- कालिदास द्वारा विरचित खण्डकाव्य है? - **मेघदूतम्**
- मेघदूतम् के कथानक का मूलस्रोत है? - **कविकल्पित**
- 'कालिदासस्य गीतिकाव्ये विरहव्यथा' वर्णिता - **यक्षस्य**
- मेघदूत किस विधा की रचना है? - **गीतिकाव्य**
- 'मेघदूतम्' किस श्रेणी का काव्य है? - **दूतकाव्य**
- मेघदूत है - **खण्डकाव्य**
- खण्डकाव्य है - **मेघदूतम्**
- मेघदूत में किस छन्द का प्रयोग है? - **मन्दाक्रान्ता**
- 'मेघदूतम्' में किसको संस्कृत साहित्य में एक नवीन काव्यप्रकार की उद्भावना का श्रेय प्राप्त है जो इस नाम से विख्यात है - **सन्देशकाव्य**
- मेघदूतोपरि मल्लिनाथेन विरचिता टीका ..... अस्ति? - **सञ्जीवनी**
- मेघदूते कुबेरेण निर्वासितो यक्षः कुत्र वसतिं चक्रे? - **रामगिर्याश्रमेषु**
- मेघदूतम् का प्रधान रस है? - **विप्रलम्भ शृङ्गाररस**
- केवलं मन्दाक्रान्ताच्छन्दसि निबद्धम् - **मेघदूतम्**
- मेघदूतम् में प्रयुक्त छन्द के प्रत्येक चरण में कितने अक्षर होते हैं- **17**
- मेघदूतम् का अङ्गीरस है - **वियोग शृङ्गार**
- मेघदूतम् की कथावस्तु विभक्त है - **खण्डों में**
- मेघदूतम् कितने भागों में विभक्त है - **दो**
- मेघदूतम् का प्रमुख पात्र है - **यक्ष**
- यक्ष का स्वामी कौन था? - **कुबेर**
- यक्ष को कितनी अवधि के लिये अपनी पत्नी से दूर रहना था? - **एक वर्ष**
- मेघदूतम् का नायक है? - **यक्ष**
- मेघदूतम् में यक्ष शापित है - **कुबेर के द्वारा**
- विरही यक्ष कहाँ निवास कर रहा था? - **रामगिरि पर्वत में**
- यक्ष की विरहकथा किस ग्रन्थ में वर्णित है?- **मेघदूत में**
- यक्ष ने मेघ को किस मास के प्रथम दिन को देखा था - **आषाढ़ के प्रथम दिन**
- पुराणों में 'मेघदूतम्' के विरही यक्ष का नाम मिलता है -**हेममाली**
- विरहिणी यक्षिणी कहाँ निवास कर रही थी?- **अलकापुरी**
- मेघदूते कस्याः नगर्याः वर्णनमस्ति - **उज्जयिन्याः**
- कस्य काव्ये मेघः दूतभावेन कल्पितः - **कालिदासस्य**
- कस्य काव्यस्यारम्भः 'कश्चित्' पदेन भवति? -**मेघदूतस्य**
- 'तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तःस कामी' मेघदूत की इस पंक्ति के आगे की पंक्ति कौन-सी है? -**नीत्वा मासान्कनकवलय-भ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः**
- मेघदूतम् के अनुसार कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे? - **राजहंस**
- 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' इसमें 'जन' शब्द किसका बोधक है - **यक्षिणी का**
- मेघदूत में मेघ को कितने पदार्थों का सम्मिश्रण कहा गया है? - **चार**
- कालिदास के अनुसार चेतन और अचेतन में कृपण कौन है? - **कामार्त**
- 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' इसमें 'अधिगुण' शब्द से किसका बोध होता है - **मेघ का**
- मेघ की यात्रा के समय वामपार्श्व में किसकी ध्वनि होती है? - **चातक की**
- मेघदूतम् में किस राजा का उल्लेख मिलता है - **उदयन का**
- ''तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी''– यहाँ 'अद्रौ' का तात्पर्य है - **पर्वत से**
- 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' प्रस्तुत श्लोकांश में 'सन्निपात' का अर्थ है - **मेघ समूह से**
- मेघदूत में वर्णित 'पुष्करावर्तक' है - **मेघों का कुल**
- 'सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसाः दशार्णाः', यहाँ 'दशार्णाः' है एक - **देश**
- मेघदूतम् में 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः' है? - **मेघ**
- 'प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' होते हैं - **कामार्ताः**
- राजहंस कहाँ जाने को उत्सुक हैं? - **मानसरोवर**
- यक्ष के विरह का कितना समय बीत चुका है?- **आठ माह**
- ''इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा'' यहाँ 'सा' से तात्पर्य है - **यक्षिणी**
- यक्ष को शाप किसने दिया था? - **कुबेर**
- 'मेघदूतम्' में चेतन और अचेतन में कौन भेद नहीं कर पाते हैं? - **कामार्त**
- ''यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु'' इस श्लोकांश में 'जनकतनया' कौन है - **सीता**
- कालिदास के अनुसार निम्नलिखित में से किससे मेघ का सम्पर्क नहीं है - **वृक्ष से**

- स्त्रियों का पहला प्रणयवचन क्या होता है - **स्त्रियों का हाव-भाव या विभ्रमप्रदर्शन करना**
- 'शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ'- यहाँ 'शार्ङ्गपाणौ' का अर्थ है **-भगवान् विष्णु**
- 'जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्' प्रस्तुत पंक्ति में 'जीमूतेन' का अभिप्राय है - **बादल से**
- मेघदूत के प्रथम श्लोक में 'वर्षभोग्येण' शब्द आया है। यहाँ पर 'न' को 'ण' किस सूत्र से हुआ है?- **कुमति च**
- स्त्रियों का आशाबन्ध कैसा होता है? - **कुसुमसदृश**
- सबसे अधिक लघु (हल्का) कौन होता है?- **रिक्त (मेघ)**
- विदिशा नगरी में कौन-सी नदी थी? - **वेत्रवती**
- 'कृतान्तः' का अर्थ है - **दैव (भाग्य)**
- मेघदूतम् में मेघ को किस नदी से जल ग्रहण करने की सलाह दी गयी है? - **नर्मदा (रेवा)**
- 'मेघदूतम्' में यक्ष के शापान्त की अवधि मानी गयी है- **चार माह**
- 'मेघदूतम्' काव्य में नायक विरही यक्ष को किस कारण से अपनी नायिका से दूर जाना पड़ा? - **अपने कर्त्तव्य पालन में भूल करने के कारण शापवश**
- विन्ध्याचल की तलहटी में बहने वाली नदी है- **नर्मदा (रेवा)**
- यक्ष के प्रवास की अवधि क्या थी? - **एक वर्ष**
- मेघदूतम् में यक्ष के शाप के अवसान का दिन था - **देवप्रबोधिनी एकादशी**
- 'कुन्द' का पुष्प होता है - **सफेद**
- 'शूली' का अर्थ है - **शिव**
- 'कान्तोदन्त' का अर्थ है - **प्रियतम का वृत्तान्त**
- उज्जयिनी में स्थित शिवलिङ्ग का क्या नाम है?- **महाकाल**
- किस काव्य में अलकापुरी का वर्णन प्राप्त होता है- **मेघदूतम्**
- मेघदूतम् की यक्षिणी शापदिवसों की गणना किससे करती है? - **पुष्पों से**
- 'शफर' से अभिप्राय है- **जल में चमकने वाली एक छोटी मछली**
- मेघदूतम् में यक्ष 'वक्रः पन्था यदपि भवतः' कहकर मेघ से किस नगरी में जाने का अनुरोध करता है? - **उज्जयिनी**
- आसु कस्याः नद्याः उल्लेखो मेघदूते नास्ति? - **तुङ्गभद्रायाः**
- कालिदास का जन्मस्थान अधिकांश विद्वान् उनके ग्रन्थों में वर्णित सामग्री के आधार पर उज्जयिनी मानते हैं। - **वक्रः पन्था यदपि भवतः**
- पूर्वमेघ में भी कुछ श्लोकों से इसी अभिप्राय की ओर संकेत मिलता है। निम्नलिखित में से किस श्लोक को उनमें प्रमुख रूप से सम्मिलित किया जाता है। - **प्रस्थितस्योत्तराशाम्**
- मेघदूत मे किस नगरी का उल्लेख मिलता है? - **अलका**
- 'हरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या' रूपेण वर्णिता नगरी अस्ति- **अलका**
- मेघदूते 'राजराजस्य दध्यौ' इतिपद्ये 'राजराजस्य' इति पदेनाभिहितोऽस्ति - **कुबेरः**
- अलकापुर्याः वर्णनं कुत्र प्राप्यते - **मेघदूते**
- कालिदास ने किस ग्रन्थ में अमरकण्टक के सौन्दर्य का चित्रण किया है? - **मेघदूतम्**
- विदिशा ..... नदी के तट पर स्थित है- **बेतवा**
- मेघदूते 'यक्षेश्वराणां वसतिः' का वर्णिता? - **अलका**
- अलकापुरी केषां वसतिः? - **यक्षेश्वराणाम्**
- मेघदूते 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' इत्युल्लेखतः परिचितो भवति - **रामगिर्याश्रमः**
- 'वक्रः पन्था यदपि' इति पङ्क्त्या का नगरी ज्ञाता भवति? - **उज्जयिनी**
- मेघदूते इयं नगरी नास्ति वर्णिता - **वाराणसी**
- कविसमयानुसारेण वर्षाकाले के मानसं यान्ति? - **हंसाः**
- 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'। किसने यह लिखा है? - **कालिदास**
- मेघदूतम् में 'दिङ्नाग' कौन हैं? - **बौद्ध**
- प्रसिद्ध टीकाकार, मल्लिनाथ के अनुसार मेघदूतम् में कितने पद्य हैं? - **115**
- मेघदूतम् के प्रारम्भ में निम्न में से किस प्रकार का मङ्गलाचरण किया गया है? -**वस्तुनिर्देशात्मक**
- अलकापुरी में यक्ष का घर कुबेर के महल से किस दिशा में मेघदूतम् में बताया गया है? - **उत्तर**
- 'मेघदूतम्' में मेघ के मार्ग में निम्नलिखित में से क्या नहीं है? - **अयोध्या**
- मेघदूतम् अस्मिन् गीतिकाव्ये का जह्नुकन्या?- **गङ्गा**
- ''न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः।'' उपर्युक्त में कौन सा छन्द है? - **मन्दाक्रान्ता**
- 'कान्ताविरहगुरुणा' इत्यत्र कति पदानि सन्ति? - **एकम्**
- ''कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'' - यह पंक्ति किस ग्रन्थ से है? - **मेघदूतम्**
- ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'' का सम्बन्ध किस ग्रन्थ से है? - **मेघदूतम्**
- निम्नांकित में कौन-सी सूक्ति मेघदूतम् से सम्बद्ध नहीं है - **अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते।**
- 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' यह पंक्ति कहाँ से उद्धृत है। - **मेघदूतम्**
- ''प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार'' कुत्रेयमुक्तिः। - **मेघदूते**
- मेघदूतम् काव्य का खड़ी बोली मे अनुवाद किया है?

- **राजा लक्ष्मण सिंह ने**

➤ ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु''
सूक्ति किस ग्रन्थ में है? - **मेघदूतम् में**

➤ ''न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः''
उपर्युक्त सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **मेघदूतम् से**

➤ ''के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः''
यह सूक्ति इस रचना से उद्धृत है - **मेघदूतम्**

➤ ''जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्' यह उक्ति है- **मेघदूते**

➤ ''वेणीभूतप्रतनुसलिलातामतीतस्य सिन्धुः'' इयं पंक्तिः अस्ति - **मेघदूतस्य**

➤ ''प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः''
यह श्लोकांश उद्धृत है - **मेघदूतम् से**

➤ ''कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण'' इस श्लोक का सन्देश है - **सुख-दुःख परिवर्तनशील है।**

➤ कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।
उपर्युक्त श्लोकांश किस ग्रन्थ में मिलता है? - **मेघदूतम्**

➤ ''सद्यः पाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि''
– इस सूक्ति वाला ग्रन्थ है -**मेघदूतम्**

➤ ''श्यामास्वङ्गं चकितहरिणी प्रेक्षणे दृष्टिपातं.....''
इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते? - **मेघदूते**

➤ 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' कुतः उद्धृतम् - **मेघदूतम्**

➤ 'मेघे माघे गतं वयः' कस्येयमुक्तिः? - **मल्लिनाथस्य**

➤ विप्रलम्भशृङ्गारः अङ्गीरसः भवति अस्मिन् काव्ये - **मेघदूते**

➤ 'तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी'
पंक्ति का सम्बन्ध किस काव्य से है? - **मेघदूतम्**

➤ 'कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाऽचेतनेषु' इति उक्तिः विद्यते?- **मेघदूते**

➤ ''कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा''
– इत्यंशः कस्य ग्रन्थस्य प्रथमे श्लोके विद्यते - **मेघदूतस्य**

➤ 'त्वत्सम्पर्कात् पुलकितमिव प्रौढपुष्पैः कदम्बैः।'
इत्यस्मिन् पद्यांशे कः अर्थालङ्कारः अस्ति? - **उत्प्रेक्षा**

➤ 'या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम्।'
इत्यस्य कः शब्दः श्लेषयुक्तः अस्ति? - **उच्चैर्विमाना**

अभ्यास प्रश्न (मेघदूतम्)

1. मेघ की पत्नी है–
(A) अभिसारिका (B) विशालाक्षी
(C) विद्युत् (D) उज्जयिनी नगरी

2. ''ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्'' यह किसके कथन का अनुवाद है–
(A) मैक्समूलर (B) क्षेमेन्द्र
(C) गेटे (D) डॉ0 कीथ

3. कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की है–
(A) मल्लिनाथ ने (B) जयदेव ने
(C) दण्डी ने (D) क्षेमेन्द्र ने

4. 'भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः' इति कथनं कस्य अस्ति–
(A) जयदेवस्य (B) बाणस्य
(C) राजशेखरस्य (D) मल्लिनाथस्य

5. सुमेलित करें–

कथनम्	**वक्ता**
(1) ''पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः''	(क) मल्लिनाथ
(2) 'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु''	(ख) उद्भट
(3) ''शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु''	(ग) बाणः
(4) ''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्''	(घ) राजशेखर

(A) (1) क (2) ग (3) ख (4) घ
(B) (1) घ (2) क (3) ख (4) ग
(C) (1) क (2) ग (3) घ (4) ख
(D) (1) क (2) ख (3) घ (4) ग

1. (C) 2. (C) 3. (D) 4. (A) 5. (C)

6. किस नदी समूह का वर्णन मेघदूतम् में नहीं मिलता है–
(A) वेत्रवती, क्षिप्रा, गम्भीरा
(B) रेवा, निर्विन्ध्या, गन्धवती
(C) गङ्गा, यमुना, सरस्वती
(D) चर्मण्वती, कावेरी, ब्रह्मपुत्र

7. पूर्वमेघ में कालिदास किस नगरी का सर्वोत्कृष्ट वर्णन करते हैं–
(A) अलका का (B) उज्जयिनी का
(C) दशपुर का (D) विदिशा का

8. किस पर्वत समूह का वर्णन कालिदास ने अपने मेघदूतम् में नहीं किया है–
(A) आम्रकूट और कैलास (B) हिमालय और विन्ध्य
(C) देवगिरि और रामगिरि (D) नीचैगिरि और उच्चैगिरि

9. सुमेलित करें– कथनम् वक्ता
(1) कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती (क) श्रीकृष्णः
(2) कालिदासकविता नवं वयः (ख) मम्मटः
(3) कालिदासादीनामिव यशः (ग) मल्लिनाथः
(4) न कालिदासादपरस्य वाणी (घ) उद्भटः
(A) (1) ग (2) घ (3) ख (4) क
(B) (1) ग (2) क (3) ख (4) घ
(C) (1) क (2) ख (3) ग (4) घ
(D) (1) घ (2) ग (3) ख (4) क

10. 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' यह सूक्ति है–
(A) पूर्वमेघ में (B) उत्तरमेघ में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) शृङ्गारशतकम् में

11. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' यह कथन है–
(A) पूर्वमेघ के 5वें श्लोक में
(B) पूर्वमेघ के 6वें श्लोक में
(C) पूर्वमेघ के 7वें श्लोक में
(D) पूर्वमेघ के चतुर्थ श्लोक में

12. 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' कालिदास ने इन सुन्दर वचनों को कहा है–
(A) पूर्वमेघ के पूर्वार्द्ध में (B) उत्तरमेघ के उत्तरार्ध में
(C) उत्तरमेघ के पूर्वार्द्ध में (D) पूर्वमेघ के उत्तरार्ध में

13. मेघदूतम् में किस देव का वर्णन नहीं मिलता है–
(A) राम और सीता (B) शिव, पार्वती और कार्तिकेय
(C) विष्णु और बलराम (D) ब्रह्मा, नारद और सन्तोषी

14. यक्ष मेघ का प्रथम दर्शन कहाँ करता है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) अलकापुरी में (D) विन्ध्यपर्वत में

15. कालिदास का मेघ रूपी दूत की कल्पना प्रेरित है–
(A) महाभारत से (B) वाल्मीकिरामायण से
(C) भागवतपुराण से (D) वेदों से

16. किस ग्रन्थ में एकमात्र मन्दाक्रान्ता छन्द का ही प्रयोग मिलता है–
(A) गीतगोविन्दम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मेघदूतम् में (D) रघुवंशम् में

17. सम्पूर्ण मेघदूतम् में किस रस का रसास्वादन होता है–
(A) सम्भोगशृङ्गार का (B) विप्रलम्भशृङ्गार का
(C) करुणरस का (D) शान्तरस का

18. पुराणों में प्राप्त विरही यक्ष के उपयुक्त नाम की कल्पना करें–
(A) विरहदेवः (B) विशालाक्षी
(C) कुमारगन्धर्व (D) हेममाली

19. महाकवि कालिदास ने मेघदूतम् के कथानक को कहाँ से लिया होगा–
(A) भागवतपुराण (B) वायुपुराण
(C) ब्रह्मवैवर्तपुराण (D) इनमें से कोई नहीं

20. रामगिरि पर्वत में यक्ष कितने महीने व्यतीत कर चुका है–
(A) नव माह (B) चार माह
(C) आठ माह (D) दश माह

21. गीतिकाव्य या खण्डकाव्य के रूप में सर्वप्रथम गणना होती है–
(A) गीतगोविन्दम् की (B) वाल्मीकिरामायणम् की
(C) गीता की (D) मेघदूतम् की

22. उदयन या वासवदत्ता की प्रेमकथायें कही जाती हैं–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) विदिशा में

23. मेघदूतम् में सर्वप्रथम किस नदी का वर्णन है–
(A) रेवा (नर्मदा) नदी का (B) वेत्रवती नदी का
(C) निर्विन्ध्या नदी का (D) शिप्रा नदी का

24. शिप्रा नदी के तट पर स्थित महाकाल का मन्दिर किस नगरी में अवस्थित है–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) चित्रकूट में

6. (D) 7. (B) 8. (D) 9. (A) 10. (A) 11. (B) 12. (B) 13. (D) 14. (A) 15. (B) 16. (C)
17. (B) 18. (D) 19. (C) 20. (C) 21. (D) 22. (B) 23. (A) 24. (B)

25. मल्लिनाथ के अनुसार सम्पूर्ण मेघदूतम् में प्रक्षिप्त श्लोकों सहित कुल पद्यों की संख्या है–
(A) लगभग 121 (B) लगभग 132
(C) लगभग 152 (D) लगभग 102

26. कालिदास किस देवता के उपासक माने जाते हैं–
(A) विष्णु के (B) शिव के
(C) शक्ति के (D) राम के

27. भौगोलिक स्थानों के वर्णन से परिपूर्ण ग्रन्थ है–
(A) आभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

28. ''अनावृतकपाटं द्वारं देहि'' यह कथन है–
(A) कालिदास का (B) विद्योत्तमा का
(C) शारदातनय का (D) कालीदेवी का

29. महाकवि कालिदास के श्वसुर माने जाते हैं–
(A) शारदानन्द (B) ब्रह्मानन्द
(C) शिवानन्द (D) विद्यानन्द

30. ''अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'' विद्योत्तमा का यह कथन किसके लिए कहा गया–
(A) अपने पिता के लिए
(B) शास्त्रार्थ में आए पण्डितों के लिए
(C) मूर्ख कालिदास के लिए
(D) माँ काली की कृपा प्राप्त कालिदास के लिए

31. ''मा कौलीनादसितनयने मय्यविश्वासिनी भूः'' यहाँ 'कौलीनात्' पद का अर्थ है–
(A) यक्षिणी (B) कुलीन वर्ग
(C) लोकापवाद (D) कुलपरम्परा

32. ''अङ्गेनाङ्गं प्रतनु तनुना'' यहाँ 'प्रतनु' पद में विभक्ति एवं वचन है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) मूलप्रातिपदिक (D) अव्ययपदम्

33. 'अम्बुवाहम्' पद का अर्थ है–
(A) अभ्र (B) जलमुक्
(C) बादल (D) उपर्युक्त सभी

34. 'प्रक्रमेथाः' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) प्र + क्रीम् + तिप् + विधिलिङ्
(B) प्र + क्रम् + सिप् + विधिलिङ्
(C) प्र + कृ + थ + लोट्
(D) प्र + की + सिप् + लट्

35. 'सहस्व' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) सह+सिप्+विधिलिङ् (B) सह+तिप्+लोट्
(C) सह+थास्+लोट् (D) सह+सिप्+लृट्

36. ''तस्योत्सङ्गे निहितमसकृद् दुःखदुःखेन गात्रम्'' यहाँ 'असकृत्' पद का अर्थ है–
(A) एक बार (B) बार-बार
(C) कभी-कभी (D) सम्पूर्ण

37. 'पेशलम्' पद का शब्दार्थ है–
(A) सुन्दर अथवा कोमल (B) आँसू
(C) नवीन (D) कठोर

38. 'विगलितशुचा' में विभक्ति एवं वचन है–
(A) तृतीया एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) प्रथमा एकवचन (D) प्रथमा बहुवचन

39. 'या शिखा दाम हित्वा' यहाँ 'दाम' शब्द का अर्थ है–
(A) माला (B) मूल्य
(C) सर्प (D) वियोग

40. 'गत्वा सद्यः कलभतनुतां शीघ्रसम्पातहेतोः' यहाँ 'कलभ' शब्द प्रयुक्त है–
(A) सिंह के बच्चे के लिए (B) गीदड़ के बच्चे के लिए
(C) हाथी के बच्चे के लिए (D) कमल के फूल के लिए

41. यक्ष के घर में है–
(A) वापी (B) क्रीडाशैल
(C) मन्दारवृक्ष (D) सभी

42. अलकापुरी स्थित कुबेर के उद्यान का नाम है–
(A) नन्दनोद्यान (B) आनन्दोद्यान
(C) कुमुदोद्यान (D) वैभ्राजोद्यान

43. ''हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धम्'' इस पंक्ति में वर्णन है–
(A) उज्जयिनी की वनिताओं का
(B) अलकापुरी की कामिनियों का
(C) विदिशा की सुन्दरियों का
(D) दशार्ण की कन्याओं का

25. (A) 26. (B) 27. (B) 28. (A) 29. (A) 30. (D) 31. (C) 32. (B) 33. (D) 34. (B) 35. (C)
36. (B) 37. (A) 38. (A) 39. (A) 40. (C) 41. (D) 42. (D) 43. (B)

44. ''प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा'' यह सूक्ति है–
(A) उत्तरमेघ की
(B) पूर्वमेघ की
(C) हंसदूत की
(D) पूर्वमेघ के अन्तिम श्लोक की

45. मेघदूतम् की अन्तिम पंक्ति है–
(A) मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः
(B) इष्टान् देशान् जलद विचर प्रावृषा संभृतश्रीः
(C) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण
(D) सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्

46. मेघदूतम् का नायक है–
(A) कुबेर (B) मेघ
(C) यक्ष (D) शिव

47. यक्ष शाप की एक वर्ष की अवधि कहाँ व्यतीत करता है–
(A) देवगिरि में (B) रामगिरि पर्वत में
(C) उज्जयिनी में (D) अलकापुरी में

48. कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे–
(A) राजहंस (B) चातक
(C) यक्ष (D) बलाका

49. मेघदूतम् के अनुसार भगवान् कार्तिकेय का निवास स्थान कहाँ है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) देवगिरि में (D) विशाला में

50. यक्षिणी शापदिवसों की गिनती किससे करती है–
(A) फलों से (B) पत्तों से
(C) शङ्ख से (D) फूलों से

51. यक्ष के शाप की समाप्ति किस दिन होगी–
(A) कार्तिक देवोत्थान एकादशी को
(B) हरिशयनी एकादशी को
(C) माघशुक्ल सप्तमी को
(D) आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को

52. मेघदूतम् का मेघ किसका अनुचर था–
(A) कुबेर का (B) वरुण का
(C) यम का (D) इन्द्र का

53. 'धूमज्योतिस्सलिलमरुतां' के संयोग से पैदा होता है–
(A) यक्ष (B) मेघ
(C) जल (D) प्रकाश

54. ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'' यह पंक्ति किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) रेवा (B) निर्विन्ध्या
(C) शिप्रा (D) गम्भीरा

55. मेघदूतम् के अनुसार उज्जयिनी में किसका सुप्रसिद्ध मन्दिर है–
(A) श्रीकृष्ण का (B) यक्ष का
(C) उदयन का (D) महाकाल का

56. 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' यह किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) निर्विन्ध्या (B) शिप्रा
(C) रेवा (D) गम्भीरा

57. 'अन्तःशुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः' यहाँ 'त्वम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) यक्ष का (B) यक्षिणी का
(C) मेघ का (D) कुबेर का

58. 'सगरतनयस्वर्गसोपानपंक्तिम्'इदं कस्याः नद्याः विशेषणमस्ति
(A) रेवायाः (B) जह्नुकन्यायाः (गङ्गाम्)
(C) गम्भीरायाः (D) यमुनायाः

59. ''सोपानत्वं कुरु मणितटारोहणायाग्रयायी'' इसमें मेघ का सोपानत्व किसके आरोहण के लिए उद्दिष्ट है–
(A) रति-कामदेव (B) शिव-पार्वती
(C) लक्ष्मी-नारायण (D) यक्ष-यक्षिणी

60. कालिदास के अनुसार यक्षों की एकमात्र अवस्था क्या है–
(A) शैशव (B) जरा
(C) कौमार (D) यौवन

44. (A) 45. (A) 46. (C) 47. (B) 48. (A) 49. (C) 50. (D) 51. (A) 52. (D) 53. (B) 54. (B)
55. (D) 56. (D) 57. (C) 58. (B) 59. (B) 60. (D)

61. ''यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराःपादपा नित्यपुष्पाः'' यहाँ 'यत्र' पद से किस नगरी का सङ्केत है–
(A) उज्जयिनी का (B) विदिशा का
(C) अलका का (D) दशपुर का

62. अलका में कुबेर के भवन से किस दिशा में यक्ष का आवास है–
(A) पूर्व (B) पश्चिम
(C) उत्तर (D) दक्षिण

63. यक्ष के घर के सामने कौन सा वृक्ष है–
(A) अशोक का (B) कल्पवृक्ष का
(C) देवदारु का (D) मदार का

64. यक्ष के आवास के सामने का पहाड़ किससे बना है–
(A) मरकत मणि से (B) इन्द्रनील मणि से
(C) पद्मराग से (D) चन्द्रकान्त मणि से

65. यक्ष के द्वार पर किसका चित्र अङ्कित है–
(A) शङ्ख, चक्र का (B) गदा, पद्म का
(C) शङ्ख-पद्म का (D) चक्र-गदा का

66. ''कच्चिद् भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति'' यहाँ 'रसिके' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) यक्षिणी (B) मयूरी
(C) सारिका (D) कोकिला

67. ''भूयो भूयःस्वयमपिकृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ति'' यह पंक्ति किस वाद्ययन्त्र से सम्बद्ध है–
(A) वीणा (B) पखावत
(C) दुन्दुभि (D) बाँसुरी

68. यक्षों का निवास स्थान है–
(A) रामगिरि (B) हिमालय
(C) अलका (D) उज्जयिनी

69. मेघदूतम् में यक्ष का स्वामी कौन है–
(A) शङ्कर (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) यम

70. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुःपूर्णता गौरवाय'' यह पंक्ति यक्ष किसके लिए कहता है–
(A) यक्षिणी के लिए (B) मेघ के लिए
(C) कुबेर के लिए (D) अलकापुरी के लिए

71. तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलाम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) गङ्गा का (B) यक्षिणी का
(C) उज्जयिनी का (D) अलका का

72. ''गर्जितैर्भाययेस्ताः'' यहाँ 'भाययेः' में लकार है–
(A) लिट् (B) लुङ्
(C) विधिलिङ् (D) लोट्

73. ''नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयोयन्त्रधारागृहत्वम्'' यहाँ त्वाम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) मेघ का (B) यक्ष का
(C) कुबेर का (D) इन्द्र का

74. कैलाश की चोटी पर जब मेघ पहुँचेगा, तो कैलाश पर्वत की शोभा किसकी तरह हो जायेगी–
(A) कृष्ण (B) बलराम
(C) नारद (D) काले मेघ

75. 'प्रालेयाद्रिः' पद का अर्थ है–
(A) कैलाश (B) हिमालय
(C) विन्ध्य (D) आम्रकूट

76. 'मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि यहाँ 'शफर' पद प्रयुक्त है–
(A) सफेदी के लिए (B) सुन्दरता के लिए
(C) यक्षिणी के लिए (D) मछली के लिए

77. 'मा स्म भूर्विक्लवास्ताः' यहाँ 'मा स्म' पद में लकार है–
(A) लट् (B) लुङ्
(C) लिट् (D) लङ्

78. ''पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य'' यहाँ 'यायाः' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) या + विधिलिङ् म0 पु0 एक0
(B) इण् + लोट् म0 पु0 बहु0
(C) या + लोट् म0 पु0 द्विवचन
(D) या+लृट् उ0 पु0 एकवचन

79. 'दर्शितावर्तनाभेः' पद में विभक्ति है–
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

61. (C) 62. (C) 63. (D) 64. (B) 65. (C) 66. (C) 67. (A) 68. (C) 69. (C) 70. (B) 71. (D)
72. (C) 73. (A) 74. (B) 75. (B) 76. (D) 77. (B) 78. (A) 79. (B)

80. रास्ता टेढ़ा होने के बाद भी यक्ष मेघ को उत्तर की ओर ले जाकर किसका दर्शन कराना चाहता है–
(A) स्कन्द का (B) उज्जयिनी का
(C) गम्भीरा का (D) निर्विन्ध्या का

81. 'प्रकृतिकृपणाः' में समास है–
(A) तृतीया तत्पुरुष (B) षष्ठी तत्पुरुष
(D) बहुव्रीहि (D) सप्तमी तत्पुरुष

82. ''प्रत्यासन्ने नभसि दयिता....." यहाँ 'नभसि' पद का अर्थ है–
(A) आषाढ मास (B) श्रावण मास
(C) आकाश (D) मेघ

83. ''अन्तर्वाष्पः चिरमनुचरो'' यहाँ 'अन्तर्वाष्पः' पद में समास है–
(A) षष्ठी तत्पुरुष (B) कर्मधराय
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

84. मल्लिनाथ 'रामगिरि' पर्वत को कहाँ मानते हैं–
(A) रामगढ़ (मध्यभारत) (B) रामटेक (नागपुर)
(C) चित्रकूट (D) हिमालय पर्वत के पास

85. 'अस्तङ्गमितमहिमा' यहाँ 'महिमा' शब्द में प्रत्यय है–
(A) महत्+इमनिच् (B) महान्+अण्
(C) महा+इतच् (D) महिम+आ

86. 'राजराज' पद में समास होगा–
(A) चतुर्थी तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) तृतीया तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष

87. 'कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः' यह पद किसका विशेषण है–
(A) सः यक्षः (B) कुबेरः
(C) मेघः (D) उपर्युक्त सभी का

88. ''जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः'' यहाँ 'मघोनः' पद किसके लिए और उसमें क्या विभक्ति है–
(A) कुबेर के लिए, पञ्चमी विभक्ति
(B) इन्द्र के लिए, षष्ठी विभक्ति
(C) यक्ष के लिए, द्वितीया विभक्ति
(D) मेघ के लिए, षष्ठी विभक्ति

89. मेघदूतम् के अनुसार सन्तप्त लोगों के लिए एक मात्र सहारा कौन है–
(A) यक्षिणी (B) मेघ (C) कुबेर (D) यक्ष

90. 'त्वय्युपेक्षेत्' पद में सन्धि है–
(A) हल् सन्धि (B) विसर्ग सन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) यण्सन्धि

91. 'द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्' के अनुसार कौन अपनी भाभी को देखेगा–
(A) यक्ष (B) कुबेर
(C) राजहंस (D) मेघ

92. 'विप्रयोगे रुणद्धि' यहाँ 'रुणद्धि' पद में धातु है–
(A) रुध् (B) रुण् (C) रोध् (D) रुधृम्

93. ''नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां, मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः'' इस पद्यांश में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा (C) उत्प्रेक्षा (D) निदर्शना

94. 'तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी'' यहाँ अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) दीपक

95. ''सृष्टिराद्येव धातुः'' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) मेघ का (B) यक्ष का
(C) यक्षिणी का (D) अलका का

96. मेघदूतम् में किस प्रकार का मङ्गलाचरण है–
(A) आशीर्वादात्मक (B) वस्तुनिर्देशात्मक
(C) नमस्क्रियात्मक (D) उपर्युक्त में कोई नहीं

97. मन्दाक्रान्ता छन्द में होते हैं–
(A) मगण भगण नगण तगण रगण दो गुरु–17
(B) भगण मगण नगण तगण तगण एक गुरु–16
(C) मगण भगण नगण तगण तगण दो गुरु–17
(D) भगण भगण मगण तगण नगण दो गुरु–17

98. मेघदूतम् की व्याख्या की जा सकती है–
(A) मेघः एव दूतः, मेघदूतमधिकृत्य कृतं काव्यं मेघदूतम्
(B) मेघः दूतः यस्मिन् काव्ये तत् मेघदूतम्
(C) केवल पहला सही है।
(D) दोनों सही है

99. संस्कृत साहित्य में 'सन्देशकाव्य' या 'दूतकाव्य' का प्रारम्भ माना जा सकता है–
(A) हंसदूतम् से (B) मेघदूतम् से
(C) नेमिदूतम् से (D) गीतगोविन्दम् से

100. ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'' यहाँ 'बलाकाः' पद का अर्थ है–
(A) बालिकायें (B) यक्षिणियाँ
(C) बगुलियाँ (D) वेश्यायें

80. (B) 81. (A) 82. (B) 83. (C) 84. (C) 85. (A) 86. (D) 87. (A) 88. (B) 89. (B) 90. (D) 91. (D)
92. (A) 93. (C) 94. (B) 95. (C) 96. (B) 97. (C) 98. (D) 99. (B) 100. (C)

(ii) रघुवंशम् का सामान्य परिचय

- **रचयिता-** महाकवि कालिदास
- **नायक-** दिलीप, रघु, अज, दशरथ, रामादि अनेक रघुवंशी राजागण (सभी नायक धीरोदात्त प्रकृति के) मुख्यरूप से 'राम' धीरोदात्त नायक।
- **काव्यविधा-** 'महाकाव्य'
- **रचनाकाल-** ई. पू. प्रथम शताब्दी से चतुर्थ शताब्दी के मध्य (विद्वानों में मतभेद)
- **सर्ग-** 19 सर्ग

सर्ग क्र.	सर्गों के नाम	श्लोक संख्या
01.	वशिष्ठ आश्रम अभिगमन	95
02.	नन्दिनी वरदान	75
03.	रघुराज्याभिषेक	70
04.	रघुदिग्विजय	88
05.	स्वयंवर-अभिगमन	76
06.	स्वयंवर-वर्णन	86
07.	अज-पाणिग्रहण	71
08.	अजविलाप	95
09.	मृगयावर्णन	82
10.	रामावतार	86
11.	सीता-विवाहवर्णन	93
12.	रावण-वध	104
13.	दण्डका-प्रत्यागमन	79
14.	सीता-परित्याग	87
15.	श्रीराम-स्वर्गारोहण	103
16.	कुमुद्वती-परिणय	88
17.	अतिथि-वर्णन	81
18.	वंशानुक्रम	53
19.	अग्निवर्ण शृङ्गार	57
कुल सर्ग - 19		**कुल श्लोक -1569**

- सर्वाधिक श्लोकों वाला सर्ग - 12वाँ, श्लोक = 104
- न्यूनतम श्लोकों वाला सर्ग - 18वाँ, श्लोक = 53

रस

- रघुवंश वीररस प्रधान काव्य है।
- वीररस के चार भेद- 1. धर्मवीर 2. युद्धवीर 3. दानवीर 4. दयावीर
- रघुवंश में चारों वीर रसों का वर्णन है।
- रघुवंश के अन्तिम सर्ग में मुक्तरूप से शृङ्गार का वर्णन।
- 'करुणरस' के उद्भावन में रघुवंश का 'अजविलाप' अत्यन्त द्रावक है।
- 'वीररस' के प्रयोग में कालिदास पौराणिक 'अनुष्टुप् छन्द' का प्रयोग करते हैं। (रघु की दिग्विजय, राम-रावण युद्ध)
- कालिदास का प्रिय रस **शृङ्गार** है।

छन्द-योजना

- कालिदास ने छन्द प्रयोग की दृष्टि से गेय छन्दों का अधिक उपयोग किया है।
- रघुवंश के 19 सर्गों में 22 छन्दों का प्रयोग हुआ है।
- सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द = उपजाति - 578 श्लोकों में।
- दूसरा सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द = अनुष्टुप् - 548 श्लोकों में।
- रघुवंश के नवम सर्ग में विभिन्न छन्दों का प्रयोग।
- रघुवंश के दुःखद प्रसंग के वर्णन में रथोद्धता छन्द का प्रयोग।
- करुण रस के चित्रण में वैतालीय छन्द का प्रयोग 'अजविलाप'
- रघुवंश में कवि ने 'नाराच' (18 वर्ण) जैसे बड़े छन्द का प्रयोग एक बार किया।

कालिदास ने रघुवंश में छन्दों को वर्ण्य विषय से सम्बद्ध किया है-

प्रसंग/वर्ण्य विषय	सम्बद्ध छन्द का प्रयोग
करुण प्रसंगों में -	वैतालीय
प्रवास और प्रावृट् -	मन्दाक्रान्ता
हर्षात्मक वातावरण -	प्रहर्षिणी (उपनाम-अन्वर्थनामा)
पराक्रम,शौर्य,राजनीतिक प्रसंग-	वंशस्थ
पौराणिक वृत्त, युद्धयात्रा-	अनुष्टुप्
भव्य चन्द्रोदय, उद्दीपन विभावों के वर्णन में -	रथोद्धता
वीर एवं रौद्र रस के सम्मेलन-	वसन्ततिलका
शुभकार्य के सफल करने के प्रस्थान हेतु, कार्य की सफलता के लिए, सर्गान्त में प्रयोग-	पुष्पिताग्रा
समृद्धिशीलता के प्रसंग-	द्रुतविलम्बित
उदारता, रुचि, औचित्यादि गुणो में प्रयुक्त -	हरिणी
सर्ग समाप्ति के समय, कथानक को शीघ्रता से समाप्त करते समय प्रयोग -	मालिनी

अलङ्कार-योजना

- रघुवंश में शब्दालङ्कारों में अनुप्रास का सर्वाधिक प्रयोग।
- यमक का सामान्य प्रयोग।
- अर्थालङ्कारों में सर्वाधिक उपमा का प्रयोग।
- उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, स्वभावोक्ति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास आदि

अलङ्कारों का सन्निवेश।

शैली-

- वैदर्भी रीति का प्रयोग।
- रघुवंश में आकर्षक चरित्र-चित्रण विशद एवं रुचिर वर्णन, प्रौढ़प्रतिभा, सुन्दर रसव्यञ्जना, सरल अलङ्कृत शैली का मणिकाञ्चन संयोग।

कथानक का मूल स्त्रोत-

- रघुवंश का मूलस्त्रोत- मुख्यतः वाल्मीकि रामायण
- अनुश्रुतियों एवं पौराणिक तथा अन्य स्त्रोत- पद्मपुराण, वायु पुराण, विष्णुपुराण,
- रघुवंश में रघुवंशीय राजाओं की वंशावली वाल्मीकि रामायण से भिन्न है।

प्रमुख वर्णन

- रघुवंश के 19 सर्गों में दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक रघुवंश के 29 राजाओं का वर्णन। मनु और इक्ष्वाकु सहित कुल 31 राजाओं का वर्णन।
- प्रथम दो सर्ग में दिलीप का वर्णन।
- तीसरे, चौथे और पाँचवें के आधे भाग में रघु का वर्णन।
- पाँचवें के बचे हुए आधे भाग तथा छठें, सातवें और आठवें सर्ग में अज का वर्णन।
- नवम सर्ग में दशरथ का वर्णन।
- दशम से पन्द्रहवें सर्ग तक रामचरित वर्णित है।
- सोलहवें सर्ग में कुश तथा सत्रहवें में कुश पुत्र अतिथि का वर्णन है।
- अठारहवें में निषध तथा नल एवं नभ आदि 21 राजाओं का वर्णन।
- उन्नीसवें सर्ग में अतिविलासी राजा अग्निवर्ण के दुःखद अवसान के साथ ग्रन्थ समाप्त होता है।

रघुवंश में वर्णित राजाओं का क्रम

दिलीप → रघु → अज → दशरथ

दशरथ → राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न

राम → कुश, लव

कुश → अतिथि → निषध → नल → नभ → पुण्डरीक → क्षेमधन्वा → देवानीक

देवानीक → पुत्री, अहीनगु (अहीनय)

अहीनगु → पारियात्र → शील → उन्नाभ → शङ्खण → व्युषिताश्व → विश्वसह → हिरण्यनाभ → कौशल्य (सोमसुत) → पुत्र → पौष्य → ध्रुवसन्धि → सुदर्शन → अग्निवर्ण

(अन्तिम रघुवंशीय राजा जहाँ तक रघुवंश में वर्णन प्राप्त होता है)

प्रमुख संवाद

- दिलीप-वशिष्ठ-संवाद - प्रथमसर्ग
- दिलीप-सिंह-संवाद - द्वितीय सर्ग
- इन्द्र-रघु संवाद - तृतीय सर्ग
- कौत्स-रघु संवाद - पञ्चम सर्ग
- राम-परशुराम-संवाद - एकादश सर्ग
- सीता-लक्ष्मण संवाद - चतुर्दश सर्ग
- कुश-नायिका रूप अयोध्या - षोडश सर्ग (स्वप्न संवाद)

रघुवंश के सर्ग एवं सर्गान्त में प्रयुक्त छन्द

सर्ग संख्या	सर्ग में प्रयुक्त छन्द	सर्गान्त में प्रयुक्त छन्द
प्रथम	अनष्टुप्	प्रहर्षिणी
द्वितीय	उपजाति	मालिनी
तृतीय	वंशस्थ	हरिणी
चतुर्थ	अनुष्टुप्	प्रहर्षिणी
पञ्चम	उपजाति	पुष्पिताग्रा
षष्ठ	उपजाति	पुष्पिताग्रा
सप्तम	उपजाति	मालिनी
अष्टम	वैतालीय	मन्दाक्रान्ता
नवम	द्रुतविलम्बित	वसन्ततिलका
	(विभिन्न छन्दों का प्रयोग)	
दशम	अनुष्टुप्	मालिनी
एकादश	रथोद्धता	मालिनी
द्वादश	अनुष्टुप्	महामालिनी
त्रयोदश	उपजाति	वसन्ततिलका
चतुर्दश	उपजाति	मन्दाक्रान्ता
पञ्चदश	अनुष्टुप्	मन्दाक्रान्ता
षोडश	उपजाति	मन्दाक्रान्ता
सप्तदश	अनुष्टुप्	मन्दाक्रान्ता
अष्टादश	उपजाति	मालिनी
एकोनविंशति	उपजाति	मन्दाक्रान्ता

- उपजाति छन्द का प्रयोग सर्वाधिक 9 सर्गों में निम्नलिखित- (2,5,6,7,13,14,16,18,19)
- अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग निम्नलिखित 6 सर्गों में हुआ है- (1,4,10,12,15,17)
- वंशस्थ छन्द का प्रयोग 3 (तृतीय सर्ग) में हुआ है।
- रथोद्धता छन्द का प्रयोग मात्र 11वें (एकादशवें) सर्ग में हुआ है।
- वैतालीय छन्द का प्रयोग 8 (अष्टम) सर्ग में किया गया है।
- द्रुतविलम्बित छन्द का प्रयोग 9वें (नवम)सर्ग में हुआ है।

इस सर्ग मे अनेक छन्दों का प्रयोग हुआ है।

सर्गानुसार वर्णन

मङ्गलाचरण

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ॥ (रघु. 01/01)

- रघुवंश महाकाव्य का शुभारम्भ पार्वती और शिव के नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण से हुआ।
- ग्रन्थारम्भ में कवि ने मङ्गलाचरण के माध्यम से शब्दार्थरूप शिव और पार्वती की वन्दना की।
- वाक् और अर्थ के प्रतीक स्वयं पार्वती एवं शङ्कर हैं, क्योंकि वे जगत के माता-पिता हैं।
- 'व' शब्द अमरत्व का द्योतक है।
- मगण के दोनों अक्षर की देवता पृथ्वी हैं जो रचयिता को अक्षय कीर्ति प्रदान करती हैं।
- अनुष्टुप् छन्द
- वाक् = वाणी
- अर्थ = लक्ष्मी
- इ = शक्ति (शैव दर्शन के अनुसार)

प्रथम सर्ग

- रघुवंश की कथा का आरम्भ महाराज दिलीप से होता है।
- महाकवि ने दिलीप के पूर्ववर्त्ती राजाओं की चर्चा करते हुए कहा कि इस वंश का प्रादुर्भाव 'सूर्य' से हुआ।
- इस वंश में 'मनु' पृथ्वी लोक के सर्वप्रथम राजा हैं।
- रघुवंशी राजाओं के जीवन में आश्रम व्यवस्था इस प्रकार होती थी-

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥
(रघु. 01/08)

- प्रथम सर्ग में महाराज दिलीप सन्तान प्राप्ति का उपाय पूछने अपने गुरु वसिष्ठ के आश्रम जाते हैं।
- वसिष्ठ उन्हे कामधेनु की पुत्री नन्दिनी गाय की सेवा करने का परामर्श देते हैं।

द्वितीय सर्ग

- राजा दिलीप द्वारा कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा का वर्णन है।
- नन्दिनी राजा दिलीप द्वारा की गयी 21 (इक्कीस) दिनों की सेवा से प्रसन्न होती है और उनकी परीक्षा भी लेती हैं।
- कुम्भोदर सिंह का वर्णन।
- दिलीप परीक्षा में सफल होते हैं, नन्दिनी उन्हें पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देती है।

रघुवंशम् की सूक्तियाँ

- **हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा।**
(रघु. 01/10)

सुवर्ण की शुद्धता और श्यामता अग्नि में ही देखी जाती है।

- **''सहस्त्रगुणमुत्स्त्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।''** (रघु. 01/18)

सूर्य सहस्त्रगुना (हजारगुना) बरसाने के लिए ही जल लेता है।

- **'प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'**
(रघु. 01/79)

पूज्यों की पूजा का उल्लङ्घन करना कल्याण को रोकता है।

- **'स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः'** (रघु. 02/04)

मनु के वंश में उत्पन्न राजा लोग अपने ही पराक्रम से आत्मरक्षा कर लेते थे।

- **'भक्त्योपपन्नेषु हि तद्विधानां प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि।'**
(रघु. 02/22)

प्रेमी व्यक्तियों के प्रसन्नता के चिह्न निःसन्देह फल के कारण होते हैं।

- **''शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्षं, न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति॥''**
(रघु. 02/40)

सिंह, दिलीप से कहता है कि- रक्षा करने के योग्य वस्तु शस्त्र से नहीं बचायी जा सकती, वह नष्ट होती हुई भी शस्त्रधारियों की कीर्ति को दूषित नहीं कर सकती।

- **'स्थातुं नियोक्तुर्न हि शक्यमग्रे, विनाश्य रक्ष्यं स्वयमक्षतेन।'**
(रघु. 02/56)

राजा दिलीप, सिंह से कहते हैं कि- रक्षा करने योग्य वस्तु का नाश करके स्वयं बिना नष्ट हुए, नौकर स्वामी के आगे उपस्थित होने के लिए समर्थ नहीं हो सकता।

- **'एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु।'**(रघु. 02/57)

राजा दिलीप, सिंह से कहते हैं कि- लोगों के अवश्य नष्ट होने वाले पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश इन पाँच महाभूतों से बने शरीर में अपेक्षा नहीं रहती है।

- **'सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः।'**(रघु. 02/58)

राजा दिलीप सिंह से कहते हैं कि- दो व्यक्तियों में बातचीत आरम्भ हो जाय तो उसी से उनका सम्बन्ध जुड़ जाता है। अर्थात् सम्बन्ध को बातचीत के द्वारा उत्पन्न हुआ कहते हैं।

अथ प्रजानामधिपः प्रभाते
जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्।
वनाय पीतप्रतिबद्धवत्सां
यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच ॥2/1॥

अर्थ- उसके बाद प्रातः काल में 'कीर्तिधन वाले' प्रजा के स्वामी (राजा दिलीप) ने पत्नी (सुदक्षिणा) द्वारा समर्पित किये गये गन्ध और माला से युक्त, दूध पी लेने के बाद बाँध दिये गये बछड़े वाली, ऋषि वशिष्ठ की गाय (नन्दिनी) को वन में चरने के लिये छोड़ दिया।

श्रुतेरिवार्थस्मृतिरन्ववगच्छत् ॥2/2॥

अर्थ- जिस प्रकार स्मृति (मनुस्मृति आदि) वेदार्थ का अनुगमन करती हैं।

निवर्त्य राजा दयितां दयालुस्तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः।
पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्॥

अर्थ- दयालु तथा यशोराशि से सुविख्यात राजा दिलीप ने प्रियतमा (सुदक्षिणा) को (आश्रम) लौटाकर कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की चारों समुद्रों को अपने चार स्तनों के रूप में धारण करने वाली

(गाय नन्दिनी) की पृथ्वी के समान रक्षा किया। (2/3)

छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत् ॥2/6॥

अर्थ- राजा दिलीप ने छाया की तरह उसका (नन्दिनी का) अनुसरण किया।

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव संध्या॥

अर्थ- मार्ग में राजा दिलीप से आगे की हुई और राजा की धर्मपत्नी (सुदक्षिणा) के द्वारा अगवानी की गई वह गाय उन दोनों (राजा और रानी) के बीच दिन और रात के मध्य वर्तमान सन्ध्या के समान सुशोभित हुई। (2/20)

बाहुप्रतिष्टम्भविवृद्धमन्युरभ्यर्णमागस्कृतमस्पृशद्भिः।
राजा स्वतेजोभिरदह्यतान्तर्भोगीव मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः॥

अर्थ- हाथ के रुक जाने से बढ़े हुए क्रोध वाला राजा (दिलीप) समीप में स्थित, अपराधी (उस सिंह) को छूने में असमर्थ अपने तेज से मन्त्र और औषधि से रूके हुए पराक्रम वाले साँप के समान भीतर ही भीतर जल उठा। (2/32)

तमार्यगृह्यं निगृहीतधेनुर्मनुष्यवाचा मनुवंशकेतुम् ।
विस्मापयन्विस्मितमात्मवृत्तौ सिंहोरुसत्त्वं निजगाद सिंहः॥

अर्थ- गाय के ऊपर आक्रमण करने वाला सिंह सज्जनों द्वारा सम्माननीय, मनुवंश के भूषण, सिंह के समान महाबलशाली, अपनी (बाहुस्तम्भरूपी) कार्य पर आश्चर्यचकित हुए उस (राजा दिलीप) को मनुष्य की वाणी के द्वारा और भी चकित करते हुए बोला। (2/33)

अलं महीपाल! तव श्रमेण प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्।
न पादपोन्मूलनशक्ति रंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य॥

अर्थ- हे पृथ्वी का पालन करने वाले राजन्! आपका परिश्रम करना व्यर्थ है, इस मेरे ऊपर चलाया गया अस्त्र भी व्यर्थ जाएगा, (क्योंकि) वृक्षों को उखाड़ने की शक्ति रखने वाले वायु का वेग पर्वतों पर नहीं चलता। (2/34)

इति प्रगल्भं पुरुषाधिराजो मृगाधिराजस्य वचो निशम्य।
प्रत्याहतास्त्रो गिरिशप्रभावादात्मन्यवज्ञां शिथिलीचकार॥

अर्थ- सिंह के ऐसे धृष्टतायुक्त वचन को सुनकर शंकर के प्रभाव से रुके हुए अस्त्र वाले राजा दिलीप ने अपने अपमान के भाव को शिथिल कर दिया। (2/41)

प्राणभृतां हि वेद सर्वं भवान्भावमतोऽभिधास्ये ॥2/43॥

अर्थ- क्योंकि आप प्राणियों के मनोगत सभी भावों को जानते हैं, इसलिये मैं कहूँगा।

स त्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं देहेन निर्वर्तयितुं प्रसीद ।
दिनावसानोत्सुकबालवत्सा विसृज्यतां धेनुरियं महर्षेः॥

अर्थ- वह तुम मेरे शरीर से अपने शरीर के जीवन को सम्पादित करने के लिए प्रसन्न होओ। सन्ध्या के समय उत्कण्ठित छोटे बछड़े वाली महर्षि की इस गाय को छोड़ दो। (2/45)

एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं
नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छ-
न्विचारमूढ़ः प्रतिभासि मे त्वम् ॥2/47॥

अर्थ- एकच्छत्र संसार का स्वामित्व, नवीन युवावस्था और यह सुन्दर शरीर- इन सबको थोड़े के लिये अधिक छोड़ने की इच्छा करने वाले आप मुझे विचारशून्य मालूम पड़ते हैं।

प्रजाः प्रजानाथ पितेव पासि ॥2/48॥

अर्थ- हे राजन्! जीवित रहते हुए (तुम) पिता के समान प्रजा की विपत्तियों से हमेशा रक्षा करोगे।

ऋद्धं हि राज्यं पदमैन्द्रमाहुः ॥2/50॥

अर्थ- विद्वान् लोग समृद्धिशाली राज्य को भूतल के सम्बन्ध से भिन्न इन्द्र का पद कहते हैं।

शिलोच्चयोऽपि क्षितिपालमुच्चैः
प्रीत्या तमेवार्थमभाषतेव ॥51॥

अर्थ- सिंह के इतना कहकर चुप हो जाने पर गुफा में पहुँची हुई इसकी प्रतिध्वनि द्वारा पर्वत भी प्रेम से मानो उसी बात को राजा से जोर से कहने लगा।

भक्तया गुरौ मय्यनुकम्पया च प्रीतास्मि ते पुत्र! वरं वृणीष्व।
न केवलानां पयसां प्रसूतिमवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्॥

अर्थ- गुरु में भक्ति होने और मुझ पर दया करने के कारण मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। हे पुत्र! वर माँगो। मुझको केवल दूध देने का कारण मत समझो (बल्कि) प्रसन्न होने पर कामनाओं को पूर्ण करने वाली (जानो)। (2/63)

➢ **'पदं हि सर्वत्रगुणैर्निधीयते।'** (रघु. 03/62)
गुण ही सर्वत्र शत्रु-मित्रादिकों में पैर को स्थापित करते हैं अर्थात् गुण से ही सर्वत्र आदर होता है।

➢ **'धिगिमां देहभृतामसारताम्।'** (रघु. 08/51)
अज विलाप करते हुए- देहधारियों की निःसारता को धिक्कार है।

➢ **तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।** (रघु. 11/01)
तेजस्वियों की अवस्था नहीं देखी जाती।

➢**'आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया।'** (रघु. 14/46)
गुरुजनों की आज्ञा विचारणीय नहीं होती।

रघुवंशम्-बिन्दुवार अध्ययन

- 'रघुवंश'-महाकाव्यस्य रचनां कः अकरोत्? - **कालिदासः**
- 'रघुवंशम्' है? - **महाकाव्यम्**
- 'रघुवंशमहाकाव्य' के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की? - **शिव-पार्वती की**
- रघुवंशे 'जगतः पितरौ' इति कौ वर्णितौ? - **पार्वतीपरमेश्वरौ**
- रघुवंशमहाकाव्ये सर्गाः सन्ति **19सर्गाः**
- रघुवंशमहाकाव्ये कति राजानो वर्णिताः सन्ति? **31**
- रघु के वंश का किसमें वर्णन है? - **रघुवंश में**
- रघुवंश में किस वंश के राजाओं का वर्णन है?-**सूर्यवंश के**
- रघुवंशमहाकाव्ये सर्वप्रथमं कस्य राज्ञः वर्णनम् अस्ति-**दिलीपस्य**
- इक्ष्वाकुवंशे जातः **-रामः**
- 'अथ प्रजानामधिपः प्रभाते' इत्यत्र राजार्थकः शब्दः कः-**अधिपः**
- 'रघुवंशे' कस्य वर्णनं नास्ति - **पार्वत्याः**
- 'रघुवंश' में किसकी गो-सेवा वर्णित है - **दिलीप की**
- 'रघुवंश' में दशरथ के पिता कौन हैं - **अज**
- 'नन्दिनी धेनु' का वर्णन किसमें है - **रघुवंशम् में**
- 'रघुवंश' में इन्दुमती किसकी रानी हैं - **अज की**
- राजा दशरथ का सम्बन्ध किस वंश से था - **सूर्यवंश से**
- 'रघुवंश-महाकाव्य' किसकी स्तुति से प्रारम्भ होता है - **शिव-पार्वती की**
- रघुवंशी राजाओं में सर्वप्रथम नाम आता है - **वैवस्वत**
- रघुवंशस्य व्याख्यानं केन विरचितम्? - **मल्लिनाथेन**
- अजविलाप किसमें है - **रघुवंशम् में**
- कालिदासविरचित मालविकाग्निमित्रम् नाटक में अग्निमित्र की द्वितीय पत्नी है - **इरावती**
- 'इन्दुमती' किस महाकाव्य की पात्र है - **रघुवंशम् की**
- 'रघुवंशमहाकाव्य' का पात्र नहीं है - **भीम**
- 'अग्निवर्ण' पात्र है - **रघुवंश का**
- वरतन्तुशिष्यस्य कौत्सस्य वृत्तान्तमस्मिन् काव्ये निबद्धं वर्तते - **रघुवंशे**
- 'इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः' इति कः कं प्रति आह - **दिलीपः वशिष्ठं प्रति**
- 'सन्ध्या' से किसकी तुलना की गयी है - **धेनु की**
- इक्ष्वाकुवंशी राजाओं का निरूपण प्राप्त होता है- **रघुवंशम् में**
- किसका परिश्रम व्यर्थ है - **राजा दिलीप का**
- किसके ऊपर चलाया गया अस्त्र व्यर्थ होगा - **सिंह पर**
- रघुवंशमहाकाव्ये कस्य वंशस्य राज्ञां वर्णनं विद्यते - **इक्ष्वाकुवंशस्य**
- 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' इतीयं पंक्तिः केन आश्रमेण सम्बद्धा- **संन्यासाश्रमेण**
- कौन लज्जा त्यागकर लौट जाय - **राजा दिलीप**
- किसके प्रति शिष्य भक्ति प्रदर्शित करें - **गुरु के प्रति**
- नन्दिनी गाय ने प्रसन्न होकर वरदान दिया था-**पुत्र-प्राप्ति का**
- रघुवंशे रघोः पिता कः? - **दिलीपः**
- रघुवंश के किस सर्ग में सीतापरित्याग का वृत्तान्त है? **-चतुर्दशे**
- रघुवंशस्य चतुर्दशसर्गस्य नाम किम्? - **सीतापरित्यागः**
- रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे दिलीपस्य गोसेवा वर्णिता?- **द्वितीये**
- रघुः किन्नामकं यज्ञं चकार? - **विश्वजित्**
- ''श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्''–इत्यत्र कोऽलङ्कारः? - **उपमा**
- राजा दिलीप की पत्नी का नाम है? - **सुदक्षिणा**
- दिलीपस्य गोसेवा कस्मिन् महाकाव्ये वर्णिताऽस्ति?- **रघुवंशे**
- 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ'–इति कस्य ग्रन्थस्य प्रथमं पद्यम्? - **रघुवंशस्य**
- 'अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः' इस पंक्ति को कौन कहता है? - **वशिष्ठ**
- रघुवंशमहाकाव्ये अजः कस्य पुत्रः? - **रघोः**
- गङ्गा-यमुना के सङ्गम का वर्णन प्राप्त होता है - **कालिदास कृत रघुवंश में**
- दिलीपस्य वृत्तं कस्मिन् काव्ये अस्ति? - **रघुवंशे**
- 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' प्रस्तुत श्लोकांश उद्धृत है-**रघुवंशे**
- ''प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
  सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।''
  यह किस ग्रन्थ में मिलता है - **रघुवंशम्**
- ''श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्'' इस उक्ति के रचयिता कौन हैं - **कालिदास**
- ''सञ्चारिणी दीपशिखेव'' यह उपमा कालिदास के किस काव्य में है - **रघुवंशम् में**

- 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः'
  – पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **रघुवंश में**
- 'न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।।'
  श्लोकांश उद्धृत है - **रघुवंशम् से**
- ''प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः''
  यह सूक्ति किस काव्य से है - **रघुवंशम् से**
- ''हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा''
  यह सूक्ति किस काव्य से है - **रघुवंशम् से**
  यह कथन किसने किसके लिए कहा - **सिंह ने दिलीप से**
- 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये'
  श्लोकांश किस काव्य में है? - **रघुवंश में**
- ''शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्'' इत्यस्ति - **रघुवंशमहाकाव्ये**
- ''सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ''
  इति रघुवंशमहाकाव्ये कस्मिन्सन्दर्भे वर्णितं भवति -
  इन्दुमती-स्वयंवरे
- ''सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे''
  सूक्ति ग्रहण की गई है - **रघुवंशम् से**
- ''शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति''
  इयमुक्तिः कालिदासस्य कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति - **रघुवंशे**
- ''ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
  गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव।।''
  कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः? - **दिलीपस्य**
- पौरेषु सोऽहं बहुलीभवन्तमपां तरङ्गेष्विव तैलबिन्दुम्।
  सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः।।
  रघुवंशे कस्येयमुक्तिः? - **रामस्य**
- रघोः वंशस्य आदिमः मनुः कः? - **वैवस्वतमनुः**
- कस्य शापः दिलीपस्य सन्ततिप्रतिबन्धकः आसीत्?
  - **कामधेनोः शापः**
- रघुवंशमहाकाव्यस्य उपजीव्यम् अस्ति - **रामायणम्**
- दिलीपः किमर्थं बलिमग्रहीत्? - **प्रजाक्षेमाय**
- 'उद्बाहुरिव वामनः' इत्युपमा कस्मिन्महाकाव्ये वर्तते- **रघुवंशे**
- 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः' – इत्युक्तिः?
  - **कालिदासस्य**
- राज्ञः दिलीपस्य पत्नी सुदक्षिणा ..... राजकन्या आसीत्?
  - **मगधस्य**
- 'इन्दुमती-स्वयंवर-वर्णनम्' रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे विद्यते?
  - **षष्ठे**
- 'क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहम्' इत्थं का वदति - **सीता**
- 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्'
  इति कालिदासोक्तिः रघुवंशे कुत्रास्ति? - **प्रथमसर्गे**
- आराधय सपत्नीकः प्रीता कामदुधा हि सा का - **नन्दिनी**
- 'प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि।'
  इतीयं पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते? - **रघुवंशे**
- 'यशोधनानां हि यशो गरीयः' इति पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते-
  रघुवंशे
- स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः–इति पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते
  - **रघुवंशे**
- वागर्थाविव सम्पृक्तौ कौ? - **पार्वती-परमेश्वरौ**
- 'प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।' कः? - **दिलीपः**
- 'शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः
  शस्त्रभृतां क्षिणोति'- कस्य वचनमिदम्? - **सिंहस्य**
- रघुवंशस्य त्रयोदशसर्गे का कथा वर्णिता अस्ति
  - **रामस्य अयोध्याप्रत्यागमनम्**
- 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्'
- 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' कथनम् इदं केषां सन्दर्भे प्रयुक्तम्?
  - **रघूणाम्**
- राजा दिलीपः किमर्थं राज्यभारं सचिवेषु निचिक्षिवे
  - **संतानार्थाय विधये**
- रघुवंशस्य ..... सर्गे राज्ञः दिलीपस्य
  गोसेवाचरणव्रतं वर्णितमस्ति- **द्वितीये**
- ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे'' – इत्यत्र कस्तावत् वैदेहिबन्धुः- **रामः**

अभ्यास प्रश्न (रघुवंशम्)

1. 'रघुवंश'-महाकाव्यस्य रचनां कः अकरोत्?
(A) भारविः **(B)** व्यासः
(C) कालिदासः **(D)** माघः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

2. रघुवंशम् किं विधं काव्यमस्ति?
(A) महाकाव्यम् **(B)** गीतिकाव्यम्
(C) नाटकम् **(D)** व्याकरणग्रन्थः
स्रोत–रघुवंश - हरगोविन्दमिश्र, भू. पेज-12

3. 'रघुवंशमहाकाव्य' के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की?
(A) सरस्वती की **(B)** गणेश-पार्वती की
(C) कार्तिकेय की **(D)** शिव-पार्वती की
स्रोत–रघुवंश (1/1) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-2, 3

4. रघुवंशे 'जगतः पितरौ' इति कौ वर्णितौ?
(A) राधाकृष्णौ **(B)** सीतारामौ
(C) पार्वतीपरमेश्वरौ **(D)** देवकीवसुदेवौ
स्रोत–रघुवंश (1/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-2

5. रघुवंशे कति सर्गाः सन्ति?
(A) 18 **(B)** 19
(C) 20 **(D)** 21
स्रोत–संस्कृत सा. का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151-152

6. रघुवंशमहाकाव्ये कियद् सूर्यवंशीयानां राज्ञां वर्णनमस्ति–
(A) 20 **(B)** 19
(C) 31 **(D)** 39
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

7. रघुवंशमहाकाव्ये सर्वप्रथमं कस्य राज्ञः वर्णनम् अस्ति–
(A) रामस्य **(B)** रघोः
(C) अजस्य **(D)** दिलीपस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

8. 'अथ प्रजानामधिपः प्रभाते' इत्यत्र राजार्थकः शब्दः कः–
(A) प्रजा **(B)** प्रभातः
(C) अधिपः **(D)** अथ
स्रोत–रघुवंश (2/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-33

9. 'रघुवंश' में किसकी गो-सेवा वर्णित है–
(A) दिलीप की **(B)** रघु की
(C) दशरथ की **(D)** अज की
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

10. 'नन्दिनी धेनु' का वर्णन किसमें है–
(A) कुमारसम्भवम् में **(B)** रघुवंशम् में
(C) किरातार्जुनीयम् में **(D)** शिशुपालवधम् में
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

11. 'रघुवंश' में इन्दुमती किसकी रानी हैं–
(A) रघु की **(B)** अज की
(C) इक्ष्वाकु की **(D)** दिलीप की
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

12. राजा दशरथ का सम्बन्ध किस वंश से था–
(A) सूर्यवंश से **(B)** चन्द्रवंश से
(C) इन्द्रवंश से **(D)** मनुवंश से
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

13. रघुवंशियों का कौन-सा कालक्रमानुसार युग्म सही है–
(A) रघु, अज, दशरथ, राम
(B) दिलीप, अज, दशरथ, राम
(C) अज, दिलीप, रघु, राम
(D) राम, दशरथ, रघु, अज
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-152

14. 'रघुवंश-महाकाव्य' किसकी स्तुति से प्रारम्भ होता है–
(A) गणेश-लक्ष्मी की **(B)** शिव-पार्वती की
(C) विष्णु-लक्ष्मी की **(D)** सरस्वती की
स्रोत– रघुवंशम् (1.1) – हरगोविन्द मिश्र, पेज-02

15. अजविलाप किसमें है–
(A) स्वप्नवासवदत्तम् में **(B)** नैषधीयचरितम् में
(C) रघुवंशम् में **(D)** कुमारसम्भवम् में
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

16. 'इन्दुमती' किस महाकाव्य की पात्र है–
(A) शिशुपालवधम् की **(B)** रघुवंशम् की
(C) नैषधीयचरितम् की **(D)** किरातार्जुनीयम् की
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

1. (C)	2. (A)	3. (D)	4. (C)	5. (B)	6. (C)	7. (D)	8. (C)	9. (A)	10. (B)
11. (B)	12. (A)	13. (A)	14. (B)	15. (C)	16. (B)				

17. वरतन्तुशिष्यस्य कौत्सस्य वृत्तान्तमस्मिन् काव्ये निबद्धं वर्तते–
(A) कुमारसम्भवे **(B)** रघुवंशे
(C) माघे **(D)** किरातार्जुनीये
स्रोत–रघुवंश (5/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-108

18. 'इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः' इति कः कं प्रति आह–
(A) वसिष्ठः दिलीपं प्रति **(B)** दिलीपः वशिष्ठं प्रति
(C) वसिष्ठः सुदक्षिणां प्रति **(D)** सुदक्षिणा दिलीपं प्रति
स्रोत–रघुवंश (1/72) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-25

19. 'सन्ध्या' से किसकी तुलना की गयी है–
(A) राजा की **(B)** राजा की पत्नी की
(C) मार्ग की **(D)** धेनु की
स्रोत–रघुवंश (2/20) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-39

20. रघुवंशमहाकाव्ये कस्य वंशस्य राज्ञां वर्णनं विद्यते–
(A) इक्ष्वाकुवंशस्य **(B)** पुरुवंशस्य
(C) यदुवंशस्य **(D)** कुरुवंशस्य
स्रोत–रघुवंश (3/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-58

21. नन्दिनी गाय ने प्रसन्न होकर वरदान दिया था–
(A) धनप्राप्ति का **(B)** राज्यप्राप्ति का
(C) राज्य एवं धनप्राप्ति का **(D)** पुत्र-प्राप्ति का
स्रोत–रघुवंश (2/64) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-53

22. रघुवंशे रघोः पिता कः?
(A) अजः **(B)** दिलीपः
(C) रामः **(D)** दशरथः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-152

23. रघुवंश के किस सर्ग में सीतापरित्याग का वृत्तान्त है?
(A) पञ्चमे **(B)** अष्टमे
(C) चतुर्दशे **(D)** दशमे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

24. रघुवंशस्य चतुर्दशसर्गस्य नाम किम्?
(A) सीतापवादः **(B)** सीतापरित्यागः
(C) श्रीराममनसस्तापः **(D)** सीतावनवासः
स्रोत–रघुवंश - हरगोविन्द मिश्र, पेज-369

25. रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे दिलीपस्य गोसेवा वर्णिता?
(A) प्रथमे **(B)** द्वितीये
(C) तृतीये **(D)** चतुर्थे
स्रोत–रघुवंश (2/4) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-34

26. रघुः किन्नामकं यज्ञं चकार?
(A) राजसूयम् **(B)** विश्वजित्
(C) अश्वमेधः **(D)** पुत्रेष्टिः
स्रोत– रघुवंश - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-13

27. ''श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्''–इत्यत्र कोऽलङ्कारः?
(A) उत्प्रेक्षा **(B)** उपमा
(C) दृष्टान्तः **(D)** तुल्ययोगिता
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-160

28. दिलीपस्य भार्यायाः नाम किम्?
(A) इन्दुमती **(B)** सुदक्षिणा
(C) लक्ष्मी **(D)** उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–रघुवंश (2/2) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-33

29. दिलीपस्य गोसेवा कस्मिन् महाकाव्ये वर्णिताऽस्ति?
(A) रघुवंशे **(B)** कुमारसम्भवे
(C) जानकीहरणे **(D)** सीताचरिते
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-151

30. रघुवंशमहाकाव्ये अजः कस्य पुत्रः?
(A) रघोः **(B)** पुण्डरीकस्य
(C) दिलीपस्य **(D)** अग्निवर्णस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-152

31. गङ्गा-यमुना के सङ्गम का वर्णन प्राप्त होता है–
(A) माघकृत शिशुपालवध में
(B) कालिदासकृत रघुवंश में
(C) भासकृत प्रतिमानाटक में
(D) भवभूतिकृत उत्तररामचरितम् में
स्रोत–रघुवंश (13/58) -हरगोविन्द मिश्र, पेज-338

32. 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्'' इत्यस्ति?
(A) रामायणे **(B)** महाभारते
(C) रघुवंशे **(D)** वेणीसंहारे
स्रोत–रघुवंश (2/2) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-33

33. ''प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः॥''
यह किस ग्रन्थ में मिलता है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(B)** मेघदूतम्
(C) रघुवंशम् **(D)** कुमारसम्भवम्
स्रोत–रघुवंश (1/18) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-8

17. (B)	**18. (B)**	**19. (D)**	**20. (A)**	**21. (D)**	**22. (B)**	**23. (C)**	**24. (B)**	**25. (B)**	**26. (B)**
27. (B)	**28. (B)**	**29. (A)**	**30. (A)**	**31. (B)**	**32. (C)**	**33. (C)**			

34. 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः' – पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) रघुवंश में **(B)** मेघदूत में
(C) कुमारसम्भव में **(D)** अभिज्ञानशाकुन्तल में
स्रोत–रघुवंश (1/2) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-2

35. 'न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य॥' श्लोकांश उद्धृत है–
(A) किरातार्जुनीयम् से **(B)** रघुवंशम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से **(D)** उत्तररामचरितम् से
स्रोत–रघुवंश (2/34) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-43

36. ''हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा'' श्लोकार्धः ..... अस्ति?
(A) रघुवंशम् से **(B)** रामायणचम्पू से
(C) किरातार्जुनीयम् से **(D)** पञ्चतन्त्र से
स्रोत–रघुवंश (1/10) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-5

37. ''अलं महीपाल! तव श्रमेण'' यह कथन किसने किसके लिए कहा–
(A) सिंह ने दिलीप से **(B)** दिलीप ने मन्त्री से
(C) दिलीप ने सिंह से **(D)** दिलीप ने गुरु से
स्रोत–रघुवंश (2/33, 34) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-43

38. 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ'.....इति श्लोकेन किं महाकाव्यम् आरभ्यते–
(A) बुद्धचरितम् **(B)** रघुवंशम्
(C) नैषधीयचरितम् **(D)** शिशुपालवधम्
स्रोत–रघुवंश (1/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-2

39. ''सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ'' इति रघुवंशमहाकाव्ये कस्मिन्सन्दर्भे वर्णितं भवति–
(A) दिलीपस्य गोसेवा **(B)** रामवनगमनम्
(C) सीताविसर्जनम् **(D)** इन्दुमती-स्वयंवरः
स्रोत–रघुवंश (6/67) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-158

40. ''सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे'' सूक्ति ग्रहण की गई है–
(A) शिशुपालवधम् से **(B)** रघुवंशम् से
(C) किरातार्जुनीयम् से **(D)** मालविकाग्निमित्रम् से
स्रोत–रघुवंश (1/69) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-24

41. ''शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति'' इयमुक्तिः कालिदासस्य कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति–
(A) मेघदूते **(B)** अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) रघुवंशे **(D)** कुमारसम्भवे
स्रोत–रघुवंश (2/40) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-45

42. ''ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः। गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव॥'' कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः?
(A) रघोः **(B)** रामस्य
(C) अजस्य **(D)** दिलीपस्य
स्रोत–रघुवंश (1/22) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-9

43. रघोः वंशस्य आदिमः मनुः कः?
(A) सावर्णिमनुः **(B)** वैवस्वतमनुः
(C) स्वायम्भुवः **(D)** स्वारोचिषः
स्रोत–रघुवंश (1/11) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-5,6

44. कस्य शापः दिलीपस्य सन्ततिप्रतिबन्धकः आसीत्?
(A) दुर्वाससः शापः **(B)** विश्वामित्रस्य शापः
(C) नन्दिन्याः शापः **(D)** कामधेनोः शापः
स्रोत–रघुवंश (1/75-79) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-26,27

45. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(क) दिलीपः	**1.** इन्दुमती
(ख) कुशः	**2.** कौसल्या
(ग) अजः	**3.** सुदक्षिणा
(घ) दशरथः	**4.** कुमुद्वती

	क	ख	ग	घ
(A)	**1**	**2**	**3**	**4**
(B)	**2**	**1**	**4**	**3**
(C)	**3**	**4**	**1**	**2**
(D)	**4**	**3**	**2**	**1**

स्रोत–रघुवंश - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-02,40,19,24,25

46. रघुवंशमहाकाव्यस्य उपजीव्यम् अस्ति–
(A) महाभारतम् **(B)** पद्मपुराणम्
(C) रामायणम् **(D)** मनुस्मृतिः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-116

34. (A) 35. (B) 36. (A) 37. (A) 38. (B) 39. (D) 40. (B) 41. (C) 42. (D) 43. (B) 44. (D) 45. (C) 46. (C)

47. 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः' – इत्युक्तिः?

(A) दण्डिनः **(B)** भवभूतेः

(C) माघस्य **(D)** कालिदासस्य

स्रोत–रघुवंश (1/4) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-03

48. राज्ञः दिलीपस्य पत्नी सुदक्षिणा ..... राजकन्या आसीत्?

(A) उत्कलस्य **(B)** मगधस्य

(C) पाञ्चालस्य **(D)** विदर्भस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशंकर शर्मा, पेज-213

49. 'इन्दुमती-स्वयंवर-वर्णनम्' रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे विद्यते?

(A) प्रथमे **(B)** चतुर्थे

(C) अष्टमे **(D)** षष्ठे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशंकर शर्मा, पेज-215

50. आराधय सपत्नीकः प्रीता कामदुधा हि सा का–

(A) कामधेनुः **(B)** सुदक्षिणा

(C) मेना **(D)** नन्दिनी

स्रोत–रघुवंश (1/81) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-27

51. स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः – इति पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते–

(A) दशकुमारचरिते **(B)** रघुवंशे

(C) शिशुपालवधे **(D)** मनुस्मृत्याम्

स्रोत–रघुवंश (2/4) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-34

52. वागर्थाविव सम्पृक्तौ कौ?

(A) रामकृष्णौ **(B)** पार्वती-परमेश्वरौ

(C) रामलक्ष्मणौ **(D)** कृष्णार्जुनौ

स्रोत–रघुवंश (1/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-02

53. रघुवंशस्य त्रयोदशसर्गे का कथा वर्णिता अस्ति–

(A) रावणवध

(B) रामस्य अयोध्याप्रत्यागमनम्

(C) रामस्य राज्याभिषेकः

(D) सीतापरित्यागः

स्रोत–रघुवंश - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-31

54. रघुवंशस्य ..... सर्गे राज्ञः दिलीपस्य गोसेवाचरणव्रतं वर्णितमस्ति–

(A) प्रथमे

(B) द्वितीये

(C) चतुर्दशे

(D) षोडशे

स्रोत–रघुवंश - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज–4, 5

55. ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे'' – इत्यत्र कस्तावत् वैदेहिबन्धुः–

(A) रामः **(B)** लक्ष्मणः

(C) रावणः **(D)** भरतः

स्रोत– रघुवंशम् (14/33) - हरगोविन्द मिश्र, पेज–354

संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम्

UP. TGT, PGT (संस्कृत) के छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तक में हर प्रश्न का महामंथन

आपके शिक्षक बनने का सपना हम करेंगे साकार

TGT प्रश्न मीमांसा

PGT प्रश्न मीमांसा

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करने के लिए हमें कॉल करें 8004545095, 8004545096

47. (D) 48. (B) 49. (D) 50. (D) 51. (B) 52. (B) 53. (B) 54. (B) 55. (A)

(iii) किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)

भारवि का सामान्य परिचय

- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला
- **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ
- **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि का वंशवृक्ष

भारवि
↓
मनोरथ (पुत्र)
↓
वीरदत्त - गौरी (पौत्र)
↓
दण्डी (प्रपौत्र)

- **सम्प्रदाय** – शैव
- **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
- **आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
- **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
- राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
- 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
- भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
- भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
- श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
- एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।
- भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
- भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।
- भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
- मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा **'नारिकेलफल'** से करते हैं– **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**
- दक्षिण के **'ऐहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् को **'लक्ष्म्यन्त'** महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को **'श्र्यन्त'** महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीय चरितम् को **'आनन्दान्त'** महाकाव्य कहते हैं।

महाकवि 'भारवि' विषयक प्रशस्तियाँ

1. भारवेरर्थगौरवम् । – **उद्भट**
2. वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता ।
   प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता ।।
   – **क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक**
3. नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते ।
   स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम् ।।
   – **मल्लिनाथ**
4. प्रदेशवृत्त्यापि महान्तमर्थं प्रदर्शयन्ती रसमादधाना ।
   सा भारवेः सत्पथदीपिकेव एषा कृतिः कैरिव नोपजीव्या ।।
   – **कृष्णकवि**
5. तादात्म्यं रसभावयोः भारविः स्पष्टमूचिवान् ।।
   – **शारदातनय**
6. ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।'' – **श्रीधरदास (सदुक्तिकर्णामृत)**
7. वंशस्थवृत्तेन धृतातपत्रो वृत्तेन संदर्शितराजवृत्तिः ।
   अर्थप्रकर्षाहृतराजलक्ष्मीर्नृपायते भारविरात्तकीर्तिः ।।
   – **आचार्य कपिलदेव द्विवेदी**
8. There is no doubt of the power of Bharvi in description, his style at its best has a calm dignity which is certainly attractive, while he excels also in the observation and record of the beauties of nature and of maidens.

हिन्दी अनुवाद – भारवि की वर्णन-शक्ति के विषय में सन्देह को अवसर नहीं है। उनकी शैली उत्कृष्टरूप में शान्त गौरवमयी है जो निश्चय ही आकर्षक है। वे प्रकृति और प्रमदाओं के सौन्दर्य, निरीक्षण और उन्हें चित्रित करने में सर्वश्रेष्ठ हैं।

– प्रो. ए. बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास

9. स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम् ।
अनुसाध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने ।।

– ऐहोल शिलालेख - रविकीर्ति ।

10. अर्थदीधितिसंवीता, सन्नीरजसुहासिनी ।
अज्ञोलूकनिरानन्दा, भा रवेरिव भारवेः ।।

– आचार्य कपिलदेव द्विवेदी

किरातार्जुनीयम् का परिचय - एक दृष्टि में

- भारवि की रचना/कृति – **''किरातार्जुनीयमहाकाव्यम्' (एकमात्र कृति)**
- विधा – **महाकाव्य**
- सर्ग – **18 (अठारह)**
- श्लोक – **1040**
- उपजीव्यग्रन्थ – **महाभारत का वनपर्व/ शिवपुराण**
- नायक – **मध्यमपाण्डव अर्जुन**
- प्रतिनायक – **किरातवेशधारी शिव**
- नायक की प्रकृति – **धीरोदात्त**
- नायिका – **द्रौपदी**
- मुख्य/अङ्गी/प्रधानरस – **वीररस**
- गौण/अङ्गरस – **शृङ्गार आदि**
- रीति एवं गुण – **पाञ्चाली रीति एवम् ओजगुण**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में– **वैदर्भी रीति**
- अलङ्कार – **3 शब्दालङ्कार, 60 अर्थालङ्कार, 7 चित्राक्षर**
- भारवि की शैली – **पाण्डित्यप्रधान अलङ्कृतशैली**
- कथानक – **तपस्यारत अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान् शिव से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति**

- बृहत्त्रयी में परिगणित महाकाव्य –
  1. भारवि का किरातार्जुनीयम् (सर्ग 18)
  2. माघ का शिशुपालवधम् (सर्ग 20)
  3. श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (सर्ग 22)
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ– **'श्री'** – शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में **'लक्ष्मी'** पद का प्रयोग हुआ है।
- भारवि के काव्य को कहा जाता है – **''लक्ष्मीपदाङ्क''**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में श्लोक/पद्य हैं – **46**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द – **वंशस्थ** (1-44 श्लोकों तक)
- 45वें श्लोक में (न समयपरिरक्षणं क्षमं ते....) – **पुष्पिताग्रा छन्द**
- अन्तिम 46वें श्लोक में (विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्) – **मालिनी छन्द**
- अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं – **भारवि** (भारवेरर्थगौरवम्)
- नायक अर्जुन और प्रतिनायक किरात (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम पड़ा – **'किरातार्जुनीयम्'**
- श्रीकृष्णमाचारियर ने किरातार्जुनीयम् की कितनी टीकाओं का उल्लेख किया है – **34**
- किरातार्जुनीयम् की सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रामाणिक एवं सारवती टीका का नाम – **'घण्टापथ'** – **मल्लिनाथ**
- ''घण्टापथ'' का शाब्दिक अर्थ है – **राजमार्ग**
- किरात की अन्य टीकाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है – **'शब्दार्थदीपिका'** – **श्री चित्रभानु** (केवल प्रथम तीन सर्गों पर)
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम तीन सर्गों को कहा जाता है – **'पाषाणत्रय'**
- भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने संस्कृत टीका लिखी – **किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर।**
- 'शब्दावतार' नाम से बृहत्कथा का संस्कृत रूपान्तरण किसने किया – **दुर्विनीत ने**
- किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग प्रसिद्ध है – **चित्रकाव्य के लिए**
- भारवि का एकाक्षर श्लोक – (केवल नकार का प्रयोग)

न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥

(किरात0 – 15/14)

- अर्थगौरव का क्या अर्थ है – अल्पशब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश अर्थात् 'गागर में सागर भरना।'
- **''नारिकेलफलसम्मितं वचः''** मल्लिनाथ का यह कथन किसके लिए है – भारवि के लिए।
- **''प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् से
- **''स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् (2/27)
- किरातार्जुनीयम् का मुख्य कथानक है – अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान् शङ्कर से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- अर्जुन पाशुपत अस्त्र के लिए भगवान् शङ्कर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय (इन्द्रकील) पर्वत की यात्रा व्यास के कहने पर करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में 'किरात' से तात्पर्य है – **किरातवेषधारी शिव**

- 'किरातार्जुनीयम्' का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है – **नायक अर्जुन को किरातवेशधारी शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।**
- युधिष्ठिर बारह वर्षों के वनवास के काल में अपने अनुजों और द्रौपदी के साथ रहते थे – **द्वैतवन में।**

किरातार्जुनीयम् का नामकरण

- किरातश्च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ **(द्वन्द्वसमास)** तौ अधिकृत्य कृतं काव्यम् इति किरातार्जुनीयम्।
- **किरातार्जुन** + **'छ'** ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' के अर्थ में ''छ'' प्रत्यय)
- **'शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः'** सूत्र से ''छ'' प्रत्यय।
- किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीय। (**''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्''** से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश हो गया)
- ग्रन्थवाची शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, अतः – 'किरातार्जुनीयम्' पद बना।
- इस प्रकार नायक अर्जुन और प्रतिनायक (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम **'किरातार्जुनीयम्'** पड़ा।

किरातार्जुनीय महाकाव्य के पात्र

- अर्जुन **(नायक)**, द्रौपदी **(नायिका)**, किरातवेशधारी शिव **(प्रतिनायक)**, श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, वनेचर, दुर्योधन, कर्ण, भीष्म, परशुराम, यक्ष, द्रोण, इन्द्र, व्यास, मूक (शूकर) आदि प्रमुख पात्र हैं।

मल्लिनाथ की सुप्रसिद्ध संस्कृत टीकायें

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (कालिदास)	– **सञ्जीवनी टीका**
2. कुमारसम्भवम् (कालिदास)	– **सञ्जीवनी टीका**
3. मेघदूतम् (कालिदास)	– **सञ्जीवनी टीका**
4. किरातार्जुनीयम् (भारवि)	– **घण्टापथ टीका**
5. शिशुपालवधम् (माघ)	– **सर्वङ्कषा टीका**
6. रावणवध (भट्टि)	– **जीवातु टीका**
7. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)	– **जीवातु टीका**

- इसके अतिरिक्त तार्किकरक्षा, नलोदयकाव्य, प्रशस्तपादभाष्य, और लघुशब्देन्दुशेखर पर भी मल्लिनाथ ने टीका लिखी है।
- इनका पूरा नाम– **महामहोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथसूरि**

किरातार्जुनीयम् की संक्षिप्त कथा

- किरातार्जुनीयम् में कौरवों पर विजय प्राप्ति के लिए अर्जुन का हिमालयपर्वत पर जाकर तपस्या करना, किरातवेशधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न हुए भगवान् शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।
- **सर्ग – 1.** हस्तिनापुर भेजे गये वनेचर का द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर से मिलना, दुर्योधन के शासन प्रबन्ध का वर्णन तथा युधिष्ठिर के लिए द्रौपदी का उत्तेजनापूर्ण कथन।
- **सर्ग – 2.** युधिष्ठिर–भीम का संवाद, व्यास का आगमन।
- **सर्ग – 3.** युधिष्ठिर – व्यास संवाद, व्यास द्वारा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए हिमालय पर जाकर तपस्या करने का आदेश, अर्जुन का प्रस्थान।
- **सर्ग – 4.** शरद् ऋतु का वर्णन।
- **सर्ग – 5.** हिमालय पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग – 6.** हिमालय पर अर्जुन की तपस्या, तपोविघ्न के लिए इन्द्र द्वारा अप्सराओं को भेजना।
- **सर्ग – 7.** इन्द्र द्वारा प्रेषित गन्धर्वों और अप्सराओं के आने और उनके विलासों का वर्णन
- **सर्ग – 8.** गन्धर्वों और अप्सराओं का उद्यानविहार और जलक्रीडा।
- **सर्ग – 9.** सायंकाल और चन्द्रोदयवर्णन, सुरतवर्णन तथा प्रभातवर्णन।
- **सर्ग – 10.** वर्षा आदि का वर्णन, अप्सराओं का चेष्टावर्णन तथा उनका प्रयत्न वैफल्य।
- **सर्ग – 11.** मुनिरूप में इन्द्र का आगमन, इन्द्र अर्जुन संवाद, इन्द्र का पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए अर्जुन को शिवाराधना करने का उपदेश।
- **सर्ग – 12.** अर्जुन की तपस्या, शूकर के रूप में मूक नामक दानव का अर्जुन वध के लिए आगमन, तथा किरातवेशधारी शिव का भी आगमन।
- **सर्ग – 13.** शूकररूपधारी मूकदानव पर शिव और अर्जुन के बाणों का प्रहार, उस वराह की मृत्यु, बाण के विषय में शिव के अनुचर और अर्जुन का विवाद।
- **सर्ग – 14.** सेना सहित शिव का आगमन और सेना के साथ अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 15.** चित्रयुद्ध वर्णन, (चित्रकाव्य)।
- **सर्ग – 16.** शिव और अर्जुन का अस्त्रयुद्ध।
- **सर्ग – 17.** शिव की सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, शिव और अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 18.** शिव और अर्जुन का बाहुयुद्ध, शिव का वास्तविक रूप में प्रकट होना, इन्द्रादि का आगमन, अर्जुन को पाशुपत

अस्त्र की प्राप्ति, इन्द्रादि का अर्जुन को विविध अस्त्र देना, सफल मनोरथ अर्जुन का युधिष्ठिर के समीप पहुँचना।

- सम्भोग शृङ्गार का सुन्दर वर्णन है – **सर्ग 8 और 9 में।**
- युद्ध वर्णन में वीररस का वर्णन है – **सर्ग 13 से 17 तक।**
- उपमा अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग है – **सर्ग 13 से 17 में।**
- प्रमुख वर्णनवैचित्र्य – सर्ग 4 में **शरद् वर्णन।**
  – सर्ग 5 में **हिमालय वर्णन।**
  – सर्ग 8 में **जलक्रीडा वर्णन।**
  – सर्ग 9 में **सन्ध्या, चन्द्रोदय और सुरत वर्णन।**
  – सर्ग 12 से 18 तक – **युद्ध वर्णन।**

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) की सूक्तियाँ

* **न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः ॥2॥** कल्याण चाहने वाले स्वपक्षीय) लोग मिथ्यापूर्ण मधुर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

* **हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ॥4॥** हितकारिणी, साथ ही तथा मनोहारिणी वाणी दुर्लभ होती है।

* **स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं हिताऩ्न यः संशृणुते स किम्प्रभुः ।**
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः ॥5॥ जो राजा को समुचित उपदेश नहीं देता है क्या वह मित्र है? अथवा वह किंसखा =कुत्सित मित्र है। इसी प्रकार जो शुभाकांक्षी व्यक्ति से सदुपदेश नहीं सुनता है क्या वह प्रभु है? अथवा वह किंप्रभु =निन्दनीय नरेश है। क्योंकि राजाओं तथा सचिवों के परस्पर अनुकूल रहने पर ही समग्र सम्पत्तियाँ सदैव अनुराग करती हैं ।

* **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः ॥8॥** महापुरुषों के साथ किया गया विरोध भी दुष्टों के संसर्ग की अपेक्षा अच्छा है।

* **अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता ॥23॥** बलवान् के साथ किया गया वैर, विरोध अनर्थपर्यवसायी होता है।

* **व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः। ॥30॥**

मूढ़बुद्धि वाले वे लोग पराभव प्राप्त करते हैं जो मायावियों के विषय में स्वयं मायावी नहीं होते।

* **अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः ॥33॥**

सफल क्रोधवाले, निग्रहानुग्रहसमर्थ व्यक्ति के, प्राणी अपने आप वशीभूत हो जाते हैं ।

* **विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः ॥37॥** चित्तवृतियाँ वास्तव में विलक्षण रूपों वाली होती हैं।

* **पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् ॥41॥** मनस्वी पुरुषों के लिए पराभव भी उत्सव के ही समान है।

* **शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः ॥42॥** निष्काम भावना वाले तपस्वीजन ही कामादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके शमवृत्ति द्वारा सिद्धि प्राप्त करते हैं, राजागण नहीं।

* **निराश्रया हन्त! हता मनस्विता ॥43॥** खेद है कि मनस्विता आश्रयविहीन होकर विनष्ट हो गई।

* **गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया ॥12॥** सत्कार बिना गुणानुरोध के प्रवृत्त नहीं होता।

* **परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः ॥25॥**

दूसरों द्वारा कही गई बातों का संग्रहमात्र करने वाले मुझ जैसे वार्ताहरों की बातें निश्चय ही केवल वृत्तान्तमात्र बताने वाली होती हैं।

* **प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान् असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः ॥30॥**

धूर्त लोग तथाविध सौम्य पुरुषों के आत्मीय बनकर उन्हें मार ही डालते हैं। जैसे– तीखे बाण कवच से अनाच्छादित शरीर वालों के भीतर घुसकर उन्हें मार ही डालते हैं।

* **अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः ॥33॥**

अमर्षशून्य व्यक्ति के मैत्रीभाव बरतने पर भी उसके प्रति लोगों को आस्था नहीं होती और न ही उसके द्वेषभाव रखने पर भय।

Sanskritganga Official
New App Download from Google Play Store

अभ्यास प्रश्न (किरातार्जुनीयम्)

1. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' यह किस कवि का प्रिय श्लोक है –
(A) भारवि (B) माघ
(C) कालिदास (D) भवभूति

2. भारवि किसके उपासक थे –
(A) ब्रह्मा (B) शिव
(C) विष्णु (D) सूर्य

3. बृहत्त्रयी में कौन सा महाकाव्य नहीं है –
(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् (D) नैषधीयचरितम्

4. किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं –
(A) 17 (B) 18
(C) 19 (D) 20

5. अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं –
(A) कालिदास (B) दण्डी
(C) भारवि (D) माघ

6. ''न नो ननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु'' यह श्लोक किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है –
(A) भारवि के किरातार्जुनीयम् से
(B) माघ के शिशुपालवधम् से
(C) कालिदास के रघुवंशम् से
(D) वाल्मीकि के रामायण से

7. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' यह सूक्ति किसकी है –
(A) माघ (B) दण्डी
(C) भारवि (D) कालिदास

8. किस महाकाव्य के प्रथम तीन सर्गों को ''पाषाणत्रय'' कहा गया है –
(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) कुमारसम्भवम्

9. भारवि का वास्तविक नाम था –
(A) रत्नाकर (B) श्रीधर
(C) दामोदर (D) नारायण स्वामी

10. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में प्रमुख छन्द है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) पुष्पिताग्रा

11. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के अन्तिमश्लोक में छन्द है–
(A) वंशस्थ (B) पुष्पिताग्रा
(C) मालिनी (D) उपेन्द्रवज्रा

12. किरातार्जुनीयम् मङ्गलाचरण में छन्द प्रयुक्त है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) पुष्पिताग्रा (D) रुचिरा

13. पाण्डव वन में कितने वर्षों तक निवास किये –
(A) 14 वर्ष (B) 15 वर्ष
(C) 18 वर्ष (D) 13 वर्ष

14. किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है –
(A) महाभारत वनपर्व से (B) महाभारत आदिपर्व से
(C) महाभारत सभापर्व से (D) महाभारत भीष्मपर्व से

15. किरातार्जुनीयम् के प्रत्येक सर्ग के अन्त में कौन सा शब्द प्रयुक्त हुआ है –
(A) लक्ष्मीः (B) श्रीः
(C) सरस्वती (D) कुरूणाम्

16. ''आतपत्र'' किस कवि की उपाधि है –
(A) माघ (B) भारवि
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

17. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) 46 (B) 48
(C) 45 (D) 49

18. ''बृहत्त्रयी'' में कौन सा ग्रन्थ परिगणित है –
(A) रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) रघुवंशमहाकाव्यम्

19. भारवि का समय विद्वानों ने क्या माना है –
(A) 600 ई0 के आसपास (B) 800 ई0 के आसपास
(C) कालिदास के पहले (D) प्रथम शताब्दी के आसपास

1. (A)	**2. (B)**	**3. (C)**	**4. (B)**	**5. (C)**	**6. (A)**	**7. (C)**	**8. (B)**	**9. (C)**	**10. (B)**
11. (C)	**12. (B)**	**13. (D)**	**14. (A)**	**15. (A)**	**16. (B)**	**17. (A)**	**18. (C)**	**19. (A)**	

20. कवियों का उत्तरोत्तर सही कालक्रम माना जाता है–
(A) माघ-भारवि-श्रीहर्ष (B) भास-भारवि-अश्वघोष
(C) भास-माघ-कालिदास (D) वाल्मीकि-भास-भारवि

21. भारवि के बाद किसका समय माना जाता है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) व्यास का (D) भास का

22. भारवि, पूर्ववर्ती कवि माने जाते हैं –
(A) व्यास के (B) श्रीहर्ष के
(C) कालिदास के (D) अश्वघोष के

23. किरातार्जुनीयम् का मुख्य रस है –
(A) वीररस (B) शृंगाररस
(C) भयानक रस (D) इनमें से कोई नहीं

24. भारवि का प्रिय अलंकार है –
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) अर्थान्तरन्यास

25. पाण्डवों को अज्ञातवास करना पड़ा –
(A) दो वर्ष (B) एक वर्ष
(C) तेरह वर्ष (D) चौदह वर्ष

26. पाण्डवों ने वनवासकाल में निवास किया –
(A) तुलसीवन में (B) विन्ध्यवन में
(C) द्वैतवन में (D) नन्दनवन में

27. द्रौपदी युधिष्ठिर को किसके प्रति उकसाती है –
(A) भीम के प्रति (B) दुर्योधन के प्रति
(C) वनेचर के प्रति (D) कर्ण के प्रति

28. भारवि के काव्य में किस अलङ्कार की प्रमुखता है–
(A) रूपक अलंकार (B) उत्प्रेक्षा अलङ्कार
(C) उपमा अलंकार (D) चित्रालङ्कार

29. भारवि के पिता का नाम था –
(A) श्रीधर (B) महीधर
(C) लक्ष्मीधर (D) कृष्णधर

30. भारवि की माता थी –
(A) रसिका (B) सुशीला
(C) सुनीता (D) सुगीता

31. किरातार्जुनीयम् का पात्र नही है –
(A) भीम (B) दुर्योधन
(C) वनेचर (D) रघु

32. किरातार्जुनीयम् का पात्र है –
(A) दुष्यन्त (B) चारुदत्त
(C) युधिष्ठिर (D) बाली

33. किरातार्जुनीयम् किस विधा का काव्य है –
(A) नाटक (B) चम्पू
(C) आख्यायिका (D) महाकाव्य

34. भारवि की कविता पर प्रभाव पड़ा है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) भवभूति का (D) इनमें से किसी का नहीं

35. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में किस नारी का उदात्त चरित्र वर्णित है –
(A) कुन्ती का (B) द्रौपदी का
(C) गान्धारी का (D) तारा का

36. वनवासकाल में कठोर भूमि में कौन सोते हैं –
(A) अर्जुन-वनेचर (B) नकुल-सहदेव
(C) युधिष्ठिर-कृष्ण (D) दुर्योधन-दुःशासन

37. किरातार्जुनीयम् का नायक है –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

38. वर्णिलिङ्गी कौन था –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

39. वनेचर हस्तिनापुर से लौटकर युधिष्ठिर से कहाँ मिला –
(A) विन्ध्यवन में (B) नन्दनवन में
(C) विराटवन में (D) द्वैतवन में

40. वनेचर हस्तिनापुर किस वेश में गया –
(A) राजा के वेश में (B) ब्रह्मचारी के वेश में
(C) मन्त्री के वेश में (D) किसान के वेश में

41. वनेचर हस्तिनापुर का समाचार जानकर किसके पास आता है –
(A) श्रीकृष्ण के पास (B) युधिष्ठिर के पास
(C) दुर्योधन के पास (D) द्रौपदी के पास

20. (D)	**21. (B)**	**22. (B)**	**23. (A)**	**24. (D)**	**25. (B)**	**26. (C)**	**27. (B)**	**28. (D)**	**29. (A)**
30. (B)	**31. (D)**	**32. (C)**	**33. (D)**	**34. (A)**	**35. (B)**	**36. (B)**	**37. (A)**	**38. (B)**	**39. (D)**
40. (B)	**41. (B)**								

42. 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि रहने वाले थे –
(A) दक्षिणभारत के (B) उत्तरभारत के
(C) मध्यप्रदेश के (D) पूर्वीभारत के

43. भारवि की कुल कितनी रचनायें हैं –
(A) तीन (B) दो
(C) एक (D) सात

44. द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास कौन आता है –
(A) दुर्योधन (B) भीष्म
(C) वनेचर (D) द्रोणाचार्य

45. द्रौपदी की चारित्रिक विशेषता नही है –
(A) वीरक्षत्राणी (B) कुशलराजनीतिज्ञा
(C) तेजस्विनी (D) कुलटा

46. किरातार्जुनीयम् के दुर्योधन को कहते हैं –
(A) सुयोधन (B) दुःशासन
(C) ज्येष्ठभ्राता (D) धनञ्जय

47. वनेचर की चारित्रिक विशेषता नही है –
(A) सच्चा हितैषी (B) स्पष्टवक्ता
(C) गुणवान् (D) नीच अहङ्कारी

48. किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ किस पद से होता है –
(A) श्रियः (B) लक्ष्मीः
(C) वनेचरः (D) कुरूणाम्

49. ''न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है –
(A) शिशुपालवधम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) नैषधीयचरितम् से (D) रघुवंशम् से

50. ''विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे'' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) वनेचर के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) द्रौपदी के लिए

51. ''वञ्चनीयाः'' पद में प्रत्यय है –
(A) तव्यत् (B) अनीयर्
(C) ल्यप् (D) तुमुन्।

52. 'शास्ति' में लकार, पुरुष और वचन है –
(A) लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(B) लृट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(C) लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(D) लोट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन

53. ''अतोर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा'' में कौन किससे क्षमायाचना कर रहा है –
(A) दुर्योधन युधिष्ठिर से (B) वनेचर युधिष्ठिर से
(C) अर्जुन किरात से (D) द्रौपदी युधिष्ठिर से

54. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह कथन किसका है–
(A) वनेचर का युधिष्ठिर से
(B) द्रौपदी का युधिष्ठिर से
(C) युधिष्ठिर का वनेचर से
(D) सेवक का जनता से

55. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह सूक्ति कहाँ की है –
(A) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग की
(B) शिशुपालवधम् प्रथमसर्ग की
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् प्रथमसर्ग की
(D) नैषधीयचरितम् प्रथमसर्ग की

56. ''स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्'' इसे किसने कहा –
(A) युधिष्ठिर ने (B) दुर्योधन ने
(C) वनेचर ने (D) द्रौपदी ने

57. ''नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः'' यहाँ 'सुयोधन' पद प्रयुक्त है –
(A) भारवि के लिए (B) श्रीकृष्ण के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) युधिष्ठिर के लिए

58. ''वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्'' में किसके द्वारा अपने पुरुषार्थो का विस्तार किया जा रहा है –
(A) युधिष्ठिर के द्वारा (B) दुर्योधन के द्वारा
(C) वनेचर के द्वारा (D) भीम के द्वारा

59. ''निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' किसके लिए कहा गया है –
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनेचर (D) द्रौपदी

42. (A)	**43. (C)**	**44. (C)**	**45. (D)**	**46. (A)**	**47. (D)**	**48. (A)**	**49. (B)**	**50. (B)**
51. (B)	**52. (A)**	**53. (B)**	**54. (A)**	**55. (A)**	**56. (C)**	**57. (C)**	**58. (B)**	**59. (A)**

60. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' कौन किससे कह रहा है।
(A) वनेचर-द्रौपदी से (B) वनेचर-युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) इनमें से कोई नहीं

61. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्'' कौन किससे कहता है –
(A) वनेचर-युधिष्ठिर से (B) वनेचर-दुर्योधन से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) दुर्वासा-शकुन्तला से

62. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' किसको सम्बोधित करके कहा गया है –
(A) युधिष्ठिर को (B) वनेचर को
(C) द्रौपदी को (D) दुर्योधन को

63. ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः'' इसमें द्रौपदी किसकी दुर्दशा का वर्णन करती है –
(A) युधिष्ठिर की (B) दुर्योधन की
(C) वनेचर की (D) भीम की

64. ''दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः'' यहाँ 'वृकोदरः' पद किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) भीम के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) वनेचर के लिए

65. वनवासकाल में अर्जुन जङ्गल से क्या लाकर युधिष्ठिर को प्रदान करते हैं –
(A) स्वर्ण (B) चाँदी
(C) धन (D) वल्कलवस्त्र

66. किरातार्जुनीयम् में 'युगलभ्राता' के रूप में वर्णन है–
(A) भीम-अर्जुन (B) दुर्योधन-दुःशासन
(C) नकुल-सहदेव (D) वनेचर-युधिष्ठिर

67. ''क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न..... प्रभवोऽनुजीविभिः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) रक्षणीयाः (B) वञ्चनीयाः
(C) प्रेषणीयाः (D) पालनीयाः

68. किरातार्जुनीयम् की सूक्ति नही है –
(A) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(B) प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः
(C) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः
(D) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

69. ''प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्'' यहाँ 'घ्नन्ति' पद में धातु है –
(A) घन् (B) हन्
(C) नन् (D) नी

70. 'परिभ्रमन्' पद में प्रत्यय है –
(A) शतृ (B) शानच्
(C) ल्युट् (D) घञ्

71. ''भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' किसने किससे कहा –
(A) भीम ने धृतराष्ट्र से (B) वनेचर ने युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी ने युधिष्ठिर से (D) वनेचर ने दुर्योधन से

72. ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे'' यहाँ 'महीभुजे' पद में विभक्ति है –
(A) सप्तमी (B) चतुर्थी
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

73. किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है –
(A) भीम का (B) शिव का
(C) अर्जुन का (D) दुर्योधन का

74. ''कुरूणामधिपः'' का तात्पर्य है –
(A) दुर्योधन (B) श्रीकृष्ण
(C) अर्जुन (D) वनेचर

75. वनेचर की बातें सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे–
(A) द्रौपदी के पास (B) व्यास के पास
(C) श्रीकृष्ण के पास (D) दुर्योधन के पास।

76. दुर्योधन की शासनव्यवस्था जानने के लिए हस्तिनापुर किसे भेजा गया था –
(A) वनेचर को (B) भीम को
(C) नकुल को (D) किसी को नहीं

77. किरातार्जुनीयम् में अर्जुन को शिव से कौन सा अस्त्र प्राप्त हुआ था –
(A) पाशुपतास्त्र (B) आग्नेयास्त्र
(C) वायव्यास्त्र (D) ब्रह्मास्त्र

78. ''निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' यह उक्ति किसकी है–
(A) वनवासी यक्ष की (B) वनेचर की
(C) युधिष्ठिर की (D) द्रौपदी की

60. (B)	**61. (C)**	**62. (A)**	**63. (D)**	**64. (B)**	**65. (D)**	**66. (C)**	**67. (B)**	**68. (D)**	**69. (B)**
70. (A)	**71. (C)**	**72. (B)**	**73. (B)**	**74. (A)**	**75. (A)**	**76. (A)**	**77. (A)**	**78. (B)**	

79. 'वनेचर' किस ग्रन्थ का पात्र है –
(A) उत्तररामचरितम् (B) कादम्बरी
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

80. किरातार्जुनीयम् में संवाद नहीं है –
(A) युधिष्ठिर-व्यास का (B) वनेचर-युधिष्ठिर का
(C) इन्द्र और अर्जुन का (D) सिंह और दिलीप का

81. भारवि का जन्म स्थान है –
(A) दक्षिणभारत का ज्ञानपुर
(B) दक्षिणभारत का अचलपुर
(C) पूर्वीभारत का सीतापुर
(D) मध्यभारत का शिवपुर

82. किरातार्जुनीयम् में कुशलगुप्तचर के रूप में चित्रित है –
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनेचर (D) द्रौपदी

83. किरातार्जुनीयम् निबद्ध है –
(A) अध्यायों में (B) सर्गों में
(C) काण्डों में (D) अङ्कों में

84. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) में किस पात्र का नाम नहीं आता है–
(A) वनेचर (B) द्रौपदी
(C) सुयोधन (D) श्रीकृष्ण

85. वनेचर युधिष्ठिर से कहाँ का समाचार बताता है –
(A) हस्तिनापुर के कर्ण का
(B) इन्द्रप्रस्थ के राजा का
(C) हस्तिनापुर के दुर्योधन का
(D) वनाधिराज सिंह का

86. किरातार्जुनीयम् का पात्र नही है –
(A) द्रौपदी (B) युधिष्ठिर
(C) सुयोधन (D) मुरला

87. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग का आरम्भिक वक्ता है–
(A) वनेचर (B) श्रीकृष्ण
(C) भीम (D) दुर्योधन

88. वनेचर ने हस्तिनापुर का समाचार किससे कहा –
(A) भीम से (B) द्रौपदी से
(C) युधिष्ठिर से (D) अर्जुन से

89. भारवि किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण किस पद से करते हैं –
(A) 'श्री' से (B) 'लक्ष्मी' से
(C) 'ॐ' से (D) 'श्रीकृष्ण' से

90. भीम अपने शरीर पर लेपन करते थे –
(A) कमलरस का (B) लालचन्दन का
(C) पीले चन्दन का (D) सुगन्धित इत्र का

91. किरातार्जुनीयमहाकाव्य में कुल श्लोकों की संख्या हैं–
(A) 1050 (B) 1250
(C) 1040 (D) 1150

92. भारवि का आश्रयदाता राजा था –
(A) श्रीहर्ष (B) विक्रमादित्य
(C) पुलकेशिन का भाई विष्णुवर्धन (D) समुद्रगुप्त

93. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' सूक्ति किस कवि के लिए है–
(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) भारवि (D) दण्डी

94. ''वनेचरः'' में कौन सा प्रत्यय है –
(A) घञ् प्रत्यय (B) ट प्रत्यय
(C) अण् प्रत्यय (D) णिनि प्रत्यय

95. ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' यह कथन किसका है –
(A) द्रौपदी का (B) युधिष्ठिर का
(C) वनेचर का (D) दुर्योधन का

96. ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः'' के 'विघाताय' पद में धातु है –
(A) घ्रा (B) हन्
(C) विघ् (D) घात्

97. अर्जुन ने किस पर्वत पर तपस्या की –
(A) रैवतक (B) इन्द्रकील
(C) विन्ध्याचल (D) चित्रकूट

98. ''किरातश्च अर्जुनश्च'' यहाँ कौन सा समास है –
(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

99. किरातार्जुनीयम् में प्रत्यय है –
(A) ढक् (B) छ
(C) अच् (D) घ

100. वनेचर में समास है?
(A) नञ् तत्पुरुष (B) अलुक् तत्पुरुष
(C) नञ् बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व समास

79. (D)	80. (D)	81. (B)	82. (C)	83. (B)	84. (D)	85. (C)	86. (D)	87. (A)	88. (C)
89. (A)	90. (B)	91. (C)	92. (C)	93. (C)	94. (B)	95. (A)	96. (B)	97. (B)	98. (B)
99. (B)	100. (B)								

5 Unit
कारक एवं वाच्यपरिवर्तन

कारक-प्रकरण

कारक= कृ+ण्वुल् =कारकम् (करने वाला)
'क्रियां करोति इति कारकम्' क्रिया को करने वाला कारक है।
'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्'- क्रिया का जो जनक होता है, या **'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध (अन्वय) होता है, उसे कारक कहते हैं।
कारक छः प्रकार के बताये गये हैं-
कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

- कर्तृकारक, कर्मकारक, करणकारक, सम्प्रदान कारक, अपादान कारक, अधिकरणकारक। ये छह कारक हैं।
- सम्बन्ध को कारक नहीं माना गया है क्योंकि सम्बन्ध का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता।

यथा- ''हे मित्र! दशरथस्य पुत्रः श्रीरामचन्द्रः वनात् आगत्य वानरैः सह रावणं जघान'' हे मित्र! दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र ने वन से आकर वानरों के साथ रावण को मारा। इस वाक्य में मारना क्रिया का सम्बन्ध रामचन्द्र, वन, वानर, और रावण के साथ है अतः रामचन्द्र, वन, वानर कारक हैं लेकिन हे मित्र और दशरथ कारक नहीं हैं क्योंकि हनन क्रिया से इनका सीधा सम्बन्ध नहीं है। ये दोनों शब्द क्रिया के निष्पादन में सहायक भी नहीं है। अतः सम्बोधन और सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता है।

- सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। षष्ठी विभक्ति सम्बन्ध अर्थ में ही प्रयुक्त होती है।
- कारक प्रकरण को **विभक्त्यर्थ-प्रकरण** भी कहते हैं।
- कारक शब्द का एक अर्थ कर्ता भी है, किन्तु यहाँ पर कारक शब्द पारिभाषिक है।
- कारक के पर्यायवाची निमित्त एवं हेतु शब्द भी हैं। अतः निमित्त एवं हेतु को भी कारक कहते हैं।
- 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' आदि सूत्रों से 'कर्मसंज्ञा' तथा 'कर्मणि द्वितीया' से अनुक्त कर्म में 'द्वितीया विभक्ति' का विधान होता है।
- 'स्वतन्त्रः कर्ता' सूत्र से 'कर्तृसंज्ञा' 'साधकतमं करणम्' सूत्र से 'करण संज्ञा' और 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से अनुक्त कर्ता और करण में 'तृतीया विभक्ति' का विधान होता है।
- 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' आदि सूत्रों से 'सम्प्रदान संज्ञा और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से 'चतुर्थी विभक्ति' का विधान।
- 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' आदि सूत्रों से 'अपादान संज्ञा' और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से 'पञ्चमी विभक्ति।'
- 'आधारोऽधिकरणम्' सूत्र से 'अधिकरण संज्ञा' तथा 'सप्तम्यधिकरणे च' से 'सप्तमी विभक्ति' का विधान होता है।
- सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता क्योंकि क्रिया के साथ इसका साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता इसमें 'षष्ठी शेषे' सूत्र से षष्ठी विभक्ति का विधान होता है।
- 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' तथा 'सम्बोधने च' सूत्र से प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्राधिक्य में, परिमाणमात्र में, वचनमात्र में तथा सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति का विधान होता है।

कारक विभक्ति सारणी

कारक	विभक्ति	विभक्तिविधायक सूत्र
कर्ता	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया/स्वतन्त्रः कर्ता
कर्म	द्वितीया	कर्मणि द्वितीया
करण	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
सम्प्रदान	चतुर्थी	चतुर्थी सम्प्रदाने
अपादान	पञ्चमी	अपादाने पञ्चमी
सम्बोधन	प्रथमा	सम्बोधने च
सम्बन्ध	षष्ठी	षष्ठी शेषे
प्रातिपदिकार्थ	प्रथमा	प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाण वचनमात्रे प्रथमा

उक्त (कथित) कारक में प्रथमा विभक्ति तथा अनुक्त/ अनभिहित (अकथित) कारक में उपर्युक्त विभक्तियों का प्रयोग होगा।

प्रथमा विभक्ति

1. सूत्र- प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा (2.3.46)

पदपरिचय- इस सूत्र में दो पद हैं-

* प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे (7.1) यह सप्तम्यन्त पद है।
* 'प्रथमा' (1.1) यह प्रथमान्त पद है।

सूत्रप्रकार- यह सूत्र प्रथमा विभक्ति का विधान करता है, इसलिए विधिसूत्र है।

समास- 'प्रातिपदिकस्य अर्थः प्रातिपदिकार्थः' इति षष्ठीतत्पुरुषः 'प्रातिपदिकार्थश्च लिङ्गञ्च परिमाणञ्च वचनञ्च प्रातिपदिकार्थलिङ्ग-परिमाणवचनानि' इति इतरेतरद्वन्द्वः।

प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनान्येव प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणमात्रम् इति अस्वपदविग्रहः।

सूत्रार्थ- प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र में, परिमाणमात्र में, वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

प्रातिपदिकार्थ का लक्षण- 'नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः' जिस शब्द के उच्चारण करने पर जो पदार्थ नियत रूप से उपस्थित हो जाता है उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं।

अलिङ्ग प्रातिपदिकार्थ मात्र के उदाहरण- उच्चैः, नीचैः।

नियतलिङ्ग- कृष्णः (वासुदेव), श्रीः (लक्ष्मी), ज्ञानम् (ज्ञान)। यह नियतलिङ्ग के उदाहरण हैं।

जिन शब्दों के रूप एक से अधिक लिङ्गों में होते हैं, उन्हें अनियत लिङ्ग कहते हैं, जैसे = तट शब्द के रूप पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक तीनों लिङ्गों में होते हैं।

अनियतलिङ्ग/लिङ्गमात्राधिक्य का उदाहरण- तटः, तटी, तटम्

परिमाणमात्र का उदाहरण- द्रोणो व्रीहिः

वचनमात्र का उदाहरण- एकः, द्वौ, बहवः

2. सूत्र-सम्बोधने च (2.3.47)

पदपरिचय- * सम्बोधने (7.1) * 'च' यह अव्यय पद है। इस सूत्र में दो पद हैं-

सूत्रप्रकार- प्रथमा विभक्ति का विधान करने के कारण यह विधिसूत्र है।

अनुवृत्ति- 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' इस सूत्र से 'प्रथमा' पद की अनुवृत्ति हुई।

सूत्रार्थ- सम्बोधन अर्थ के प्रतीत होने पर प्रथमा विभक्ति होती है। सम्बोधन का अर्थ है- किसी को अभिमुख करके अच्छी तरह समझना।

उदाहरण- हे देवदत्त! अत्र आगच्छ (हे देवदत्त! यहाँ आओ)

द्वितीया विभक्ति

3. सूत्र-कर्तुरीप्सिततमं कर्म (1.4.49)

पदपरिचय- 'कर्तुः' (6.1), 'ईप्सिततमम्' (1.1), 'कर्म'(1.1)। इसमें तीन पद हैं।

सूत्रप्रकार- कर्मसंज्ञा का विधान करने के कारण यह संज्ञासूत्र है।

अधिकार- 'कारके'

सूत्रार्थ- कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे विशेषरूप से प्राप्त करना चाहता है उस कारक की कर्मसंज्ञा होती है।

4. सूत्र-अनभिहिते (2.3.1)

पदपरिचय- 'अनभिहिते' यह सप्तम्यन्त पद है।

समास- न अभिहितम् अनभिहितं तस्मिन् अनभिहिते, नञ् तत्पुरुषः।

सूत्रप्रकार- यह अधिकार सूत्र है।

सूत्रार्थ- अनभिहित कर्म कारक में द्वितीया आदि विभक्ति होनी चाहिए।

उदाहरण- हरिं भजति (हरि को भजता है।)

महत्त्वपूर्ण तथ्य- अनुक्त कर्म में ही द्वितीया विभक्ति होती है उक्त कर्म में नहीं। उक्त कर्म में तो प्रातिपदिकार्थ में प्रथमा विभक्ति ही होती है।

5. सूत्र-कर्मणि द्वितीया (2.3.2)

पदपरिचय- 'कर्मणि' पद सप्तम्यन्त है। द्वितीया यह प्रथमान्त पद है। सूत्र में दो पद हैं।

सूत्रप्रकार- द्वितीया विभक्ति का विधान करने के कारण यह विधिसूत्र है।

अधिकार- 'अनभिहिते'

सूत्रार्थ- अनुक्त कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है।

उदाहरण- * हरिं भजति (हरि को भजता है।)

* यदि कर्म तिङ्, कृत् आदि किसी के द्वारा उक्त (कहा गया) होगा तो उसमें 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया नहीं होगी।
* लक्ष्म्या हरिः सेव्यते (लक्ष्मी द्वारा हरि का सेवन किया जाता है।)

6. सूत्र-अकथितं च (1.4.51)

पदपरिचय- 'अकथितम्' यह प्रथमान्त पद है, 'च' यह अव्यय पद है। इस सूत्र में दो पद हैं।

सूत्रप्रकार- कर्मसंज्ञा का विधान करने के कारण संज्ञासूत्र है।

समास- न कथितम् अकथितम्, नञ् तत्पुरुष समास

अधिकार/अनुवृत्ति- कारके का अधिकार है और 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म सूत्र से कर्म की अनुवृत्ति।

सूत्रार्थ- संस्कृत में दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चिञ्, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, ह्व, कृष्, वह्- ये सोलह धातुयें हैं, जिनके प्रयोग करने में वक्ता स्वतन्त्र होता है चाहे वह करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण आदि कारक का प्रयोग करें या

इनके स्थान पर कर्म का प्रयोग करें।

* उपर्युक्त इन सोलह धातुओं को ही द्विकर्मक-धातुयें भी कहते हैं। इनके दो कर्म होते हैं-

1. प्रधान या मुख्य कर्म

2. अकथित कर्म- अकथित (अप्रधान, गौण या अविवक्षित कर्म) अपादान, अधिकरण, सम्प्रदान और करण कारक ही होता है। गिनायी गयी सोलह धातुओं एवं उनकी समानार्थक गौण या अप्रधान धातुओं के योग में कर्मसंज्ञा होती है।

सोलह धातुओं को इस कारिका में गिनाया गया है-

दुह्याच्-पच्-दण्ड्-रुधि-प्रच्छि-चि-ब्रू-शासु-जि-मथ-मुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्॥

'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' सूत्र से प्रधान की कर्मसंज्ञा होती है।

उदाहरण- दुह् - देवदत्तः गां पयः दोग्धि।
(देवदत्त गाय से दूध दुहता है।)

* इस वाक्य में कर्ता है देवदत्त। क्रियापद है 'दोग्धि' (दुह् धातु, अदादिगण, लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन)
* दोहन क्रिया द्वारा कर्ता का अत्यन्त अभीष्ट वस्तु है- पयः=दूध अतः 'पयस्' को इष्टतम कर्म मानकर 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' से कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हुई।
* यहाँ वक्ता 'गो' को अपादान के रूप में कहने की इच्छा न होने के कारण 'गो' यह अविवक्षित हुआ।
* 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा हो गई और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई- गां दोग्धि पयः ।

याच्- बलिं याचते वसुधाम्- 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा
बलेः याचते वसुधाम्- (अपादान की विवक्षा में)
(बलि से पृथ्वी को माँगता है।) बलेः में पञ्चमी विभक्ति हुई।

पच्- तण्डुलान् ओदनं पचति- 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा।
तण्डुलैः ओदनं पचति- करण कारक की विवक्षा में 'तण्डुलैः' में तृतीया हुई। (चावलों से भात पकाता है।)

दण्ड्- गर्गान् शतं दण्डयति- ''अकथितं च'' से कर्मसंज्ञा।
गर्गेभ्यः शतं दण्डयति- (अपादान की विवक्षा में)(गर्गों से सौ रुपये दण्ड प्राप्त करता है।)

रुध्- व्रजम् अवरुणद्धि गाम्- 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा।
व्रजे अवरुणद्धि गाम्- (अधिकरण की विवक्षा में)
(गाय को बाड़े (गोष्ठ) में रोकता है।)

प्रच्छ्- माणवकं पन्थानं पृच्छति- 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा।
माणवकात् पन्थानं पृच्छति- (अपादान की विवक्षा में)
(बच्चे से मार्ग पूछता है।)

चि- वृक्षम् अवचिनोति फलानि (वृक्ष से फलों को चुनता या तोड़ता है।) 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा हुआ। वृक्षात् अवचिनोति फलानि- अपादान कारक से पञ्चमी विभक्ति 'वृक्षात्' में।

ब्रू,शास्- माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा- 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा (बच्चे के लिए धर्म को कहता या सिखाता है)
माणवकाय धर्मं ब्रूते शास्ति वा- सम्प्रदान कारक की विवक्षा में माणवकाय में चतुर्थी विभक्ति।

जि- शतं जयति देवदत्तम्- 'अकथितं च' कर्मसंज्ञा।
(देवदत्त से सौ जीतता है)
शतं जयति देवदत्तात्- अपादान की विवक्षा में देवदत्तात् में पञ्चमी विभक्ति होती है।

मथ्- सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति- 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा।
(क्षीरसागर से अमृत मथकर निकालता है।)
सुधां क्षीरनिधेः मथ्नाति- अपादान कारक की विवक्षा में 'क्षीरनिधेः' में पञ्चमी विभक्ति।

मुष्- देवदत्तं शतं मुष्णाति- 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा
(देवदत्त से सौ रुपये छीनता है।)
देवदत्तात् शतं मुष्णाति- अपादान की विवक्षा में 'देवदत्तात्' में पञ्चमी विभक्ति होती है।

नी,हृ,कृष्,वह्- ग्रामम् अजां नयति, हरति, कर्षति, वहति वा- 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा।
ग्रामे अजां नयति, हरति, कर्षति, वहति वा- अधिकरण की विवक्षा में सप्तमी विभक्ति।

अर्थनिबन्धनेयं संज्ञा- इस 'अकथितं च' सूत्र से जिन धातुओं के योग में कर्मसंज्ञा होती है। उनके पर्यायवाची या समानार्थक धातुओं के योग होने पर भी कर्मसंज्ञा होगी।
तात्पर्य यह है कि इस सूत्र द्वारा प्रतिपादित कर्मसंज्ञा केवल दुह् आदि के समानार्थक अन्य धातुओं के योग में भी हो जाती है।
जैसे- याच् धातु का माँगना अर्थ है और भिक्ष् धातु के योग में कर्मसंज्ञा होकर 'बलिं भिक्षते वसुधाम्' बनता है।
ब्रू धातु के योग में अकथित कर्म सम्भव है। उसीप्रकार से समानार्थक भाष्, वच्, अभि+धा के योग में भी अकथित मानकर कर्मसंज्ञा करके 'माणवकं धर्मं ब्रूते, माणवकं धर्मं शास्ति' की तरह 'माणवकं धर्मं भाषते, वक्ति, अभिधत्ते' बना सकते हैं

- **गौणे कर्मणि दुह्यादेः, प्रधाने नी-हृ-कृष्-वहाम्।**
  दुह् आदि धातुओं के गौणकर्म में तथा नी,हृ,कृष्,वह् धातुओं के प्रधानकर्म में लकार हुआ करते हैं।
- जिस कर्म में लकार होगा वह कर्म उक्त होता है और उक्त कर्म में प्रथमा विभक्ति लगती है। दूसरा कर्म अर्थात् गौणकर्म अनुक्त होने से यथापूर्व द्वितीया विभक्ति में ही रहेगा।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सः गां दोग्धि पयः।	तेन गौः दुह्यते पयः।
सः बलिं याचते वसुधाम्।	तेन बलिः याच्यते वसुधाम्।
तण्डुलान् ओदनं पचति।	तेन तण्डुला ओदनं पच्यन्ते।
राजा गर्गान् शतं दण्डयति।	राज्ञा गर्गाः शतं दण्ड्यन्ते।
गोपः व्रजमवरुणद्धि गाम्।	गोपेन व्रजः अवरुध्यते गाम्।
सः माणवकं पन्थानं पृच्छति।	तेन माणवकः पन्थानं पृच्छ्यते।
वटुः वृक्षमवचिनोति फलानि।	वटुना वृक्षः अवचीयते फलानि।
गुरुः माणवकं धर्मं ब्रूते।	गुरुणा माणवको धर्ममुच्यते।
गुरुः माणवकं धर्मं शास्ति।	गुरुणा माणवको धर्मं शिष्यते।
सः शतं जयति देवदत्तम्।	तेन शतं जीयते देवदत्तः।
सः सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	तेन सुधां क्षीरनिधिः मथ्यते।
चौरः देवदत्तं शतं मुष्णाति।	चौरेण देवदत्तः शतं मुष्यते।
प्रधाने कर्मणि	
सः ग्रामम् अजां नयति।	तेन ग्रामम् अजा नीयते।
सः ग्रामम् अजां हरति।	तेन ग्रामम् अजा ह्रियते।
सः ग्रामम् अजां कर्षति।	तेन ग्रामम् अजा कृष्यते।
सः ग्रामम् अजां वहति।	तेन ग्रामम् अजा उह्यते।

7. सूत्र-गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्दकर्मा-ऽकर्मकाणामणि कर्ता स णौ (1.4.52)

सूत्रप्रकार- कर्मसंज्ञा का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।

पदपरिचय- इस सूत्र में पाँच पद हैं-

* 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणाम्' यह षष्ठ्यन्त पद है।* 'अणि' यह लुप्तसप्तम्यन्त पद, * कर्त्ता यह प्रथमान्त पद, * 'सः' यह प्रथमान्तपद, * 'णौ' यह सप्तम्यन्त पद है।

अधिकार/अनुवृत्ति- कारके का अधिकार है और 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म सूत्र से कर्म की अनुवृत्ति।

सूत्रार्थ- गमनार्थक, ज्ञानार्थक, भक्षणार्थक तथा शब्दकर्मक और अकर्मक धातुओं के अण्यन्त अवस्था के कर्ता की ण्यन्तावस्था में कर्मसंज्ञा हो जाती है।

➢ कर्मसंज्ञा होने पर 'कर्मणि द्वितीया' से अनभिहित कर्म में द्वितीया विभक्ति हो जाती है।

यथा- सेवकः ग्रामं गच्छति (सेवक गाँव को जाता है)

यहाँ अण्यन्तावस्था में गमनार्थक गम् धातु के प्रयोग में 'सेवकः' कर्ता है। यही कर्ता धातु की ण्यन्तावस्था में कर्म हो जाता है और तब इसमें द्वितीया हो जाती है।

स्वामी सेवकं ग्रामं गमयति (स्वामी सेवक को गाँव भेजता है)

इन धातुओं के उदाहरण-

धातु	अण्यन्त-अवस्था	ण्यन्त अवस्था
गमनार्थक	सेवकः ग्रामं गच्छति	स्वामी सेवकं ग्रामं गमयति
ज्ञानार्थक	शिष्या व्याकरणं विदन्ति	गुरुः शिष्यान् व्याकरणं वेदयति
भक्षणार्थक	बालः भोजनं भुङ्क्ते	माता बालं भोजनं भोजयति
शब्दकर्मक	छात्रा वेदम् अधीयते	उपाध्यायः छात्रान् वेदम् अध्यापयति
अकर्मक	शिशुः शेते	माता शिशुं शाययति

8. वार्तिक- 'नीवह्योर्न' नी और वह् धातुओं के अण्यन्त कर्ता की ण्यन्तावस्था में कर्मसंज्ञा नहीं होती है।

यथा - भृत्यो भारं नयति (अण्यन्तावस्था में)

स्वामी भृत्येन भारं नाययति (ण्यन्तावस्था में)

भृत्य की कर्मसंज्ञा न होने से ण्यन्तावस्था में 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से तृतीया विभक्ति हो जाती है।

9. वार्तिक- आदिखाद्योर्न

अर्थ - अद् और खाद् धातुओं के अण्यन्तकर्ता की ण्यन्तावस्था में कर्मसंज्ञा नहीं होती।

अण्यन्तावस्था- देवदत्तः अन्नम् अत्ति।

ण्यन्तावस्था- यज्ञदत्तः देवदत्तेन अन्नम् आदयति, खादयति च।

10. सूत्र- अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म (1.4.46)

सूत्रप्रकार- कर्मसंज्ञा का विधान करने के कारण संज्ञासूत्र है।

पदपरिचय- अधिशीङ्स्थासां (6.1), कर्म (1.1)= इस सूत्र में दो पद हैं।

अनुवृत्ति- आधार।

अधिकार- कारके का अधिकार।

सूत्रार्थ- शीङ् (सोना), स्था (ठहरना) और आस् (बैठना) धातुएँ यदि अधिपूर्वक हों तो इनके आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है।

उदाहरण-

अधिशीङ्- ब्रह्मचारी काष्ठपीठम् अधिशेते
(ब्रह्मचारी तख्त पर सोता है।)

अधिस्था- यतयः गृहं न अधितिष्ठन्ति।
(यति लोग घर में नहीं रहते।)

अधि-आस्- आचार्यः आसनम् अध्यास्ते।
(आचार्य आसन पर बैठे हैं।)

11. सूत्र- अभिनिविशश्च (1.4.47)

सूत्रप्रकार- कर्म का विधान करने के कारण संज्ञासूत्र।

पदपरिचय- अभिनिविशः (6.1) और च (अव्ययपद)- इस सूत्र में दो पद हैं।

अधिकार/अनुवृत्ति- कर्म तथा आधार की अनुवृत्ति और कारके का अधिकार।

सूत्रार्थ- 'अभि' और 'नि' इसी क्रम से ये दोनों ही उपसर्ग यदि पूर्व में हों तो विश् धातु के आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है।

यथा- (i) सन्तः सन्मार्गम् अभिनिविशन्ते
(सज्जन सन्मार्ग में दृढ़ता से लग जाते हैं।)

एक उपसर्ग के पूर्व होने पर कर्मसंज्ञा न होकर आधार में सप्तमी हो जाती है।

(ii) निविशते यदि शूकशिखा पदे (नैषध.4.11)

12. सूत्र- उपान्वध्याङ्वसः (1.4.48)

सूत्रप्रकार- कर्मसंज्ञा का विधान करने के कारण संज्ञासूत्र है।

पदपरिचय- उपान्वध्याङ्वसः (6.1)

अधिकार/अनुवृत्ति- कर्म की अनुवृत्ति, कारके का अधिकार।

सूत्रार्थ- उप, अनु, अधि, या आङ् इनमें से कोई उपसर्ग यदि पूर्व में हो तो 'वस्' धातु के आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है।

यथा- राजा नगरम् उपवसति (राजा नगर में रहता है।)
राजा नगरम् अनुवसति
राजा नगरम् अधिवसति
राजा नगरम् आवसति

13. सूत्र- अन्तराऽन्तरेणयुक्ते (2.3.4)

सूत्रप्रकार- द्वितीया का विधान करने के कारण विधिसूत्र।

पदपरिचय- 'अन्तरान्तरेणयुक्ते' यह सप्तम्यन्त पद है।

अनुवृत्ति- द्वितीया (कर्मणि द्वितीया से)

सूत्रार्थ- अन्तरा (मध्य में) और अन्तरेण (बिना) इन अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

यथा- **(i) अन्तरा-** अन्तरा ग्रामं नदी प्रवहति।
(गाँव के बीच नदी बहती है।)
(ii) अन्तरेण- रामम् अन्तरेण न किञ्चिदपि जानामि।
(राम के विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ।)

14. सूत्र- कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5)

सूत्रप्रकार- द्वितीया विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।

पदपरिचय- 'कालाध्वनोः' (7.2) यह सप्तम्यन्त पद है। 'अत्यन्तसंयोगे' (7.1) यह भी सप्तम्यन्त पद है। इस सूत्र में दो पद हैं।

अनुवृत्ति- द्वितीया (कर्मणि द्वितीया से)

सूत्रार्थ- अत्यन्तसंयोग गम्यमान हो तो कालवाचक तथा मार्गवाचक शब्दों से द्वितीया विभक्ति होती है।

उदाहरण- कालवाचक- मासमधीते (महीने भर लगातार पढ़ता है)

मार्गवाचक- क्रोशम् अधीते (कोशभर लगातार पढ़ता है)
क्रोशं गिरिः- कोस भर पर्वत है।
क्रोशं कुटिला नदी- कोस भर तक नदी टेढ़ी है।

15. वार्तिक- उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु। द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥

वार्तिकार्थ-

उभसर्वतसोः= उभयतः और सर्वतः
धिगुपर्यादिषु= धिक् + उपर्यादिषु
आम्रेडितान्तेषु= आम्रेडित + अन्तेषु

तस् प्रत्ययान्त उभ और सर्व शब्दों के योग में धिक् अव्यय के योग में तथा आम्रेडितान्त उपरि, अधस् और अधि के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

आम्रेडित की परिभाषा- 'तस्य परमाम्रेडितम्' अर्थात् जो शब्द दो बार कहे जातें हैं तो बाद वाले शब्द को आम्रेडित कहते हैं। जैसे- 'कान् कान्' में बाद वाला कान् आम्रेडित कहा जायेगा।

उपरि, अधः और अधि को आम्रेडित करने पर-
उपरि + उपरि = उपर्युपरि
अधः + अधः = अधोऽधः
अधि + अधि = अध्यधि

उदाहरण- उभयतः के योग होने पर= वृक्षाः उभयतः मार्गम्
(मार्ग के दोनों ओर पेड़ हैं।)
सर्वतः के योग होने पर = सर्वतः नगरं प्राकारः।
(नगर के चारों ओर परकोटा है)
धिक् के योग होने पर = धिक् कृष्णाभक्तम्।
(कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है।)
उपरि + उपरि के योग होने पर = उपर्युपरि लोकं हरिः
(इस लोक के ठीक ऊपर हरि हैं।)
अध्यधि के योग होने पर = अध्यधि लोकम् (हरि लोक के पास हैं।)
अधोऽधः लोकं हरिः (पाताल लोक के ठीक नीचे हरि हैं।)

16. वार्तिक- अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि॥

वार्तिकार्थ-अभितः = दोनों ओर, परितः = चारों ओर, समया = समीप, निकषा = समीप, हा = शोक, प्रति (ओर) के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

यथा - अभितः कृष्णं गोपाः = (कृष्ण के सभी ओर ग्वाले हैं।)
परितः कृष्णं गोपाः = (कृष्ण के चारों ओर ग्वाले हैं।)
ग्रामं समया = (ग्राम के समीप)
निकषा लङ्काम् (लङ्का के समीप)
हा कृष्णाभक्तम् = (कृष्ण के अभक्त के लिये खेद या शोक है)
बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित् = (भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है।)

तृतीया-विभक्ति

17. सूत्र-स्वतन्त्रः कर्ता (1.4.54)

सूत्रप्रकार- कर्तृसंज्ञा करने के कारण संज्ञासूत्र है।
पदपरिचय- 'स्वतन्त्रः' (1.1), 'कर्ता' (1.1) सूत्र में दो पद हैं।
अधिकार- कारके
वृत्ति- क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात्।
सूत्रार्थ- क्रिया की सिद्धि में स्वतन्त्रतया = मुख्यतया विवक्षित अर्थात् कहा जाने वाला कारक कर्तृसंज्ञक हो।

18. सूत्र- साधकतमं करणम् (1.4.42)

सूत्रप्रकार- करणसंज्ञा करने के कारण संज्ञासूत्र है।
पदपरिचय- **साधकतमं** (1.1), **करणं** (1.1) दो पद हैं।
अधिकार- कारके
वृत्ति- क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात्।
सूत्रार्थ- क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त उपकारक कारक करणसंज्ञक हो।

19. सूत्र- कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18)

सूत्रप्रकार- तृतीया विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।
पदपरिचय- 'कर्तृकरणयोः' (7.1) यह सप्तम्यन्त पद है।
'तृतीया' (1.1) प्रथमान्तपद- इसमें दो पद हैं।
समास- कर्ता करणञ्च कर्तृकरणे तयोः कर्तृकरणयोः। इतरेतर योगद्वन्द्वः।
वृत्ति- अनभिहिते कर्तरि करणे च तृतीया स्यात्।
सूत्रार्थ- अनभिहित अनुक्त कर्ता और अनुक्त करण में तृतीया विभक्ति हो।
उदाहरण- रामेण बाणेन हतो बाली। (राम के बाण द्वारा बाली मारा गया।)

- रामेण बाणेन हतो बाली- यहाँ हनन क्रिया में स्वतन्त्रतया विवक्षित होने से 'स्वतन्त्रः कर्ता' द्वारा 'राम' कर्ता है।
- इसीप्रकार हनन क्रिया में प्रकृष्टोपकारक होने से 'साधकतमं करणम्' से 'बाण' करण है।
- कर्ता और करण यहाँ दोनों अनभिहित या अनुक्त हैं अर्थात् किसी से कहे नहीं गये।
- 'हतः' में क्त प्रत्यय 'तयोरेव कृत्य-क्त-खलर्थाः' के अनुसार कर्म में आया है अतः कर्म उक्त है कर्ता और करण दोनों अनुक्त। इन अनुक्तों में 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया विभक्ति हो जाती है। रामेण बाणेन हतो बाली।
- जब कर्ता और करण उक्त होंगे तो उनमें तृतीया न होकर प्रातिपदिकार्थमात्र में प्रथमा विभक्ति ही होगी।

20. सूत्र- सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19)

सूत्रप्रकार- तृतीया विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र।
पदपरिचय- सहयुक्ते (7.1), अप्रधाने (7.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।
अनुवृत्ति- तृतीया।
समास-सह शब्देन युक्तं सहयुक्तं तस्मिन् सहयुक्ते,तृतीयातत्पुरुषः। न प्रधानम् अप्रधानं तस्मिन् अप्रधाने, नञ्-तत्पुरुषः।
वृत्ति- सहार्थेन युक्तेऽप्रधाने तृतीया स्यात्। पुत्रेण सहागतः पिता सार्धं, साकं, समं योगेऽपि तृतीया स्यात्।
सूत्रार्थ- सह तथा सह के पर्यायवाची साकम्, सार्धम्, समम्, आदि के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- पुत्रेण सह आगतः पिता (पुत्र के साथ पिता आया)

21. सूत्र- येनाङ्गविकारः (2.3.20)

सूत्रप्रकार- तृतीया विभक्ति के विधान करने के कारण विधिसूत्र
पदपरिचय- येन (3.1) अङ्गविकारः (1.1) दो पद हैं।
अनुवृत्ति- तृतीया (कर्तृकरणयोस्तृतीया सूत्र से)
वृत्ति- येन विकृतेन अङ्गेन अङ्गिनः विकारः लक्ष्यते तस्मात् विकृताङ्गवाचकात् शब्दात् तृतीयाविभक्तिः भवति।
सूत्रार्थ- जिस विकृत अङ्ग से अङ्गी का विकार प्रतीत होता है उस अङ्गवाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण-

अक्ष्णा काणः। (आँख से काना)	पादेन खञ्जः। (पैर से लगड़ा)
पृष्ठेन कुब्जः। (पीठ से कुबड़ा)	पाणिना कुणिः। (हाथ से लुञ्जा)
शिरसा खल्वाटः।(सिर से गञ्जा)	कर्णेन बधिरः। (कान से बहरा)

22. सूत्र- इत्थम्भूतलक्षणे (2.3.21)

सूत्रप्रकार- तृतीया विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र
पदपरिचय- इत्थम्भूतलक्षणे (7.1)- इस सूत्र में एक पद है।
समास- कञ्चित्प्रकारं प्राप्तः इत्थम्भूतः तस्य लक्षणम् तस्मिन् इत्थंभूतलक्षणे षष्ठीतत्पुरुषः।
अनुवृत्ति- तृतीया
वृत्ति- कञ्चित् प्रकारविशेषं अर्थात् अवस्थाविशेषं प्राप्तस्य लक्षणे अर्थात् ज्ञापके लक्षणवाचकात् शब्दात् तृतीयाविभक्तिः भवति।
सूत्रार्थ- प्रकार विशेष को प्राप्त किए ज्ञापक में तृतीया विभक्ति होती है अर्थात् चिह्न से कोई व्यक्ति ज्ञापित हो उस चिह्न विशेष में तृतीया विभक्ति होती है।
जैसे- जटाभिः तापसः (जटाओं से तपस्वी जान पड़ता है।)
इस उदाहरण में तापसत्व का लक्षण (ज्ञापक) जटा है अतः 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्र से 'जटाभिः' में तृतीया विभक्ति हुई है।

23. सूत्र- हेतौ (2.3.23)

सूत्रप्रकार- तृतीया विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।
पदपरिचय- हेतौ (7.1)- इस सूत्र में एक पद है।

अनुवृत्ति- तृतीया

वृत्ति- हेतुः नाम कारणम्। हेतौ द्योत्ये हेतुवाचकात् शब्दात् तृतीयाविभक्तिः भवति।

सूत्रार्थ- हेतु अर्थात् कारण में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे- पुण्येन दृष्टो हरिः। पुत्रेण हर्षः।
कन्यया शोकः। धनेन कुलम्।
दण्डेन घटः।

हेतु और करण में यह भेद होता है कि करण केवल क्रिया का साधक होता है परन्तु हेतु द्रव्य, गुण और क्रिया का भी साधक हो सकता है। इसके अतिरिक्त करण सदा व्यापारयुक्त होता है परन्तु हेतु व्यापाररहित या व्यापारसहित दोनों प्रकार का हो सकता है।

24. सूत्र- अपवर्गे तृतीया (2.3.6)

सूत्रप्रकार- तृतीया विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र

पदपरिचय- अपवर्गे (7.1), तृतीया (7.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।

अनुवृत्ति- कालाध्वनोः अत्यन्तसंयोगे।

वृत्ति- अपवर्गः नाम फलप्राप्तिः। गुणक्रियाद्रव्यैः सह कालाध्वनोः निरन्तरसंयोगे फलप्राप्तौ सत्याम् कालवाचकात् शब्दात् अध्ववाचकात् शब्दात् च तृतीयाविभक्तिः भवति।

सूत्रार्थ- फलप्राप्ति गम्यमान हो तो अत्यन्तसंयोग में काल और मार्गवाचक शब्दों से तृतीया हो जाती है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य- कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5) से द्वितीया का विधान कर चुके हैं यह उसका अपवाद सूत्र है।

कालवाचक का उदाहरण- मासेनाधीतेऽनुवाकः (महीने भर में अनुवाक पढ़ लिया) अह्ना अनुवाकः अधीतः।

मार्गवाचक का उदाहरण- क्रोशेन अनुवाकः अधीतः।

* निरन्तर संयोग होने पर भी फलप्राप्ति के न होने पर द्वितीया विभक्ति ही होगी।

उदाहरण- मासमधीतो नायातः।

25. वार्तिक- प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्

वार्तिकार्थ-कात्यायन द्वारा वर्णित यह वार्तिक है। प्रकृत्यादिगणपठित शब्दों से तृतीया विभक्ति हो जाती है।

उदाहरण- प्रकृत्या चारुः (स्वभाव से सुन्दर है।)

इस वाक्य में प्रकृति सुन्दरता का कारण या साधकतम है अतः ''प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्'' वार्तिक से प्रकृति में तृतीया विभक्ति हुई है।

अन्य उदाहरण- * प्रायेण याज्ञिकः (प्रायः यज्ञ करने वाला है।)
* गोत्रेण गार्ग्यः (गोत्र से गर्गगोत्रीय है।)
* समेन एति (सीधा चलता है।)
* विषमेण एति (टेढ़ा चलता है।)
* सुखेन दुःखेन वा याति- (सुखपूर्वक जाता है, दुःखपूर्वक जाता है।)
* प्रकृत्या दयालुः (प्रकृति से दयालु है।)
* स्वभावेन सरलः (स्वभाव से सरल है।)
* सुखेन जीवति (सुख से जीता है।)
* दुःखेन जीवति (दुःख से जीता है।)
* अर्जुनः सरलतया पठति (अर्जुन आसानी से पढ़ लेता है।)

26. सूत्र- पृथग्विना-नानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् (2.3.32)

सूत्रप्रकार- विधिसूत्र

पदपरिचय- पृथग्विनानानाभिः (3.3), तृतीया (1.1) अन्यतरस्याम् इति अव्ययपदम्- इस सूत्र में तीन पद हैं।

अनुवृत्ति- द्वितीया, पञ्चमी।

वृत्ति- पृथक्, विना, नाना, इत्येतैः योगे तृतीया स्यात् पञ्चमी द्वितीये च।

सूत्रार्थ- पृथक्, विना और नाना इन तीन अव्यय पदों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। पक्ष में पञ्चमी और द्वितीया विभक्तियाँ भी होती है।

* 'नाना' शब्द अनेकार्थक है लेकिन यहाँ विना के अर्थ में प्रयुक्त है।
* पृथग् रामेण रामात् रामं वा (राम से अलग)
'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' सूत्र से तृतीया, पञ्चमी, और द्वितीया होकर रामेण, रामात्, रामम् बना।
* विना रामेण रामात् रामं वा (राम के बिना)
* नाना रामेण रामात् रामम् वा (राम के बिना)

चतुर्थी विभक्ति

27. सूत्र- कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32)

सूत्रप्रकार - सम्प्रदान संज्ञा करने के कारण संज्ञासूत्र है।

पदपरिचय- कर्मणा (3.1), यम् (2.1), अभिप्रैति क्रियापद, सः (1.1), सम्प्रदानम् (1.1)- इस सूत्र में पाँच पद हैं।

अधिकार- सूत्र में कारके का अधिकार है।

वृत्ति- दानस्य कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानसंज्ञः स्यात्। दानस्य कर्मणा यं सम्बन्धुम् इच्छति सः सम्प्रदानं भवति।

सूत्रार्थ- दानक्रिया के कर्म के साथ कर्ता जिसे सम्बद्ध या युक्त करना चाहता है उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है।

सम्प्रदानम्- सम्यक् प्रदीयते अस्मै तत् सम्प्रदानम्।

जिसे कुछ दिया जाय परन्तु उस वस्तु को वापस न लिया जाय वह सम्प्रदान होता है।

28. सूत्र-चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13)

सूत्रप्रकार- चतुर्थी विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र
पदपरिचय- चतुर्थी (1.1), सम्प्रदाने (7.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।
अनुवृत्ति- अनभिहिते
वृत्ति- यत् सम्प्रदानं भवति, तस्मात् सम्प्रदानात् चतुर्थीविभक्तिः भवति।
सूत्रार्थ-* अनभिहित (अनुक्त) सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।
* जहाँ सम्प्रदान संज्ञा होती है वहाँ सम्प्रदान होने के कारण 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण- विप्राय गां ददाति (ब्राह्मण को गाय देता है।)
यहाँ दान क्रिया का कर्म गाय है। इस कर्म के द्वारा विप्र को अपनी ओर सम्बद्ध करना चाहता है अतः विप्र की 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' से सम्प्रदानसंज्ञा और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी विभक्ति होती है।
महत्त्वपूर्ण तथ्य-* यहाँ ददाति में लट् कर्ता अर्थ में लाया गया है अतः कर्ता उक्त है और सम्प्रदान (विप्र) अनुक्त है।

29. वार्तिक- क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्

वार्तिकार्थ- अकर्मक क्रिया के द्वारा कर्ता जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है कि उसे भी सम्प्रदान कहते हैं।
इसका अभिप्राय यह है कि यदि कर्ता कर्म के साथ नहीं अपितु क्रिया के साथ किसी को उद्देश्यत्वेन सम्बद्ध करना चाहता है, तो उसकी भी सम्प्रदान संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण- पत्ये शेते। (वह पति के लिए शयन करती है।)
इस वाक्य में अकर्मक क्रिया 'शेते' के द्वारा पत्नी पति को सन्तुष्ट करती है। अतः पति की 'क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्' से सम्प्रदानसंज्ञा हुई और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होकर 'पत्ये' बना।

30. सूत्र- रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33)

पदच्छेद- रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।
पदपरिचय- 'रुच्यर्थानाम्' (6.3) प्रीयमाणः (1.1) दो पद हैं।
अधिकार/अनुवृत्ति- सम्प्रदानम् की अनुवृत्ति,कारके का अधिकार
सूत्रप्रकार- सम्प्रदानसंज्ञा करने के कारण संज्ञासूत्र।
समास- रुचिः अर्थः येषां ते रुच्यर्थाः, तेषां बहुव्रीहिसमासः।
वृत्ति- रुच्यर्थानां धातूनां प्रयोगे प्रीयमाणोऽर्थः सम्प्रदानं स्यात्। हरये रोचते भक्तिः।
सूत्रार्थ- रुच् अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जो प्रसन्न होता है उस कारक की सम्प्रदान संज्ञा होती है।
जैसे- (i) हरये रोचते भक्तिः (हरि को भक्ति अच्छी लगती है।)
इस वाक्य में 'रुच्' धातु के योग में प्रीयमाण (प्रसन्न होने वाले हरि की) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' सूत्र से सम्प्रदान संज्ञा हुई और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी विभक्ति होकर 'हरये 'बना।
(ii) मह्यं मोदकं रोचते (मुझे लड्डू पसन्द है)

31. सूत्र- धारेरुत्तमर्णः (1.4.35)

पदपरिचय- धारेः (6.1), उत्तमर्णः (1.1) सूत्र में दो पद हैं।
सूत्रप्रकार- सम्प्रदानसंज्ञा का विधान करने के कारण संज्ञासूत्र।
अधिकार/अनुवृत्ति- सम्प्रदानम् की अनुवृत्ति, कारके का अधिकार।
वृत्ति- धारयतेः प्रयोगे उत्तमर्ण उक्तसंज्ञः स्यात्।
भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।
सूत्रार्थ- णिजन्त 'धृ' धातोः प्रयोगे उत्तमर्णः सम्प्रदानसंज्ञकः भवति।
णिजन्त 'धृ' धातु के प्रयोग में उत्तमर्ण (साहूकार ऋण देने वाला) की सम्प्रदानसंज्ञा होती है।
धृ धातु के प्रयोग में उत्तमर्ण की सम्प्रदान संज्ञाहोती है और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण- हरिः भक्ताय मोक्षं धारयति (भक्त के लिये हरि मोक्ष के ऋणी हैं।)
इस वाक्य में णिजन्त धृ धातु के योग में उत्तमर्ण भक्त की **'धारेरुत्तमर्णः'** सूत्र से सम्प्रदानसंज्ञा हुई और **'चतुर्थी सम्प्रदाने'** से चतुर्थी विभक्ति होकर 'भक्ताय' बना।
उत्तमर्णः किम्- यदि उत्तमर्ण न कहा जाय तब 'धारि' धातु के प्रयोग में किसी भी प्रकार की सम्प्रदानसंज्ञा होगी और चतुर्थी विभक्ति होगी। यह दोष होगा।

32. सूत्र- स्पृहेरीप्सितः (1.4.36)

सूत्रप्रकार- सम्प्रदान संज्ञा करने के कारण संज्ञासूत्रम्
पदपरिचय-'स्पृहेः'(6.1),ईप्सितः (1.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।
अनुवृत्ति- सम्प्रदानम्, कारके का अधिकार
वृत्ति- स्पृहयतेः प्रयोगे इष्टः सम्प्रदानं स्यात्। पुष्पेभ्यः स्पृहयति।
सूत्रार्थ- स्पृह् धातु के योग में ईप्सित (जिसको चाहा जाय) की सम्प्रदानसंज्ञा होती है।
उदाहरण- पुष्पेभ्यः स्पृहयति (फूलों को चाहता है।)
यहाँ स्पृह् धातु का प्रयोग होने के कारण ईप्सित पुष्पों की 'स्पृहेरीप्सितः' सूत्र से सम्प्रदानसंज्ञा हुई और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होकर 'पुष्पेभ्यः' बना।
ईप्सितः किम्? इष्ट की ही सम्प्रदानसंज्ञा हो अन्य कर्ता आदि की सम्प्रदानसंज्ञा न हो।
जैसे- * पुष्पेभ्यः वने स्पृहयति (वह वन में फूलों को चाहता है।)
वाक्य में 'पुष्प' ही ईप्सित है 'वन' नहीं। ईप्सित पुष्प की ही सम्प्रदानसंज्ञा होगी वन की नहीं क्योंकि वन ईप्सित नहीं है।
* 'पुष्पाणि स्पृहयति' वाक्य में पुष्प ईप्सिततम है अतः 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' सूत्र से 'पुष्पाणि' में द्वितीया विभक्ति हुई है।

33. सूत्र- क्रुध-द्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः (1.4.37)

सूत्रप्रकार- सम्प्रदानसंज्ञा करने के कारण संज्ञासूत्र

पदच्छेद- क्रुध-द्रुह-ईर्ष्य-असूयार्थानां यं प्रति कोपः

पदपरिचय-क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां (6.3), यम् (2.1), प्रति (अव्ययपद) कोपः (1.1)- इस सूत्र में चार पद हैं।

अधिकार/अनुवृत्ति- सम्प्रदानम् की अनुवृत्ति, कारके का अधिकार।

वृत्ति- क्रुधाद्यर्थानां प्रयोगे यं प्रति कोपः स उक्तसंज्ञः स्यात्। हरये क्रुध्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति वा।

➢क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य् और असूय् धातुओं या इनके समानार्थक धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप, द्रोह, ईर्ष्या, असूया करें या की जाय उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है।

उदाहरण- देवदत्ताय क्रुध्यति, द्रुह्यति, असूयति वा हरये द्रुह्यति, (हरि से द्रोह करता है।)

गुरुः शिष्याय क्रुध्यति (गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।)

अन्य उदाहरण-

हरये ईर्ष्यति (हरि से ईर्ष्या करता है।)

हरये असूयति (हरि से असूया करता है।)

दुर्योधनः पाण्डवेभ्यः ईर्ष्यति।

खलाः सज्जनेभ्यः असूयन्ति।

'यं प्रति कोपः' कहने का आशय यह है कि जिसके ऊपर कोप किया जाय उसकी सम्प्रदान संज्ञा हो। परन्तु 'भार्याम् ईर्ष्यति' (वह पत्नी से ईर्ष्या करता है।) इस वाक्य में भार्या के प्रति क्रोध नहीं है अपितु भार्या को दूसरा कोई न देखे इसलिए गुणों में दोषारोपण किया जा रहा है।

यहाँ वास्तविक रूप से पत्नी पर क्रोध नहीं किया जा रहा है। अतः 'भार्या' की सम्प्रदान संज्ञा न होकर 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' से कर्मसंज्ञा और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई।

34. वार्तिक- तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या

वार्तिकार्थ- तादर्थ्य में चतुर्थी विभक्ति होती है अर्थात् जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है उस प्रयोजन विशेष में चतुर्थी विभक्ति होती है।

तादर्थ्य का अर्थ- उस प्रयोजन के लिए

तस्मै इदं तदर्थं, तदर्थस्य भावः तादर्थ्यम्।

उदाहरण- मुक्तये हरिं भजति (मुक्ति के लिए हरि को भजता है।) इस वाक्य में हरि के भजन का प्रयोजन मुक्ति प्राप्ति है।

अतः 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या' वार्तिक से 'मुक्ति' में चतुर्थी विभक्ति होकर 'मुक्तये' बना।

अन्य उदाहरण- काव्यं यशसे, अर्थकृते, शिवेतरक्षतये, सद्यः परनिर्वृतये, व्यवहारविदे कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।

* घटाय मृत्तिका (घड़े के लिए मिट्टी।)
* विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
* यूपाय दारु (खूँटे बनाने के लिए लकड़ी।)

35. सूत्र- नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलंवषड्योगाच्च (2.3.16)

पदपरिचय- 'नमः-स्वस्ति-स्वाहास्वधाऽलंवषट्योगात्' (5.1) 'च' यह अव्ययपद है।- इस सूत्र में दो पद हैं।

अनुवृत्ति- चतुर्थी (चतुर्थी सम्प्रदाने सूत्र से)

सूत्रप्रकार- चतुर्थी विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र

वृत्ति- एभिर्योगे चतुर्थी स्यात्। 'हरये नमः'

'उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी' नमस्करोति देवान्

सूत्रार्थ- नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं-वषट् इनके योग होने पर चतुर्थी विभक्ति होती है।

उदाहरण- नमः- हरये नमः (हरि के लिये नमस्कार) यहाँ हरि शब्द नमः से युक्त है अतः नमः-स्वस्ति-स्वाहा..... सूत्र से 'हरि' शब्द में चतुर्थी विभक्ति होती है।

स्वस्ति- प्रजाभ्यः स्वस्ति (प्रजाओं का कल्याण हो)

स्वाहा- अग्नये स्वाहा (अग्नि के लिए हविर्दान)

स्वधा- पितृभ्यः स्वधा (पितरों के लिए भोजन)

वषट्- इन्द्राय वषट् (इन्द्रदेव के लिये हविर्दान)

अलम्- दैत्येभ्यो हरिः अलम्, दैत्येभ्यो हरिः प्रभुः समर्थः।

पञ्चमी विभक्ति

36. सूत्र- ध्रुवमपायेऽपादानम् (1.4.24)

सूत्रप्रकार- अपादानसंज्ञा करने के कारण संज्ञासूत्र।

पदच्छेद- ध्रुवम् अपाये अपादानम्।

पदपरिचय- 'ध्रुवम्' (1.1), अपाये (7.1), अपादानम् (1.1) - इस सूत्र में तीन पद हैं।

अधिकार- कारके

वृत्ति- अपायो विश्लेषस्तस्मिन् साध्ये यद् ध्रुवम् अवधिभूतं कारकं , तदपादानं स्यात्।

सूत्रार्थ-विश्लेष- वियोग जुदाई या अलग होने को 'अपाय' कहते हैं। अपाय में जो अवधि बना हो वह कारक अपादानसंज्ञक होता है।

37. अपादाने पञ्चमी (2.3.28)

पदच्छेद- अपादाने पञ्चमी

पदपरिचय- अपादाने (7.1), पञ्चमी (1.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।

सूत्रप्रकार- पञ्चमी विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।
अधिकार/अनुवृत्ति- अनभिहिते (7.1) की
वृत्ति- ग्रामाद् आयाति। धावतोऽश्वात् पतति इत्यादि
सूत्रार्थ- अनभिहित/अनुक्त अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।
* अनभिहित = जो कृत् या समास आदि के द्वारा उक्त नहीं ऐसे अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।
* ग्रामाद् आयाति (गाँव से आता है।)
यहाँ ग्राम और मनुष्य के विश्लेष में 'ग्राम' अवधिभूत होने से 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' से अपादानसंज्ञक है।
* यह कृत् या समास आदि से उक्त भी नहीं, अतः 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति आ जाती है।
* धावतोऽश्वात् पतति (दौड़ते हुये घोड़े से गिरता है)
* 'ध्रुव' शब्द लोक में यद्यपि 'स्थिर' अर्थ में प्रचलित है तथापि यहाँ उसका 'अवधिभूत' अर्थ किया गया है। इसका कारण यह है कि स्थिर अर्थ करने से 'धावतोऽश्वात् पतति' में अश्व की अपादानसंज्ञा नहीं हो सकती थी क्योंकि वह स्थिर नहीं है दौड़ रहा है।
* अब अवधिभूत अर्थ करने से कोई दोष नहीं आता क्योंकि चाहे वह दौड़ रहा है पर गिरने में अवधि ही है।
अन्य उदाहरण-
* न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः। (भर्तृ.नीति-74)
* गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्। (गीता-1.30)
* स्वैरं वनादुपनयन्तु तपोधनानि। (स्वप्न॰- 1.6)

38. वार्तिक-जुगुप्सा-विरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्॥

वार्तिकार्थ-
जुगुप्सा- घृणा, निन्दा
विराम- रुकना, हटना, थमना
प्रमाद- लापरवाही, ध्यान न देना
इन सभी अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे घृणा की जाये जिससे रुका जाय और जहाँ प्रमाद किया जाये उसकी अपादानसंज्ञा होती है।
उदाहरण- पापात् जुगुप्सते। (पाप से घृणा करता है)
इस वाक्य में घृणा का विषयभूत कारक पाप है, अतः 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' वार्तिक से पाप की अपादानसंज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति होकर 'पापात्' बना।
अन्य उदाहरण-
* पापाद् विरमति (पाप से हटता है।)
* धर्मात् प्रमाद्यति (धर्म में प्रमाद करता है।)
* स्वाध्यायान्मा प्रमदः (वेदपाठ में प्रमाद मत कर)
* स्वाधिकारात् प्रमत्तः (मेघदूतम् 1.1)

39. भीत्राऽर्थानां भयहेतुः (1.4.25)

पदपरिचय- भीत्रार्थानां 6.3, भयहेतुः (1.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।
अधिकार- 'कारके' का अधिकार।
अनुवृत्ति- अपादानम् ('ध्रुवमपायेऽपादानम्' सूत्र से)
समास- भीश्च त्राश्च भीत्रौ, भीत्रौ अर्थौ येषां ते भीत्रार्थाः, तेषां, द्वन्द्वगर्भः बहुव्रीहिसमासः। भयस्य हेतुः भयहेतुः, षष्ठीतत्पुरुषसमासः।
सूत्रप्रकार- अपादानसंज्ञा का विधान करने के कारण संज्ञासूत्र है।
वृत्ति- भयार्थानां त्राणार्थानां च प्रयोगे भयहेतुरपादानं स्यात्। चोराद् बिभेति। चोरात् त्रायते।
सूत्रार्थ- भय के अर्थवाली और त्राणार्थक धातुओं के योग में जिससे भय हो और जिससे रक्षा की जाय, उसकी अपादानसंज्ञा होती है।
उदाहरण-
(i) चोराद् बिभेति (चोर से डरता है)
यहाँ 'भी' धातु के योग होने पर भय के कारण 'चोर' की 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र से चोर की अपादान संज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होकर 'चोरात्' बना।
(ii) चोरात् त्रायते (चोर से रक्षा करता है।)
महत्त्वपूर्ण तथ्य- भयहेतुः किम् ?
यदि सूत्र में 'भयहेतुः' न लिखा गया होता तो 'अरण्ये त्रायते बिभेति वा' में अरण्य जो भय का कारण नहीं है उसमें भी अपादान हो जायेगा और 'अरण्यात्' ऐसे अनिष्ट प्रयोग होने लगेगा।

40. सूत्र- वारणार्थानामीप्सितः (1.4.27)

सूत्रप्रकार- अपादानसंज्ञा का विधान करने के कारण संज्ञासूत्र
पदपरिचय- वारणार्थानाम् (6.1), ईप्सितः (1.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।
अनुवृत्ति- अपादानम् (ध्रुवमपायेऽपादानम् सूत्र से)
समास- वारणम् अर्थः येषां ते वारणार्थाः तेषां, बहुव्रीहिसमासः।
अधिकार- कारके का अधिकार।
वृत्ति- प्रवृत्तिविघातो वारणम्, वारणार्थानां धातूनां प्रयोगे ईप्सितोऽर्थोऽपादनं स्यात्। यवेभ्यो गां वारयति।
सूत्रार्थ- रोकना अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे रोकना अभीष्ट है उसकी अपादानसंज्ञा हो जाती है।
उदाहरण- यवेभ्यो गां वारयति। (जौ से गाय को रोकता है।)
इस वाक्य में वारणार्थक 'वारयति' धातु के योग में ईप्सित 'यव' (जौ) की 'वारणार्थानामीप्सितः' सूत्र से अपादानसंज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होकर 'यवेभ्यः' बना।
महत्त्वपूर्ण तथ्य-
ईप्सितः - पद का प्रयोग इसलिए किया गया है कि अभीष्ट पदार्थ की ही अपादान संज्ञा हो। अतः 'यवेभ्यो गां वारयति क्षेत्रे।' (वह क्षेत्र में यव से गाय को हटाता है।) इत्यादि स्थलों में अभीष्ट 'यव' की ही अपादानसंज्ञा होती है 'क्षेत्र' की नहीं।

41. सूत्र- अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति (1.4.28)

सूत्रप्रकार- अपादानसंज्ञा का विधान करने के कारण संज्ञासूत्र
पदच्छेद- अन्तर्धौ येन अदर्शनम् इच्छति।
पदपरिचय- अन्तर्धौ (7.1), येन (3.1), अदर्शनम् (2.1) इच्छति (क्रियापदम्)। इस सूत्र में चार पद हैं।
अनुवृत्ति- अपादानम् (ध्रुवमपायेऽपादानम् सूत्र से)
समास- न दर्शनम् , नञ् तत्पुरुषसमासः।
अधिकार- कारके यह अधिकार सूत्र है।
वृत्ति- व्यवधाने सति यत्कर्तृकस्यात्मनो दर्शनस्याभावमिच्छति तदपादानं स्यात्। मातुर्निलीयते कृष्णः।
सूत्रार्थ- व्यवधान अर्थात् ओट के होने पर छिपने वाला जिससे अपना अदर्शन चाहता है उसकी अपादान संज्ञा होती है।
उदाहरण- मातुर्निलीयते कृष्णः (कृष्ण माता से छिपता है) इस वाक्य में कृष्ण अपने को माता से छिपाता है अतः 'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' सूत्र से 'मातृ' शब्द की अपादानसंज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होकर 'मातुः' शब्द बना।
महत्त्वपूर्ण तथ्य-

* 'अन्तर्धौ' पद का प्रयोग क्यों? यदि 'अन्तर्धौ' पद न दिया जाता तो 'चौरान् न दिदृक्षते' इस प्रयोग में दर्शनाभाव में चोर की भी अपादान संज्ञा होने से यह दोष हो जाता।
* चौरान् न दिदृक्षते (वह चोरों को नहीं देखना चाहता है) में चोर के सामने होने के कारण अपादान संज्ञा नहीं होती है अतएव कर्मसंज्ञा होकर 'चौरान्' में द्वितीया विभक्ति हुई है।
* सूत्र में **इच्छति पद** का प्रयोग क्यों किया? ताकि जिससे छिपने की इच्छा हो, उसका यदि किसी प्रकार से दर्शन हो जाय तब भी अपादानसंज्ञा हो।

42. सूत्र- आख्यातोपयोगे (1.4.29)

सूत्रप्रकार- अपादान संज्ञा करने के कारण संज्ञासूत्र
पदच्छेद- आख्याता, उपयोगे
पदपरिचय- आख्याता (1.1), उपयोगे (7.1)
अनुवृत्ति- अपादानम् (ध्रुवमपायेऽपादानम् सूत्र से)
अधिकार- कारके का अधिकार है।
वृत्ति- नियमपूर्वकविद्यास्वीकारे वक्ता प्राक्संज्ञः स्यात्। उपाध्यायादधीते।
सूत्रार्थ- नियमपूर्वक विद्याग्रहण के विषय में आख्याता (व्याख्याता = प्रवक्ता = पढ़ाने वाला) अपादानसंज्ञक होता है।
उदाहरण- गुरोः अधीते (वह गुरु से नियमपूर्वक पढ़ता है) इस वाक्य में नियम विशेष का पालन करते हुए गुरु से पढ़ता है। अतः 'आख्यातोपयोगे' सूत्र से गुरु की अपादानसंज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होकर 'गुरोः' बना।
महत्त्वपूर्ण तथ्य-
इस वाक्य में **उपयोगे पद** का प्रयोग यदि न किया गया होता तो नियमपूर्वक विद्या स्वीकार करना अर्थ प्राप्त नहीं होता। फलतः **नटस्य गाथां शृणोति** (नट की गाथा सुनता है)
वाक्य में नट की भी अपादानसंज्ञा हो जाती यहाँ वक्ता 'नट' है और उसमें पञ्चमी करने से अनिष्ट प्रयोग होने लगेगा।
'उपयोगे' इस पद के रहने पर नट की अपादानसंज्ञा नहीं हुई। नटस्य में सम्बन्ध मात्र में 'षष्ठी' विभक्ति हुई है।

43. सूत्र- जनिकर्तुः प्रकृतिः (1.4.30)

सूत्रप्रकार- अपादानसंज्ञा का विधान करने के कारण 'संज्ञासूत्र'
पदपरिचय- जनिकर्तुः (6.1), प्रकृतिः (1.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।
अनुवृत्ति- 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' से अपादान की।
समास- जनेः कर्ता जनिकर्ता, तस्य षष्ठीतत्पुरुषसमासः।
अधिकार- कारके का अधिकार है।
वृत्ति- जायमानस्य हेतुरपादानं स्यात्। ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।
सूत्रार्थ- जन् धातु के कर्ता के कारण की अपादानसंज्ञा होती है।
उदाहरण- ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते (ब्रह्मा से प्रजायें उत्पन्न होती हैं) इस वाक्य में जन् (जायते) धातु का कर्ता प्रजा है और उसकी प्रकृति (कारण) ब्रह्मा है। अतः 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' सूत्र से कारण 'ब्रह्म' की अपादान संज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होकर 'ब्रह्मणः' बना।
अन्य उदाहरण-
(i) गोमयाद् वृश्चिको जायते। (गोबर से बिच्छू पैदा होता है।)
(ii) पङ्कान्तामररसं जायते। (कीचड़ से कमल पैदा होता है)
(iii) शशाङ्क उदधेर्जायते।
(iv) क्रामात् क्रोधोऽभिजायते। (गीता 2.62)

44. सूत्र- भुवः प्रभवः (1.4.31)

सूत्रप्रकार- अपादानसंज्ञा का विधान करने के कारण संज्ञासूत्र है।
पदपरिचय- भुवः (6.1), प्रभवः (1.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।
अनुवृत्ति- अपादान, कर्तुः, पदों की अनुवृत्ति।
अधिकार- 'कारके' का अधिकार है।
वृत्ति- भवनं भूः। भूकर्तुः प्रभवस्तथा।
हिमवतो गङ्गा प्रभवति। प्रकाशते इत्यर्थः।
सूत्रार्थ- 'भू' धातु के प्रभव स्थान की अपादानसंज्ञा होती है।
उदाहरण- हिमवतो गङ्गा प्रभवति (हिमालय से गङ्गा निकलती है) इस वाक्य में गङ्गा का उद्गमस्थान हिमवत् अर्थात् हिमालय है। यहाँ 'भू' धातु का कर्त्ता गङ्गा है। इसका उद्गमस्थान हिमालय (हिमवत्) है। अतः हिमवत् शब्द की 'भुवः प्रभवः' सूत्र से अपादानसंज्ञा

हुई और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होकर 'हिमवतः' बना।

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

* प्रकृति और प्रभव में अन्तर है। अनुत्पन्न की उत्पत्ति का हेतु या कारण प्रकृति है और पूर्व से ही विद्यमान का प्रथम बार प्रकाशन या प्रादुर्भाव का स्थल प्रभव है।
* 'प्र' पूर्वक 'भू' 'धातु से' 'ऋदोरप्' सूत्र से 'अप्' जोड़कर 'प्रभवः' शब्द बना।

अन्य उदाहरण- काश्मीरेभ्यो वितस्ता प्रभवति (काश्मीर से झेलम निकलती है)

45. सूत्र- अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहि–युक्ते (2.3.29)

सूत्रप्रकार- पञ्चमी का विधान करने के कारण विधिसूत्र

पदच्छेद- अन्य-आरात्-इतर-ऋते-दिक्शब्द-अञ्चूत्तरपद,आच्, आहि युक्ते

पदपरिचय- 'अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते' (7.1) - इस सूत्र में एक पद है।

अनुवृत्ति- पञ्चमी ('अपादाने पञ्चमी' सूत्र से)

वृत्ति- एतैर्योगे पञ्चमी स्यात्। अन्येत्यर्थग्रहणम् इतरग्रहणं प्रपञ्चार्थम्।

सूत्रार्थ- अन्य, आरात्, इतर, ऋते, दिक्वाचक (पूर्व, दक्षिण आदि) अञ्चु धातु से बने हुए दिक् वाचक (प्राक्, प्रत्यक्, उदक् आदि) आच् प्रत्यय से अन्त होने वाले (दक्षिणा, उत्तरा इत्यादिञ्च) और आहि प्रत्ययान्त (उत्तराहि, दक्षिणाहि) इत्यादि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।

* सूत्रस्थ अन्यशब्द से अन्य अर्थ वाले सभी शब्दों भिन्न, पर, इतर आदि का ग्रहण होता है।

उदाहरण-

(i) **अन्यो भिन्न इतरो वा कृष्णात्** (कृष्ण से भिन्न)
यहाँ अन्य एवं इतर शब्द के योग में 'अन्यारा दितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते' सूत्र से कृष्ण में पञ्चमी विभक्ति हुई है। आरात् वनात् (वन से समीप) यहाँ आरात् के योग में 'अन्यारादितरर्ते.....' सूत्र से वनात् में पञ्चमी विभक्ति हुई।

(ii) **ऋते कृष्णात्** (कृष्ण के विना)
ऋते के योग में 'अन्यारादितरर्तेः..... सूत्र से कृष्णात् में पञ्चमी विभक्ति हुई।

(iii) **पूर्वो ग्रामात्** (गाँव से पूर्व)
यहाँ पूर्व के योग में ग्रामात् में पञ्चमी विभक्ति 'अन्यारादितरर्ते.....' सूत्र से हुई।
'चैत्रात् पूर्वः फाल्गुनः' (चैत्र से पहले फाल्गुन आता है)
यहाँ पर कालवाचक पूर्व शब्द के योग में चैत्रात् में 'अन्यारादितरर्ते...' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति हुई है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

(iv) **चैत्रात् पूर्वः फाल्गुनः** चैत्र से पहले फाल्गुन है।

* इस वाक्य में पूर्व शब्द काल का वाचक है दिक् का नहीं तब पूर्व को दिक् शब्द मानकर उसके योग में चैत्र से पञ्चमी कैसे होगी?

उत्तर यह है कि-

1. **दिशि दृष्टः शब्दो दिक्शब्दः-** इस विग्रह में मध्यमपद लोपी समासवाला है दृष्ट का लोप हो गया है। इस समास के अनुसार दिशा के अर्थ में दृष्ट प्रचलित पूर्वादि शब्द को दिक् शब्द मानते हैं अतः दिशा के अर्थ में प्रचलित पूर्व आदि शब्द यदि देश और कालवाचक होगें तब भी उन्हें दिक् शब्द मानकर उनके योग में 'अन्यारादितरर्ते...' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होगी।

(2) **अवयववाचियोगे तु न** - दिशावाचक पूर्वा आदि शब्द यदि किसी अवयवी के अवयव का वाचक होगा तब उस पूर्व आदि के योग में पञ्चमी विभक्ति नहीं होगी।

➢ इस बात को सिद्ध करने के लिए 'तस्य परमाम्रेडितम्।' सूत्र प्रमाण है। यहाँ पर पाणिनि ने अवयव वाचक परम् के योग में तद् शब्द से षष्ठी विभक्ति करके तस्य प्रयोग किया है पञ्चमी का नहीं।

➢ इसीप्रकार 'पूर्वं कायस्य' (शरीर का अगला भाग) आदि उदाहरणों में भी दिशावाची पूर्व वस्तुतः अवयववाची है। काय अवयवी है और पूर्व अवयव। इसलिए पूर्व के अवयववाची होने के कारण काय में पञ्चमी विभक्ति नहीं हुई है।

➢ सूत्र में प्रयुक्त अञ्चूत्तरपद अर्थात् प्राक्, प्रत्यक्, उदीच् आदि दिक् शब्द ही है अतएव दिक् शब्द से ही अञ्चूत्तरपद का ग्रहण हो जाता है लेकिन 'षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन' (2/3/30) सूत्र से दिक्वाचक शब्दों के योग में षष्ठी प्राप्त होती है उसको बाधित करने के लिए 'अञ्चूत्तरपद' का अलग से ग्रहण किया गया है।

प्राक् प्रत्यक् वा ग्रामात् (गाँव से पूर्व) यहाँ अञ्चूत्तर के योग में 'अन्यारादितरर्तेः.....' सूत्र से 'ग्रामात्' में पञ्चमी विभक्ति हुई है।

दक्षिणा ग्रामात् (गाँव से दूर दक्षिण दिशा में) दक्षिण+आहि = दक्षिणा के योग में 'ग्रामात्' में पञ्चमी विभक्ति 'अन्यारादितरर्ते.....' सूत्र से हुई।

पतञ्जलि ने 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र के भाष्य में 'कार्तिक्याः प्रभृति' का प्रयोग किया इसीलिये यह ज्ञात होता है कि प्रभृति योग वाले शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे- भवात् प्रभृति आरभ्य वा सेव्यो हरिः। (जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हरि सेव्य हैं।)

अव्ययीभाव विधायक सूत्र 'अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या' (2.1.12) में अप, परि, बहिस् और अञ्चूत्तरपद सुबन्तों का पञ्चम्यन्त पद के साथ वैकल्पिक समास का विधान है किन्तु पाणिनि ने अप, परि तथा अञ्चूत्तर पद के योग में ही पञ्चमी विभक्ति का विधान किया है।

पञ्चम्यपाङ्परिभिः (2.3.10) और अन्यारादितरर्ते. (2.3.29) बहिस् के योग में नहीं। अतः बहिस् का पञ्चम्यन्त के साथ समास विधान होने से ज्ञापित होता है कि 'बहिस्' के योग में भी पञ्चमी विभक्ति होती है।

यथा- **ग्रामाद् बहिः** (गाँव से बाहर)।

षष्ठी विभक्ति

46. सूत्र- षष्ठी शेषे (2.3.50)

सूत्रप्रकार- षष्ठी का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।

पदपरिचय- षष्ठी (1.1), शेषे (7.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।

वृत्ति- कारकप्रातिपदिकार्थव्यतिरिक्तः स्वस्वामिभावादिसम्बन्धः शेषःतत्र षष्ठी स्यात्। राज्ञः पुरुषः। कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठ्येव। सतां गतम्। सर्पिषो जानीते। मातुः स्मरति।

सूत्रार्थ- कारक और प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त स्व-स्वामिभाव आदि सम्बन्ध शेष है। उस शेष की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है।

शेष का अर्थ है- कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण कारकों में तथा प्रातिपदिकार्थ में विभक्तियों का विधान कर चुके हैं। इनसे अतिरिक्त जो बच गया हो उसे यहाँ 'शेष' कहा गया है।

जब कर्म आदियों को भी सम्बन्धमात्र के रूप में कहने की इच्छा हो तो उनमें षष्ठी ही होती है। (द्वितीयादि नहीं)

सम्बन्ध मुख्यतः तीन प्रकार का होता है-

(i) स्व-स्वामिभाव सम्बन्ध (ii) जन्य-जनकभाव सम्बन्ध
(iii) कार्य-कारणभाव सम्बन्ध

(1) स्वस्वामिभावसम्बन्ध- राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष) इस वाक्य में राजा स्वामी है और पुरुष सेवक है। स्व-स्वामिभाव सम्बन्ध होने से राजन् शब्द से 'षष्ठी शेषे' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर 'राज्ञः' बनेगा।

(2) जन्यजनकभावसम्बन्ध- इस सम्बन्ध में एक जनक अर्थात् पैदा करने वाला तथा दूसरा जन्य अर्थात् पैदा होने वाला होता है।

जैसे- पितुः पुत्रः। (पिता का बेटा) - यहाँ पिता पैदा करने वाला तथा पुत्र पैदा होने वाला है।

(3) प्रकृति–विकृतिभाव सम्बन्ध या कार्यकारणभाव सम्बन्ध- इस सम्बन्ध में एक वस्तु प्रकृति तथा दूसरी विकृति होता है।

जैसे- हिरण्यस्य कङ्कणम् (सोने का कंगन) यहाँ सुवर्ण प्रकृति तथा कङ्कण उसकी विकृति है। इसीप्रकार अन्य भी अनेक सम्बन्ध हो सकते हैं।

(i) **सतां गतम्-** (सज्जन पुरुष सम्बन्धी गमन) इस वाक्य में गमन क्रिया का कर्त्ता सत् है लेकिन कर्तृत्व की अविवक्षा में सत् शब्द से 'षष्ठी-शेषे' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर सताम् बना। कर्तृत्व की विवक्षा में 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया विभक्ति होकर 'गतम्' बना।

(ii) **सर्पिषो जानीते-** (घी के द्वारा प्रवृत्त होता है।)

यहाँ पर घी प्रवृत्त होने में सहायक है। अतः सर्पिष् करण है लेकिन सम्बन्ध की विवक्षा में 'षष्ठी शेषे' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर 'सर्पिषो जानीते' बना। करणत्व की विवक्षा होने पर 'सर्पिषो जानीते' प्रयोग होगा।

(iii) **मातुः स्मरति** (वह माता को याद करता है)

'स्मृ' धातु का कर्म माता है और 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से कर्म की अविवक्षा होने पर और सम्बन्ध की विवक्षा में 'षष्ठी शेषे' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर 'मातुः स्मरति' हुआ। अनभिहित कर्म में द्वितीया होकर 'मातरं स्मरति' ही बनेगा।

(iv) **एधो दकस्योपस्कुरुते** (लकड़ी जलसम्बन्धी उपस्कार या उसमें गुणाधान करती है।)

एधस् (नपुं.) या एध (पुं.) शब्द ईंधन-लकड़ी के वाचक है। जीवनं भुवनं दकम् (अमरकोष)। लकड़ी जल को उपस्कृत करती है अर्थात् उसमें उष्णता आदि विशेष गुण उत्पन्न कर देती है। यहाँ 'दक' (जल) कर्म है परन्तु वक्ता उसे कर्म के रूप में प्रस्तुत न कर सम्बन्धी के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। अतः उस सम्बन्ध सामान्य अर्थात् शेष अर्थ में षष्ठी विभक्ति हो जाती है। कर्म की विवक्षा में 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया होकर 'एधो दकमुपस्कुरुते' प्रयोग बनता है।

(v) **भजे शम्भोश्चरणयोः** (मैं शम्भु के चरणों का ध्यान करता हूँ।)

यहाँ 'भजे' में भज् धातु के लट् - उत्तमपुरुष एकवचन का प्रयोग किया गया है। **भजे-** अहम्भजे।

इस भजन क्रिया में चरण कर्म है परन्तु वक्ता उसे कर्मरूप में न कहकर सम्बन्धी के रूप में कहना चाहता है अतः सम्बन्ध सामान्य रूप शेष अर्थ में षष्ठी विभक्ति हो जाती है।

यदि चरणों का कर्मत्व अभीष्ट होगा तो उसमें द्वितीया होकर 'भजे शम्भोश्चरणौ' प्रयोग बनेगा। (ध्यान रखनेवाली बात यह है कि 'शम्भोः' में षष्ठी अवयवावयविभाव सम्बन्ध में हुई है उसे यहाँ

उदाहरण नहीं समझना चाहिये।)

(vi) **फलानां तृप्तः** (फलों से तृप्त)

इस वाक्य में फल तृप्त क्रिया का करण है अतः 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया विभक्ति प्राप्त है लेकिन तृतीया विभक्ति की अविवक्षा होने के कारण सम्बन्ध की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होकर 'फलैः' के स्थान पर 'फलानां तृप्तः' हुआ।

47. सूत्र- षष्ठी हेतुप्रयोगे (2.3.36)

सूत्रप्रकार- 'षष्ठी' का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।

पदपरिचय- 'षष्ठी' (1.1), हेतुप्रयोगे (7.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।

समास- हेतोः प्रयोगः हेतुप्रयोगः तस्मिन् हेतुप्रयोगे, षष्ठी तत्पु0 समास

अनुवृत्ति- 'हेतौ' पद की अनुवृत्ति।

वृत्ति- हेतुशब्दप्रयोगे हेतौ द्योत्ये षष्ठी स्यात्। अन्नस्य हेतोर्वसति।

सूत्रार्थ- हेतुशब्द के प्रयोग होने पर और हेतु का अर्थ द्योतित होने पर तथा हेतुशब्द से भी षष्ठी विभक्ति हो जाती है।

उदाहरण- अन्नस्य हेतोर्वसति (अन्न के कारण रहता है।)

स्पष्टीकरण- इस वाक्य में निवास का कारण अन्न है और हेतु शब्द का भी प्रयोग है। अतः निवास के कारण अन्न और हेतु दोनों शब्दों में 'षष्ठी हेतुप्रयोगे' सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

'हेतौ' द्वारा हेतु में प्राप्त तृतीया का अपवाद सूत्र है।

48. सूत्र- 'सर्वनाम्नस्तृतीया च' (2.3.27)

सूत्रप्रकार- षष्ठी का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।

पदपरिचय- 'सर्वनाम्नः' (6.1), तृतीया (1.1), च = अव्ययपद = इस सूत्र में तीन पद हैं।

अनुवृत्ति- षष्ठी, हेतुप्रयोगे, हेतौ।

वृत्ति- सर्वनाम्नो हेतुशब्दस्य च प्रयोगे हेतौ द्योत्ये तृतीया स्यात् षष्ठी च। केन हेतुना वसति? कस्य हेतोः?

सूत्रार्थ- यदि हेतु शब्द के साथ सर्वनाम का प्रयोग किया जाय तो हेतु और सर्वनाम दोनों में तृतीया एवं षष्ठी विभक्ति होती है।

उदाहरण- कस्य हेतोः वसति (किस कारण से रहता है।)

स्पष्टीकरण- यहाँ 'किम्' और 'हेतु' दोनों शब्दों का प्रयोग है अतः 'सर्वनाम्नस्तृतीया च' सूत्र से सर्वनाम किम् और हेतु दोनों में षष्ठी विभक्ति होकर 'कस्य हेतोः' हुआ?

अन्य उदाहरण- केन हेतुना वसति (किस कारण से रहता है।)

स्पष्टीकरण- इस वाक्य में सर्वनाम 'किम्' और 'हेतु' दोनों का प्रयोग है अतः 'सर्वनाम्नस्तृतीया च' सूत्र से किम् और हेतु दोनों में तृतीया विभक्ति होकर 'केन हेतुना' हुआ।

49. वार्तिक- निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् (वा. 1473)

वृत्ति- किं निमित्तं वसति, केन निमित्तेन, कस्मै निमित्ताय इत्यादि एवं किं कारणम् , को हेतुः, किं प्रयोजनम् इत्यादि। प्रायग्रहणाद् असर्वनाम्नः प्रथमाद्वितीये न स्तः। ज्ञानेन निमित्तेन हरिः सेव्यः। ज्ञानाय निमित्ताय इत्यादि।

सूत्रार्थ- निमित्त या निमित्त के पर्यायवाची शब्दों जैसे-कारण, हेतु और प्रयोजन आदि शब्दों का प्रयोग होने पर प्रायः सभी विभक्तियाँ होती हैं।

उदाहरण-किं निमित्तं वसति? (प्रथमा)
किं निमित्तं वसति? (द्वितीया)
केन निमित्तेन वसति? (तृतीया)
कस्मै निमित्ताय वसति? (चतुर्थी)
कस्मात् निमित्तात् वसति?(पञ्चमी)
कस्य निमित्तस्य वसति? (षष्ठी)
कस्मिन् निमित्ते वसति? (सप्तमी)

इन सभी वाक्यों में 'किम्' शब्द और 'निमित्त' में प्रथमा से लेकर सप्तमी विभक्तियों का प्रयोग हुआ है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य- इसीप्रकार किं कारणम् , को हेतुः, किं प्रयोजनम् आदि वाक्यों में कारण, हेतु और प्रयोजन के प्रयोग में सभी विभक्तियाँ हो सकती हैं।

प्रायः ग्रहणाद् असर्वनाम्नः प्रथमाद्वितीये न स्तः।

* सर्वनाम के अतिरिक्त यदि कोई अन्य समानाधिकरण में हो तो प्रथमा और द्वितीया को छोड़कर अन्य सभी विभक्तियों का प्रयोग होता है।
* वार्तिक में 'प्रायदर्शनात्' में 'प्राय' के ग्रहण के कारण ऐसी व्याख्या की जाती है।

उदाहरण- ज्ञानेन निमित्तेन (तृतीया)
ज्ञानाय निमित्ताय (चतुर्थी)
ज्ञानात् निमित्तात् (पञ्चमी)
ज्ञानस्य निमित्तस्य (षष्ठी)
ज्ञाने निमित्ते (सप्तमी)

ज्ञानेन निमित्तेन हरिः सेव्यः (ज्ञान के कारण हरि सेव्य हैं।)

* इस वाक्य में ज्ञान सर्वनाम भिन्न शब्द है जो कि कारण है और उसमें तृतीया हुई और निमित्त शब्द में भी तृतीया विभक्ति होकर 'ज्ञानेन निमित्तेन' हुआ।

कुछ आचार्यों के मन्तव्य-

* **'प्रायग्रहणादसर्वनाम्नः प्रथमाद्वितीये न स्तः'** इस वार्तिक के कारण 'षष्ठी हेतुप्रयोगे' और 'सर्वनाम्नः तृतीया च' सूत्र अनावश्यक हो जाते हैं।

50. सूत्र- कर्तृकर्मणोः कृति (2.3.65)

सूत्रप्रकार- षष्ठी का विधान करने के कारण विधिसूत्र।

पदपरिचय- कर्तृकर्मणोः (7.2), कृति (7.1) दो पद हैं।

समास- कर्ता च कर्म च इति कर्तृकर्मणी, तयोः कर्तृकर्मणोः इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः।

अनुवृत्ति- षष्ठी, अनभिहिते

वृत्ति- कृद्योगे कर्तरि कर्मणि च षष्ठी स्यात्। कृष्णस्य कृतिः। जगतः कर्ता कृष्णः।

सूत्रार्थ- कृत्प्रत्ययान्तशब्द के साथ अर्थद्वारा योग होने पर कर्ता या कर्म में षष्ठी विभक्ति हो जाती है।

उदाहरण- (i) कृष्णस्य कृतिः (कृष्ण की रचना)

यहाँ 'क्तिन्' प्रत्ययान्त कृदन्त 'कृति' के योग में कर्ता (कृष्ण रचनाकार) में षष्ठी विभक्ति हुई है।

कर्म में- (ii)जगतः कर्ता परमेश्वरः। (संसार के कर्ता, अर्थात् सृष्टि के कर्ता कृष्ण हैं।)

इस वाक्य में कृत्प्रत्ययान्त कर्ता (तृच्) के प्रयोग में कर्म 'जगत्' में 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर 'जगतः' बना।

अन्य उदाहरण- वज्रस्य भर्ता
पुरां भेत्ता
ग्रन्थस्य प्रणेता

महत्त्वपूर्ण तथ्य- 'अनभिहिते' की अनुवृत्ति आ रही है। अतः कृद्योग में अनुक्त कर्ता और अनुक्त कर्म में ही षष्ठी होती है उक्त में नहीं।

51. सूत्र- कृत्यानां कर्तरि वा (2.3.71)

पदच्छेद- कृत्यानां कर्तरि वा

पदपरिचय- कृत्यानां (6.3), कर्तरि (7.1), वा (अव्ययपद) = इस सूत्र में तीन पद हैं।

अनुवृत्ति- षष्ठी, अनभिहिते

सूत्रप्रकार- षष्ठी का विधान करने के कारण विधिसूत्र।

वृत्ति- षष्ठी वा स्यात्। मया मम वा सेव्यो हरिः। कर्तरि इति किम्? गेयो माणवकः साम्नाम्।

सूत्रार्थ- कृत् प्रत्ययान्तों के योग में कर्ता में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है।

उदाहरण- मया मम वा सेव्यो हरिः। (मेरे द्वारा हरि की सेवा की जानी चाहिए)

स्पष्टीकरण- यहाँ सेव् धातु से ण्यत् प्रत्यय लगाकर सेव्यः बना है। 'ण्यत्' कृत्य प्रत्यय के अन्तर्गत है। 'हरि' कर्म है और यह उक्त है अतः उक्त कर्म से प्रथमा विभक्ति होती है।

कर्ता अस्मद् शब्द अनुक्त है। उसमें 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्र से नित्य षष्ठी विभक्ति प्राप्त थी लेकिन उसको बाध करके 'कृत्यानां कर्तरि वा' सूत्र से विकल्प से षष्ठी विभक्ति करने पर 'मम' बना। अनुक्त कर्ता से 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया विभक्ति होकर 'मया' भी बना।

महत्त्वपूर्ण तथ्य- सूत्र में कर्तरि प्रयोग क्यों?

कर्ता में विकल्प से षष्ठी का विधान क्यों किया गया? ताकि कृत्यप्रत्ययान्त के कर्म में विकल्प से षष्ठी न हो बल्कि नित्य षष्ठी हो।

'गेयो माणवकः साम्नाम्' **(माणवक सामों को गावे।)**

गै धातु से 'भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्लाव्यापात्या वा' (3.4.68) से गेय शब्द बना है।

अतः कर्म सामन् अनुक्त है। इससे भी 'कृत्यानां कर्तरि वा' सूत्र से षष्ठी विभक्ति विकल्प से होने पर 'सामानि' और 'साम्नाम्' ये दो प्रयोग होने लगेंगे। ऐसा करना अनिष्ट होगा अतः कर्तरि पद कहा गया।

52. सूत्र- क्तस्य च वर्तमाने (2.3.67)

सूत्रप्रकार- षष्ठी का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।

पदपरिचय- क्तस्य (6.1), च (अव्ययपद), वर्तमाने (7.1)- इस सूत्र में तीन पद हैं।

अनुवृत्ति- षष्ठी, अनभिहिते

वृत्ति- वर्तमानार्थस्य क्तस्य योगे षष्ठी स्यात् 'न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् इति निषेधस्यापवादः। राज्ञां मतो बुद्धः पूजितो वा।

सूत्रार्थ- वर्तमान में विहित क्त प्रत्यय के योग में अनभिहित कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है।

उदाहरण- राज्ञां मतो बुद्धः पूजितो वा (राजा मानते हैं, जानते हैं अथवा पूजतें हैं।)

स्पष्टीकरण- इस वाक्य में मन्, बुध् और पूज् धातुओं से 'मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च' सूत्र से वर्तमानकाल में क्त प्रत्यय करने पर मतः, बुद्धः और पूजितः बनता है। इनका कर्ता राजन् है और वह अनभिहित है। अतः 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्र से षष्ठी विभक्ति प्राप्त हुई किन्तु न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम्' सूत्र से 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्र से प्राप्त षष्ठी का निषेध हुआ, किन्तु 'न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम्' सूत्र को बाध करके 'क्तस्य च वर्तमाने' सूत्र से राजन् कर्ता से षष्ठी करने पर 'राज्ञाम्' हुआ।

सप्तमी विभक्ति

53. सूत्र- आधारोऽधिकरणम् (1.4.45)

सूत्रप्रकार- अधिकरणसंज्ञा करने के कारण संज्ञासूत्र है।

पदपरिचय- 'आधारः' (7.1), अधिकरणम् (1.1)- इस सूत्र में दो पद हैं।

अधिकार/अनुवृत्ति- कारके का अधिकार है।

वृत्ति- कर्तृकर्मद्वारा तन्निष्ठक्रियाया आधारः कारकमधिकरणसंज्ञः स्यात्।

सूत्रार्थ- कर्ता और कर्म के द्वारा उनमें रहने वाली क्रिया का आधार जो कारक, वह अधिकरणसंज्ञक होता है। अर्थात् क्रिया के साक्षात् आधार कर्ता और कर्म ही होते हैं लेकिन उनके कर्ता और कर्म के आधार को भी परम्परा से क्रिया का आधार माना जाता है। अधिकरण उसे कहतें हैं जो कर्ता और कर्म का आधार होता है।

54. सूत्र- सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36)

सूत्रप्रकार- सप्तमी का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।

पदपरिचय- सप्तमी (1.1), अधिकरणे (7.1) च- अव्ययपद = इस सूत्र में तीन पद हैं।

अनुवृत्ति- दूरान्तिकार्थेभ्यः, अनभिहिते

वृत्ति- अधिकरणे सप्तमी स्यात्। चकारात् दूरान्तिकार्थेभ्यः। औपश्लेषिको वैषयिकोऽभिव्यापकश्चेत्याधारस्त्रिधा। कटे आस्ते। स्थाल्यां पचति/मोक्षे इच्छास्ति। सर्वस्मिन्नात्मास्ति। वनस्य दूरे अन्तिके वा। 'दूरान्तिकार्थेभ्यः' इति विभक्तित्रयेण सह चतस्रोऽत्र विभक्तयः फलिताः।

सूत्रार्थ- अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। सूत्र में आये हुए 'च' के कारण दूरवाची और समीपवाची शब्दों में भी सप्तमी विभक्ति होती है।

इस सूत्र में चकार की अनुवृत्ति इस सूत्र के पूर्ववर्ती 'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च' से 'दूरान्तिकार्थेभ्यः' की अनुवृत्ति आती है अतः दूर और अन्तिक के अर्थ वाले शब्दों से भी सप्तमी होती है।

आधार तीन प्रकार का होता है-

(i) औपश्लेषिक आधार (ii) वैषयिक आधार

(iii) अभिव्यापक आधार

(i) औपश्लेषिक आधार- उप = समीपे श्लेषसंयोगादिसम्बन्ध उपश्लेषः। उपश्लेषकृत औपश्लेषिकः। अर्थात् जहाँ आधार का आधेय के साथ संयोग आदि सम्बन्ध हो वहाँ औपश्लेषिक आधार होता है।

उदाहरण- कटे आस्ते। यहाँ 'कट' का बैठने वाले के साथ संयोग सम्बन्ध है अतः 'कट' औपश्लेषिक आधार है। इसीप्रकार 'स्थाल्यां पचति' को भी जानना चाहिये सामीप्यसम्बन्ध के कारण भी औपश्लेषिक आधार माना जाता है।

अन्य उदाहरण- (i)गुरौ वसति (गुरु के पास रहता है।)

(ii) वटे गावः शेरते (वट के समीप गौएं सो रही हैं।)

(iii) गङ्गायां घोषः (गङ्गा के समीप ग्राम है।)

(iv) इको यणचि में 'अचि' यह औपश्लेषिक आधार है। अच् के समीप स्थित जो अव्यवहित इक् उसके स्थान पर यण् आदेश हो ऐसा अर्थ हो जाता है।

(ii) वैषयिक आधार- 'विषयकृतो वैषयिकः।' अर्थात् विषयता सम्बन्ध से जब किसी को आधार माना जाता है, तब वह वैषयिक आधार होता है। यह आधार बौद्धिक होता है।

उदाहरण- 'मोक्षे इच्छाऽस्ति' (मोक्ष के विषय में इच्छा है।) यहाँ इच्छा का विषय मोक्ष है। या दूसरे शब्दों में सत्तारूप क्रिया का आधार इच्छा कर्ता है और इस कर्ता का भी विषयत्वेन आधार 'मोक्ष' है। इस तरह कर्ता के द्वारा तन्निष्ठ सत्तारूप क्रिया का आधार होने से 'मोक्ष' की अधिकरण संज्ञा होकर उसमें 'सप्तम्यधिकरणे च' से सप्तमी आ जाती है।

अन्य उदा.- (i) व्याकरणे रुचिः (ii) शिवे भक्तिः

(iii) अभिव्यापक आधार- जिस आधार के सम्पूर्ण अवयवों में आधेय व्याप्त रहता है, उसे अभिव्यापक आधार कहते हैं।

उदाहरण- सर्वस्मिन्नात्मा अस्ति - (सब में आत्मा व्याप्त है।) आधेय आत्मा है और सर्व अभिव्यापक है। अतः 'आधारोऽधिकरणम्' सूत्र से सर्व की अभिव्यापक आधारसंज्ञा हुई और 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र से सप्तमी विभक्ति होकर सर्वस्मिन् बना।

अन्य उदा.- तिलेषु तैलम् (तिलों में तेल है।)
पयसि घृतम् (दूध में घृत है)
दध्नि सर्पिः। (दही में घृत है)

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

* 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र में 'च' के ग्रहण के कारण 'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च' (2.3.35) सूत्र से दूरान्तिकार्थेभ्यः की अनुवृत्ति आकर दूर तथा समीप अर्थ वाले शब्दों से प्रातिपदिकार्थ मात्र में सप्तमी का विधान किया जाता है।
(i) वनस्य दूरे (वन से दूर)
(ii) वनस्य अन्तिके (वन के समीप)
यहाँ दूर और अन्तिक शब्दों से प्रकृतसूत्र से सप्तमी विभक्ति हुई है।

➢ 'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च' (2.3.35) सूत्र के अनुसार दूर और समीप अर्थवाले शब्दों से द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी का विधान पहले अष्टाध्यायी में किया जा चुका है। अतः अब सप्तमी को मिलाकर कुल चार विभक्तियों का विधान होता है।
वनस्य दूरम्, वनस्य दूरेण, वनस्य दूरात्, वनस्य दूरे। (वन से दूर)
वनस्यान्तिकम् , वनस्यान्तिकेन, वनस्यान्तिकात्, वनस्यान्तिके (वन के निकट)

➢ यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि 'दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्' (2.3.34) सूत्र से दूर और समीप अर्थ वाले शब्दों के योग में षष्ठी और पञ्चमी कोई भी विभक्ति हो सकती है। ऊपर 'वन' शब्द से षष्ठी का प्रयोग बताया गया है।

पञ्चमी का प्रयोग भी हो सकता है।

उदा.- वनाद् दूरम्, वनाद् दूरेण, वनाद् दूरात्, वनाद् दूरे (वन से दूर)

55. सूत्र- यस्य च भावेन भावलक्षणम् (2.3.37)

सूत्रप्रकार- सप्तमी का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।

पदपरिचय- यस्य (6.1), च अव्ययपद, भावेन (3.1), भावलक्षणम् (1.1) = इस सूत्र में कुल चार पद हैं।

समासः - भावस्य लक्षणम् इति भावलक्षणम् षष्ठी तत्पुरुष समास

अनुवृत्ति- सप्तमी

वृत्ति- यस्य क्रियया क्रियान्तरं लक्ष्यते, ततः सप्तमी स्यात् । गोषु दुह्यमानासु गतः।

सूत्रार्थ- जिसकी क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित हो तो उस क्रियावान् से सप्तमी विभक्ति लगती है।

उदाहरण- 'गोषु दुह्यमानासु गतः' (जब गौएं दुही जा रहीं थीं तब वह गया या गौओं के दुहे जाने पर गया।)

यहाँ गौओं की दोहन क्रिया से किसी दूसरे की गमनक्रिया लक्षित होती है अतः 'गो' से सप्तमी हो जाती है। उसके विशेषण 'दुह्यमाना' में भी समानाधिकरणवश सप्तमी हो जाती है।

स्पष्टीकरण- इस वाक्य में गोदोहन का कार्य पहले हो रहा है। और गमन कार्य बाद में हो रहा है इसलिए 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र से गो और दुह्यमाना में सप्तमी विभक्ति होकर 'गोषु दुह्यमानासु' हुआ।

अन्य उदाहरण-

(i) रामे वनं गते दशरथः प्राणान् तत्याज (राम के वन जाने पर दशरथ ने प्राण छोड़ दिया)

(ii) सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्। (सूर्य के अस्त हो जाने पर ग्वाले घर गये)

(iii) सुरेशे गायति सर्वे जहसुः। (सुरेश के गाने पर सभी लोग हँसने लगे।)

(iv) अध्यापके कक्षां प्रविशति छात्राः शान्ताः अभवन्। (अध्यापक के कक्षा में प्रवेश करने पर छात्र शान्त हो गये)

56. सूत्र- यतश्च निर्धारणम् (2.3.41)

सूत्रप्रकार- षष्ठी और सप्तमी का विधान करने के कारण यह विधिसूत्र है।

पदपरिचय- 'यतः' और 'च' अव्ययपद, निर्धारणम् (1.1) = इस सूत्र में तीन पद हैं।

अनुवृत्ति- षष्ठी, सप्तमी

वृत्ति- जातिगुणक्रियासंज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणम् निर्धारणं यतस्ततः षष्ठीसप्तम्यौ स्तः। नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः।

गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा। गच्छतां गच्छत्सु वा धावञ्छीघ्रः। छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः।

सूत्रार्थ- जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से उसके एकदेश का (उत्कर्ष या अपकर्ष बतलाने के लिए) अलग निर्देश करना निर्धारण कहलाता है। निर्धारण में समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

उदाहरण- नृणां ब्राह्मणः श्रेष्ठः (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं।)
नृषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः।

स्पष्टीकरण- नृणां शब्द मनुष्य समुदाय का वाचक है। मनुष्य समुदाय में ब्राह्मण को श्रेष्ठ बताया गया है अतः 'यतश्चनिर्धारणम्' सूत्र से नृ शब्द से षष्ठी विभक्ति होकर 'नृणाम्' और सप्तमी विभक्ति बहुवचन होकर 'नृषु' बना।

➢ **गुण द्वारा निर्धारण का उदाहरण-**

गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में काली गाय बहुत दूध देने वाली है।)

स्पष्टीकरण- गो समुदाय है। बहुक्षीरत्व गुण के कारण 'कृष्णा गौः' गायों से अलग की जाती है अतः समुदाय वाचक 'गो' शब्द में 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र से सप्तमी विभक्ति होकर 'गोषु' और षष्ठी विभक्ति होने पर 'गवाम्' बना।

➢ **क्रिया के द्वारा निर्धारण का उदाहरण-**

गच्छतां गच्छत्सु वा धावञ्छीघ्रः (धावन् + शीघ्रः) चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र होता है।

➢ **संज्ञा द्वारा निर्धारण का उदाहरण-**

छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः (छात्रों में मैत्र पटु अर्थात् कुशल है।)

➢ **साहित्यगत कुछ अन्य उदाहरण-**

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते। (मनु. - 4.233)

ख्यातः सर्वरसानां हि लवणो रस उत्तमः।
गृहीतं च विना तेज व्यञ्जनं गोमयायते।। (हितो. 3.96)

57. सूत्र- पञ्चमी विभक्ते (2.3.42)

सूत्रप्रकार- पञ्चमी विभक्ति का विधान करने के कारण विधिसूत्र है।

पदपरिचय- पञ्चमी (1.1), विभक्ते (7.1)= इस सूत्र में दो पद हैं।

अनुवृत्ति- यतश्च निर्धारणम्

वृत्ति- विभागो विभक्तम्। निर्धार्यमाणस्य यत्र भेद एव तत्र पञ्चमी स्यात्। माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः।

सूत्रार्थ- विभक्त का अर्थ है विभाग, निर्धार्यमाण का जहाँ भेद ही हो तो निर्धारणावधि वाचक से पञ्चमी विभक्ति होती है।

उदाहरण- माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः (मथुरा निवासी पटना निवासियों से अधिक सम्पन्न हैं।)

स्पष्टीकरण- इस वाक्य मे मथुरा के लोगों का आढ्यतरत्व निर्धारित करना है इसलिए माथुर (मथुरा के लोग निर्धार्यमाण हैं। निर्धारणावधि

पाटलिपुत्रक है। दोनों में अत्यन्त भिन्नता है। समानता नहीं। माथुराः (मथुरा के लोग), और पाटलिपुत्रक दोनों समुदाय वाचक हैं। यहाँ मथुरा के लोगों का पटना के लोगों से अधिक धनी बतलाना ही निर्धारण अर्थात् अलग करना है। अतः निर्धारणावधि पाटलि पुत्रक शब्द से 'पञ्चमी विभक्ते' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति करने पर 'पाटलिपुत्रकेभ्यः' बना।

अन्य उदाहरण-

(i) इमामनूनां सुरभेरवेहि। (रघु. - 2.54)
(ii) नास्ति सत्यात् परो धर्मः। (मनु. - 8.7)
(iii) मौनात् सत्यं विशिष्यते। (सुभाषित)
(iv) कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः। (गीता. 3.8)

*** कारक प्रकरण समाप्त ***

कारक-सूत्रोदाहरण-तालिका

	सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
	प्रथमाविभक्तिः	
1.	**प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा**	प्रथमाविभक्ति
	क. अलिङ्ग प्रातिपदिकार्थमात्र	**उच्चैः, नीचैः**
	ख. नियतलिङ्गप्रातिपदिकार्थमात्र	**कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्**
	ग. अनियतलिङ्ग/लिङ्गमात्राधिक्य	**तटः, तटी, तटम्**
	घ. परिमाणमात्र	**द्रोणो** व्रीहिः
	ड़. वचनमात्र	**एकः, द्वौ, बहवः**
2.	**सम्बोधने च**	**हे देवदत्त!** अत्र आगच्छ
	द्वितीयाविभक्तिः	
	सूत्रम् / वार्तिकम्	**उदाहरण**
3.	**(क) कर्तुरीप्सिततमं कर्म**	कर्म संज्ञा
	(ख) कर्मणि द्वितीया	**हरिं** भजति
4.	**तथायुक्तं चानीप्सितम्**	ग्रामं गच्छन् **तृणं** स्पृशति। ओदनं भुञ्जानो **विषं** भुङ्क्ते
5.	**अकथितं च**	
	दुह्	**गां** दोग्धि पयः
	याच्	**बलिं** याचते वसुधाम्/**अविनीतं** विनयं याचते
	पच्	**तण्डुलान्** ओदनं पचति
	दण्ड्	**गर्गान्** शतं दण्डयति
	रुध्	**व्रजम्** अवरुणद्धि गाम्
	प्रच्छ	**माणवकं** पन्थानं पृच्छति
	चि	**वृक्षम**वचिनोति फलानि
	ब्रू, शास्	**माणवकं** धर्मं ब्रूते, शास्ति वा
	जि	शतं जयति **देवदत्तम्**
	मथ्	**सुधां** क्षीरनिधिं मथ्नाति
	मुष्	**देवदत्तं** शतं मुष्णाति
	नी, हृ, कृष्, वह्	**ग्रामम्** अजां नयति, हरति, कर्षति, वहति वा
	भिक्ष्	**बलिं** भिक्षते वसुधाम्
	भाष्	**माणवकं** धर्मं भाषते, अभिधत्ते, वक्ति वा।

	सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
6.	**अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)**	(क). कुरून् स्वपिति (ख). मासम् आस्ते (ग). गोदोहम् आस्ते (घ). क्रोशम् आस्ते
7.	**गतिबुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द-कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ**	
	<u>अण्यन्त अवस्था</u>	<u>ण्यन्त अवस्था</u>
	(क). शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्	**शत्रून्** स्वर्गम् अगमयत् ।
	(ख). स्वे वेदार्थम् अविदुः ।	**स्वान्** वेदार्थम् अवेदयत् ।
	(ग). देवा अमृतम् आश्नन् ।	**देवान्** अमृतम् आशयत् ।
	(घ). विधिः वेदम् अध्यैत्	**वेदम्** अध्यापयत् विधिम्
	(ड़). पृथ्वी सलिले आस्ते।	आसयत् सलिले **पृथ्वीम् ।**
9.	**नीवह्योर्न (वा०)**	नाययति वाहयति वा भारं **भृत्येन।**
10.	**नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः (वा०)**	वाहयति रथं **वाहान्** सूतः
11.	**आदिखाद्योर्न (वा०)**	आदयति खादयति वा अन्नं बटुना।
12.	**भक्षेरहिंसार्थस्य न (वा०)**	भक्षयति अन्नं **बटुना**
13.	**जल्पतिप्रभृतीनामुपसङ्ख्यानम् (वा०)**	जल्पयति भाषयति वा **धर्मं पुत्रं** देवदत्तः ।
14.	**दृशेश्च (वा०)**	दर्शयति **हरिं भक्तान्**
15.	**शब्दायतेर्न (वा०)**	शब्दाययति **देवदत्तेन**
16.	**ह्वक्रोरन्यतरस्याम्**	हारयति कारयति वा **भृत्यं भृत्येन** वा कटम्
17.	**अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् (वा०)**	अभिवादयते दर्शयते देवं **भक्तं भक्तेन** वा।
18.	**अधिशीङ्स्थासां कर्म**	अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते वा **वैकुण्ठं** हरिः ।
19.	**अभिनिविशश्च**	अभिनिविशते **सन्मार्गम्**
20.	**उपान्वध्याङ्वसः**	उपवसति अनुवसति अधिवसति आवसति वा **वैकुण्ठं** हरिः
21.	**अभुक्त्यर्थस्य न (वा०)**	**वने** उपवसति
	उपपद- द्वितीया विभक्तिः	
22.	**उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते (वा०)**	(क) **उभयतः** कृष्णं गोपाः। (ख) **सर्वतः** कृष्णम् । (ग) **धिक्** कृष्णाऽभक्तम् (घ) **उपर्युपरि** लोकं हरिः (ड़) **अध्यधि** लोकम् । (च) **अधोऽधः** लोकम् ।
23.	**अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति-योगेऽपि (वा.)**	(क) **अभितः** कृष्णम् (ख) **परितः** कृष्णम् (ग) **ग्रामं** समया (घ) **निकषा** लङ्काम् (ड़) **हा** कृष्णाऽभक्तम् (च) बुभुक्षितं न **प्रति**भाति किञ्चित् ।

सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
24. अन्तराऽन्तरेण युक्ते	(क) **अन्तरा** त्वां मां हरिः। (ख) **अन्तरेण** हरिं न सुखम् ।
25 (क) अनुर्लक्षणे	
(ख) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया	**जप**मनु प्रावर्षत्
26. तृतीयार्थे	**नदीम्** अन्ववसिता सेना।
27. हीने	अनु **हरिं** सुराः
28. उपोऽधिके च	उप **हरिं** सुराः
29. लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः	
(क) लक्षणे	**वृक्षं** प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत्
(ख) इत्थंभूताख्याने	भक्तो **विष्णुं** प्रति परि अनु वा
(ग) भागे	लक्ष्मीः **हरिं** प्रति परि अनु वा
(घ) वीप्सायाम्	**वृक्षं वृक्षं** प्रति परि अनु वा सिञ्चति।
30. अभिरभागे	
(क) लक्षणे	**हरिम**भि वर्तते।
(ख) इत्थंभूताख्याने	भक्तो **हरिम**भि।
(ग) वीप्सायाम्	**देवं देवम**भिसिञ्चति।
31. अधिपरी अनर्थकौ	(क) कुतोऽध्यागच्छति। (ख) कुतः पर्यागच्छति।
32. सुः पूजायाम्	(क). **सुसिक्तम्** (ख). **सुस्तुतम्**
33. अतिरतिक्रमणे च	**अतिदेवान्** कृष्णः
34. अपिः पदार्थसम्भावनाऽन्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु	
(क) पदार्थ	सर्पिषोऽपि स्यात् ।
(ख) सम्भावनम्	अपि स्तुयात् विष्णुम्।
(ग) अन्ववसर्ग	अपि स्तुहि।
(घ) गर्हा	धिक् देवदत्तम् अपि स्तुयात् वृषलम्
(ड़) समुच्चय	अपि सिञ्च अपि स्तुहि
35. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे	(क) **मासं** कल्याणी (ख) **मासम्** अधीते (ग) **क्रोशं** कुटिला नदी (घ). **क्रोश**मधीते (ड़) **क्रोशं** गिरिः
तृतीया विभक्ति	
36. (क) साधकतमं करणम्	करणसंज्ञा
(ख) कर्तृकरणयोस्तृतीया	रामेण **बाणेन** हतो बालीः।
37. प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (वा0)	क. **प्रकृत्या** चारुः ख. **प्रायेण** याज्ञिकः ग. **गोत्रेण** गार्ग्यः घ. **समेन** एति, **विषमेण** एति। ड़. **द्विद्रोणेन** धान्यं क्रीणाति। च. **सुखेन दुःखेन** वा याति।
38. दिवः कर्म च (कर्म और करणसंज्ञा)	**अक्षैः अक्षान्** वा दीव्यति।
39. अपवर्गे तृतीया	
क. कालवाचक	**अह्ना** अनुवाकः अधीतः
ख. मार्गवाचक	**क्रोशेन** अनुवाकः अधीतः

सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
40. **सहयुक्तेऽप्रधाने**	**पुत्रेण** सह आगतः पिता।
41. **येनाङ्गविकारः**	**अक्ष्णा** काणः
42. **इत्थम्भूतलक्षणे**	**जटाभि**स्तापसः
43. **सञ्ज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि**	**पित्रा पितरं** वा सञ्जानीते।
44. **हेतौ** (क) द्रव्य के प्रति हेतु	(क) **दण्डेन** घटः
(ख) क्रिया के प्रति हेतु	(ख) **पुण्येन** दृष्टः हरिः
	अध्ययनेन वसति।
45. **अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया (वा.)**	**दास्या** संयच्छते कामुकः
चतुर्थी विभक्तिः	
46. **(क) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्**	सम्प्रदानसंज्ञा
(ख) चतुर्थी सम्प्रदाने	**विप्राय** गां ददाति
47. **क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् (वा0)**	**पत्ये** शेते
48. **यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा**	पशुना रुद्रं यजते।
	पशुं रुद्राय ददाति इत्यर्थः।
49. **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः**	**हरये** रोचते भक्तिः।
50. **श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः**	गोपी स्मरात् **कृष्णाय** श्लाघते ह्नुते तिष्ठते शपते वा।
51. **धारेरुत्तमर्णः**	**भक्ताय** धारयति मोक्षं हरिः
52. **स्पृहेरीप्सितः**	**पुष्पेभ्यः** स्पृहयति
53. **क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः**	**हरये** क्रुध्यति द्रुह्यति ईर्ष्यति असूयति वा ।
54. **क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म**	**क्रूरम्** अभिक्रुध्यति अभिद्रुह्यति वा
55. **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः**	**कृष्णाय** राध्यति ईक्षते वा ।
56. **प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता**	**विप्राय** गां प्रतिशृणोति आशृणोति वा।
57. **अनुप्रतिगृणश्च**	**होत्रे** अनुगृणाति प्रतिगृणाति वा।
58. **परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्**	**शतेन शताय** वा परिक्रीतः
59. **तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (वा.)**	**मुक्तये** हरिं भजति।
60. **क्लृपि सम्पद्यमाने च (वा.)**	भक्तिः **ज्ञानाय** कल्पते, सम्पद्यते, जायते।
61. **उत्पातेन ज्ञापिते च (वा.)**	**वाताय** कपिला विद्युत् ।
62. **हितयोगे च (वा.)**	**ब्राह्मणाय** हितम्
63. **क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**	क. **फलेभ्यो** याति। ख. नमस्कुर्मो **नृसिंहाय**।
	ग. **स्वयंभुवे** नमस्कृत्य
64. **तुमर्थाच्च भाववचनात्**	**यागाय** याति।
65. **नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं वषड्योगाच्च**	क. **हरये** नमः
(उपपद-चतुर्थी-विभक्तिः)	ख. **प्रजाभ्यः** स्वस्ति।
	ग. **अग्नये** स्वाहा
	घ. **पितृभ्यः** स्वधा
	ड़. **दैत्येभ्यः** हरिः अलम्
	च. **इन्द्राय** वषट् ।
66. **अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम् (वा.)**	**दैत्येभ्यो** हरिः अलम्, प्रभुः, समर्थः, शक्तः ।

सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
67. **मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु**	न त्वां तृणं मन्ये **तृणाय** वा।
68. **अप्राणिष्वित्यपनीय नौकाकान्न-शुकशृगाल वर्जेष्विति वाच्यम् (वा.)**	(क) न त्वां नावम् अन्नं वा मन्ये। (ख) न **त्वां** शुने मन्ये।
69. **गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि**	**ग्रामं ग्रामाय** वा गच्छति।
पञ्चमी विभक्तिः	
70. **क. ध्रुवमपायेऽपादानम्**	(क) **ग्रामात्** आयाति।
ख. अपादाने पञ्चमी	(ख) **धावतोऽश्वात्** पतति।
71. **जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसङ्ख्यानम् (वा.)**	(क) **पापात्** जुगुप्सते। (ख) **पापात्** विरमति। (ग) **धर्मात्** प्रमाद्यति ।
72. **भीत्रार्थानां भयहेतुः**	(क) **चोरात्** बिभेति। (ख) **चोरात्** त्रायते।
73. **पराजेरसोढः**	**अध्ययनात्** पराजयते।
74. **वारणार्थानामीप्सितः**	**यवेभ्यो** गां वारयति।
75. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति**	**मातुः** निलीयते कृष्णः।
76. **आख्यातोपयोगे**	**उपाध्यायात्** अधीते।
77. **जनिकर्तुः प्रकृतिः**	**ब्रह्मणः** प्रजाः प्रजायन्ते।
78. **भुवः प्रभवः**	**हिमवतः** गङ्गा प्रभवति।
79. **'ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च' (वा.)**	(क) **प्रासादात्** प्रेक्षते। (ख) **आसनात्** प्रेक्षते। (ग) **श्वसुरात्** जिह्रेति।
80. **(क) गम्यमानाऽपि क्रिया कारकविभक्तीनां निमित्तम् ।** **(ख) यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी (वा.)** **(ग) तदुक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यौ** **(घ) कालात् सप्तमी च वक्तव्या (वा.)**	क. **कस्मात्** त्वम् ? नद्याः ख. **वनात्** ग्रामो योजनं योजने वा ग. **कार्तिक्या** आग्रहायणी मासे।
81. **अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते** (उपपद पञ्चमीविभक्तिः)	क. अन्यः भिन्नः इतरः वा **कृष्णात्** ख. आरात् **वनात्** ग. ऋते **कृष्णात्** घ. पूर्वो **ग्रामात्** ङ. **चैत्रात्** पूर्वः फाल्गुनः च. प्राक् प्रत्यक् वा **ग्रामात्** छ. दक्षिणाहि **ग्रामात्** ज. दक्षिणा **ग्रामात्** झ. भवात् प्रभृति आरभ्य वा सेव्यः हरिः ञ. ग्रामात् बहिः
82. **(क) अपपरी वर्जने** **(ख) आङ्मर्यादावचने** **(ग) पञ्चम्यपाङ्परिभिः**	क. अपहरेः संसारः ख. परिहरेः संसारः ग. आमुक्तेः संसारः

सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
83. (क) प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः	क. प्रद्युम्नः **कृष्णात्** प्रति।
(ख) प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्	ख. **तिलेभ्यः** प्रतियच्छति माषान्
84. अकर्तर्यृणे पञ्चमी	**शतात्** बद्धः।
85. विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्	(क) **जाड्यात्** जाड्येन वा बद्धः।
	(ख) **धूमादग्निमान्** ।
	(ग) नास्ति घटोऽ**नुपलब्धेः**
86. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्	(क) पृथक् **रामेण रामात् रामं** वा।
	(ख) विना **रामेण रामात् रामं** वा।
	(ग) नाना **रामेण रामात् रामं** वा ।
87. करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य	**स्तोकेन स्तोकात्** वा मुक्तः
88. दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च	क. ग्रामस्य **दूरं दूरात् दूरेण** वा
(द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी का विधान)	ख. ग्रामस्य **अन्तिकम् अन्तिकात् अन्तिकेन** वा।
षष्ठीविभक्तिः	
89. षष्ठी शेषे	
(क) स्वस्वामिभावसम्बन्धः	(क) **राज्ञः** पुरुषः
(ख) कर्तृकारक के शेषत्व विवक्षा में षष्ठी	(ख) **सतां** गतम्
(ग) करणकारक से शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(ग) **सर्पिषो** जानीते।
(घ) कर्मकारक के शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(घ) **मातुः** स्मरति।
(ड़) कर्मकारक के शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(ड़) **एधोदकस्यो**पस्कुरुते।
(च) कर्मत्व के शेष की विवक्षा में षष्ठी	(च) भजे **शम्भोश्**चरणयोः
(छ) करणत्व की शेषत्व विवक्षा में षष्ठी	(छ) **फलानां** तृप्तः ।
90. षष्ठी हेतुप्रयोगे	**अन्नस्य** हेतोर्वसति।
(''हैतो'' सूत्र द्वारा प्राप्त तृतीया का अपवाद)	
91. सर्वनाम्नस्तृतीया च	(क) **केन हेतुना** वसति।
(विकल्प से तृतीया एवं षष्ठी का विधान)	(ख) **कस्य हेतोः** वसति।
92. निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् (वा.)	(क) किं निमित्तं वसति। केन निमित्तेन। कस्मै निमित्ताय।
(प्रायशः सभी विभक्तियों का प्रयोग)	(ख) किं कारणम् ,को हेतुः, किं प्रयोजनम्।
	(ग) ज्ञानेन निमित्तेन हरिः सेव्यः।
	(घ) ज्ञानाय निमित्ताय हरिः सेव्यः।
93. षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन	(क) **ग्रामस्य** दक्षिणतः।
(पञ्चमी का अपवाद)	(ख) **ग्रामस्य** पुरः।
	(ग) **ग्रामस्य** पुरस्तात् ।
	(घ) **ग्रामस्य** उपरि।
	(ड़) **ग्रामस्य** उपरिष्टात्
94. एनपा द्वितीया	(क) दक्षिणेन **ग्रामं ग्रामस्य** वा।
(विकल्प से द्वितीया, एवं षष्ठी का विधान)	(ख) उत्तरेण **ग्रामं ग्रामस्य** वा।
95. दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्	(क) दूरं **ग्रामस्य ग्रामात्** वा।
(विकल्प से पञ्चमी और षष्ठी का विधान)	(ख) निकटं **ग्रामस्य ग्रामात्** वा।
96. ज्ञोऽविदर्थस्य करणे	**सर्पिषः** ज्ञानम्

सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
97. **अधीगर्थदयेशां कर्मणि**	क. **मातुः** स्मरणम् ख. **सर्पिषः** दयनम् ग. **सर्पिषः** इशनम्
98. **कृञः प्रतियत्ने**	एधोदकस्य उपस्करणम्
99. **रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः**	चौरस्य रोगस्य रुजा।
100. **अज्वरिसन्ताप्योरिति वाच्यम् (वा०)**	(क) **रोगस्य** चौरज्वरः (ख) **रोगस्य** चौरसन्तापः
101. **आशिषि नाथः**	**सर्पिषः** नाथनम्
102.**जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्** (कर्म से शेषत्व विवक्षा में षष्ठी प्रणिहननम्, निहननम्, प्रहणनम्	(क) **चौरस्य** उज्जासनम् (ख) **चौरस्य** निप्रहणनम् (ग) **चौरस्य** उन्नाटनम् (घ) **चौरस्य** क्राथनम् (ड़) **वृषलस्य** पेषणम् ।
103. **व्यवहृपणोः समर्थयोः**	(क) **शतस्य** व्यवहरणम् (ख) **शतस्य** पणनम्
104.**दिवस्तदर्थस्य (कर्म में षष्ठी)**	**शतस्य** दीव्यति
105.**विभाषोपसर्गे (कर्म में षष्ठी विभक्ति विकल्प से)**	**शतस्य शतं** वा प्रतिदीव्यति।
106.**प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने**	अग्नये छागस्य हविषः वपायाः मेदसः प्रेष्य अनुब्रूहि वा।
107.**कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे** (कालवाचक अधिकरण में शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी)	(क) पञ्चकृत्वोऽह्नो भोजनम् (ख) द्विरह्नो भोजनम्
108.**कर्तृकर्मणोः कृति** (अनुक्त कर्त्ता और कर्म में षष्ठी)	(क) **कृष्णस्य** कृतिः। (ख) **जगतः** कर्त्ता कृष्णः।
109.**गुणकर्मणि वेष्यते** (वा.)	नेता अश्वस्य **स्नुघ्नस्य स्नुघ्नं** वा
110.**उभय प्राप्तौ कर्मणि** (कृत् प्रत्यय के योग में कर्त्ता और कर्म दोनों में यदि षष्ठी प्राप्त हो, तो कर्म में ही षष्ठी हो)	आश्चर्यो **गवां** दोहः अगोपेन
111.**स्त्रीप्रत्यययोरकाकारयोर्नायं नियमः** (वा.)	भेदिका बिभित्सा वा **रुद्रस्य जगतः।**
112.**शेषे विभाषा** (वा.)	(क) विचित्रा जगतः कृतिः **हरेः हरिणा** वा। (ख) शब्दानाम् अनुशासनम् **आचार्येण आचार्यस्य** वा।
113.**क्तस्य च वर्तमाने**	**राज्ञां** मतः बुद्धः पूजितः वा।
114.**अधिकरणवाचिनश्च** (अधिकरणवाचक क्त प्रत्यय के योग में अनुक्त कर्त्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति)	(क) **इदम्** एषाम् आसितम् (ख) **इदम्** एषां शयितम् (ग) इदम् **एषां** गतम् (घ) इदम् **एषां** भुक्तम्
115.**न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ।**	(क) कुर्वन् कुर्वाणो वा सृष्टिं हरिः। (ख) हरिं दिदृक्षुः। (ग) हरिम् अलङ्करिष्णुः। (घ) दैत्यान् घातुकः हरिः।

सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
116. **कर्मेरनिषेधः (वा.)**	(क) लक्ष्म्याः कामुकः हरिः। (ख) जगत्सृष्ट्वा सुखं कर्तुम् । (ग) विष्णुना हता दैत्याः । (घ) दैत्यान् हतवान् विष्णुः । (ङ) ईषत्करः प्रपञ्चः हरिणः। (च) सोमं पवमानः (छ) आत्मानं मण्ड्यमानः (ज) वेदमधीयन् (झ) कर्त्ता लोकान् ।
117. **द्विषः शतुर्वा (वा.)** (षष्ठी का निषेध विकल्प से)	मुरस्य मुरं वा द्विषन् ।
118. **अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः** (षष्ठी का निषेध)	(क) सतः पालकोऽवतरति। (ख) व्रजं गामी (ग) शतं दायी
119. **कृत्यानां कर्त्तरि वा** (अनुक्त कर्त्ता मे षष्ठी विकल्प से)	(क) मया मम वा सेव्यः हरिः। (ख) नेतव्याः व्रजं गावः कृष्णेन ।
120. **तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ।** (तृतीया और षष्ठी विकल्प से)	तुल्यः सदृशः समो वा कृष्णस्य कृष्णेन वा ।
121. **चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः** (चतुर्थी और षष्ठी)	आयुष्यं चिरञ्जीवितं कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात्
सप्तमीविभक्तिः	
122. **आधारोऽधिकरणम् सप्तम्यधिकरणे च।** (सप्तमी विभक्ति)	(क) **कटे** आस्ते। (औपश्लेषिक आधार) (ख) **स्थाल्यां** पचति। (औपश्लेषिक आधार) (ग) **मोक्षे** इच्छा अस्ति। (वैषयिक आधार) (घ) **सर्वस्मिन्** आत्मा अस्ति। (अभिव्यापक आधार) (ङ) **तिलेषु** तैलम् (अभिव्यापक आधार) (च) **दध्नि** सर्पिः (अभिव्यापक आधार) (छ) वनस्य **दूरे अन्तिके** वा ।
123. **तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम् (वा.)**	(क) अधीती **व्याकरणे** ।
124. **साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)**	(क) साधुः कृष्णः **मातरि** (ख) असाधुः कृष्णः **मातुले**
125. **निमित्तात् कर्मयोगे (वा.)**	**चर्मणि** द्वीपिनं हन्ति । **दन्तयो**र्हन्ति कुञ्जरम् । **केशेषु** चमरीं हन्ति । **सीम्नि** पुष्कलको हतः ।
126. **यस्य च भावेन भावलक्षणम्** (सति सप्तमी, भावे सप्तमी)	(क) **गोषु** दुह्यमानासु गतः । (ख) **ब्राह्मणेषु** अधीयानेषु गतः ।

सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
127. **अर्हाणां कर्तृत्वे अनर्हाणामकर्तृत्वे तद्वैपरीत्ये च** (वा.)	(क) सत्सु तरत्सु असन्तः आसते । (ख) असत्सु तिष्ठत्सु सन्तः तरन्ति । (ग) सत्सु तिष्ठत्सु असन्तः तरन्ति । (घ) असत्सु तरत्सु सन्तः तिष्ठन्ति ।
128. **षष्ठी चानादरे** (षष्ठी और सप्तमी)	**रुदति रुदतः** वा प्राव्राजीत् ।
129. **स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च** (षष्ठी और सप्तमी)	(क) **गवां** स्वामी; **गोषु** स्वामी । (ख) **गवाम्** ईश्वरः ; **गोषु** ईश्वरः (ग) **गवाम्** अधिपतिः, **गोषु** अधिपतिः (घ) **गवां** दायादः ; **गोषु** दायादः । (ड़) **गवां** साक्षी, **गोषु** साक्षी । (च) **गवां** प्रतिभूः **गोषु** प्रतिभूः । (छ) **गवां** प्रसूतः **गोषु** प्रसूतः ।
130. **आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् ।** (षष्ठी और सप्तमी)	आयुक्तः कुशलः वा **हरिपूजने हरिपूजनस्य** वा।
131. **यतश्च निर्धारणम्** (षष्ठी और सप्तमी)	
(जाति)	(क) **नृणां नृषु** वा द्विजः श्रेष्ठः।
(गुण)	(ख) **गवां गोषु** वा कृष्णा बहुक्षीरा।
(क्रिया)	(ग) **गच्छतां गच्छत्सु** वा धावन् शीघ्रः।
(संज्ञा)	(घ) **छात्राणां छात्रेषु** वा मैत्रः पटुः।
132. **पञ्चमी विभक्ते**	माथुराः **पाटलिपुत्रकेभ्यः** आढ्यतराः।
133. **साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः**	**मातरि** साधुः निपुणः वा।
134. **अप्रत्यादिभिरिति वक्तव्यम् (वा.)** (प्रति, परि, अनु के योग में सप्तमी का निषेध)	साधुः निपुणः वा मातरं प्रति परि अनु वा।
135. **प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च** (तृतीया और सप्तमी)	प्रसितः उत्सुकः **हरिणा हरौ वा।**
136. **नक्षत्रे च लुपि** (तृतीया और सप्तमी)	मूलेन आवाहयेत् देवीं श्रवणेन विसर्जयेत्
137. **सप्तमी पञ्चम्यौ कारकमध्ये** (सप्तमी और पञ्चमी)	(क) अद्य भुक्त्वा अयं द्व्यहाद् वा भोक्ता। (ख) अयम् इहस्थः क्रोशे क्रोशाद् वा लक्ष्यं विध्येत् । (ग) लोके लोकाद् वा अधिको हरिः
138. **क. अधिरीश्वरे** **ख. यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी** (कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी)	(क) उप **परार्धे** हरेर्गुणाः। (ख) अधि **भुवि** रामः। (ग) अधि**रामे** भूः।
139. **विभाषा कृञि**	यदत्र माम् अधिकरिष्यति।

कारक-संज्ञासूत्र-तालिका

'कर्त्तृसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **स्वतन्त्रः कर्त्ता** (क्रिया के साथ स्वतन्त्र रूप में जिसकी विवक्षा हो, उसे कर्त्ता कहते है)
2. **तत्प्रयोजको हेतुश्च**

'कर्मसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **कर्तुरीप्सिततमं कर्म** (ईप्सिततम की कर्मसंज्ञा)
2. **तथायुक्तं चानीप्सितम्** (अनीप्सित की कर्मसंज्ञा)
3. **अकथितं च** (अपादानादि कारकों की अविवक्षा में कर्मसंज्ञा)
4. **अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)**
5. **गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ (** अण्यन्तावस्था के कर्ता की ण्यन्तावस्था में कर्मसंज्ञा)
6. **हृक्रोरन्यतरस्याम्** (ण्यन्तावस्था में कर्ता की विकल्प से कर्मसंज्ञा)
7. **अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् (वार्तिक)** (विकल्प से कर्मसंज्ञा)
8. **अधिशीङ्स्थासां कर्म** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
9. **अभिनिविशश्च** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
10. **उपान्वध्याङ्वसः** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
11. **क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म** (उपसर्ग युक्त 'क्रुध्' और द्रुह् धातु के योग में, जिसके प्रति कोप किया जाय,उसकी 'कर्मसंज्ञा)

'करणसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **साधकतमं करणम्** (क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त उपकारक कारक की 'करणसंज्ञा')
2. **दिवः कर्म च।** ('कर्मसंज्ञा' और 'करणसंज्ञा')
3. **परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् ।**
   (परिक्रयण = पारिश्रमिक देकर खरीद लेना, में प्रकृष्ट उपकारक की संप्रदानसंज्ञा विकल्प से। पक्ष में 'करणसंज्ञा')

'सम्प्रदानसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्** (कर्त्ता जिसके साथ सम्बन्ध बनाना चाहता है, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
2. **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः** (प्रीयमाण की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
3. **श्लाघ-ह्नुङ्-स्था-शपां ज्ञीप्स्यमानः** (ज्ञीप्स्यमान की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
4. **धारेरुत्तमर्णः** (उत्तमर्ण = उधार देने वाले की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
5. **स्पृहेरीप्सितः** (ईप्सित की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
6. **क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः** (जो कोप का विषय हो, उसकी सम्प्रदानसंज्ञा)
7. **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः** (जिसके विषय में विविध प्रश्न किये जाय, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
8. **प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता** (पूर्व प्रेरणा रूप व्यापार के कर्ता की सम्प्रदानसंज्ञा')
9. **अनुप्रतिगृणश्च** (जो पूर्व व्यापार प्रेरणा का कर्ता हो, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
10. **क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् (वा.)**

'अपादानसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **ध्रुवमपायेऽपादानम्** (ध्रुव या अवधिभूत की अपादानसंज्ञा)
2. **भीत्रार्थानां भयहेतुः** (भय के हेतु की अपादानसंज्ञा)
3. **पराजेरसोढः** (असह्य पदार्थ की अपादानसंज्ञा)
4. **वारणार्थानामीप्सितः** (ईप्सित की अपादानसंज्ञा)
5. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति** (जिससे स्वयं को छिपाना चाहता है,उसकी अपादानसंज्ञा)
6. **आख्यातोपयोगे** (गुरु की अपादानसंज्ञा)
7. **जनिकर्तुः प्रकृतिः** (जनिकर्तुः हेतुरूपकारकस्य अपादानसंज्ञा)
8. **भुवः प्रभवः** (प्रकट होने के स्थान की अपादानसंज्ञा)

'अधिकरणसंज्ञा' विधायक सूत्र

1. **आधारोऽधिकरणम्**
   (कर्त्ता और कर्म द्वारा उनमें क्रिया का जो आधार हो,उसकी 'अधिकरणसंज्ञा')

अभ्यास प्रश्न (कारक प्रकरण)

1. ''..... लिङ्ग-परिमाण-वचनमात्रे प्रथमा'' इत्यत्र रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-
   (A) तद्धितार्थ (B) कृदन्तार्थ
   (C) समासार्थ (D) प्रातिपदिकार्थ

2. ''हरिं भजति'' इत्यत्र हरिशब्दस्य केन सूत्रेण कर्मसंज्ञा स्यात्?
   (A) अकथितञ्च (B) कर्तुरीप्सिततमम्
   (C) कर्मणि द्वितीया (D) सम्बोधने च

3. ''यवेभ्यो गां वारयति'' इति पञ्चमी विभक्त्यर्थे।
   ''..... ईप्सितः'' इति सूत्रस्य प्रवृत्तिर्भवति। रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-
   (A) वारणार्थानाम् (B) यवार्थानाम्
   (C) गोर्थानाम् (D) संयोगार्थानाम्

4. 'गोषु दुह्यमानासु गतः' इत्यत्र सप्तमीविभक्ति-विधायकं सूत्रमस्ति-
   (A) सप्तम्यधिकरणे च (B) यतश्चनिर्धारणम्
   (C) यस्य च भावेन भावलक्षणम् (D) साध्वसाधुप्रयोगे च

5. 'षष्ठी चानादरे' इत्यनेन सूत्रेण विहितं विभक्ति-द्वयमस्ति-
   (A) पञ्चमी षष्ठी च (B) षष्ठी सप्तमी च
   (C) षष्ठी द्वितीया च (D) षष्ठी चतुर्थी च

6. ''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाण.....प्रथमा'' इति कारकसूत्रं पूरयत-
   (A) कारकमात्रे (B) पुरुषमात्रे
   (C) विभक्तिमात्रे (D) वचनमात्रे

7. अधिपूर्वाणां शीङ्स्थासां योगे कुत्र कर्म स्यात् ?
   (A) करणे (B) कर्तरि
   (C) आधारे (D) कर्मणि

8. पुत्रेण सहागतः पिता। इत्यत्र किं पदमप्रधानम् ?
   (A) सह (B) पिता
   (C) पुत्रेण (D) आगतः

9. ''क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः''। इत्यस्मिन्नुदाहरणे किं कारकसूत्रम्?
   (A) साधकतमं करणम् (B) अपवर्गे तृतीया
   (C) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (D) कर्तृकरणयोस्तृतीया

10. ''देवदत्ताय रोचते मोदकः पथि।'' इत्यत्र वाक्ये 'प्रीयमाणः' किम्?
    (A) पथि (B) मोदकः
    (C) रोचते (D) देवदत्ताय

11. केषां धातूनां प्रयोगे ईप्सितोऽर्थोऽपादानं स्यात् ?
    (A) रुच्यर्थानाम् (B) वारणार्थानाम्
    (C) भयार्थानाम् (D) गत्यर्थानाम्

12. ''गोमयाद् वृश्चिकाः जायन्ते'' इत्यस्मिन्नुदाहरणवाक्ये किं कारकसूत्रम् ?
    (A) जनिकर्तुः प्रकृतिः (B) भुवः प्रभवः
    (C) ध्रुवमपायेऽपादानम् (D) अपादाने पञ्चमी

13. कृद्योगे कर्तरि कर्मणि च का विभक्तिः भवेत् ?
    (A) द्वितीया (B) तृतीया
    (C) षष्ठी (D) सप्तमी

14. जातिगुणक्रियासंज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणतः ततः के विभक्ती स्तः?
    (A) द्वितीयातृतीये (B) पञ्चमीषष्ठ्यौ
    (C) षष्ठीसप्तम्यौ (D) चतुर्थीपञ्चम्यौ

15. गोविन्दः शिरसा खल्वाटः। इत्यत्र रेखाङ्कितपदे कारणं स्पष्टयत–
    (A) करणार्थे (B) अङ्गविकारार्थे
    (C) अपवर्गार्थे (D) सहार्थे

16. ''अपादानादिविशेषैरविवक्षितं कारकं कर्मसञ्ज्ञं स्यात्'' इत्यर्थे निर्धारितं सूत्रं वर्तते-
    (A) कर्मणि द्वितीया (B) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
    (C) अकथितञ्च (D) अनभिहिते

17. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' इत्यत्र तृणम् इत्यस्य कर्मसंज्ञा भवति-
    (A) अकथितञ्च (B) अभिनिविशश्च
    (C) अधिशीङ्स्थासां कर्म (D) तथायुक्तं चानीप्सितम्

1. (D)	**2.** (B)	**3.** (A)	**4.** (C)	**5.** (B)	**6.** (D)	**7.** (C)	**8.** (C)	**9.** (B)	**10.** (D)	**11.** (B)
12. (A)	**13.** (C)	**14.** (C)	**15.** (B)	**16.** (C)	**17.** (D)					

18. 'हरिः वैकुण्ठम् अधिवसति' इत्यत्र कर्मसंज्ञाविधायकं सूत्रमस्ति-
(A) अधिशीङ्स्थासां कर्म (B) उपान्वध्याङ्वसः
(C) अकथितं च (D) उपोऽधिके च

19. ''येनाङ्गविकारः'' इति सूत्रस्योदाहरणमस्ति-
(A) चक्षुषा पश्यति (B) शिरसा खल्वाटः
(C) पुस्तकेन विद्यार्थी (D) दण्डेन यतिः

20. रुच्यर्थानां धातूनां योगे का विभक्तिः भवति?
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

21. ''मातुः निलीयते कृष्णः'' इत्यत्र कस्य सूत्रस्य प्रवृत्तिर्भवति?
(A) वारणार्थानामीप्सितः
(B) क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
(C) अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति
(D) अपादाने पञ्चमी

22. ''कर्तृकर्मणोः कृति'' इति सूत्रेण विधीयते-
(A) चतुर्थीविभक्तिः (B) पञ्चमीविभक्तिः
(C) षष्ठीविभक्तिः (D) सप्तमीविभक्तिः

23. ''यतश्च निर्धारणम्'' इत्यनेन सूत्रेण विभक्तिर्भवति-
(A) चतुर्थी/पञ्चमी (B) पञ्चमी/षष्ठी
(C) षष्ठी/सप्तमी (D) सप्तमी/सम्बोधन

24. खलः सज्जनं क्रुध्यति। रेखाङ्कितं पदं संशोधयत –
(A) सज्जनाय (B) सज्जनेन
(C) सज्जनस्य (D) सज्जने

25. 'मासेन भगवद्गीता अधीता।' अत्र रेखाङ्किते पदे तृतीया विभक्तेः कारकं सूत्रमस्ति-
(A) अपवर्गे तृतीया (B) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(C) इत्थम्भूतलक्षणे (D) आख्यातोपयोगे

26. 'ग्रामे वृक्षस्य अधः स्थितः रामः देवदत्ताय शतं धारयति।' उपर्युक्तवाक्ये उत्तमर्णः अस्ति-
(A) रामः (B) वृक्षः
(C) ग्रामः (D) देवदत्तः

27. 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' सूत्रानुसारेण वाक्यरचना अस्ति-
(A) ब्रह्मणा प्रजाः प्रजायन्ते।
(B) ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते
(C) ब्रह्मणि प्रजाः प्रजायन्ते
(D) ब्रह्मणं प्रजाः प्रजायन्ते

28. 'सः मन्दिरम् आगत्य पुस्तकं पठित्वा तण्डुलान् ओदनं पचति।' इत्यत्र वाक्ये अकथितं कर्म अस्ति-
(A) मन्दिरम् (B) ओदनम्
(C) तण्डुलान् (D) पुस्तकम्

29. 'रामेण बाणेन हतो बाली' इत्यत्र 'साधकतमं करणम्' इति सूत्रस्य गतार्थता कस्मिन् पदे विद्यते?
(A) रामेण (B) बाणेन
(C) हतः (D) बाली

30. ''यस्य च_____भावलक्षणम्'' इत्यत्र रिक्तस्थानं प्रपूरयतु-
(A) कर्मणा (B) करणेन
(C) भावेन (D) उपकरणेन

31. ''ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते'' इत्यत्र ''अपादानं'' कस्मिन् पदे वर्तते?
(A) ब्रह्मणः (B) प्रजाः
(C) प्रजायन्ते (D) अजायन्त

32. ''अधिशीङ्स्थासां कर्म'' सूत्र-द्वारा कर्मसंज्ञा भवति?
(A) धातोः (B) आधारस्य
(C) ईप्सिततमस्य (D) उपसर्गस्य

33. 'रुच्' धातोः योगे कारकं भवति –
(A) अपादानम् (B) कर्म
(C) करणम् (D) सम्प्रदानम्

34. रुच्-धातोर्योगे का विभक्तिर्भवति?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) सप्तमी (D) चतुर्थी

35. शुद्धं वाक्यमस्ति-
(A) अहं प्रासादात् पतामि (B) अहं प्रासादस्य पतामि
(C) अहं प्रासादेन पतामि (D) अहं प्रासादाय पतामि

36. ''सीता स्थाल्यां तण्डुलोदनं पचति'' इत्यत्र केन सूत्रेण सिद्ध्यति?
(A) सप्तम्यधिकरणे च (B) यतश्च निर्धारणम्
(C) भुवः प्रभवः (D) षष्ठी शेषे

37. 'येनाङ्गविकारः' इत्यनेन सूत्रेण का विभक्तिः विधीयते?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

18. (B)	**19.** (B)	**20.** (B)	**21.** (C)	**22.** (C)	**23.** (C)	**24.** (A)	**25.** (A)	**26.** (D)	**27.** (B)	**28.** (C)
29. (B)	**30.** (C)	**31.** (A)	**32.** (B)	**33.** (D)	**34.** (D)	**35.** (A)	**36.** (A)	**37.** (B)		

38. चतुर्थीविधायकं सूत्रं किम् ?
(A) भुवः प्रभवः
(B) अकथितं च
(C) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे
(D) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

39. 'निकषा' इत्यस्य योगे का विभक्तिः भवति?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

40. 'अनुवसति वैकुण्ठं हरिः' उदाहरणेऽस्मिन् कस्य सूत्रस्य उपयोगिता भवति?
(A) उपान्वध्याङ्वसः (B) उपसर्गाः क्रियायोगे
(C) ह्रक्रोरन्यतरस्याम् (D) अधिशीङ्स्थासां कर्म

41. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' इत्यस्य उदाहरणं किम् ?
(A) श्वः आगमिष्यामि (B) क्रोशं कुटिला नदी
(C) क्रोशेन अनुवाकः अधीतः (D) अतिदेवान् कृष्णः

42. '..... यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' इत्यत्र सूत्रस्य रिक्तस्थानं प्रपूरयत।
(A) कर्मणा (B) कर्त्रा
(C) करणेन (D) उपकरणेन

43. 'जगतः कर्त्ता कृष्णः' उदाहरणेऽस्मिन् यस्य सूत्रस्य प्रवृत्तिः भवति तन्निर्धारयतु-
(A) कर्तृकर्मणोः कृति (B) षष्ठी चानादरे
(C) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (D) कर्तृकरणयोस्तृतीया

44. 'मासेन ग्रन्थोऽधीतः' इत्यत्र तृतीया-विधायकं सूत्रं किम् ?
(A) कर्तृकरणयोस्तृतीया (B) येनाङ्गविकारः
(C) अपवर्गे तृतीया (D) साधकतमं करणम्

45. 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' इत्यत्र 'भाव' इत्यस्य अर्थः अस्ति-
(A) मित्रम् (B) क्रिया
(C) सात्त्विकभावः (D) अनुभावः

46. शुद्धं वाक्यं किम् ?
(A) शिशुः पर्यङ्कः अधिशेते
(B) शिशुः पर्यङ्के अधिशेते
(C) शिशुः पर्यङ्काय अधिशेते
(D) शिशुः पर्यङ्कमधिशेते

47. 'गां दोग्धि पयः' इत्यत्र कस्य सूत्रस्य उपयोगः भवति?
(A) स्वतन्त्रः कर्त्ता (B) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) अकथितं च

48. 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्' अत्र कस्य सूत्रस्य प्रयोगः भवति-
(A) जनिकर्तुः प्रकृतिः (B) भुवः प्रभवः
(C) भीत्रार्थानां भयहेतुः (D) अकथितं च

49. '..... क्रोधोऽभिजायते' रिक्तस्थानं पूरयत-
(A) कामम् (B) कामेन
(C) कामात् (D) कामाय

50. 'गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा' अत्र कस्य सूत्रस्य प्रयोगः अस्ति?
(A) सप्तम्यधिकरणे च (B) षष्ठी शेषे
(C) यतश्चनिर्धारणम् (D) अकथितं च

51. ''कर्तुः क्रियया आप्तुम् _____कारकं कर्मसंज्ञं स्यात्'' रिक्तस्थानं पूरयत-
(A) इष्टतरम् (B) इष्टकरम्
(C) इष्टम् (D) इष्टतमम्

52. अनभिहिते कर्तरि विभक्तिः स्यात्-
(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) प्रथमा (D) तृतीया

53. ''ध्रुवमपायेऽपादानम्'' इत्यत्र 'ध्रुवम्' पदस्याभिप्रायः-
(A) निश्चितम् (B) अवधिभूतम्
(C) स्थिरः (D) स्थिरभूतम्

54. ''सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति'' रेखाङ्कितपदस्य कर्मसंज्ञा विधायकं सूत्रम्?
(A) अभिनिविशश्च (B) उपान्वध्याङ्वसः
(C) कर्मणि द्वितीया (D) अकथितञ्च

55. ''ब्रह्मचारी काष्ठपीठे अधिशेते'' रेखाङ्कितपदस्य शुद्धरूपम् अस्ति-
(A) काष्ठपीठम् (B) काष्ठपीठात्
(C) काष्ठपीठेन (D) काष्ठपीठाय

56. ''पुरां भेत्ता'' रेखाङ्कितपदे षष्ठीविधायकं सूत्रम्-
(A) कृत्यानां कर्तरि वा (B) कर्तृकर्मणोः कृति
(C) षष्ठी शेषे (D) हेतौ

38. (D) **39.** (A) **40.** (A) **41.** (B) **42.** (A) **43.** (A) **44.** (C) **45.** (B) **46.** (D) **47.** (D) **48.** (C)
49. (C) **50.** (C) **51.** (D) **52.** (D) **53.** (B) **54.** (D) **55.** (A) **56.** (A)

57. 'अभितः परितः योगे' विभक्तिः भवति –
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

58. ''नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधालं-वषड्योगाच्च'' इत्यत्र 'अलम्' पदस्यार्थः -
(A) निषेधार्थकः (B) पर्याप्त्यर्थः
(C) बह्वर्थः (D) अधिकार्थः

59. ''पृथक्-विना-नाना'' इत्यादिभिः योगे विभक्तयः भवन्ति-
(A) द्वितीया-तृतीया-पञ्चमी च।
(B) द्वितीया-तृतीया-षष्ठी च।
(C) तृतीया-चतुर्थी-पञ्चमी च।
(D) द्वितीया-पञ्चमी-षष्ठी च।

60. 'नृपः दुर्जनं क्रुध्यति।' रेखाङ्कितपदे शुद्धरूपं भविष्यति –
(A) दुर्जनेन (B) दुर्जनात्
(C) दुर्जनस्य (D) दुर्जनाय

61. 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' इति सूत्रेण का विभक्तिः भवति?
(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

62. 'वैकुण्ठम् अधिशेते हरिः' इति उदाहरणं कस्य सूत्रस्य अस्ति?
(A) अधिशीङ्स्थासां कर्म (B) अकथितं च
(C) उपान्वध्याङ्वसः (D) कर्मप्रवचनीयस्य

63. 'साकम्' इति उपपदस्य योगे का विभक्तिः प्रयुज्यते?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

64. 'अक्ष्णा काणः' इत्यत्र केन सूत्रेण विभक्तिः भवति?
(A) तृतीया च (B) भीत्यर्थं भये
(C) हेतौ (D) येनाङ्गविकारः

65. 'स्वस्ति' योगे का विभक्तिः भवति?
(A) चतुर्थी (B) प्रथमा
(C) सप्तमी (D) षष्ठी

66. 'हिमवतः गङ्गा प्रभवति' इत्यत्र केन सूत्रेण विभक्तिर्भवति?
(A) जनिकर्तुः प्रकृतिः (B) भुवःप्रभवः
(C) सप्तम्यधिकरणे च (D) अकथितञ्च

67. प्रातिपदिकार्थे का विभक्तिर्भवति?
(A) सप्तमी (B) चतुर्थी
(C) द्वितीया (D) प्रथमा

68. 'स्पृहेरीप्सितः' इति सूत्रेण का विभक्तिर्भवति?
(A) प्रथमा (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

69. 'जगतः कर्ता वासुदेवः कृष्णः' इत्यत्र अनुक्तं कर्म किम्?
(A) जगत् (B) कर्ता
(C) वासुदेवः (D) कृष्णः

70. 'यतश्च निर्धारणम्' इति सूत्रस्योदाहरणं किमस्ति?
(A) मातरि साधुः (B) कुशलो हरिपूजने
(C) गोषु कृष्णा बहुक्षीरा (D) गोषु दुह्यमानासु गतः

71. 'देवदत्तो रामाय शतं धारयति' इत्यत्र 'उत्तमर्णः' कः?
(A) देवदत्तः (B) शतम्
(C) रामः (D) धारणम्

72. ''अध्ययनात्पराजयते'' इत्यत्र पञ्चमीविधायकं सूत्रम् अस्ति-
(A) भीत्रार्थानां भयहेतुः (B) पराजेरसोढः
(C) आख्यातोपयोगे (D) वारणार्थानामीप्सितः

73. ''उद्यानं गत्वा अधिकारिणं पृष्ट्वा वृक्षमवचिनोति फलानि।'' इत्यस्मिन् वाक्ये अकथितं कर्म किम् अस्ति?
(A) उद्यानम् (B) वृक्षम्
(C) फलानि (D) अधिकारिणम्

74. 'अपवर्गे तृतीया' इत्यस्मिन् सूत्रे 'अपवर्गे' पदस्य अर्थ अस्ति-
(A) मोक्षे (B) निकृष्टे वर्गे
(C) वर्जितवर्गे (D) फलप्राप्तौ

75. 'स्पृहेरीप्सितः' सूत्रानुसारेण शुद्धवाक्यं भविष्यति-
(A) पुष्पेषु स्पृह्यति (B) पुष्पाणि स्पृह्यति
(C) पुष्पाणां स्पृह्यति (D) पुष्पेभ्यः स्पृह्यति

76. ''देवदत्ताय रोचते मोदकः स्वदते च अपूपः।'' उपर्युक्तवाक्ये प्रीयमाणः कः वर्तते?
(A) मोदकः (B) देवदत्तः
(C) अपूपः (D) स्वदते

77. ''नदीमन्ववसिता सेना'' रेखाङ्कितपदे द्वितीयाविधायकं सूत्रम् अस्ति-
(A) तृतीयार्थे (B) हीने
(C) उपोऽधिके च (D) अभिरभागे

57. (B)	**58.** (B)	**59.** (A)	**60.** (D)	**61.** (D)	**62.** (A)	**63.** (B)	**64.** (D)	**65.** (A)	**66.** (B)	**67.** (D)
68. (B)	**69.** (A)	**70.** (C)	**71.** (C)	**72.** (B)	**73.** (B)	**74.** (D)	**75.** (D)	**76.** (B)	**77.** (A)	

78. 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्रस्योदाहरणमस्ति-
(A) ग्रामं गतः (B) वृक्षात् पतितः
(C) विप्राय दानम् (D) कालस्य गतिः

79. 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्रप्रयोगे विभक्तिः भवति-
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

80. 'कर्मणि' किं भवति?
(A) सप्तमी (B) षष्ठी
(C) प्रथमा (D) द्वितीया

81. अभिहिते कर्मणि विभक्तिः स्यात् –
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) प्रथमा

82. 'सहयुक्तेऽप्रधाने' विभक्तिः भवति?
(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) चतुर्थी (D) प्रथमा

83. 'रामेण बाणेन हतो बालिः' अत्र तृतीयाविधायकं सूत्रमस्ति-
(A) साधकतमं करणम्
(B) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(C) अपवर्गे तृतीया
(D) हेतौ

84. 'रामः देवदत्तं शतं धारयति ग्रामे' अस्मिन् वाक्ये रेखाङ्कितपदे विभक्तिः भवेत्-
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

85. ध्रुवमपायेऽपादानम् अस्मिन् सूत्रे ''अपाये'' पदस्य अर्थः अस्ति-
(A) भूमिः (B) आपत्तिः
(C) आधारः (D) विश्लेषः

86. 'वृक्षात्' अवचिनोति फलानि अत्र अविवक्षितं कर्म भवेत् -
(A) वृक्षेण (B) वृक्षम्
(C) वृक्षे (D) वृक्षैः

87. 'पञ्चवर्षाणि अधीते' उपर्युक्तवाक्ये द्वितीयाविभक्तेः कारकं सूत्रमस्ति-
(A) अधिपरी अनर्थकौ
(B) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(C) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे
(D) अधिशीङ्स्थासां कर्म

88. ''अरण्ये गतः वृक्षे स्थितः अपि चोरं दृष्ट्वां व्याघ्रात् बिभेति।'' अस्मिन् वाक्ये कस्य कारकसूत्रस्य प्रवृत्तिरस्ति?
(A) अपादाने पञ्चमी
(B) जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्
(C) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(D) वारणार्थानामीप्सितः

संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम्

UP. TGT, PGT (संस्कृत) के छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तक में हर प्रश्न का महामंथन

आपके शिक्षक बनने का सपना हम करेंगे साकार

TGT प्रश्न मीमांसा

PGT प्रश्न मीमांसा

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करने के लिए हमें कॉल करें 8004545095, 8004545096

78. (D) **79.** (C) **80.** (D) **81.** (D) **82.** (A) **83.** (B) **84.** (D) **85.** (D) **86.** (B) **87.** (C) **88.** (C)

वाच्य परिवर्तन

- संस्कृत वाक्य में क्रिया के द्वारा प्रधान रूप से जो कहा जाता है वह क्रिया का वाच्य होता है।
- संस्कृत भाषा में तीन प्रकार के वाच्य होते हैं- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य।
- संस्कृत में क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं- सकर्मक, अकर्मक।
- सकर्मक धातुओं के रूप दो वाच्यों में होते हैं- कर्तृवाच्य,कर्मवाच्य।
- अकर्मक धातुओं के रूप भी दो वाच्यों में होते हैं- कर्तृवाच्य,भाववाच्य।
- कर्तृवाच्य में कर्त्ता मुख्य होता है और क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है।
- सकर्मक धातु में कर्म की जब प्रधानता होती है तब कर्मवाच्य कहा जाता है।
- अकर्मक धातु में भाव की प्रधानता होनें पर भाववाच्य कहा जाता है।
- कर्मवाच्य और भाववाच्य की क्रिया बनाने में प्रत्येक धातु के अन्त में 'य' केवल लट् , लोट् ,विधिलिङ् में जोड़ा जाता है।
- कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में केवल आत्मनेपद की ही विभक्तियाँ लगती हैं।

(पठ् धातु) लट् लकार		
पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे।
लोट् लकार		
पठ्यताम्	पठ्येताम्	पठ्यन्ताम्
पठ्यस्व	पठ्येथाम्	पठ्यध्वम्
पठ्यै	पठ्यावहै	पठ्यामहै
लङ् लकार		
अपठ्यत्	अपठ्येताम्	अपठ्यन्त
अपठ्यथाः	अपठ्येथाम्	अपठ्यध्वम्
अपठ्ये	अपठ्यावहि	अपठ्यामहि
विधिलिङ् लकार		
पठ्येत्	पठ्येयाताम्	पठ्येरन्
पठ्येथाः	पठ्येयाथाम्	पठ्येध्वम्
पठ्येय	पठ्येवहि	पठ्येमहि
लृट् लकार		
पठिष्यते	पठिष्येते	पठिष्यन्ते
पठिष्यसे	पठिष्येथे	पठिष्यध्वे
पठिष्ये	पठिष्यावहे	पठिष्यामहे

कर्तृवाच्य

- कर्तृवाच्य में कर्त्ता मुख्य होता है, क्रिया कर्त्ता के अनुसार चलती है अर्थात् क्रिया का पुरुष, वचन, लिङ्ग कर्त्ता के पुरुष,वचन और लिङ्ग के अनुसार होगा।
- अकर्मक तथा सकर्मक सभी धातुओं के दसों गणों में, दसों लकारों के रूप कर्तृवाच्य में होते हैं।
- अकर्मक अथवा सकर्मक क्रिया के होने पर कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

कर्तृवाच्य के उदाहरण-

1. रमेशः ग्रन्थं पश्यति।
2. अहं रामकथां शृणोमि।
3. सः पयः पिबति।
4. श्रमिकः कूपं खनति।
5. अहं शिक्षां लभे।
6. कृषकः चौरात् बिभ्यति।
7. बालकः कन्दुकेन क्रीडति।
8. रामः तिष्ठति।
9. सः पुस्तकं पठति।
10. शिशुः दुग्धं पिबति।
11. रामः वनम् अगच्छत्।
12. गुरुः शिष्यं तत्त्वं ब्रूते।

कर्मवाच्य

- कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है।
- सकर्मक धातुओं से ही कर्मवाच्य होता है।
- कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्म में प्रथमा विभक्ति, कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- कर्मवाच्य के वाक्यों में क्रिया का पुरुष, वचन और लिङ्ग कर्म के अनुसार होता है।
- कर्मवाच्य की क्रियाओं में क्रिया का रूप आत्मनेपद में चलता है।

कर्मवाच्य के उदाहरण-

1. सुरेशेन ग्रामः गम्यते।
2. अस्माभिः पुस्तकं पठ्यते।
3. मया अन्नं दीयते।
4. बालिकया लेखः लिख्यते।
5. भृत्येन कटं कार्यते।
6. देवदत्तेन ग्रामः गम्यते।
7. तेन विप्राय गौः दीयते।
8. छात्रेण पाठः अभ्यस्यते।
9. गुरुणा सत्यं भाषते।
10. शिष्यैः ग्रन्थाः पठ्यन्ते।
11. मालाकारेण पुष्पाणि चीयन्ते।
12. अध्यापकेन सत्यम् उद्यते।
13. गायकेन गीतानि गीयन्ते।
14. त्वया लेखः अलिख्यत।
15. युष्माभिः कथा श्रूयते।
16. गुरुणा छात्राय धर्मम् उच्यते।
17. अस्माभिः चन्द्रः दृश्यते।
18. भृत्येन फलं नीयते।

भाववाच्य

- अकर्मक क्रियाओं वाले वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता न होकर भाव अर्थात् क्रिया की प्रधानता होती है तो वह भाववाच्य कहलाता है।
- भाववाच्य के वाक्य अकर्मक धातु से ही होते हैं।

- भाववाच्य के वाक्य में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति, क्रिया में प्रथम पुरुष एकवचन का रूप प्रयोग किया जाता है।
- क्त, तव्य, अनीयर्, यत् प्रत्यय भाववाच्य में होते हैं इन प्रत्ययान्त पदों के प्रयोग में नपुंसकलिङ्ग एकवचन का प्रयोग होगा।

भाववाच्य के उदाहरण-

1. छात्रेण हस्यते।
2. ईश्वरेण भूयते।
3. मयूरैः नृत्यते।
4. त्वया सर्पात् भीयते।
5. त्वया अत्र उष्यते।
6. भवता कुत्र शय्यते।
7. विवेकिना सदा जागर्यते।
8. बालकेन स्थीयते।
9. विद्याहीनेन न शुभ्यते।
10. मया भूयते।
11. कुक्कुरेण गृहद्वारे सुप्यते।
12. मया गतम्।
13. मया पठितम्।
14. तेन पठितव्यम्।
15. तेन पठनीयम्।

कर्मवाच्य/भाववाच्य में क्रिया रूप बनाने के कुछ नियम-

- जिन धातुओं के अन्त में दीर्घ आ होता है(दा, धा, पा, स्था, मा आदि), जैसे- दा-दीयते, धा-धीयते, पा-पीयते, स्था-स्थीयते, मा-मीयते।
- ऋकारान्त धातुओं (मृ,हृ,कृ,भृ,धृ,वृ,दृ आदि) के अन्तिम ऋकार को 'य' परे होने पर 'रि' आदेश हो जाता है।

जैसे- मृ-म्रियते, हृ-ह्रियते, कृ-क्रियते, भृ-भ्रियते, धृ-ध्रियते, वृ-व्रियते, दृ-ह्रियते।

- जिन धातुओं के अन्त में ह्रस्व इ तथा उ होते हैं, 'य' परे होने पर उनके ह्रस्व इकार तथा उकार को दीर्घ स्वर हो जाता है।

जैसे- जि-जीयते, चि-चीयते, स्तु-स्तूयते, श्रु-श्रूयते, हु-हूयते, सू-सूयते।

- वद्, वच्, वस्, वह्, वप्, स्वप् आदि धातुओं के व का उ सम्प्रसारण हो जाता है जैसे- उद्यते, उच्यते, उष्यते, उह्यते, उप्यते, सुप्यते।
- यज्, व्यध् आदि धातुओं के य का सम्प्रसारण इ हो जाता है।

जैसे- इज्यते, विध्यते।

- प्रच्छ्, ग्रह् आदि धातुओं के र को सम्प्रसारण ऋ होने पर पृच्छ्यते, गृह्यते आदि रूप बनते हैं।
- धातु के उपधा के अनुनासिक का लोप हो जाता है जैसे- भञ्ज्-भज्यते, रञ्ज्-रज्यते, ग्रन्थ-ग्रथ्यते, स्तम्भ-स्तभ्यते।
- खन्, जन्, तन् आदि धातुओं के न् को विकल्प से आ हो जाता है जैसे- जन-जायते, जन्यते। तन्-तायते, तन्यते। खन्-खायते, खन्यते।
- लृट्लकार में कर्तृवाच्य के समान रूप बनते हैं, केवल आत्मने पद के प्रत्यय लगाए जाते हैं जैसे- भविष्यते, पठिष्यते, गमिष्यते आदि।
- कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के रूपों में गणों के विकरण का प्रयोग नहीं होता है।

कर्मवाच्य/भाववाच्य के अनुसार प्रमुख धातुरूप

भू धातु (अकर्मक,अनिट्, परस्मैपद)

1. लट् लकार		
भूयते	भूयेते	भूयन्ते
भूयसे	भूयेथे	भूयध्वे
भूये	भूयावहे	भूयामहे
2. विधिलिङ् लकार		
भूयेत	भूयेयाताम्	भूयेरन्
भूयेथाः	भूयाथाम्	भूयध्वम्
भूयेय	भूयेवहि	भूयेमहि।
3. लोट् लकार		
भूयताम्	भूयेताम्	भूयन्ताम्
भूयस्व	भूयेथाम्	भूयध्वम्
भूयै	भूयावहै	भूयामहै।
4. लङ् लकार		
अभूयत	अभूयेताम्	अभूयन्त
अभूयथाः	अभूयेथाम्	अभूयध्वम्
अभूये	अभूयावहि	अभूयामहि।
5. लृट् लकार		
भविष्यते	भविष्येते	भविष्यन्ते
भविष्यसे	भविष्येथे	भविष्यध्वे
भविष्ये	भविष्यावहे	भविष्यामहे

गम् धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

लट् लकार		
गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
गम्यसे	गम्येथे	गम्यध्वे
गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे

वद् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

उद्यते	उद्येते	उद्यन्ते
उद्यसे	उद्येथे	उद्यध्वे
उद्ये	उद्यावहे	उद्यामहे

पठ् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
पठ्ये	पठ्यावहे	वठ्यामहे

कृ धातु (लट् लकार)

क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

याच् धातु (सकर्मक,सेट्,उभयपदी,भ्वादिगण)		
याच्यते	याच्येते	याच्यन्ते
याच्यसे	याच्येथे	याच्यध्वे
याच्ये	याच्यावहे	याच्यामहे

पच् धातु (सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, भ्वादिगण)		
पच्यते	पच्येते	पच्यन्ते
पच्यसे	पच्येथे	पच्यध्वे
पच्ये	पच्यावहे	पच्यामहे

रुच् धातु (अकर्मक, सेट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)		
रुच्यते	रुच्येते	रुच्यन्ते
रुच्यसे	रुच्येथे	रुच्यध्वे
रुच्ये	रुच्यावहे	रुच्यामहे

रम् धातु (अकर्मक, अनिट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)		
रम्यते	रम्येते	रम्यन्ते
रम्यसे	रम्येथे	रम्यध्वे
रम्ये	रम्यावहे	रम्यामहे

यज् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)		
इज्यते	इज्येते	इज्यन्ते
इज्यसे	इज्येथे	इज्यध्वे
इज्ये	इज्यावहे	इज्यामहे

वह् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)		
उह्यते	उह्येते	उह्यन्ते
उह्यसे	उह्येथे	उह्यध्वे
उह्ये	उह्यावहे	उह्यामहे

श्रु धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)		
श्रूयते	श्रूयेते	श्रूयन्ते
श्रूयसे	श्रूयेथे	श्रूयध्वे
श्रूये	श्रूयावहे	श्रूयामहे

तुद् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,तुदादिगण)		
तुद्यते	तुद्येते	तुद्यन्ते
तुद्यसे	तुद्येथे	तुद्यध्वे
तुद्ये	तुद्यावहे	तुद्यामहे

भुज् धातु (अकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,तुदादिगण)		
भुज्यते	भुज्येते	भुज्यन्ते
भुज्यसे	भुज्येथे	भुज्यध्वे
भुज्ये	भुज्यावहे	भुज्यामहे

हन् धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,अदादिगण)		
हन्यते	हन्येते	हन्यन्ते
हन्यसे	हन्येथे	हन्यध्वे
हन्ये	हन्यावहे	हन्यामहे

हस् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)		
हस्यते	हस्येते	हस्यन्ते
हस्यसे	हस्येथे	हस्यध्वे
हस्ये	हस्यावहे	हस्यामहे

क्रीड् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)		
क्रीड्यते	क्रीड्येते	क्रीड्यन्ते
क्रीड्यसे	क्रीड्येथे	क्रीड्यध्वे
क्रीड्ये	क्रीड्यावहे	क्रीड्यामहे

स्था धातु		
स्थीयते	स्थीयेते	स्थीयन्ते
स्थीयसे	स्थीयेथे	स्थीयध्वे
स्थीये	स्थीयावहे	स्थीयामहे

आस् धातु (अकर्मक,सेट्,आत्मनेपद,अदादिगण)		
आस्यते	आस्येते	आस्यन्ते
आस्यसे	आस्येथे	आस्यध्वे
आस्ये	आस्यावहे	आस्यामहे

जीव् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)		
जीव्यते	जीव्येते	जीव्यन्ते
जीव्यसे	जीव्येथे	जीव्यध्वे
जीव्ये	जीव्यावहे	जीव्यामहे

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य लट्लकार	कर्मवाच्य/भाववाच्य लट्लकार	कर्म/भाववाच्य प्रयोग
भू (होना)	भवति	भूयते	ईश्वरेण भूयते
भी (डरना)	बिभेति	भीयते	शिशुभिः मूषकेभ्यः भीयते
शी (सोना)	शेते	शय्यते	पथिकैः मार्गे शय्यते
याच् (माँगना)	याचति	याच्यते	याचकैः भैक्ष्यं याच्यते
अद् (खाना)	अत्ति	अद्यते	मया मिष्ठान्नम् अद्यते
वद् (बोलना)	वदति	उद्यते	आचार्येण सत्यम् उद्यते
ज्ञा (जानना)	जानाति	ज्ञायते	तेन श्लोकः न ज्ञायते
खन् (खोदना)	खनति	खन्यते	श्रमिकः भूमिः खन्यते
वप् (बोना)	वपति	उप्यते	कृषकेण बीजानि उप्यन्ते
स्था (ठहरना)	तिष्ठति	स्थीयते	मुनिना कुटीरे स्थीयते
कथ् (कहना)	कथयति	कथ्यते	ऋषिणा रामकथा कथ्यते
दुह् (दोहना)	दोग्धि	दुह्यते	मया गौः पयः दुह्यते
नी (ले जाना)	नयति	नीयते	भृत्येन भारः नीयते
गम् (जाना)	गच्छति	गम्यते	पुत्रेण ग्रामः गम्यते
भक्ष् (खाना)	भक्षयति	भक्ष्यते	मया फलानि भक्ष्यन्ते
हन् (मारना)	हन्ति	हन्यते	राज्ञा सिंहः हन्यते
पा (पीना)	पिबति	पीयते	शिशुना दुग्धं पीयते
अस् (होना)	अस्ति	भूयते	तेन कुत्रापि न भूयते
श्रु (सुनना)	शृणोति	श्रूयते	बालकेन कथा श्रूयते
सेव् (सेवा करना)	सेवते	सेव्यते	प्रजाभिः राजा सेव्यते
चि (चुनना)	चिनोति	चीयते	मालाकारेण पुष्पाणि चीयन्ते
हु (हवन करना)	जुहोति	हूयते	यतिभिः अग्नौ हूयते
स्वप् (सोना)	स्वपिति	सुप्यते	चालकेन मार्गे सुप्यते
मन्थ् (मथना)	मथ्नाति	मथ्यते	मात्रा दधि मथ्यते
पूज् (पूजा करना)	पूजयति	पूज्यते	यत्र नार्यः पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः
कृ (करना)	करोति	क्रियते	ऋषिभिः शुभकर्माणि क्रियन्ते
धृ (धारण करना)	धारयति	धार्यते	शिष्येन वस्त्रं धार्यन्ते
गण् (गिनना)	गणयति	गण्यते	छात्रेण शतं गण्यते
लिख् (लिखना)	लिखति	लिख्यते	छात्रेण पत्रं लिख्यते
मृ (मरना)	म्रियते	म्रियते	क्षुद्रजन्तुभिः शीघ्रं म्रियते
स्मृ (याद करना)	स्मरति	स्मर्यते	मया ईश्वरः स्मर्यते
दृश् (देखना)	पश्यति	दृश्यते	बालकेन चित्रं दृश्यते
प्रच्छ् (पूछना)	पृच्छति	पृच्छ्यते	अध्यापकेन प्रश्नः पृच्छ्यते
रुच् (पसन्द करना)	रोचते	रुच्यते	मोदकैः मह्यं रुच्येते
वस् (रहना)	वसति	उष्यते	बालकैः उद्याने उष्यते

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में प्रयोग

- कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्मवाच्य में तृतीया विभक्ति होती है।
- कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में क्रिया का पुरुष और वचन कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार हो जाता है।

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
अहं शिक्षां लभे	मया शिक्षा लभ्यते
सः पुस्तकं पठति	तेन पुस्तकं पठ्यते
सः ईश्वरं स्मरति	तेन ईश्वरः स्मर्यते
छात्राः प्रश्नं पृच्छन्ति	छात्रैः प्रश्नः पृच्छ्यते
गायकः गीतानि गायति	गायकेन गीतानि गीयन्ते
शिशुः दुग्धं पिबति	शिशुना दुग्धं पीयते
सः सत्यं वदति	तेन सत्यम् उद्यते
अहं पुस्तकं पश्यामि	मया पुस्तकं दृश्यते
माता ओदनं पचति	मात्रा ओदनः पच्यते
वयं युद्धं कुर्मः	अस्माभिः युद्धं क्रियते

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में प्रयोग

- कर्मवाच्य में कर्त्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में कर्म के स्थान पर प्रयुक्त प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति हो जाती है।
- क्रिया के पुरुष और वचन कर्त्ता के अनुसार हो जाते हैं।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्त के स्थान पर कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय हो जाता है।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त तव्य प्रत्यय के स्थान पर कर्तृवाच्य में विधिलिङ् का प्रयोग कर दिया जाता है।

जैसे-

कर्मवाच्य	**कर्तृवाच्य**
अध्यापकेन पाठः पठ्यते	अध्यापकः पाठं पठति
अस्माभिः सिंहः दृश्यते	वयं सिंहं पश्यामः
सैनिकैः युद्धं क्रियते	सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति
रमेशेन ईश्वरः स्मर्यते	रमेशः ईश्वरं स्मरति
बालकेन पत्रं लिख्यते	बालकः पत्रं लिखति
गायकेन गीतं गीयते	गायकः गीतं गायति
नृपेण सिंहः हन्यते	नृपः सिंहं हन्ति
स्वामिना कथा कथ्यते	स्वामी कथां कथयति
तेन ग्रामः गम्यते	सः ग्रामं गच्छति
सेनया युद्धः जीयते	सेना युद्धं जयति
तेन कथा श्रूयते	सः कथां शृणोति
मया चन्द्रः दृश्यते	अहं चन्द्रं पश्यामि
गुरुभिः किं न ज्ञायते	गुरवः किं न जानन्ति
मया लोभः त्यजते	अहं लोभं त्यजामि
वृक्षैः फलानि दीयन्ते	वृक्षाः फलानि ददति

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में प्रयोग

भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है और क्रिया सदा प्रथम पुरुष एकवचन में होती है।

उदाहरण-

कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
छात्रः क्रीडति	छात्रेण क्रीड्यते
बालकाः तिष्ठन्ति	बालकैः स्थीयते
सिंहः गर्जति	सिंहेन गर्ज्यते
अहं पठामि	मया पठ्यते
ईश्वरः अस्ति	ईश्वरेण भूयते
अश्वाः धावन्ति	अश्वैः धाव्यते
कन्याः लिखति	कन्याभिः लिख्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते
त्वं खादसि	त्वया खाद्यते
लता वर्धते	लतया वर्ध्यते
युवां हसथः	युवाभ्यां हस्यते
पुष्पाणि विकसन्ति	पुष्पैः विकस्यते
गुरुः तिष्ठति	गुरुणा स्थीयते
वयं हसामः	अस्माभिः हस्यते
त्वं पठसि	त्वया पठ्यते

भाववाच्य से कर्तृवाच्य में प्रयोग

भाववाच्य	**कर्तृवाच्य**
हरिणा वैकुण्ठे उष्यते	हरिः वैकुण्ठे वसति
अस्माभिः विद्यालये स्थीयते	वयं विद्यालये तिष्ठामः
मयूरैः नृत्यते	मयूराः नृत्यन्ति
मया नैव रुद्यते	अहं नैव रोदिमि
तेन गृहे सुप्यते	सः गृहे स्वपिति

अभ्यास प्रश्न (वाच्य परिवर्तन)

1. कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्ता में कौन-सी विभक्ति होती है–

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

2. 'प्रधाने नी-हृ-कृष्वहाम्' इति नियमेन कर्मणि प्रयोगो भवति–

(A) ग्रामम् अजां वहति (B) ग्रामम् अजाम् उह्यते

(C) ग्रामम् अजा उह्यते (D) ग्रामः अजा उह्यते

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–188-189

3. गौणे कर्मणि दुह्यादेरिति नियमेन शुद्धमस्ति–

(A) सुधा क्षीरनिधिं मथ्यते (B) सुधां क्षीरनिधिं मथ्यते

(C) सुधां क्षीरनिधि मथ्यते (D) सुधायै क्षीरनिधि मथ्यते

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–188-189

4. कर्म के उक्त होने पर कर्ता में कौन विभक्ति होगी–

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) सम्बोधन (D) तृतीया

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–194

5. 'शोभा वेदपाठं करोति' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनमेवं भवति–

(A) शोभा वेदपाठं क्रियते (B) शोभया वेदपाठः क्रियते

(C) शोभया वेदपाठं करोति (D) शोभया वेदपाठ कृणुते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54-55

6. 'अहं तव गृहं विचेष्यामि' का कर्मवाच्य में रूपान्तरण होगा–

(A) मया तव गृहं विचेष्ये (B) मया तव गृहं विचेतास्मि

(C) मया तव गृहं विचेताहे (D) मया तव गृहं विचेष्यते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

7. 'भवन्तः कुत्र भविष्यन्ति' का भाववाच्य में रूपान्तरण होगा–

(A) भवद्भिः कुत्र भवितारः (B) भवद्भिः कुत्र भविष्ये

(C) भवद्भिः कुत्र भविष्यते (D) भवता कुत्र भविता

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

8. 'माता पुत्रं प्रीणाति' का कर्मवाच्य होगा–

(A) मात्रा पुत्रं प्रीव्यते (B) मात्रा पुत्रः प्रीयते

(C) मात्रा पुत्रः प्रीणायते (D) मात्रा पुत्रः प्रीणीयते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–55

9. 'छात्राः चतुरः श्लोकान् पठितवन्तः' इति वाक्यस्य कर्मवाच्ये प्रयोगः अस्ति–

(A) छात्रैः चतुरः श्लोकाः पठिताः

(B) छात्रैः चत्वारः श्लोकाः पठिताः

(C) छात्राः चत्वारः श्लोकाः पठिताः

(D) छात्रैः चत्वारः श्लोकान् पठिताः

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–62-63

10. कर्तृवाच्य में कर्म कौन-सी विभक्ति में आता है–

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

11. 'रामः पुस्तकानि पठति' में वाच्यपरिवर्तन करने पर वाक्य होगा–

(A) रामेण पुस्तकं पठ्यन्ते

(B) रामेण पुस्तकं पठ्यते

(C) रामेण पुस्तकानि पठ्यन्ते

(D) रामेण पुस्तकानि पठ्यते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

1. (C) 2. (C) 3. (A) 4. (D) 5. (B) 6. (D) 7. (C) 8. (B) 9. (B) 10. (B) 11. (C)

12. 'गुरुः छात्रेण सह विद्यालयं गच्छति' का कर्मवाच्य होगा–

(A) गुरुणा सह छात्र विद्यालयं गच्छति

(B) गुरु छात्रेण सह विद्यालयं गच्छति

(C) गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयं गम्यते

(D) गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयः गम्यते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

13. 'सः ग्रामे निवसति' में क्रियापद को लङ्लकार में परिवर्तित करने पर वाक्य बनेगा–

(A) सः ग्रामे अनिवसत् (B) सः ग्रामे अनिवसति

(C) सः ग्रामे न्यवसत् (D) सः ग्रामे न्यवसति

14. 'रामः अश्वं ग्रामं नयति' इसका कर्मवाच्य होगा–

(A) रामः अश्वं नीयते

(B) रामेण अश्वः ग्रामं नयते

(C) रामेण ग्रामः अश्वं नयते

(D) रामेण अश्वः ग्रामं नीयते

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–188-189

15. 'भवान् वपति' का भाववाच्य होगा–

(A) त्वया वायते (B) त्वया वयते

(C) भवता वप्यते (D) भवता उप्यते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

16. कर्तृवाच्ये क्रिया भवति–

(A) कर्त्रनुसारिणी (B) कर्मानुसारिणी

(C) विशेषानुसारिणी (D) कारकानुसारिणी

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

17. ''भवान् नित्यं वेदं पठेत्''– इत्यस्य कर्मवाच्यमस्ति–

(A) भवता नित्यं वेदं पठनीयम्

(B) भवता नित्यं वेदः पठनीयः

(C) भवता नित्यं वेदं पठनीयः

(D) भवता नित्यं वेदः पठनीयम्

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78-79

18. 'रामः पुस्तकं पठति' इस वाक्य का कर्मवाच्य क्या होगा?

(A) रामेण पुस्तकं पठेत् (B) रामेण पुस्तकं पठितानि

(C) रामेण पुस्तके पठ्यते (D) रामेण पुस्तकं पठ्यते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

19. 'त्वं चन्द्रं पश्य' इसका कर्मवाच्य में रूप होगा–

(A) तेन चन्द्रः दृष्टः (B) त्वयि चन्द्रं पश्यति

(C) त्वया चन्द्रः पश्यामि (D) त्वया चन्द्रः दृश्यताम्

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54-55

20. 'छात्रः उपविशति' वाक्य है–

(A) कर्तृवाच्य में (B) कर्मवाच्य में

(C) भाववाच्य में (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

21. 'वयं पाठयितुं विद्यालयं गच्छामः' इत्यस्य कर्मवाच्यं किम् अस्ति?

(A) वयं पाठयितुं विद्यालयं गम्यते

(B) अस्माभिः पाठयितुं विद्यालयः गम्यते

(C) वयं पाठयितुं विद्यालयः गम्यते

(D) अस्माभिः पाठयितुं विद्यालयं गम्यते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

22. 'राधा पत्रं लेखिष्यति' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तने लेख्यं भवति–

(A) पत्रे राधा लिखिष्यति (B) राधया पत्रं लेखिष्यते

(C) पत्रेण राधया लिखिष्यते (D) राधायाः पत्रं लिखिष्यते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

23. वाच्य-परिवर्तनं कुरुत– 'मया पाठः पठ्यते'

(A) मां पाठं पाठयामि (B) अहं पाठं पठामि

(C) मम पाठं पठामि (D) अहं पाठं पठिष्येमे

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

24. 'पुष्पा स्वलेखन्या पत्रं लिखति' वाक्य का वाच्य परिवर्तन होगा–

(A) पुष्पा स्वलेखनीं पत्रं लिखति

(B) पुष्पया स्वलेखन्या पत्रं लिख्यते

(C) पुष्पया स्वलेखन्या पत्रेण लिख्यते

(D) पत्रेण पुष्पा स्वलेखन्या लिख्यते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

12. (D) 13. (C) 14. (D) 15. (D) 16. (A) 17. (B) 18. (D) 19. (D) 20. (A)
21. (B) 22. (B) 23. (B) 24. (B)

25. 'अहं त्वां पश्यामि' इत्यस्य कर्मणि प्रयोगः स्यात्?
(A) अहं त्वं दृश्यसे (B) मया त्वं दृश्यसे
(C) अहं त्वां दृश्यसे (D) मया त्वं दृश्ये
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

26. कर्मवाच्य सम्भव है–
(A) सकर्मक-अकर्मक में (B) केवल सकर्मक में
(C) केवल अकर्मक में (D) उपर्युक्त सभी में
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

27. बालाभ्यां पाठः –
(A) पठ्यते (B) पठ्येते
(C) पठतः (D) पठति
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54-55

28. कर्मवाच्य के कर्ता में कौन-सी विभक्ति होती है–
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) इनमें से सभी
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

29. जिस क्रिया का वाच्य कर्म है, उसे कहते हैं–
(A) कर्तृवाच्य (B) कर्मवाच्य
(C) भाववाच्य (D) तीनों वाच्य
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

30. कर्मवाच्ये कर्म भवति–
(A) तृतीयाविभक्तौ (B) द्वितीयाविभक्तौ
(C) प्रथमाविभक्तौ (D) सप्तमीविभक्तौ
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

31. किस वाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार चलती है–
(A) कर्तृवाच्य में (B) भाववाच्य में
(C) कर्मवाच्य में (D) तीनों में
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

32. 'रामेण बाणेन हतो बाली' इस वाक्य का कर्तृवाच्य रूप है–
(A) रामः बाणेन बालीं हतवान् (B) रामेण बाणेन बालीं हतः
(C) रामः बाणेन बाली हतवान् (D) रामेण बाणेन बालि हतवान्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–195

33. 'बालकेन ग्रन्थः दृश्यते' प्रयोग है–
(A) कर्तृवाच्य का
(B) कर्मवाच्य का
(C) भाववाच्य का
(D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

34. 'तेन पाठः पठ्यते' प्रयोग है–
(A) कर्तृवाच्य का (B) कर्मवाच्य का
(C) भाववाच्य का (D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

35. 'सः गच्छति' वाक्यस्यास्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(A) सः गम्यते (B) सा गच्छति
(C) तेन गम्यते (D) मया गम्यते
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

36. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है–
(A) मया चन्द्रः पश्यति (B) मया चन्द्रः पश्यते
(C) मया चन्द्रः दृश्यते (D) मया चन्द्रः पश्यामि
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

37. ''नारीभिः आभूषणानि धार्यन्ते'' में वाच्यपरिवर्तन होगा–
(A) नारी भूषणानि धारयति
(B) नारी आभूषणानि धारयन्ति
(C) नार्याः आभूषणानि धारयन्ति
(D) नार्यः आभूषणानि धारयन्ति
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

38. 'रामः गच्छति' का कर्मवाच्य होगा–
(A) रामः गम्यते (B) रामेण गच्छति
(C) रामेण गम्यते (D) रामः गमयति
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54

39. अधोलिखितवाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
'अहं ग्रामं गच्छामि।'
(A) मया ग्रामं गम्यते (B) मया ग्रामः गम्यते
(C) मया ग्रामे गम्यते (D) मया ग्रामं गच्छामि
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

25. (B)	**26. (B)**	**27. (A)**	**28. (C)**	**29. (B)**	**30. (C)**	**31. (C)**	**32. (A)**	**33. (B)**	**34. (B)**
35. (C)	**36. (C)**	**37. (D)**	**38. (C)**	**39. (B)**					

40. 'या आनन्दानुभूतिः विधीयते' इति वाक्ये किं वाच्यम्–

(A) भाववाच्यम् (B) कर्तृवाच्यम्

(C) कर्मवाच्यम् (D) नैतेषु किमपि

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54

41. 'मयापि स्वविक्रमः दर्शितः'– अस्य वाक्यस्य कर्तृवाच्ये वाक्यं भविष्यति–

(A) मयापि स्वविक्रमं ददर्श

(B) अहमपि स्वविक्रमम् अपश्यम्

(C) अहमपि स्वविक्रमम् अद्राक्षम्

(D) अहमपि स्वविक्रमम् अदर्शयम्

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63

42. 'ते देवान् यजन्ति' वाक्य का कर्मवाच्य में परिवर्तित रूप है?

(A) तै देवान् यज्यते (B) तैर्देवा इज्यन्ते

(C) तैः देवाः यज्यन्ते (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54-55

43. निम्नलिखित में कौन-सा कर्मवाच्य है–

(A) सः गृहं गतवान् (B) तेन गृहं गतम्

(C) सः गृहः अगच्छत् (D) तेन गृहं गतानि

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66

44. भाववाच्य के लिये निम्नलिखित में क्या सही नहीं है–

(A) भाववाच्य तभी जब क्रिया अकर्मक हो

(B) कर्ता तृतीयान्त होता है

(C) क्रिया केवल प्रथमपुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है

(D) भाववाच्य में क्रिया कर्ता के वचन के अनुसार होती है।

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

45. भाववाच्यात्मक-क्रियापदस्य उदाहरणमस्ति–

(A) नृत्यं करोति (B) हस्यते

(C) भोजनं खादति (D) लेखं लिखति

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

46. 'बालकैः हस्यते' वाक्य में वाच्यपरिवर्तन होगा–

(A) बालकाः हसन्ति (B) बालिका हसति

(C) बालकः हसति (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

47. 'छात्रेण उपविश्यते' में प्रयोग है–

(A) कर्तृवाच्य (B) कर्मवाच्य

(C) भाववाच्य (D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

48. 'तया भूयते' का कर्तृवाच्य प्रयोग है–

(A) सा भवति (B) सः भवति

(C) सः भविष्यति (D) तेन भविष्यति

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

49. 'तेन सुप्यते' किस वाच्य का वाक्य है–

(A) कर्तृवाच्य का (B) कर्मवाच्य का

(C) भाववाच्य का (D) इनमें से तीनों

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

50. 'रामः पठति' का वाच्यपरिवर्तन होगा–

(A) रामः पठयति (B) रामेण पठति

(C) रामः पठ्यते (D) रामेण पठ्यते

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

51. अधोलिखितवाक्येषु भाववाच्यस्य वाक्यं किम् अस्ति?

(A) अध्यापकैः अध्यापनाय विद्यालयः गम्यते

(B) छात्रेण भ्रमणाय नवदिल्ली गम्यते

(C) सर्वैः ध्यातव्यम्

(D) बालकाः ध्यानं कुर्वन्ति

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78-79

52. ''दुग्धं प्रकृत्या मधुरम्'' इत्यस्य कः प्रकृतानुवादः–

(A) दुग्ध अच्छा है।

(B) दुग्ध स्वभाव से मधुर है।

(C) दुग्ध मधुर है।

(D) दुग्ध मधुर होता है।

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–195

40. (C)	**41. (D)**	**42. (B)**	**43. (B)**	**44. (D)**	**45. (B)**	**46. (A)**	**47. (C)**	**48. (A)**	**49. (C)**
50. (D)	**51. (C)**	**52. (B)**							

6 Unit

गद्य-साहित्य

कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

महाकवि बाणभट्ट का सामान्य परिचय

बाणभट्ट का वंशवृक्ष

वत्स
।
कुबेर
(कर्मकाण्डी श्रुतिशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण)
।
पाशुपत
।
अर्थपति (इनके 11 पुत्र हुए)
।
चित्रभानु
।
बाणभट्ट
।
भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट, पुलिनभट्ट)

- **निवास** – शोण (सोन) नदी के पास 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम। (वर्तमान में शाहाबाद, आरा, बिहार।)
- **राज्याश्रय** – सम्राट् हर्ष के सभापण्डित
- **पितामह** – अर्थपति
- **पिता** – चित्रभानु
- **माता** – राजदेवी
- **गुरु -** भर्वु या भर्त्सु
- **पत्नी** – कवि मयूरभट्ट की बहन
- **पुत्र -** भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)
- **बहन** – मालती
- **बाण के दो भाई** – चित्रसेन और मित्रसेन
- बाण ने स्वयं हर्षचरितम् के प्रथम तीन उच्छ्वासों तथा कादम्बरी की प्रस्तावना के पद्यों में अपना परिचय दिया है।
- **वंश/गोत्र** – वात्स्यायन / वत्स वंश (ब्राह्मण)
- **उपासक** – शिव (शैव)
- **बाण की रीति** – पाञ्चाली
- बाल्यावस्था में ही बाण की माता का स्वर्गवास।
- 14 वर्ष की आयु में बाण के पिता का भी स्वर्गवास।
- राजा हर्ष ने इन्हें **''महानयं भुजङ्गः''** (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा।
- **हर्ष का राज्याभिषेक** अक्टूबर 606 ई. में हुआ, और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई।
- **ह्वेनसांग** ने 629 से 645 ई. तक भारत भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था।
- **बाण का समय** – सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध
- **बाणभट्ट का विवाह** महाकवि मयूर भट्ट (सूर्यशतकम्) की बहन से हुआ था।
- **बाण की रचनायें**– 1. कादम्बरी (कथा), 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका), 3. चण्डीशतकम् (मुक्तक), 4.मुकुटताडितक (नाटक), 5. पार्वतीपरिणय (नाटक)
- हर्षवर्धन के चचेरे भाई कृष्ण के निमन्त्रण पर बाणभट्ट हर्ष के राजदरबार में पहुँचे।
- **उपाधियाँ/कथन**

उपाधि/कथन		वक्ता
वश्यवाणी कविचक्रवर्ती	–	हर्षवर्धन
बाणस्तु पञ्चाननः	–	श्रीचन्द्रदेव
पञ्चबाणस्तु बाणः	–	जयदेव
कविताकामिनीकौतुक	–	जयदेव
गद्यसम्राट्	–	बलदेव उपाध्याय
वाणी बाणो बभूव	–	गोवर्धनाचार्य
कवितातरुगहनविहरणमयूरः	–	वामनभट्टबाण
कविताकाननकेसरी	–	चन्द्रदेव
तुरङ्गबाण	–	आलोचक
बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती	–	सोड्ढल
महानयं भुजङ्गः	–	हर्षवर्धन
गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति	–	आलोचक
बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्	–	समालोचक
भट्टबाणस्य भारतीम्	–	गङ्गादेवी
वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य	–	धर्मदास

- **हर्ष के दरबार में दो अन्य विद्वान्**– (i) मातङ्गदिवाकर, (ii) मयूरभट्ट

महाकवि बाणभट्ट विषयक प्रशस्तियाँ

1. युक्तं कादम्बरीं श्रुत्वा कवयो मौनमाश्रिताः।
बाणध्वनावनध्यायो भवतीति स्मृतिर्यतः।।
सोमेश्वर – कीर्तिकौमुदी

2. रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
सा किं तरुणी? **नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥**
– विदग्धमुखमण्डन - धर्मदास

3. जाता शिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं **वाणी बाणो बभूव** ह।।
– गोवर्धनाचार्य

4. श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषये केचिद्रसे चापरे-
ऽलंकारे कतिचित्सदर्थविषये चान्ये कथावर्णने।
आः सर्वत्र गभीरधीरकविताविन्ध्याटवी चातुरी-
सञ्चारी कविकुम्भिकुम्भभिदुरो **बाणस्तु पञ्चाननः॥**
– चन्द्रदेव

5. **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।** **– अज्ञात**

6. वागीश्वरं हन्त भजेऽभिनन्दमर्थेश्वरं वाक्पतिराजमीडे।
रसेश्वरं स्तौमि च कालिदासं **बाणं तु सर्वेश्वरमानतोऽस्मि॥**
– सोड्ढल (उदयसुन्दरी)

7. हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।
भवेत्कविकुरङ्गाणां चापलं तत्र कारणम्।। **– त्रिलोचन**

8. शश्वद्बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। **– त्रिविक्रमभट्ट।**

9. यस्याश्चौरः चिकुरनिकुरः कर्णपूरो मयूरः।
भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।।
हर्षो हर्षः हृदयवसतिः **पञ्चबाणस्तु बाणः।**
केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय।।
– जयदेव - प्रसन्नराघव

10. केवलोऽपि स्फुरन् बाणः करोति विमदान् कवीन्।
किं पुनः क्लृप्तसन्धानः पुलिन्ध्रकृतसन्निधिः।।
– धनपाल - तिलकमञ्जरी

11. वाणीपाणिपरामृष्टवीणानिक्वाणहारिणीम्।
भावयन्ति कथं वान्ये भट्टबाणस्य भारतीम्।। **– गङ्गादेवी**

12. सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः।
वक्रोक्तिमार्गनिपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा।।
– कविराज - राघवपाण्डवीय

13. दण्डिन्युपस्थिते सद्यः कवीनां कम्पितं मनः।
प्रविष्टे त्वन्तरे बाणे कण्ठे वागेव रुध्यते।। **– हरिहर**

14. कादम्बरीसहोदर्या सुधया वै बुधे हृदि।
हर्षाख्यायिकया ख्यातिं बाणोऽब्धिरिव लब्धवान्।।
– धनपाल (तिलकमञ्जरी)

15. शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते।
शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।
– भोज - सरस्वतीकण्ठाभरण

16. प्रतिकविभेदनबाणः **कवितातरुगहनविहरणमयूरः।**
सहृदयलोकसुबन्धुर्जयति श्रीभट्टबाणकविराजः– **वामनभट्टबाण**

17. बाणस्य हर्षचरिते निशितामुदीक्ष्य।
शक्तिं न केऽत्र कवितास्त्रमदं त्यजन्ति।। **– सोड्ढल**

18. सहर्षचरितारब्धाददद्भुतकादम्बरी कथा।
बाणस्य गण्यनार्येव स्वच्छन्दा भ्रमति क्षितौ।। **– राजशेखर**

19. परिशीलितैव सरसं कविराजैर्बहुभिरत्र वाग्देवी।
बाणेन तु वैजात्यात्कथयति नामैव वाणीति।।
– विश्वेश्वर पाण्डेय

20. कादम्बरीरसभरेण समस्त एव।
मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।। **– भूषणभट्ट**

21. कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते। **– अज्ञात**

22. नृत्यति यद्रसनायां वेधोन्मुखलासिका वाणी।
– पार्वतीपरिणय

23. द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया महामनोमोहमलीमसान्धया।
अलब्धवैदग्ध्यविलासमुग्धया धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।।
– कादम्बरी कथामुख

24. ''यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः'' **– भोजराज**

कादम्बरी का सामान्य परिचय

➢ **लेखक**	–	बाणभट्ट
➢ **काव्यविधा**	–	कथा
➢ **दो खण्ड**	–	(i) पूर्वार्द्ध (ii) उत्तरार्द्ध
➢ **प्रधानरस**	–	शृङ्गाररस
➢ **उपजीव्य**	–	गुणाढ्य की 'बृहत्कथा'
➢ **नायक**	–	चन्द्रापीड (शूद्रक)
➢ **नायिका**	–	कादम्बरी
➢ **सहनायक**	–	वैशम्पायन (पुण्डरीक)
➢ **सहनायिका**	–	महाश्वेता
➢ **वैशिष्ट्य**	–	तीन जन्मों की कथा

➢ **प्रमुखपात्र** – चन्द्रापीड, कादम्बरी, पुण्डरीक, महाश्वेता, शूद्रक, तारापीड, विलासवती, शुकनास, मनोरमा, वैशम्पायन, इन्द्रायुध (घोड़ा), पत्रलेखा (दासी), जाबालि, हारीत, चाण्डालकन्या, शबर, कपिञ्जल, शुक, हंस, चित्ररथ।

➢ कादम्बरी उत्तरार्ध की रचना बाण के पुत्र **भूषणभट्ट** (भूषणबाण/पुलिन्द/पुलिनभट्ट/पुलिन्ध्र) ने की।

➢ **कादम्बरी की रीति** – पाञ्चाली

➢ **कादम्बरी में अलङ्कार** – विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा।

➢ **कादम्बरी के प्रमुखवर्णन–**
शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन, जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोदसरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि।

कादम्बरी का मङ्गलाचरण

रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये
स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।
अजाय सर्गस्थितनाशहेतवे
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥ 1 ॥

भावार्थ- प्रजाओं की सृष्टि करने में रजोगुण का सेवन करने वाले, पालन करने में सत्त्वगुण का धारण करने वाले, नाश करने में तमोगुण का स्पर्श करने वाले, सृष्टि, स्थित तथा प्रलय के कारणभूत वेदों के स्वरूप तथा तीनों गुणों (सत्त्व, रज और तम) से युक्त ब्रह्म को नमस्कार है।

☆ 'कादम्बरी' में नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
☆ प्रस्तुत पद्य में निराकार ब्रह्म की स्तुति की गयी है।
☆ अनुप्रास एवं यथासंख्य अलङ्कार का प्रयोग है।
☆ बाणभट्ट ने कादम्बरी के मङ्गलाचरण के रूप में 20 पद्यों में कविवंश-वर्णन, सज्जन-प्रशंसा, दुर्जन-निन्दा आदि का वर्णन किया है।
☆ मङ्गलाचरण रूपी बीसों पद्यों में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है।
☆ मङ्गलाचरण के द्वितीय पद्य में भगवान् शङ्कर के चरणधूलियों की वन्दना की गयी है।
☆ पाँचवे श्लोक में दुर्जनों की निन्दा है।
☆ छठे और सातवें पद्य में दुर्जन और सज्जन में अन्तर स्पष्ट किया है।
☆ आठवें तथा नौवें श्लोक में कथा-प्रशंसा है।
☆ दसवें से उन्नीसवें श्लोक तक कविवंश-वर्णन है।
☆ बीसवें श्लोक में कादम्बरी कथा की प्रशंसा है।

➢ **कादम्बरी में तीन जन्मों का नाम**

चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	चाण्डालकन्या
1.चन्द्रमा	पुण्डरीक	रोहिणी	कपिञ्जल	लक्ष्मी
2.चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	-
3.शूद्रक	शुक	-	कपिञ्जल	चाण्डालकन्या

➢ कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड और पुण्डरीक के तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है।
➢ कादम्बरी के दो भाग हैं– पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध।
➢ 'कादम्बरी' का नायक चन्द्रापीड धीरोदात्त नायक है।
➢ 'कादम्बरी' की नायिका कादम्बरी विवाह से पूर्व **'परकीया मुग्धा नायिका'** है, किन्तु विवाह के बाद **'स्वकीया मध्या नायिका'** है।
➢ कादम्बरी का प्रमुख रस **'शृङ्गार'** तथा गुण **'माधुर्य'** है।
➢ कादम्बरी में **पाञ्चाली रीति** की बहुलता है। **'शब्दार्थयोः समोगुम्फः पाञ्चाली रीतिरुच्यते॥'**
➢ 'बृहत्कथासरित्सागर' के 'उनसठवें तरङ्ग' मकरन्दिका-वृत्तान्त का अवलम्बन लेकर बाण ने कादम्बरी-कथा की रचना की।
➢ कादम्बरी का शाब्दिक अर्थ **'मदिरा'** है।
➢ कादम्बरी के उत्तरार्द्ध में भूषणभट्ट ने कहा – **कादम्बरी रसभरेण समस्त एव, मत्तो न किञ्चिदपि चेतयतो जनोऽयम्॥**
➢ कादम्बरी के मङ्गलाचरण में त्रिगुण-स्वरूप अजन्मा परमब्रह्म को नमस्कार किया गया है।
➢ यह ब्रह्म प्राणियों के प्रादुर्भाव में रजोगुण युक्त, स्थितिकाल में सात्विक गुणवाला तथा प्रलयकाल में तमोगुण वाला होता है।
➢ कादम्बरी का मङ्गलाचरण **नमस्कारात्मक** है।
➢ कादम्बरी के मङ्गलाचरण में **वंशस्थ छन्द** है।
➢ कादम्बरी के द्वितीय श्लोक में भगवान् **शिव** की चरण धूलियों की स्तुति की गयी है।
➢ तृतीय श्लोक में **विष्णु** की स्तुति की गई है।
➢ चतुर्थ श्लोक में बाण ने अपने गुरु **भर्वु (भर्त्सु)** के चरणों की वन्दना की।
➢ बाण ने दो श्लोकों (8, 9) में कादम्बरी कथा की प्रशंसा की है।
➢ कादम्बरी की रचना में बाण को गुणाढ्य की **बृहत्कथा** तथा सुबन्धु की **वासवदत्ता** से प्रेरणा मिली है, और इन्हें पीछे छोड़ना बाण का लक्ष्य रहा है। इसीलिए बाणभट्ट ने कादम्बरी **को अतिद्वयी** (अर्थात् वासवदत्ता और बृहत्कथा का अतिक्रमण करने वाली) कथा कहा है।
➢ कादम्बरी कथा का आरम्भ राजा शूद्रक के प्रभाव और उनकी **राजधानी 'विदिशा'** के वैभव वर्णन से होता है।
➢ शूद्रक के दरबार में एक 'चाण्डालकन्या' 'वैशम्पायन' नामक शुक को लेकर आती है।
➢ यह तोता मनुष्य की बोली बोलता है और राजा की प्रशंसा में एक आर्या छन्द (दाहिना पैर उठाकर) पढ़ता है –
स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥
➢ यही शुक राजा शूद्रक के सामने अपने जन्म, 'हारीत' के द्वारा महर्षि जाबालि के आश्रम में पहुँचने का वृत्तान्त बताता है।
➢ मुनि जाबालि उज्जयिनी नरेश तारापीड के पुत्र चन्द्रापीड तथा उसके मित्र मन्त्री शुकनास के पुत्र वैशम्पायन की कथा का वर्णन करते हैं।
➢ शुक का जन्म 'विन्ध्याटवी' में एक विशाल शाल्मली के वृक्ष पर हुआ था।
➢ उज्जयिनी मालवा की राजधानी है।
➢ तारापीड की पत्नी **'विलासवती'** और शुकनास की पत्नी का नाम **'मनोरमा'** है।
➢ चन्द्रापीड के तीन जन्म क्रमशः **चन्द्रमा, चन्द्रापीड और शूद्रक** हैं।
➢ पुण्डरीक के तीन जन्म क्रमशः **पुण्डरीक, वैशम्पायन और शुक हैं।**
➢ चन्द्रापीड की सेविका (ताम्बूलवाहिनी) पत्रलेखा पूर्व जन्म में रोहिणी रहती है।
➢ चन्द्रापीड का घोड़ा इन्द्रायुध पूर्व जन्म में पुण्डरीक का मित्र 'कपिञ्जल' रहता है।

- चाण्डालकन्या पूर्व जन्म में पुण्डरीक की माता लक्ष्मी रहती है।
- दिग्विजय के लिए निकले चन्द्रापीड किन्नर मिथुन का पीछा करते **'अच्छोद सरोवर'** पहुँच जाता है।
- अच्छोद सरोवर पर तप करती हुई **'महाश्वेता' गन्धर्वराज हंस और गौरी की पुत्री** है।
- पुण्डरीक के कान पर लगी पारिजात की कुसुम-मञ्जरी से महाश्वेता आकर्षित होती है।
- तरलिका महाश्वेता की सहचरी है।
- गन्धर्वराज **चित्ररथ और मदिरा की पुत्री कादम्बरी** है।
- केयूरक कादम्बरी का अनुचर (वीणावाहक) है।
- **पुण्डरीक महर्षि श्वेतकेतु और लक्ष्मी का पुत्र** है।
- पुण्डरीक ने चन्द्रमा को वियोगाग्नि में तड़पने और चन्द्रमा पुण्डरीक को साथ-साथ दुःख भोगने का शाप दिया था।
- पत्रलेखा **कुलूताधिपति** की पुत्री है।
- कादम्बरी की सहचरी मदलेखा है।
- इन्द्रायुध अश्व का सजीव वर्णन करने के कारण बाण को **'तुरङ्गबाण'** कहा जाता है।

कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

- चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के अवसर पर तारापीड का मन्त्री 'शुकनास' चन्द्रापीड को उपदेश देता है।
- शुकनास चन्द्रापीड के लिए 'तात' सम्बोधन प्रयुक्त करते हैं।
- शुकनास के अनुसार युवावस्था के प्रभाव से उत्पन्न अन्धकार सूर्य से भेदा नहीं जा सकता तथा मणियों एवं दीपक के प्रकाश से दूर नहीं किया जा सकता।
- लक्ष्मी से उत्पन्न मद दारुण होता है तथा वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होता।
- ऐश्वर्य रूपी 'तिमिर' रोग अञ्जन की शलाका से भी ठीक नहीं होता।
- दर्प (अभिमान) की दाहज्वर शीतल उपचारों से ठीक नहीं किया जा सकता।
- राग (अनुराग) का मल स्नान एवं शौच आदि कार्यों से भी दूर नहीं होता।
- राज्य-सुख की निद्रा रात बीत जाने पर भी नहीं टूटती।
- (i) जन्म से प्राप्त ऐश्वर्य, (ii) नयी युवावस्था (iii) अनुपम सौन्दर्य तथा (iv) अलौकिक शक्ति 'चारों' अनर्थ की परम्पराएं हैं।
- 'युवावस्था' के आरम्भ में शास्त्रजल के प्रक्षालन के पश्चात् भी 'बुद्धि' कलुषता को प्राप्त करती है।
- श्वेतता (स्वच्छता) को त्यागे बिना भी युवकों की दृष्टि लालिमा (राग) से युक्त रहती है।
- जिस प्रकार वात्या (बवंडर) सूखे पत्ते को उसी प्रकार रजोगुण से उत्पन्न भ्रान्ति पुरुष को अपनी इच्छा से घुमाती है।
- उपभोगमृगतृष्णा इन्द्रिय-हरिणों को नष्ट कर देती है।
- जिस प्रकार जल के कारण कसैले पदार्थ मीठा स्वाद देते हैं उसी प्रकार युवावस्था के कारण विषय में अनुरक्ति मधुर प्रतीत होती है।
- विषयों में आसक्ति दिग्भ्रमित व्यक्ति की तरह पुरुष को नष्ट करती है।
- चन्द्रापीड जैसे व्यक्ति ही उपदेश के योग्य होते हैं।
- जिस प्रकार स्फटिक मणि में चन्द्रमा की किरणें उसी प्रकार निर्मल हृदय में उपदेश सरलता से प्रविष्ट होता है।
- जिस प्रकार थोड़ा सा पवित्र जल भी कान में पड़ने पर पीड़ा पहुँचाता है उसी प्रकार गुरु का पवित्र उपदेश भी अशिष्ट को कष्ट पहुँचाते हैं।
- शिष्ट व्यक्ति की शोभा को गुरूपदेश हाथी के शंखाभूषण की तरह बढ़ा देते हैं।
- प्रदोष के चन्द्रमा की तरह गुरु-वचन दोषरूपी अन्धकार को दूर करता है।
- काम के बाणों से जर्जर हृदय में उपदेश जल की तरह चू जाता है।
- गुरु का उपदेश 'जलविहीन' स्नान है।
- भय से लोग प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।
- अभिमानरूपी सूजन से बन्द कान में गुरूपदेश नहीं सुनाई पड़ता।
- शुकनास सर्वप्रथम लक्ष्मी के विषय में चन्द्रापीड को उपदिष्ट करता है।

शुकनासोपदेश में 'लक्ष्मी' हेतु प्रयुक्त प्रमुख विशेषण और संज्ञापद

1. इन्द्रियहरिणहारिणी	2. खड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी
3. अपरिचिता	4. अनार्या
5. अप्रत्ययबहुला	6. वसुजननी
7. तरङ्गबुदबुद्चञ्चला	8. तमोबहुला
9. भीमसाहसैकहार्यहृदया	10. अचिरद्युतिकारिणी
11. तोयराशिसम्भवा	12. ईश्वरतामादधाना
13. अमृतसहोदरा, कटुविपाका	14. विग्रहवती, अप्रत्यक्षदर्शना
15. पुरुषोत्तमरता	16. खलजनप्रिया
17. चपला	18. व्याधगीतिः
19. परामर्शधूमलेखा	20. निवासजीर्णवलभी
21. तिमिरोद्गतिः, पुरःपताका	22. उत्पत्तिनिम्नगा, आपानभूमिः
23. सङ्गीतशाला, आवासदरी	24. उत्सारणवेत्रलता, अकालप्रावृड्
25. कपटनाटकस्य प्रस्तावना	26. राहुजिह्वा
27. आलेख्यगता, पुस्तमयी	28. उत्कीर्णा, श्रुता
29. दुराचारा	

शुकनासोपदेश में वर्णित लक्ष्मी के गुण/अवगुण

1. रागम् (पारिजातपल्लवेभ्यः)	2. एकान्तवक्रताम् (इन्दुशकलात्)
3. चञ्चलताम् (उच्चैःश्रवसः)	4. मोहनशक्तिम् (कालकूटात्)
5. मदम् (वारुणीमदिरायाः)	6. नैष्ठुर्यम् (कौस्तुभमणेः)
7. न परिचयं रक्षति।	8. नाभिजनमीक्षते।
9. न रूपमालोकयते।	10. न कुलक्रममनुवर्तते।
11. न शीलं पश्यति।	12. न वैदग्ध्यं गणयति।

13. न श्रुतम् आकर्णयति। 14. न धर्ममनुरुध्यते।
15. न त्यागमाद्रियते। 16. न विशेषज्ञतां विचारयति।
17. नाचारं पालयति। 18. न सत्यमनुबुध्यते।
19. न लक्षणं प्रमाणीकरोति। 20. तृष्णां संवर्धयति।
21. अशिवप्रकृतित्वमातनोति। 22. बलोपचयमाहरन्ती।

लक्ष्मी के लिए प्रयुक्त उपमाएँ

1. गन्धर्वनगरलेखेव
2. आरूढमन्दरपरिवर्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारेव।
3. कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरलग्ननलिननालकण्टकेव।
4. विविधगन्धगजगण्डमधुपानमत्तेव।
5. लतेव, गङ्गेव। 6. पातालगुहेव।
7. हिडिम्बेव। 8. प्रावृडिव।
9. दुष्टपिशाचीव। 10. अनिमित्तमिव।
11. रेणुमयीव। 12. दीपशिखेव।
13. वात्येव।

शुकनासोपदेश की प्रमुख सूक्तियाँ

1. **अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्।**
   भावार्थ – युवावस्था में उत्पन्न होने वाला (अज्ञानरूप) अन्धकार अत्यन्त दुर्दमनीय होता है।
- पूरे शुकनासोपदेश का वक्ता शुकनास हैं और श्रोता चन्द्रापीड हैं।
2. **अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।**
   धन-मद अन्तिम अवस्था में भी शान्त नहीं होता।
3. **चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः?**
   क्या चन्दन से उत्पन्न अग्नि जलाती नहीं?
4. **तरलहृदयमप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि।**
   चञ्चल मन वाले तथा अजागरूक बुद्धि वाले व्यक्ति को धन मतवाला बना देता है।
5. **दुरन्तेयमुपभोगतृष्णिका।**
   उपभोगरूपी मृगतृष्णिका अत्यधिक दुःखदायी अन्तवाली है।
6. **प्रतिशब्द इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्।**
   भय से मनुष्य प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।
7. **इयमनार्या (लक्ष्मीः) लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते।**
   नीच स्वभाव वाली (लक्ष्मी) इसको पा लेने पर भी कष्ट से पालन होता है।
8. **विह्वला हि राजप्रकृतिः।**
   राज-स्वभाव निश्चय ही व्याकुल करने वाला है।
9. **राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः।**
   राजलक्ष्मी राज्यरूपी विष से उत्पन्न आलस्य (तन्द्रा) को देने वाली है।
10. **सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति लक्ष्मीः।**
    सरस्वती द्वारा स्वीकृत व्यक्ति को लक्ष्मी ईर्ष्या के कारण आलिङ्गन नहीं करती।

कादम्बरी बिन्दुवार अध्ययन

- 'कादम्बरी' के लेखक कौन हैं? - **बाणभट्ट**
- कादम्बरी साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है? - **कथा**
- शुकनास ने किसे उपदेश दिया - **चन्द्रापीड को**
- कादम्बरी की कथा है - **कल्पनाप्रसूत**
- कादम्बरी में कितने जन्मों की कथा है? - **तीन**
- 'चन्द्रापीड' किस ग्रन्थ का नायक है? - **कादम्बरी**
- 'कादम्बरी' में किसके तीन जन्मों का वर्णन है?- **चन्द्रापीड**
- मुख्यतः कादम्बरी की शैली है - **पाञ्चाली**
- शुकनासोपदेश किस ग्रन्थ का अंश है? - **कादम्बरी**
- कादम्बरी में पार्श्व नायिका कौन है? - **महाश्वेता**
- कादम्बरी का प्रमुख नायक है - **चन्द्रापीड**
- कादम्बरी एक सुन्दर उदाहरण है? - **गद्यकाव्य का**
- तारापीडस्य मन्त्री कः? - **शुकनासः**
- चन्द्रापीडः ..... अवतारः। - **चन्द्रमसः**
- कादम्बर्यां शुकनासस्य पुत्रः कः - **वैशम्पायनः**
- कादम्बरी में नायिका कौन हैं? - **कादम्बरी**
- कादम्बरी के कथानक का मूलस्रोत है - **गुणाढ्य की बृहत्कथा**
- कादम्बर्याः उत्तरार्धं कः विरचितवान्? - **भूषणभट्टः**
- कादम्बरी के प्रारम्भ में बाणभट्ट ने कितने श्लोकों की रचना की है?- **20**
- कादम्बरी के प्रथम मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गई है? - **त्रिगुणमयपरब्रह्म**
- कादम्बरी का प्रधानरस है - **शृङ्गार**
- 'खल्वनर्थपरम्परा' में 'खलु' शब्द से क्या आशय है? - **निश्चित ही**
- वैशम्पायन की प्रेमिका थी - **महाश्वेता**
- चन्द्रापीड की प्रेमिका थी - **कादम्बरी**
- शुकनास किस राजा का प्रधान अमात्य था? - **तारापीड का**
- शुकनासोपदेश में शुकनास, कादम्बरी कथा में कौन है? - **मन्त्री**
- चन्द्रापीड के पिता का नाम था - **तारापीड**
- विलासवती किसकी पत्नी थी? - **तारापीड की**
- चन्द्रापीड का विवाह किससे होता है? - **कादम्बरी से**
- पत्रलेखा किसकी पुत्री थी? - **कुलूतेश्वर की**
- शूद्रक अवतार था - **चन्द्रापीड का**
- हारीत पुत्र था - **महर्षि जाबालि का**
- शुकनासोपदेश में शुकनास के अतिरिक्त दूसरा पात्र है - **चन्द्रापीड**
- किसके गुण दोषों का वर्णन शुकनास ने किया है? - **लक्ष्मी के**
- राजतन्त्र शासन परम्परा में उपदेश दिये जाते हैं - **राज्याभिषेक के अवसर पर**

- लक्ष्मी ने निष्ठुरता का गुण किससे प्राप्त किया? - **कौस्तुभमणि से**
- लक्ष्मी 'पातालगुहेव.....' है - **तमोबहुला**
- लक्ष्मी से कुप्रभावित राजा 'दर्शनप्रदानमपि..... गणयन्ति - **अनुग्रहं**
- 'निर्मलापि कालुष्यमुपयाति' में किसकी ओर संकेत है? - **बुद्धि**
- कौन-सा राजा सिद्धादेश होता है? - **आरूढप्रतापः**
- 'लक्ष्मी 'साधुभाव' की क्या है? - **वध्यशाला**
- 'राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा' है - **राजलक्ष्मी**
- ''उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते'' ऐसा आचरण करते हैं - **लक्ष्मी से प्रभावित राजा**
- चन्द्रापीड को राज्याभिषेक पर उपदेश देता है - **शुकनास**
- 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है - **सुरा**
- 'कादम्बरी' में चन्द्रापीड किस राज्य का युवराज है? - **उज्जयिनी**
- कादम्बरी का शुक पक्षी पूर्व जन्म में कौन था? -**वैशम्पायन**
- शूद्रक की राजसभा में शुकपक्षी को कौन लाया था? - **मातङ्गिनी (चाण्डालकन्या)**
- 'शुकनासोपदेश' में किसे अविनयों (दुराचारों) का घर नहीं कहा गया है? - **ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्**
- शुकनासोपदेशानुसारेण अहङ्कारस्य एकं प्रबलं कारणं वर्तते - **गर्भेश्वरत्वम्**
- लक्ष्मीमद कैसा होता है - **अन्तिम अवस्था में भी नष्ट न होने वाला**
- किस प्रकार के राजा का आदेश सिद्ध योगी के समान सफल होता है? - **आरूढ प्रताप वाले का**
- बिना जल वाला स्नान कौन-सा है?- **गुरूपदेशरूपीस्नान**
- गुरूपदेशस्य महत्त्वमस्मिन्नुपवर्णितं विस्तरेण - **कादम्बर्याम्**
- राजप्रकृति कैसी होती है? - **विह्वला**
- 'चिकीर्षुः' किस धातु से बना है? - **कृ**
- राजा शूद्रक की राजधानी - **विदिशा**
- निम्नलिखित अवतरण में किसके विशेषण हैं? 'अतिशुद्ध-स्वभावमपि कृष्णचरितम् अकरमपि हस्तस्थित-सकल-भुवनतलं राजानम् अद्राक्षीत्।- **शूद्रक के**
- शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है? - **कादम्बरी**
- 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है? - **विदिशा**
- 'विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्रलतावती' किसका विशेषण है? - **प्रतीहारी**
- कादम्बरी में वर्णित इन्द्रायुध था? - **घोड़ा**
- इन्द्रायुध किसका अवतार था? - **कपिञ्जल का**
- लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई है - **जलधि (समुद्र) से**
- पुण्डरीकः कस्मात् कारणात् मृतः - **विरहकारणात्**
- पत्रलेखा इसकी पात्र है - **कादम्बरी की**
- अधूरी कादम्बरी का पूरण इनसे हुआ - **पुलिन्दभट्ट**
- कादम्बरीकथायां पुण्डरीकस्य सखा कः? - **कपिञ्जलः**
- इस कथा का आधार पुनर्जन्म सिद्धान्त पर विश्वास है - **कादम्बरी**
- शूद्रक का वर्णन है - **कादम्बरी**
- लक्ष्मी चाञ्चल्यमस्मिन्नुपवर्णितमस्ति - **कादम्बर्याम्**
- वैशम्पायनवृत्तान्तः कुत्रोपवर्णितः - **कादम्बर्याम्**
- ''न वैदग्ध्यं गणयति'' इत्यस्मिन् वाक्ये वैदग्ध्यशब्दस्य कोऽर्थः - **पाण्डित्य**
- चन्द्रापीडस्य सेविका अस्ति - **पत्रलेखा**
- 'चन्द्रापीड' पात्र कहाँ वर्णित है? - **कादम्बरी में**
- 'कादम्बरी' शब्द प्रसिद्ध है - **मदिरा**
- वेत्रवती नदी किस नगरी में स्थित है? - **विदिशा में**
- 'अच्छोदसरोवर' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है?- **कादम्बरी में**
- राजा शूद्रक की तुलना किससे नहीं की गई है?- **वरुण से**
- 'मन्मथः' पद का अर्थ है - **कामदेव**
- अप्रतिहतशक्ति से युक्त है - **गुह (कार्तिकेय)**
- 'गुह इवाप्रतिहतशक्तिः'- यहाँ 'गुह' का अभिप्राय है - **कार्तिकेय**
- राजहंस को किसने विमान बनाया? - **कमलयोनि (ब्रह्मा) ने**
- किसने राजा की ओर मुख करके आर्या छन्द को पढ़ा? - **विहङ्गराज ने**
- कौन उस आर्या छन्द को सुनकर आश्चर्यचकित हो गया? - **राजा**
- समस्त मन्त्रिमण्डल में प्रधानमन्त्री है - **कुमारपालित**
- किसके वर्णों के उच्चारण में स्पष्टता थी? - **शुक के**
- चन्द्रापीड का राज्याभिषेक करने की इच्छा किसे हुई? - **तारापीड को**
- ''आसीदशेषनरपति शिरः''–यह कथन किसके लिए कहा गया है? - **शूद्रक के लिए**
- कादम्बरी कथा के अनुसार विदिशा जिस राजा की राजधानी थी, उसका नाम है - **शूद्रक**
- 'त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' इस वाक्य में परमात्मा की कितनी अवस्थाओं का वर्णन किया गया है? - **तीन**
- 'हर इव जितमन्मथः' अंश के आधार पर जितेन्द्रिय राजा शूद्रक है - **शिव के समान**
- कादम्बरी में वर्णित विदिशा नगरी किस नदी के किनारे स्थित है? - **वेत्रवती**

- कादम्बर्याः तिर्यक्पात्रं वैशम्पायनः कस्मिन्नाश्रमे लब्धवानाश्रयम्? - **जाबाल्याश्रमे**
- कादम्बर्याः 'शूद्रक' ऐतिहासिकः पात्रमस्ति न वा? निश्चीयताम् - **कल्पितः**
- कादम्बर्याः वास्तविकी कथा केनोक्ताऽऽसीत्?- **जाबालिना**
- कादम्बर्यां महाश्वेता कं देवमुपवीणयति स्म? - **शिवम्**
- चाण्डालकन्या प्रथमे जन्मनि का आसीत्? - **लक्ष्मी**
- चाण्डालकन्ययाऽऽनीतः शुकः क आसीत्? - **पुण्डरीकः**
- महाश्वेतावृत्तान्ते किं नाम सरो वर्णितम्? - **अच्छोदसरः**
- कादम्बरीकथायां पुण्डरीकस्यानुरागः कं प्रति आसीत्? - **महाश्वेताम्**
- 'महाश्वेता' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है? - **कादम्बरी में**
- शुकनास के उपदेश के पश्चात् प्रसन्न हृदय वाला राजा कहाँ गया? - **अपने भवन में**
- 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' के अन्तर्गत 'अतिद्वयी' कथा से दो किन कथाओं का उल्लेख है? - **बृहत्कथा तथा वासवदत्ता**
- 'विन्ध्याटवी वर्णन' किस ग्रन्थ का अंश है? - **कादम्बरीकथामुखम् का**
- कौस्तुभमणि को कौन धारण करता है? - **विष्णु**
- महाश्वेता किसका पर्यायवाची है? - **सरस्वती**
- ''स्तनयुगमश्रुस्नातम्'' ..... इत्यादि कादम्बरीकथा-मुखश्लोकस्य वक्ताऽस्ति- **वैशम्पायनशुकः**
- 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' इत्यत्र 'कादम्बरी' पदे कोऽलङ्कारः? - **श्लेषः**
- कादम्बर्यां विन्ध्याटवीवर्णने अचेतनपदार्थानां चेतनदेवताभिः उपमाकरणस्य मूले चमत्कारोऽस्ति? - **श्लेषस्य**
- ''अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः''–यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्ध रखती है? - **कादम्बरी शुकनासोपदेश**
- ''अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'' सूक्ति किस ग्रन्थ की है? - **कादम्बरी (शुकनासोपदेश)**
- ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' इदं वाक्यमस्ति - **कादम्बर्याम्**
- ''सुभाषितं हारि विशत्यधो-गलान्न दुर्जनस्यारिपोरिवामृतम्'' इति केन कविनोक्तम्? - **बाणमहाकविना**
- ''रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये'' श्लोक जिसमें उपलब्ध है, वह ग्रन्थ है - **कादम्बरी**
- ''अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते''-श्लोकांश के रचयिता हैं? - **बाणभट्टः**
- 'स्फुरत्कलालापविलासकोमला'–यह वाक्यांश किसके वैशिष्ट्य को प्रकट करता है - **कथाकाव्य के**
- 'सर्वथा निष्फला प्रज्ञा' इति वाक्यं ..... विद्यते - **कादम्बर्याम्**
- 'कालो हि गुणाश्च दुर्निवारतामारोपयन्ति मदनस्य सर्वदा'- वाक्यमेतद् ..... वदति? - **महाश्वेता**
- महाश्वेतायाः प्रेम्णि कः स्वप्राणान् त्यक्तवान्? - **पुण्डरीकः**
- 'अंशुमयीमिव तनुच्छायानुलिप्तभूतलाम्।' - इयं पंक्तिः कां वर्णयति - **महाश्वेताम्**
- महाश्वेतायाः प्रियकरः कः - **पुण्डरीकः**
- ''असज्जनात् कस्य भयं न जायते'' यह वचन किस ग्रन्थ का है - **कादम्बरी**
- 'अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहराकृतयोऽपि लोकविनाश हेतवः, श्मशानाग्नय इवातिरौद्रभूतयः, तैमिरिका इवादूरदर्शिनः, उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः, श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति।' प्रस्तुत गद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **कादम्बरी (शुकनासोपदेश)**
- 'ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्' यह कथन किस ग्रन्थ का है? - **शुकनासोपदेश का**
- ''पुरुषोत्तमरताऽपि खलजनप्रिया'' यह उक्ति किसके लिए है? - **लक्ष्मी के लिए**
- ''रुचिरस्वरवर्णप्रदा रसभाववती जगन्मनो हरति'' किस कवि की रचना के लिए कहा गया है? - **बाणभट्ट**
- ''लब्धापि दुःखेन परिपाल्यते'' किसका कथन है? - **तारापीड का**
- ''मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव'' पंक्तियाँ किस ग्रन्थ से उद्धृत हैं? - **कादम्बरी**
- 'स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः। चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।।' इति श्लोकः निबद्धः वर्तते - **कादम्बर्याम्**
- ''सर्वथा न कञ्चन स्पृशन्ति शरीरधर्माणमुपतापाः'' कस्माद् ग्रन्थादेतत् वाक्यमुद्धृतम्? - **कादम्बरी**
- ''अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्य्यत भिक्षाभाजनम्'' कस्य सम्बन्धे उक्तिः? - **महाश्वेतायाः सम्बन्धे**
- ''किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्'' सूक्ति ग्रहण की गई है - **कादम्बरी से**
- 'नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्' सूक्ति किस ग्रन्थ की है? - **कादम्बरी**
- ''अन्तरिते च तस्मिन् शबरसेनापतौ ..... पिबन्निवास्माकमायूंषि।'' इत्यत्र रिक्तस्थानं पूरयत - **जीर्णशबरः**
- 'स्वस्यैवाविनयस्य फलमनेनानुभूयते' इतीदं कस्य वचनम्? - **जाबालिमुनेः**
- पुण्डरीकः महाश्वेतावियोगेन तप्तः शरीरं त्यक्त्वा अपरस्मिन् जन्मनि कः बभूव? - **वैशम्पायनः**
- शुकनासोपदेशानुसारेण लक्ष्मीः सरस्वतीपरिग्रहीतं जनं कस्मात् नालिङ्गति - **ईर्ष्याकारणात्**

अभ्यास प्रश्न (कादम्बरी-शुकनासोपदेश)

1. बाण की गद्यशैली है–
(A) गौड़ी (B) वैदर्भी
(C) लाटी (D) पाञ्चाली

2. बाणभट्ट के पिता का नाम है–
(A) कुबेर (B) चित्रभानु
(C) वत्स (D) अर्थपति

3. बाणभट्ट के पुत्र का नाम है–
(A) मुरारिभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) भूषणभट्ट (पुलिन्द) (D) नयनभट्ट

4. बाणभट्ट किस गोत्र में उत्पन्न हुए–
(A) वत्सगोत्र (B) भृगुगोत्र
(C) काश्यपगोत्र (D) गौतमगोत्र

5. बाणभट्ट का निवास स्थान है–
(A) उज्जयिनी (B) गया बिहार
(C) अचलपुर
(D) शोणनदी के तट पर प्रीतिकूट ग्राम

6. शुकनास के अनुसार शास्त्रजलप्रक्षालित बुद्धि भी कब कालुष्य को प्राप्त होती है–
(A) वृद्धावस्था में (B) यौवनारम्भ में
(C) बाल्यावस्था में (D) इनमें से कोई नहीं

7. तारापीड का पुत्र है–
(A) शुकनास (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) पुण्डरीक

8. वैशम्पायन किसका पुत्र है–
(A) तारापीड का (B) शुकनास का
(C) चन्द्रापीड का (D) पुण्डरीक का

9. तारापीड का मन्त्री है–
(A) शुकनास (B) इन्द्रायुध
(C) अर्थपति (D) चित्रभानु

10. चन्द्रापीड को किससे प्यार है–
(A) महाश्वेता से (B) चाण्डालकन्या से
(C) कादम्बरी से (D) पत्रलेखा से

11. चन्द्रापीड की माता है–
(A) रानी विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) महाश्वेता (D) मनोरमा

12. पुण्डरीक के पिता हैं–
(A) चित्रभानु (B) अर्थकेतु
(C) शुकनास (D) श्वेतकेतु

13. महाश्वेता का आश्रम कहाँ स्थित है–
(A) अच्छोदसरोवर में (B) हेमकूट में
(C) मानसरोवर में (D) पम्पासरोवर में

14. कादम्बरी किसकी पुत्री है–
(A) शूद्रक की (B) श्वेतकेतु की
(C) गन्धर्वराज चित्ररथ की (D) शुकनास की

15. कादम्बरी की माता का नाम है–
(A) विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) हंसपदिका (D) मदिरा

16. कादम्बरी कथा का उत्तरार्द्धभाग किसकी रचना है–
(A) बाणभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) पुलिन्दभट्ट या भूषणभट्ट (D) केयूरभट्ट

17. तारापीड की राजधानी है–
(A) उज्जयिनी (B) विदिशा (C) कश्मीर (D) मालवा

18. कादम्बरी कथा का मुख्य रस है–
(A) अद्भुतरस (B) वीररस
(C) करुणरस (D) शृङ्गाररस

19. कादम्बरी कथा का प्रधान नायक है–
(A) चन्द्रापीड (B) वैशम्पायन
(C) जाबालि (D) कपिञ्जल

20. बाणभट्टस्य मातुः नाम अस्ति–
(A) वसुमतीदेवी (B) राजदेवी
(C) महाश्वेता (D) महादेवी

21. शूद्रक पूर्वजन्म में क्या था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) कपिञ्जल

1. (D)	**2. (B)**	**3. (C)**	**4. (A)**	**5. (D)**	**6. (B)**	**7. (C)**	**8. (B)**	**9. (A)**	**10. (C)**	**11. (A)**	**12. (D)**
13. (A)	**14. (C)**	**15. (D)**	**16. (C)**	**17. (A)**	**18. (D)**	**19. (A)**	**20. (B)**	**21. (C)**			

22. बाणभट्ट की कादम्बरी क्या है–
(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) मुक्तक (D) महाकाव्य

23. कादम्बरी के कथामुख के प्रारम्भ में किस राजा का वर्णन है–
(A) तारापीड का (B) चन्द्रापीड का
(C) शूद्रक का (D) पुण्डरीक का

24. युवा चन्द्रापीड को सारगर्भित उपदेश किसने दिया–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) शूद्रक (D) शुकनास

25. ''न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते।'' ये पंक्तियाँ कादम्बरी में किस प्रसङ्ग में आयी हैं–
(A) कादम्बरी सौन्दर्यवर्णन (B) चाण्डालकन्या वर्णन
(C) लक्ष्मी की निन्दा (D) महाश्वेता गुणवर्णन

26. यह सारा काव्यजगत् किस कवि का उच्छिष्ट माना जाता है–
(A) बाणभट्ट का (B) कालिदास का
(C) श्रीहर्ष का (D) दण्डी का

27. ''भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्'' यहाँ 'भवादृशा' पद से किसका संकेत है–
(A) शूद्रक का (B) चन्द्रापीड का
(C) तारापीड का (D) बाणभट्ट का

28. 'करिणः' पद का अर्थ है–
(A) गजाः (B) अश्वाः
(C) किरणम् (D) हस्ताः

29. पुरुषों के लिए समग्र मलों को धोने में समर्थ बिना जल का स्नान है–
(A) सरस्वती कृपा (B) गुरु का उपदेश
(C) बल-पौरुष (D) देव-दर्शन

30. 'रजनिकरगभस्तयः' में 'गभस्तयः पद का अर्थ है–
(A) गर्भिणी (B) किरणें
(C) अन्धकार (D) प्रकाश

31. हारीत पुत्र था–
(A) महर्षि अगस्त्य का (B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का (D) महर्षि विश्वामित्र का

32. शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश में
(B) कादम्बरी कथामुख में
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त में
(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध में

33. ''अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'' एषा सूक्तिः कुतः उद्धृता अस्ति–
(A) कादम्बरी–कथामुखात्
(B) कादम्बरी-शुकनासोपदेशात्
(C) कादम्बरी-उत्तरार्द्धभागात्
(D) कादम्बर्यां नास्ति

34. चन्द्रापीड के चरित्र की विशेषता नहीं है–
(A) सहृदयप्रेमी (B) विवेकी युवक
(C) अस्पष्टवक्ता (D) पराक्रमी राजपुत्र

35. ''वाणी बाणो बभूव'' इति कथनं कस्य अस्ति–
(A) गोवर्द्धनाचार्यस्य (B) जयदेवस्य
(C) राजशेखरस्य (D) श्रीचन्द्रदेवस्य

36. ''बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती'' यह किसका कथन है–
(A) सोड्ढल का (B) त्रिलोचन का
(C) धर्मदास का (D) मङ्खक का

37. ''बाणस्तु पञ्चाननः'' यह किसका कथन है–
(A) मंखक का (B) श्रीचन्द्रदेव का
(C) गोवर्द्धन का (D) राजशेखर का

38. ''अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः'' यह सूक्ति कहाँ से उद्धृत है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश से(B) कादम्बरी कथामुख से
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त से(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध भाग से

39. ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' यह कथन किसके लिए कहा गया है–
(A) सरस्वती के लिए (B) लक्ष्मी के लिए
(C) दुष्टों के लिए (D) राजधानी के लिए

40. 'दुष्टा, पिशाची, अनार्या, दुराचारिणी' आदि पदों का प्रयोग बाण ने किसके लिए किया है–
(A) दुष्टमहिलाओं के लिए (B) चाण्डालकन्या के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए (D) रानी विलासवती के लिए

22. (A) 23. (C) 24. (D) 25. (C) 26. (A) 27. (B) 28. (A) 29. (B) 30. (B) 31. (B) 32. (B) 33. (B) 34. (C) 35. (A) 36. (A) 37. (B) 38. (A) 39. (B) 40. (C)

41. ''यथा यथा चेयं चपला दीप्यते'' यहाँ 'चपला' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) भगवती सरस्वती का (B) लक्ष्मी का
(C) अनार्या स्त्रियों का (D) विलासवती का

42. ''कुमार! तथा प्रयतेथाः यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) चन्द्रापीड ने शुकनास से(B) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(C) तारापीड ने शुकनास से(D) शुकनास ने तारापीड से

43. बड़े-बूढ़ों के उपदेश को बकवास समझकर उसकी उपेक्षा कर देते हैं–
(A) दुष्ट राजागण (B) सेवकगण
(C) सैनिकगण (D) चन्द्रापीड

44. ''न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन् न मानयन्ति मान्यान्, न अभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून्'' इन पंक्तियों में किसका वर्णन है–
(A) राजाओं का (B) सेवकों का
(C) विद्वानों का (D) देवताओं का

45. 'इषवः' पद का अर्थ है–
(A) शर (B) बाण
(C) तीर (D) उपर्युक्त सभी

46. 'कुलीराः इव तिर्य्यक् परिभ्रमन्ति' यहाँ 'कुलीर' पद का अर्थ है–
(A) कुम्हार (B) कद्दू
(C) केकड़ा (D) सर्प

47. 'खद्योत' पद का अर्थ है–
(A) आकाश (B) खरगोश
(C) प्राणी (D) जुगनू

48. ''कदलिका कामकरिणः'' यहाँ 'कदलिका' पद का अर्थ है–
(A) एक पुष्प विशेष (B) सरस्वती
(C) केले का बगीचा (D) लक्ष्मी

49. ''राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य'' यहाँ 'राहुजिह्वा' पद प्रयुक्त है–
(A) राहुग्रस्त जीभ के लिए(B) राहुग्रह के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए (D) राजाओं के जिह्वा के लिए

50. 'आशीविषाः' पद का अर्थ है–
(A) आशीर्वाद (B) सर्प (C) विष (D) रोष

51. भीम किस राक्षसी पर मोहित हुए थे–
(A) शूर्पणखा (B) हिडिम्बा
(C) हेरम्बा (D) हाहाडम्बिका

52. लक्ष्मी कहाँ से पैदा होती हैं
(A) विष्णु के पैरों से (B) ब्रह्मा की नाभि से
(C) क्षीरसागर से (D) शिव की जटाओं से

53. लक्ष्मी ने पारिजात के पल्लवों से क्या ग्रहण किया–
(A) कुटिलता (B) अस्थिरता
(C) सम्मोहन शक्ति (D) राग

54. लक्ष्मी 'कर्कशता' कहाँ से ग्रहण करती हैं
(A) कौस्तुभमणि से (B) मदिरा से
(C) उच्चैःश्रवा से (D) हालाहल से

55. पुरुषों में स्थित समस्त दोषों को गुणरूप में परिणत कर देते हैं–
(A) गुरूपदेश (B) लक्ष्मी की प्राप्ति
(C) राज्यप्राप्ति (D) बुद्धिवैभव

56. शुकनास, अनर्थ परम्परा की कड़ी में किसे नहीं मानते हैं–
(A) जन्मजातप्रभुता (B) युवावस्था
(C) अनुपमसौन्दर्य (D) शक्त्यसम्पन्नता

57. ''विदितवेदितव्यस्य अधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति'' यहाँ 'अधीतसर्वशास्त्रस्य' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) शुकनास के लिए (B) चन्द्रापीड के लिए
(C) वैशम्पायन शुक के लिए(D) तारापीड के लिए

58. 'निम्नगा' पद का अर्थ है–
(A) नदी (B) गङ्गोत्री
(C) सूची (D) समुद्र

59. 'अमृतसहोदरापि कटुविपाका' कौन है–
(A) लक्ष्मी (B) अमृत
(C) जलधि (D) चाण्डालकन्या

60. महाकवि मयूरभट्ट की बहन से विवाह हुआ था–
(A) बाणभट्ट का (B) वामनभट्ट का
(C) भूषणभट्ट का (D) महिमभट्ट का

41. (B) 42. (B) 43. (A) 44. (A) 45. (D) 46. (C) 47. (D) 48. (C) 49. (C) 50. (B) 51. (B) 52. (C)
53. (D) 54. (A) 55. (A) 56. (D) 57. (B) 58. (A) 59. (A) 60. (A)

61. ''परस्परं विरुद्धचेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजं चरितम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) शुकनास का (B) लक्ष्मी का
(C) तारापीड का (D) चाण्डालकन्या का

62. 'उपशशाम' में लकार है–
(A) लृट् (B) लुट् (C) लिट्(D) लङ्

63. 'दातारम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) दा+तृच्+ द्वितीया, बहु. (B) दा+अम्+प्रथमा, एक.
(C) दा+तृच्+द्वितीया, एक. (D) दाञ्+घञ्+प्रथमा, बहु.

64. 'वारि' शब्द का तृतीया एक. में रूप होगा–
(A) वारेण (B) वारिणा
(C) वारिया (D) वारिसा

65. ''अवधारयन्तः'' में प्रत्यय है
(A) शानच् (B) तृच्
(C) शतृ (D) घञ्

66. ''ग्रहैरिव गृह्यन्ते मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, पिशाचैरिव ग्रस्यन्ते'' इत्यादि स्थलों में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उत्प्रेक्षा
(C) निदर्शना (D) उपमा

67. ''पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया, रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति'' इन पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) विरोधाभास (B) दीपक
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

68. '''विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना'' इस पद में सन्धि है–
(A) हल्सन्धि (B) गुणसन्धि
(C) वृद्धिसन्धि (D) यण्सन्धि

69. 'अपरिणामोपशमः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) अपरिणामा+ओपशम् (B) अपरिणाम+उपशमः
(C) अपरिणाम+औपशम (D) अपरीयाम+उपशमः

70. 'राजप्रकृतिः' में समास है–
(A) षष्ठी तत्पु. (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

71. 'विटान् पान्ति इति' इस व्युत्पत्ति से होगा–
(A) विटपाः (B) विटकाः
(C) विटकान् (D) विटायाः

72. शुकनासोपदेश में मुख्य प्रतिपाद्य विषय है–
(A) द्यूतक्रीडा का
(B) राज्यसञ्चालन का
(C) लक्ष्मी को प्राप्त करने की विधियों का
(D) युवावस्था में लक्ष्मीजन्य मानसिक विकृतियों एवं उनसे होने वाली हानियों का

73. कादम्बरी कथा का नामकरण हुआ है–
(A) नायक के नाम पर (B) नायिका के नाम पर
(C) दासी के नाम पर (D) शुकनास के नाम पर

74. चन्द्रापीड के एक जन्म का नाम था–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) कपिञ्जल (D) शूद्रक

75. लक्ष्मी, पापी समझकर किसके पास तक नहीं जाती–
(A) विद्वानों के (B) धनहीनों के
(C) विनयशील के (D) राजाओं के

76. ''कुप्यन्ति हितवादिने'' यहाँ 'हितवादिने' में कौन सी विभक्ति किस सूत्र से हुई है–
(A) तृतीया–''हेतौ''
(B) षष्ठी–''षष्ठी शेषे''
(C) चतुर्थी–''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''
(D) सप्तमी–''आधारोऽधिकरणम्''

77. ''अकालप्रावृड्गुणकलहंसकानाम्, प्रस्तावना कपटनाटकस्य, पुरः पताका सर्वाविनयानाम्'' इत्यादि पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

78. समुद्रमन्थन से लक्ष्मी सहित कितने रत्न निकले थे–
(A) 18 (B) 17 (C) 14 (D) 19

79. 'असिधारा' पद का अर्थ है–
(A) तलवार की धार (B) जलधारा
(C) लक्ष्मी की चञ्चलता (D) समुद्र-प्रवाह

80. सरस्वती द्वारा अपनाये गए व्यक्ति को ईर्ष्या के कारण कौन नहीं अपनाती–
(A) राजागण (B) लक्ष्मी
(C) शुकनास (D) कादम्बरी

61. (B) 62. (C) 63. (C) 64. (B) 65. (C) 66. (B) 67. (A) 68. (D) 69. (B) 70. (A) 71. (A) 72. (D) 73. (B) 74. (D) 75. (C) 76. (C) 77. (B) 78. (C) 79. (A) 80. (B)

81. ''अकाला चासौ प्रावृट् इति अकालप्रावृट्'' यहाँ समास है–
(A) नञ् तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

82. विदिशा, किस नदी के किनारे स्थित थी–
(A) वेत्रवती के (B) सरयू के
(C) गङ्गा के (D) महानदी के

83. चाण्डालकन्या किसके समीप आयी–
(A) महाश्वेता के (B) कादम्बरी के
(C) पुण्डरीक के (D) शूद्रक के

84. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

85. वैशम्पायन की प्रेमिका थी–
(A) कादम्बरी (B) महाश्वेता
(C) चाण्डालकन्या (D) विनता

86. कादम्बरी में वर्णन नहीं है–
(A) अच्छोदसरोवर का (B) पम्पासरोवर का
(C) शाल्मलीवृक्ष का (D) देवदारु का

87. वैशम्पायन पूर्व जन्म में था–
(A) शूद्रक (B) पुण्डरीक
(C) कुमारपालित (D) चन्द्रापीड

88. 'तुरङ्गबाण' किसकी उपाधि है–
(A) बाणभट्ट की (B) अभिनवबाण की
(C) अम्बिकादत्तव्यास की (D) भवभूति की

89. ''आधुनिक बाण'' के रूप में जाना जाता है–
(A) सुबन्धु को (B) बाण को
(C) अम्बिकादत्त व्यास को (D) दण्डी को

90. बाणभट्ट के भाई थे–
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5

91. ''सम्पत्तिरूपी तिमिर में होने वाला अन्धापन कष्टकर होता है'' किसने कहा–
(A) चन्द्रापीड ने (B) तारापीड ने
(C) द्वारपाल ने (D) शुकनास ने

92. ''अहङ्कार से उत्पन्न उष्णता, शीतल औषधियों से भी शान्त नहीं होती'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(B) चन्द्रापीड ने शुकनास से
(C) शुकनास ने तारापीड से
(D) चन्द्रापीड ने तारापीड से

93. ''त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः'' इस सूक्ति वाक्य में 'नमः' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग हुआ है–
(A) चतुर्थी (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D)प्रथमा

94. राज्याभिषेक के समय किसकी आवश्यकता होती है–
(A) सेना की (B) विश्राम की
(C) धन की (D) उपदेश की

95. कादम्बरी में वर्णित 'इन्द्रायुध' था–
(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) वज्र

96. कादम्बरी विभक्त है–
(A) एक भाग में (B) तीन भागों में
(C) दो भागों में (D) चार भागों में

97. कादम्बरी की कथा का अन्त होता है–
(A) तारापीड-पत्रलेखा के मिलन से
(B) चाण्डालकन्या-शूद्रक के मिलन से
(C) वैशम्पायन-जाबालि के मिलन से
(D) चन्द्रापीड-कादम्बरी के मिलन से

98. कामपीड़ा में दिवङ्गत हो गया था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) पुण्डरीक (D) द्वैपायन

99. चन्द्रापीड पिता के बुलाने पर आता है–
(A) उज्जयिनी में (B) अच्छोदसरोवर में
(C) विदिशा में (D) हेमकूटपर्वत में

100. चन्द्रापीड का राज्याभिषेक करने की इच्छा किसे हुई–
(A) वैशम्पायन को (B) शुकनास को
(C) तारापीड को (D) कादम्बरी को

81. (B) 82. (A) 83. (D) 84. (A) 85. (B) 86. (D) 87. (B) 88. (A) 89. (C) 90. (C) 91. (D) 92. (A)
93. (A) 94. (D) 95. (C) 96. (C) 97. (D) 98. (C) 99. (A) 100. (C)

7 Unit

गद्य-साहित्य

शिवराजविजय

अम्बिकादत्तव्यास का सामान्य परिचय

- **पितामह** – पं. राजाराम
- **पिता** – दुर्गादत्त
- **चाचा/दादा** – देवीदत्त
- **पुत्र** – पं. राधाकुमारव्यास
- **पं. राजाराम के दो पुत्र थे-** दुर्गादत्त और देवीदत्त।
- **गोत्र** – पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी/त्रिप्रवर/भीडावंश।
- **जन्मस्थान** – राज्य - राजस्थान, जिला - जयपुर, ग्राम - रावत जी का धूला, मुहल्ला - सिलावटी।
- **जन्मसमय** – चैत्र शुक्लपक्ष अष्टमी सं. 1915 (1858 ई.)।
- **मृत्यु** – मार्गशीर्ष (अगहन) कृष्णपक्ष त्रयोदशी सोमवार सं. 1957 (सन् 1900 ई.)।
- **कर्मस्थली** – काशी में अध्ययन-अध्यापन।
- **कुल रचनाएँ** – लगभग 78।
- **संस्कृत रचनाएँ**– शिवराजविजय (उपन्यास), सामवतम् (नाटक) (22 वर्ष की अवस्था में) रत्नाष्टक, कथाकुसुमम् आदि।
- **हिन्दी रचनाएं** – बिहारी-विहार (कुण्डलियाँ छन्द में)
- **पत्रिका** – 'पीयूष-प्रवाह' का सम्पादन

➢ **उपाधियाँ-**

1. **सुकवि** (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, काशी कवितावर्धिनी सभा)
2. **घटिकाशतक** (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा)
3. **शतावधान**
4. **भारतरत्न** (काशी की 'महासभा')
5. **अभिनवबाण/आधुनिकबाण**
6. **भारतभूषण**
7. **महाकवि**

➢ प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास शिवराजविजय के प्रणेता थे अम्बिकादत्तव्यास।

➢ **'बिहारी-विहार'** में व्यास जी ने अपना संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखा है।

➢ लगभग 12 वर्ष की अवस्था में व्यास जी ने धर्मसभा की परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया था।

➢ बिहार में **'संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज'** की स्थापना की थी व्यास जी ने।

➢ व्यास जी ने 10 वर्ष की अवस्था से ही काव्य रचना आरम्भ कर दी थी।

➢ व्यास जी ने **'शिवराज-विजय'** 1870 ई. में लिखा जो काशी से 1901 ई. में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ।

➢ **गवर्नमेण्ट** संस्कृत-कॉलेज पटना में प्राध्यापक।

➢ वक्ता और साहित्यस्रष्टा के साथ ही चित्रकारिता, अश्वारोहण, संगीत और शतरंज में भी व्यास जी विशेष रुचि रखते थे।

➢ सितार, हारमोनियम, जलतरङ्ग और मृदङ्ग इनके प्रिय वाद्य थे।

➢ व्यास जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषा के ज्ञाता थे।

➢ न्याय, व्याकरण, वेदान्त और दर्शन में इनकी अच्छी गति थी।

➢ एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को **'घटिकाशतक'** की उपाधि दी गयी थी।

➢ सौ प्रश्नों को एक साथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्भुत क्षमता होने से उन्हें **'शतावधान'** की उपाधि दी गयी थी।

➢ **बयालीस वर्ष की अवस्था** में ही व्यास जी संवत् 1957 (1900 ई.) में अपने पीछे एक नववर्षीय पुत्र, एक कन्या और पत्नी को असहाय छोड़कर पञ्चतत्त्व को प्राप्त हो गये।

ऐतिहासिक उपन्यास का सामान्य परिचय

♦ **लेखक**	–	अम्बिकादत्तव्यास
♦ **विधा**	–	ऐतिहासिक उपन्यास
♦ **विभाजन**	–	तीन विराम, 12 निःश्वास।
♦ **प्रधानरस**	–	वीर
♦ **उपजीव्य**	–	इतिहासप्रसिद्ध
♦ **नायक**	–	शिवाजी
♦ **कथानक**	–	शिवाजी का जीवनचरित।
♦ **प्रमुखपात्र**	–	शिवाजी, गौरसिंह, श्यामसिंह, ब्रह्मचारी गुरु, योगिराज, सौवर्णी, शहाबुद्दीन, माल्यश्रीक, अफ़जलखान, शाइस्ताखान, रघुवीरसिंह, यवनयुवक, यशवन्तसिंह, औरंगजेब, रसनारी (रोशनआरा)

- 'शिवराजविजय' **1870 ई०** में लिखा गया था, जो काशी से **1901 ई. में प्रकाशित** हुआ।
- संस्कृतवाङ्मय का **प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'शिवराजविजय' है।**
- शिवराजविजय की सम्पूर्ण कथा 3 विरामों और 12 निःश्वासों में विभक्त है। प्रत्येक विराम में 4-4 निःश्वास हैं।
- शिवराजविजय में दो समानान्तर धाराएँ स्वतन्त्र रूप से प्रवाहित होती हैं – एक के नायक शिवाजी हैं तो दूसरी के नायक रघुवीर सिंह हैं।
- शिवराजविजय **'वीर रस'** प्रधान काव्य है। **'विरोधाभास'** व्यास जी का प्रिय अलङ्कार है। शिवराजविजय में **पाञ्चालीरीति** प्रयुक्त है।
- व्यासजी ने 'शिवराजविजय' में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया है।

शिवराजविजय का कथानक एवं पात्र-चित्रण

- शिवाजी के काल में दो-दो कोस पर आश्रम बने हुए थे, जो मुसलमानों की गतिविधियों पर नजर रखते थे।
- बीजापुर-दरबार ने शिवाजी से युद्ध के लिए अफजल खाँ को भेजा। उस समय शिवाजी 'प्रतापदुर्ग' में थे।
- अफजल खाँ ने 'भीमा नदी' के तट पर शिविर डाल दिया।
- बीजापुर के शासक 'सन्धि' के धोखे से शिवाजी को पकड़ना चाहते थे।
- एक यवन गुप्तचर जो बीजापुर दरबार का पत्र ले जा रहा था, उसने मार्ग में एक ब्राह्मण कन्या का अपहरण किया।
- एक भालू के आ जाने से वह यवन युवक उस कन्या को छोड़कर 'शाल्मली' वृक्ष पर चढ़ गया।
- ब्रह्मचारी गुरु के शिष्य 'गौरसिंह' और श्यामसिंह द्वारा वह कन्या बचा ली गई।
- यवन गुप्तचर 'गौर सिंह' द्वारा मारा गया तथा बीजापुर का गुप्त संदेश उसके वस्त्रों में से गौरसिंह को प्राप्त हुआ।
- गुप्त संदेश को जानकर शिवाजी ने स्वयं अफजल खाँ को छलने की योजना बनायी।
- बीजापुर से सन्धि प्रस्ताव लेकर भेजे गये 'पं. गोपीनाथ' द्वारा प्रतापदुर्ग की तलहटी में अफजल खाँ से मिलने का शिवाजी ने प्रबन्ध किया।
- गौर सिंह 'गायक' के वेश में अफजल खाँ के शिविर में जाकर सम्पूर्ण भेद निकाल लाया।
- शिवाजी कपड़ों के अन्दर कवच और हाथों में 'बाघनख' नामक हथियार पहन कर अफजल खाँ से मिलने गये।
- आलिंगन के समय शिवाजी ने अफजल खाँ के कन्धों और गर्दन को फाड़कर मार डाला।
- गौर सिंह द्वारा जिस ब्राह्मण कन्या की रक्षा की गयी थी, उसके संरक्षक एक वृद्ध ब्राह्मण थे।
- वह कन्या गौर सिंह और श्याम सिंह की **बहन सौवर्णी** है और वृद्ध ब्राह्मण उनके **पुरोहित 'देवशर्मा'** हैं।
- ब्रह्मचारी गुरु के अनुरोध पर गौर सिंह ने अपना वृत्तान्त सुनाया।
- वे तीनों (गौर सिंह, श्याम सिंह, सौवर्णी) उदयपुर के जागीरदार **'खड्गसिंह'** के पुत्र-पुत्री थे।
- माता-पिता की मृत्यु के बाद तीनों बहिन भाई पुरोहित की संरक्षता में रहते थे।
- शिकार पर गये हुए वे लुटेरों द्वारा पकड़े गये वहाँ से वे भाग कर हनुमान मंदिर अध्यक्ष की सहायता से भीमा नदी के किनारे

शिवाजी से मिले और ब्रह्मचारी गुरु के आश्रम में रहने लगे।

- 'शाइस्ता खाँ' पूना पर अधिकार करके शिवाजी के महल में रहने लगता है।
- शिवाजी ने 'सिंह दुर्ग' से अपना एक संदेश 'रघुवीर सिंह' द्वारा 'तोरण दुर्ग' के अध्यक्ष के पास भेजा।
- रघुवीर सिंह तोरण दुर्ग के अध्यक्ष की आज्ञा से 'हनुमान मन्दिर' में ठहरा।
- देवशर्मा 'सौवर्णी' को लेकर उसी हनुमान मन्दिर में रहने लगे थे, जहाँ वाटिका में रघुवीर सिंह सौवर्णी को देखता है।
- शिवाजी के आदेश पर रघुवीर सिंह शाइस्ता खाँ के साथ होने वाले युद्ध का भविष्य पूछने के लिए देवशर्मा के पास गया।
- देवशर्मा ने सौवर्णी द्वारा उसे एक मोदक खिलाकर गले में एक 'माला' डलवाई।
- देवशर्मा ने यवनों के साथ युद्ध में विजय तथा आर्यों के साथ पराजय यह भविष्य बताया।
- शिवाजी ने पंडित के वेश में 'माल्यश्रीक' के साथ शाइस्ता खाँ के निवास पूना जाकर निरीक्षण किया।
- सन्देह होने पर चाँद खाँ ने उनका पीछा किया शिवाजी ने उसका वध कर दिया।
- शिवाजी ने यशवन्त सिंह को पूना से दूर रहने की प्रार्थना कर 'बारात' के बहाने पूना में प्रवेश किया।
- चाँद खाँ और शाइस्ता खाँ के पुत्र रघुवीर सिंह द्वारा मारे गये।
- शाइस्ता खाँ घायल उंगली के साथ भाग गया।
- रघुवीर सिंह ने औरंगजेब की पुत्री 'रोशन आरा' को गिरफ्तार कर लिया।
- ब्रह्मचारी गुरु ने गौरसिंह से अपने पुत्र 'वीरेन्द्र सिंह' का वृत्तान्त बताया।
- सौवर्णी ने क्रूरसिंह द्वारा किये जाने वाले अपमान की बात रघुवीर सिंह से बतायी।
- रोशनआरा शिवाजी के प्रति अपना प्रेम प्रकट करती है। शिवाजी ने पिता द्वारा उसे दिये जाने पर ही स्वीकार करने की बात कही।
- 'जयसिंह' के आक्रमण करने पर शिवाजी मुगलों की कुछ शर्तें मानकर सन्धि करने पर विवश हुए, और उन्हें रोशनआरा और मुअज्जम को वापस करना पड़ा।
- बीजापुर किले पर आक्रमण करके रघुवीर सिंह की सहायता से शिवाजी ने विजय प्राप्त की, और रहमत खाँ को पकड़ लिया गया।
- रहमत खाँ और क्रूरसिंह द्वारा राजद्रोही बताये जाने पर शिवाजी ने रघुवीर सिंह को निष्कासित कर दिया।
- रघुवीर सिंह **'राधास्वामी'** का वेश धारण कर शिवाजी का उपकार करता रहा।
- सौवर्णी के अपहरण की इच्छा रखने वाले क्रूरसिंह का रघुवीर सिंह (राधास्वामी) ने वध कर दिया।
- जयसिंह की सन्धि के अनुसार शिवाजी औरंगजेब के राजदरबार दिल्ली में उपस्थित हुए।
- मार्ग में राधास्वामी (राघवस्वामी, रघुवीर सिंह) के रोकने पर भी वे नहीं माने।
- औरंगजेब ने शिवाजी को नजरबंद करवा दिया, परन्तु 'रघुवीर सिंह' के सहायता से वे भागने में सफल हो गये।
- रघुवीर सिंह को 'मण्डलेश्वर' पद प्रदान किया गया तथा 'सौवर्णी' के साथ उसका विवाह हो गया।
- शिवाजी **सतारा नगर को राजधानी** बनाकर रहने लगे और धीरे-धीरे पूरे महाराष्ट्र पर अधिकार कर लिया।
- औरंगजेब द्वारा प्रेषित सेनापति 'मोहम्मद खाँ' भगा दिया गया।

शिवराजविजय की प्रमुख सूक्तियाँ

1. **रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।**

   रात बीतेगी, सुहावना सवेरा होगा, सूर्य उदित होगा और कमलों की शोभा खिल उठेगी।

2. ब्रह्मचारीगुरु ने योगिराज से कहा– **ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः।**

   ध्यान में स्थित रहने वाले आप जैसे लोगों के द्वारा काल के वेग का पता नहीं चलता।

3. योगिराज ब्रह्मचारीगुरु से कहते हैं– **सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः।**

   सत्य कह रहे हो मुझे काल के वेग का पता नहीं चला।

4. ब्रह्मचारीगुरु शिवाजी की सारगर्भित प्रतिज्ञा के सन्दर्भ में योगिराज को बता रहे हैं–

   कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्।

   या तो कार्य पूरा करुँगा नहीं तो शरीर नष्ट कर दूँगा।

5. ब्रह्मचारीगुरु योगिराज को यवनराज्य की दुर्दशा बता रहे हैं–

   क्वचिन्मन्दिराणि भिद्यन्ते क्वचित्तुलसीवनानि छिद्यन्ते।

   कहीं मन्दिर गिराये जा रहे हैं कहीं तुलसी के वनों को काटा जा रहा है।

6. **कदलीदलकुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका।**
केले के वृक्षों से घिरी होने के कारण कुञ्ज के समान प्रतीत होने वाली इस कुटिया के चारो ओर एक पुष्पों का उद्यान था।

7. **विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्।** (भागवतम्- 10.1.25)
भगवान् विष्णु की सत्त्वप्रधानात्मिका माया शक्ति सर्वगुण सम्पन्ना तथा ऐश्वर्यशालिनी है। जिसके द्वारा अशेष जगत् सम्यक् रूप से मोहित किया गया है।

8. **हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद्विमुच्यते**
दुष्ट हिंसक जन अपने पाप से ही मारा गया और सत्पुरुष अपने समत्व बुद्धि के कारण भय से मुक्त हो गया। **(भागवतम् 10.7.31)**

9. अम्बिकादत्तव्यास ने समाधिस्थ योगिराज का वर्णन करते हुए लिखा है कि–
ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च।
गाँव के मुखिया तथा अन्य निवासी जन बीच-बीच में कभी-कभी आकर उनकी पूजा प्रणाम तथा स्तुति करते थे।

10. योगिराज सम्पूर्ण यवनवृत्तान्त को सुनकर ब्रह्मचारी गुरु तथा उनके शिष्यों से कहते हैं कि– **विजयतां शिववीरः सिद्ध्यन्तु भवतां मनोरथाः।**
शिवाजी तुम्हारी जय हो तथा आप सबके मनोरथ पूर्ण होंगे।

11. ब्रह्मचारीगुरु योगिराज को यवनों का दुराचारपूर्ण वृत्तान्त सुनाते हुए कहते हैं कि–
अद्य न तानि स्रोतांसि नदीनाम्, न सा संस्था नगराणाम्, न सा आकृतिर्गिरीणाम्।
इस समय नदियों के वैसे स्रोत नहीं रहे, और न ही नगरों में वैसी संस्था बची है, और न ही पर्वतों की पहले जैसी आकृति बची है।

12. योगिराज ब्रह्मचारीगुरु से कहते हैं कि–
विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचाराणामुपद्रवः ।
वीर विक्रम के राज्य में भी दुराचारियों का यह पापपूर्ण उपद्रव कैसे है?

13. अम्बिकादत्तव्यास प्रारम्भ में ही सूर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि–
प्रणम्य एष विश्वेषामिति उदेष्यन्तं भास्वन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटीरात् निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रबटुः।
ये समस्त जनों के लिए वन्दनीय हैं- ऐसा सोचकर उदय होते हुए भगवान् सूर्य को प्रणाम करता हुआ, गुरुसेवा में कुशल कोई विप्र बालक अपनी पर्णकुटीर से बाहर निकला।

14. ब्रह्मचारीगुरु योगिराज से कहते हैं कि–
क्वाधुना मन्दिरे मन्दिरे जयजयध्वनिः? क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः क्वाद्यापि मठे मठे वेदघोषः।
कहाँ मन्दिरों में इस समय जय-जय की ध्वनि सुनाई देती है? और कहाँ आजकल तीर्थों में घण्टाध्वनि सुनाई पड़ती है? तथा इस समय मठों (विद्यालयों) में वेदमन्त्रों की ध्वनि कहाँ सुनाई पड़ती है?

15. गौरवटु श्यामवटु से खेदपूर्वक कहता है कि–
अहो! चिररात्राय सुप्तोऽहं, स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव महान् पुण्यमयः समयोऽतिवाहितः।
आज मैं रात में बहुत देर तक सोता रहा निद्रारूपी जाल के अधीन होकर महान् पुण्यमय अर्थात् अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काल व्यर्थ व्यतीत कर दिया।

16. अम्बिकादत्तव्यास योगिराज का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि–
सुघटितं शरीरं, सान्द्रां जटाम्, विशालानि अङ्गानि, अङ्गारप्रतिमे नयने, मधुरां गम्भीरां च वाचं वर्णयन्तश्चकिता इव सञ्जाताः।
उन महामुनि के सुगठित शरीर, घनी जटा, विशाल अङ्गों, अङ्गार सदृश दोनों नेत्रों तथा मधुर और गम्भीर वाणी की प्रशंसा करते हुए लोग आश्चर्यचकित से हो गये।

17. अम्बिकादत्तव्यास गौरवटु का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि–
बटुरसौ आवृत्या सुन्दरः वर्णेन गौरः जटाभिर्ब्रह्मचारी,
वयसा षोडशवर्ष-देशीयः कम्बुकण्ठः आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चासीत्।
वह ब्रह्मचारी बालक आकृति से सुन्दर था, और गौरवर्ण (गोरे रंग) का था, जटाओं से वह ब्रह्मचारी प्रतीत हो रहा था, लगभग सोलह वर्ष की आयु वाला, वह शंख के समान सुन्दर कण्ठ वाला, दीर्घललाट से युक्त रमणीय भुजाओं वाला, तथा विशाल नयनों वाला था।

18. गौरसिंह यवनयुवक से कहता है कि–

वयमपि तु स्वाङ्कागतसत्त्ववृत्तयः शिवस्य गणा अत्रैव निवसामः।

अपने अङ्क (गोद) में स्वतः आये हुए दुष्ट प्राणियों के ऊपर ही जीवित रहने वाले शिव के गण हम आश्रमवासी हिन्दू लोग भी यहीं रहते हैं।

19. कुछ दुःखी ब्रह्मचारीगुरु को सान्त्वना देते हुए योगिराज कहते हैं–

मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकलकलाकलापकलनः सकलकालनः करालः कालः।

हे मुनिवर! समस्त कलाओं के रचयिता तथा सबके संहारक, भीषण यह कालदेवता बड़े विलक्षण हैं।

20. गौरसिंह और श्यामसिंह द्वारा अचानक योगिराज को पर्वत से उतरते हुए देखकर आश्चर्यपूर्वक कहा गया–

अहो! प्रबुद्धो मुनिः! प्रबुद्धो मुनिः! इत एवाऽऽगच्छति, इत एवाऽऽगच्छति सत्कार्योऽयं सत्कार्योऽयम् इति तौ सम्भ्रान्तौ बभूवतुः।

अहो मुनि जग गये मुनि जग गये, इधर ही आ रहे हैं- इधर ही आ रहे हैं, इनका सत्कार करना चाहिए, इनका सत्कार करना चाहिए, इस प्रकार कहते हुए दोनों वटु हर्ष से सम्भ्रमित हो गये।

21. श्यामसिंह गौरसिंह से कहता है कि–

अलं भो अलम्! मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि त्वं तु चिरं रात्रावजागरीरिति क्षिप्रं नोत्थापितः।

बस करो पर्याप्त हो गया मेरे ही द्वारा पहले फूल चुन लिए गये हैं तुम तो देर तक रात में जगते रहे इसलिए शीघ्र अर्थात् प्रातः नहीं उठाये गये।

22. महमूद गजनवी कहता है कि–

नाहं मूर्तीः विक्रीणामि, किन्तु भिनद्मि, इति सङ्गर्ज्य जनतायाः हाहाकारकलकलमाकर्णयन् घोरगदया मूर्तिम् अतुत्रुटत्।

मैं मूर्ति बेचता नहीं हूँ बल्कि तोड़ता हूँ। इस प्रकार गरजकर जन समूह के हाहाकार के शब्दों को सुनते हुए अपनी भयङ्कर गदा से शिवलिङ्ग को तोड़ दिया।

23. गौरसिंह यवनयुवक से कहता है कि–

कुटीरान्तः कन्यकाऽस्ति, सा च यवनवधव्यसनिनि मयि जीवति न शक्या द्रष्टुमपि, किं नाम स्प्रष्टुम्?

कुटीर के अन्दर कन्या है, और यवनों के वध के व्यसनी मेरे जीवित रहते उसे छूने को कौन कहे, कोई देख भी नहीं सकता।

24. यवनयुवक गौरसिंह से कहता है कि–

''आः! वयमपि कुत्र इति प्रष्टव्याः? भारतीयकन्दरिकन्दरेष्वपि वयं विचरामः॥''

अरे! हमसे भी कहाँ से आये यह पूछना चाहिए, हम यवन लोग भारतवर्ष की पर्वतगुफाओं में भी विचरण करते हैं।

25. ब्रह्मचारी गुरु कहते हैं कि–

धिगस्मान्, येऽद्यापि जीवामः, श्वसिमः, विचरामः, आत्मन आर्य्यवंश्यांश्चाऽभिमन्यामहे।

हम सब को धिक्कार है जो आज भी जीवन धारण कर रहे हैं, साँस ले रहे हैं, भ्रमण कर रहे हैं, और अपने को आर्यवंश में समुत्पन्न होने वाले मानते हैं।

26. उस समय के पूजकवर्ग (पुजारीगण) मोहम्मदगजनवी से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि–

अस्मान् ताडय, मारय, छिन्धि, भिन्धि, पातय, मज्जय, खण्डय, कर्तय, ज्वलय, किन्तु त्यज इमाम् ....

हम लोगों को पीटो, मारो, काट डालो, भेदन करो, पर्वत से गिरा दो, जल में डुबा दो, खण्ड-खण्ड कर डालो, कतर डालो, अग्नि में जला दो परन्तु सम्मुख स्थित कुछ न करने वाली चेतनारहित भगवान् शङ्कर की मूर्ति को छोड़ दो।

27. योगिराज ब्रह्मचारीगुरु से कहते हैं कि–

''यौधिष्ठिरे समये कलितसमाधिरहं वैक्रमसमये उदस्थाम्।

पुनश्च वैक्रमसमये समाधिम् आकलय्य अस्मिन् दुराचारमये समयेऽहमुत्थितोऽस्मि।''

युधिष्ठिर के समय में समाधि लगाकर मैं विक्रमादित्य के समय में उठा था, और विक्रमादित्य के समय में पुनः समाधि लगाकर इस दुराचारपूर्ण समय में उठा हूँ।

28. **रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्**
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त! हन्त!! नलिनीं गज उज्जहार॥

रात बीतेगी, सुहावना सबेरा होगा, सूर्य उदित होगा और कमलों की शोभा खिल उठेगी अर्थात् कमल प्रफुल्लित हो जायेंगे। कमल की कली के अन्दर बन्द भ्रमर यह सोच ही रहा था कि हाय! हाथी ने कमलिनी को ही उखाड़ डाला।

अभ्यास प्रश्न (शिवराजविजय)

1. ''शिवराजविजयः'' इति उपन्यासात्मकं गद्यकाव्यं केन विरचितम्?
(A) बाणभट्टेन (B) अम्बिकादत्तेन
(C) दण्डिना (D) विष्णुदत्तेन

2. संस्कृतसाहित्ये प्रथमैतिहासिकोपन्यासस्य सौभाग्यं कः प्राप्तवान्?
(A) कादम्बरी (B) शिवराजविजयः
(C) हर्षचरितम् (D) वासवदत्ता

3. अम्बिकादत्तव्यासः कुत्र शिक्षां प्राप्तवान्?
(A) प्रयागे (B) देवप्रयागे
(C) काश्याम् (D) महाराष्ट्रे

4. शिवराजविजयस्य मङ्गलाचरणं वर्तते?
(A) अम्बिकादत्तेन लिखितमस्ति
(B) महाभारतात् उद्धृतमस्ति
(C) श्रीमद्भगवद्गीतायाः उद्धृतमस्ति
(D) श्रीमद्भागवतपुराणात् उद्धृतमस्ति

5. शिवराजविजयः कस्मिन् विभक्तं वर्तते?
(A) सर्गेषु (B) खण्डेषु
(C) उन्मेषेषु (D) निःश्वासेषु

6. शिवराजविजये आहत्य कति निःश्वासाः विद्यन्ते?
(A) पञ्च (B) अष्ट
(C) दश (D) द्वादश

7. शिवराजविजयस्य प्रत्येकविरामेषु कति निःश्वासाः वर्तन्ते?
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) चत्वारः (D) षट्

8. शिवराजविजयः इति रचनायाः नायकः अस्ति?
(A) महाराष्ट्रकेसरी शिवाजी (B) गौरसिंहः
(C) अवरङ्गजीवः (D) अफजलखाँनः

9. शिवराजविजय इति गद्यकाव्यस्य आरम्भः भवति?
(A) सूर्योदयवर्णनेन (B) कोंकणयात्रया
(C) रघुवीरसिंहस्य तोरणयात्रया (D) हनुमत्देवालयस्य वर्णनेन

10. शिवराजविजयं कीदृशं काव्यम्-
(A) पद्यम् (B) गद्यम्
(C) चम्पूः (D) एतेषु न किमपि

11. गोपीनाथः कः अस्ति?
(A) शिवाजी - इत्यस्य मित्रम्
(B) अफजलखाँ - इत्यस्य दूतः
(C) हनुमत्देवालयस्य पूजकः
(D) रघुवीरसिंहस्य गुरुः

12. शिवराजविजयः साहित्यस्य कस्यां विधौ आयाति?
(A) नाटके (B) ऐतिहासिकोपन्यासे
(C) महाकाव्ये (D) कथायाम्

13. अम्बिकादत्तस्य अन्यासु संस्कृतरचनासु सम्मिलितोऽस्ति?
(A) विहारी-बिहारः (B) सामवतं-नाटकम्
(C) शिव-विवाहः (D) भारत-भारती

14. सोमनाथतीर्थः केन जितः?
(A) शहाबुद्दीनेन (B) कुतुबुद्दीनेन
(C) अकबरेण (D) महमूद-गजनवी इत्यनेन

15. सोमनाथतीर्थस्य देवता अस्ति?
(A) ब्रह्मा (B) विष्णुः
(C) रामः (D) महादेवः

16. महमूदगजनवी सिन्धुनदीम् उत्तीर्य कां स्वराजधानीं प्राविशत्?
(A) गजनीम् (B) तक्षशिलाम्
(C) काबुलम् (D) तेहरानम्

1. (B)	**2.** (B)	**3.** (C)	**4.** (D)	**5.** (D)	**6.** (D)	**7.** (C)	**8.** (A)	**9.** (A)	**10.** (B)	**11.** (B)
12. (B)	**13.** (B)	**14.** (D)	**15.** (D)	**16.** (A)						

17. शिवराजविजये कान्यकुब्जस्य राजा आसीत्?
(A) शहाबुद्दीनः (B) पृथ्वीराजः
(C) कुतुबुद्दीनः (D) जयचन्द्रः

18. शिवराजविजये शिवाजीं विहाय कस्य चरित्र-चित्रणं वर्तते?
(A) भैरोसिंहस्य (B) गौरसिंहस्य
(C) गुजरालसिंहस्य (D) मोहनसिंहस्य

19. शिवराजविजये कुत्रत्या घटना वर्णिता ?
(A) महाराष्ट्रस्य (B) राजस्थानस्य
(C) देहल्याः (D) बिहारस्य

20. शिवराजविजये कीदृशीचेतनायाः प्रकाशः वर्तते?
(A) राष्ट्रीयचेतनायाः (B) प्रादेशिकचेतनायाः
(C) मुगलचेतनायाः (D) कालिकचेतनायाः

21. शिवराजविजयस्य प्रथमनिःश्वासे पुष्पस्य प्रथमः चयनकर्ता कः?
(A) श्यामवटुः (B) गौरवटुः
(C) गुरुः (D) बालिका

22. योगिराजेन प्रथमवारं समाधिः कदा स्वीकृतः?
(A) युधिष्ठिरस्य काले (B) विक्रमादित्यस्य काले
(C) यवनस्य काले (D) उपर्युक्तेषु न किमपि

23. शिवराजविजये विप्रकन्या केन अपहृता?
(A) द्रविणैः (B) यवनयुवकेन
(C) वनवासिभिः (D) आर्यैः

24. विप्रबालिकायाः हर्तारं यवनयुवकं कः हतवान्?
(A) श्यामसिंहः (B) गौरसिंहः
(C) ब्रह्मचारिगुरुः (D) शिवाजी

25. विप्रकन्यया उपमा कया सह क्रियते?
(A) लक्ष्मीदेव्या (B) पार्वतीदेव्या
(C) सरस्वतीदेव्या (D) दुर्गादेव्या

26. सोमनाथमन्दिरे आक्रमणकर्ता कः आसीत्?
(A) बाबरः (B) अवरङ्गजेबः
(C) महमूदगजनवी (D) मुहम्मदगोरी

27. 'अपजिहीर्षुः' इत्यत्र कः धातुः वर्तते?
(A) आप् (B) जि
(C) हृ (D) हष्

28. महमूदगजनवी कुत्रत्यः आसीत्?
(A) बुखारातः (B) येरुशलमतः
(C) ताशकन्दतः (D) गजनीतः

29. महमूदः भारते आक्रमणं कृतवान्?
(A) भारतस्य धनं हरणाय (B) इस्लामस्य प्रचाराय
(C) स्वसाम्राज्यस्य विस्ताराय (D) उपर्युक्तं सर्वम्

30. भारतस्य पराधीनतायाः कारणमासीत्?
(A) पृथ्वीराजजयचन्द्रयोः परस्परमतभेदः
(B) पृथ्वीराजस्य दुर्बलता
(C) जयचन्द्रस्य पृथ्वीराजं पातयितुं भावना
(D) यवनानाम् आक्रामकस्वभावः

31. 'चन्द्रहासस्य' अर्थः अस्ति?
(A) उदीयमानचन्द्रः (B) कृपाणः
(C) चन्द्रस्य उपहासः (D) कौमुदी ह्रासयुक्तः

32. योगिराजः अन्तिमवारं कदा जागृतः-
(A) युधिष्ठिरस्य काले (B) विक्रमादित्यस्य काले
(C) अवरङ्गजेबकाले (D) पृथ्वीराजस्य काले

33. 'सतीर्थ्यः' इत्यस्यार्थः वर्तते?
(A) सहपाठी (B) सूर्यः
(C) स्थाली (D) पत्तलम्

34. 'वैक्रमसमये उदस्थाम्' इत्यत्र 'वैक्रमः' शब्दे कः प्रत्ययः अस्ति?
(A) अण् (B) यत्
(C) ईयसुन् (D) मतुप्

35. 'उदतूतुलत्' इत्यस्मिन् कः लकारः?
(A) लङ्लकारः (B) लिङ्लकारः
(C) लुङ्लकारः (D) लृङ्लकारः

36. भारतवर्षे सर्वप्रथमं यवनशासनस्य बीजारोपकः क आसीत्?
(A) महमूदः
(B) शहाबुद्दीनः (मो. गोरी)
(C) कुतुबुद्दीनः
(D) अलाउद्दीनः

17. (D)	**18.** (B)	**19.** (A)	**20.** (A)	**21.** (A)	**22.** (A)	**23.** (B)	**24.** (B)	**25.** (C)	**26.** (C)	**27.** (C)
28. (D)	**29.** (A)	**30.** (A)	**31.** (B)	**32.** (C)	**33.** (A)	**34.** (A)	**35.** (C)	**36.** (B)		

37. शिवराजविजयस्य सन्दर्भे किम् असत्यम्?

(A) अस्य लेखकः अम्बिकादत्तव्यासः

(B) अस्य नायकः शिवाजी

(C) शिवराजविजये त्रयोदश निःश्वासाः सन्ति

(D) शिवराजविजयः प्रथमैतिहासिकोपन्यासः

38. 'वयसा षोडशवर्षदेशीयः कम्बुकण्ठः आयतललाटः सुबाहुर्विशाललोचनः' इमानि विशेषणानि कस्मै प्रयुक्तानि?

(A) रघुवीर-सिंहाय (B) शिवाजी-इत्यस्मै

(C) गौर-सिंहाय (D) श्याम-सिंहाय

39. 'नेदीयसि' इति पदं कस्मिन्नर्थे प्रयुक्तम्?

(A) अत्यन्त-समीपार्थे (B) दानार्थे

(C) नदी-तटार्थे (D) एतेषु न किमपि

40. 'यायजूकः' इति शब्दस्यार्थः विद्यते?

(A) यात्राशीलः (B) भ्रमणशीलः

(C) दुराचारी (D) यज्ञशीलः

41. शिवराजविजये युगव्यापिनिद्रातः जागर्ति-

(A) ब्रह्मचारिगुरुः (B) महागुरुः

(C) महामात्यः (D) योगिराजः

42. 'रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।' इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे हा हन्त, हन्त!! नलिनीं गज उज्जहार॥ श्लोकेऽस्मिन् 'कोशगतद्विरेफ' पदेन कवेः अभिप्रायोऽस्ति?

(A) शिवाजी (B) अफ़जलखानः

(C) अवरङ्गजेबः (D) गौरसिंहः

43. 'ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः' उक्तिरेषा कस्मात् सम्बद्धा वर्तते?

(A) उत्तररामचरितात् (B) कादम्बर्य्याः

(C) शिवराजविजयात् (D) किरातार्जुनीयात्

44. 'सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः' वचनमिदं कस्य?

(A) ब्रह्मचारिगुरोः (B) योगिराजस्य

(C) गौरसिंहस्य (D) श्यामसिंहस्य

45. ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'' कस्योक्तिरस्ति?

(A) पृथ्वीराजस्य (B) युधिष्ठिरस्य

(C) शिवाजी-इत्यस्य (D) विक्रमादित्यस्य

46. अम्बिकादत्तः संक्षिप्तं निजवृत्तान्तं कुत्र लिखितवान्?

(A) बिहार-बिहारिणौ (B) बिहारी-शतके

(C) बिहारी-विहारे (D) शिवराजविजये

47. अम्बिकादत्तव्यासस्य पितुः नाम आसीत्?

(A) देवीदत्तः (B) दुर्गादत्तः

(C) पं. राजारामः (D) रावतः

48. अम्बिकादत्तव्यासस्य विवाहोऽभवत्?

(A) अष्टादशे वर्षे (B) त्रयोदशे वर्षे

(C) पञ्चविंशतितमे वर्षे (D) विंशतितमे वर्षे

49. अम्बिकादत्तव्यासस्य जन्म कुत्र अभवत्?

(A) जयपुरे (B) काश्याम्

(C) बिहारे (D) महाराष्ट्रे

50. चैत्र-शुक्लाष्टम्यां 1915 इति संवत्सरे कस्य कवेः जन्म अभवत्?

(A) बाणस्य (B) अम्बिकादत्तस्य

(C) दण्डिनः (D) शिवाजी-इत्यस्य

51. 'सुकवि' इति नाम्ना विख्यातः आसीत्?

(A) कालिदासः (B) भारविः

(C) अम्बिकादत्तव्यासः (D) बाणभट्टः

52. चतुर्विंशतिनिमेषेषु शतश्लोकनिर्माणात् अम्बिकादत्तव्यासः उपाधिं प्राप्तवान्?

(A) 'घटिकाशतक' इति (B) 'शतकघटी' इति

(C) 'शतकमहारथी' इति (D) 'घटशतकी' इति

53. अम्बिकादत्तव्यासः कस्य संस्थापकः?

(A) सर्वभौम-संस्कृतसमाजस्य

(B) बिहार-संस्कृत-सञ्जीवनीसमाजस्य

(C) संस्कृत-भारतीसमाजस्य

(D) संस्कृत-कथावाचनसमाजस्य

37. (C) **38.** (C) **39.** (A) **40.** (D) **41.** (D) **42.** (B) **43.** (C) **44.** (B) **45.** (C) **46.** (C) **47.** (B)
48. (B) **49.** (A) **50.** (B) **51.** (C) **52.** (A) **53.** (B)

54. काशीमहासभया अम्बिकादत्तव्यासः केन उपाधिना विभूषितः?

(A) भारतरत्नेन (B) साहित्यरत्नेन
(C) संस्कृतरत्नेन (D) बिहाररत्नेन

55. अम्बिकादत्तव्यासस्य निधनम् अभवत्?

(A) 1957 संवत्सरे (B) 1915 संवत्सरे
(C) 1943 संवत्सरे (D) 1944 संवत्सरे

56. शिवराजविजयस्य प्रथमविरामे कति निःश्वासाः सन्ति?

(A) पञ्च (B) चत्वारः
(C) सप्त (D) त्रयः

57. महाराष्ट्रकेशरीरूपेण कस्य वर्णनं विद्यते?

(A) गौरसिंहस्य (B) श्यामबटोः
(C) अम्बिकादत्तव्यासस्य (D) शिवाजी-इत्यस्य

58. संस्कृतसाहित्ये विंशतिशताब्देः सफल ऐतिहासिक उपन्यासः वर्तते?

(A) शिवाजीविजयः (B) धर्मश्रीः
(C) शिवराजभूषणः (D) शिवराजविजयः

59. शिवाजी-इत्यस्य दशवर्षाणां जीवने आधारित ऐतिहासिकोपन्यासः अस्ति?

(A) शिवराजभूषणः (B) शिवाजीयशोविजयः
(C) शिवराजविजयः (D) शिवाजीविजयः

60. शिवराजविजयस्य सन्दर्भे असत्य-कथनं वर्तते?

(A) चत्वारः निःश्वासाः, प्रत्येकेषु त्रयः विरामाः
(B) विरामत्रये द्वादशनिःश्वासाः
(C) त्रयः विरामाः प्रत्येकस्मिन् निःश्वासचतुष्टयम्
(D) आहत्य द्वादशनिःश्वासाः चतुर्षु निःश्वासेषु एकविरामः।

61. शिवराजविजये कस्य रसस्य प्राधान्यं वर्तते?

(A) वीररसस्य (B) शृङ्गाररसस्य
(C) करुणरसस्य (D) अद्भुतरसस्य

62. उदयपुरस्य जागीरदारखड्गसिंहस्य सन्ततिः वर्तते?

(A) श्यामसिंहः (B) गौरसिंहः
(C) सौवर्णी (D) उपर्युक्तं सर्वम्

63. ''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्'' श्रीमद्भागवतान्तर्गतदशम-स्कन्धस्य श्लोकोऽयं मङ्गलाचरणरूपेण कुत्र लिखितं वर्तते?

(A) मेघदूते (B) कादम्बर्याम्
(C) वाल्मीकिरामायणे (D) शिवराजविजये

64. शिवाजी कस्य गद्यकाव्यस्य नायकः अस्ति?

(A) शिवराजविजयस्य (B) कादम्बर्याः
(C) तिलकमञ्जर्याः (D) हर्षचरितस्य

65. बीजापुरस्य नवाबः अस्ति?

(A) तानरङ्गः (B) शाइस्ता-खाँ
(C) अफजल-खाँ (D) अवरङ्गजेबः

66. ''ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च'' इत्यत्र 'तं ' पदेन कः सङ्केतितः?

(A) ब्रह्मचारिगुरुः (B) योगिराजः
(C) गौरवटुः (D) सूर्यः

67. ''सः ब्रह्मचारिबटुभ्याम् अदर्शि'' इत्यस्मिन् पदे वाच्यमस्ति?

(A) कर्मवाच्यम् (B) कर्तृवाच्यम्
(C) भाववाच्यम् (D) एषु किमपि न

68. 'त्रियामा' इति पदस्यार्थः भवति?

(A) यामिनी (B) विभावरी
(C) रात्रिः (D) उपर्युक्तं सर्वम्

69. ''विजयतां शिववीरः सिद्ध्यन्तु भवतां मनोरथाः'' इति कः उक्तवान्?

(A) ब्रह्मचारिगुरुः (B) योगिराजः
(C) रघुवीरसिंहः (D) पुरोहितदेवशर्मा

70. शहाबुद्दीनेन भारतस्य प्रथमसम्राट् उद्घोषितः?

(A) कुतुबुद्दीनः (B) बाबरः
(C) अवरङ्गजेबः (D) महमूदगजनवी

71. ''मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकलकलाकलापकलनः सकलकालनः करालः कालः'' इति कस्य वचनम्?

(A) ब्रह्मचारिगुरोः (B) योगिराजस्य
(C) गौरसिंहस्य (D) पुरोहितस्य

54. (A)	**55.** (A)	**56.** (B)	**57.** (D)	**58.** (D)	**59.** (C)	**60.** (A)	**61.** (A)	**62.** (D)	**63.** (D)	**64.** (A)
65. (B)	**66.** (B)	**67.** (A)	**68.** (D)	**69.** (B)	**70.** (A)	**71.** (B)				

72. ''विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचाराणामुपद्रवः'' कस्य कथनमिदम्?

(A) योगिराजस्य (B) ब्रह्मचारिगुरोः

(C) गौरसिंहस्य (D) विक्रमादित्यस्य

73. ''क्वाधुना मन्दिरे मन्दिरे जयजयध्वनिः क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः क्वाद्यापि मठे मठे वेदघोषः'' पंक्तिरियं कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते?

(A) हर्षचरिते (B) शिवराजविजये

(C) शिवाजीशतके (D) शिवशतके

74. ''बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिः ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः'' अस्यां पंक्तौ वर्णनमस्ति?

(A) गौरवटोः (B) श्यामवटोः

(C) उभयोः (D) ब्रह्मचारिगुरोः

75. ''चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति'' इत्यस्य प्रयोगः अस्ति?

(A) यङ्लुक्-क्रियायाः। (B) धातूपसर्ग-क्रियायाः।

(C) कर्मवाच्य-क्रियायाः। (D) सन्नन्त-क्रियायाः।

76. 'नाहं मूर्तीः विक्रीणामि, किन्तु भिनद्मि' इति कस्य वचनमिदम्।

(A) महमूदगजनवेः (B) अर्चकगणानाम्

(C) अवरङ्गजेबस्य (D) अफ़जलखानस्य

77. शिवराजविजयानुसारं विक्रमसंवत् 1087 इत्यस्मिन् वर्षे मृत्युं प्राप्तवान्?

(A) महमूदगजनवी (B) अम्बिकादत्तव्यासः

(C) अवरङ्गजेबः (D) पृथ्वीराजचौहानः

78. 'जटाभिर्ब्रह्मचारी' इत्यत्र तृतीयाविभक्तिः केन सूत्रेण भवति?

(A) 'इत्थम्भूतलक्षणे' इत्यनेन

(B) 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' अनेन

(C) 'साधकतमं करणम्' अनेन

(D) 'अपवर्गे तृतीया' अनेन

79. ''हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः'' इति शिवराजविजयस्य मङ्गलाचरणं कुतः गृहीतमस्ति?

(A) महाभारतात्

(B) वाल्मीकीयरामायणात्

(C) श्रीमद्भागवतस्य दशमस्कन्धात्

(D) गीतायाः

80. सुमेलितं नास्ति?

(A) भारतरत्न - (काशीमहासभया)

(B) घटिकाशतक- (ब्रह्मामृतवर्षिणीसभया)

(C) सुकविः- (काशी-कवितावर्धिनीसभया)

(D) भारतभूषणः- (विक्रमादित्यसभया)

81. अधोलिखितेषु अम्बिकादत्तव्यासस्य कृतिः नास्ति?

(A) सामवतम् (B) कथाकुसुमम्

(C) रत्नाष्टकम् (D) भावकुसुमम्

82. शिवराजविजये कीदृशं मंगलाचरणं कृतम्?

(A) आशीर्वादात्मकम्

(B) नमस्कारात्मकम्

(C) वस्तुनिर्देशात्मकम्

(D) वस्तुनिर्देशात्मकं नमस्कारात्मकञ्च

83. शिवराजविजयः कदा विरचितः?

(A) 1901 ईसवीये

(B) 1870 ईसवीये

(C) 1880 ईसवीये

(D) 1905 ईसवीये

84. अम्बिकादत्तव्यासः शिवसायुज्यं (मृत्युं) कुत्र प्राप्तवान्?

(A) काश्याम्

(B) नवदेहल्याम्

(C) जयपुरे

(D) महाराष्ट्रे

85. अम्बिकादत्तव्यासेन कति संस्कृतग्रन्थाः विरचिताः?

(A) द्वाविंशतिः

(B) सप्तविंशतिः

(C) अष्टाविंशतिः

(D) त्रिंशत्

72. (A)	**73.** (B)	**74.** (A)	**75.** (A)	**76.** (A)	**77.** (A)	**78.** (A)	**79.** (C)	**80.** (D)	**81.** (D)	**82.** (D)
83. (B)	**84.** (A)	**85.** (B)								

8 Unit

नाट्य-साहित्य
अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सामान्य परिचय

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
- **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
- **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
- शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है – **1. महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।**
- अभि0 शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**
- वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**
- कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है–**कैशिकी**
- कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।
- अभि0शाकु0 के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश**
- द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश**
- तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क**
- चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क**
- पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क**
- षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।**
- सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।**
- शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।
- शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**
- दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।
- राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**
- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**
- शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**
- अभि0 शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**
- "या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि0शाकु0 नाटक का मङ्गलाचरण**
- अभि0शाकु0 के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**
- **''तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः''** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- **''तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्''** किससे सम्बन्धित है – **अभिज्ञान शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से**
- "काव्येषु नाटकं रम्यम्" इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**
- दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**
- अभि0 शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**
- शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**
- शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**
- शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**
- महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**
- शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**
- शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**
- शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**
- शकुन्तला को शाप मिला– **अभि0शाकु0 के चतुर्थ अङ्क में**
- अभि0शा0 में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**

- शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि0शा0 के पञ्चम अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि0शा0 के सप्तम अङ्क में**
- हेमकूट पर्वत पर आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**
- शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**
- दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**
- अभि0 शा0 का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या)**
- अभि0शा0 का समापन होता है – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**
- कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ''कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विषय में **पाश्चात्त्य विद्वान् गेटे** का कथन – Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline, and all by which the soul is charmed, enraptured adapted, fed wouldst thou the earth and heaven it self in one name combined? I name the o shakuntala? And all at once is said.

  संस्कृतरूपान्तरण

  वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्,
  यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
  एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः,
  ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्॥
- कालिदास का विश्वप्रसिद्ध नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक – **विलियम जोन्स**
- विलियम जोन्स ने **The last things** की भूमिका में कालिदास को **'भारत का शेक्सपियर'** कहा।
- **महाकवि गेटे** ने अपने सुप्रसिद्ध नाट्यकाव्य **'फाडस्ट'** में कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नायिका शकुन्तला की भूरि-भूरि प्रशंसा की।
- कालिदास द्वारा विरचित तीन नाटक हैं– **1. मालविकाग्निमित्रम्** (प्रथमनाटक), **2. विक्रमोर्वशीयम्** (द्वितीय नाटक), **3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ नाटक)
- कण्व द्वारा पोषित, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री – **शकुन्तला**
- कालिदास के सभी नाटक हैं – **सुखान्त।**
- कालिदास की नाट्यकला का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् कथाविन्यास, चरित्र चित्रण, संवाद योजना, भाषा – शैली, अलंकार–योजना, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण, सभी दृष्टियों से **सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **196 पद्य** हैं।
- महाकवि कालिदास **रसमयी शैली** के आचार्य हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण तीन विशेषताओं – **त्याग, तपस्या, और तपोवन** का अच्छा चित्रण किया गया है।
- भरतमुनि के अनुसार नाटक का लक्षण – **''त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है – **विष्कम्भक से।**
- अनसूया और प्रियंवदा के पुष्पावचयन से प्रारम्भ होता है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वर्णन है – **शकुन्तला की विदाई का।**
- अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया गया है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणयगाथा वर्णित है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **180 उपमाओं का प्रयोग** किया गया है।
- शकुन्तला **हेमकूट पर्वत पर महर्षि मारीच के आश्रम में** अपनी माता मेनका के साथ वियोग के दिन गुजारती है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है।
- इस नाटक की कथावस्तु राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला को दिये गये अभिज्ञान (अँगूठी) के आस पास चक्कर लगाती है।
- राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए किस आश्रम में प्रवेश करता है – **महर्षि कण्व के।**
- तीर्थयात्रा पर गए हुए कण्व ऋषि की अनुपस्थिति में ही राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह आश्रम में ही सम्पन्न हो जाता है।
- शकुन्तला को महर्षि कण्व किसके साथ पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं – **शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी।**
- हस्तिनापुर जाते समय शकुन्तला की अँगूठी कहाँ गिर जाती है – **शचीतीर्थ में।**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण

या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुति विषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः॥ 1/1 ॥

भावार्थ- जो विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है अर्थात् जलरूप मूर्ति, जो विधिपूर्वक की गयी हवन के हवि को देवताओं के पास ले जाती है अर्थात् अग्निरूप मूर्ति, जो यज्ञकर्ता है अर्थात् यजमान रूपमूर्ति, जो दो समय का निर्माण करतीं हैं,अर्थात् सूर्य और चन्द्ररूप मूर्तियाँ, शब्द जिसका गुण है और जो विश्व में व्याप्त होकर विद्यमान है अर्थात् आकाश रूप मूर्ति, जिसको विद्वान् समस्त बीजों का कारण कहते हैं, अर्थात् पृथ्वीरूपमूर्ति और जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं अर्थात् वायुरूप मूर्ति, उन प्रत्यक्ष आठ मूर्तियों से युक्त भगवान् शिव आप लोगों की रक्षा करें।

- ☆ प्रस्तुत पद्य में अष्टमूर्ति भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।
- ☆ आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
- ☆ समासोक्ति के माध्यम से कथानक का सङ्केत होने से पत्रावली नान्दी भी है।
- ☆ उपर्युक्त श्लोक में स्रग्धरा छन्द तथा अनुप्रास एवं समासोक्ति अलङ्कार है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का भरतवाक्य

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥ 7/35 ॥

भावार्थ- राजा लोग प्रजा के हित के कार्यों में लगे रहें। चारों वेदों से शोभायमान भगवती श्री सरस्वती जगत् में पूजा को प्राप्त हों, अर्थात् वैदिक साहित्य, वेदमार्ग तथा चक्र सहित स्वयंभू भगवान् शङ्कर मेरे पुनर्जन्म का नाश करें। अर्थात् भगवानसाम्ब शिव की कृपा से मेरा जन्म-मरण रूप यह संसार बन्धन सदा के लिए छूट जाए।

- ☆ यह उत्तरार्धगत अन्तिम उक्ति महाकवि कालिदास की स्वयं अपनी प्रार्थना है।
- ☆ इस भरतवाक्य में लोक-कल्याण के लिए भगवान् शिव से प्रार्थना की गयी है।
- ☆ इस पद्य में रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नाटकीय पात्रों का परिचय

पुरुष पात्र

क्र.	नाम	परिचय
1.	सूत्रधार	नाटक का आरम्भ करने वाला प्रधान नट और रंगमञ्च का अध्यक्ष।
2.	दुष्यन्त	नाटक का नायक, हस्तिनापुर का राजा।
3.	सूत	दुष्यन्त का सारथि।
4.	सेनापति भद्रसेन	दुष्यन्त का सेनापति।
5.	विदूषक माढव्य	दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र और हास्यकारी।
6.	महर्षिकण्व (काश्यप)	आश्रम के कुलपति, शकुन्तला के पालक और धर्मपिता।
7.	मारीच (कश्यप)	एक महर्षि, देवों और राक्षसों के पिता, एक प्रजापति।
8.	भरत (सर्वदमन)	राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र।
9.	सोमरात	दुष्यन्त का पुरोहित।
10.	मातलि	इन्द्र का सारथि।
11.	वैखानस, हारीत, नारद, गौतम, शाङ्र्गरव, शारद्वत, शिष्य	सभी कण्व के शिष्य, आश्रम के तपस्वी।
12.	रैवतक (दौवारिक)	राजा का भृत्य, द्वारपाल।
13.	करभक	राजा के पास राजमाता का सन्देश पहुँचाने वाला सेवक।
14.	कञ्चुकी (वातायन)	रनिवास की देखभाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण।
15.	वैतालिक	स्तुतिपाठक (भाट, चारण)।
16.	श्याल	राजा का साला, नगर रक्षाधिकारी (कोतवाल)।
17.	धीवर (मीनपालक)	मछली पकड़ने वाला।
18.	सूचक	पुलिस के दो सिपाही।
19.	जानुक	
20.	गालव	ऋषि मारीच का शिष्य।
21.	पिशुन	दुष्यन्त का मन्त्री

स्त्रीपात्र

क्र.	नाम	परिचय
22.	नटी	सूत्रधार की पत्नी।
23.	शकुन्तला	नाटक की नायिका, कण्व की धर्मपुत्री, दुष्यन्त की पत्नी, मेनका और विश्वामित्र से उत्पन्न एक क्षत्रिय कन्या।
24.	अनसूया	शकुन्तला की अत्यन्त प्रिय और अंतरंग सखी।
25.	प्रियंवदा	
26.	गौतमी	कण्व के आश्रम की अध्यक्षा, एक वृद्धा तापसी।
27.	अदिति (दाक्षायणी)	महर्षि मारीच की पत्नी।
28.	सानुमती	मेनका की सखी, एक अप्सरा।
29.	परभृतिका	राजा की सेविका, उद्यानपालिका।
30.	मधुकरिका	
31.	चतुरिका	राजा की सेविका।
32.	वेत्रवती (प्रतीहारी)	राजा की द्वारपालिका।
33.	यवनी	राजा की एक सेविका।
34.	तापसी (सुव्रता)	मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी।

अन्य पात्र

- **मघवा (इन्द्र)** – देवताओं के राजा, दुष्यन्त के मित्र।
- **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी।
- **जयन्त** – इन्द्र का पुत्र।
- **कौशिक (विश्वामित्र)** – शकुन्तला के जन्मदाता पिता।
- **मेनका** – शकुन्तला की माता, एक अप्सरा।
- **दुर्वासा** – एक ऋषि, शकुन्तला को शाप देने वाले।

नोट – नाटक में इन पात्रों का केवल नामोल्लेख मात्र हुआ है।

- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) राजा दुष्यन्त तथा विश्वामित्र और मेनका की पुत्री शकुन्तला का प्रेम, वियोग, पुनर्मिलन वर्णित है।
- शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व तथा पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में वर्णित है।
- शाकुन्तलम् का **नायक 'दुष्यन्त'** 'हस्तिनापुर' का राजा है और धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है।
- 'शाकुन्तलम्' की **नायिका शकुन्तला** महर्षि कण्व (काश्यप) के आश्रम में पली है। 'मुग्धा' नायिका है।
- 'शाकुन्तलम्' का **प्रमुख 'रस' शृंगार है।** चतुर्थ अङ्क में **करुण** रस है।
- शाकुन्तल में **24 छन्दों** का प्रयोग हुआ है। सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द आर्या (39) है। तत्पश्चात् वसन्ततिलका (30) है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल **196 श्लोक** हैं। सर्वाधिक (35) श्लोक सप्तम अङ्क में हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **वैदर्भी रीति** और **माधुर्य गुण** प्रयुक्त है।
- शाकुन्तलम् में साधारणतया **गद्य के लिए शौरसेनी** और पद्यों के लिए **महाराष्ट्री प्राकृत** का प्रयोग हुआ है।
- षष्ठ अङ्क में दोनों सिपाही और धीवर मागधी बोलते हैं।
- शाकुन्तलम् में सर्वाधिक उपमा और 'अर्थान्तरन्यास' अलङ्कारों का प्रयोग है।
- दुष्यन्त की शकुन्तला से पूर्व अन्य दो रानियाँ हंसपदिका और वसुमती हैं।
- शकुन्तला की अनसूया और प्रियंवदा नामक दो सखियाँ हैं।
- दुष्यन्त और शकुन्तला का **पुत्र सर्वदमन (भरत)** है।
- शाकुन्तलम् का **विदूषक 'माढव्य'** दुष्यन्त का मित्र है। पहली बार द्वितीय अङ्क में मंच पर आता है।
- दुष्यन्त का **सेनापति 'भद्रसेन'** और **पुरोहित 'सोमरात'** है।
- इन्द्र का सारथी **'मातलि'** और दुष्यन्त का सारथी **'सूत'** है।
- **'करभक'** नामक दूत द्वितीय अङ्क में दुष्यन्त की माता का सन्देश लेकर आता है।
- शकुन्तला, परित्याग के बाद देवों और राक्षसों के पिता, प्रजापति **'मारीच' (कश्यप)** के आश्रम में रहती है।
- वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, नारद, हारीत आदि महर्षि कण्व के शिष्य हैं।
- ऋषि मारीच का एकमात्र शिष्य जो शकुन्तला-दुष्यन्त के मिलन की सूचना कण्व को देने हेतु सातवें अङ्क में भेजा जाता है उसका नाम **'गालव'** है।
- षष्ठ अङ्क में धीवर को पकड़ने वाले **दो सिपाही सूचक व जानुक** हैं और राजा का साला एवं नगर रक्षाधिकारी **श्याल** है।
- राजा का **कञ्चुकी 'वातायन'** है वह षष्ठ अङ्क में 'वसन्तोत्सव' की तैयारी में लगी दो उद्यानपालिकाओं **'परभृतिका'** व **'मधुकरिका'** को ऐसा करने से रोकता है।
- **वेत्रवती** राजा की द्वारपालिका है। यवनी है, एक अन्य सेविका है।
- **अदिति** (दाक्षायणी) मारीच की पत्नी तथा **गौतमी** कण्व के आश्रम की 'एक वृद्धा तापसी' है। गौतमी भी शार्ङ्गरव और शारद्वत के साथ शकुन्तला को छोड़ने हस्तिनापुर जाती है।
- मारीच के आश्रम में सर्वदमन (भरत) के साथ रहने वाली तापसी **'सुव्रता'** थी।
- **'सानुमती'** शकुन्तला की माता मेनका की सखी है जो षष्ठ अङ्क में राजा और विदूषक की बात अदृश्य रूप से सुनती है।
- इन्द्र का पुत्र **जयन्त** तथा पत्नी **इन्द्राणी** (पौलोमी/शची) है।
- सुलभकोप ऋषि दुर्वासा, अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं वे चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में शकुन्तला को शाप देते हैं।
- महर्षि कण्व का आश्रम **'मालिनी नदी'** के तट पर विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी के तट पर तथा 'मारीच' का आश्रम **'हेमकूट पर्वत'** पर था।
- दुर्वासा के शाप का असर पञ्चम अङ्क में दिखाई पड़ता है। यह नाटकीयता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अङ्क है।
- शकुन्तला ने **'शचीतीर्थ'** जो गङ्गा के तट पर स्थित है, में

जलवन्दना की, जहाँ उसकी अँगूठी गिरती है।
- तृतीय अङ्क में 'प्रियंवदा' कमल-पत्र पर 'नाखून' से प्रेम-पत्र लिखने की सलाह शकुन्तला को देती है जिसे वह फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा के पास पहुँचाने को कहती है।
- नाटक का आरम्भ **'ग्रीष्म ऋतु'** वर्णन तथा राजा दुष्यन्त द्वारा आश्रम मृग का पीछा करते हुए होता है।
- राजा पञ्चम अङ्क में हंसपदिका के सङ्गीत की प्रशंसा करता है तथा षष्ठ अङ्क में शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है।
- दुष्यन्त षष्ठ अङ्क में **'धनमित्र'** नामक व्यापारी की मृत्यु पर उसकी सारी सम्पत्ति उसके गर्भस्थ पुत्र को दे देता है।
- दुष्यन्त के लिए इन्द्र अपना आधा सिंहासन छोड़ देते हैं तथा **राजा को मन्दारमाला** पहनाते हैं।
- राजा द्वारा तिरस्कृत शकुन्तला को प्रसव तक अपने घर में रखने को **'सोमरात'** तैयार होते हैं।
- अष्टमूर्ति शिव की उपासना शाकुन्तलम् के नान्दी में की गई है, यह **मङ्गलाचरण आशीर्वादात्मक** है।
- शाकुन्तल के मङ्गलाचरण में **स्रग्धरा छन्द** है, जिसके प्रत्येक चरण में **21 वर्ण** होते हैं। यह **पत्रावली नान्दी** है।
- जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाय सूत्रधार अभिनय-कौशल को सफल नहीं समझता। वह ग्रीष्म ऋतु पर नटी से गीत सुनाने को कहता है।
- नटी आरम्भ में दो छन्द गाती है एक आर्या –> **(सुभगसलिल.....)** दूसरा उद्गाथा –> **(ईषदीषच्चुम्बितानि.....)**
- सूत प्रथम अङ्क के आरम्भ में धनुष पर बाण चढ़ाये राजा की उपमा 'शिव' से देता है।
- प्रथम अङ्क में वैखानस राजा को चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद देता है।
- समिधा लाने जाता हुआ 'वैखानस' राजा को बताता है कि शकुन्तला के 'प्रतिकूल भाग्य की शान्ति' के लिए कण्व शकुन्तला पर अतिथि सत्कार का भार सौंपकर **'सोमतीर्थ'** गये हुए हैं।
- आश्रम से सरोवर का मार्ग वल्कलों के अग्रभाग से टपकते जल से रेखांकित है।
- राजा आश्रम में प्रवेश से पूर्व अपने आभूषण और धनुष सारथि (सूत) को देकर सादे वेष में प्रवेश करता है।
- आश्रम-प्रवेश के समय राजा की **'दाहिनी' भुजा फड़कती** है जो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है।
- आश्रम-प्रवेश पर राजा वाटिका की दाहिनी ओर वृक्षों का सेंचन कर रही (प्रियंवदा आदि) बालिकाओं को देखता है।
- प्रियंवदा कहती है कि शकुन्तला के समीप रहने पर 'बकुल' (मौलश्री) का वृक्ष लता से युक्त लगता है।
- नवमालिका लता आम के वृक्ष से लिपटी है जिसका **'वनज्योत्स्ना'** नाम शकुन्तला ने रखा है।
- प्रियंवदा 'सप्तपर्ण वृक्ष' की वेदी पर राजा को बैठने हेतु कहती है।
- अनसूया द्वारा परिचय पूछने पर राजा अपने को पुरुवंशी राजा द्वारा नियुक्त धर्माधिकारी बताता है।
- शकुन्तला के जन्म का वृत्तान्त अनसूया राजा को बताती है।
- कौशिक (विश्वामित्र) गौतमी नदी के किनारे तपस्या कर रहे थे।
- प्रियंवदा दो वृक्षों के सेंचन का ऋण बताकर शकुन्तला को रोकती है राजा अपनी अँगूठी देकर शकुन्तला को ऋण मुक्त करना चाहता है।
- द्वितीय अङ्क का आरम्भ खिन्न विदूषक के प्रवेश के साथ होता है जो राजा के 'मृगया' के व्यसन से दुःखी है।
- द्वितीय अङ्क में सेनापति और विदूषक 'मृगया' (शिकार) के गुण-दोष की चर्चा करते हैं।
- दुष्यन्त, शकुन्तला के प्रति अपने प्रेम को विदूषक से कहता है और कहीं यह अन्तःपुर में न बता दे इसलिए उस बात को हँसी में कही 'बात' कहता है।
- करभक सन्देश लाता है कि चौथे दिन महारानी (दुष्यन्त की माता) के व्रत (जीवित्पुत्रिका/जिउतियाव्रत) का 'पारण' है।
- राजा अपने स्थान पर 'विदूषक' को भेज देता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'शिष्य' के प्रवेश से होता है जो शकुन्तला के अस्वस्थ होने की खबर प्रियंवदा से प्राप्त होने का अभिनय करता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'विष्कम्भक' से होता है।
- तृतीय अङ्क में दुष्यन्त के शकुन्तला के समीप उपस्थित होने पर दोनों सखियाँ मृग-शावक को उसकी माँ से मिलाने के बहाने से हट जाती हैं।
- दुष्यन्त तृतीय अङ्क में **शकुन्तला से गान्धर्व विवाह** करता है। यह विवाह केवल क्षत्रियों के लिए ही स्वीकृत था।
- गौतमी दोनों सखियों के साथ शकुन्तला का स्वास्थ्य जानने आती है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ पुष्प चुनती हुई दो सखियों (प्रियंवदा, अनसूया) के प्रवेश के साथ होता है।
- अनसूया, शकुन्तला के 'भाग्यदेवता' के पूजन के लिए अधिक फूल तोड़ने को कहती है।
- शाप देकर जाते हुए **दुर्वासा को मनाने प्रियंवदा** जाती है।
- शकुन्तला कुटिया के द्वार पर बाएँ हाथ पर मुँह रखे चित्रलिखित सी बैठी है।
- शाप का वृत्तान्त केवल अनसूया और प्रियंवदा को ज्ञात रहता है।
- चौथे अङ्क का आरम्भ भी **शुद्ध विष्कम्भक** के साथ होता है।
- विष्कम्भक के पश्चात् सोकर उठे 'शिष्य' का प्रवेश मंच पर होता है। जो काश्यप के आदेशानुसार 'कितनी रात शेष है' यह जानने के लिए बाहर आता है।
- 'शकुन्तला सुखपूर्वक सोई कि नहीं' यह जानने के लिए गयी हुई प्रियंवदा यह समाचार लाती है कि 'कण्व' ने शकुन्तला के विवाह को अनुमति दे दी है।

- शकुन्तला 'गर्भिणी' है यह समाचार कण्व को **'अशरीरधारी छन्दोमयी'** वाणी ने यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर दिया।
- इस घटना को प्रियंवदा, अनसूया से बताती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई हेतु नारियल के डिब्बे में बकुल (मौलश्री) की माला, केसर आदि आम की डाल पर लटका कर रखती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई के अवसर पर गोरोचन, तीर्थों की मिट्टी, दूब के अग्रभाग आदि वस्तुएँ इकट्ठा करती है।
- स्वस्तिवाचन के समय तीन तापसियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं।
- पहली तापसी **'महादेवी'** शब्द प्राप्त करने, दूसरी **'वीर पुत्र'** को प्राप्त करने का और तीसरी **'पति से अधिक सम्मान'** प्राप्त करने का आशीर्वाद देती है।
- दो ऋषि कुमार जिनके नाम **नारद** व **गौतम** हैं, वे वृक्षों द्वारा प्रदत्त वस्त्र-आभूषण आदि शकुन्तला के लिए लाते हैं।
- दोनों सखियाँ चित्रकारी से प्राप्त ज्ञान के आधार पर शकुन्तला का शृङ्गार करती हैं।
- पूरे नाटक में **महर्षि कण्व केवल चौथे अङ्क** में दिखाई पड़ते हैं। वे स्नान के उपरान्त **'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति'**..... श्लोक के साथ मंच पर प्रविष्ट होते हैं।
- चतुर्थ अङ्क के **22 श्लोकों में 14 श्लोक महर्षि कण्व** ने कहे हैं। चौथे अङ्क के प्रसिद्ध चार श्लोक भी महर्षि कण्व द्वारा कहे गये हैं।
- **ययाति** चंद्रवंश के संस्थापक राजाओं में थे जिनकी **देवयानी** और **शर्मिष्ठा** नाम की दो पत्नियाँ थीं।
- **देवयानी** दानवों के गुरु **शुक्राचार्य की पुत्री** और ययाति की विवाहिता पत्नी थी।
- दानवों के राजा **'वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा** देवयानी की सेविका के रूप में आयी थी। ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया।
- ययाति के 5 पुत्रों में **शर्मिष्ठा का पुत्र 'पुरु'** भी था जिसने शुक्राचार्य के शाप से वृद्ध हुए ययाति की वृद्धावस्था अपने ऊपर ले लिया था।
- अग्निवेदी की परिक्रमा करते हुए कण्व ने ऋग्वैदिक छन्द 'त्रिष्टुप्' में शकुन्तला को आशीर्वाद दिया।
- 'त्रिष्टुप्' के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, 4 या 5 वर्ण पर यति होती है।
- वृक्षों के प्रथम 'पुष्पोद्गम' के समय शकुन्तला आश्रम में उत्सव मनाया करती थी।
- 'वृक्षों से' कण्व द्वारा शकुन्तला के जाने हेतु आज्ञा माँगने पर वे 'कोयल' की आवाज में आज्ञा प्रदान करते हैं।
- वृक्षों ने शकुन्तला को कोयल की आवाज में जाने की आज्ञा दे दी है। इस बात की कण्व अपरवक्त्र छन्द में पुष्टि करते हैं।
- आकाशवाणी के द्वारा शकुन्तला यात्रा की जो मङ्गल कामना की गई है वह **शाकुन्तलम् का 'मध्यनान्दी'** है।
- जाती हुई शकुन्तला अपनी **लता-बहन 'वनज्योत्स्ना'** से गले मिलकर विदाई लेती है। जो 'आम्रवृक्ष' से लिपटी है। और इसे धरोहर के रूप में सखियों के हाथ में देती है।
- शकुन्तला कण्व से गर्भ के कारण शिथिल हरिणी के कुशलपूर्वक सन्तानोत्पत्ति का समाचार अपने पास भेजने को कहती है।
- कुशाग्रों से विंधे मुखवाले जिस मृग के मुख पर शकुन्तला ने इंगुदी (हिंगोट) का तेल लगाया था तथा साँवा के चावल से पाला था वह शकुन्तला के जाते समय उसका वस्त्र खींचता है। वह उसे पिता कण्व को सौंपती है।
- शकुन्तला के साथ सरोवर के तट तक आये कण्व क्षीरवृक्ष (पीपल) के नीचे बैठ कर दुष्यंत को भेजने हेतु संदेश देते हैं।
- कमल के पत्ते की ओट में बैठे सहचर (चकवा) को न देख पाने के कारण चकवी रोती (चिल्लाती) है।
- शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में डाले गये 'नीवार' अब कुटी के द्वार पर उगे हैं जो कण्व को उसकी याद दिलायेंगे।
- **''अपराजिता रक्षाकरण्डक''** सिंह शावक के साथ खेलते सर्वदमन के हाथ पर बंधा है जो बालक के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य के छूने पर सर्प बनकर डस लेता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र-सारथि मातलि राजा में क्रोध या वीरता को जगाने के लिए विदूषक पर आक्रमण करता है।
- मातलि विदूषक पर आक्रमण करके उसे **'मेघप्रतिच्छन्द'** नामक महल के ऊपरी मंजिल पर ले जाता है।
- राजा उस पर आक्रमण हेतु 'यवनी' नामक परिचारिका से धनुष माँगता है।
- मातलि राजा के समक्ष प्रकट होकर राजा को देवासुर संग्राम में इन्द्र के सहायतार्थ चलने हेतु निवेदन करता है।
- **कालनेमि का वंशज 'दुर्जय'** ने इन्द्र पर आक्रमण किया जिसे केवल दुष्यन्त मार सकता है।
- राजा दुष्यन्त के **मंत्री 'पिशुन'** हैं जिन पर वह देवासुर संग्राम में जाते हुए राज्यभार सौंपता है। विदूषक से यह बात उन्हें बताने के लिए कहता है।
- **हेमकूट किन्नरों का पर्वत** है जहाँ प्रजापति 'मारीच' रहते हैं।
- जब मातलि 'राजा' के आगमन की सूचना (मारीच को) देने जाता है तब राजा अशोक वृक्ष के नीचे बैठता है।
- 'जातकर्म' 16 संस्कारों में चौथा है। जिस अवसर पर सर्वदमन के हाथ पर **'अपराजिता'** नामक रक्षासूत्र बाँधा गया था।
- मारीच **'वत्स, चिरंजीव पृथिवीं पालय'** आशीर्वाद राजा को देते हैं तथा दुर्वासा - शाप का वृत्तान्त दोनों को बताते हैं।
- अदृश्य तेजोमयी मूर्ति के रूप में मेनका 'अप्सरास्तीर्थ' से शकुन्तला को लेकर दाक्षायणी (मारीच-पत्नी) के पास गयी।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का भरतवाक्य (अन्तिम श्लोक) (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय) **'रुचिरा' छन्द** में है। जिसके प्रत्येक चरण में 13 वर्ण, 4, 9 पर यति होती है।

- जीवों को बलात् वश में कर लेने के कारण भरत का नाम 'सर्वदमन' था।
- पञ्चम अङ्क में अंगूठी के शचीतीर्थ में जलतर्पण के समय गिरने की बात का पता सर्वप्रथम 'गौतमी' के मुख से पता चलता है।
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चारों प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व ने कहे हैं।
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में कुल 22 श्लोक हैं, जिसमें 14 श्लोक महर्षि कण्व के द्वारा बोले गये हैं।
- चतुर्थ अङ्क में "**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः**" (4.12) इस श्लोक को प्रियंवदा तथा "**एषापि प्रियेण विना गमयति रजनी**" (4.16) इस एक श्लोक को अनसूया बोलती है।
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के केवल चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व का दर्शन होता है।
- चतुर्थ अङ्क के बाद अनसूया और प्रियंवदा का वर्णन नहीं मिलता है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के महत्त्वपूर्ण संवाद/कथन/सूक्तियाँ

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
01.	**आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुर समागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।**	राजा अपने नगर में प्रवेश करके और अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर यहाँ की बातों को याद करेगा अथवा नहीं।	**अनसूया**
02.	**न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।**	उसप्रकार की सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती हैं।	**प्रियंवदा**
03.	**गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।**	गुणवान् व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए, यह (माता-पिता का) प्रथम संकल्प होता है।	**अनसूया**
04.	**ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया**	सखि शकुन्तला के सौभाग्यदेवता (पति) की भी तो पूजा करनी है	**अनसूया**
05.	**सखि, अतिथीनामिव निवेदितम्**	सखी! किसी अतिथि की सी यह आवाज है।	**अनसूया**
06.	**ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।**	शकुन्तला तो कुटी पर उपस्थित है ही।	**प्रियंवदा**
07.	**अद्य पुनर्हृदयेनासन्निहिता।**	किन्तु आज वह हृदय से अनुपस्थित है। अर्थात् आज उसका मन कहीं और है।	**अनसूया**
08.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ (4.1)** पहले कही बात को स्मरण नहीं करता है।	एकाग्रचित्त से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नहीं देख रही है। वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति	**दुर्वासा (नेपथ्ये)** **दुर्वासा (नेपथ्ये)**
09.	**हा धिक्, हा धिक्। अप्रियमेव संवृत्तं कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला।**	हाय हाय धिक्कार है। अनर्थ हो गया। किसी पूजनीय व्यक्ति के प्रति शून्य हृदयवाली शकुन्तला ने कुछ अपराध कर दिया है।	**प्रियंवदा**
10.	**न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि। एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः**	जिस किसी साधारण व्यक्ति के प्रति नहीं। ये तो शीघ्र कुपित हो जाने वाले महर्षि दुर्वासा हैं।	**प्रियंवदा**
11.	**कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।**	अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है?	**अनसूया**
12.	**सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति**	सखी! स्वभाव से टेढ़े वे महर्षि दुर्वासा किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं।	**प्रियंवदा**
13.	**भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपः प्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।**	भगवन्! आपके तप के प्रभाव को न जानने वाली आपकी पुत्रीजन शकुन्तला का यह पहला अपराध है– यह समझकर आपके द्वारा उसका यह एक अपराध क्षमा कर दिया जाना चाहिए।	**प्रियंवदा**

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
14.	**न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति।**	मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
15.	**अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।**	'पहचान के आभूषण को दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा'–यहकथन को बताती है। कहते कहते ही वे अदृश्य हो गए।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
16.	**अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्**	उस राजर्षि के द्वारा अपने नाम से अङ्कित अँगूठी स्मृति-चिह्न के रूप में शकुन्तला की अंगुली में स्वयं पहनायी गयी थी	**अनसूया**
17.	**वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी**	बायें हाथ पर मुँह रखी हुई प्रियसखी शकुन्तला चित्रित सी बैठी हुई है।	**प्रियंवदा**
18.	**भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्।**	पति के ध्यान में मग्न होने के कारण उसे अपने आपकी सुध नहीं है, फिर अतिथि की बात ही क्या है?	**प्रियंवदा**
19.	**प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एव वृत्तान्तस्तिष्ठतु**	प्रियंवदा, यह समाचार हम दोनों के मुख तक ही सीमित रहे।	**अनसूया**
20.	**रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।**	स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी शकुन्तला की रक्षा करनी चाहिए। (अन्यथा यह समाचार सुनकर उसे बहुत आघात पहुँचेगा)	**अनसूया**
21.	**को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति**	भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्मजल से सींचेगा।	**प्रियंवदा**
22.	**तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।**	यह संसार दो तेजों चन्द्रमा और सूर्य के एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी दशाओं के परिवर्तित होने के विषय में मानो नियंत्रित अर्थात् शिक्षित किया जा रहा है।	**कण्व का शिष्य**
23.	**इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्र सुदुःसहानि (4.3)**	निश्चय ही स्त्रियों को अपने इष्टजन (प्रियतमों) के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं।	**कण्व का शिष्य**
24.	**तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्।**	राजा ने शकुन्तला के साथ अशिष्ट व्यवहार किया है।	**अनसूया**
25.	**काम इदानीं सकामो भवतु येनासत्यसन्धे जने शुद्धहृदया सखी पदं कारिता।**	कामदेव की अब इच्छा पूर्ण हो, जिसने असत्यप्रतिज्ञ व्यक्ति (दुष्यन्त) के प्रति शुद्ध हृदयवाली सखी शकुन्तला का प्रेम कराया है।	**अनसूया**
26.	**दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्। ननु सखीगामी दोष इति।**	कष्ट सहन करने वाले तपस्वियों में से किससे प्रार्थना करें। हमारी सखी पर दोष आयेगा।	**अनसूया**
27.	**वत्से, इतः सद्योहुतानग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व**	पुत्री! अभी हवन की गयी अग्नि की इधर से प्रदक्षिणा करो।	**महर्षि कण्व**
28.	**भगवन्! वरः खल्वेषः नाशीः।**	भगवन्! यह तो वरदान है, केवल आशीर्वाद नहीं।	**गौतमी**
29.	**भो भोः सन्निहितास्तपोवनतरवः! सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्**	हे समीपस्थ तपोवन के वृक्षों! वही यह शकुन्तला पति के घर जा रही है, आप सभी लोग अनुमति दें।	**महर्षि कण्व**

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
30.	अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः। (4.10)	वृक्षों ने इस शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति दे दी है।	महर्षि कण्व
31.	शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः।	इस शकुन्तला का मार्ग शान्त और अनुकूल वायु वाला एवं कल्याण करने वाला हो।	आकाश भाषित
32.	उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः। (4.12)	मृगियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है, मोरों ने नाचना छोड़ दिया है	प्रियंवदा
33.	अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः। (4.12)	लतायें पीले पत्तों को गिराकर मानो आँसुओं को छोड़ रही हैं।	प्रियंवदा
34.	तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये।	हे पिताजी! मैं अपनी लता-बहन वनज्योत्स्ना से विदाई ले लूँ।	शकुन्तला
35.	अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि	आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी।	शकुन्तला
36.	अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः।	अब मैं इस वनज्योत्स्ना और तुम्हारे विषय में निश्चिन्त हो गया हूँ।	महर्षि कण्व
37.	हला एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः	सखियों, इस लता को तुम दोनों के ही हाथ में सौंप रही हूँ।	शकुन्तला
38.	अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः।	इस जन (हम दोनों) को किसके हाथ में सौंप रही हो।	दोनों सखियाँ
39.	को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते?	यह कौन मेरे वस्त्र से लिपट रहा है।	शकुन्तला
40.	सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते	पुत्रवत् पाला गया यह मृग तेरा मार्ग नहीं छोड़ रहा है।	महर्षि कण्व
41.	वत्स किं सहवासपरित्यागिनीं मामनुसरसि।	पुत्र, साथ छोड़कर जाने वाली मुझ (शकुन्तला) के पीछे-पीछे क्यों आ रहे हो।	शकुन्तला
42.	वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् (4.15)	अश्रुप्रवाह को धैर्यपूर्वक रोको।	महर्षि कण्व
43.	मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति।	इस ऊबड़-खाबड़ भूमि में तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं।	महर्षि कण्व
44.	भगवन्, ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते।	भगवन्, यात्रा के समय प्रियव्यक्ति का जलाशय तक अनुगमन करना चाहिए–ऐसा सुना जाता है।	शार्ङ्गरव
45.	गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति। (4.16)	आशा का बन्धन असहय वियोग के दुःख को भी सहन करा देता है।	अनसूया
46.	अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः।.... (4.17)	संयम रूपी धन वाले हम लोगों को तथा अपने ऊँचे कुल को ध्यान में रखते हुए आप कोई व्यवहार करें।	महर्षि कण्व
47.	भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः (4.17)	इसके आगे तो भाग्य के अधीन है, वह हम वधू के सम्बन्धियों को नहीं कहना चाहिए।	महर्षि कण्व
48.	वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्	वनवासी होते हुए भी हम लोग लोक व्यवहार को जानने वाले हैं।	महर्षि कण्व
49.	न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम	वस्तुतः विद्वानों को कुछ भी अज्ञात नहीं है।	शार्ङ्गरव
50.	शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने। (4.18)	गुरुजनों = बड़ों की सेवा करना, सपत्नियों के साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना।	महर्षि कण्व

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
51.	**यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः। (4.18)**	इस प्रकार आचरण करने वाली युवतियाँ गृहलक्ष्मी के पद को प्राप्त कर लेती हैं, और इसके प्रतिकूल आचरण करने वाली युवतियाँ कुल के लिये आधि बन जाती हैं।	**महर्षि कण्व**
52.	**वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोः तत्र गन्तुम्।**	पुत्री इन दोनों का भी विवाह करना है, इनका वहाँ जाना उचित नहीं है।	**महर्षि कण्व**
53.	**मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि। (4.19)**	मेरे विरह से उत्पन्न शोक को शीघ्र ही भूल जाओगी।	**महर्षि कण्व**
54.	**तात, कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये?**	पिताजी मैं फिर कब तपोवन को देखूँगी? अर्थात् आप मुझे कब बुलायेंगे।	**शकुन्तला**
55.	**अतिस्नेहः पापशङ्की**	अत्यधिक प्रेम पाप (अनिष्ट) की आशङ्का करता है।	**दोनों सखियाँ**
56.	**भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी.... शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्। (4.20)**	बहुत दिनों तक चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथ्वी की सपत्नी अर्थात् राजा की पटरानी होकर अपने पति दुष्यन्त के साथ आश्रम आओगी।	**महर्षि कण्व**
57.	**शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम् (4.21)**	नीवार को देखते हुए मेरा शोक अब कैसे शान्त हो सकेगा।	**महर्षि कण्व**
58.	**गच्छ! शिवास्ते पन्थानः सन्तु।**	जाओ! तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।	**महर्षि कण्व**
59.	**तात! शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव तपोवनं कथं प्रविशावः।**	पिताजी, शकुन्तला से रहित इस सूने तपोवन में हम कैसे प्रवेश करें।	**अनसूया एवं प्रियंवदा दोनों सखियाँ**
60.	**हन्त भोः! शकुन्तलां पतिकुलं विसृज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्।**	अहा! शकुन्तला को ससुराल भेजकर अब मुझे मानसिक शान्ति प्राप्त हुई।	**महर्षि कण्व**
61.	**अर्थो हि कन्या परकीय एव। (4.22)**	कन्या वस्तुतः दूसरे का ही धन है।	**महर्षि कण्व**
62.	**जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा (4.22)**	मेरा यह हृदय उसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न हो रहा है, जिस प्रकार धरोहर को लौटाने पर धरोहर रखने वाले व्यक्ति का मन प्रसन्न होता है।	**महर्षि कण्व**

अभिज्ञानशाकुन्तलम्- बिन्दुवार अध्ययन

- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के रचयिता हैं - **कालिदास**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है - **नाटक**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तले' कति अङ्काः सन्ति? - **7 (सप्त)**
- 'शाकुन्तलकथायाः' वास्तव्यमुपजीव्यमस्ति - **महाभारतम्**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का अङ्गी रस है - **शृङ्गार**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में किस रीति का प्रयोग है - **वैदर्भी रीति का**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का दुष्यन्त नायक है - **धीरोदात्त**
- महाभारतस्य कस्मात् पर्वणः कथां स्वीकृत्य कालिदासेन 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' विरचितम् - **आदिपर्व से**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया? -**विलियमजोन्स ने**
- 'शाकुन्तलम्' की कथा और कहाँ प्राप्त है? - **महाभारत/पद्मपुराण दोनों में**
- महाभारत पर आश्रित नाटक है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- एक आभरण खो जाने से किस कथा में स्थिति बदल गयी है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में 'अभिज्ञान' शब्द से किसका बोध होता है - **अँगूठी का**
- 'अभिज्ञान' शब्द का अर्थ है - **पहचान**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का उत्स (मूल) है? - **महाभारतम्**
- शाकुन्तलमङ्गलाचरणे कीदृशः शिवः वर्णितः?- **अष्टमूर्तिः**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कथानक - **ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है**
- 'वामाः कुलस्याधयः' मे 'वामा' का क्या अर्थ है- **विपरीता**
- 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' - इस दृष्टान्त द्वारा किसने अपनी कृतार्थता स्वीकार की है? - **कण्व**

➤ ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।'' इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको सङ्केतित किया गया है? - **दुष्यन्त को**

➤ 'आमन्त्रयस्व सहचरम्' का अभिप्राय है - **सहचर से विदा ले लो**

➤ विदाई के साथ कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया? - **शुश्रूषस्व गुरून् .....**

➤ 'यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्' यहाँ 'पतिरोषधीनाम्' शब्द प्रयुक्त हुआ है - **चन्द्रमा के लिये**

➤ ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने'' में 'परिजन' का अर्थ है? - **सेवकजन**

➤ ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये ..... विज्ञानम्।'' - **प्रयोग**

➤ अथवा भवितव्यानां ..... भवन्ति सर्वत्र। - **द्वाराणि**

➤ गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः। चीनांशुकमिव केतोः ..... नीयमानस्य - **प्रतिवातं**

➤ ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु ..... मन्तःकरण- प्रवृत्तयः।'' - **प्रमाण**

➤ ''अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। ..... हृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्।।'' - **अज्ञात**

➤ येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना। स स ..... तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम्।। - **पापादृते**

➤ ''तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको ..... इवात्मदशान्तरेषु।'' - **नियम्यत**

➤ ''तत्र श्लोकचतुष्टयम्'' इत्युक्तौ 'तत्र' इति पदेन आशयोऽस्ति।- **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थोऽङ्कः**

➤ धीवरेण शकुन्तलाया अङ्गुलीयकप्राप्तिः कस्मिन्नङ्के वर्णिता - **षष्ठ**

➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में विदूषक का चित्रण हुआ है? - **द्वितीय अङ्क में**

➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अङ्क के प्रारम्भ में सर्वप्रथम शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग किया गया है - **तृतीय अङ्क**

➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है - **षष्ठ अङ्क में**

➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अङ्क में 'विष्कम्भक' समाप्त होता है? - **चतुर्थ**

➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शापवृत्तान्त किस अङ्क में है-**चतुर्थ**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् की रचना करते समय कवि कालिदास की किस मौलिकता के कारण दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बन पाया - **दुर्वासा ऋषि के शाप की कल्पना के कारण**

➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है? - **अङ्क के प्रारम्भ में**

➤ कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के किस अङ्क को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है? - **चतुर्थ**

➤ कस्मिन् अङ्के शकुन्तला मनोगतं गीतवस्तु नलिनीपत्रे नखैर्निक्षिप्तवर्णं करोति? - **तृतीये**

➤ आकाशयानेन सानुमती नामाप्सरा कस्मिन् अङ्के प्रविशति- - **षष्ठे**

➤ शकुन्तलायाः हस्तात् परिभ्रष्टम् अङ्गुलीयकं पुनः कस्मिन्नङ्के राज्ञा आसादितम्? - **षष्ठे**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कस्मिन्नङ्के कण्वः शकुन्तलामुपदिशति? - **चतुर्थे**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तले वायोः विभिन्नस्तरेषु परिभ्रमणं कस्मिन्नङ्के वर्तते - **सप्तमे**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तले षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति? -**प्रवेशकस्य**

➤ किस स्थान पर शकुन्तला की अँगूठी गिरी? -**शचीतीर्थ में**

➤ 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति'-अत्र काव्यादर्शकाराभिप्रेतः गुणः कः? - **माधुर्यम्**

➤ शकुन्तला की शापमुक्ति का कारण है? - **अँगूठी**

➤ राजा दुष्यन्त शकुन्तला को पहचान सकते हैं जब वे देखेंगे - **अँगूठी**

➤ अनसूया एवं प्रियंवदा ने अपने किस ज्ञान के आधार पर शकुन्तला को आभूषण पहनाया- **चित्रकारी में आभूषण प्रयोग से प्राप्त ज्ञान के आधार पर ।**

➤ 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज (वीर्य) पल रहा है'- यह बात कण्व को किसने बतायी? -**छन्दोमयी वाणी ने**

➤ शकुन्तला ने विदाई के समय जिस लता का आलिङ्गन किया था उसका क्या नाम था? - **वनज्योत्स्ना**

➤ दुष्यन्त के वंश का नाम था - **पुरु**

➤ शकुन्तला के अनिष्ट निवारण के लिये महर्षि कण्व कहाँ गये थे? - **सोमतीर्थ**

➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं? - **22**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थाङ्कस्य कति श्लोकाः प्रसिद्धाः? -**चत्वारः**

➤ ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः,
पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा,
पश्योदग्रप्लुतत्त्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।''
इत्यस्मिन् श्लोके कोऽलङ्कारः - **स्वभावोक्तिः**

➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के चतुर्थ अङ्क में ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' पद्यांश में अलङ्कार है - **उत्प्रेक्षा**

➤ पक्षिभिः पालिता नायिका का? - **शकुन्तला**

➤ शकुन्तलायाः पालकपिता कः? - **कण्वः**

➤ शक्रावतारतीर्थस्य निवासी कः? - **धीवरः**

➤ 'बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः' में अलङ्कार है - **अर्थान्तरन्यास**

➤ दुष्यन्तगतां रतिं प्रति शकुन्तला केन शब्देन प्रतिपाद्यते - **आलम्बनविभावः**

➤ 'परभृत' किस पक्षी को कहते हैं? - **कोयल**

➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का खड़ी बोली गद्य में अनुवाद

किया - **राजालक्ष्मण सिंह ने**

➢राजा लक्ष्मण सिंह ने 'अभिज्ञानशाकुन्तल' का अनुवाद कब किया?
- **1763 ई0**

➢ हंसपदिका का गीत है - **शाकुन्तलम् में**

➢ गृहिणी किम् उच्यते? - **गृहम्**

➢ दुष्यन्त के साथ शकुन्तला का विवाह सम्पन्न होने पर उसकी सखियाँ हो जाती हैं - **प्रसन्न**

➢ ''अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः'' इस उक्ति से युक्त नाटक है- **- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**

➢ ''अहो रागपरिवाहिणी गीतिः'' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है? - **हंसपदिका के गाने पर**

➢ 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु'– इस उक्ति से युक्त नाटक है
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्''
किस नाटक का श्लोक है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्'' इदं वाक्यमस्ति?
- **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➢ ''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया''–
कस्य वचनमिदम्? - **कण्वस्य**

➢ ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' किस ग्रन्थ की उक्ति है?
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''राजरक्षितव्यानि तपोवनानि नाम'' यह वाक्य किस नाटक में है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्'' किस काव्य की उक्ति है?
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठः कस्मिन् छन्दसि भवति
- **स्रग्धरा**

➢ 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' में कन्या की उपमा किस उपमान के साथ दी गयी है? - **धरोहर के साथ**

➢ ''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्'' यह उक्ति कहाँ की है?
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ की है
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'' सूक्ति है
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम् की**

➢ ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' इति कस्य पंक्तिः?
- **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य**

➢ 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' उक्ति है
- **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➢ ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' श्लोकांशोऽयं तिष्ठति
- **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➢ ''भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि'' यह उक्ति है
- **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➢ ''तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' यह श्लोकांश 'शाकुन्तलम्' के किस अङ्क से है?
- **चतुर्थ अङ्क**

➢ ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'' यह कथन किसका है?
- **प्रियंवदा**

➢ ''कुसुममिव.....यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्'' - **लोभनीयं**

➢ ''अथवा ..... द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।''- **भवितव्यानां**

➢ ''अये, लब्धं नेत्रनिर्वाणम्'' इति कः कथयति अभिज्ञानशाकुन्तले?
- **दुष्यन्तः**

➢ ''सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्'' इति कस्य नाटकस्य भरतवाक्येऽस्ति? -**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि'' इति सूक्तिः अस्ति -**कालिदासस्य**

➢ ''गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'' इति श्लोकः लभ्यते
- **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➢ ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानं बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः।।'' यह श्लोक किस काव्य का है?
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''वामाः कुलस्याधयः'' यह उक्ति किस ग्रन्थ में वर्णित है?
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''कामी स्वतां पश्यति'' यह सूक्ति है - **दुष्यन्त की**

➢ शकुन्तलायाः एकस्याः सख्युः नाम आसीत् - **प्रियवंदा**

➢ अभिज्ञानशाकुन्तले कयोः रसयोरपूर्वसम्मेलन विद्यते?
- **शृङ्गार-करुणयोः**

➢ ''ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते।
प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः।।''
यह श्लोक किससे सम्बन्धित है -
अभिज्ञानशाकुन्तलम् / मातलि

➢ ''अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्'' यह पंक्ति किसने किससे कही?
- **दुष्यन्त ने अँगूठी से**

➢ ''अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः''
अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह उक्ति किसकी है- **शार्ङ्गरव की**

➢ ''सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं'' किस नाटक से उद्धृत है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं'' वचन किसके सम्बन्ध में है?
- **शकुन्तला के**

➢ ''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः..... पुनर्भवं परिगत शक्तिरात्मभूः'' यह भरतवाक्य किस ग्रन्थ का है?
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति''
प्रियंवदा द्वारा उक्त वाक्य किसके लिये है? - **दुष्यन्त**

➢ ''दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।।''
यह सूचना कण्व को किससे प्राप्त हुई?
- **छन्दोमयी वाणी**

➢ 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है'-यह बात कण्व को किसके द्वारा पता चला- **अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी**

➢ ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्''
यह किससे कहा गया? - **लता-पादपों से**

➤ ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' यह किस ग्रन्थ में है- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➤ ''यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः'' यह सूक्ति किस नाटक से है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् से**

➤ ''शुश्रूषस्व गुरून्'' श्लोक है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**

➤ ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' सूक्ति सम्बद्ध है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् से**

➤ ''तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्'' इत्युक्तिः सङ्गच्छते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➤ 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं.....' इत्यस्ति - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➤ ''आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्'' इति वाक्यं वर्तते - **कालिदासस्य**

➤ ''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्'' इति वाक्यम् अस्ति- **दुष्यन्तस्य**

➤ 'वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता'' कस्येयमुक्तिः - **कण्वस्य**

➤ 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि'–अभिज्ञानशाकुन्तले कस्य वचनमिदम्? -**वैखानसस्य**

➤ ''गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः'' कस्य उक्तिरियम् - **दुष्यन्तस्य**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तल में ''मृगानुसारिणं साक्षात्पश्यामीव पिनाकिनम्'' किसने कहा है? - **सूत**

➤ किसने कहा है ''अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः'' - **मातलि**

➤ ''तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' यह किस पात्र का कथन है - **कण्वशिष्य**

➤ 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।' उपर्युक्त पद्य किस पात्र द्वारा कहा गया है - **प्रियंवदा द्वारा**

➤ ''कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव'' यह श्लोकांश है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**

➤ ''पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः'' यह उक्ति किसकी है? - **कण्व की**

➤ सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं..... रिक्तस्थान की पूर्ति करें - **सर्वैरनुज्ञायताम्**

➤ ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' किसके लिये कहा गया है - **शकुन्तला के लिये**

➤ ''तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व'' यह कथन किसका है - **शकुन्तला का**

➤ ''गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' यह कथन है - **अनसूया का प्रियंवदा के प्रति**

➤ ''अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' इति यह उक्ति है - **दुर्वासा की**

➤ ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' उक्ति है - **कण्व की**

➤ ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्'' यह उक्ति है - **कण्व की**

➤ ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्''– वाक्य किसके बारे में कहा गया है - **शकुन्तला**

➤ 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति' इत्यत्र 'लक्ष्म' शब्दस्य कोऽर्थः? - **चिह्नम्**

➤ 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' यह कथन है- **दुष्यन्त**

➤ ''शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः'' यह उक्ति किसकी है? - **आकाशभाषित की**

➤ 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' यह कथन है? - **अनसूया और प्रियंवदा का**

➤ ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी''–यह कथन है - **अनसूया का शकुन्तला के प्रति**

➤ ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः'' यह वक्तव्य किसका है? - **काश्यप का**

➤ ''कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'' यह कथन है - **अनसूया का**

➤ ''ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते'' यह कथन किसका है? - **कण्व शिष्य शार्ङ्गरव का**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तले परित्यागानन्तरं शकुन्तला कुत्र न्यवसत्? - **मारीचाश्रमे**

➤ ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्'' इति को निरूपयति - **मारीचः**

➤ ''मनोरथा नाम तटप्रपाताः'' इयम् उक्तिः उपलभ्यते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➤ निम्नलिखित पंक्तौ छन्दसः नाम निर्दिशतु ''असंशयं क्षत्र परिग्रहक्षमा, यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।।'' - **वंशस्थम्**

➤ ''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः'' इति भरतवाक्यांशः कस्यास्ति - **कालिदासस्य**

➤ ''अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः'' इस पंक्ति को कौन कहता है? - **मातलि**

➤ सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➤ 'रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्' सूक्ति है - **अभिज्ञानशाकुन्तल**

➤ ''स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु''–एषा पंक्तिः कस्मिन् नाटके समुपलभ्यते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

अभ्यास प्रश्न (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)

1. कालिदास की 'नाट्यकृति' नहीं है –
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) ऋतुसंहारम्
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अङ्कों की संख्या है –
(A) 5 (B) 7
(C) 8 (D) 6

3. शकुन्तला का पालन-पोषण हुआ था –
(A) विश्वामित्र के आश्रम में
(B) कण्व के आश्रम में
(C) दुर्वासा के आश्रम में
(D) मारीच के आश्रम में

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रधान गुण है –
(A) माधुर्य (B) प्रसाद
(C) ओज (D) कोई नहीं

5. शकुन्तला को शाप दिया था –
(A) कण्व ने (B) मारीच ने
(C) विश्वामित्र ने (D) दुर्वासा ने

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक है –
(A) कण्व (B) माधव्य
(C) दुर्वासा (D) दुष्यन्त

7. शकुन्तला को विदाई के समय रेशमी वस्त्र दिये थे–
(A) सखियों ने (B) मारीच ऋषि ने
(C) वृक्षों ने (D) कण्व ने

8. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में विदूषक है –
(A) शार्ङ्गरव (B) मातलि
(C) माधव्य (D) वसन्तक

9. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की नायिका है –
(A) अनसूया (B) गौतमी
(C) प्रियंवदा (D) शकुन्तला

10. भ्रमर से शकुन्तला की रक्षा कौन करता है –
(A) अनसूया (B) दुष्यन्त
(C) गौतमी (D) कण्व

11. मृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त किसके आश्रम में पहुँचे –
(A) मारीच के आश्रम में (B) विश्वामित्र के आश्रम में
(C) कण्व के आश्रम में (D) वाल्मीकि के आश्रम में

12. शकुन्तला की विदाई का वर्णन किस अङ्क में है –
(A) द्वितीय अङ्क में (B) पञ्चम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

13. शकुन्तला पति के चिन्तन में बैठी है –
(A) राजभवन में (B) उपवन में
(C) कुटिया के पास (D) नदी के किनारे

14. शकुन्तला की माता का नाम था –
(A) मेनका (B) गौतमी
(C) हंसपदिका (D) वसुमती

15. शकुन्तला के पुत्र का नाम था –
(A) सर्वदमन (भरत) (B) गौतम
(C) हारीत (D) नारद

16. शकुन्तला की अँगूठी गिरी थी –
(A) शचीतीर्थ में (B) मार्ग में
(C) सोमतीर्थ में (D) प्रभातीर्थ में

17. दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिये मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था –
(A) सानुमती को (B) भानुमती को
(C) रम्भा को (D) उर्वशी को

18. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में अङ्गी रस है –
(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) करुण (D) हास्य

19. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' में छन्द है –
(A) वसन्ततिलका (B) वंशस्थ
(C) अनुष्टुप् (D) इन्द्रवज्रा

20. दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह था –
(A) गान्धर्व (B) प्राजापत्य
(C) ब्रह्म (D) दैव

1. (B) 2. (B) 3. (B) 4. (B) 5. (D) 6. (D) 7. (C) 8. (C) 9. (D) 10. (B) 11. (C)
12. (D) 13. (C) 14. (A) 15. (A) 16. (A) 17. (A) 18. (A) 19. (D) 20. (A)

21. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' किसने कहा –
(A) दुष्यन्त (B) कण्व
(C) विदूषक (D) शारद्वत

22. नाटक में 'जो बात सुनने योग्य न हो' उसे कहते हैं –
(A) आत्मगतम् (B) प्रकाशम्
(C) नेपथ्य (D) नान्दी

23. नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है –
(A) मध्य में (B) अन्त में
(C) प्रारम्भ में (D) कहीं भी

24. अभिनेता जहाँ वेशभूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं–
(A) नान्दी (B) पूर्वरङ्ग
(C) नेपथ्य (D) रङ्गमञ्च

25. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है –
(A) शङ्कर का बैल (B) मङ्गलाचरण
(C) एक देवता (D) अष्टमूर्ति शिव

26. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया –
(A) गेटे (B) विलियम जोन्स
(C) मैक्समूलर (D) शेक्सपियर

27. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पुरुष पात्रों में नहीं है –
(A) वसन्तक (B) माधव्य
(C) भद्रसेन (D) सोमरात

28. महर्षि कण्व का आश्रम था –
(A) मालिनी नदी के तट पर (B) गङ्गा नदी के तट पर
(C) यमुना नदी के तट पर (D) गौतमी नदी के तट पर

29. दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गये हुए थे –
(A) सोमतीर्थ (B) शचीतीर्थ
(C) माघमेला प्रयाग (D) हरिद्वार

30. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का उपजीव्यग्रन्थ है –
(A) भागवतपुराण (B) रामायण
(C) महाभारत (D) वेद

31. मारीच ऋषि का आश्रम है –
(A) हेमकूट पर्वत पर (B) विन्ध्याचल पर
(C) चित्रकूट रामगिरि पर (D) पञ्चवटी पर

32. शकुन्तला के जन्मदाता पिता थे –
(A) कण्व (B) विश्वामित्र
(C) दुर्वासा (D) मारीच

33. शकुन्तला की प्रियसखी है –
(A) प्रियंवदा (B) सानुमती
(C) गौतमी (D) मेनका

34. 'अहो रागपरिवाहिणी गीतिः' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है –
(A) शकुन्तला के गाने पर
(B) गौतमी के गाने पर
(C) हंसपदिका के गाने पर
(D) वसुमती के गाने पर

35. 'कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति' सूक्ति उद्धृत है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) मेघदूतम् से

36. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का पात्र है –
(A) वसन्तक (B) अगस्त्य
(C) अत्रि (D) शारद्वत

37. दुष्यन्त की विशेष रुचि रही है –
(A) द्यूत में (B) मृगया में
(C) मदिरापान में (D) गजारोहण में

38. अनसूया किसकी सखी है –
(A) उर्मिला की (B) सीता की
(C) शकुन्तला की (D) गौतमी की

39. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है–
(A) आर्या (B) वसन्ततिलका
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) अनुष्टुप्

40. कण्व थे –
(A) तपस्वी (B) भिक्षुक
(C) पर्यटक (D) गृहस्थ

41. ''पश्यामीव पिनाकिनम्'' यह वाक्य किसने कहा–
(A) दुष्यन्त ने सूत से
(B) कण्व ने शार्ङ्गरव से
(C) दुर्वासा ने प्रियंवदा से
(D) सूत ने दुष्यन्त से

21. (C) 22. (A) 23. (B) 24. (C) 25. (B) 26. (B) 27. (A) 28. (A) 29. (A) 30. (C) 31. (A) 32. (B)
33. (A) 34. (C) 35. (A) 36. (D) 37. (B) 38. (C) 39. (A) 40. (A) 41. (D)

42. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' यह सूक्ति है –
(A) मेघदूतम् की (B) नीतिशतकम् की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की (D) कादम्बरी की

43. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' किसने कहा –
(A) अनसूया ने (B) प्रियंवदा ने
(C) शकुन्तला ने (D) गौतमी ने

44. ''अस्तशिखरं'' में समास है –
(A) द्वन्द्वसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) द्विगुसमास (D) बहुव्रीहिसमास

45. ''उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्'' किसने किससे कहा–
(A) गौतमी ने शकुन्तला से
(B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) दोनों सखियों ने शकुन्तला से
(D) अनसूया ने प्रियंवदा से

46. ''पातुं न ..... व्यवस्यति जलम्'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) सर्वप्रथमं (B) द्वितीयं
(C) प्रथमं (D) प्रथमा

47. ''सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का अनसूया से(B) कण्व का शकुन्तला से
(C) राजा का शार्ङ्गरव से (D) गौतमी का शकुन्तला से

48. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' काश्यप (कण्व) का यह कथन किसके लिये है –
(A) राजा के लिये (B) वृक्षों के लिये
(C) ऋषियों के लिये (D) सखियों के लिये

49. ''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने'' में कण्व ने किसे उपदेश दिया –
(A) प्रियंवदा को (B) अनसूया को
(C) शकुन्तला को (D) राजा को

50. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पञ्चम अङ्क का नाम है –
(A) आश्रमप्रवेश अङ्क (B) प्रत्याख्यान अङ्क
(C) विदा अङ्क (D) पश्चात्ताप अङ्क

51. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में 'अभिज्ञान' शब्द से संकेतित/सम्बन्धित है –
(A) नूपुर (B) कङ्कण
(C) अँगूठी (D) कङ्कतम्

52. राजा दुष्यन्त की प्रथमपत्नी है –
(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) मेनका

53. राजा दुष्यन्त की द्वितीय पत्नी (प्रेमिका) थी –
(A) वसुमती (B) शकुन्तला
(C) हंसपदिका (D) प्रियंवदा

54. राजा दुष्यन्त की तृतीय पत्नी/प्रेमिका है –
(A) अनसूया (B) शकुन्तला
(C) वसुमती (D) हंसपदिका

55. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की –
(A) विष्णु की (B) जल की
(C) अष्टमूर्ति शिव की (D) आकाश की

56. कण्व का शिष्य है –
(A) माधव्य (B) गालव
(C) शारद्वत (D) वसन्तक

57. शार्ङ्गरव किसका शिष्य है –
(A) विश्वामित्र का (B) दुर्वासा का
(C) मारीच का (D) कण्व का।

58. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः'' इस सूक्ति का वक्ता कौन है –
(A) कण्व (B) दुष्यन्त
(C) शकुन्तला (D) मारीच

59. शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर तक कौन जाती है –
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) मेनका

60. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में ''अग्निगर्भा शमीमिव'' कौन है –
(A) गौतमी (B) कण्व
(C) शकुन्तला (D) प्रियंवदा

61. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' किसने, किसके लिये कहा –
(A) दुष्यन्त ने शकुन्तला के लिये
(B) कण्व ने शकुन्तला के लिये
(C) दुष्यन्त ने प्रियंवदा के लिये
(D) शकुन्तला ने दुष्यन्त के लिये

42. (C) 43. (B) 44. (B) 45. (C) 46. (C) 47. (B) 48. (B) 49. (C) 50. (B) 51. (C) 52. (A) 53. (A) 54. (B) 55. (C) 56. (C) 57. (D) 58. (B) 59. (A) 60. (C) 61. (A)

62. ययाति की पत्नी थी –
(A) शर्मिष्ठा (B) गौतमी
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी

63. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में ''पुत्रकृतकः श्यामाक-मुष्टिपरिवर्धितकः'' कौन है –
(A) सर्वदमनः (B) मृगः (दीर्घापाङ्गः)
(C) वृक्षः (D) शारद्वतः

64. ''गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'' किसकी उक्ति है–
(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) शकुन्तला (D) गौतमी

65. दुष्यन्त द्वारा परित्यक्ता शकुन्तला किस आश्रम में निवास करती है –
(A) कण्वाश्रम में (B) मारीचाश्रम में
(C) विश्वामित्राश्रम में (D) वशिष्ठाश्रम में

66. शकुन्तलापरित्याग की घटना किस अङ्क में है –
(A) चतुर्थ अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) पञ्चम अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

67. ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' किसने कहा–
(A) शार्ङ्गरव ने (B) कण्व ने
(C) राजा ने (D) शारद्वत ने

68. ''संस्पृष्टमुत्कण्ठया'' के 'संस्पृष्टम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है –
(A) सम्+पृच्छ्+क्त्वा (B) सम्+स्पृश्+क्त
(C) सम्+पा+ल्युट् (D) सम्+स्पृ+ष्टम्

69. ''समिद्धन्तः'' में प्रत्यय है –
(A) क्त (B) मतुप्
(C) क्तवतु (D) शतृ

70. ''शुश्रूषस्व'' में लकार है –
(A) लट् (B) लङ्
(C) लोट् (D) विधिलिङ्

71. ''भूयिष्ठम्'' पद में प्रत्यय है –
(A) इष्ठन् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ठ

72. ''प्रत्यर्पितन्यासः'' में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

73. 'न्यषिच्यत' में सन्धि है –
(A) गुण (B) वृद्धि
(C) यण् (D) अयादि

74. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सर्वाधिक सौन्दर्य वर्णित है –
(A) गौतमी का (B) प्रियंवदा का
(C) शकुन्तला का (D) मेनका का

75. तपस्वी होकर भी लौकिक व्यवहारों के ज्ञाता हैं –
(A) विश्वामित्र (B) दुर्वासा
(C) शार्ङ्गरव (D) कण्व

76. कण्वाश्रम की वरिष्ठा तपस्विनी है –
(A) प्रियंवदा (B) दाक्षायणी
(C) गौतमी (D) सानुमती

77. द्वितीय अङ्क में राजा को मृगया न खेलने की सलाह कौन देता है –
(A) सेनापति (B) ऋषि कण्व
(C) दौवारिक (D) माधव्य

78. शकुन्तला की क्षमायाचना के लिये दुर्वासा के पास जाती है –
(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) गौतमी (D) मेनका

79. वनज्योत्स्ना और आश्रमवृक्षों के साथ सहोदरों जैसा स्नेह किसका है –
(A) शकुन्तला का (B) प्रियंवदा का
(C) अनसूया का (D) गौतमी का

80. ''या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या'' के 'सृष्टिः' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) सृज्+क्तिन् (B) सृ+ष्टिः
(C) सृ+क्त (D) सृजन्+ल्युट्

81. 'ओदकान्तम्' पद का क्या अर्थ है –
(A) जल के किनारे तक (B) चावल के पास
(C) चन्द्रमा (D) सूर्य का सारथि

82. ''परभृतविरुतं कलं यथा'' यहाँ 'परभृत'' पद का अर्थ है–
(A) कौआ (B) कोयल
(C) दूसरे की सखी (D) पशु

62. (A) 63. (B) 64. (A) 65. (B) 66. (C) 67. (A) 68. (B) 69. (B) 70. (C) 71. (A) 72. (B) 73. (C)
74. (C) 75. (D) 76. (C) 77. (D) 78. (B) 79. (A) 80. (A) 81. (A) 82. (B)

83. 'कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः' यहाँ 'कुशेशय' पद का अर्थ है –
(A) कमल (B) नवमालिका
(C) शकुन्तला (D) केसरवृक्ष

84. ''अरण्यौकसः'' पद का शब्दार्थ है –
(A) वनवासी (B) गृहस्थ
(C) ब्रह्मचारी (D) तपस्वी

85. ''ओषधीनां पतिः'' कौन है –
(A) सूर्य (B) चन्द्रमा
(C) अरुण (D) आश्विन वैद्य

86. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में 'प्रकृतिवक्रः सः' किसके लिये प्रयुक्त किया गया है –
(A) कण्व के लिये (B) दुष्यन्त के लिये
(C) दुर्वासा के लिये (D) मारीच के लिये

87. 'अनन्यमानसा' किसका विशेषण है –
(A) प्रियंवदा का (B) शकुन्तला का
(C) गौतमी का (D) दुर्वासा का

88. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के नायक दुष्यन्त की प्रकृति है –
(A) धीरललित (B) धीरप्रशान्त
(C) धीरोदात्त (D) धीरोद्धत

89. जर्मन विद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) वेणीसंहारम्

90. दुष्यन्त को देवासुरसंग्राम की सूचना देने वाला है–
(A) विदूषक (B) मातलि
(C) मारीच (D) इन्द्र

91. वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है–
(A) कण्व आश्रम में (B) मारीच आश्रम में
(C) वशिष्ठ आश्रम में (D) विश्वामित्र आश्रम में

92. 'अपराजिता रक्षाकरण्डक' से सम्बद्ध है –
(A) दुष्यन्त (B) सर्वदमन (भरत)
(C) मारीच (D) कण्व

93. ''वामाः कुलस्याधयः'' यहाँ 'वामाः' का अर्थ है –
(A) प्रतिकूल आचरण वाली स्त्री (B) सुन्दर स्त्री
(C) बायें भाग में स्थित स्त्री (D) तरुणी स्त्री

94. ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने'' यहाँ 'परिजन' पद का अर्थ है –
(A) परिवार जन (B) सेवक जन
(C) पड़ोसी जन (D) आश्रमीय जन

95. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है –
(A) अङ्क के अन्त में (B) अङ्क के प्रारम्भ में
(C) अङ्क के मध्य में (D) कहीं भी नहीं

96. दुष्यन्त के वंश का नाम था –
(A) सूर्यवंश (B) यदुवंश
(C) पुरुवंश (D) कुरुवंश

97. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में कण्व ऋषि को किस अन्य नाम से वर्णित किया गया है –
(A) गौतम (B) काश्यप
(C) भारद्वाज (D) मारीच

98. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है' – यह बात कण्व को किसने बतायी –
(A) अनसूया एवं प्रियंवदा ने (B) गौतमी ने
(C) अशरीरिणी आकाशवाणी ने (D) शिष्यों ने

99. शकुन्तला ने अपनी विदाई के समय जिस लता का आलिंगन किया, उसका नाम था –
(A) वनज्योत्स्ना (B) केसरलता
(C) सहकारलता (D) लतापत्रिका

100. विदाई के समय कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया –
(A) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति....।
(B) पातुं न प्रथमम्.....।
(C) अस्मान् साधु विचिन्त्य.....।
(D) शुश्रूषस्व गुरून्.....।

101. दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह की सूचना महर्षि कण्व को किसने दी –
(A) गौतमी ने
(B) अशरीरिणी छन्दोमयी आकाशवाणी ने
(C) सखियों ने
(D) शिष्यों ने

83. (A) 84. (A) 85. (B) 86. (C) 87. (B) 88. (C) 89. (A) 90. (B) 91. (B) 92. (B) 93. (A) 94. (B) 95. (B) 96. (C) 97. (B) 98. (C) 99. (A) 100. (D) 101. (B)

102. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' – इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको संकेतित किया गया है –
(A) कण्व को (B) दुष्यन्त को
(C) यज्ञदेवता को (D) यजमान को

103. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है–
(A) दुर्वासा का पुत्र (B) कण्व का भ्राता
(C) कण्व का शिष्य (D) दुष्यन्त का सेवक

104. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यह कथन है –
(A) अनसूया का प्रियंवदा से
(B) अनसूया का गौतमी से
(C) प्रियंवदा का अनसूया से
(D) शकुन्तला का प्रियंवदा से

105. ''अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः'' यह कथन है –
(A) शकुन्तला का (B) अनसूया का
(C) प्रियंवदा का (D) अनसूया प्रियंवदा दोनों का

106. ''अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' यह उक्ति किसकी है –
(A) गौतमी की (B) कण्व की
(C) दुर्वासा की (D) मारीच की

107. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अशरीरिणी छन्दोमयीवाणी ने शकुन्तला विषयक वृत्तान्त किसे सुनाया –
(A) कण्व को (B) मेनका को
(C) मारीच को (D) दुष्यन्त को

108. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शापविषयक वृत्तान्त किस अङ्क में है –
(A) पञ्चम अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) षष्ठ अङ्क में

109. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं'' यह उक्ति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में किसकी है –
(A) शार्ङ्गरव की (B) शारद्वत की
(C) काश्यप (कण्व) की (D) दुर्वासा की

110. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में गौतमी है –
(A) शकुन्तला की सखी
(B) एक अप्सरा
(C) तपोवन की वरिष्ठा महिला
(D) मेनका की सखी

111. ''सुलभकोपो महर्षिः'' किसने किसको कहा –
(A) प्रियंवदा ने दुर्वासा को (B) अनसूया ने दुर्वासा को
(C) गौतमी ने कण्व को (D) मेनका ने मारीच को

112. मारीच ऋषि की पत्नी है –
(A) गौतमी (B) मेनका
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी (अदिति)

113. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) बयालीस (42) (B) बाइस (22)
(C) छियालीस (46) (D) पच्चीस (25)।

114. ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'' सूक्ति है–
(A) किरातार्जुनीयम् की (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(C) शुकनासोपदेश की (B) शिवराजविजयम् की

115. निम्नलिखित में कौन सा कथन असत्य है –
(A) कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं।
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सात सर्ग हैं।
(C) शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व से ली गयी है।
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व, दुर्वासा, मारीच और विश्वामित्र आदि ऋषियों का नाम आया है।

116. कालिदास को किस राजा का आश्रयदाता राजकवि माना जाता है –
(A) पुष्यमित्र (B) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
(C) अशोक (D) स्कन्दगुप्त

117. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः'' यह कथन किसका है –
(A) दुर्वासा का (B) काश्यप/कण्व का
(C) मारीच का (D) विश्वामित्र का

118. दुष्यन्त की राजधानी थी –
(A) अयोध्या (B) इन्द्रप्रस्थ
(C) कण्वाश्रम (D) हस्तिनापुर

119. ''कविताकामिनी का विलास'' किस कवि को कहा गया है –
(A) कालिदास को (B) भारवि को
(C) माघ को (D) दण्डी को

102. (B) 103. (C) 104. (A) 105. (D) 106. (C) 107. (A) 108. (B) 109. (C) 110. (C) 111. (A) 112. (D) 113. (B) 114. (B) 115. (B) 116. (B) 117. (B) 118. (D) 119. (A)

120. शकुन्तला के चरित्र की विशेषता नहीं है –
(A) सुन्दरी (B) प्रकृतिप्रेमी
(C) कटुभाषिणी (D) लज्जाशीलता

121. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सर्वप्रथम विदूषक का चित्रण किया गया है –
(A) प्रथम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) चतुर्थ अङ्क में (D) इनमें से कोई भी नहीं

122. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है–
(A) तृतीय अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) पञ्चम अङ्क में

123. किस नाट्यकृति में कालिदास की कला मधुरतम फल के रूप में परिणत हुई है –
(A) विक्रमोर्वशीयम् में (B) मालविकाग्निमित्रम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में(D) इनमें से किसी में नहीं

124. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का 'भरतवाक्य' है –
(A) इमां सागरपर्यन्ताम्....।
(B) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....।
(C) या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....।
(D) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्....।

125. ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' पद्यांश में अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) अर्थान्तरन्यास (D) रूपक

126. ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' यह सूक्ति किसने किससे कही–
(A) सखियों ने शकुन्तला से (B) गौतमी ने कण्व से
(C) दुष्यन्त ने सखियों से (D) कण्व ने शकुन्तला से

127. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यहाँ 'प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है।
(A) शकुन्तला के लिये (B) प्रियंवदा के लिये
(C) सानुमती के लिये (D) अनसूया के लिये

128. पतिगृह जाती हुई शकुन्तला को काश्यप/कण्व ऋषि ने आशीर्वाद दिया था –
(A) चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का
(B) धन प्राप्त करने का
(C) महादेवी बनने का
(D) पूर्णस्वस्थ रहने का

129. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' यहाँ 'मम' पद से तात्पर्य है –
(A) कण्व का (B) विश्वामित्र का
(C) दुर्वासा का (D) दुष्यन्त का

130. दुष्यन्त के लिये सन्देश वचन किसने किससे कहा–
(A) कण्व ने शाङ्र्गरव से (B) कण्व ने गौतमी से
(C) कण्व ने प्रियंवदा से (D) कण्व ने शकुन्तला से

131. ''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' यह कथन है–
(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(B) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति
(C) अनसूया का शकुन्तला के प्रति
(D) मेनका का सानुमती के प्रति

132. ''तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्'' यहाँ 'तपोधनं' शब्द प्रयुक्त हुआ है –
(A) कण्व के लिये (B) दुर्वासा के लिये
(C) मारीच के लिये (D) शार्ङ्गरव के लिये

133. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ययाति के किस पुत्र का उल्लेख किया गया है –
(A) यदु का (B) पुरु का
(C) तुर्वसु का (D) द्रुह्यु का

134. सानुमती पात्र है –
(A) उत्तररामचरितम् की (B) किरातार्जुनीयम् की
(C) कादम्बरी की (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की

135. राजशेखर ने कितने कालिदासों का उल्लेख किया है–
(A) 5 (B) 3
(C) 2 (D) 6

136. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की स्त्री-पात्र बोलती हैं –
(A) संस्कृत में (B) शौरसेनी प्राकृत में
(C) पालि में (D) खड़ी हिन्दी में

137. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सूत्रधार और नटी दोनों ने किस ऋतु का वर्णन किया है –
(A) ग्रीष्म ऋतु का (B) शिशिर ऋतु का
(C) वर्षा ऋतु का (D) हेमन्त ऋतु का

138. ''ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः'' इस श्लोक में छन्द है –
(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) स्रग्धरा
(C) हरिणी (D) शिखरिणी

120. (C) 121. (B) 122. (C) 123. (C) 124. (B) 125. (A) 126. (A) 127. (A) 128. (A) 129. (A) 130. (A) 131. (A) 132. (B) 133. (B) 134. (D) 135. (B) 136. (B) 137. (A) 138. (B)

139. ''असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा'' यहाँ 'क्षत्रपरिग्रहक्षमा' से किसका संकेत है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) क्षत्रियों की क्षमा का

140. ''वत्से, वीर प्रसविनी भव'' शकुन्तला के लिये यह आशीर्वाद किसने दिया –
(A) एक तापसी ने (B) गौतमी ने
(C) मारीच ने (D) कण्व ने

141. ''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

142. ''वामाः कुलस्याधयः'' में 'आधयः' पद का क्या अर्थ है–
(A) मानसिक व्याधि (B) बाधा
(C) मोक्ष (D) आधा

143. ''मा स्म प्रतीपं गमः'' में 'प्रतीपम्' पद का क्या अर्थ है–
(A) प्रतिकूल (विपरीत) (B) अनुकूल
(C) आचरण (D) चरित्र

144. ''तात! कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

145. दुष्यन्त की कौन सी रानी पञ्चम अङ्क में सङ्गीत का अभ्यास कर रही है –
(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) दाक्षायणी

146. रानी वसुमती के प्रेम में राजा दुष्यन्त किसे भूल गया है–
(A) हंसपदिका को (B) सानुमती को
(C) प्रियंवदा को (D) शकुन्तला को

147. हंसपदिका अपने गान के माध्यम से किसे उलाहना देती है –
(A) राजा दुष्यन्त को (B) माधव्य को
(C) शकुन्तला को (D) कण्व को

148. कण्व शिष्यों के आने की सूचना राजा दुष्यन्त को किसने दिया –
(A) प्रतीहारी ने (B) कञ्चुकी वातायन ने
(C) विदूषक माधव्य ने (D) पुरोहित सोमरात ने

149. हस्तिनापुर पहुँचकर शकुन्तला का कौन सा नेत्र फड़कने लगा –
(A) बायाँ नेत्र (B) दाहिना नेत्र
(C) दोनों नेत्र (D) कभी बायाँ कभी दायाँ

150. ''भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः'' यह कथन किसका है –
(A) शार्ङ्गरव का (B) शारद्वत का
(C) कण्व का (D) पुरोहित सोमरात का

151. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सेनापति का नाम है –
(A) आत्रेय (B) भद्रसेन
(C) मैत्रेय (D) वसन्तक

152. ''स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्'' यह कथन किसने किसके लिये कहा है –
(A) शार्ङ्गरव ने राजा दुष्यन्त के लिये
(B) कण्व ने शारद्वत के लिये
(C) दुष्यन्त ने सोमरात के लिये
(D) गौतमी ने दुष्यन्त के लिये

153. शकुन्तला द्वारा पुत्रवत्पालित मृग का क्या नाम है–
(A) दीर्घापाङ्ग (B) मृगानुसारी
(C) मृगाङ्क (D) पिनाकी

154. 'शकुन्तला सन्तानोत्पत्ति तक मेरे घर में ही रहे।' यह वाक्य किसने कहा –
(A) मारीच ने (B) पुरोहित सोमरात ने
(C) कण्व ने (D) दुष्यन्त ने

155. राजा दुष्यन्त की प्रतीहारी (द्वारपालिका) का क्या नाम है–
(A) सानुमती (B) बेतवारानी
(C) वेत्रवती (D) सोमवती

156. ''पाटच्चर, किमस्माभिर्जातिः पृष्टा'' यहाँ 'पाटच्चर' पद का क्या अर्थ है –
(A) चोर (B) श्याल
(C) राजा (D) कोतवाल

139. (C) 140. (A) 141. (A) 142. (A) 143. (A) 144. (C) 145. (A) 146. (A) 147. (A) 148. (B) 149. (B) 150. (A) 151. (B) 152. (A) 153. (A) 154. (B) 155. (C) 156. (A)

157. ''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' में किस नाटक का निर्देश है –
(A) उत्तररामचरितम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) वेणीसंहारम्

158. ''इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी'' यहाँ 'तन्वी' पद से किसका सङ्केत किया गया है –
(A) प्रियंवदा का (B) चन्द्रमा का
(C) कमल का (D) शकुन्तला का

159. ''आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्'' यह वाक्य किसने किसके लिये कहा –
(A) राजा ने शकुन्तला के लिये
(B) कण्व ने शिष्य के लिये
(C) शकुन्तला ने राजा के लिये
(D) सखियों ने अग्नि के लिये

160. ''लब्धावकाशो मे मनोरथः'' यह वचन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) राजादुष्यन्त का
(C) शकुन्तला का (D) कण्व का

161. कौशिकगोत्रनामधेयः राजर्षिः कः अस्ति –
(A) कण्वः (B) मारीचः
(C) विश्वामित्रः (D) दुर्वासाः

162. मेनका के आगमन के समय विश्वामित्र किस नदी के तट पर उग्र तपस्या कर रहे थे –
(A) गौतमी नदी (B) यमुना नदी
(C) मालिनी नदी (D) गङ्गा नदी

163. राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से क्या पूछा –
(A) अपि तपो वर्धते? (B) कुशलिनी अस्ति वा?
(C) स्वास्थ्यं कथम् अस्ति? (D) भवत्याः नाम किम्?

164. ''अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू'' राजा का यह कथन किसके लिए है –
(A) शकुन्तला के लिये – अङ्क 1
(B) प्रियंवदा के लिये – अङ्क 4
(C) अनसूया के लिये – अङ्क 4
(D) तपोवन कि लिये – अङ्क 1

165. ''दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः'' यहाँ 'वनलताभिः' से किसका सङ्केत किया गया है –
(A) रानियों का (B) तापसकुमारियों का
(C) जङ्गली पशुओं का (D) उद्यानसेविकाओं का

166. सोमतीर्थ जाते समय अतिथिसत्कार का दायित्व कण्व ने किसको दिया था –
(A) शिष्य शारद्वत को (B) गौतमी को
(C) शकुन्तला को (D) प्रियंवदा को

167. ''आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'' यह कथन किसने किससे कहा है –
(A) वैखानस ने दुष्यन्त से (B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) राजा ने सूत से (D) शिष्य ने गुरु से

168. ''सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि'' इस वाक्य से क्या निर्दिष्ट है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक का प्रयोजन
(B) कालिदास को पुत्रप्राप्ति
(C) कुमार कार्तिकेय का जन्म
(D) दुष्यन्त का शकुन्तला से विवाह होना

169. दुष्यन्त तथा शकुन्तला का पुनर्मिलन किस अङ्क में होता है –
(A) चतुर्थ (B) तृतीय
(C) सप्तम (D) प्रथम

170. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के समालोचकों ने किसे ''निसर्गकन्या'' की उपाधि दी है –
(A) प्रियंवदा (B) शकुन्तला
(C) अनसूया (D) मेनका

171. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किन-किन अङ्क में अनसूया एवं प्रियंवदा नहीं दिखलायी पड़ती हैं –
(A) प्रथम एवं षष्ठ अङ्क में
(B) द्वितीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(D) पञ्चम, षष्ठ एवं सप्तम अङ्क में

157. (C) 158. (D) 159. (A) 160. (B) 161. (C) 162. (A) 163. (A) 164. (A) 165. (B) 166. (C) 167. (A) 168. (A) 169. (C) 170. (B) 171. (D)

172. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किन अङ्कों में शकुन्तला की उपस्थिति नहीं है –
(A) द्वितीय एवं षष्ठ अङ्क में
(B) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

173. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में महर्षि कण्व दिखलायी पड़ते हैं–
(A) सभी अङ्कों में
(B) केवल चतुर्थ अङ्क में
(C) प्रथम अङ्क छोड़कर सभी अङ्कों में
(D) केवल चतुर्थ एवं पञ्चम अङ्क में

174. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक (माधव्य) का वर्णन प्राप्त होता है –
(A) द्वितीय, पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(B) प्रथम एवं तृतीय अङ्क में
(C) द्वितीय एवं तृतीय अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

175. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में राजा की मनःस्थिति जानने के लिये मेनका की सखी सानुमती किस अङ्क में आती है –
(A) पञ्चम अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) सप्तम अङ्क में (D) इनमें से कोई नहीं

176. ''धर्मारण्यं प्रविशति.....स्यन्दनालोक भीतः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) गजः (B) अश्वः
(C) ऋषिः (D) कण्वः

177. वह 'औषधिविशेष' जिसे मारीच ऋषि ने सर्वदमन के हाथ में बाँधी थी –
(A) सञ्जीवनी (B) अमृतवटी
(C) अपराजिता (D) विशल्यकरणी

178. ''वत्स, चिरञ्जीव पृथ्वीं पालय'' यह आशीर्वाद दुष्यन्त को किसने दिया –
(A) कण्व ने (B) महर्षि मारीच ने
(C) दुर्वासा ने (D) ऋषियों ने

179. मारीच आश्रम में दुष्यन्त और शकुन्तला के पुनर्मिलन की बात महर्षि कण्व को किसने सूचित किया –
(A) गालव ने (B) सर्वदमन ने
(C) शार्ङ्गरव ने (D) गौतम ने

180. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के भरतवाक्य में छन्द है –
(A) मालिनी (B) रुचिरा
(C) वंशस्थ (D) आर्या

संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम्

UP. TGT, PGT (संस्कृत) के छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तक में हर प्रश्न का महामंथन

आपके शिक्षक बनने का सपना हम करेंगे साकार

TGT प्रश्न मीमांसा

PGT प्रश्न मीमांसा

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करने के लिए हमें कॉल करें 8004545095, 8004545096

172. (A) 173. (B) 174. (A) 175. (B) 176. (A) 177. (C) 178. (B) 179. (A) 180. (B)

9 Unit

नाट्य-साहित्य
स्वप्नवासवदत्तम्

महाकवि भास का सामान्य परिचय

- **कवि का नाम-** भास (प्रामाणिक जीवनपरिचय अज्ञात)
- **उपाधि-** धावक
- **गोत्र-** अगस्त्य गोत्र की हैमोदक शाखा में 'भाष' गोत्र है।
- **जन्म समय-** 100ई0पू0- 200ई0 के मध्य
- **उपासक-** वैष्णवधर्म
- **रीति-** वैदर्भी
- **गुण-** प्रसाद,माधुर्य एवं ओज तीनों का प्रयोग
- **रस-** मुख्यतया शृङ्गार एवं वीररस का प्रयोग।
- **शैली-** सरल भाषा का प्रयोग,अकृत्रिम शैली।
- **प्रिय अलङ्कार-** अनुप्रास,उपमा,स्वभावोक्ति,उत्प्रेक्षा, रूपक आदि
- **भास की कृतियाँ**
- त्रिरुवांकुर नगर निवासी **टी0गणपति शास्त्री** ने सन् - 1910-12 में **'भासनाटकचक्रम्'** नाम से भास के 13नाटकों का संग्रह **अनन्तशयन ग्रन्थमाला (त्रिवेन्द्रम)** से प्रकाशित किया।
- कथावस्तु के आधार पर भास के 13 नाटकों को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

- **कथावस्तु के आधार पर भास के नाटकों का वर्गीकरण**

रामायणमूलक	महाभारतमूलक	उदयनकथामूलक	कल्पनामूलक
1.अभिषेकनाटक	3.मध्यमव्यायोग	10.प्रतिज्ञायौगन्धरायण	12.अविमारक
2.प्रतिमानाटक	4.दूतवाक्यम्	11.स्वप्नवासवदत्तम्	13.दरिद्रचारुदत्त
	5.कर्णभार		
	6.दूतघटोत्कच		
	7.पञ्चरात्रम्		
	8.ऊरुभंग		
	9.बालचरित		

भास के रूपकों का संक्षिप्त-परिचय

1. **अभिषेकनाटक-** यह **छः अङ्कों** का नाटक है। इसमें किष्किन्धाकाण्ड से लेकर लङ्काकाण्ड तक की सम्पूर्ण कथा संक्षेप में दी गयी है। अंत में रावण वध के पश्चात् राम के राज्याभिषेक का वर्णन है।
2. **प्रतिमानाटक-** इस नाटक में **सात अङ्क** हैं। इसमें भी राम के जीवन का वर्णन है।
3. **मध्यमव्यायोग-** यह **एक अङ्क** का व्यायोग नामक रूपक है। इसमें मध्यम पाण्डव भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र को बचाने का वर्णन है। भीम अपने पुत्र घटोत्कच को देखकर आनन्दित होते हैं और हिडिम्बा से उनका पुनर्मिलन होता है।
4. **दूतवाक्यम्-** यह **एकाङ्की** रूपक है। इसमें कृष्ण के दूत बनकर पाण्डवों का सन्धि प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास जाने का वर्णन है।
5. **कर्णभार-** यह भी **एकाङ्की** है। इसमें कर्ण का,ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को कवच और कुण्डल दान में देने का वर्णन है।
6. **दूतघटोत्कच-** यह **एकाङ्की** नाटक है। अभिमन्यु की मृत्यु के बाद श्रीकृष्ण का घटोत्कच को दूत बनाकर धृतराष्ट्र के पास भेजना और दुर्योधन द्वारा उसका अपमान।
7. **पञ्चरात्र-** इस रूपक में **तीन अङ्क** हैं। यज्ञ की समाप्ति पर द्रोण ने दुर्योधन से दक्षिणा माँगी कि पाण्डवों को आधा राज्य दे दो। दुर्योधन शर्त लगाता है कि यदि पाँच रात के अन्दर पाण्डव मिल जाते हैं तो दे दूँगा। द्रोण के प्रयास से पाण्डव मिलते हैं और आधा राज्य प्राप्त करते हैं।

8. **ऊरुभङ्ग-** यह **एकाङ्की** नाटक है। द्रौपदी के अपमान के प्रतीकार स्वरूप भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा को तोड़ करके उसको मारने का वर्णन है।
9. **बालचरित-** इस नाटक में **पाँच अङ्क** हैं। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर कंसवध तक की कथा वर्णित है।
10. **चारुदत्त-** इसमें **चार अङ्क** हैं। इसमें निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त और वसन्तसेना नाम की वेश्या के प्रणय का वर्णन है। इसमें भरतवाक्य नहीं है और कथा अधूरी है।
11. **अविमारक-** इस नाटक में **छः अङ्क** हैं। इसमें राजकुमार अविमारक का राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुरङ्गी के साथ प्रणय-विवाह का वर्णन है।
12. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण-** इस नाटक में **चार अङ्क** हैं। उदयन का वासवदत्ता से प्रेम और विवाह का वर्णन है। यौगन्धरायण द्वारा उदयन को प्रद्योत के यहाँ से छुड़ाने और उसकी नीतिमत्ता का वर्णन है।
13. **स्वप्नवासवदत्तम्-** इसमें **छः अङ्क** हैं। यौगन्धरायण का वासवदत्ता के मरने के प्रवाद को फैलाकर उदयन का पद्मावती से विवाह कराना तथा उदयन के अपहृत राज्य को पुनः प्राप्त कराने का वर्णन है।

स्वप्नवासवदत्तम् का परिचय

- **लेखक-** महाकवि भास
- **काव्यविधा-** नाटक
- **विभाजन-** 6 अङ्कों में
- **उपजीव्य-** ऐतिहासिक (गुणाढ्यकृत बृहत्कथा)
- **श्लोक संख्या-** 57

अङ्क	श्लोक संख्या	अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	16	द्वितीय	00
तृतीय	00	चतुर्थ	09
पञ्चम	13	षष्ठ	19
		योग- 57	

- **नायक-** उदयन
- **नायिका-** वासवदत्ता
- **विदूषक-** वसन्तक
- **कञ्चुकी-** बादरायण (उदयन का), रभ्य (महासेन प्रद्योत का)
- **प्रतिनायक-** आरुणि
- **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार रस
- **अन्य रस/गौण रस** वीर, करुण एवं अद्भुत रस
- **नायक कोटि-** धीरललित (दक्षिण नायक)
- **अलङ्कार-** उपमा के साथ-साथ रूपक और उत्प्रेक्षा।
- **गुण-** प्रसाद, माधुर्य और ओज का समन्वय।
- **रीति-** वैदर्भी
- **छन्द-** सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में अनुष्टुप् (22) और वसन्ततिलका (11) मुख्य हैं।

स्वप्नवासवदत्तम् का संक्षिप्त कथानक

'स्वप्नवासवदत्तम्' उदयन और वासवदत्ता की प्रेम कहानी का उत्तरार्द्ध भाग है। पूर्वार्द्ध की घटना 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' नामक रूपक में वर्णित है। अतः पूर्व की घटना की जानकारी भी आवश्यक हो जाती है। पूर्व के घटना का सारांश इस प्रकार है- ''वत्सराज उदयन, प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता का अपहरण कर उससे प्रेम विवाह कर लेता है। उदयन, वासवदत्ता की सुन्दरता पर इस प्रकार आसक्त हो जाता है कि वह राज्य से सम्बन्धित प्रमुख कार्यों से भी विमुख हो जाता है। इसी का लाभ उठाकर आरुणि नामक उदयन का शत्रु उसके अधिकांश भूभाग को अधिकृत (कब्जा) कर लेता है। इसी भूभाग को प्राप्त करने के लिये यौगन्धरायण नामक उदयन का मन्त्री लावाणक ग्राम में अग्निकाण्ड का षड्यन्त्र रचता है।'' अब इसके बाद की घटना स्वप्नवासवदत्तम् में वर्णित है।

प्रथम अङ्क

- मगध के राजा 'दर्शक' एवं उनकी बहन पद्मावती के सेवकों द्वारा तपोवन के लोगों को जबरदस्ती हटाया जाता है।
- उज्जयिनी की स्त्रियों के वेश में वासवदत्ता तथा मन्त्री यौगन्धरायण वहीं पर जाते हैं।
- कञ्चुकी, राजपुरुषों को रोकता है कि वे अनायास ही वन के निवासियों को परेशान न करें।
- कञ्चुकी द्वारा यौगन्धरायण को पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती, वन के आश्रम में निवास कर रही अपनी माता से मिलने आ रही हैं। इसीलिए वन प्रदेश खाली कराया जा रहा है।
- यौगन्धरायण मन में सोचता है कि यह वही राजकुमारी पद्मावती हैं जिनके बारे में 'पुष्पक और भद्र' ज्योतिषियों ने बताया था कि ''वह उदयन की महारानी बनेगी।''
- राजकुमारी पद्मावती आश्रम में प्रवेश करती हैं और तापसी को प्रणाम करती हैं।
- राजा प्रद्योत का एक सन्देशवाहक आता है।
- पद्मावती आश्रम के तपस्वियों को मनोनुकूल वस्तुओं को माँगने के लिए आमन्त्रित करती हैं।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता को अपनी बहन बताकर उसे पद्मावती के पास धरोहर रूप में रख देते हैं।

- वासवदत्ता सोचती है, मैं अभागिनी हूँ किन्तु आर्य यौगन्धरायण बिना किसी प्रयोजन के मुझे नहीं छोड़ेंगे।
- आश्रम में एक ब्रह्मचारी का प्रवेश होता है और यौगन्धरायण उससे उसका पता तथा उद्देश्य पूछते हैं।
- ब्रह्मचारी बताता है कि वह वत्सदेश के लावाणक ग्राम में वेद का अध्ययन करता है लेकिन वत्सराज उदयन के शिकार खेलने के लिए जाने पर गाँव में आग लग जाने से उनकी पत्नी वासवदत्ता जलकर मर गयीं। अतः महाराज उदयन अत्यन्त शोकग्रस्त हैं।
- ब्रह्मचारी कहता है कि रुमण्वान् नामक मन्त्री शोक संतप्त होते हुए भी उदयन की दिन रात सेवा करता है।
- इसके बाद ब्रह्मचारी चला जाता है और यौगन्धरायण भी राजकुमारी पद्मावती के आदेश से चला जाता है।

।।प्रथम अङ्क समाप्त।।

द्वितीय अङ्क

- प्रवेशक के माध्यम से पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती गेंद खेल रही हैं।
- वासवदत्ता द्वारा पद्मावती को 'महासेन की वधू' कहने पर दासी बताती है कि राजकुमारी, वत्सराज उदयन से विवाह करना चाहती हैं।
- धाय द्वारा सूचना मिलती है कि पद्मावती का विवाह वत्सराज उदयन के साथ सुनिश्चित हो गया है।

।।द्वितीय अङ्क समाप्त।।

तृतीय अङ्क

- राजप्रासाद का अन्तःपुर विवाहोल्लास से व्याप्त है तथा वासवदत्ता अत्यन्त चिन्ताग्रस्त रहती हैं।
- दासी, महारानी के आज्ञानुसार, उच्चकुल में उत्पन्न वासवदत्ता से वरमाला गूँथने के लिए कहती है।
- वासवदत्ता के पूछने पर दासी कहती है कि दूल्हा धनुष-बाण से रहित साक्षात् कामदेव है।
- वासवदत्ता 'सपत्नीमर्दन' नामक ओषधि माले में नहीं गूँथती हैं।

।।तृतीय अङ्क समाप्त।।

चतुर्थ अङ्क

- विदूषक विवाह के शुभ-अवसर पर अत्यन्त खुश है।
- पद्मावती और वासवदत्ता प्रमदवन में जाकर आपस में वार्तालाप करतीं हैं।
- उदयन और विदूषक भी प्रमदवन में जाते हैं, उदयन कहते हैं कि ''जब उज्जयिनी में वासवदत्ता को देखा था तब कामदेव ने एक साथ पाँचों बाणों का प्रहार कर दिया था, अब पद्मावती को देखने पर कामदेव के पास छठा बाण कहाँ से आ गया।''
- पद्मावती और वासवदत्ता माधवीलताकुञ्ज में जाती हैं क्योंकि वे दोनों महाराज उदयन से छिपना चाहती हैं।
- विदूषक के हठपूर्वक पूछने पर उदयन बताता है कि वासवदत्ता उसको अधिक प्यारी हैं।
- वासवदत्ता को याद करके राजा के नेत्र अश्रुपूरित हो जाते हैं लेकिन पद्मावती द्वारा पूछने पर वे काशपुष्प का पराग (कण) पड़ने का बहाना करते हैं।
- विदूषक, राजा को लेकर मगधराजदर्शक' के पास चला जाता है।

।।चतुर्थ अङ्क समाप्त।।

पञ्चम अङ्क

- 'प्रवेशक' द्वारा पद्मावती के सिर में दर्द होने की सूचना मिलती है।
- उदयन, पद्मावती को देखने के लिए समुद्रगृह नामक भवन में जाते हैं किन्तु पद्मावती बिस्तर पर नहीं मिलती।
- पद्मावती का इन्तजार करते हुए उदयन उसी बिस्तर पर सो जाते हैं।
- पद्मावती के इच्छानुसार अवन्तिका वेशधारिणी वासवदत्ता भी समुद्रगृह में जाती हैं।
- वासवदत्ता, बिस्तर पर सोये हुए उदयन को पद्मावती समझकर बगल में लेट जाती है।
- उदयन स्वप्न में वासवदत्ता को बुलाता है तथा वासवदत्ता उदयन द्वारा देखे जाने के डर से उठकर भागती है जिससे उदयन जाग जाता है।
- उदयन विदूषक को बताता है कि उसने वासवदत्ता को साक्षात् देखा था किन्तु विदूषक द्वारा इसे भ्रान्ति बताकर इसका निराकरण किया जाता है। इसी घटना के कारण इस नाटक का नाम स्वप्नवासवदत्तम् पड़ा।
- इसके बाद सूचना मिलने पर उदयन अपने सेनापति रुमण्वान् के साथ 'आरुणि' से युद्ध के लिए निकल जाता है।

।।पञ्चम अङ्क समाप्त।।

षष्ठ अङ्क

- उदयन को सूचना देने के लिए कञ्चुकी, प्रतीहारी से कहता है कि ''उज्जयिनी के राजा महासेन प्रद्योत के कञ्चुकी 'रभ्य' तथा 'वसुन्धरा' नाम की धाय (जो माननीया अङ्गारवती द्वारा भेजी गयी है) द्वार पर उपस्थित हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।
- प्रतिहारी बताती है कि यह महाराज उदयन से मिलने का उचित

समय नहीं है क्योंकि **घोषवती वीणा** की आवाज सुनकर महाराज अत्यन्त दुःखित हैं।

- महाराज उदयन वीणावादक से घोषवती वीणा के बारे में पूछते हैं तो वीणावादक घोषवती वीणा को नर्मदा नदी किनारे कुशों की झाड़ी मे पाया हुआ बताता है।
- सूर्यामुख भवन से उतरते हुए महाराज उदयन से प्रतिहारी सूचना देती है और विष्कम्भक समाप्त होता है।
- घोषवती वीणा को पाकर उदयन अत्यन्त क्षुब्ध हो जाते हैं क्योंकि वीणा वासवदत्ता का स्मरण कराती है।
- राजा की आज्ञा से विदूषक घोषवती वीणा की मरम्मत करवाने जाता है।
- प्रतिहारी से सूचना पाकर राजा शङ्का करता है कि कहीं महासेन प्रद्योत मेरे पद्मावती के विवाह से क्रोधित तो नहीं हैं क्योंकि मैंने उनकी पुत्री वासवदत्ता का अपहरण तो कर लिया था किन्तु उसकी रक्षा न कर सका।
- महाराज प्रद्योत का कञ्चुकी रभ्य कहता है कि– उदयन द्वारा पुनः जीते गये वत्स राज्य में आकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ।
- रभ्य, उदयन को अभिवादन करके उज्जयिनी का समाचार सुनाता है।
- महारानी अङ्गारवती का सन्देश बताते हुए धात्री कहती है कि ''आपने पाणिग्रहण के बिना ही वासवदत्ता से विवाह सम्पन्न कर लिया। इसलिए हम दोनों (प्रद्योत+अङ्गारवती) ने तुम्हारा और वासवदत्ता का चित्र, चित्रपट पर बनवाकर उसी से विधिपूर्वक विवाह भी करा दिया और यह चित्रफलक तुम्हारे पास भेजा जा रहा है।''
- यह सुनकर उदयन कहते हैं कि अपराधी होने पर भी महाराज और माननीया का प्रेम मेरे प्रति कम नहीं हुआ है।
- पद्मावती, चित्रफलक को देखकर कहती है यह आर्या का चित्र तो आवन्तिका से मिलती है।
- उदयन, आवन्तिका को सामने बुलाना चाहते हैं कि पद्मावती बताती है कि वह न्यास रूप में रखी गयी किसी ब्राह्मण की बहन है जो पर पुरुष के सामने नहीं आती।
- प्रतिहारी सूचना देती है, कि ''उज्जयिनी के ब्राह्मण बाहर उपस्थित हैं जिनकी बहन महारानी पद्मावती के पास धरोहर रूप में रखी गयी है।''
- उदयन आवाज से पहचान जाते हैं कि यह ब्राह्मण उनका मन्त्री यौगन्धरायण है।
- धात्री,आवन्तिका वेशधारिणी वासवदत्ता को पहचान लेती है।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता को छिपाने जैसे कार्य के लिए महाराज उदयन से क्षमा माँगते हैं।
- उदयन द्वारा 'कारण' पूछने पर यौगन्धरायण बताता है कि ऐसा यह सब भविष्यवाणी के अनुसार हुआ है।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता का कुशल समाचार बताने के लिए रैभ्य और वसुन्धरा को उसी समय उज्जयिनी वापस भेजना चाहता है किन्तु राजा, पद्मावती और वासवदत्ता के साथ उज्जयिनी जाने का निश्चय करते हैं।

भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

स्वप्नवासवदत्तम् का मङ्गलाचरण

उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम्।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकग्रौ भुजौ पाताम्।।

अर्थ- उदय होते हुए नये चन्द्रमा के सदृश वर्ण वाली,मद्यपान से बलरहित अथवा अबला (अपनी पत्नी) को मद्य देने वाली,लक्ष्मी के प्रकट होने से सम्पन्न, वसन्त जैसी सुन्दर,बलराम की भुजाएँ आपकी रक्षा करें।

- प्रस्तुत मंगलाचरण में बलराम की स्तुति की गयी है।
- उक्त पद्य में **आशीर्वादात्मक** तथा **अष्टपदा** नान्दी है।
- प्रस्तुत मंगलाचरण में मुद्रालंकार तथा श्लेष अलङ्कार का प्रयोग है।श्लेष के माध्यम से भावी सूचना मिलने के कारण **पत्रावली नान्दी** है।
- प्रस्तुत मंगलाचरण में **आर्या छन्द** है।
- इस पद्य में पदों के विन्यास की चतुरता से नाटक के मुख्य पात्र उदयन,वासदत्ता,पद्मावती और वसन्तक की सूचना दी गयी है।

नाटक का भरतवाक्य -

इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्।
महीमेकातपत्राङ्कां राजसिंहः प्रशास्तु नः।। (स्वप्न.6/19)।।

भावार्थ- हमारे राजसिंह (राजाओं में प्रधान) अर्थात् महाराज उदयन, समुद्ररूप सीमावाली,हिमालय और विन्ध्यपर्वत रूप दो कुण्डलों से युक्त और एक छत्र रूप चिह्न से संयुक्त इस पृथ्वी का पालन करें।

पात्रों का सामान्य परिचय

पुरुष पात्र -

- **उदयन-** वत्सदेश का राजा, नायक
- **यौगन्धरायण-** उदयन का मन्त्री
- **वसन्तक-** विदूषक,उदयन का मित्र (नर्मसचिव)
- **ब्रह्मचारी-** लावाणक ग्राम का छात्र

- **कञ्चुकी-** राजकुल का सेवक
- **संभषक,भट-** पद्मावती का सेवक
- **रुमण्वान्-** उदयन के अमात्य तथा सेनापति

स्त्री पात्र -

- **वासवदत्ता-** नायिका, उदयन की प्रथम पत्नी (मगध देश में यही आवन्तिका रूप में निवास करती है।)
- **पद्मावती-** मगधराज दर्शक की बहन, उदयन की द्वितीय पत्नी
- **तापसी-** मगध के निकट तपोवन में रहने वाली एक स्त्री
- **मधुकरिका तथा पद्मिनिका-** पद्मावती की सखियाँ एवं परिचारिकाएँ
- **धात्री-** पद्मावती की उपमाता
- **विजया-** वत्सराज की प्रतीहारी
- **महादेवी-** पद्मावती की माता
- **अङ्गारवती-** प्रद्योत की रानी, वासवदत्ता की माता
- **वसुन्धरा-** वासवदत्ता की धात्री
- **वैदेही-** उदयन की माता

स्वप्नवासवदत्तम् की प्रमुख सूक्तियाँ

- **एवमनिर्ज्ञातानि दैवतान्यप्यवधूयन्ते। (अङ्क 1)**
  भावार्थ- प्रथम अङ्क में यौगन्धरायण वासवदत्ता से कहता है कि- इस प्रकार बिना - पहचाने देवता भी तिरस्कृत हो जाते हैं।
- **कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना**
  चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः॥ (1/4)
  भावार्थ- यौगन्धरायण, वासवदत्ता से कहता है कि, 'समय के क्रम से बदलती हुई संसार को भाग्य पंक्ति पहिए के अवयवों के समान चलती है।'
- **सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः सुखं तपः।**
  सुखमन्यद् भवेद् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्॥ (1/10)
  कञ्चुकी, पद्मावती से कहता है कि- धन देना सरल है, प्राण का देना आसान है, तप के फल को देना सरल है, अन्य सब कुछ देना सरल है, परन्तु धरोहर की रक्षा करना कठिन है।
- **तत्प्रत्ययात् कृतमिदं न हि सिद्धवाक्यान्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि। (1/11)**
  भावार्थ- यौगन्धरायण कहता है कि- 'उन सिद्ध पुरुषों में विश्वास के कारण यह किया है भली प्रकार जांचे गये सिद्ध पुरुषों के वाक्य का उल्लंघन कर के भाग्य भी नहीं चलता है।'
- **सर्वजनमनोऽभिरामं खलु सौभाग्यं नाम। (अङ्क 2)**
  भावार्थ- पद्मावती कहती है कि- 'सौन्दर्य वही है जो सब लोगों के मन का आह्लादक हो।'
- **कामेनोज्जयिनीं गते मयि तदा कामप्यवस्थां गते**
  दृष्ट्वा स्वैरमवन्तिराजतनयां पञ्चेषवः पातिताः।
  तैरद्यापि सशल्यमेव हृदयं भूयश्च विद्धा वयं
  पञ्चेषुर्मदनो यदा कथमयं षष्ठः शरः पातितः॥ (4/1)

भावार्थः - राजा कहते हैं कि, 'उस समय उज्जयिनी में जाने पर और अवन्तिराजकुमारी वासवदत्ता को इच्छा के अनुसार देखकर मेरी अनिर्वचनीय अवस्था में पड़ने पर कामदेव ने अपने पाँचों बाणों से मेरे ऊपर प्रहार किया। आज भी उन बाणों से मेरा चित्त विद्ध ही है। फिर भी (पद्मावती से विवाह होने पर) मैं विद्ध हो गया हूँ कामदेव पाँच बाणों से ही युक्त है तो यह छठा बाण उसने कैसे गिराया।'

- **शरत्कालतीक्ष्णो दुःसह आतपः। (अङ्क-4)**
  भावार्थ- विदूषक राजा से कहता है कि- शरद् ऋतु का तीखा धूप असह्य है।
- **अहो सदाक्षिण्यस्य जनस्य परिजनोऽपि सदाक्षिण्य एव भवति। (अङ्क-4)**
  भावार्थ- पद्मावती सोचती है कि, अहो! सभ्य व्यक्ति का सेवक भी सभ्य ही होता है।
- **गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।**
  कर्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः॥ (4/9)
  भावार्थ- राजा विदूषक से कहता है संसार में महान् गुणों से युक्त और स्वागत सत्कार करने वाले लोग बहुत मिल जाते हैं,लेकिन उसके वास्तविक ज्ञाता बहुत कम ही मिलते हैं।
- **ननु किं शक्यं रक्षितुं प्राप्तकाले। (अङ्क-6)**
  भावार्थ- पद्मावती राजा से कहती है कि,'भला काल आ जाने पर किसे बचाया जा सकता है।'
- **कातरा येऽप्यशक्ता वा नोत्साहस्तेषु जायते।**
  प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते॥ (6/7)
  भावार्थ- कञ्चुकी रभ्य, उदयन से कहता है कि कायर अथवा जो असमर्थ हैं उनमें उत्साह पैदा नहीं होता। निश्चय ही राजलक्ष्मी प्रायःउत्साह वालों से ही भोगी जाती है।
- **परस्परगता लोके दृश्यते रूपतुल्यता। (6/14)**
  भावार्थ- उदयन पद्मावती से कहते हैं कि संसार में एक दूसरे में रूप सादृश्य देखा जाता है।
- **साक्षिमन्न्यासो निर्यातयितव्यः। (अङ्क-6)**
  भावार्थ- उदयन पद्मावती से कहते हैं कि, 'धरोहर साक्षी पूर्वक लौटाई जानी चाहिए।'

➢ **मिथ्योन्मादैश्च युद्धैश्च शास्त्रदृष्टैश्च मन्त्रितैः।**
भवद्यत्नैः खलु वयं मज्जमानाः समुद्धृताः॥ (6/18)
भावार्थ- उदयन,यौगन्धरायण से कहते हैं कि मिथ्या उन्मत्त व्यवहारों और युद्धों, शास्त्रोक्त मन्त्रणाओं एवं आपके द्वारा किये गए प्रयत्नों से, डूबते हुए हम लोग निश्चय ही उबार लिए गये हैं।

स्वप्नवासवदत्तम् का नामकरण

➢ इस नाटक का नामकरण ग्रन्थ के एक घटना विशेष पर आधारित है।
➢ पञ्चम अङ्क में उदयन शिरोवेदना से पीड़ित पद्मावती को देखने जाता है तथा पद्मावती को न देखकर वह उसी की शय्या पर सो जाता है।
➢ वासवदत्ता भी पद्मावती को देखना चाहती है और बिस्तर पर सोयी हुई जानकर वहीं लेट जाती है।
➢ उदयन स्वप्न में कुछ बड़बड़ाता है तो वासवदत्ता वहाँ से जाने लगती है और उदयन भी जागकर उसके पीछे दौड़ता है।
➢ **उदयन इसी 5वें अङ्क में स्वप्न में वासवदत्ता को देखता है** इसलिए यह अङ्क नाटक का सबसे महत्त्वपूर्ण अंक है।
➢ इसी महत्त्वपूर्ण घटना को आधार मानकर महाकवि भास ने इसका नामकरण **'स्वप्नवासवदत्तम्'** किया है जो कि सर्वथा उचित है।
'स्वप्ने वासवदत्ता इति स्वप्नवासवदत्ता' सप्तमी तत्पुरुष समास ग्रन्थवाची होने के कारण नपुंसकलिङ्ग एकवचन में 'स्वप्नवासवदत्तम्' हुआ।

महत्वपूर्ण तथ्य -

➢ अनेक विद्वानों के अनुसार भास 24 नाटकों के रचयिता हैं किन्तु वर्तमान में प्रामाणिक रूप से 13 रूपक ही उपलब्ध हैं।
➢ भास ने 'भूमिका' या प्रस्तावना के स्थान पर 'स्थापना' शब्द का प्रयोग किया है।
➢ भास ने अपने किसी भी रूपक में 'ग्रन्थ' और 'ग्रन्थकार' का नाम नहीं लिया है।
➢ भास ने अपने रूपकों में मुद्रालंकार का प्रयोग किया है।
➢ भास के 13 नाटकों को प्रकाशित कराने का श्रेय श्री टी. गणपतिशास्त्री को जाता है।
➢ स्वप्नवासवदत्तम् के द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में 'प्रवेशक' तथा पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में 'विष्कम्भक' का प्रयोग किया गया है।
➢ वासवदत्ता की वीणा का नाम **'घोषवती'** है।
➢ उदयन और पद्मावती के विवाह की भविष्यवाणी 'भद्र' और 'पुष्पक' ने की थी।
➢ पद्मावती के घर में वासवदत्ता ही 'आवन्तिका' के रूप में रहती है।
➢ छठें अङ्क में मिश्रविष्कम्भक प्रयुक्त है।
➢ पद्मावती को शिरोवेदना पञ्चम अङ्क में होती है।
➢ वत्स देश की राजधानी कौशाम्बी है।
➢ 'महासेन', उज्जयिनी के राजा प्रद्योत का विशेषण है।
➢ पञ्चम अङ्क को **'स्वप्न अङ्क'** भी कहा जाता है।
➢ लावाणक ग्राम की घटना प्रथम अङ्क में वर्णित है।
➢ दूसरा और तीसरा अङ्क केवल गद्य के माध्यम से लिखा गया है।
➢ उदयन के भवन का नाम 'सूर्यामुख' तथा पद्मावती के आवास का नाम 'समुद्रगृह' है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

1. उदयन -

➢ उदयन इस **नाटक का नायक** है तथा **वत्सदेश का राजा** है।
➢ वह **धीरललित (दक्षिण)** कोटि का नायक है।
➢ वह दयालु, उदार तथा वीणा बजानें में निपुण है।
➢ उदयन, दयार्द्रचित्त तथा अपने से बड़ों का आदर करने वाला व्यक्ति है।
➢ उसकी धैर्यता, विद्वता, कुलीनता, आयु तथा रूप को देखकर ही राजा दर्शक अपनी बहन **पद्मावती का विवाह** करते हैं।
➢ उदयन, वासवदत्ता से बहुत ही प्रेम करते हैं इसीलिए राज्य की सुध-बुध खो बैठते हैं।
➢ सुन्दरता में उदयन की तुलना बिना धनुष बाण के कामदेव से की गयी है।

2. वासवदत्ता -

➢ वासवदत्ता, उज्जयिनी नरेश **प्रद्योत की पुत्री** तथा 'स्वप्नवासवदत्तम्' **नाटक की नायिका** है।
➢ वह दयालु स्वभाव की नारी तथा **अवन्तिराज्य की राजकुमारी** भी है।
➢ वासवदत्ता बुद्धिमती तथा पतिपरायणा स्त्री है।
➢ वह उदयन की प्रेयसी, शिष्या तथा पत्नी भी है।
➢ अपने पति के हित के लिए वह यौगन्धरायण द्वारा स्वयं को मृत घोषित करवा लेती है।
➢ वासवदत्ता अपनी आँखों के सामने ही अपने पति का विवाह पद्मावती से करवा देती है।
➢ वासवदत्ता का चरित्र त्याग से भरा हुआ है।

3. पद्मावती -

➢ पद्मावती, राजा **उदयन की द्वितीय पत्नी** तथा नाटक की प्रमुख पात्र है।
➢ वह मगध के राजा **दर्शक की बहन** है।
➢ पद्मावती अत्यन्त सुन्दरी तथा आकर्षण की केन्द्रबिन्दु है।

- वह धर्मपरायणा स्त्री है, इसीलिए वासवदत्ता को न्यासरूप में स्वीकार करती है।
- वह गुरुजनों के प्रति आदरभाव रखती है।
- पद्मावती, उदयन के रूप और गुणों से प्रभावित रहती है तथा भविष्यवाणी के अनुसार उसी से विवाह भी करती है।
- अतः एक आदर्श नारी का सम्पूर्ण गुण पद्मावती में है।

4. यौगन्धरायण -

- यौगन्धरायण उदयन का प्रधान अमात्य है तथा इस नाटक में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला पात्र है।
- वह वर्ण से ब्राह्मण है तथा स्वामिभक्ति उसके अन्दर कूट-कूटकर भरी हुई है।
- वह सभी परिस्थितियों में तथा सब प्रकार के उपायों से अपने स्वामी एवं राज्य का संरक्षण करता है।
- यौगन्धरायण, उदयन के पूर्वमन्त्री 'युगन्धर' का पुत्र है।
- यौगन्धरायण की योजना को सभी उच्चस्तरीय अधिकारी तथा राजा एवं वासवदत्ता भी मानते हैं।
- वासवदत्ता को अपनी बहन बताकर वह अपने योजना को सफल बनाता है।
- यौगन्धरायण के सम्पूर्ण चरित्र को भास ने एक वाक्य में लिखा है- **''यौगन्धरायणो भवान् ननु''**

5. वसन्तक -

- वसन्तक इस **नाटक का विदूषक** और राजा उदयन का परम मित्र है।
- वह जाति से ब्राह्मण तथा हास्य का पात्र है।
- प्रत्येक परिस्थिति में वसन्तक, उदयन के साथ ही रहता है।
- वसन्तक खाने-पीने से अत्यन्त खुश रहता है, इसीलिए वासवदत्ता की बड़ाई भी करता है।
- राजा का अत्यन्त प्रिय होने के कारण ही वह, उदयन की अतिप्रिय रानी के बारे में पूछ पाता है।
- वसन्तक बीच-बीच में हँसी मजाक भी करता है।
- सरल स्वभाव होने के साथ-साथ वसन्तक मूर्ख भी है।

6. रुमण्वान् -

- रुमण्वान्, उदयन का **प्रधान सेनापति** है।
- वह वीर, धीर एवं गम्भीर भी है।
- वासवदत्ता और यौगन्धरायण का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानते हुए भी राजा तक को भनक नहीं लगने देता कि वासवदत्ता जिन्दा हैं।
- उसके गुणों से यौगन्धरायण भी प्रेम करते हैं।
- रुमण्वान् के सेनापति रहने से उदयन को आरुणि से अपना राज्य मिलता है।

स्वप्नवासवदत्तम् की अङ्कवार प्रमुख घटनाएं

प्रथम अङ्क

- वेश बदलकर वासवदत्ता और यौगन्धरायण का मगध राज्य में प्रवेश।
- वासवदत्ता को न्यास रूप में पद्मावती के पास छोड़ना।
- लावाणक ग्राम से ब्रह्मचारी का आगमन तथा वासवदत्ता का अग्नि में जलकर मरने की सूचना।

द्वितीय अङ्क

- वत्सराज उदयन से पद्मावती का विवाह सुनिश्चित होना।

तृतीय अङ्क

- मगध राजप्रासाद में विवाह का हर्षोल्लास।
- वासवदत्ता द्वारा वरमाला का गूँथना।

चतुर्थ अङ्क

- उदयन और पद्मावती का विवाह होना।
- विवाहोपरान्त उदयन और विदूषक का प्रमदवन भ्रमण।

पञ्चम अङ्क

- पद्मावती को शिरोवेदना।
- उदयन द्वारा स्वप्न में वासवदत्ता को देखना
- आरुणि से उदयन का युद्ध।

षष्ठ अङ्क

- घोषवती वीणा की प्राप्ति।
- रभ्य नामक प्रद्योत के कञ्चुकी का आगमन।
- चित्रफलक से वासवदत्ता की पहचान।
- यौगन्धरायण द्वारा समस्त घटनाओं को बताना

परीक्षा दृष्टि

- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के लेखक हैं - **भास**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में कुल कितने अङ्क हैं? - **छः**
- स्वप्नवासवदतम् नाटक का नायक उदयन किस कोटि का है - **धीरललित**
- उदयनः कस्य नाटकस्य नायकः? - **स्वप्नवासवदत्तस्य**
- संस्कृते अतिप्राचीनरूपकस्य नाम किम्? - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' इति नाटकस्य आकरग्रन्थः - **बृहत्कथा**
- लावाणकग्राम की घटना कहाँ वर्णित है? - **स्वप्नवासवदत्तम् में**
- यौगन्धरायण किसका प्रमुख पात्र है? -**स्वप्नवासवदत्तम् का**
- रुमण्वान् पात्र का वर्णन है - **स्वप्नवासवदत्तम् में**

- स्वप्नवासवदत्ते वर्णितपात्रेषु उदयनस्य सेनापतिः कः आसीत्? - **रुमण्वान्**
- उदयनस्य चरितं कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति - **स्वप्नवासवदत्ते**
- वसन्तक (विदूषक)–युक्तरचना अस्ति - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- स्वप्नवासवदत्त-नाटके विदूषकस्य नाम किम्? - **वसन्तकः**
- वासवदत्ता कस्य राज्यस्य राजकन्या आसीत्? - **अवन्तिकायाः**
- 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः' यह सूक्ति है - **स्वप्नवासवदत्तम् में**
- ''स्वप्ने नाटके भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा'' कस्य वचनमिदम्?- **ब्रह्मचारिणः**
- 'दुःखं न्यासस्य रक्षणम्' एषा उक्तिः कस्य नाटकस्य? - **स्वप्नवासवदत्तस्य**
- 'धावक' उपाधि है - **महाकवि भास की**
- महाकवि भास उपासक हैं - **वैष्णव धर्म के**
- महाकवि भास की रीति है - **वैदर्भी**
- उदयनकथामूलक भास की रचना है- **प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्**
- स्वप्नवासवदत्तम् में पूर्वार्द्ध की घटना किस रूपक में वर्णित है - **प्रतिज्ञायौगन्धरायण में।**
- उदयन कहाँ के राजा थे? - **वत्सदेश (कौशाम्बी) के**
- वासवदत्ता के पिता का नाम क्या था? - **महासेन प्रद्योत**
- वासवदत्ता की माता का नाम क्या था? - **अङ्गारवती**
- उदयन के अधिकांश भू-भाग को किसने अधिकृत कर लिया था - **आरुणि ने (प्रतिनायक)**
- उदयन का शत्रु था - **आरुणि**
- उदयन का मन्त्री था - **यौगन्धरायण**
- लावाणक ग्राम में अग्निकाण्ड का षड्यन्त्र किसने रचा था? - **यौगन्धरायण ने**
- यौगन्धरायण ने अग्निकाण्ड का षड्यन्त्र किस ग्राम में रचा था? - **लावाणक ग्राम में**
- मगध के राजा थे - **दर्शक**
- राजा दर्शक की बहन थी - **पद्मावती**
- यौगन्धरायण किसको अपनी बहन बताकर पद्मावती के पास धरोहर के रूप में रख देता है? - **वासवदत्ता को**
- द्वितीय अङ्क में इस नाटक में किसके माध्यम से पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती गेंद से खेल रही हैं - **प्रवेशक के माध्यम से।**
- वरमाला कौन गूँथती है? - **वासवदत्ता (अवन्तिका)**
- वासवदत्ता वरमाला में क्या नहीं गूँथती है? - **सपत्नीमर्दन नामक औषधि।**
- पद्मावती और वासवदत्ता किस वन में जाकर आपस में वार्तालाप करती हैं - **प्रमदवन में**
- उदयन पद्मावती को देखने के लिए किस भवन में जाते हैं? - **'समुद्रगृह' नामक भवन में**
- अवन्तिका कौन थी? - **वासवदत्ता**
- उदयन स्वप्न में किसको बुलाता/पुकारता है?-**वासवदत्ता को**
- उदयन के सेनापति का क्या नाम था? - **रुमण्वान्**
- वत्सदेश की राजधानी थी - **कौशाम्बी**
- प्रद्योत महासेन के पुत्रों का नाम था - **पालक, गोपालक**
- पद्मावती गेंद खेलती है - **द्वितीय अङ्क में**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के मङ्गलाचरण में स्तुति की गयी है -**बलराम की**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के किस अङ्क में श्लोक नहीं है - **दूसरे एवं तीसरे अङ्क में।**
- उदयन अपने किस सेनापति के साथ आरुणि से युद्ध के लिए जाता है? - **रुमण्वान् के साथ**
- राजा महासेन प्रद्योत के कञ्चुकी का नाम है - **रैभ्य**
- उदयन के कञ्चुकी का नाम है - **बादरायण**
- उदयन की वीणा का क्या नाम था? - **घोषवती**
- घोषवती वीणा की मरम्मत करवाने कौन जाता है - **विदूषक (वसन्तक)**
- घोषवती वीणा का सम्बन्ध किस नाटक से है - **स्वप्नवासवदत्तम् से।**
- स्वप्नवासवदत्तम् में 'स्वप्न अङ्क' के नाम से किस अङ्क को जाना जाता है - **पञ्चम अङ्क को**
- उदयन की प्रेयसी, शिष्या तथा पत्नी है - **वासवदत्ता**
- छद्मवेषधारी वासवदत्ता का नाम था - **आवन्तिका**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है - **द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में।**
- 'ननु किं शक्यं रक्षितुं प्राप्तकाले' यह कथन है-**पद्मावती का।**
- 'प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते' यह कथन है - **कञ्चुकी रैभ्य का**
- 'महीमेकातपत्राङ्कां राजसिंहः प्रशास्तु नः' यह है - **भरतवाक्य**
- 'साक्षीमन्यासो निर्यातयितव्यः' यह कथन है - **उदयन का पद्मावती से**
- 'स्तनयुगले जघनस्थले च सुप्ता' यह कथन है - **उदयन का**
- वासवदत्ता की वीणा का नाम है - **घोषवती**
- 'स्मृत्वा पुनर्नृपसुतानिधनं विषादः' प्रस्तुत वाक्य में 'नृपसुता' से किसका बोध हो रहा है - **वासवदत्ता का ।**

अभ्यास प्रश्न (स्वप्नवासवदत्तम्)

1. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के लेखक हैं -
(A) कालिदास (B) भास
(C) सुबन्धु (D) विशाखदत्त

2. 'स्वप्नवासवदत्तम्' किस प्रकार का रूपक है -
(A) प्रकरण (B) समवकार
(C) डिम (D) नाटक

3. 'स्वप्नवासवदत्तम्' का नायक है -
(A) नल (B) दर्शक
(C) उदयन (D) यौगन्धरायण

4. स्वप्नवासवदत्तम् का नायक किस कोटि का है -
(A) धीरप्रशान्त (B) धीरोदात्त
(C) धीरोद्धत्त (D) धीरललित

5. वासवदत्ता के पिता का क्या नाम था?
(A) दर्शक (B) यौगन्धरायण
(C) महासेन प्रद्योत (D) रुमण्वान्

6. 'दर्शक' किस देश के राजा थे?
(A) अवन्ति के (B) मगध के
(C) वत्स के (D) उज्जयिनी के

7. 'स्वप्नवासवदत्तम्' में वर्णितपात्र उदयन का सेनापति कौन था?
(A) आरुणि (B) रुमण्वान्
(C) यौगन्धरायण (D) महासेन प्रद्योत

8. 'घोषवती वीणा' का सम्बन्ध किस नाटक से है?
(A) मृच्छकटिकम् (B) चारुदत्तम्
(C) शिशुपालवधम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्

9. वासवदत्ता किस देश की राजकन्या थी?
(A) अवन्तिदेश की (B) मगध की
(C) कौशाम्बी की (D) गान्धार देश की

10. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में विदूषक का नाम है-
(A) वसन्तक (B) बादरायण
(C) माधव्य (D) मैत्रेय

11. 'स्वप्नवासवदत्तम्' में कितने अङ्क हैं?
(A) सात (B) पाँच
(C) छः (D) दश

12. 'स्वप्नवासवदत्तम्' में राजा प्रद्योत का कञ्चुकी है-
(A) बादरायण (B) रैभ्य
(C) वातायन (D) गृष्टि

13. उदयन का कञ्चुकी है?
(A) रैभ्य (B) गृष्टि
(C) बादरायण (D) वसन्तक

14. वासवदत्ता की माता का नाम क्या था?
(A) महादेवी (B) अङ्गारवती
(C) अवन्तिका (D) पद्मावती

15. 'पद्मावती' के भाई का क्या नाम था?
(A) यौगन्धरायण (B) रुमण्वान्
(C) दर्शक (D) प्रद्योत

16. उदयन का राज्य ज्योतिषी कौन था?
(A) गोपालक और पालक (B) दर्शक
(C) प्रद्योत (D) पुष्पक और भद्र

17. 'स्वप्नवासवदत्तम्' में पूर्वार्द्ध की घटना किस रूपक में वर्णित है?
(A) चारुदत्तम् में (B) प्रतिज्ञायौगन्धरायण में
(C) पञ्चरात्रम् में (D) प्रतिमानाटक में

18. यौगन्धरायण ने अग्निकाण्ड का षड्यन्त्र किस ग्राम में रचा था?
(A) कुण्डिनपुर ग्राम में (B) लावाणक ग्राम में
(C) मगध में (D) पुष्पपुर में

19. यौगन्धरायण किसको अपनी बहन बनाकर पद्मावती के पास धरोहर के रूप में रखा था?
(A) वसुन्धरा को (B) अङ्गारवती को
(C) वासवदत्ता को (D) इनमें से कोई नहीं

20. किसके माध्यम से पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती गेंद से खेल रही हैं?
(A) विष्कम्भक के (B) प्रवेशक के
(C) चूलिका के (D) इनमें से कोई नहीं

1. B	2. D	3. C	4. D	5. C	6. B	7. B	8. D	9. A	10. A	11. C	12. B
13. C	14. B	15. C	16. D	17. B	18. B	19. C	20. B				

21. वरमाला कौन गूँथती है-
(A) वासवदत्ता (अवन्तिका) (B) पद्मावती
(C) महादेवी (D) अङ्गारवती

22. उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम् । पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम् ॥ प्रस्तुत श्लोक किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) स्वप्नवासवदत्तम् से

23. स्वप्नवासवदत्तम् में किस प्रकार का मङ्गलाचरण है?
(A) नमस्कारात्मक (B) वस्तुनिर्देशात्मक
(C) आशीर्वादात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

24. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के मङ्गलाचरण में किस प्रकार की नान्दी है?
(A) द्वादशपदानान्दी (B) अष्टपदानान्दी
(C) एकादशपदानान्दी (D) अष्टादशपदानान्दी

25. उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम्। पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम् ॥ प्रस्तुत श्लोक में कौन सा अलङ्कार है-
(A) उपमा अलङ्कार (B) उत्प्रेक्षा अलङ्कार
(C) श्लेष अलङ्कार (D) मुद्रा अलङ्कार

26. 'पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम्' प्रस्तुत वाक्य में 'भुजौ' का विशेषण है-
(A) पद्मावतीर्णपूर्णौ (B) वसन्तकम्रौ
(C) दोनों (A एवं B) (D) इनमें से कोई नहीं

27. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है?
(A) श्रीकृष्ण की (B) श्रीराम की
(C) शिवजी की (D) बलराम की

28. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के मङ्गलाचरण में बलराम की तुलना किस ऋतु से की गयी है?
(A) शरद ऋतु से (B) वर्षा ऋतु से
(C) वसन्त ऋतु से (D) हेमन्त ऋतु से

29. 'षोडशान्तःपुरज्येष्ठा पुण्या नगरदेवता' स्वप्नवासवदत्तम् में यह किसका कथन है?
(A) राजा (B) कञ्चुकी (रैभ्य)
(C) वसुन्धरा (D) यौगन्धरायण

30. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के छठवें अङ्क का प्रारम्भ किस पात्र के कथन से होता है?
(A) यौगन्धरायण से (B) पद्मावती से
(C) प्रतीहारी (विजया) से (D) कञ्चुकी से

31. उदयन के प्रतीहारी का क्या नाम था?
(A) धात्रीवसुन्धरा (B) मधुरिका
(C) अवन्तिका (D) विजया

32. 'घोषवती वीणा' किस नदी के किनारे प्राप्त हुयी थी?
(A) गङ्गा नदी के (B) यमुना नदी के
(C) नर्मदा नदी के (D) गोदावरी नदी के

33. 'श्रुतिसुखनिनदे' शब्द से किसका बोध हो रहा है?
(A) पद्मावती का (B) उदयन का
(C) वीणा का (D) धात्री वसुन्धरा का

34. 'या तपस्विन्या न स्मरसि' प्रस्तुत वाक्य में 'तपस्विन्या' शब्द से किसका बोध हो रहा है?
(A) वासवदत्ता का (B) पद्मावती का
(C) वसुन्धरा का (D) वसन्तक का

35. 'वाद्यान्तरेषु कथितानि च सस्मितानि' यह कथन किसका है?
(A) यौगन्धरायण का (B) राजा का
(C) दर्शक का (D) रुमण्वान् का

36. चिरकाल से सोये हुए राजा के प्रेम को किसने जगा दिया?
(A) पद्मावती ने (B) वासवदत्ता ने
(C) वीणा ने (D) धात्री ने

37. 'तां तु देवीं न पश्यामि यस्या ..... प्रिया' रिक्तस्थान पर होगा -
(A) उदयन (B) घोषवती
(C) पद्मावती (D) वासवदत्ता

38. उदयन की पहली पत्नी का क्या नाम था?
(A) पद्मावती (B) वासवदत्ता
(C) मधुरिका (D) विजया

39. पिता के क्रोध को उत्पन्न करने वाले पुत्र के समान कौन डरा हुआ है?
(A) उदयन (B) यौगन्धरायण
(C) रुमण्वान् (D) वसन्तक

21. A	**22.D**	**23.C**	**24.B**	**25.D**	**26-C**	**27-D**	**28-C**	**29-A**	**30-D**	**31-D**	**32-C**
33-C	**34-A**	**35-B**	**36-C**	**37-B**	**38-B**	**39-A**					

40. वासवदत्ता की मृत्यु को याद करके कौन अत्यन्त दुःखी है?
(A) यौगन्धरायण (B) उदयन
(C) महासेन प्रद्योत (D) वसन्तक

**41. 'पृथिव्यां राजवंश्यानामुदयास्तमयः प्रभुः।
अपि च राजा कुशली मया काङ्क्षितबान्धवः॥'
इस श्लोक में महासेन प्रद्योत की कुशलता के बारे में किसने पूछा?**
(A) उदयन (B) वसन्तक
(C) प्रतीहारी (D) धात्री

**42. 'कातरा येऽप्यशक्ता वा नोत्साहस्तेषु जायते।'
प्रस्तुत श्लोक किस ग्रन्थ से उद्धृत है?**
(A) किरातार्जुनीयम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) रत्नावली

43. 'प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते।' यह किसका कथन है?
(A) कञ्चुकी (बादरायण) (B) कञ्चुकी (रैभ्य)
(C) राजा (D) यौगन्धरायण

44. 'सदृश्यमेतद् वैदेहीपुत्रस्य' इस वाक्य में 'वैदेहीपुत्र' से किसका बोध हो रहा है?
(A) लव-कुश का (B) हनुमान् का
(C) उदयन का (D) दर्शक का

45. महासेन प्रद्योत की पुत्री का अपहरण किसने किया था?
(A) यौगन्धरायण ने (B) उदयन ने
(C) वसन्तक ने (D) आरुणि ने

46. 'मम प्रवासदुःखार्ता माता कुशलिनी ननु' यह वाक्य किसने कहा है?
(A) राजा उदयन ने (B) धात्री ने
(C) वसुन्धरा ने (D) प्रतीहारी ने

47. 'कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।' प्रस्तुत वाक्य किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) मृच्छकटिकम् से
(C) स्वप्नवासवदत्तम् से (D) उत्तररामचरितम् से

48. 'कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।' यह कथन है -
(A) यौगन्धरायण का (B) उदयन का
(C) कञ्चुकी का (D) धात्री वसुन्धरा का

**49. कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।
एवं लोकस्तुल्यधर्मो वनानां काले-काले छिद्यते रुह्यते च॥
प्रस्तुत श्लोक में कौन सा छन्द है?**
(A) मालिनी (B) शालिनी
(C) वसन्ततिलका (D) वंशस्थ

50. 'महासेनस्य दुहिता शिष्या देवी च मे प्रिया।' यह वाक्य राजा ने किसके लिए कहा है?
(A) पद्मावती के लिए (B) वासवदत्ता के लिए
(C) अङ्गारवती के लिए (D) धात्री के लिए

51. वासवदत्ता के भाई का क्या नाम था?
(A) दर्शक (B) पुष्पक और भद्र
(C) गोपालक और पालक (D) रैभ्य

52. यौगन्धरायण राजा के कल्याण के लिए किसको छिपा दिया था?
(A) प्रतीहारी को (B) धात्री को
(C) पद्मावती को (D) वासवदत्ता को

53. 'वासवदत्ता जीवित है' यह पता चल जाने पर कौन राजा से भयभीत है?
(A) यौगन्धरायण (B)रुमण्वान् (C)आरुणि (D)दर्शक

54. 'परस्परगता लोके दृश्यते रूपतुल्यता' यह वाक्य किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) नैषधीयचरितम् से (D) स्वप्नवासवदत्तम् से

55. 'भारतानां कुले जातो विनीतो ज्ञानवाञ्छुचिः' यह वाक्य यौगन्धरायण ने किसके लिए कहा है?
(A) राजा उदयन के लिए (B) आरुणि के लिए
(C) रुमण्वान् के लिए (D) ब्रह्मचारी के लिए

56. 'भारतानां कुले जातो विनीतो ज्ञानवाञ्छुचिः' प्रस्तुत वाक्य किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) स्वप्नवासवदत्तम् से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) रत्नावली से (D) प्रबोधचन्द्रोदय से

57. 'साक्षिमन्न्यासो निर्यातयितव्यः' यह कथन किसका है?
(A) पद्मावती का (B) राजा (उदयन का)
(C) यौगन्धरायण का (D) धात्री का

58. 'अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य विपत्तिर्दारुणा कथम्' प्रस्तुत वाक्य किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) रघुवंशम् से (B) मुद्राराक्षसम् से
(C) कुमारसम्भवम् से (D) स्वप्नवासवदत्तम् से

40-B	**41-A**	**42-C**	**43-B**	**44-C**	**45-B**	**46-A**	**47-C**	**48-C**	**49-B**	**50-B**	**51.C**
52.D	**53.A**	**54.D**	**55.A**	**56.A**	**57.B**	**58.D**					

59. 'अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य विपत्तिर्दारुणा कथम्' यह कथन किस कवि का है?
(A) कालिदास का (B) भवभूति का
(C) भास का (D) भर्तृहरि का

60. 'किं नु सत्यमिदं स्वप्नः सा भूयो दृश्यते मया' यह कथन किसका है?
(A) वासवदत्ता का (B) राजा का
(C) यौगन्धरायण का (D) पद्मावती का

61. 'अर्थिस्वं नाम शरीरमपराध्यति' वाक्य किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) मृच्छकटिकम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) नैषधीयचरितम् से (D) स्वप्नवासवदत्तम् से

62. 'भवद्यत्नैः खलु वयं मज्जमानाः समुद्धताः' यह कथन किसका है?
(A) राजा का (B) यौगन्धरायण का
(C) वासवदत्ता का (D) अङ्गारवती का

63. 'न किं शक्यं रक्षितुं प्राप्तकाले' यह किसका कथन है?
(A) अवन्तिका का (B) पद्मावती का
(C) राजा का (D) रैभ्य का

64. 'कलत्रदर्शनार्हं जनं कलत्रदर्शनात् परिहरतीति बहुदोषमुत्पादयति।' यह कथन किसका है?
(A) पद्मावती का (B) धात्री का
(C) कञ्चुकी का (D) राजा का

65. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के छठवें अङ्क में कितने श्लोक हैं?
(A) 18 (B) 16
(C) 19 (D) 13

66. 'स्वप्नवासवदत्तम्' में कुल कितने श्लोक हैं?
(A) 50 (B) 57
(C) 67 (D) 47

67. 'दाहकोऽभून्न पावकः' स्वप्नवासवदत्त को किसने कहा है?
(A) भास ने (B) भवभूति ने
(C) राजशेखर ने (D) भर्तृहरि ने

68. 'स्वप्नवासवदत्तम्' का 'स्वप्न अङ्क' कौन सा है?
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम

69. 'स्वप्नवासवदत्तम्' में प्रधान रस है-
(A) शृङ्गार रस (B) करुण रस
(C) वीर रस (D) हास्य रस

70. 'स्वप्नवासवदत्तम्' में कौन सी रीति है?
(A) गौणी (B) वैदर्भी
(C) पाञ्चाली (D) कोई नहीं

71. 'स्वप्नवासवदत्तम्' का उपजीव्य है-
(A) बृहत्कथा (B) हर्षचरितम्
(C) रामायण (D) उपनिषद्

72. उदयन के भवन का नाम था-
(A) समुद्रगृह (B) कृष्णासदन
(C) सूर्यामुख (D) उपर्युक्त सभी

73. पद्मावती के आवास का नाम था-
(A) सूर्यामुख (B) अर्णवमुख
(C) समुद्रगृह (D) स्वप्नगृह

74. चित्रफलक से वासवदत्ता की पहचान किस अङ्क में होती है?
(A) पाँचवें अङ्क में (B) छठवें अङ्क में
(C) चौथे अङ्क में (D) द्वितीय अङ्क में

75. वासवदत्ता 'वरमाला' में कौन सी औषधि नहीं गूँथती है?
(A) सञ्जीवनी बूटी (B) सपत्नीमर्दन
(C) अपराजिता (D) इनमें से कोई नहीं

76. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के भरतवाक्य में छन्द है -
(A) आर्या (B) उपजाति
(C) अनुष्टुप् (D) इन्द्रवज्रा

77. 'इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्' यह सूक्ति वाक्य किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) रघुवंशम् से (B) मेघदूतम् से
(C) नीतिशतकम् से (D) स्वप्नवासवदत्तम् से

78. कथावस्तु के आधार पर महाकवि भास के नाटकों में 'स्वप्नवासवदत्तम्' का वर्गीकरण है -
(A) रामायणमूलक (B) महाभारतमूलक
(C) उदयनमूलक (D) कल्पनामूलक

79. 'वाक्यमेतत् प्रियतरं राज्यलाभशतादपि' यह वाक्य किस ग्रन्थ से उद्धृत है -
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) मृच्छकटिकम् से
(C) रघुवंशम् से (D) स्वप्नवासवदत्तम् से

80. उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम् ।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकग्रौ भुजौ पाताम् ॥
प्रस्तुत श्लोक में कौन सा छन्द है?
(A) अनुष्टुप् (B) आर्या
(C) इन्द्रवज्रा (D) उपेन्द्रवज्रा

59.C	60.B	61.D	62.A	63.B	64.D	65.C	66.B	67.C	68.D	69.A	70.B
71.A	72.C	73.C	74.B	75.B	76.C	77.D	78.C	79.D	80.B		

10 Unit

ऋग्वेद संहिता एवं कठोपनिषद्

अग्नि सूक्त | सवितृ सूक्त | विष्णु सूक्त
इन्द्र सूक्त | उषस् सूक्त | सूर्य सूक्त

वैदिक देवता का सामान्य परिचय

वेदों में सर्वोत्कृष्ट तत्त्व ही 'देव' शब्द से वाच्य है। (ऋग्वेद 1/139/119) के अनुसार कुल 33 देवता हैं, जिनमें से 11 पृथ्वी में, 11 अन्तरिक्ष में तथा 11 द्युलोक में हैं। शतपथ ब्राह्मण (11/6/3/5) के अनुसार 8 वसु, 11 रुद्र, 12 आदित्य तथा 1 इन्द्र ,1प्रजापति, कुल 33 देवता हैं। यद्यपि ऋग्वेद (11/53/6), शतपथ ब्राह्मण (11/6/3/4) तथा शांखायन श्रौतसूत्र (8/21/14) में देवताओं की संख्या 3339 निर्दिष्ट है। यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य है कि पुराणों में जो 33 कोटि देवता का उल्लेख मिलता है, वहाँ 'कोटि' शब्द प्रकार वाचक है, संख्या वाचक नहीं।

अग्नि देवता

- अग्नि पृथ्वी स्थानीय देवता हैं।
- इनकी स्तुति 200 सूक्तों में की गयी है।
- अग्नि देवता ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त के देवता हैं।
- अग्नि सूक्त (1.1) के ऋषि 'मधुच्छन्दा' हैं।
- अग्नि देवता का प्रधान कर्म हविष्य का वहन करना है।
- **अग्नि देवता के प्रमुख विशेषण/उपाधियाँ-** ऋत्विक्, होता, पुरोहित, रत्नधातमम्, कविक्रतु, चित्रश्रवस्तम्, कवि, हव्यवाह, धूमकेतु, गृहपति, दमूनस्, अंगिरस्, दूत, विश्ववेदाः, सप्तरश्मि, घृतपृष्ठ, घृतलोम, घृतप्रतीक, शोचिषकेश, विश्वपति, असुर, सहस्राक्ष, त्रिमूर्द्धा, मन्द्रजिह्व, अपानपात्, उर्जोनपात् इत्यादि।

अग्नि देवता से जुड़ी कुछ विशेष ऋचाएँ

* अग्निमीळे पुरोहितम्। * होतारं रत्नधातमम्।
* स देवाँ एह वक्षति। * अग्निर्होता कविक्रतुः।
* राजन्तमध्वराणाम्। * सः न पितेव सूनवे।

अग्नि देवता का स्वरूप

अग्नि के विराट् रूप का वर्णन करते हुए अथर्ववेद (8.1.11) में कहा गया है कि वह चार प्रकार का है- भौतिक अग्नि, जलीय अग्नि, सूर्य, विद्युत्।

- वेदों में तीन अग्नियों का उल्लेख है - गार्हपत्य अग्नि, आहवनीय अग्नि, दक्षिणाग्नि
- अग्नि का मुख्य आहार घृत है।
- घृत और ईंधन के अतिरिक्त सोम भी इनका प्रिय पेय है। इनको 'सोमगोपा' भी कहते हैं।
- अग्नि अपने उपासकों का कल्याण उसी प्रकार करते हैं, जैसे- पिता-पुत्र का- 'सः न पितेव सूनवेऽग्ने.....' (ऋक् 1/1/9)
- ऋग्वेद पुरुषसूक्त के अनुसार, अग्नि की उत्पत्ति, विराट्-पुरुष के मुख से हुई है- **'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च'**
- वैदिक ऋषि अग्नि के पिता को 'द्यौ' की संज्ञा देते हैं- **'यदेनं द्यौर्जनयत् सुरेताः।'**
- कहीं पर इन्हें त्वष्टा का पुत्र तो कहीं पर द्यावापृथिवी का पुत्र कहा गया है।
- ऋग्वैदिक विवरण के अनुसार इन्द्र ने दो पत्थरों के बीच अग्नि को उत्पन्न किया- **'यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान'**
- इसके अतिरिक्त अग्नि का जन्म दो अरणियों के घर्षण से अथवा दश युवतियों से हुआ माना जाता है।
- अग्नि को पृथिवी तथा अमृत की 'नाभि' कहा गया है।
- अन्तरिक्ष में स्थित जल से भी अग्नि की उत्पत्ति बतायी गयी है।

निरुक्त के अनुसार 'अग्नि' की व्युत्पत्ति

* अङ्गं नयति सन्नममानः। * अक्नोपनो भवति।
* अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते। * अग्रणीर्भवति इति।

(i) अग्निसूक्त (1.1)

मण्डल-1, **सूक्त**-1 **कुल मन्त्र**-9, **ऋषि**-मधुच्छन्दा, **देवता**-अग्नि, **छन्द**-गायत्री, **स्वर**-षड्ज।

1. अग्निमीळे पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।

अन्वय- यज्ञस्य/पुरोहितम्, देवम्,ऋत्विजम्, होतारम्, रत्नधातमम् अग्निम् ईळे।

शब्दार्थ- ईळे=स्तुति करता हूँ । **देवम्**=दान आदि दिव्य गुणों से सम्पन्न। **रत्नधातमम्**=रत्नों को धारण करने वाले।

अर्थ- यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलाने वाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अग्निम्**- 'इण्' धातु से निष्पन्न 'अयन' शब्द से 'अ' का, 'दह् ' धातु से निष्पन्न 'दग्ध' शब्द से 'ग्' का और 'नी' धातु को ह्रस्व करके 'नि' का ग्रहण करके 'अग्नि' शब्द निष्पन्न होता है। अतः इस शब्द में तीन भाव हैं- गतिशील, जलाने वाला और सन्मार्ग पर ले जाने वाला, अथवा 'अगि' गतौ धातु से 'नि' प्रत्यय करके 'अग्नि' शब्द निष्पन्न होता है।
- **ईळे**- 'ईळ् स्तुतौ' धातु, लट्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन।
- **पुरोहितम्**- पुरस् + धा + क्त। 'धा' को 'हि' आदेश।
- **यज्ञस्य**- यज् + नङ् = यज्ञ। षष्ठी विभक्ति का एकवचन।
- **रत्नधातमम्**- रत्नानां धाता = रत्न + धा + क्विप् = रत्नधा। तमप् प्रत्यय करके रत्नधातमम् ।

2. अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति।।

अन्वय- अग्निः पूर्वेभिः ऋषिभिः ईड्यः उत नूतनैः। स इह देवान् आवक्षति।

शब्दार्थ- पूर्वेभिः=प्राचीन। **ईड्यः**=स्तुति किया जाता है। **इह**=इस यज्ञ में। **आवक्षति**=प्राप्त करावे।

अर्थ- प्राचीन ऋषियों ने जिसकी स्तुति की थी, आधुनिक ऋषि जिसकी स्तुति करते हैं, वह अग्नि, देवों को इस यज्ञ में बुलावें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **पूर्वेभिः**- वैदिक रूप है। 'भिस् को' 'ऐस्' आदेश नहीं हुआ। लोक में 'देवैः' रूप निष्पन्न होगा।
- **ईड्यः**- ईड् + यत् = ईड्य।
- **वक्षति**- 'वह्' धातु से लोट्लकार के अर्थ में लट् लकार और छान्दस 'य' का लोप। अथवा यहाँ लेट्लकार है।

3. अग्निना रयिमश्नवत्, पोषमेव दिवे दिवे। यशसं वीरवत्तमम्।।

अन्वय- अग्निना दिवेदिवे एव पोषम् यशसम् वीरवत्तमम् रयिम् अश्नवत्।

शब्दार्थ- रयिम् = धन को। **अश्नवत्** = प्राप्त करता है। **पोषम्** = पोषण को प्राप्त होने वाले। **दिवेदिवे** = प्रतिदिन। **यशसम्** = यश को प्राप्त होने वाले। **वीरवत्तमम्** = पुत्र, भृत्य आदि वीरों से अत्यधिक युक्त।

अर्थ- अग्नि के अनुग्रह से यजमान को धन मिलता है और वह धन अनुदिन बढ़ता और कीर्तिकर होता है तथा उनसे अनेक वीर पुरुषों की नियुक्ति की जाती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अश्नवत्**- 'अश्' धातु, लेट् लकार, 'तिप्' के 'इ' का लोप और 'अट्' का आगम।
- **पोषम्**- पुष् + घञ् = पोष।
- **दिवेदिवे**- दिव शब्द के सप्तमी का एकवचन। 'नित्यवीप्सयोः' से द्वित्व।
- **यशसम्**- यशः अस्य अस्ति अर्थ में 'अच्' प्रत्यय। यशस् + अच् यशस।

4. अग्ने यं यज्ञमध्वरं, विश्वतः परिभूरसि। स इद् देवेषु गच्छति।।

अन्वय- अग्ने ! यम् अध्वरम् यज्ञम् विश्वतः परिभूः असि स इत् देवेषु गच्छति।

शब्दार्थ- अध्वरम्=हिंसा से रहित यज्ञ को। **विश्वतः**=सभी दिशाओं में। **परिभूः असि**=प्राप्त कर रहे हो। **गच्छति**=तृप्ति के लिये प्राप्त होता है।

अर्थ- हे अग्निदेवता! जिस यज्ञ को तुम चारों ओर से घेरे रहते हो, उसमें राक्षसादि-द्वारा हिंसा कर्म सम्भव नहीं है और वही यज्ञ देवों को तृप्ति देने स्वर्ग जाता है या देवताओं का सामीप्य प्राप्त करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अध्वरम्** - न विद्यते ध्वरः हिंसा यत्र स अध्वरः।
- **विश्वतः** - विश्व + तसिल्।

5. अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः। देवो देवेभिरा गमत्।।

अन्वय- होता कविक्रतुः सत्यः चित्रश्रवस्तमः देवः अग्निः देवेभिः आगमत्।

शब्दार्थ- होता=होम को निष्पन्न करने वाला। **कविक्रतुः**=अतीत और अनागत यज्ञ आदि कर्मों को जानने वाला। **सत्यः**=मिथ्या

से रहित, निश्चय ही फलों को देने वाला। **चित्रश्रवस्तमः**=विविध प्रकार की कीर्ति से युक्त। **आगमत्**=आवे।

अर्थ- हे अग्नि! तुम होता, अशेषबुद्धिसम्पन्न या सिद्ध-कर्मा, सत्यपरायण, अतिशय कीर्ति से युक्त और दीप्तिमान् हो। देवों के साथ इस यज्ञ में आओ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **कविक्रतुः**=कविः क्रतुः यस्य स। बहुव्रीहि समास। अथवा कविश्चासौ क्रतुः। कर्मधारय समास।
- **चित्रश्रवस्तमः-** श्रूयते इति श्रवः कीर्तिः। चित्रं श्रवः यस्य स चित्रश्रवः। तमप् प्रत्यय करके चित्रश्रवस्तमः।
- **आगमत्-** आगच्छतु अर्थ में लोट् लकार में 'गम्' को छान्दस 'गच्छ' का अभाव। 'तु' के 'उ' का लोप।
- **सत्यः** - सत्सु साधु अर्थ में निपातनात् निष्पन्न।

6. यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः॥

अन्वय- अङ्ग अग्ने! यत् त्वम् दाशुषे भद्रम् करिष्यसि, तव तत् इत्। अङ्गिरः सत्यम्।

शब्दार्थ- दाशुषे=हवि का दान करने वाले यजमान के लिये। **भद्रम्**=कल्याण करने वाले पदार्थ **करिष्यसि**=प्रदान करोगे। **अङ्गिरः**=अङ्गार रूपी, अङ्गिरा मुनि को जन्म देने वाले पदार्थ।

अर्थ- हे अग्नि! तुम जो हविष् देने वाले यजमान का कल्याण साधन करते हो, वह कल्याण, हे अङ्गिर! तुम्हारा ही प्रीति साधक है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **दाशुषे-** 'दाशृ दाने' धातु से 'क्वसु' प्रत्यय। चतुर्थी विभक्ति का एकवचन।
- **अङ्गिरः-** 'गत्यर्थक अगि' धातु से औणादिक 'इरच्' प्रत्यय। 'अङ्गिरा अङ्गारा' इति यास्कः। येऽङ्गारा आसंस्तेऽङ्गिरसोऽभवन्निति (ऐतरेय ब्राह्मण), तस्मादङ्गिरो नामकमुनिकारणत्वादङ्गाररूपस्याग्नेऽङ्गिरस्त्वम्

7. उप त्वाग्ने दिवेदिवे, दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥

अन्वय- अग्ने! वयम् दिवेदिवे दोषावस्तः धिया नमः भरन्तः उप त्वा आ इमसि।

शब्दार्थ- उप=समीप। **दिवेदिवे**=प्रतिदिन। **दोषावस्तः**=रातदिन। **धिया**=उत्तम बुद्धि से। **नमो भरन्तः**=नमस्कार करते हुये। **एमसि**=आते हैं।

अर्थ- हे अग्नि! हम अनुदिन, दिन-रात, अन्तस्तल के साथ तुम्हें नमस्कार करते-करते तुम्हारे पास आते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **दोषावस्तः-** दोषा च वस्तः च दोषावस्तम्। समाहार द्वन्द्व समास। दोषा=रात्रि। वस्तः=दिन।
- **भरन्तः-** भृ+शतृ=भरत्। प्रथमा विभक्ति का बहुवचन।
- **इमसि-** 'इण् गतौ' धातु से लट्लकार, उत्तमपुरुष, बहुवचन। 'इदन्तोमसि' सूत्र से 'मस्' में इकार।

8. राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वे दमे॥

अन्वय- राजन्तम्, अध्वराणाम् गोपाम्, ऋतस्य दीदिविम्, स्वे दमे वर्धमानम्।

शब्दार्थ- राजन्तम्=प्रकाशमान होते हुये। **अध्वराणाम्**=हिंसा रहित यज्ञों के। **गोपाम्**=रक्षक। **ऋतस्य**=सत्य कर्मफलों के। **दीदिविम्**=पुनः पुनः प्रकाशित करने वाले। **वर्धमानम्**=बढ़ने वाले। **स्वे**=अपने। **दमे**=घर, यज्ञशाला में।

अर्थ- हे अग्नि! तुम प्रकाशमान, यज्ञ रक्षक, कर्मफल के द्योतक और यज्ञशाला में वर्धनशाली हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **दीदिविम्-**यङ्लुगन्त दिव् धातु से 'कि' प्रत्यय।

9. स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥

अन्वय- सः अग्ने! सूनवे पिता इव नः सूपायनः भव। नः स्वस्तये सचस्व।

शब्दार्थ- सूनवे=पुत्र के लिये। **सूपायनः**=सुप्राप्य, कल्याण करने वाला। **सचस्व**=साथ रहो। **स्वस्तये**=कल्याण के लिये।

अर्थ- जिस तरह पुत्र-पिता को आसानी से पा जाता है, उसी तरह हम भी तुम्हें पा सकें या तुम हमारे अनायास-लभ्य बनो और हमारा मंगल करने के लिए हमारे पास निवास करो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सूपायनः-** शोभनः उपायनः यस्य सः। सु+उप+इ(इण्+ल्युट् (अन)।
- **सचस्वा-** 'षच्' धातु, लोट्लकार,मध्यमपुरुष, एकवचन। 'ऋचि तू नू' से दीर्घ हुआ।

सवितृ देवता का परिचय

- सवितृ द्युस्थानीय देवता हैं।
- इनकी स्तुति 11 सूक्तों में की गयी है।

सवितृ देवता की उपाधियाँ

असुर, हिरण्यपाणि, सुपर्ण, सुनीथ, हिरण्याक्ष, हिरण्यस्तूप, स्वर्णपाद, सुमृतळीक, दमूना, स्वर्णनेत्र, स्वर्णहस्त, स्वर्णपाद, स्वर्णजिह्व इत्यादि।

सवितृ देवता का स्वरूप

- सवितृ देव मुख्य रूप से स्वर्णिम देवता हैं। इसीलिए इन्हें स्वर्णनेत्र, स्वर्णहस्त, स्वर्णपाद एवं स्वर्णजिह्व, की सञ्ज्ञा दी गयी है।
- इनको लौह, जबडों वाला भी कहा गया है।
- इनके केश, पीले तथा सुनहले हैं।
- ये विविध रूपवाले स्वर्णिम रथ पर चढ़कर चलते हैं, जिसे सफेद पैर वाले दो घोड़े खींचते हैं।

महत्त्वपूर्ण कार्य

- सवितृ मुख्य रूप से सबके प्रकाशक देवता हैं।
- ये पृथिवी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक सबको प्रकाशित करते हैं।
- कोई भी प्राणी इनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता।
- इन्हें एक प्रेरक देवता के रूप में देखा गया है।
- गायत्री मन्त्र का सम्बन्ध सीधे सवितृ देव से ही है।

सवितृ (1/35)

स्थान	स्तुति	ऋषि
(द्युस्थानीय)	(11 सूक्तों में)	(हिरण्यस्तूप)

सवितृ की व्युत्पत्ति

- सविता सर्वस्य प्रसविता, अन्धकार मध्यादागच्छन् प्रकाशः सवितेति कथ्यते।

सवितृ सूक्त (1/35) से सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ-

- **ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये।**
  (अर्थात् अपने कल्याण के लिए मैं सबसे पहले अग्नि देवता का आह्वान करता हूँ।)
- **याति देवः प्रवता यात्युद्वता याति।**
  (अर्थात् देदीप्यमान सविता देवता प्रवण मार्ग से जा रहा है और उत्कृष्ट ऊर्ध्व मार्ग से जा रहा है।)
- **तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्थाँ।**
  (अर्थात् स्वर्ग से उपलक्षित प्रकाशमान लोक तीन हैं। उनमें से दो लोक सूर्य के समीप हैं।)
- **अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री।**
  (सूर्य ने पृथिवी की आठों दिशाओं को प्रकाशित किया)

(ii) सवितृ सूक्त (1.35)

मण्डल-1, सूक्त-35, ऋषि-हिरण्यस्तूप, **देवता**-सविता
छन्द-मन्त्र 1 और 9 में जगती एवं शेष मन्त्रों में त्रिष्टुप् ,कुल मन्त्र-11

1. **ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे।**
   ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमूतये॥

अन्वय- स्वस्तये प्रथमम् अग्निम् ह्वयामि। इह अवसे मित्रावरुणौ ह्वयामि। जगतः निवेशनीम् रात्रीम् ह्वयामि। ऊतये देवम् सवितारम् ह्वयामि।

शब्दार्थ- ह्वयामि=आह्वान करता हूँ। **प्रथमम्**=सबसे पहले। **इह**=इस कार्य में। **अवसे**=रक्षा के लिये। **जगतः**=संसार के गतिशील प्राणियों को। **निवेशनीम्**=विश्राम देने वाली। **ऊतये**=रक्षा के लिये।

अर्थ- अपने कल्याण के लिये मैं सबसे पहले अग्नि देवता का आह्वान करता हूँ। इस कार्य में रक्षा करने के लिये मैं मित्र और वरुण देवताओं का आह्वान करता हूँ। संसार के गतिशील प्राणियों को विश्राम देने वाली रात्रि का मैं आह्वान करता हूँ। अपनी रक्षा के लिये मैं सविता देवता का आह्वान करता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **मित्रावरुणौ-** मित्रश्च वरुणश्च। ''देवताद्वन्द्वे च'' सूत्र से पूर्व पद को आनङ् आदेश।
- **ह्वयामि-** ह्वे धातु, लट्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन।
- **निवेशनीम्-** नि + विश् ''करणाधिकरणयोश्च'' से ल्युट् प्रत्यय। नि + विश् + ल्युट् प्रत्यय। नि + विश् + ल्युट् (अन) + ङीप् = निवेशनी।

- **सवितारम्**- सू + (इट् का आगम) + तृच् = सवितृ। द्वितीया का एकवचन।
- **रात्रीम्**- 'रात्रि' शब्द से 'रात्रेश्चाजसौ' सूत्र से ङीप् प्रत्यय।
- **ऊतये**- अव + क्तिन् (ऊठ् आदेश) = ऊति। चतुर्थी विभक्ति एकवचन।

2. आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

अन्वय- कृष्णेन रजसा आ वर्तमानः अमृतम् मर्त्यम् च निवेशयन् देवः सविता भुवनानि पश्यन् हिरण्ययेन रथेन आयाति।

शब्दार्थ- कृष्णेन=अन्धकार से आच्छन्न। **रजसा**=लोक से। **आवर्तमानः**=पुनःपुनः आता हुआ। **निवेशयन्**=अपने अपने स्थान पर निवेशित करता हुआ। **अमृतम्**=देवताओं को। **मर्त्यम्**=मनुष्यों को। **हिरण्ययेन**=सुवर्ण निर्मित। **पश्यन्**= निरीक्षण करता हुआ।

अर्थ- अन्धकार से आच्छन्न लोक से अर्थात् अन्तरिक्ष लोक से पुनः पुनः आते हुये, देवताओं को और मनुष्यों को अपने-अपने स्थान पर निवेशित करते हुये देव सविता सब-लोकों का निरीक्षण करते हुये सुवर्णनिर्मित रथ पर बैठ कर हमारे सम्मुख आ रहे हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **वर्तमानः**- वृत् + (शप्) + शानच् = वर्तमानः
- **निवेशयन्**- नि + णिजन्त विश् + शतृ प्रथमा का एकवचन।
- **मर्त्यम्**- 'मृ' धातु से 'भवेच्छन्दसि' से यत् प्रत्यय।
- **हिरण्ययेन**- हिरण्यस्य विकारः अर्थ में 'मयट्' प्रत्यय और 'ऋत्व्यवास्त्व्य' से 'मयट्' के 'म' का लोप।
- **पश्यन्**- दृश् (पश्य) + शतृ
- **याति**- या धातु, लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।

3.याति देवः प्रवता यात्युद्वता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम्। आ देवो याति सविता परावतोऽप विश्वा दुरिता बाधमानः॥

अन्वय- देवः सविता प्रवता याति,उद्वता याति, यजतः शुभ्राभ्याम् हरिभ्याम् याति। देवः विश्वा दुरिता अपबाधमानः परावतः आयाति।

शब्दार्थ- प्रवता- प्रवण मार्ग से। **उद्वता**=उत्कृष्ट ऊर्ध्व मार्ग से। **शुभ्राभ्याम्**-श्वेत,चमकीले। **हरिभ्याम्**-घोड़ों से। **परावतः**=दूर देश से। **विश्वा**=सारे। **दुरितानि**=पापों को। **अपबाधमानः**=नष्ट करता हुआ।

अर्थ- दैदीप्यमान सविता देवता प्रवण मार्ग से जा रहा है और उत्कृष्ट ऊर्ध्व मार्ग से जा रहा है (उदय होने के बाद सूर्य मध्याह्न के समय तक ऊर्ध्व मार्ग से जाता है और मध्याह्न के बाद सायंकाल तक उसका मार्ग प्रवण हो जाता है) यजन करने योग्य वह सविता श्वेत चमकीले घोड़ों से यज्ञ स्थान को जाता है। वह सविता देव सारे पापों को नष्ट करता हुआ दूर देश से अर्थात् द्युलोक से आ रहा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **प्रवता**- प्र + वन् + क्विप् = प्रवत्। तृतीया का एकवचन।
- **उद्वता**- उद् + वन् + क्विप् = उद्वत्। तृतीया का एकवचन।
- **यजतः**-यज् + अतच् = यजत।
- **विश्वा, दुरिता**- वैदिक प्रयोग। लोक में विश्वानि, दुरितानि होगा।

4. अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम् । आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः॥

अन्वय- कृष्णा रजांसि तविषीम् दधानः यजतः चित्रभानुः सविता अभीवृतम् कृशनैः विश्वरूपम् हिरण्यशम्यम् बृहन्तम् रथम् आस्थात्।

शब्दार्थ- अभीवृतम्=सम्मुख वर्तमान। **कृशनैः**=सुवर्ण द्वारा। **विश्वरूपम्**= सब प्रकार से सुन्दर रूप वाले। **हिरण्यशम्यम्** =सुवर्ण रचित शम्याओं (लगामों) वाले। **यजतः**=यजन करने योग्य। **बृहन्तम्**=बड़े। **आस्थात्**=सवार हो गया है। **चित्रभानुः**=चित्र विचित्र किरणों वाला। **कृष्णा**=अन्धकार से आच्छन्न। **रजांसि**= लोकों को। **तविषीम्**=प्रकाश रूप बल को।

अर्थ- काले वर्ण से युक्त अर्थात् अन्धकार से आच्छन्न लोकों को लक्ष्य करके अपने प्रकाश रूप बल को धारण करता हुआ, यजन करने योग्य चित्र विचित्र किरणों वाला सविता देवता (सूर्य) सम्मुख वर्तमान सुवर्ण द्वारा सब प्रकार के सुन्दर रूप वाले, सुवर्ण रचित शम्याओं वाले (घोड़े के कन्धों पर डाली गई नियन्त्रित करने वाली लगाम शम्या कहलाती है), बड़े रथ पर सवार हो गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अभीवृतम्**- अभि + वृत + क्विप् = अभीवृत्। द्वितीया विभक्ति का एकवचन। वैदिक दीर्घत्व वैदिक रूप।
- **कृष्णा**- कृष् + नक् = कृष्ण। नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा विभक्ति का बहुवचन।

- **तविषीम्-** तवि् + टिषच् (इष्) + ङीप् = तविषी। तवेर्णिद्वा (उ. 1.49)से टिषच्।
- **दधानः-**धा + शानच्
- **आस्थात्-** आ + स्था धातु, लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

5.विजनाञ्छ्यावा शितिपादो अख्यन् रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः। शश्वद्विशः सवितुर्दैव्यस्योपस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः॥

अन्वय- शितिपादः श्यावाः हिरण्यप्रउगम् रथम् वहन्तः जनान् वि अख्यन्। विशः शश्वत् सवितुः दैव्यस्य उपस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः।

शब्दार्थ- जनान्=प्राणियों को। **श्यावाः**=काले रंग के सूर्य के घोड़े। **शितिपादः**=सफेद पैरों वाले। **अख्यन्**=प्रकाशित करते हैं। **हिरण्यप्रउगम्**=सोने के बने हुये जुए वाले। **शश्वत्**=निरन्तर। **विशः**=प्रजायें। **उपस्थे**=समीप। **तस्थुः**=अवस्थित हैं।

अर्थ- सफेद पैरों वाले काले रङ्ग के सूर्य के घोड़े सोने के बने हुये जुए वाले सूर्य के रथ को वहन करते हुये प्राणियों को विशेष रूप से प्रकाशित करते हैं। प्रजायें निरन्तर सूर्य देवता के समीप बैठती हैं और सारे लोक प्रकाश के लिये सूर्य के समीप अवस्थित हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **शितिपादः-** शितयः पादाः यस्य सः = शितिपाद्। प्रथमा विभक्ति का बहुवचन। बहुव्रीहि समास।
- **वहन्तः-** वह् + शतृ। प्रथमा का बहुवचन।
- **दैव्यस्य-** देवस्य इदम्। 'देवाद्यञञौ' (पा.4.1.85) से यञ्। देव + यञ् = दैव्य।
- **अख्यन्-** 'ख्या' धातु लङ्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन।
- **उपस्थे-** उप + स्था + क = उपस्थ। सप्तमी का एकवचन।

6. तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्थाँ एका यमस्य भुवने विराषाट् । आणिं न रथ्यममृताधि तस्थुरिह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत्॥

अन्वय- द्यावः तिस्रः द्वौ सवितुः उपस्था, एका यमस्य भुवने विराषाट्। रथ्यम् आणिम् न अमृता अधितस्थुः। उ तत् यः चिकेतत् इह ब्रवीतु।

शब्दार्थ- तिस्रः= तीन। **द्यावः**=स्वर्ग से उपलक्षित प्रकाशमान लोक। **उपस्था**=समीप हैं। **भुवने**=लोक में, घर में। **विराषाट्** =जाने वालों को सहन करता है। **रथ्यम् आणिम्**=रथ के अक्ष में डाली गई कील। **अमृता**=अमृत, चन्द्र तारे आदि प्रकाशमान नक्षत्र, जल। **अधितस्थुः**=स्थित हैं। **चिकेतत्**=जानता है।

अर्थ- स्वर्ग से उपलक्षित प्रकाशमान लोक तीन हैं। उनमें से दो लोक सूर्य के समीप हैं। अर्थात् दो लोक-भूलोक और द्यु लोक सूर्य से प्रकाशित होते हैं। एक तीसरा लोक अन्तरिक्ष लोक है जो यम के घर में जाने वाले प्रेतों को सहन करता है। अर्थात् मरने के बाद पुरुष अन्तरिक्ष के मार्ग से यमलोक को जाते हैं जिस प्रकार रथ के अक्ष में डाली गई आणि (कील) से रथ अवस्थित रहता है, उसी प्रकार अमृत अर्थात् चन्द्र, तारे आदि प्रकाशमान नक्षत्र अथवा जल उस सूर्य के समीप अवस्थित हो गये हैं। और इस प्रकार के सूर्य को जो मनुष्य जानता है वह इस विषय में बतलावे। वही मनुष्य सूर्य की महिमा का वर्णन कर सकता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **उपस्था-** उप + स्था + क = उपस्थ। सप्तमी विभक्ति का एकवचन में ''आङ्याजयारां चोपसंख्यानम्'' से सप्तमी में 'आ' आदेश।
- **रथ्यम्-** रथ + यत् = रथ्य।
- **विराषाट्-** विरा + षाट् = विराषाट्। वूर्यन्त इति विराः। वृ + क + ण्वि। सह् + क्विप् = षाट्।
- **चिकेतत्-** 'कित् ज्ञाने' धातु, लेट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।

7. वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद् गभीरवेपा असुरः सुनीथः। क्वे३दानीं सूर्यः कश्चिकेत कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान॥

अन्वय- सुपर्णः अन्तरिक्षाणि व्यख्यत्, गभीरवेपाः असुरः सुनीथः। इदानीम् सूर्यः क्व? अस्य रश्मिः कतमाम् द्याम् आततान, कः चिकेत।

शब्दार्थ- सुपर्णः=सुन्दर गति वाली सूर्य की रश्मियाँ। **व्यख्यत्** =विशेष रूप से प्रकाशित किया है। **गभीरवेपाः**=गम्भीर कम्पन वाली, शीघ्रगामिनी। **असुरः**=प्राणों को देने वाली। **सुनीथः**=अच्छी प्रकार से मार्ग पर ले जाने वाली। **चिकेत**=जानता है। **आततान**=व्याप्त किया है।

अर्थ- सुन्दर गति वाली सूर्य की रश्मियों ने अन्तरिक्ष आदि तीनों लोकों को विशेष रूप से प्रकाशित किया है। वे रश्मियाँ गम्भीर कम्पन वाली अर्थात् शीघ्रगामिनी, प्राणों को देने वाली और अच्छी प्रकार से मार्ग पर ले जाने वाली हैं। अब इस समय रात्रि में सूर्य कहाँ है इसकी किरणों ने किस द्यु लोक को व्याप्त किया है, यह कौन जानता है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **गभीरवेपाः-**गभीर वेपाः कम्पन यस्य सः। वेप+असुन्=वेपस्। प्रथमा विभक्ति एकवचन।
- **सुनीथः-** नी+क्थन्=नीथ। शोभनः नीथः यस्य सः-सुनीथः।

- **अख्यत्-** ख्या धातु, लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **ततान-** तन् धातु, लिट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन।
- **असुरः-** असून् प्राणान् राति ददाति इति असुरः। असु +रा+क।
- **चिकेत-** 'कित् ज्ञाने' धातु, लिट्लकार, प्रथमपुरुष का एकवचन।

8.अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् हिरण्याक्षः सविता देव आगाद् दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि॥

अन्वय- पृथिव्याः अष्टौ ककुभः वि अख्यत्, त्री सप्त सिन्धून्। योजना धन्व। हिरण्याक्षः सविता देवः दाशुषे वार्याणि रत्ना दधत् आ अगात् ।

शब्दार्थ- अष्टौ=आठ। **व्यख्यत्**=प्रकाशित किया है। **ककुभः**=दिशाओं को। **त्री**=तीन अन्तरिक्ष आदि लोकों को। **सिन्धून्**=गंगा आदि नदियों को। **योजना**=प्राणियों को। **धन्व** =संयुक्त करो। **हिरण्याक्षः**= हितकारी, रमणीय स्वर्णिम चक्षु से युक्त। **आ अगात्**=आ रहा है। **रत्ना**=वरण करने योग्य रत्नों को। **दाशुषे**=हवि प्रदान करने वाले यजमान के लिये।

अर्थ- सूर्य ने पृथिवी की आठों दिशाओं को (पूर्व आदि चार दिशाओं और आग्नेय आदि चार दिशाकोणों को) प्रकाशित किया है। तीन अन्तरिक्ष आदि लोकों को प्रकाशित किया हैं और सात गंगा आदि नदियों को अथवा सात समुद्रों को प्रकाशित किया है। हे सूर्य ! प्राणियों को अपने-अपने भोगों से संयुक्त करो। हितकारी, रमणीय अथवा स्वर्णिम चक्षु से युक्त सब का प्रेरक सूर्य देवता हवि प्रदान करने वाले यजमान के लिये वरण करने योग्य रत्नों को प्रदान करता हुआ आ रहा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **त्री-** द्वितीया विभक्ति का बहुवचन। ''शेषश्छन्दसि'' से विभक्ति का छान्दस् लोप।
- **योजना-**युज्+ ल्युट् (अन)=योजन। द्वितीया विभक्ति, बहुवचन वैदिक रूप।
- **व्यख्यत्-**वि+ख्या धातु, लुङ् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **दधत्-** धा+शतृ=दधत् ।
- **आगात्-** आ+इण् (गा) धातु, लुङ् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **वार्याणि-** 'वृ' धातु से ''ऋहलोर्ण्यत्'' ण्यत् प्रत्यय।

9. हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति॥

अन्वय-हिरण्यपाणिः विचर्षणिः सविता उभे द्यावापृथिवी अन्तः ईयते। अमीवाम् अपबाधते। सूर्यम् वेति। कृष्णेन रजसा द्याम् अभिवृणोति।

शब्दार्थ- हिरण्यपाणिः=सुवर्णमय हाथों वाला,सुवर्ण को हाथों में लिये हुये। **विचर्षणिः**=सब को देखने वाला। **अन्तः**=मध्य में। **ईयते**=गति करता है। **अमीवाम्**=रोग आदि बाधाओं को। **अपबाधते**=दूर करता है। **कृष्णेन=** अन्धकार को आच्छन्न करने वाले। **रजसा=** तेज से। **ऋणोति**=व्याप्त कर लेता है।

अर्थ- सुवर्णमय हाथों वाला अथवा यजमानों को देने के लिए सुवर्ण को हाथों में लिये हुये सबको देखने वाला प्रेरक सविता देवता द्युलोक और अन्तरिक्ष लोक के मध्य में गति करता है। वह रोग आदि बाधाओं को दूर करता है और सूर्य के प्रति जाता है। अन्धकार को दूर करने वाले तेज से वह आकाश को व्याप्त कर लेता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **द्यावापृथिवी-** द्यौः च पृथिवी च। 'दिव्' के स्थान पर 'द्यावा' आदेश।
- **ईयते-** आत्मनेपदी 'ई' धातु, लट्लकार, प्रथमपुरुष,एकवचन।
- **बाधते-** आत्मनेपदी 'बाध्' धातु, लट्लकार,प्रथमपुरुष एकवचन।
- **वेति-**अदादिगण की 'वी' धातु, लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **ऋणोति-** तनादिगण की 'ऋणु' धातु, लट्लकार प्रथमपुरुष, एकवचन।

10. हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ्। अपसेधन् रक्षसो यातुधानानस्थाद्देवः प्रतिदोषं गृणानः॥

अन्वय- हिरण्यहस्तः असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववान् अर्वाङ् यातु। रक्षसः यातुधानान् अपसेधन् देवः प्रतिदोषम् गृणानः अस्थात्।

शब्दार्थ- हिरण्यहस्तः=सुवर्णमय हाथों वाला,सुवर्ण को हाथों में लिये हुये। **असुरः**=प्राणों को देने वाला। **सुनीथः**=अच्छा नेता। **सुमृळीकः**=उत्तम सुख को देने वाला। **स्ववान्=** धनसम्पन्न। **अर्वाङ्**=हमारी ओर। **अपसेधन्**=दूर करता हुआ। **रक्षसः**=राक्षसों को। **यातुधानान्**=दैत्यों को। **प्रतिदोषम्**=प्रत्येक रात्रि में। **मृणानः**=स्तुति किया जाता हुआ।

अर्थ- सुवर्णमय हाथों वाला अथवा यजमानों को देने के लिये सुवर्ण को हाथों में लिये हुये प्राणों को देने वाला अच्छा नेता, उत्तम सुख को देने वाला, धनसम्पन्न यह सविता देव हमारी ओर आवे। राक्षसों और दैत्यों को दूर करता हुआ यह देव प्रत्येक रात्रि में स्तुति किया जाता हुआ हमारे सम्मुख अवस्थित हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सुनीथः-** नी+क्थन्=नीथ। शोभनः नीथः यस्य स=सुनीथः।

- **सुमृळीकः-** शोभनं मृळीकं यस्य सः=सुमृळीकः।
- **स्ववान्-**स्व+ मतुप्=स्ववत्। प्रथमा का एकवचन।
- **गृणानः-** गृ+(श्ना)+शानच्।
- **रक्षसः-** रक्ष्+असि=रक्षस्। द्वितीया का बहुवचन।
- **अपसेधन्-**अप+सिध्+शतृ=प्रथमा का एकवचन।
- **प्रतिदोषम्-** दोषा-दोषा प्रति प्रतिदोषम्। अव्ययीभाव समास।
- **अस्थात्-** स्था धातु, लुङ्लकार,प्रथमपुरुष, एकवचन।

11. ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे।
तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव॥

अन्वय-सवितः! ये ते पन्थाः पूर्व्यासः अरेणवः अन्तरिक्षे सुकृताः सुगेभिः तेभिः पथिभिः अद्य नः रक्ष च। देव! नः अधि ब्रूहि च।

शब्दार्थ- पूर्व्यासः=पहले से निश्चित चले आये हैं। **अरेणवः**= धूलि से रहित हैं। **सुकृताः**=अच्छी प्रकार से बनाये गये हैं। **सुगेभिः**=अच्छी प्रकार से चल सकने के योग्य। **अधिब्रूहि**= उपदेश प्रदान करो।

अर्थ- हे सबके प्रेरक सविता देवता ! जो तुम्हारे मार्ग पहले से निश्चित चले आये हैं, धूलि से रहित हैं और अन्तरिक्ष में अच्छी प्रकार से बनाये गये हैं, अच्छी प्रकार से चल सकने के योग्य उन मार्गों से आकर आज इस दिन हमारी रक्षा भी करो और हे देव ! हमें उपदेश भी प्रदान करो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **पूर्व्यासः-** पूर्वे भवः अर्थ में 'यत्' प्रत्यय। पूर्व+यत्=पूर्व्य। प्रथमा विभक्ति का बहुवचन वैदिक रूप। लोक में 'पूर्व्ये' रूप होगा।
- **पन्थाः-**पथिन् शब्द, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन। वैदिक रूप।
- **सुकृताः-** सु + कृ + क्त।
- **सुगेभिः-** सुष्ठु गन्तुं योग्यः अर्थ में 'सु + गम् धातु' से 'सुदोरधिकरणे च' सूत्र से 'ड' प्रत्यय। सु + गम् + ड = सुग। तृतीया का बहुवचन। वैदिक रूप। लोक में 'सुगैः' रूप होगा।
- **रक्ष-** रक्ष् धातु, लोट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन।
- **ब्रूहि-** ब्रू धातु, लोट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन।

विष्णु देवता का परिचय

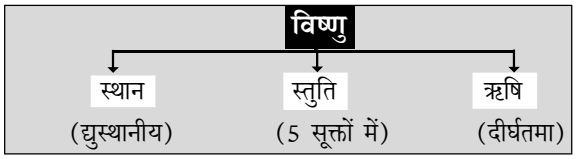
- विष्णु द्युस्थानीय देवता हैं।
- विष्णु की स्तुति 5 सूक्तों में की गयी है।
- विष्णु (1/154) सूक्त के ऋषि 'दीर्घतमा' हैं।

विष्णु के विशेषण

उरुक्रम, उरुगाय, कुचर, गिरिष्ठा, वृष्ण, गिरिक्षित, विक्रम, त्रिविक्रम, भीम इत्यादि।

विष्णु देवता का स्वरूप

- मानवाकृति के रूप में विष्णु के तीन कदमों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है-
  'विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः' 'यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु', 'उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था', सधस्थमेको त्रिभिरित्पदेभिः' इत्यादि।
- विष्णु के परमधाम में सहस्र सींगों वाली गायें हैं-
  'ता वां वास्तून्युशमसि गमध्यै। यत्र गावो भूरिशृंगा अयासः।।'
- वेदों में विष्णु को इन्द्र का मित्र तथा पुराणों में उपेन्द्र भी कहा गया है।
- पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड इनके वाहन हैं।



विष्णु के महत्त्वपूर्ण कार्य

- विष्णु ने अपने तीन कदमों के द्वारा सम्पूर्ण लोकों को नापा था
- विष्णु गर्भ के रक्षक माने जाते हैं।
- गर्भाधान के निमित्त अन्य देवताओं के साथ विष्णु की भी स्तुति की जाती है।
- ये परोपकारी, प्रचुर धन का दान करने वाले, उदार, सबके रक्षक तथा विश्व का भरण पोषण करने वाले हैं।
- शाकपूणि के मत में सूर्य के तीनों लोक- पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोक ही विष्णु के तीनों कदम हैं जबकि **और्णवाभ** के मत में विष्णु के तीनों कदम ही सूर्य के उदय, मध्याह्न तथा अस्त के द्योतक हैं।

विष्णु की व्युत्पत्ति

- विष्णातेर्विशतेर्वा स्याद् वेवेष्टेर्व्याप्तिकर्मणः।

विष्णु (1/154) से सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ-

- **यः पार्थिवानि विममे रजांसि।**
  (अर्थात् जिस विष्णु ने पृथिवी सम्बन्धी रजःकणों अर्थात् अग्नि, वायु, आदित्य विशेष लोकों की विशेष रूप से रचना की ।

➢ **यस्य त्री पूर्णा मधुना।**
(अर्थात् जिस विष्णु के मधुर दिव्य अमृत से भरे हुए तीन पद कभी क्षीण न होते हुए अन्न के द्वारा आनन्दित करते हैं)

➢ **यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।**
(जहाँ बड़े-बड़े ऊँचे सींगो वाली गायें अथवा अनेक प्रकार से फैलने वाली किरणें निवास करती हैं।)

(iii) विष्णु-सूक्त (1.154)

मण्डल-1, **सूक्त**-154, **ऋषि**-दीर्घतमा, **देवता**-विष्णु, **छन्द**-त्रिष्टुप्, **कुल** मन्त्र -6 ।

1. **विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि।**
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः॥

अन्वय- विष्णोः वीर्याणि नु कम् प्रवोचम्, यः पार्थिवानि रजांसि विममे, यः त्रेधा विचक्रमाणः उरुगायः उत्तरम् सधस्थम् अस्कभायत्।

शब्दार्थ- विष्णुः= व्यापनशील विष्णु देवता। **नु** = शीघ्र। **वीर्याणि**=वीर कार्यों को। **प्रवोचम्**=कहता हूँ। **पार्थिवानि**= पृथ्वी सम्बन्धी। **रजांसि**=रजःकणों को, लोकों को। **विममे**= विशेष रूप से बनाया। **अस्कभायत्**=स्तम्भित किया, आधार रूप से बनाया। **उत्तरम्** = अति उत्कृष्ट। **विचक्रमाणः**=लांघते हुये। **त्रेधा**=तीन प्रकार से, या तीन डगों में। **उरुगायः**=महान् पुरुषों से स्तुति किया जाता हुआ।

अर्थ- हे मनुष्यो! मैं व्यापनशील विष्णु देवता के वीर कार्यों को बहुत शीघ्र कहता हूँ, जिस विष्णु ने पृथिवी सम्बन्धी रजः कणों अर्थात् अग्नि, वायु, आदित्य आदि विशेष लोकों की विशेष रूप से रचना की। और जिस विष्णु ने तीन प्रकार से या तीन डगों में अपने बनाये हुए लोकों को लांघते हुए एवं महान् पुरुषों से स्तुति किये जाते हुए होकर ऊँचे या अति उत्कृष्ट तीनों लोकों के आश्रयभूत साथ रहने के स्थान को स्तम्भित किया, आधार रूप से बनाया ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **विष्णोः-** 'विष्लृ व्याप्तौ' धातु से विष् + नु = विष्णु। षष्ठी विभक्ति का एकवचन।
- **वीर्याणि-** वीर् +यत्=वीर्य। नपुंसकलिङ्ग, द्वितीयाविभक्ति, बहुवचन।
- **प्रवोचम्-** 'प्र+वच्' धातु, लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन। छान्दस अट् का अभाव। वर्तमानकाल में 'लङ्' का प्रयोग।
- **पार्थिवानि-** पृथिवी+अण् =पार्थिव।
- **अस्कभायत्-** 'स्कम्भ' धातु लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन। यहाँ 'श्ना' को वैदिक 'शायच्' आदेश हुआ। लोक में 'अस्कभ्नात्' रूप होगा।
- **त्रेधा-** त्रि+धा=त्रेधा।
- **विममे-** वि+मा धातु लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **उरुगायः-** 'उरुभिः गीयते' अर्थ में उरु+गै+अच् (अ)= उरुगाय।
- **उत्तरम्-** उत्+तरप्=उत्तर।
- **सधस्थम्-** सह+स्था+क=सधस्थ।

2. प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

अन्वय- यस्य उरुषु त्रिषु विक्रमणेषु विश्वा भुवनानि अधिक्षियन्ति तत् विष्णुः वीर्येण प्रस्तवते, भीमः कुचरः गिरिष्ठाः मृगः न।

शब्दार्थ- प्रस्तवते= स्तुति किया जाता है। **भीमः**=भयानक। **कुचरः**=कुत्सित हिंसा आदि कार्य करने वाला, स्वतन्त्रता पूर्वक भूमि पर विचरण करने वाला। **गिरिष्ठाः**=पर्वतों में रहने वाला। **उरुषु**=विस्तीर्ण। **विक्रमणेषु**=डगों में। **अधिक्षियन्ति**=निवास करते हैं।

अर्थ- जिस विष्णु के विस्तीर्ण लम्बे तीन डगों में सम्पूर्ण लोक आ जाते हैं या आश्रय लेकर निवास करते हैं, उस विष्णु की वीर कार्यों से स्तुति उसी प्रकार की जाती है, जिस प्रकार भयानक, कुत्सित हिंसा आदि कार्य करने वाले या स्वतन्त्रता पूर्वक भूमि पर विचरण करने वाले, पर्वत आदि उन्नत प्रदेशों में रहने वाले एवं विरोधियों को ढूंढ कर मारने वाले सिंह आदि की स्तुति की जाती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **स्तवते-** 'स्तु' धातु से कर्मकारक में लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन। व्यत्यय से 'यक्' के स्थान पर 'शप्' हुआ। वैदिक रूप। लोक में स्तूयते रूप होगा।
- **कुचरः-** कु+चर्+ट।
- **मृगः-** मार्ष्टि गच्छति अन्विषति अर्थ में मृज्+क=मृग। अथवा मृ+गम्+अ=मृग।
- **गिरिष्ठाः-** गिरिषु तिष्ठति अर्थ में-गिरि+स्था+क्विप् ।
- **विश्वा-** विश्व पद प्रथमा विभक्ति,बहुवचन। लोक में 'विश्वानि' बनेगा।

- **वीर्येण-** वीर्+यत्=वीर्य। तृतीया विभक्ति, एकवचन= वीर्येण।
- **विक्रमणेषु-**वि+क्रम्+ल्युट् (अन)=विक्रमण। सप्तमी विभक्ति, बहुवचन=विक्रमणेषु।
- **अधिक्षियन्ति-** अधि+क्षि, लट्लकार, प्रथमपुरुष,बहुवचन।

3. प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभिः॥

अन्वय- यः इदम् दीर्घम् प्रयतम् सधस्थम् एकः इत् त्रिभिः पदेभिः विममे, गिरिक्षिते उरुगायाय वृष्णे विष्णवे मन्म शूषम् प्र एतु।

शब्दार्थ- शूषम्=बल। **प्र एतु**=प्राप्त होवे। **मन्म**=मननीय, स्तुति के योग्य। **गिरिक्षिते**=वाणियों में निवास करने वाले, उन्नत प्रदेश में रहने वाले। **वृष्णे**=कामनाओं को पूर्ण करने वाले। **दीर्घम्** विस्तृत। **प्रयतम्**= नियमों में बंधा हुआ। **सधस्थम्**=सबका सम्मिलित रहने का स्थान। **विममे**=नाप लिया था।

अर्थ- जिस विष्णु ने इस दृश्यमान अति विस्तृत नियमों में बंधे हुए सबके सम्मिलित स्थान लोकत्रय को अकेले ही तीन डगों में नाप लिया था, उस वाणियों में निवास करने वाले या उन्नत प्रदेश में रहने वाले, बहुतों के द्वारा स्तुति किये जाने वाले, कामनाओं को पूर्ण करने वाले और सर्वव्यापक विष्णु के लिये हमारा यह मननीय या स्तुति के योग्य बल, जो हमारे कृत्यों से उत्पन्न हुआ है, प्राप्त होवे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **शूषम्-** शूष्+घञ् ।
- **मन्म-** मन्+ मनिन् ।
- **गिरिक्षिते-**गिरि+क्षि+क्विप्=गिरिक्षित्। गिरौ क्षयति अर्थ में।
- **उरुगायाय-** उरुभिःगीयते तस्मै।उरु+गा+यक्=उरुगाय। चतुर्थी विभक्ति, एकवचन=उरुगायाय।
- **प्रयतम्-** प्र+यम्+क्त=प्रयत।
- **सधस्थम्-**सह+स्था+क=सधस्थ। 'सह' के 'ह' को 'ध' आदेश।
- **विममे-** वि+मा धातु, लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **वृष्णे-** वृष्+कनिन् (अन्)=वृषन् वेद में चतुर्थी का एकवचन।

4. यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्याम् एको दाधार भुवनानि विश्वा॥

अन्वय- यस्य मधुना पूर्णा त्री पदानि अक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति,य उ एकः पृथिवीम् द्याम् उत त्रिधातु विश्वा भुवनानि दाधार।

शब्दार्थ- पूर्णा=भरे हुये। **मधुना**=दिव्य अमृत से। **अक्षीयमाणा**= क्षीण न होते हुये। **स्वधया**=अन्न के द्वारा। **मदन्ति**= आनन्दित करते हैं। **त्रिधातु**=पृथिवी-जल-तेज इन तीनों धातुओं से युक्त। **उत**=और। **दाधार**=धारण करता है

अर्थ- जिस विष्णु के मधुर दिव्य अमृत से भरे हुए तीन पद कभी क्षीण न होते हुए अन्न के द्वारा आनन्दित करते हैं, और जो अकेला ही विस्तृत पृथिवी लोक को द्यु लोक और अन्तरिक्ष लोक को, तीन धातुओं पृथिवी, जल, तेज से युक्त बनाता हुआ सभी लोकों को धारण करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **त्री-** 'जस्' का लोप और 'त्रि' को दीर्घ। वैदिक रूप। लोक में 'त्रीणि' होगा
- **अक्षीयमाणा-** क्षि+यक्+(मुक् का आगम)+शानच्=क्षीयमाण। न+क्षीयमाण=अक्षीयमाण।
- **पूर्णा-** लोक में पूर्णानि होगा।
- **मदन्ति-** 'मदी हर्षे' धातु 'लट्लकार' प्रथमपुरुष, बहुवचन। लोक में 'मदयन्ति' या 'माद्यन्ति' रूप होगा।
- **त्रिधातु-** त्रयाणां धातूनां समाहारः।
- **विश्वा-** वैदिक रूप। लोक में 'विश्वानि' होगा।
- **द्याम् -** द्यो शब्द, द्वितीया का एकवचन।
- **दाधार-** धृ धातु, लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन। वर्तमान काल में लिट्।

5. तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः॥

अन्वय- अस्य प्रियम् तत् पाथः अभि अश्याम्, यत्र देवयवः नरः मदन्ति। उरुक्रमस्य विष्णोः परमे पदे मध्वः उत्सः। इत्था सः हि बन्धुः।

शब्दार्थ- पाथः=लोक को। **अभि अश्याम्**=प्राप्त करूँ। **देवयवः**=विष्णु देवता के भक्त। **मदन्ति**=आनन्दित होते हैं। **उरुक्रमस्य**=परम पराक्रम वाले,महान् डगों वाले। **इत्था**=इस प्रकार से। **मध्वः**=मधुर अमृत का। **उत्सः**= स्रोत।

अर्थ- इस विष्णु के प्रिय उस लोक को प्राप्त करूँ, जहाँ उस विष्णु देव के भक्त जन आनन्द का अनुभव करते हैं। परम पराक्रम वाले अथवा महान् डगों वाले सर्वव्यापक विष्णु के परम स्थान में मधुर अमृत का स्रोत है। इस प्रकार से वह विष्णु निश्चय से सबका बन्धु है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अश्याम्-** अश् धातु, आशीर्लिङ्, उत्तमपुरुष, एकवचन।
- **पाथः-** पा+असुन् (थुट् का आगम)।

- **देवयवः-** देव+यु+क्विप्=देवयु। प्रथमा विभक्ति का बहुवचन।
- **मदन्ति-** मद् धातु, लट्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन।
- **इत्था-** 'इत्थम्' का वैदिक रूप।
- **मध्वः-** 'मधु' शब्द षष्ठी विभक्ति का एकवचन। लोक में 'मधुनः'बनेगा।

6.ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै, यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि॥

अन्वय- यत्र भूरिशृङ्गाः गावः अयासः, वाम् ता वास्तूनि गमध्यै उश्मसि। अत्र अह उरुगायस्य वृष्णः तत् परमम् पदम् भूरि अव भाति।

शब्दार्थ- वास्तूनि=निवास योग्य स्थान या लोक। **उश्मसि**= कामना करते हैं। **गमध्यै**=जाने के लिये। **गावः**=गौयें, किरणें। **भूरिशृङ्गाः**=बड़े ऊँचे सीगों वाली, अनेक प्रकार से फैलने वाली। **अयासः**=निवास करती है, प्रकाश से युक्त हैं। **अह**=निश्चय से। **अवभाति**=प्रकाशित हो रहा है। **भूरि**=अत्यधिक।

अर्थ- हे यजमान और हे उसकी पत्नी ! जहाँ बड़े -बड़े ऊंचे सींगों वाली गौयें अथवा अनेक प्रकार से फैलने वाली किरणें निवास करती हैं या अत्यधिक प्रकाश से युक्त हैं, तुम दोनों के उन निवास योग्य स्थानों या लोकों पर जाने के लिये हम कामना करते हैं। यहाँ निश्चय ही महान् जनों से या बहुतों से स्तुति किये जाने वाले और कामनाओं को पूरा करने वाले विष्णु देव का परम पद या सर्वोत्कृष्ट अन्तरिक्ष लोक अत्यधिक रूप से प्रकाशित हो रहा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **ता-** वैदिक रूप है। लोक में 'तानि' होगा।
- **गमध्यै-** 'गम्' धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय के अर्थ में वैदिक अध्यैन् प्रत्यय।
- **वाम्** - युवयोः का वैकल्पिक रूप है।
- **उश्मसि-**'वश् कान्तौ' धातु, लट्लकार, उत्तमपुरुष, बहुवचन। छान्दस रूप।
- **अयासः-**'इण् गतौ' + अच् = अय। प्रथमाविभक्ति का बहुवचन वैदिक रूप।
- **अवभाति-** अव + भा धातु लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।

इन्द्र देवता का परिचय

- इन्द्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं।
- इन्द्र की स्तुति 250 सूक्तों में की गयी है। ऋग्वेद में सर्वाधिक स्तुति इन्द्र की ही है।
- इन्द्र सूक्त (2.12) के ऋषि 'गृत्समद' हैं।

इन्द्र की प्रमुख उपाधियाँ

वृत्रहा, सुशिप्र, सोमपा, शक्र, पुरन्दर, वज्री, वज्रहस्त, मरुत्सखा, वज्रबाहु, हरिकेश, हरिश्मश्रु, हिरण्यबाहु, चित्रभानु, पुरुहूत, वृषा, शचीपति, आखण्डल, सोमी, मरुत्वान्, धनञ्जय, गोत्रभिद्, मनस्वान्, संवृक्समत्सु, सप्तरश्मि, अच्युतच्युत, अपांनेता इत्यादि।

इन्द्र देवता का स्वरूप

- इनके होठों के अत्यन्त सुन्दर होने के कारण इन्हें 'सुशिप्र' कहा गया है।
- इन्द्र का प्रधान शस्त्र 'वज्र' है। इसी वज्र को धारण करने के कारण इन्हें 'वज्रिन्' या 'वज्रबाहु' आदि नामों से पुकारा गया है।
- इन्द्र का सर्वश्रेष्ठ पेय 'सोम' है। इसीलिए इन्हें 'सोमपा' कहा गया है- 'यो सोमपा निचितो वज्रबाहुः।'
- उत्पन्न होते ही इन्द्र ने अपने पराक्रम का परिचय दिया, जिससे आकाश और पृथ्वी काँपने लगे- 'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यषेताम्।'
- ऋग्वेदीय पुरुषसूक्त के अनुसार इन्द्र की उत्पत्ति, विराट् पुरुष के मुख से हुई है- 'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च'।
- मरुत् का मित्र होने के कारण इन्द्र को मरुत्सखा, मरुत्वान् आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

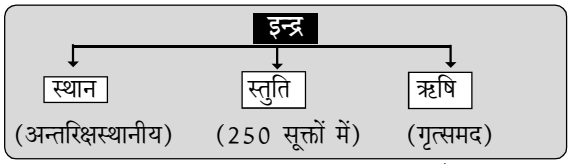
इन्द्र के महत्त्वपूर्ण कार्य

- इनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य वृत्रवध है।
- इन्होंने 'बल' नामक असुर का वध करके गायों को उसकी गुफा से मुक्त किया।
- इन्द्र ने ही सूर्य तथा उषा को उत्पन्न किया- 'यो सूर्यं उषसं जजान।'
- इन्द्र ने ही 'शम्बर' नामक असुर को 40 वर्ष पर्यन्त ढूँढ कर मार डाला।
- इन्होंने ही द्युलोक में चढ़ते हुए रौहिण नामक असुर को झटका देकर नीचे गिरा दिया।

इन्द्र की व्युत्पत्ति

- इरां दृणाति।
- इरां ददाति।

- इरां दधाति।
- इरां दारयते।
- इरां धारयते।
- इन्दवे द्रवति।
- इन्दौ रमत, इन्दञ्छवूणां दारयिता।



इन्द्र (2.12) सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ

- **यो जात एव प्रथमो मनस्वान्** (जो उत्पन्न होते ही सब देवताओं में प्रमुख मनस्वी हुआ।)
- **येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि।** (जिसने इन सम्पूर्ण नश्वर भुवनों को स्थिर किया है।)
- **यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य।**
  (अर्थात् जो समृद्धिशाली व्यक्ति को प्रेरणा देने वाला है, जो निर्धन को प्रेरणा देने वाला है।)
- **यः सूर्यं य उषसं जजान।**
  (अर्थात् जिसने सूर्य को और जिसने ऊषा को उत्पन्न किया)
- **यः शश्वतो मह्येनो दधानान्।**
  (जिसने अत्यधिक पाप को धारण करने वाले व्यक्तियों का वध कर डाला)

(iv) इन्द्र सूक्त (2.12)

मण्डल-2, **सूक्त**-12, **ऋषि**- गृत्समद, **देवता**-इन्द्र, **छन्द**-त्रिष्टुप्, **स्वर**-धैवत,**कुल मन्त्र**-15।

1. यो जात एव प्रथमो मनस्वान्, देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।

अन्वय- जनासः! यः जातः एव प्रथमः मनस्वान् देवः क्रतुना देवान् पर्यभूषत् यस्य शुष्मात् रोदसी अभ्यसेताम्, नृम्णस्य महना स इन्द्रः।

शब्दार्थ- **जातः**=उत्पन्न हुआ। **प्रथमः**=प्रमुख, परम। **मनस्वान्**=मनस्वी। **देवः**=दिव्य गुणों से युक्त। **क्रतुना**=यज्ञ से, कर्म से। **परि अभूषत्**=अतिक्रमण किया। **शुष्मात्**=बल से। **रोदसी**=द्युलोक और पृथिवी लोक। **अभ्यसेताम्**=डरते थे, काँपते थे। **नृम्णस्य**=सेना के। **महना**=महत्त्व से। **जनासः**=हे मनुष्यो, असुरो।

अर्थ- मनुष्यो या असुरो! जो प्रकाशित हैं, जिन्होंने जन्म के साथ ही देवों में प्रधान और मनुष्यों में अग्रणी होकर वीरकर्म-द्वारा सारे देवों को विभूषित किया था, जिनके शरीर-बल से द्यावा-पृथिवी भयभीत हुई थी और जो महती सेना के नायक थे, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **जातः-** जन्+क्त।
- **मनस्वान्-** मनस्+मतुप् (वत्) =मनस्वत्। प्रथमा का एकवचन।
- **पर्यभूषत्-** 'परि+भूष्' धातु, लङ् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन। अथवा परि+भू वैदिक व्यत्यय से यहाँ 'शप्' न होकर 'क्स' हुआ।
- **शुष्मात्-** शुष्+मनिन्=शुष्म।
- **मह्ना-** 'मह् पूजायाम्' धातु से 'इ' प्रत्यय=महि। तृतीया का एकवचन। वैदिक रूप।
- **नृम्णस्य-**नृ+म्ना+क=नृम्ण। नृणां म्नानम् आवृत्तिः यत्र तत् नृम्णम्।
- **अभ्यसेताम्-**भ्यस् धातु (आत्मनेपद), लङ्लकार, प्रथमपुरुष, द्विवचन।
- **जनासः-**जन का प्रथमा का बहुवचन। वैदिक रूप। लोक में जनाः होगा।
- **इन्द्रः-** इदि परमैश्वर्ये + र = इन्द्र।

2. यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः॥

अन्वय- जनासः! यः व्यथमानाम् पृथिवीम् अदृंहत्, यः प्रकुपितान् पर्वतान् अरम्णात्, यः वरीयः अन्तरिक्षम् विममे, यः द्याम् अस्तभ्नात् स इन्द्रः।

शब्दार्थ- **व्यथमानाम्**=हिलती हुई। **अदृंहत्**=स्थिर कर दिया था। **प्रकुपितान्**=कुपित हुये, इच्छानुसार इधर-उधर स्वच्छन्द विचरण करते हुये। **अरम्णात्**=नियमित कर दिया था। **वरीयः**=विस्तृत। **अस्तभ्नात्**=थामा हुआ है। **द्याम्**=द्युलोक को।

अर्थ- मनुष्यो या असुरो! जिन्होंने व्यथित, पृथिवी को दृढ़ किया है, जिन्होंने प्रकुपित पर्वतों को नियमित किया है। जिन्होंने प्रकाण्ड अन्तरिक्ष को बनाया है और जिन्होंने द्युलोक को निस्तब्ध किया है, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **व्यथमानाम्-**व्यथ्+शानच् (शप् और मुक् का आगम)
- **अदृंहत्-**दृह् धातु, लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- **प्रकुपितान्-** प्र+कुप्+ (इट्)+क्त=प्रकुपित।
- **अरम्णात्-** अन्तर्भावित ण्यर्थ 'रम्' धातु, लङ्लकार, प्रथमपुरुष

एकवचन। छान्दस परस्मैपद और 'शप्' के स्थान पर 'श्ना'।

- **प्रकुपितां-** अरम्णात्-वैदिक सन्धि होकर 'न्' को 'ँ'।
- **वरीयः-** उरु+ईयसुन्। 'उरु' को 'वर्' आदेश।
- **अस्तभ्नात्-** स्तम्भु रोधने, लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।

3. यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपधा बलस्य। यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः ॥

अन्वय- जनासः! यः अहिम् हत्वा सप्त सिन्धून् अरिणात्, यः बलस्य अपधा गाः उदाजत्, यः अश्मनोः अन्तः अग्निम् जजान, समत्सु संवृक् स इन्द्रः।

शब्दार्थ- हत्वा=मार कर, हटा कर। **अहिम्**=वृत्र को, जल रोकने वाले पर्वत को। **अरिणात्=**बहाया था। **सिन्धून्**=नदियों को। **बलस्य**=बल नामक दैत्य की। **उदाजत्**=बन्धन से मुक्त कर बाहर निकाला था। **अपधा**=रोकी गयी। **अश्मनोः**=मेघों के, चट्टानों के। **अन्तः**=मध्य में। **अग्निम्=**विद्युत अग्नि को। **जजान**=उत्पन्न किया था। **संवृक्=**विनाश किया था। **समत्सु**=युद्धों में।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने वृत्र का विनाश करके सात नदियों को प्रवाहित किया है, जिन्होंने बल असुर-द्वारा रोकी हुई गायों का उद्धार किया था। जो दो मेघों के बीच से अग्नि को उत्पन्न करते हैं और जो समर-भूमि में शत्रुओं का नाश करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अरिणात्-** 'रीङ् प्रस्रवणे' क्र्यादिगण की धातु' लङ्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन।
- **हत्वा-** हन्+क्त्वा।
- **अश्मनोः-**अश्+मनिन्=अश्मन्। षष्ठी का द्विवचन।
- **उदाजत्-** 'उत्+अज्' धातु, लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **अपधा-** अप+धा+अङ्।
- **जजान-** 'जनी प्रादुर्भावे' धातु, लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **संवृक्-** सम्+वृज्+क्विप्।

4. येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि, यो दासं वर्णमधरं गुहाकः। श्वघ्नीव यो जिगीवाँल्लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः॥

अन्वय- येन इमा विश्वा च्यवना कृतानि,यः दासम् वर्णम् अधरम् गुहा अकः, यः लक्षम् जिगीवान् यः अर्यः पुष्टानि श्वघ्नी इव आदत्, जनासः स इन्द्रः।

शब्दार्थ- विश्वा=सम्पूर्ण भुवन। **च्यवना**=नश्वर। **कृतानि=** स्थिर किया है। **दासं वर्णम्**=हिंसा करने वाली जाति को। **अधरम्** =निकृष्ट असुर। **गुहा**=गूढ स्थान, नरक। **अकः**=कर दिया हैं, डाल दिया है। **श्वघ्नी**=शिकारी, जुआरी। **जिगीवान्=** जीत लिया है। **लक्षम्**=लक्ष्य को। **आदत्**=छीन लिया है। **अर्यः**=शत्रु के। **पुष्टानि**=धनों को।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने समस्त विश्व का निर्माण किया है, जिन्होंने दासों को निकृष्ट और गूढ़ स्थान में स्थापित किया है, जो लक्ष्य जीतकर व्याध की तरह शत्रु के सारे धन को ग्रहण करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **इमा, विश्वा-** इमानि तथा विश्वानि का छान्दस रूप।
- **च्यवना-** च्यु+ल्यु (अन)=च्यवन। प्रथमा विभक्ति बहुवचन (नपुंसक लिङ्ग) लोक में च्यवनानि बनेगा।
- **गुहा-** सप्तमी विभक्ति का एकवचन। विभक्ति का छान्दस लोप।
- **अकः-**'कृ' धातु, लुङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन। वैदिक रूप है।
- **जिगीवान्-** 'जि जये' धातु से क्वसु प्रत्यय।
- **जिगीवाँ लक्षम्-** वैदिक सन्धि होकर 'न्' को 'ँ'।
- **श्वघ्नी-** श्व + हन् से निपातनात् बनता है।

5. यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरम् उतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्। सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः॥

अन्वय- कुह सः इति यम् घोरम् पृच्छन्ति स्म, उत ईम् एषः न अस्ति इति आहुः, सः विजः इव अर्यः पुष्टीः आ मिनाति, श्रत् अस्मै धत्त, जनासः स इन्द्रः।

शब्दार्थ- कुह=कहाँ है। **घोरम्**=भयानक। **उत ईम् एनम्=**और निश्चय से जिसके विषय में। **पुष्टीः**=पोषक सम्पत्तियों को। **विजःइव** =विजेता के समान। **आमिनाति**=छीन लेता है। **श्रत्**=श्रद्धा। **धत्त**=धारण करो।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन भयंकर देव के सम्बन्ध में लोग जिज्ञासा करते हैं, वे कहाँ हैं? जिनके विषय में लोग बोलते हैं कि वे नहीं हैं और जो शासक की तरह शत्रुओं का सारा धन विनष्ट करते हैं। विश्वास करो, वही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **कुह-** किम्+ह (वैदिक प्रत्यय)।
- **सेति-**सः+इति। 'सोऽपि लोपे चेत्पादपूरणम्' सूत्र से पाद की पूर्ति के लिये विसर्ग का लोप होकर गुणसन्धि।

- **अर्यः**-अरि शब्द, षष्ठी विभक्ति एकवचन। वैदिक रूप। लोक में अरेः होगा।
- **पुष्टीः**- पुष्+क्तिन्। द्वितीया विभक्ति का बहुवचन।
- **मिनाति**- 'मीञ् हिंसायाम्' धातु लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन। मी को वैदिक ह्रस्व।

6.यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः। युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः॥

अन्वय- यः रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यः नाधमानस्य कीरेः ब्रह्मणः सुशिप्र यः युक्तग्राव्णः सुतसोमस्य अविता जनासः सः इन्द्रः।

शब्दार्थ- रध्रस्य=समृद्धिशाली व्यक्ति का। **चोदिता**=प्रेरणा देने वाला। **कृशस्य**=निर्धन का। **ब्रह्मणः**=ब्राह्मण का। **नाधमानस्य**= याचना करने वाले। **कीरेः**- स्तुति करने वाले। **युक्तग्राव्णः**= अभिषव करने के लिये पत्थरों को उद्यत किये हुये का। **अविता**= रक्षा करने वाला। **सुशिप्रः**=सुन्दर ठोड़ी वाला। **सुतसोमस्य**= सोमरस को निचोड़ने वाले का।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जो समृद्ध धन प्रदान करते हैं, जो दरिद्र याचक और स्तोता को धन देते हैं और जो शोभन हनु या केहुनी वाले होकर सोमाभिषव-कर्ता और हाथों में पत्थर वाले यजमान के रक्षक हैं वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **रध्रस्य**- 'रध हिंसासंराद्धयोः' धातु से 'र' प्रत्यय।
- **चोदिता**- चुद्+(इट्)+तृच्=चोदितृ। प्रथमा का एकवचन।
- **कृशस्य**- कृश्+क (अ)=कृश। षष्ठी का एकवचन।
- **नाधमानस्य**- नाधृ+शानच् (मुक् का आगम)। षष्ठी विभक्ति का एकवचन।
- **कीरेः**- कृ अथवा कीर्त् धातु से 'इ' प्रत्यय वैदिक रूप!
- **ब्रह्मणः**-बृह्+मनिन् ब्रह्मन् । षष्ठी का एकवचन।
- **युक्तग्राव्णः**- युक्ताः ग्राव्णः येन तस्य। युज्+क्त (त)=युक्त।
- **सुशिप्रः**- शोभनं शिप्रं यस्य सः

7. यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः। यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ॥

अन्वय- यस्य प्रदिशि अश्वासः, यस्य गावः, यस्य ग्रामाः, यस्य विश्वे रथासः, यः सूर्यम्, यः उषसम् जजान यः अपाम् नेता, जनासः! स इन्द्रः।

शब्दार्थ- अश्वासः=घोड़े हैं। **प्रदिशि**=अनुशासन में। **विश्वे**=सब। **रथासः**=रथ हैं। **जजान**=उत्पन्न किया था। **अपाम् नेता**=मेघो में से जलों को लाने वाला।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! घोड़े, गायें, गाँव और रथ जिनकी आज्ञा के अधीन हैं, जो सूर्य और उषा को उत्पन्न करते हैं और जो जल प्रेरित करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अश्वासः, रथासः**-प्रथमा विभक्ति का बहुवचन। वैदिक रूप है। लोक में अश्वाः रथाः इस प्रकार से रूप होंगे।
- **प्रदिशि**- प्र+दिश्+क्विप्। सप्तमी विभक्ति का एकवचन।
- **जजान**-अन्तर्भावित ण्यर्थ जन् धातु, लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **नेता**- णीञ् (नी) प्रापणे+तृच्=नेतृ। प्रथमा का एकवचन।

8. यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः। समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः॥

अन्वय- क्रन्दसी संयती यम् विह्वयेते। परे अवरे उभयाः अमित्राः। समानम् चित् रथम् आतस्थिवांसा नाना हवेते। जनासः! स इन्द्रः।

शब्दार्थ- क्रन्दसी=द्युलोक और पृथिवी लोक, शोर करती हुई दो सेनायें। **संयती**=मिल कर। **विह्वयेते**=आवाहन करती हैं। **परे**=उत्तम। **अवरे**=अधम। **उभया**=दोनों प्रकार के। **अमित्राः**= शत्रु। **आतस्थिवांसा**=बैठे हुये। **नाना**=अनेक प्रकार से। **हवेते**=पुकारे जाते हैं।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! दो सेनादल परस्पर मिलने पर जिन्हें बुलाते हैं, उत्तम-अधम दोनों प्रकार के शत्रु जिन्हें बुलाते हैं और एक ही तरह के रथों पर बैठे हुए दो मनुष्य जिन्हें नाना प्रकार से बुलाते हैं। वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **क्रन्दसी**- 'क्रदि' धातु से निपातनात् वैदिक रूप।
- **संयती**-सम्+इ+शतृ+ङीप्=संयती
- **विह्वयेते**-'वि+ह्वेञ्' धातु, लट्लकार, प्रथमपुरुष, द्विवचन (आत्मनेपद)।
- **आतस्थिवांसा**- आ+स्था+क्वसु। प्रथमा का द्विवचन।
- **उभयाः**- उभय शब्द, प्रथमा का बहुवचन। लोक में उभये होगा।
- **अवर उभयाः**- अवरे=उभयाः। स्वरसन्धि।

9. यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते। यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः ॥

अन्वय- यस्मात् ऋते जनासः न विजयन्ते, युध्यमानाः अवसे यम् हवन्ते, यः विश्वस्य प्रतिमानम् बभूव, यः अच्युतच्युत्, जनासः! स इन्द्रः।

शब्दार्थ- ऋते=बिना। **विजयन्ते**=विजय प्राप्त करते हैं। **अवसे**= रक्षा के लिये। **हवन्ते**=आह्वान करते हैं। **प्रतिमानम्**=प्रतिनिधि, रक्षक। **अच्युतच्युत्**=क्षय रहित पर्वतों का विनाश करने वाला,

अचल को चल बनाने वाला।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिनके न रहने से कोई विजयी नहीं हो सकता, युद्ध काल में रक्षा के लिए जिन्हें लोग बुलाते हैं, जो सारे संसार के प्रतिनिधि हैं और जो क्षय-रहित पर्वतादि को भी नष्ट करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **यस्माद् ऋते-**'ऋते' के योग में पञ्चमी विभक्ति है।
- **विजयन्ते-** वि+जि धातु, प्रथम पुरुष बहुवचन।
- **युध्यमाना-** युध्+(श्यन्+(मुक्)+शानच्=युध्यमान।
- **अवसे-**अव+असे (तुमुन् के अर्थ में वैदिक 'असे' प्रत्यय)=अवसे।
- **हवन्ते-**ह्वेञ्' या 'हू' धातु, लट्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन।
- **अच्युतच्युत्-**अच्युतानां च्यावयिता। च्यु+क्त=च्युत। न+च्युत=अच्युत। च्यु+क्विप्=च्युत्।
- **प्रतिमानम्-**प्रति+मा+ल्युट् (अन)।

10. यः शश्वतो मह्येनो दधानान् अमन्यमानाञ्छर्वा जघान।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः ॥

अन्वय- यः महि एनः दधानान् अमन्यमानान् शश्वतः शर्वा जघान, यः शर्धते शृध्याम् न अनुददाति, यः दस्योः हन्ता, जनासः! स इन्द्रः।

शब्दार्थ- शश्वतः=बहुतों का। **महि**=महान्, अत्यधिक। **एनः**=पाप को। **दधानान्**=धारण करने वाले। **अमन्यमानान्**=अवज्ञा करने वाले। **शर्वा**=वज्र से। **जघान**=वध कर दिया था। **शर्धते**=हिंसा करने वाले को, चुनौति देने वाले को, **शृध्याम्**=उत्साह से युक्त कर्म। **हन्ता**=मारने वाला।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने वज्र द्वारा अनेक महापापी अपूजकों का विनाश किया है, जो गर्वकारी मनुष्य को सिद्धि प्रदान करते हैं और जो दस्युओं के हन्ता हैं वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **दधानान्** -धा+शानच्। द्वितीया का बहुवचन।
- **अमन्यमानान्-**मन्+(श्यन)+(मुक्)+शानच्=मन्यमान। न+मन्यमान=अमन्यमान।
- **जघान-** हन् धातु, लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **शर्धते-** शृधु (शृध्)+शतृ=शर्धत्, चतुर्थी विभक्ति का एकवचन।
- **शृध्याम्-**शृध्+क्यप्+टाप्=शृध्या।
- **शर्वा-** 'शरु' शब्द, तृतीया विभक्ति का एकवचन।
- **हन्ता-**हन्+तृच्=हन्तृ। प्रथमा का एकवचन।

11. यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः॥

अन्वय- यः पर्वतेषु क्षियन्तम् शम्बरम् चत्वारिंश्याम् शरदि अन्वविन्दत्, यः ओजायमानम् अहिम् दानुम् शयानम् जघान, जनासः! सः इन्द्रः।

शब्दार्थ- शम्बरम्=शम्बर नाम के असुर को। **क्षियन्तम्**=निवास करने वाले। **चत्वारिंश्याम्**=चालीसवीं। **शरदि**=शरद ऋतु में। **अन्वविन्दत्**=खोज कर पा लिया था। **ओजायमानम्**=बल का प्रदर्शन करते हुए। **अहिम्**=प्रहार करने वाले। **दानुम्**=दनु के पुत्र असुर को। **शयानम्**=सोते हुये को, लेटे हुये को।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने पर्वत में छिपे शम्बर असुर को चालीस वर्ष खोजकर प्राप्त किया था और जिन्होंने बल-प्रकाशक अहि नाम के सोये हुये दैत्य का विनाश किया था, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **क्षियन्तम्-**क्षि+शतृ=क्षियत्। द्वितीया विभक्ति का एकवचन।
- **चत्वारिंश्याम्-** चत्वारिंशताम् पूरणः अर्थ में 'तस्य पूरणे डट्'। चत्वारिंशत्+ड+ङीप्=चत्वारिंशी। सप्तमी का एकवचन।
- **शयानम्-** शी+शानच्=शयान।
- **ओजायमानम्-** ओजस्+क्यङ्+शानच्=ओजायमान। 'ओजसोऽप्सरसो नित्यम्' से 'स' का लोप।
- **दानुम्-**दनोः अपत्यम् अर्थ में दनु+अण् ।

12. यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मान् अवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून्।
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः॥

अन्वय- सप्तरश्मिः वृषभः तुविष्मान् यः सप्त सिन्धून् सर्तवे अवासृजत्। वज्रबाहुः यः द्याम् आरोहन्तम् रौहिणम् अस्फुरत् जनासः सः इन्द्रः।

शब्दार्थ- सप्तरश्मिः=सात प्रकार के मेघों का नियन्ता। **वृषभः**=वर्षा करने वाला। **तुविष्मान्**=शक्तिशाली, बुद्धिमान्। **अवासृजत्**=प्रवाहित किया था। **सर्तवे**=बहने के लिये। **सप्त**=बहने वाले। **सिन्धून्**=जलों को। **रौहिणम्**=रौहिण नाम के असुर को। **अस्फुरत्** =मारा था। **वज्रबाहुः**=वज्र को बाहु में उठा कर। **आरोहन्तम्** = चढ़ते हुये।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जो सप्तवर्ण या वराह, स्वपत, विद्युत्, महः, धूपि, स्वापि, गृहमेघ आदि सात रश्मिओं वाले, अभीष्टवर्षा और जिन्होंने वज्रबाहु होकर स्वर्ग जाने को तैयार रौहिण को विनष्ट किया था, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **तुविष्मान्-**'तु गतौ' धातु से 'असुच्' प्रत्यय=तुविष्। तुविष्+मतुप्

- **सर्तवे-** 'सृ' धातु से 'तुमुन्' के अर्थ में वैदिक प्रयोग।
- **अस्फुरत्-** स्फुर् धातु, लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **आरोहन्तम्** -आ+रुह्+शतृ=आरोहत् । द्वितीया का एकवचन।

13. द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते। यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः॥

अन्वय- अस्मै द्यावा चित् पृथिवी नमेते, अस्य शुष्मात् पर्वताः चित् भयन्ते। यः सोमपाः निचितः वज्रबाहुः, यः वज्रहस्तः, जनासः सः इन्द्रः।

शब्दार्थ- नमेते=प्रणाम करने के लिए झुक जाते हैं। **शुष्मात्**= बल से। **भयन्ते**=भय खाते हैं। **सोमपाः**=सोमरस का पान करने वाला। **निचितः**=दृढ़ अङ्गों वाला। **वज्रबाहुः**=वज्र के समान कठोर भुजा वाला। **वज्रहस्तः**=वज्र को हाथ में धारण करने वाला।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! द्यावा-पृथिवी उन्हें प्रणाम करती है। उनके बल के सामने पर्वत काँपते हैं और जो सोमपान कर्ता दृढांग वज्रबाहु और वज्र युक्त हैं, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **द्यावाचिदस्मै पृथिवी-** द्यौश्च पृथिवी च द्यावापृथिवी। द्वन्द्व समास। वैदिक व्यत्यय के अनुसार समस्त पदों के बीच में 'चिदस्मै' पद आ गये हैं।
- **भयन्ते-**'भी भये' धातु, लट्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन में वैदिक प्रयोग। लोक में 'बिभ्यति' रूप होगा।
- **सोमपाः-**सोमं पिबति अर्थ में सोम+पा+क्विप् ।
- **निचितः-**नि+चि+क्त।

14. यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती। यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः॥

अन्वय- यः सुन्वन्तम् अवति, यः पचन्तम्, यः ऊती शंसन्तम्,यः शशमानम् ब्रह्म यस्य वर्धनम्, यस्य सोमः, यस्य इदम् राधः, जनासः सः इन्द्रः।

शब्दार्थ- सुन्वन्तम्=सोम रस निकालने वाले को। **अवति**=रक्षा करता है। **पचन्तम्**=हवियों को पकाने वाले की। **शंसन्तम्**= स्तुति करने वाले की। **शशमानम्**=स्तोत्र पढ़ने वाले की यज्ञ करने वाले की। **ऊती**=रक्षा करने के लिए। **ब्रह्म**=ब्रह्मा नामक स्तोत्र। **वर्धनम्**=बढ़ाने वाला। **राधः**=पुरोडाश आदि अन्न।

अर्थ- मनुष्यों जो सोमाभिषवकर्ता यजमान की रक्षा करते हैं, जो पुरोडाश आदि पकानेवाले, स्तोता और स्तुतिपाठक यजमान की रक्षा करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सुन्वन्तम्-**सु+शतृ (श्नु का आगम और नु के उ को व्), द्वितीया विभक्ति का एकवचन।
- **पचन्तम्, शंसन्तम्-**पच् और शंस् धातु+पचत् और शंसत्। द्वितीया का एकवचन।
- **शशमानम्-**शंस्+कानच्।
- **ऊती-** 'अव रक्षणे' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय और निपातनात् 'ऊति' चतुर्थी का एकवचन वैदिक रूप।
- **वर्धनम्-** वृध्+ल्युट्(अन) वर्धन।
- **राधः-** राध्+असुन्=राधस् ।

15. यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद्वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः। वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम॥

अन्वय- दुध्रः यः सुन्वते पचते चित् वाजम् आदर्दर्षि, किल सः सत्यः असि। इन्द्र! वयम् ते प्रियासः सुवीरासः विश्वह विदथम् आ वदेम।

शब्दार्थ- सुन्वते=सोम का अभिषव करने वाले के लिये। **पचते** हवियों को पकाने वाले के लिये। **दुध्रः**=दुर्धर, असह्य प्रभाव वाला। **वाजम्**=बल, अन्न। **दर्दर्षि**=देता है। **विश्वह**=सब दिनों में। **प्रियासः**=प्रिय होते हुये। **सुवीरासः**=उत्तम पुत्र-पौत्रों से युक्त होते हुये। **विदथम्**=स्तुति को। **आवदेम**=अच्छी प्रकार से गाते रहें।

अर्थ- इन्द्र, दुर्धर्ष होकर सोमाभिषव-कर्ता और पाककारी यजमान को अन्न प्रदान करते हैं, इसीलिए तुम्हें सत्य हो। हम प्रिय और वीर पुत्र-पौत्र आदि से युक्त होकर चिरकाल तक तुम्हारे स्तोत्र का पाठ करेंगे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सुन्वते, पचते-**सु+श्नु+शतृ, पच्+शप्+शतृ। चतुर्थी विभक्ति का एकवचन।
- **दुध्रः-** दुर्+धृ+क (अ)। निपातनात् 'दुर्' के 'र्' का लोप।
- **दर्दर्षि-** यङ् लुगन्त 'दृ' धातु लुट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन।
- **सत्यः-** अस्+शतृ। अस् के अ का लोप= सत्। सत्+य=सत्य।
- **प्रियासः, सुवीरासः-**प्रथमा विभक्ति, बहुवचन। वैदिक रूप। लोक में प्रियाः और सुवीराः होगा।
- **विश्वह-** विश्वानि अहानि अर्थ में छान्दस रूप।
- **विदथम्-**'विद्' धातु,+अथच् ! वैदिक निपातनात् रूप बना।

उषस् सामान्य परिचय

- उषस् द्युस्थानीय **देवता** हैं।
- ऋग्वेद के पूर्ण 20 सूक्तों में उषस् का वर्णन है।
- उषा के नाम का उल्लेख लगभग 300 बार से भी अधिक हुआ है।
- 'उषा' शब्द प्रकाशनार्थक 'वस्' धातु से निष्पन्न होता है।
- उषस्-सूक्त **(3.61)** के ऋषि विश्वामित्र हैं।
- उषस् अति-उज्जवल, प्रकाशमयी, श्वेत, अरुणिम, आलोकवसना, स्वर्णवर्णा और औदार्यपूर्णा है ।

उषस् देवता के प्रमुख विशेषण/उपाधियाँ

ऋतावरी, सुभगा, रेवती, प्रचेताः, मघोनी, अमृतस्य केतुः, पुराणी युवतिः, हिरण्यवर्णा, चन्द्ररथा, सूनृताः, मघोनी और सुदंसा आदि है।

उषस् देवता का स्वरूप

- द्युलोक की दुहिता उषा एक परम सुन्दरी कन्या है।
- वह द्युलोक के द्वार को खोलती है और अन्धकार को दूर करती है।
- उषा को 'पुराणी युवतिः' कहा गया है।
- उषा का सूर्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है। उषा सूर्य की प्रेयसी है और सूर्य उसका प्रियतम ।
- कुछ सूक्तों में उषा को सूर्य की माता कहा गया है।
- वह ऋत के नियमों का पालन करती है, अतः ऋतावरी है।

उषस् की व्युत्पत्ति

- उच्छतीति सत्याः।
- रात्रेः अपरः कालः।

उषस् (3.61) से सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ -

- **पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे ॥**
  (हे उषा देवी! तुम पुरातनी युवती के समान हो, बहुत अधिक बुद्धिशालिनी हो और तुम हमारे यज्ञ आदि नियम व्रत को लक्ष्य करके विचरण करती हो)
- **हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो ये।**
  (स्वर्ण के समान दीप्तिमान् अत्यधिक बलशाली)
- **स्व१र्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्तादि्दवः पेप्रथ आ पृथिव्याः।**
  अपने तेज को उत्पन्न करती हुई, सुन्दर यज्ञ रूप कर्म वाली यह उषा द्युलोक के अन्तिम किनारे से लेकर पृथिवी के अन्तिम किनारे तक फैल जाती है।
- **ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् ॥**
  सत्य से युक्त उषा देवी द्युलोक से आने वाले अपने तेज पुञ्ज से जानी जाती है। धन से युक्त होती हुई यह उषा द्युलोक और पृथिवीलोक को नाना प्रकार के रूपों से युक्त होकर व्याप्त करके स्थित होती हैं।

(v) उषस् सूक्त (3.61)

मण्डल-3, **सूक्त**-61,**ऋषि**-विश्वामित्र, **देवता**-उषस्, **छन्द**-त्रिष्टुप् , **कुल मन्त्र**-7

1. उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि।
पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे॥

अन्वय- वाजेन वाजिनि मघोनि उषः प्रचेताः गृणतः स्तोमम् जुषस्व। विश्ववारे देवि ! पुराणी युवतिः पुरन्धिः व्रतम् अनुचरसि।

शब्दार्थ- वाजेन=अन्न से। **वाजिनि**=अन्नवती। **प्रचेताः**= प्रकृष्टज्ञान वाली। **स्तोमम्**=स्तोत्र को। **जुषस्व**=ग्रहण करो। **गृणतः**=स्तुति करने वाले के। **मघोनि**=धन से सम्पन्न। **पुराणी**=पुरातनी। **पुरंधिः**=बहुत अधिक बुद्धिशालिनी। **अनुव्रतम्** =व्रत आदि नियमों को लक्ष्य करके। **चरसि**=विचरण करती हो। **विश्ववारे**=विश्व के द्वारा वरणीय।

अर्थ- हे अन्नवती तथा धनवती उषा! प्रकृष्ट ज्ञानवती होकर तुम स्तोत्र करने वाले स्तोता के स्तोत्र को ग्रहण करो। हे सबके द्वारा वरणीया, पुरातनी युवती की तरह शोभमाना और बहुस्तोत्रवती उषा, तुम यज्ञ कर्म को लक्ष्यकर आगमन करो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **वाजिनि-** वाजः अस्य अस्ति अर्थ में वाज+इनि+ङीप्। सम्बोधन का एकवचन।
- **जुषस्व-** जुष् धातु, लोट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन।
- **गृणतः-** गृ+श्ना+शतृ। षष्ठी विभक्ति का एकवचन।
- **मघोनि-** 'मघ' शब्द से 'मतुप्' के अर्थ में वैदिक 'वनिन्' प्रत्यय। 'व्' को 'उ' सम्प्रसारण और 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' से ङीप्=मघोनी। सम्बोधन का एकवचन।
- **युवतिः-** युवन्+ति=युवति। न् का लोप।
- **विश्ववारे-** विश्व+वृ+ण (अ)+टाप्। सम्बोधन का एकवचन।

- **पुरंधिः-** पुरम् धीः यस्याः अर्थ में 'कि' प्रत्यय। अथवा पुरु धीः यस्याः अर्थ में ''पृषोदरादित्वात्'' नियम से 'पुरु' को 'पुरम्' आदेश।

2. उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती।
आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये॥

अन्वय- उषः देवि ! अमर्त्या चन्द्ररथा सूनृताः ईरयन्ती विभाहि। पृथुपाजसः सुयमासः ये अश्वाः हिरण्यवर्णाम् त्वा आवहन्तु।

शब्दार्थ- देवि=दिव्य गुण वाली। **अमर्त्या**=मरण धर्म से रहित। **विभाहि**=विशेष रूप से शोभायमान बनो। **चन्द्ररथा**=सुवर्णमय रथ पर आरूढ। **सूनृताः**=प्रिय सत्य वाणी को। **ईरयन्ती**= उच्चारण करती हुई। **सुयमासः**=अच्छी प्रकार से नियन्त्रित। **हिरण्यवर्णाम्** =स्वर्ण के समान दीप्तिमान्। **पृथुपाजसः**= अत्यधिक बलशाली।

अर्थ- हे मरणधर्म-रहिता, सुवर्णमय रथ वाली उषा देवी, तुम प्रिय सत्यरूप वचन का उच्चारण करने वाली हो। तुम सूर्य किरण के सम्बन्ध से शोभमाना होओ। प्रभूतबल युक्त जो अरुण-वर्ण अश्व हैं, वे सुखपूर्वक रथ में योजित किये जा सकते हैं। वे तुम्हें आवाहन करें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **भाहि-** भा धातु, लोट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन।
- **ईरयन्ती**=ईर्+णिच्+शतृ+ङीप्।
- **सूनृताः-** सु+ऋत+टाप् (नुट का आगम और दीर्घ)
- **सुयमासः-** सु+यम्+खल्=सुयम। प्रथमा विभक्ति के बहुवचन का वैदिक रूप।
- **पृथुपाजसः-** पृथु पाजः येषां ते। पा+जुट् (ज्+असुन् (अस्)=पाजस

3. उषः प्रतीची भुवनानि विश्वोर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः।
समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व॥

अन्वय- उषः! विश्वा भुवनानि प्रतीची अमृतस्य केतुः ऊर्ध्वा तिष्ठसि। नव्यसि! समानम् अर्थम् चरणीयमाना चक्रम् इव आववृत्स्व।

शब्दार्थ- प्रतीची=सम्मुख जाती हुई। **भुवनानि विश्वा**= सम्पूर्ण लोंकों के। **ऊर्ध्वा**=ऊपर आकाश में। **तिष्ठसि**=स्थित होती है। **अमृतस्य**=मरण से रहित सूर्य को। **केतुः**=ध्वजा बोधन कराने वाली **समानम् अर्थम्**=एक ही मार्ग पर। **चरणीयमाना**= विचरण करती हुई। **चक्रम् इव**=चक्र के समान। **नव्यसि**=सदा नवीन रहने वाली। **आववृत्स्व**=पुनः पुनः घूमती रहो।

अर्थ- हे उषा देवी, तुम निखिल भूतजात के अभिमुख आगमनशीला, मरणधर्म-रहिता और सूर्य की केतु-स्वरूपा हो। तुम आकाश में उन्नत होकर बहती हो। वे नवतरा उषा, तुम एक मार्ग में विचरण करने की इच्छा करती हुई आकाश में चलने वाले सूर्य के रथाङ्ग की तरह पुनः पुनः उसी मार्ग में प्रवृत्त हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **प्रतीची-** प्रति+अञ्चु+क्विन्। ''अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्'' से ङीप् 'अञ्च्' 'अ'। 'ञ्' का लोप तथा 'प्रति' के 'ई' को दीर्घ।
- **चरणीयमाना-**'चरणम् इच्छति' अर्थ में चरण+क्यच्+शानच्+टाप्
- **केतुः-** 'चाय् पूजायाम्' धातु से चाय्+तुन्। 'चाय्' को 'कि' आदेश और गुण।
- **ववृत्स्व-** यङ्लुगन्त वृत् धातु, लोट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन
- **नव्यसि-** नव+इयसुन्+ङीप्। 'नव' के 'अ' और प्रत्यय के 'ई' का वैदिक लोप=नव्यसी। सम्बोधन का एकवचन।

4. अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी।
स्वर्१जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद्दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः॥

अन्वय- मघोनी स्वसरस्य पत्नी उषाः स्यूम इव अवचिन्वती याति। स्वः जनन्ती सुभगा सुदंसाः दिवः आ अन्तात् पृथिव्याः आ पप्रथे।

शब्दार्थ- स्यूम इव=वस्त्र के समान। **अवचिन्वती**=आच्छादित करने वाले अन्धकार का विनाश करती हुई। **मघोनी**=धन-सम्पत्ति-शालिनी। **स्वसरस्य**=सूर्य की,दिन की। **स्वः जनन्ती**= तेज को उत्पन्न करती हुई।स्वर्ग को सजीव करती हुई। **सुभगा**= सुन्दर धनों वाली। **सुदंसा**=सुन्दर यज्ञ रूप कर्मों वाली। **दिवः आ अन्तात्**=द्युलोक के अन्तिम किनारे से। **आ पृथिव्याः**= पृथिवी के अन्तिम किनारे तक। **आ पप्रथे**=फैल जाती है।

अर्थ- जो धनवती उषा वस्त्र की तरह विस्तीर्ण अन्धकार को क्षयित करती हुई सूर्य की पत्नी होकर गमन करती हैं, वही सौभाग्यवती और सत्य-कार्य शालिनी उषा द्युलोक और पृथिवी के अवसान से प्रकाशित होती हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **स्यूम-** 'षिवु तन्तुसन्ताने' धातु से मन् प्रत्यय। सिव्+म। 'सिव्' के 'व्' को ''च्छ्वोःशूडनुनासिके च'' से 'ऊठ्' और 'इ' को 'यणादेश'। स्यूम द्वितीया विभक्ति का एकवचन वैदिक रूप।
- **चिन्वती-** चि+ (श्नु) + शतृ + ङीप् = चिन्वती।
- **मघोनी-** मघ + वनिन् + ङीप् = मघोनी।
- **स्वसरस्य-** 'सुष्ठु अस्यति क्षिपति तमः' अर्थ में 'सु+अस्' से ''अरक्'' प्रत्यय=स्वसर। षष्ठी विभक्ति का एकवचन।
- **जनन्ती-** णिजन्त 'जन्' धातु से शतृ। ''छन्दस्युभयथा'' से 'णिच् का लोप।

5. अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम्।
ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक्॥

अन्वय- वः अच्छ विभातीम् देवीम् उषसम् वः नमसा सुवृक्तिम् प्रभरध्वम्। मधुधा दिवि ऊर्ध्वम् पाजः अश्रेत् रण्वसंदृक् रोचना प्ररुरुचे।

शब्दार्थ- अच्छ=स्वच्छ रूप से। **विभातीम्**=प्रकाशित होती

हुई। **प्रभरध्वम्**=करो। **नमसा**=नमस्कार के द्वारा। **सुवृक्तिम्**= उत्तम स्तुति। **ऊर्ध्वम्**=ऊर्ध्व अभिमुख होकर। **मधुधा**=स्तुति, सोम या आदित्य को धारण करने वाली। **पाजः**=तेज, बल। **अश्रेत्**=आश्रय लेती है। **रण्वसंदृक्**=रमणीय दर्शन वाली। **रोचना**= प्रकाशित होने वाले लोकों को। **प्ररुरुचे**=अतिशय रूप से प्रकाशित करती है।

अर्थ- हे स्तोताओं, तुम लोगों के अभिमुख उषादेवी शोभमाना होती हैं। तुम लोग नमस्कार-द्वारा उसकी शोभन स्तुति करो। स्तुति को धारण करने वाली उषा आकाश में उर्ध्वाभिमुख तेज को आश्रित करती है। रोचनशीला और रमणीय दर्शना उषा अतिशय दीप्त होती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **विभातीम्-** वि+भा+शतृ+ङीप्। द्वितीया विभक्ति का एकवचन। लोक में विभान्तीम् रूप भी बन सकता है।
- **भरध्वम्-**भृ धातु (आत्मनेपद) लोट्लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन।
- **रोचना-** रुच्+युच् (अन)+टाप् ।
- **सुवृक्तिम्-** सु पूर्वक 'वृजी वर्जने' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय
- **अश्रेत्-** 'श्रिञ्' धातु, वर्तमान के अर्थ में लङ्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन। (वैदिक रूप)।
- **रुरुचे-** रुच् धातु (आत्मनेपद), लिट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन। लट् के अर्थ में लिट्।
- **मधुधा-** मधु दधाति अर्थ में मधु+धा+क्विप् ।
- **रण्वसंदृक्-** रवि (रण्व्+अच्=रण्व। सम्+दृश्+क्विप्=संदृक्। रण्वं संदृक् यस्याः सा=रण्वसंदृक् ।

6. ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् । आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः॥

अन्वय- ऋतावरी दिवः अर्कैः अबोधि, रेवती रोदसी चित्रम् आ अस्थात्। अग्ने! आयतीम् विभातीम् उषसम् भिक्षमाणः वामम् द्रविणम् एषि।

शब्दार्थ- ऋतावरी=सत्य से युक्त, सत्य नियमों का पालन करने वाली। **अर्कैः**=तेजः पुञ्ज से। **अबोधि**=जानी जाती है। **रेवती**=धन से युक्त। **चित्रम्**=नाना प्रकार के रूपों से युक्त। **आ अस्थात्** =व्याप्त करके स्थित होती है। **आयतीम्**=अपनी ओर आती हुई। **विभातीम्**=प्रकाशमान। **वामम्**=अभीष्ट बाँटने योग्य। **एषि**=प्राप्त करते हो। **द्रविणम्**=धन, हवि। **भिक्षमाणः**=याचना करते हुये।

अर्थ- जो उषा सत्यवती है, उसे सब कोई द्युलोक के तेजः प्रभाव से जानते हैं। धनवती उषा नानाविध, रूप से युक्त होकर द्यावा-पृथिवी को व्याप्त करके रहती है। हे अग्नि, तुम्हारे अभिमुख आने वाली भासमाना उषा देवी से हवि की याचना करने वाले तुम रमणीय धन को प्राप्त करते हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **ऋतावरी-**ऋत+वृ+ट (अ)+ङीप्। 'त' के 'अ' को वैदिक दीर्घ। अथवा ऋत+वनिन्+ङीप्। ''वनो र च'' से 'न्' को 'र' आदेश।
- **अबोधि, अस्थात्-** 'बुध्' और 'स्था' धातु, लुङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **रेवती-** रयि+मतुप्+ङीप्। ''रयेर्मतौ बहुलम्'' सूत्र से 'य्' को सम्प्रसारण, पूर्वरूप और गुण होते हैं। 'मतुप्' के 'म्' को 'व' आदेश ''छन्दसीरः'' (पा.8/2/15) से हुआ।
- **आयतीम्-** आ+इण् गतौ+शतृ+ङीप् । 'इ' को 'य्' आदेश।
- **विभातीम् -**वि+भा+शतृ+ङीप्=विभाती। द्वितीया का एकवचन।
- **भिक्षमाणः-** भिक्ष्+(शप्)+(मुक्)+शानच् (आन)=भिक्षमाण।

7. ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश । मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा ॥

अन्वय- वृषा ऋतस्य बुध्ने उषसाम् इषण्यन् मही रोदसी आ विवेश। मित्रस्य वरुणस्य मही माया चन्द्रा इव भानुम् पुरुत्रा विदधे।

शब्दार्थ- ऋतस्य=प्राकृतिक नियमों का, अग्निहोत्र आदि नित्य नियमों का। **बुध्ने**=मूल में। **इषण्यन्**= प्रेरित करता हुआ, चाहता हुआ। **वृषा**=वर्षा करने वाला सूर्य। **मही**= महान् । **आविवेश**=सब ओर से प्रविष्ट हो गया है। **मही माया**= महती माया, विचित्र शक्ति-रूपा उषा देवी। **चन्द्रा इव** = सुनहरी कान्ति के समान। **भानुम्**= सूर्य को। **विदधे**=प्रसारित करती है। **पुरुत्रा**=बहुत से स्थानों में।

अर्थ- वृष्टि द्वारा जल के प्रेरक आदित्य सत्यभूत दिवस के मूल में उषा का प्रेरण करके विस्तीर्ण द्यावा पृथिवी के मध्य में प्रवेश करते हैं। तदन्तर महती उषा मित्र और वरुण की प्रभास्वरूपा होकर सवर्ण की तरह अपनी प्रभा को अनेक देशों में प्रसारित करती हैं। रहता है और सम्पूर्ण भुवन की हितसाधना में पृथिवी समर्थ होती रहती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **ऋतस्य-** ऋ+क्त=ऋत। षष्ठी का एकवचन।
- **बुध्ने-** बुध्+नङ्=बुध्न। सप्तमी विभक्ति का एकवचन।
- **इषण्यन्-** इच्छति इति इषन्। 'इषन्तमात्मानम् इच्छति' अर्थ में निपातित 'इषण्य्' धातु से शतृ प्रत्यय।
- **वृषा-** वृष्+कनिन् (अन्) =वृषन्।
- **विवेश-**विश् धातु, लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **दधे-** धा धातु (आत्मनेपद), लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **मही-** महत्+ङीप् ('अत्' का वैदिक लोप)
- **पुरुत्रा-** 'पुरु' शब्द से ''देवमनुष्यपुरुष.'' सूत्र से 'त्रा' प्रत्यय।

सूर्य देवता का सामान्य परिचय

* सौर देवताओं में सूर्य सबसे अधिक शक्तिशाली हैं।
* ऋग्वेद में सूर्यदेवता को पाँच सूक्तों में सम्बोधित किया गया है।
* सूर्य सूक्त (1/115) के ऋषि 'कुत्स' तथा इसमें कुल 6 मन्त्र हैं।
* सूर्य प्रकाश के देवता हैं।
* सूर्य के पिता द्यौः तथा माता अदिति हैं।
* अदिति का पुत्र होने के कारण सूर्य को आदित्य कहा जाता है।
* ऋग्वेदीय पुरुष सूक्त में सूर्य की उत्पत्ति पुरुष के नेत्र से बताई गई है।

सूर्य देवता का स्वरूप

* सूर्य देवता विश्व के द्रष्टा हैं और मनुष्यों के कर्म का प्रेरक हैं।
* वह जङ्गम अर्थात् गतिशील और तस्थुष अर्थात् स्थावर संसार की आत्मा हैं। सूर्य के उदय होने पर स्थावर और जङ्गम की संसार में वृद्धि होती है- 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' (ऋ.1/115/1)
* विश्व का उत्पादक होने के कारण सूर्य देवता को विश्वकर्मा भी कहा गया है।
* वह हरिदश्व हैं। अर्थात् उनके रथ में हरे वर्ण के सात घोड़े जुते हुए हैं

'यदेदयुक्त हरितः सधस्थात्' (ऋ.1/115/4)

* सूर्य के हरे रंग के घोड़े या किरणें कभी तो विलक्षण व्यापक अपार चमकदार बल को अर्थात् तेज को निष्पादित करती है और कभी तेज से भिन्न काले अन्धकार को निष्पन्न करती हैं। दिन और रात्रि के चक्र को सूर्य ही प्रवर्तित करता है-

'अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति' (ऋ. 1/115/5)

निरुक्त के अनुसार 'सूर्य' की व्युत्पत्ति

1. सरति अन्तरिक्षे इति सूर्यः।

(यह सूर्य अन्तरिक्ष में गति करता है)

2. सुवति कर्माणि लोकं प्रेरयति इति सूर्यः।

(लोगों को अपने- अपने कामों में लगाता है)

3. स्वीर्यते प्रेर्यते वायुनेति वा सूर्यः।

(वायु के द्वारा यह भूलोक के प्रति प्रेरित किया जाता है)

(vi) सूर्य सूक्त (1.115)

मण्डल-1, **सूक्त**-115, **कुल मन्त्र**-6, **ऋषि**-अङ्गिरस कुत्स, **देवता**-सूर्य, **छन्द**-त्रिष्टुप्, **स्वर**-धैवत।

1. चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

अन्वय- देवानाम् अनीकम् चित्रम् मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः चक्षुः सूर्यः उदगात्। द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम् आ अप्राः। जगतः तस्थुषः च आत्मा।

शब्दार्थ- देवानाम्=किरणों का, देवताओं का। **चित्रम्**=आश्चर्यजनक। **उदगात्**=उदय हुआ है। **अनीकम्**=समूह। **चक्षुः**=प्रकाशक। **आ अप्राः**=चारों ओर भर दिया है। **जगतः**=गतिशील संसार का। **तस्थुषः**=स्थावर संसार का।

अर्थ- विचित्र तेज पुञ्ज तथा मित्र, वरुण और अग्नि को चक्षुस्वरूप सूर्य उदित हुये हैं। उन्होंने द्यावा-पृथिवी और अन्तरिक्ष को अपनी किरणों से परिपूर्ण किया है। सूर्य जंगम और स्थावर- दोनों की आत्मा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **उदगात्-** उत्+इण् धातु, लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- **अनीकम्**-अन् + ईकक्
- **चक्षुः**- चक्ष् + उस्।
- **अप्राः**- 'प्रा पूरणे' धातु, लङ्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन। प्रथमपुरुष के स्थान पर वैदिक मध्यम पुरुष।
- **द्यावापृथिवी-** द्यौःच पृथिवी च इस द्वन्द्व समास में 'द्यौ' को 'द्यावा' आदेश।
- **सूर्यः**- सरति सारयति वा अर्थ में 'क्यप्' प्रत्यय।
- **जगत्-** गम् + क्विप् (गम् को द्वित्व)।
- **तस्थुषः**- स्था + क्वसु (द्वित्व और सम्प्रसारण)।

2. सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां, मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि, वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्॥

अन्वय- सूर्यः रोचमानाम् देवीम् उषसम् पश्चात् अभ्येति मर्यः योषाम् न। यत्र देवयन्तः नरः प्रतिभद्राय भद्रम् युगानि वितन्वते।

शब्दार्थ- देवीम्=प्रकाशमान होती हुई। **उषसम्**=उषा देवी के।

रोचमानाम्=दीप्तिमती। **मर्यः**=युवक मनुष्य। **योषाम्**=सुन्दर युवती के। **अभ्येति**=आता है। **देवयन्तः**=सूर्य देव की उपासना करते हुये, सूर्य को अपना बनाने के इच्छुक। **युगानि**=कर्मों को, हल के जुओं को। **वितन्वते**=सम्पन्न करते हैं, जोतते हैं। **भद्राय प्रति**=कल्याणकारी फल को प्राप्त करने के लिये।

अर्थ- जैसे पुरुष स्त्री का अनुगमन करता है, वैसे ही सूर्य भी दीप्तिमती उषा के पीछे-पीछे आते हैं। इसी समय देवाभिलाषी मनुष्य बहु-युग-प्रचलित यज्ञ कर्म का विस्तार करते हैं। सुफल के लिए कल्याण-कर्म को सम्पन्न करते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **रोचमानाम्**-रुच्+शानच्+टाप् (शप् और मुक् का आगम)।
- **मर्यः**-'मृङ् प्राणत्यागे' धातु से 'छन्दसि निष्टर्क्य.' आदि सूत्र से निपातनात् यत् प्रत्यय।
- **युगानि**- 'युजिर्' योगे' धातु से घञ् प्रत्यय। छान्दस गुणाभाव।
- **देवयन्तः**-देवम् आत्मनः इच्छन्तः अर्थ में 'क्यच्' प्रत्यय। वैदिक विशेषता के कारण 'अ' का 'ई' नहीं हुआ।
- **वितन्वते**-वि+तन् धातु से लट्लकार प्रथमपुरुष, बहुवचन।

3. भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः॥

अन्वय- भद्राः चित्राः एतग्वाः अनुमाद्यासः हरितः सूर्यस्य अश्वाः नमस्यन्तः दिवः पृष्ठम् आ अस्थुः। सद्यः द्यावापृथिवी परियन्ति।

शब्दार्थ- भद्राः=कल्याण करने वाले। **अश्वाः**=घोड़े। **हरितः**=हरे रंग के, हरित् नाम वाले। **चित्राः**=विचित्र, रंगबिरंगे, अद्भुत अङ्गों वाले। **एतग्वाः**=तीव्र गति वाले, आकाश में गति करने वाले। **अनुमाद्यासः**=स्तुति करने योग्य। **नमस्यन्तः**=नमस्कार किये जाते हुये, झुक कर चलते हुये। **दिवः**=आकाश के। **आ अस्थुः**=अधिष्ठित हो चुके हैं। **परियन्ति**=परिक्रमा करते हैं।

अर्थ- सूर्य की कल्याण-रूप हरि नाम के विचित्र घोड़े इस पथ से जाते हैं। वे सबके स्तुति-भाजन हैं। हम उनको नमस्कार करते हैं। वे आकाश के पृष्ठ-देश में उपस्थित हुए हैं। वे घोड़े तुरन्त ही द्यावापृथिवी चारों दिशाओं का परिभ्रमण कर डालते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अश्वाः**- 'अशू व्याप्तौ' धातु से 'क्वन्' प्रत्यय।
- **एतग्वाः**- 'इण् गतौ' धातु से 'तन्' प्रत्यय होकर एत। 'गम्' धातु से औणदिक 'ड्व' प्रत्यय। एतम् एतव्यं प्रति ग्वो गमनं येषां ते एतग्वाः।
- **अनुमाद्यासः**- 'अनु उपसर्ग पूर्वक मद स्तुतौ' धातु से प्रेरणा अर्थ में णिच्। यत् प्रत्यय होकर अनुमाद्य। प्रथमा विभक्ति का बहुवचन= अनुमाद्यासः। अनुमादयितुं योग्याः अनुमाद्यासः।
- **नमस्यन्तः**-नमस्+क्यच् (पूजनार्थक)। 'शतृ' प्रत्यय करके नमस्यत्।
- **अस्युः**- **'स्था'** धातु लुङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन। लट् के स्थान पर लुङ् का प्रयोग हुआ है।

4. तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥

अन्वय- सूर्यस्य तत् देवत्वम् तत् महित्वम् कर्तोः मध्या विततम् सम् जभार। यदा इत् हरितः सधस्थात् अयुक्त आत् रात्री सिमस्मै वासः तनुते।

शब्दार्थ- देवत्वम्=देवत्व, स्वामित्व। **महित्वम्**=महिमा। **मध्या**=बीच में। **कर्तोः**=कार्य करने वाले का। **विततम्**=फैले हुये। **संजभार**=समेट लेते हैं। **यदा**=जिस समय। **इत्**=निश्चय ही। **अयुक्त**=खोलते हैं। **सधस्थात्**=साथ बैठने वाले रथ से, अधिष्ठित स्थान से। **आत्**=इसके अनन्तर। **वासः**=आच्छादित करने वाले अन्धकार को। **तनुते**=विस्तृत कर देता है। **सिमस्मै**= सम्पूर्ण विश्व के लिये।

अर्थ- सूर्य देव का ऐसा ही देवत्व और माहात्म्य है कि वे मनुष्यों के कर्म समाप्त होने के पहले ही अपने विशाल किरण-जाल का उपसंहार कर डालते हैं। जिस समय सूर्य अपने रथ से हरि नाम के घोड़ों को खोलते हैं, उस समय सारे लोकों में रात्रि अन्धकाररूप आवरण विस्तृत करती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **महित्वम्**- मह+इन्=महि। महि+त्व=महित्व।
- **मध्या**- सप्तमी विभक्ति का एकवचन वैदिक रूप। लोक में 'मध्ये' बनता है।
- **विततम्**-वि+तन्+क्त=वितत।
- **कर्तोः**-कृ+तुन्=कर्तु। षष्ठी विभक्ति का एकवचन। अथवा कृ+तोसुन्=कर्तोः।

- **जभार-**'हृ' धातु, लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन। 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' सूत्र से 'ह' को 'भ' आदेश।
- **अयुक्त-** 'युजिर् धातु' लुङ्लकार, प्रथम पुरुष एकवचन=युक्त (वैदिक रूप)न+युक्त=अयुक्त।
- **सधस्थात्-**'सह+स्था' से ''घञर्थे कविधानम्'' से क प्रत्यय। ''सधमाधस्योश्छन्दसि''से 'सह' को 'सध' आदेश।
- **सिमस्मै-** सिम शब्द, चतुर्थी विभक्ति, एकवचन। 'सर्व' का पर्यायवाची है।
- **रात्री-** 'रात्रि' शब्द से ''रात्रेश्चाजसौ'' से ङीप् ।
- **तनुते-** 'तन् धातु' लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

5. तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ॥

अन्वय- तत् मित्रस्य वरुणस्य अभिचक्षे सूर्यः द्योः उपस्थे रूपम् कृणुते। अस्य हरितः अन्यत् अनन्तम् रुशत् पाजः सम् भरन्ति, अन्यत् कृष्णम् ।

शब्दार्थ- अभिचक्षे=देखने के लिये। **द्योः**=आकाश के। **उपस्थे**= शिखर पर, मध्य में। **अनन्तम्**=अपार। **रुशत्**=चमकदार। **पाजः**=बल को, तेज को। **कृष्णम्**=काले अन्धकार को। **संभरन्ति**=निष्पन्न करती है।

अर्थ- उस समय मित्र और वरुण के अर्थात् उनसे उपलक्षित समग्र विश्व के देखने के लिए वास्तविक स्वरूप ज्ञान के लिए सूर्य आकाश के शिखर पर मध्य में अपने तेजोमय रूप प्रकाश को प्रकट करता है। इस सूर्य के हरे रंग के घोड़े या किरणें कभी तो विलक्षण व्यापक अपार चमकदार बल को अर्थात् तेज को निष्पादित करती हैं। दिन और रात्रि के चक्र को सूर्य ही प्रवर्तित करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अभिचक्षे-** अभि+चक्ष्+क्विप्। चतुर्थी विभक्ति का एकवचन।
- **द्योः-** 'द्यो' शब्द की षष्ठी विभक्ति का एकवचन (वैदिक रूप)
- **उपस्थ-**उप+स्था+क=उपस्थ।
- **कृणुते-** कृ धातु लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- **पाजः-** 'पा रक्षणे' धातु से पा+असुन् ''पातेर्बलेजुट्'' जुट् का आगम। पाति रक्षति स्वं स्वीयान् वा इति पाजः।
- **रुशत्-** 'रुश् दीप्तौ' धातु से शतृ प्रत्यय।
- **भरन्ति-** भृ धातु, लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।

6. अद्या देवा उदिता सूर्यस्य, निरंहसः पिपृता निरवद्यात्।
तन्नो मित्रो वरुणो ममहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥

अन्वय- देवाः! अद्य सूर्यस्य उदिता अंहसः निष्पिपृत अवद्यात् निः। नः तत् मित्रः वरुणः अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ममहन्ताम्।

शब्दार्थ- देवाः=प्रदीप्त होती हुई सूर्य की रश्मियों। **उदिता**=उदय होने पर। **अंहसः**=पाप से। **निःपिपृत**=छुड़ाओ। **अवद्यात्**= निन्द्य कर्म से। **मित्रः**=हिंसा से रक्षा करने वाला सूर्य। **वरुणः**= आवरण शक्ति से युक्त वरुण देव। **ममहन्ताम्**=अनुमोदन करें। **अदितिः**अखण्डनीय शक्ति वाली देवमाता।

अर्थ- प्रदीप्त होती हुई हे सूर्य की रश्मियों! आज सूर्य के उदय होने पर तुम हमें पाप से छुड़ाओं और निन्द्यकर्मों से हमें बचाओं, और हमारी उस प्रार्थना का मित्र (हिंसा से रक्षा करने वाले सूर्य), वरुण (आवरण शक्ति से युक्त वरुण देव), अदिति (अखण्डनीय शक्तिशाली देवमाता), सिन्धु (स्यन्दन जलाभिमानी देवी), पृथिवी (भूलोक की अधिष्ठात्री धारणशील शक्ति) और द्यौ (द्यु लोक की अधिष्ठात्री दीप्तियुक्त शक्ति) अनुमोदन करें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अद्या-** यहाँ 'निपातस्य च'(6.3.126) सूत्र से दीर्घ हुआ।
- **उदिता-** उत्+इण्+क्त=उदित। सप्तमी विभक्ति का एकवचन। 'सुपां सुलुक्' से डा आदेश वैदिक रूप उदिता।
- **अवद्यात् -**वद्+यत्=वद्य। न+वद्य=अवद्य। पञ्चमी विभक्ति, एकवचन=अवद्यात् ।
- **अंहसः-** अम्+अहन्+असुन्=अंहस्। पञ्चमी विभक्ति का एकवचन।
- **पिपृता-**'पृ पालन पूरणयोः' धातु, लोट्लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन। ''ऋचितुनु'' सूत्र (6.3.133) से दीर्घ हुआ।
- **सिन्धुः-**स्यन्दते। 'य' को सम्प्रसारण तथा द् को ध=सिन्धु।
- **ममहन्ताम्-**'मह्' धातु, लोट्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन।

अभ्यास प्रश्न (ऋग्वेद संहिता)

1. ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त में 'पुरोहित' विशेषण किस देवता से सम्बद्ध है–

(A) इन्द्र (B) सवितृ

(C) अग्नि (D) द्यावापृथिवी

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-1.1.1)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज-31

2. ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में किस देवता की स्तुति है–

(A) इन्द्र (B) वरुण

(C) अग्नि (D) बृहस्पति

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-1.1.1)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज-31

3. 'कविक्रतुः' उपाधि किस देवता की है–

(A) अग्नि (B) विष्णु

(C) इन्द्र (D) वरुण

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-1.1.5)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज-34

4. 'पुरोहित' है –

(A) वरुण (B) इन्द्र (C) सविता (D) अग्नि

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-1.1.1)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज-31

5. अग्नि का सम्बन्ध किस ऋतु से है?

(A) वसन्त से (B) हेमन्त से

(C) ग्रीष्म से (D) वर्षा से

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–259

6. यास्कमते अग्निर्भवति–

(A) अन्तरिक्षस्थानः (B) पृथिवीस्थानः

(C) द्युस्थानः (D) गृहस्थानः

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–301

7. 'गृहपतिः' इति विशेषणं कस्य देवस्य प्रसिद्धम्?

(A) इन्द्रस्य (B) सवितुः

(C) अश्विनोः (D) अग्नेः

स्रोत– ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13

8. ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्ते कः स्तूयते–

(A) अग्निः (B) यमः

(C) विष्णुः (D) वरुणः

स्रोत-ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-1.1.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज-55

9. निम्नलिखित देवताओं में से किसे अक्सर अतिथि की उपाधि देकर सम्बोधित किया जाता है?

(A) इन्द्र (B) वरुण

(C) अग्नि (D) सोम

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13

10. 'स नः पितेव सूनवे' किस सूक्त से सम्बद्ध है?

(A) रुद्र (B) इन्द्र

(C) अग्नि (D) सविता

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.9)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–60

11. पृथिवीलोक के प्रधान देवता कौन हैं–

(A) अग्नि (B) सूर्य

(C) वायु (D) इन्द्र

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–508

12. 'होता' देव कौन हैं?

(A) इन्द्र (B) विष्णु

(C) पर्जन्य (D) अग्नि

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

13. 'स देवाँ एह वक्षति' में 'स' किसको बतलाता है?

(A) वायु (B) आदित्य

(C) अग्नि (D) इन्द्र

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.2)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

14. अग्नि देवता का विशेषण है?

(A) विश्वपति (B) मरुत्वान्

(C) उरुक्रम (D) सोमपा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–297

1. (C) 2. (C) 3. (A) 4. (D) 5. (A) 6. (B) 7. (D) 8. (A) 9. (C) 10. (C)
11. (A) 12. (D) 13. (C) 14. (A)

15. ऋग्वेदे (1.1.1) 'होतारम्' इति पदं कस्य देवस्य विशेषणं अस्ति?
(A) रुद्रस्य (B) वरुणस्य
(C) इन्द्रस्य (D) अग्नेः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

16. 'घृतलोम' इति शब्दः कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति?
(A) अग्नेः (B) विष्णोः
(C) रुद्रस्य (D) मरुतः
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–23

17. जातवेदाः इति नाम?
(A) वरुणः (B) इन्द्रः
(C) अग्निः (D) वायुः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13

18. 'दमूनाः' इति कस्य विशेषणम् अस्ति?
(A) पूषन् (B) सविता
(C) विष्णुः (D) अग्निः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–14

19. यास्कमते अग्नेः निर्वचनं किं न हि–
(A) अग्रे नयति (B) अङ्गं नयति सन्नममानः
(C) अग्रणीः भवति (D) अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते
स्रोत–हिन्दी निरुक्त (7/4) - कपिलदेव शास्त्री, पेज–301

20. पौनः पुन्येन संस्तुत देवता है–
(A) अग्नि (B) वरुण
(C) इन्द्र (D) विष्णु
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–60

21. 'रत्नधातमम्' इति कस्य विशेषणम्–
(A) बृहस्पतेः (B) अग्नेः
(C) रुद्रस्य (D) वायोः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

22. अग्नि का प्रधान कर्म क्या है?
(A) हविष्य का वहन (B) शीतलता प्रदान करना
(C) सृष्टि (D) कोई नहीं
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13, 14

23. अग्नि के साथ स्तुत्य देवता है–
(A) विष्णु (B) शिव
(C) इन्द्र (D) उषा
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13

24. शाकपूणि के वैश्वानर किसे कहा गया है?
(A) इन्द्र (B) अग्नि
(C) यम (D) विष्णु
स्रोत–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–366

25. 'हव्यवाह' जिसका नाम है, वह है–
(A) सूर्य (B) अग्नि
(C) विद्युत् (D) रुद्र
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–14

26. ऋग्वेद की प्रथम ऋचा किस देवता के प्रति है?
(A) इन्द्र (B) अग्नि
(C) वरुण (D) रुद्र
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह(अग्निसूक्त-1.1.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार,पेज–55

27. 'वहनं च हविषामावहनं च देवतानाम्' इदं कर्म–
(A) अग्निः (B) इन्द्रः
(C) अश्विनौ (D) वरुणः
स्रोत–हिन्दी निरुक्त-कपिलदेव शास्त्री, पेज–286

28. 'प्रातः सवनं वसन्तो गायत्री त्रिवृत्स्तोमो स्थन्तरं साम' एते सम्बद्धा : सन्ति देवेन सह–
(A) अग्निना (B) इन्द्रेण
(C) आदित्येन (D) विष्णुना
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–286

29. 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इति मन्त्रांशं कस्य वेदस्यास्ति?
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

30. 'स देवाँ एह वक्षति' इति कस्मिन् सूक्ते उपलभ्यते–
(A) वरुणसूक्ते (B)अग्निसूक्ते
(C) उषस्सूक्ते (D) रुद्रसूक्ते
स्रोत–ऋग्वेद (1.1.2) भाग-1 - वेदान्ततीर्थ, पेज–21

31. राजन्तमध्वः ..... निति पठ्यते–
(A) पृथिवीसूक्ते (B) अग्निसूक्ते
(C) विष्णुसूक्ते (D) वाक्सूक्ते
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.8)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–60

15. (D)	**16. (A)**	**17. (C)**	**18. (D)**	**19. (A)**	**20. (A)**	**21. (B)**	**22. (A)**	**23. (C)**	**24. (B)**
25. (B)	**26. (B)**	**27. (A)**	**28. (A)**	**29. (A)**	**30. (B)**	**31. (B)**			

32. 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इत्यस्मिन् मन्त्रे 'ईळे' पदस्य अर्थः अस्ति–

(A) गच्छामि (B) स्तौमि

(C) करोमि (D) प्रज्वालयामि

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

33. 'स नः पितेव सूनवे... सूपायनो भव' यह सूक्त है–

(A) उषस्सूक्त (B) वरुणसूक्त

(C) बृहस्पतिसूक्त (D) अग्निसूक्त

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.9)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–37

34. अग्नि की कितने सूक्तों में स्तुति की गयी है?

(A) 200 (B) 250

(C) 400 (D) 100

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–22

35. ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में मन्त्रों की संख्या है?

(A) 9 (B) 14

(C) 11 (D) 15

स्रोत– ऋग्वेद (1.1) (भाग-1) - वेदान्ततीर्थ, पेज–21

36. 'दाशुषे' का अर्थ है–

(A) दक्षिणा के लिए (B) हविर्दाता यजमान के लिए

(C) आहुति के लिए (D) पुरोहित के लिए

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ0 1.1.6)-हरिदत्तशास्त्री, पेज–58

37. 'रोदसी' का क्या अर्थ है?

(A) द्यावापृथिवी (B) रात-दिन

(C) रुद्र (D) अन्तरिक्ष

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.1) - हरिदत्तशास्त्री, पेज–177

38. 'रयिम्' पद का अर्थ है–

(A) रात्रि (B) दान

(C) दक्षिणा (D) धन

स्रोत–वेदचयनम् (ऋग्वेद 1.1.1) - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–12

39. ऋग्वैदिकसूक्तविशेषे 'दोषावस्तर्' इति पदस्य कोऽर्थः–

(A) प्रतिदिनम् (B) रात्रिन्दिवा

(C) अन्धकारः (D) अन्धकारनाशकः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.7)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज-59

40. गायत्री-मन्त्रस्य उपास्य देवता वर्तते–

(A) अग्निः (B) सविता

(C) रुद्रः (D) विष्णुः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–37

41. अग्निसूक्तस्य ऋषिः कः?

(A) हिरण्यस्तूपः (B) दीर्घतमाः

(C) मधुच्छन्दाः (D) विश्वामित्रः

स्रोत–अग्निसूक्त (ऋग्वेद 1.1.1)

42. ''स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव'' अस्य मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते?

(A) वशिष्ठः (B) मधुच्छन्दाः

(C) कण्वः (D) अङ्गिराः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋ. 1.1.9)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–37

43. प्रातः और सायं का देवता है–

(A) अग्नि (B) इन्द्र

(C) सविता (D) विष्णु

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–16

44. 'ऋताधिपति' किसकी उपाधि है–

(A) अग्नि (B) अश्विनौ

(C) सविता (D) इन्द्र

45. सवितृसूक्त (1/35) के ऋषि हैं-

(A) मधुच्छन्दा (B) विश्वामित्र

(C) सविता (D) हिरण्यस्तूप

46. का द्युस्थानदेवता–

(A) सविता (B) चन्द्रमाः

(C) वायुः (D) बृहस्पतिः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–331

47. सवितृदेवस्य नामोल्लेखः प्रायः भूतः अस्ति–

(A) 200 बारम् (B) 170 बारम्

(C) 150 बारम् (D) 140 बारम्

स्रोत–वैदिक माइथोलाजी - रामकुमार राय, पेज–58

48. सवितृसूक्त (1/35) में कितने मन्त्र हैं-

(A) 9 (B) 7

(C) 11 (D) 15

32. (B)	**33. (D)**	**34. (A)**	**35. (A)**	**36. (B)**	**37. (A)**	**38. (D)**	**39. (B)**	**40. (B)**
41. (C)	**42. (B)**	**43. (C)**	**44. (C)**	**45. (D)**	**46. (A)**	**47. (B)**	**48. (C)**	

49. 'आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् अमृतं मर्त्यं च' अनेन सम्बन्धः–

(A) विष्णुः (B) सविता

(C) अग्निः (D) वरुणः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-1.35.2) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–105

50. द्युस्थान देवता हैं–

(A) विष्णुः (B) पर्जन्यः

(C) रुद्रः (D) सोमः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–38

51. विष्णु का परमपद है–

(A) द्युस्थान (आकाश) (B) हृदय

(C) अन्तरिक्ष (D) भूलोक

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–38

52. 'यस्य त्री-पूर्णा मधुना पदानि' इसका सम्बन्ध है–

(A) वरुणसूक्त से (B) विष्णुसूक्त से

(C) इन्द्रसूक्त से (D) अश्विनसूक्त से

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद1.154.4) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–168

53. 'मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः' यह मन्त्रांश सम्बन्धित है–

(A) रुद्र (B) विष्णु

(C) बृहस्पति (D) सोम

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद1.154.2) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–165

54. 'उरुक्रम' विशेषण किस देवता का है?

(A) इन्द्र (B) रुद्र

(C) विष्णु (D) अग्नि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–299

55. ''त्रीणि पदानि'' कस्य देवस्य प्रसिद्धानि?

(A) अग्नेः (B) इन्द्रस्य

(C) सवितुः (D) विष्णोः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद1.154.4) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–168

56. विष्णोः त्रीणि पदानि केन पूर्णानि भवन्ति?

(A) उदकेन (B) अमृतेन

(C) मधुना (D) घृतेन

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद1.154.4) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–168

57. 'त्रेधा निदधे पदम्' इति केन सह सम्बध्यते?

(A) इन्द्रसूक्तेन (B) रुद्रसूक्तेन

(C) विष्णुसूक्तेन (D) उषस्सूक्तेन

स्रोत–शुक्लयजुर्वेद (5.15) -रामकृष्ण शास्त्री, पेज–95

58. श्रुतौ यज्ञस्वरूपेण स्तूयते–

(A) गङ्गा (B) गोदावरी

(C) विष्णुः (D) वरुणः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–310

59. 'उरुगाय' का अर्थ है–

(A) बड़े जबड़ों वाला (B) लम्बी भुजाओं वाला

(C) बहुत लोगों द्वारा स्तुत्य (D) अनेक गायों वाला

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.6) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–16, 165

60. तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो अत्र देवयवो मदन्ति' इस मन्त्र में किस देवता की स्तुति की गयी है?

(A) विष्णु (B) अग्नि

(C) रुद्र (D) इन्द्र

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ.1.154.5) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–169

61. कौन सा देवता 'त्रिविक्रम' नाम से जाना जाता है?

(A) विष्णु (B) वरुण

(C) सूर्य (D) सविता

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.2) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–15

62. 'विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः' यह किस देवता को व्यक्त करता है–

(A) इन्द्र (B) विष्णु

(C) वरुण (D) अग्नि

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.1) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–164

63. विष्णोः निवासस्थानं कुत्रास्ति? BHUAET–2011

(A) द्युलोकः (B) पृथिवीलोकः

(C) पाताललोकः (D) अन्तरिक्षलोकः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–38*

64. 'उरुगाय' किसका विशेषण है–

(A) इन्द्र (B) वरुण

(C) विष्णु (D) अग्नि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–299

49. (B)	**50. (A)**	**51. (A)**	**52. (B)**	**53. (B)**	**54. (C)**	**55. (D)**	**56. (C)**	**57. (C)**
58. (C)	**59. (C)**	**60. (A)**	**61. (A)**	**62. (B)**	**63. (A)**	**64. (C)**		

65. स्वर्ग का देवता कौन है?

(A) अग्नि (B) इन्द्र

(C) वायु (D) विष्णु

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–38

66. ऋग्वेदस्य (1.154) सूक्ते विष्णुदेवाय मन्त्राणां संख्या अस्ति–

(A) 5 (B) 7

(C) 8 (D) 6

स्रोत–वेदचयनम् (ऋग्वेद1.154)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी,पेज–90-106

67. ''यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः'' यह किस मन्त्र का है–

(A) अग्निसूक्त (B) विष्णुसूक्त

(C) इन्द्रसूक्त (D) वाक्सूक्त

स्रोत–वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–106

68. 'दीर्घतमा' कस्य सूक्तस्य ऋषिः विद्यते?

(A) विष्णुसूक्तस्य (B) इन्द्रसूक्तस्य

(C) अग्निसूक्तस्य (D) पुरुषसूक्तस्य

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–164

69. विष्णुसूक्त सम्बन्धित है?

(A) 1/154 (B) 2/12

(C) 3/61 (D) 1/115

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–164

70. अन्तरिक्षस्थानीय देवता है–

(A) सूर्यः (B) अग्निः

(C) समुद्रः (D) इन्द्रः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–40

71. वृत्र का नाश किस देवता ने किया?

(A) अग्नि (B) विष्णु

(C) वरुण (D) इन्द्र

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ.1.32.5)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–90

72. इन्द्र का कार्य है–

(A) वर्षा (B) प्रकाश

(C) विद्या (D) धन

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–12

73. 'मरुत्वान्' यह विशेषण किसका है–

(A) अग्नि (B) विष्णु

(C) इन्द्र (D) वरुण

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

74. देवता इन्द्रोऽस्ति–

(A) पृथिवीस्थानीया (B) अन्तरिक्षस्थानीया

(C) द्युस्थानीया (D) पातालस्थानीया

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–40

75. 'यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान' अनेन मन्त्रभागेन कः परामृश्यते?

(A) विष्णुः (B) सविता

(C) बृहस्पतिः (D) इन्द्रः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ. 2.12.3)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार,पेज–180

76. 'रसानुप्रदानः वृत्रवधः' इत्यस्ति–

(A) बृहस्पतिकर्म (B) रुद्रकर्म

(C) सवितृकर्म (D) इन्द्रकर्म

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी,पेज–298

77. 'दस्योर्हन्ता' को देवः?

(A) इन्द्रः (B) विष्णुः

(C) वरुणः (D) कोऽपि न

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.10)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार,पेज–186

78. ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त किस देवता के हैं–

(A) इन्द्र (B) अग्नि

(C) विष्णु (D) वरुण

स्रोत– ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

79. ''यः सोमपा निचितो'' में 'यः' पद किसके लिए आया है?

(A) विष्णु (B) प्रजापति

(C) अग्नि (D) इन्द्र

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-2.12.13)-विजयशङ्कर पाण्डेय,पेज–76

80. 'मघवा' विशेषण किस देवता के लिए है?

(A) अग्नि (B) इन्द्र

(C) सूर्य (D) वरुण

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–12

65. (D)	**66. (D)**	**67. (B)**	**68. (A)**	**69. (A)**	**70. (D)**	**71. (D)**	**72. (A)**	**73. (C)**
74. (B)	**75. (D)**	**76. (D)**	**77. (A)**	**78. (A)**	**79. (D)**	**80. (B)**		

81. 'यस्मान्न ऋते विजयन्ते' में 'यस्मात्' का क्या अभिप्राय है–
(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) रुद्र (D) वरुण
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-2.12.9)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–72

82. 'यः सूर्यं य उषसं जजान' इसमें किस देव की स्तुति की गयी है?
(A) सूर्य (B) उषा
(C) इन्द्र (D) विष्णु
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-2.12.7)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–70

83. 'द्यावाचिदस्मै पृथिवी नमेते'–यहाँ 'अस्मै' पद किसको व्यक्त करता है?
(A) विष्णु (B) इन्द्र
(C) अग्नि (D) रुद्र
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-2.12.13)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–76

84. इन्द्र को ऋग्वेद में किस नाम से पुकारा गया है?
(A) वीरेन्द्र (B) पुरन्दर
(C) पशुपति (D) मारुत
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–298

85. 'वज्रबाहु' के रूप में कौन देवता प्रसिद्ध है–
(A) सविता (B) विष्णु
(C) इन्द्र (D) रुद्र
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद-2.12.13)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–76

86. वृत्रासुर का वध करने वाले देवता थे–
(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) वरुण (D) सविता
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.32.5)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–90

87. ऋग्वेद में कौन देवता चमत्कार युक्त कार्यों का सम्पादन करते हैं?
(A) अश्विना (B) मरुत्
(C) इन्द्र (D) उषा
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ.2.12.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्ण, पेज–177-178

88. सोमपा किस देवता की उपाधि है?
(A) इन्द्रः (B) विष्णुः
(C) बृहस्पतिः (D) अग्निः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ.2.12.13)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–190

89. इन्द्रसूक्त (2.12) में मन्त्र हैं-
(A) 12 (B) 14
(C) 15 (D) 16
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इति. (द्वितीय-खण्ड)-बलदेव उपा., पेज–113

90. 'शतक्रतुः' विशेषणोपेतः कः अस्ति?
(A) विष्णुः (B) अश्विनौ
(C) वायुः (D) इन्द्रः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–12

91. वैदिकसंहितासु सर्वाधिकपराक्रमी देवः वर्णितः?
(A) अग्निः (B) यमः
(C) विष्णुः (D) इन्द्रः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–41

92. पापाचारिणो दस्योर्नाशकः वैदिकः देवः –
(A) इन्द्रः (B) अग्निः
(C) पूषन् (D) वरुणः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–186

93. 'वज्रहस्तः' इति विशेषणं कस्य देवस्य?
(A) उषसः (B) विष्णोः
(C) अग्नेः (D) इन्द्रस्य
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ.-2.12.13)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–190

94. इन्द्र का प्रधान अस्त्र है–
(A) बाण (B) वज्र
(C) तलवार (D) गदा
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

95. इन्द्र के साथ स्तुत्य देवता कौन हैं?
(A) सोम (B) पर्जन्य
(C) चन्द्रमा (D) तीनों
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–25

96. ऋग्वेद संहिता में मन्त्रों का एक चौथाई भाग किस देवता को समर्पित है?
(A) रुद्र (B) अग्नि
(C) इन्द्र (D) मरुत्
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–24

81. (B) 82. (C) 83. (B) 84. (B) 85. (C) 86. (B) 87. (C) 88. (A) 89. (C)
90. (D) 91. (D) 92. (A) 93. (D) 94. (B) 95. (A) 96. (C)

97. 'हिरण्यबाहुः' इसका क्या अर्थ है?

(A) इन्द्रः (B) शिवः

(C) यमः (D) दिक्पालः

98. 'शचीपति' किसका नाम है–

(A) इन्द्र (B) अग्नि

(C) वरुण (D) सोम

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–12

99. 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान्' यह मन्त्रांश किस सूक्त का है–

(A) अग्निसूक्त (B) रुद्रसूक्त

(C) वरुणसूक्त (D) इन्द्रसूक्त

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.1)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–65

100. 'येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि' से सम्बन्धित सूक्त है–

(A) रुद्र (B) पर्जन्य

(C) अग्नि (D) इन्द्र

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (इन्द्र.1.32.3)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–86

101. ऋग्वेदस्य द्वितीयमण्डलान्तर्गतस्य इन्द्रसूक्तस्य ऋषिः कः?

(A) गृत्समदः (B) हिरण्यगर्भः

(C) विश्वामित्रः (D) अत्रिः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–177

102. 'यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्'- अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषि कः?

(A) विश्वामित्रः (B) गृत्समदः

(C) मधुच्छन्दाः (D) इन्द्रः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (इन्द्रसूक्त ऋ. 2.12.2)-विजयशङ्कर, पेज–66

103. 'पुराणी देवी' किसका विशेषण है–

(A) सरस्वती का (B) उषस् का

(C) पृथिवी का (D) वाक् का

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

104. 'ऋतावरी' यह विशेषण किसका है–

(A) इन्द्र का (B) सवितृ का

(C) उषस् का (D) वरुण का

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

105. ऋग्वैदिक स्त्री देवता है–

(A) उषा (B) सविता

(C) अश्विनौ (D) अग्नि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

106. चन्द्ररथा का वर्तते?

(A) नदी (B) उर्वशी

(C) उषा (D) यमी

स्रोत–ऋकसूक्तसंग्रह (3.61.2)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–235

107. 'मघोनी' किसका सम्बोधन है?

(A) पृथिवी (B) उषा

(C) पर्जन्य (D) रुद्र

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

108. यास्कमते 'उषा' शब्दस्य निर्वचनं किम्?

(A) उदेति (B) उदासते

(C) उदगच्छित् (D) उच्छति

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–239

109. 'अवस्यूमेव चिन्वती' का वर्णनीय विषय है–

(A) वरुण (B) उषा

(C) नदी (D) अग्नि

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–237

110. 'सुदृशीकसन्दृक्' विशेषण है–

(A) अग्नि का (B) इन्द्र का

(C) रात्रि का (D) उषा का

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–81

111. का देवता सूर्यस्य पत्नी माता च कथ्यते–

(A) अदितिः (B) उषा

(C) पृथिवी (D) दितिः

112. 'चन्द्रा' इस वैदिक पद का क्या अर्थ है?

(A) आह्लादिनी (B) चन्द्रा

(C) पृथिवी (D) सोम

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (10.121.9)*-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–414*

97. (A) 98. (A) 99. (D) 100. (D) 101. (A) 102. (B) 103. (B) 104. (C) 105. (A)
106. (C) 107. (B) 108. (D) 109. (B) 110. (D) 111. (B) 112. (A)

113. द्युस्थानीय देवता हैं–

(A) इन्द्र (B) अग्नि

(C) सूर्य (D) विद्युत्

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–37

114. कः देवः वाजिरूपेण वाजसनेयिसंहितायाः उपदेशं कृतवान्–

(A) इन्द्रः (B) सूर्यः

(C) वरुणः (D) विष्णुः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64

115. कस्य देवस्य अनुग्रहेण महामुनिः याज्ञवल्क्यः शुक्लयजुषः उपलब्धिं कृतवान्?

(A) वरुणस्य (B) भास्करस्य

(C) शिवस्य (D) इन्द्रस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

116. सूर्य किस लोक से सम्बद्ध हैं?

(A) अन्तरिक्षलोक से (B) द्युलोक से

(C) पृथिवीलोक से (D) पृथिवी एवं द्युलोक से

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–37

117. 'चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः' यह मन्त्र ऋग्वेद के किस सूक्त से सम्बद्ध है?

(A) सूर्यः (B) उषा

(C) वरुणः (D) इन्द्रः

स्रोत–ऋग्वेद (1.115.1) - वेदान्ततीर्थ, पेज–61

118. सूर्यसूक्त के ऋषि कौन है?

(A) दीर्घतमा (B) मधुच्छन्दा

(C) कुत्स (D) सूर्य

स्रोत–ऋग्वेद (1.24.1) - वेदान्ततीर्थ, पेज–61

119. सूर्यसूक्त में कुल कितने मन्त्र हैं?

(A) 7 (B) 6

(C) 11 (D) 9

स्रोत–ऋग्वेद (1.115) - वेदान्ततीर्थ, पेज–61

120. सूर्यसूक्त सम्बन्धित है-

(A) 1/1 (B) 2/12

(C) 3/61 (D) 1/115

स्रोत–ऋग्वेद (1.115) - वेदान्ततीर्थ, पेज–61

*** संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् ***

1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)

2. शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वास)

3. शुकनासोपदेशः (शीघ्र प्रकाश्य)

सम्पर्क सूत्र- 8004545095, 8004545096

113. (C) 114. (B) 115. (B) 116. (B) 117. (A) 118. (C) 119. (B) 120. (D)

कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय)

- कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह **यजुर्वेद** की **कठ शाखा** से सम्बंधित है।
- कठोपनिषद् में कुल **2 अध्याय** हैं और प्रत्येक अध्याय में **तीन-तीन वल्लियाँ** हैं।

कठोपनिषद्	
प्रथम अध्याय	**द्वितीय अध्याय**
प्रथम वल्ली -29	प्रथम वल्ली - 15
द्वितीय वल्ली-25	द्वितीय वल्ली- 15
तृतीय वल्ली- 17	तृतीय वल्ली- 18
कुल मन्त्र-71	**कुल मन्त्र-48**

- इसप्रकार कठोपनिषद् में लगभग 119(120) मन्त्र हैं।

कठोपनिषद् का तथ्यात्मक अध्ययन

- सर्वप्रथम यम नचिकेता की कथा का वर्णन तैत्तिरीय ब्राह्मण में मिलता है। पुनः कठोपनिषद् में यम नचिकेता की कथा है।
- इसके अतिरिक्त **नचिकेता का उपाख्यान** महाभारत के अनुशासन पर्व में भी आया है।
- **आत्मतत्त्व विवेचन** की दृष्टि से कठोपनिषद् अत्यन्त प्रसिद्ध है।
- कठोपनिषद् में **यज्ञ विद्या (अग्निविद्या)** का संक्षेप में वर्णन प्राप्त होता है।
- **प्रथम अध्याय-** प्रथम अध्याय में नचिकेता और यम के उपाख्यान द्वारा **आत्मा और ब्रह्म की व्याख्या** की गयी है।

प्रथम अध्याय के महत्त्वपूर्ण विषय-

कठोपनिषद् का शान्ति पाठ

- **ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।**

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

ॐ = पूर्णब्रह्म-परमात्मन् सह = साथ-साथ
नौ = हम दोनों की अवतु = रक्षा करें
भुनक्तु = पालन करें वीर्यम् = शक्ति को
करवावहै = प्राप्त करें अधीतम् = पढ़ी हुई विद्या
तेजस्वि = तेजोमयी अस्तु = हो
मा विद्विषावहै = हम दोनों परस्पर द्वेष न करें।

- गौतम वंशीय महर्षि अरुण के पुत्र उद्दालक ऋषि ने फल की कामना से **विश्वजित् नामक यज्ञ** किया।
- उद्दालक दक्षिणा में, व्यर्थ, और दुग्ध तथा प्रजनन शक्ति से हीन गायें दे रहे थे तो नचिकेता के मन में श्रद्धा बुद्धि उत्पन्न हुई और उसने पिता से पूछा- ''आप मुझे किसको दान कर रहे हैं?'' दो तीन बार पूछने पर पिता ने क्रुद्ध होकर कहा ''तुझे मृत्यु को देता हूँ।'' पिता की आज्ञा से नचिकेता ने मृत्यु के समीप जाना सहर्ष स्वीकार कर लिया।
- नचिकेता यमलोक पहुँचा तो उस समय यमराज कहीं बाहर गये थे अतएव नचिकेता तीन दिन अन्न जल ग्रहण किए बिना ही यमराज की प्रतीक्षा करता रहा। जब यम लौटकर आये तो उन्होंने नचिकेता का सत्कार किया और तीन रात्रियों के बदले तीन वरदान मांगने को कहा।

प्रथम वर- (पितृ परितोष)

- नचिकेता ने प्रथम वर के रूप में पिता की प्रसन्नता माँगी-

शान्तसङ्कल्पःसुमना यथा स्याद् वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे॥

(1/1/10)

द्वितीय वर (अग्नि विद्या)

- दूसरे वर के रूप में नचिकेता ने उस अग्निविद्या का ज्ञान माँगा जिसके द्वारा अत्यन्त सुख के लोक, स्वर्ग की प्राप्ति होती है और किसी प्रकार का भय नहीं रह जाता।

स त्वमग्निँ स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यम्।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण॥

(1/1/13)

- नचिकेता की विलक्षण प्रतिभा देखकर यम ने प्रसन्न होकर इस अग्नि विद्या को नचिकेता के नाम से ही प्रसिद्ध होने का वरदान दिया और अनेक रूपों वाली माला **सृङ्का** प्रदान की।

तृतीय वर (आत्मतत्त्व)

- तीसरे वर के रूप में नचिकेता ने मनुष्य की मृत्यु के बाद के आत्मास्तित्व के विषय में जिज्ञासा की।

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वरस्तृतीयः॥

(1/1/20)

- नचिकेता के दृढ़ संकल्प और आत्म ज्ञान प्राप्ति के लिए योग्यता देखकर यम ने आत्मतत्त्व का उपदेश दिया।

द्वितीय वल्ली

- द्वितीय वल्ली में जीवात्मा और परमात्मा के स्वरूप का पृथक्-पृथक् वर्णन किया गया है।

श्रेय तथा प्रेय मार्ग-

- प्रेय मार्ग भौतिक सुख-समृद्धि का मार्ग है।
- श्रेय अर्थात् दुःखों से छूटकर नित्य आनन्दस्वरूप परब्रह्म पुरुषोत्तम को प्राप्त करने का मार्ग है।

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥

(1/2/2)

आत्मा का स्वरूप

- यमराज आत्मा के शुद्ध स्वरूप और उसकी नित्यता का निरूपण नचिकेता से करते हैं।
- यह आत्मा अजन्मा, नित्य, सदा एकरस रहने वाला पुरातन है और कभी भी इसका नाश नहीं किया जा सकता।

''अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।''

तृतीय वल्ली

- तृतीय वल्ली में परमात्मा को प्राप्त करने का साधन यम ने नचिकेता को बताया है।
- जीवात्मा शरीर, मन, बुद्धि तथा इन्द्रियों का पारस्परिक सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए कठोपनिषद् में रथ रूपक को प्रस्तुत किया गया है।
- जीवात्मा - रथी शरीर - रथ
  बुद्धि - सारथि मन - लगाम
  इन्द्रियाँ - घोड़े विषय - मार्ग
- **आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।**
  बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।। (1/3/3)
  इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँ स्तेषु गोचरान्।
  आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।। (1/3/4)
- यम नचिकेता को बताते हुए कहते हैं कि तुम जीवात्मा को रथ का स्वामी समझो और शरीर को रथ तथा बुद्धि को सारथि समझो और मन को लगाम समझो।
- यम नचिकेता से इन्द्रियों के विषय में बताते हुए कहते हैं कि -
  इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
  मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः।। (1/3/10)
  (इन्द्रियाँ-विषय-मन-बुद्धि-आत्मा)
- इन्द्रियों से शब्दादि विषय बलवान् हैं, शब्दादि विषयों से मन प्रबल है और मन से भी बुद्धि प्रबल है और बुद्धि से भी महान् आत्मा अत्यन्त श्रेष्ठ और बलवान् है।
- **आत्मा का साक्षात्कार-** आत्मा के साक्षात्कार की प्रक्रिया यह है कि स्थूल तत्त्व को उससे अधिक सूक्ष्म तत्त्व में उत्तरोत्तर विलीन करना पड़ता है।
- वाणी,मन, बुद्धि, आत्मा
  यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि।
  ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि।।
  (1/3/13)
  बुद्धिमान् साधक को चाहिए कि वाक् आदि समस्त इन्द्रियों को मन में निरुद्ध करें फिर उस मन को ज्ञानस्वरूप बुद्धि में विलीन करें।ज्ञानस्वरूप बुद्धि को महान् आत्मा में विलीन करें और उस आत्मा को शान्त स्वरूप परमपुरुष परमात्मा में विलीन करें।
- यम मनुष्यों को उद्बोधित करते हुए कहते हैं कि आत्मज्ञान की ओर उन्मुख होने और श्रेष्ठ आचार्यों के उपदेश से ज्ञान प्राप्त करके ही इस परब्रह्म परमेश्वर को जाना जा सकता है।
  उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
  क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्ग पथस्तत्कवयो वदन्ति।।
  (1/3/14)
- हे मनुष्यों! उठो जागो और श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो।

द्वितीय अध्याय : प्रथम वल्ली

- **नेह नानास्ति किञ्चन-** इस उपनिषद् का गम्भीर शंखनाद है।
  'मनसैवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किञ्चन।'
  शुद्ध मन से ही यह परमात्मतत्त्व प्राप्त किए जाने योग्य है। इस जगत् में एक परमात्मा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।
- कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय में परब्रह्म परमात्मा का अदितिदेवी के रूप में वर्णन किया गया है।
- कठोपनिषद् में जीव शब्द परमात्मा के लिए आया है।
  यं इमं मध्वदं वेद आत्मानं जीवमन्तिकात्।

द्वितीय वल्ली

- कठोपनिषद् के अनुसार मानव शरीर में एकादश (ग्यारह) द्वार हैं।
  2 आँख, 2 कान, 2 नासिका छिद्र, एक मुख, ब्रह्मरन्ध्र, नाभि, गुदा, शिश्न (11 द्वार)
- यह 11 द्वारों वाला, मानव शरीर ही उस सर्वव्यापी अविनाशी, अजन्मा, नित्य, निर्विकार, एकरस , विशुद्ध ज्ञानस्वरूप परमेश्वर की नगरी है।
  पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः
  अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्च विमुच्यते।। (2/2/1)
- कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय के द्वितीय वल्ली में अग्नि का दृष्टान्त देकर उस परब्रह्म परमेश्वर की व्यापकता का वर्णन किया गया है।
- **अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।**
  एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च।।
  (2/2/9)
- जिस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड में प्रविष्ट एक ही अग्नि नाना रूपों में प्रकट होकर विभिन्न रूप धारण करती है उसी प्रकार समस्त प्राणियों की अन्तरात्मा परब्रह्म परमात्मा एक होते हुए भी नाना रूपों में प्रकट होते हैं।

तृतीय वल्ली

- कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय के तृतीय वल्ली में यह बताया गया है कि वह परमात्मा ही सब पर शासन करने वाला है और सब उसके नियन्त्रण में ही हो रहा है-

भयादस्याग्निस्तपति भयात् तपति सूर्यः।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः॥ (2/2/3)

- उस परमेश्वर के भय से अग्नि तपता है, उसी के भय से सूर्य तपता है तथा उसी परमेश्वर के भय से इन्द्र, वायु और पाँचवें मृत्यु देवता अपने-अपने कामों में प्रवृत्त हो रहे हैं।
- तृतीय अध्याय में योग की सर्वोत्तम स्थिति बतलाते हुए योगियों की परमगति का वर्णन किया गया है।
- कठोपनिषद् में यम, नचिकेता को योग के विषय में बताते हुए कहते हैं कि **इन्द्रिय, मन** और **बुद्धि** की स्थिर धारणा का नाम योग है।
- कठोपनिषद् में **नाड़ियों की संख्या कुल एक सौ एक** बतायी गई है, जिसमें सुषुम्णा प्रमुख है।

कठोपनिषद् का बिन्दुवार अध्ययन

- उपनिषद् शब्द का अर्थ है- **आत्मविद्या**
- ज्ञानकाण्ड किनका विषय है - **उपनिषदों का**
- प्राचीन पद्योपनिषद् है - **कठोपनिषद्**
- उपनिषदों का प्रथम भाषान्तर फारसी भाषा में हुआ-**17वीं सदी में**
- जिसके द्वारा ब्रह्म की समीपता निश्चित रूप से प्राप्त हो, उसे कहते हैं - **उपनिषद्**
- भगवान् आद्य शङ्कराचार्य ने कितने उपनिषदों पर भाष्य लिखा - **10(दश)**
- उपनिषद् शब्द में धातु है - **सद्**
- उपनिषदः प्रतिपाद्यते - **ज्ञानकाण्डम्**
- उपनिषद् पुस्तकें आधारित हैं - **दर्शन पर**
- उपनिषदों की विषयवस्तु है - **दर्शन**
- प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित है - **उपनिषद्**
- उपनिषदों में वर्णित है - **ब्रह्मविद्या**
- वेदों का अन्तिम भाग है- **उपनिषद्**
- वैदिक साहित्य का कौन- सा भाग वेदान्त के नाम से जाना जाता है - **उपनिषद्**
- उपनिषद् पद में प्रत्यय है - **क्विप्**
- नचिकेतोपाख्यान मिलता है - **कठोपनिषद् में**
- उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य है - **दार्शनिक विषय**
- भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक साहित्य है- **उपनिषद् साहित्य**
- नचिकेता को अग्नि विद्या का उपदेश दिया था - **यम ने**
- कठोपनिषद् के अनुसार महत् से पर (बलवान्) है- **अव्यक्तम्**
- नवकृत्वोपदेश करता है- **उद्दालक**
- रथरूपक का वर्णन है - **कठोपनिषद् में**
- कठोपनिषद् के अनुसार सारथि है - **बुद्धि**
- कृष्ण यजुर्वेद से सम्बद्ध है - **कठोपनिषद्**
- कौन से वर में यम ने नचिकेता को अग्नि विद्या दी - **द्वितीय वर में**
- यम नचिकेता संवाद मिलता है - **कठोपनिषद् में**
- कठोपनिषद् में नचिकेता के पिता ने यज्ञ किया था - **सर्वमेध**
- कठोपनिषद् में अध्यायों की संख्या है - **दो**
- कठोपनिषद् के अनुसार आत्मा प्राप्त होता है - **परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा**
- कठोपनिषद् के अनुसार बुद्धिमान् व्यक्ति वरण करता है - **श्रेय का**
- कठोपनिषद् में सृङ्का का अर्थ है - **अकुत्सितकर्ममयीगति**
- कठ शाखा से सम्बन्धित उपनिषद् है - **कठोपनिषद्**
- नचिकेता के पिता ने नचिकेता को दान किया - **मृत्यु को**
- कठोपनिषद् के अनुसार प्राणों के सहित उत्पन्न होती है- **अदिति**
- मन से अधिक गति वाला है - **परमेश्वर**
- कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता को प्राप्त होता है - **तीन वर (वरत्रयम्)**
- यम के द्वारा श्रेयप्रेय का विवेचन प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- 'इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः' यह मन्त्र प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- ''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'' यह मन्त्र मिलता है - **कठोपनिषद् में**
- नचिकेता को तीन वर प्राप्त हुए थे- **यम से**
- 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः, यह मन्त्रांश प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- वाजश्रवा के पुत्र का नाम है - **नचिकेता**

कठोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

अर्थ - सर्वरक्षक परमेश्वर हम (आचार्य और शिष्य) दोनों की साथ-साथ रक्षा करें। हम दोनों का साथ-साथ पालन करें। हम दोनों साथ-साथ (विद्याविषयक) पराक्रम (पुरुषार्थ) करें। हम दोनों का अध्ययन तेजोयुक्त हो। हम परस्पर द्वेष न करें। (हमें) त्रिविध ताप से शान्ति मिले।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

ॐ अवति रक्षतीति √अव्+मन् प्रत्यय। '**ज्वरत्वरस्त्रिव्य-विमवामुपधायाश्च**' (6।4।20) अर्थात उक्त धातुओं में उपधा तथा वकार के स्थान में ऊठ् (ऊ) आदेश हो जाता है।

√झलादि तथा अनुनासिकादि प्रत्यय लगने पर, इस नियम से अव् के अ तथा व् के स्थान में ऊ हुआ। फिर 'उ' को गुण होकर 'ओ'हुआ। और मन् के टि अर्थात् अन् का लोप होकर 'ओम्' बना। इसका अर्थ 'रक्षक' होता है।

अधीतम्- अधि + इङ् + क्त।

तेजस्वि- तेजस् + विनि, नपुं. प्र. एक.

प्रथमा वल्ली

ऊँ उशन्ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ।
तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ।।1।।

शब्दार्थ- ह वै= प्रसिद्ध है कि; **उशन्** = यज्ञका फल चाहने वाला; **वाजश्रवसः**=वाजश्रवा के पुत्र (उद्दालक) ने; **सर्ववेदसम्**= (विश्वजित् यज्ञ में) अपना सारा धन; **ददौ**= (ब्राह्मणों को) दिया; **तस्य**= उसका; **नचिकेता**=नचिकेता; **नाम ह**= नाम से प्रसिद्ध; **पुत्रः आस**= एक पुत्र था ।।1।।

अर्थ- ऐसी प्रसिद्धि है कि (अपने विश्वजित् यज्ञ की सफलता को) कामना करने वाले वाजश्रवस ने सर्वस्व दान कर दिया। उसका नचिकेता नामक पुत्र था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सर्ववेदसम्-**सर्वश्चासौ वेदाश्च (विद्लृ लाभे+असुन् 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' 'उणादि' 4।6।38 सूत्र से) इति सर्ववेदाः (कर्मधा.), तं सर्ववेदसम्।'जो प्राप्त किया जाय' इस अर्थ में वेदस् शब्द बनता है जो सकारान्त पुँल्लिङ्ग है।
- **आस-**√ अस्+लिट् (प्र.पु.एक.)।

तꣳ ह कुमारꣳ सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाविवेश।
सोऽमन्यत ।।2।।

शब्दार्थ- दक्षिणासु नीयमानासु=(जिस समय ब्राह्मणों को) दक्षिणा के रूप में देने के लिये (गौएँ) लायी जा रही थीं, उस समय; **कुमारम्**= छोटा बालक; **सन्तम्**= होने पर भी; तम् **ह**= उस (नचिकेता) में; **श्रद्धा**= श्रद्धा (आस्तिक बुद्धि) का; **आविवेश**= आवेश हो गया (और); **सः**=(उन जराजीर्ण गायों को देखकर) वह; **अमन्यत**=विचार करने लगा।। 2।।

अर्थ- जिस समय (ऋत्विजों के लिये) दक्षिणाओं (तत्स्वरूप गायों) को (वाजश्रवस के लोग) ले जा रहे थे, तभी कुमार होने पर (भी) उस (नचिकेता) में श्रद्धा का प्रवेश हुआ। वह सोचने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सन्तम्-**√अस्+शतृ, पुं. द्वि. एक.।
- **नीयमानासु-**√नी+यक् कर्मणि+ शानच्+टाप्, स्त्रियाम्, स. बहु.।

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान्स गच्छति ता ददत् ।।3।।

शब्दार्थ- पीतोदकाः=जो (अन्तिम बार) जल पी चुकी हैं; **जग्धतृणाः**=जिनका घास खाना समाप्त हो गया है; **दुग्धदोहाः**=जिनका दूध (अन्तिम बार) दुह लिया गया है; **निरिन्द्रियाः** जिनकी इन्द्रियाँ नष्ट हो चुकी हैं; **ताः**=ऐसी (निरर्थक, मरणासन्न) गौओं को; **ददत्**=देने वाला; **सः**=वह दाता (तो); **ते लोकाः**=वे (शूकर-कूकरादि नीच योनियाँ और नरकादि) लोक; **अनन्दाः**=जो सब प्रकार के सुखों से शून्य; **नाम**=प्रसिद्ध हैं; **तान्**=उनको; **गच्छति**=प्राप्त होता है (अतः पिताजी को सावधान करना चाहिये) ।।3।।

अर्थ- (सदा के लिये) पानी पी चुकी, घास खा चुकी दुही जा चुकी तथा इन्द्रिय (प्रजननादि) शक्ति से विहीन हुई उन (जीर्ण) गायों को देने वाला यजमान निस्सन्देह, जो सुख-रहित लोक हैं, उन्हें प्राप्त करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **पीतोदकाः-** पीतम् (√पा+क्त) उदकं याभिस्ताः, बहु.।
- **जग्धतृणाः-** जग्धं (√अद्+क्त,'अदो जग्धिर्ल्यप्तिकिति'(अ.) 2।4।36अर्थात् अद् धातु से ल्यप्, क्त्वा, क्त, क्तवत् इत्यादि प्रत्यय होने पर उसको जग्ध आदेश हो जाता है, इस नियम से 'जग्ध' हो गया है तृणं याभिस्ताः, प्र. बहु.।
- **दुग्धदोहाः-** दुग्धः (√दुह्+क्त) दोहः (दुह्+घञ् भावे) यासां ताः, बहु.।
- **निरिन्द्रियाः-** निर्गतानि इन्द्रियाणि याभ्यस्ताः, प्र. बहु.।
- **अनन्दाः-** अविद्यमानः नन्दः (नन्द्+घञ्) येषु ते, बहुव्रीहि समासः, आनन्द-रहिताः असुखा इत्यर्थः।
- **ददत्-** √दा+शतृ, प्र. पु. एक.।

स होवाच पितरं तत कस्मै मां दास्यसीति।
द्वितीयं तृतीयं तꣳ होवाच मृत्यवे त्वा ददामीति।।4।।

शब्दार्थ- सः ह=यह सोचकर वह; **पितरम्**=अपने पिता से; **उवाच**=बोला कि; तत **(तात)**=हे प्यारे पिताजी! आप; **माम्**=मुझे; **कस्मै**=किसको; दास्यसि **इति**=देंगे?; (उत्तर न मिलने पर उसने वही बात) **द्वितीयम्**=दुबारा; **तृतीयम्**=तिबारा (कही); तम् **ह**=(तब पिता ने) उससे; **उवाच**=(क्रोधपूर्वक इस प्रकार) कहा; **त्वा**=तुझे (मैं); **मृत्यवे**=मृत्यु को; **ददामि इति**=देता हूँ ।।4।।

अर्थ- उसने पिता से कहा- पिताजी! आप मुझे किसको देंगे?

दूसरी-तीसरी बार (उसने यही कहा)। तब पिता ने उससे कहा-तुम्हें मृत्यु को देता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **तत-** यह 'तात्' इस अर्थ में सम्बोधन-पद है। आकार का अकार छान्दस् ह्रस्वत्व है।
- **त्वा-**युष्मद् शब्द के द्वितीया एकवचन में 'त्वाम्' रूप बनता है, इसी के विकल्प रूप से 'त्वा' यह अन्वादेश होता है।

बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः।
किँ ँ स्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति॥5॥

शब्दार्थ- बहूनाम्=मैं बहुत-से शिष्यों में तो; प्रथम श्रेणीके आचरण परः **एमि**=चलता आया हूँ (और); **बहूनाम्**=बहुतों में; **मध्यमः**=मध्यम श्रेणी के आचार पर; **एमि**=चलता हूँ (कभी भी नीची श्रेणी के आचरण को मैंने नहीं अपनाया फिर पिता जी ने ऐसा क्यों कहा !); **यमस्य**=यमका; **किम् स्वित् कर्तव्यम्**=ऐसा कौन-सा कार्य हो सकता है; **यत् अद्य**=जिसे आज; **मया**=मेरे द्वारा (मुझे देकर); **करिष्यति**=(पिताजी) पूरा करेंगे ।। 5।।

अर्थ- बहुतों के बीच मैं प्रथम हूँ, अन्य बहुतों के बीच मध्यम हूँ। यम का ऐसा कौन सा काम है जिसे (पिताजी) आज मेरे द्वारा करेंगे (करना चाहते हैं)।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **किंस्वित्-** 'स्वित्' वितर्क अर्थ वाला निपात है।
- **बहूनाम्-**'यतश्च निर्धारणम्' (अ.) 2।3।41 से षष्ठी हुई है।

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथाऽपरे।
सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः॥6॥

शब्दार्थ- पूर्वे=आपके पूर्वज पितामह आदि; **यथा**=जिस प्रकार का आचरण करते आये हैं; **अनुपश्य**=उसपर विचार कीजिये (और); **अपरे**=(वर्तमानमें भी) दूसरे श्रेष्ठ लोग [**यथा**=जैसा आचरण कर रहे हैं;] **तथा प्रतिपश्य**=उस पर भी दृष्टिपात कर लीजिये (फिर आप अपने कर्तव्य का निश्चय कीजिये); **मर्त्यः**=(यह) मरणधर्मा मनुष्य; **सस्यम् इव**=अनाज की तरह; **पच्यते**=पकाता है अर्थात् जराजीर्ण होकर मर जाता है (तथा); **सस्यम् इव**=अनाज की भाँति ही; **पुनः**=फिर; **आजायते**=उत्पन्न हो जाता है। ।।6।।

अर्थ- पिताजी! पूर्व पुरुष जैसा आचरण किया करते थे, उसको भली-भाँति देखिये। एवं अन्य (वर्तमानकालिक) पुरुष जैसा आचरण करते हैं, उसे (भी) देखिये। मनुष्य खेती (फसल) की तरह पकता (वृद्ध होकर मर जाता) है, और खेती की तरह ही पुनः उत्पन्न हो जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **मर्त्यः-** मृङ् प्राणत्यागे+ तन् (हसिमृग्रिण्वामिदमिलूपूधुर्विभ्यस्तन् उणादि 373) = मर्तः (म्रियते इति)।

वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान्।
तस्यैताँ ँ शान्तिं कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् ॥7॥

शब्दार्थ- वैवस्वत=हे सूर्यपुत्र; **वैश्वानरः**=स्वयं अग्निदेवता (ही); **ब्राह्मणः अतिथिः**=ब्राह्मण अतिथि के रूप में; **गृहान्**=(गृहस्थके) घरों में; **प्रविशति**=प्रवेश करते हैं; **तस्य**=उनकी; (साधु पुरुष) **एताम्**=ऐसी (अर्थात् अर्घ्य-पाद्य-आसन आदि के द्वारा); **शान्तिम्**=शान्ति; **कुर्वन्ति**=किया करते हैं; (अतः आप) **उदकम् हर**=(उनके पाद-प्रक्षालनादि के लिये) जल ले जाइये ।। 7।।

अर्थ- ब्राह्मण-अतिथि अग्नि के रूप में घरों में प्रवेश करता है। उसकी यह (अर्घ्यपाद्यादि-दान रूप) शान्ति (सत्पुरुषों द्वारा) की जाती है। हे वैवस्वत! (आप भी) जल ले जाइये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **वैश्वानरः-** विश्वानरस्यापत्यं पुमान् (विश्वानर+ अण्)। 'विश्वानर' से अपत्यार्थक अण् प्रत्यय ''ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च (अ.) 4।1।114'' सूत्र से लगा है।
- **अतिथिः-** अविद्यमाना (अनियतेत्यर्थः) तिथिर्यस्य सः, बहुव्रीहि.।
- **ब्राह्मणः-**ब्रह्मणोऽपत्यं पुमान् (ब्रह्मन्+अण्)। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि-सभी ब्रह्माजी के पुत्र हैं किन्तु सभी ब्राह्मण नहीं होते। सम्भवतः समस्त पुत्रों में जो सर्वप्रथम उत्पन्न हुये, वे ही पिता की प्रमुख सन्तान होने से तन्नाम्ना 'ब्राह्मण' कहे गये ।
- **वैवस्वतः-**विवस्वतः (विवस्+मतुप्-विवः प्रभा तेजः, तदस्यास्ति विवस्वान् सूर्यः, तस्य) अपत्यं पुमान्, यम इत्यर्थः (विवस्वत्+अण् अपत्यार्थे)।

आशाप्रतीक्षे संगतँ ँ सूनृतां च
इष्टापूर्ते पुत्रपशूँ ँ श्च सर्वान् ।
एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो
यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे ॥8॥

शब्दार्थ- यस्य=जिसके; **गृहे**=घरमें; **ब्राह्मणाः**=ब्राह्मण अतिथि; **अनश्नन्**=बिना भोजन किये; **वसति**=निवास करता है; **[तस्य उस]**; **अल्पमेधसः**=मन्दबुद्धि; **पुरुषस्य**=मनुष्यकी; **आशाप्रतीक्षे**=नाना प्रकार की आशा और प्रतीक्षा; **संगतम्**=उनकी पूर्ति से होने वाले सब प्रकार के सुख, **सूनृताम् च** =सुन्दर भाषण के फल एवं; **इष्टापूर्ते च**=यज्ञ, दान आदि शुभ कर्मों के और कुआँ बगीचा तालाब आदि निर्माण कराने के फल तथा; **सर्वान् पुत्रपशून्**=समस्त पुत्र और पशु; **एतद् वृङ्क्ते**=इन सबको (वह)

नष्ट कर देता है ।। 8।।

अर्थ- जिसके घर में ब्राह्मण-अतिथि बिना भोजन किये निवास करता है, उस मन्दबुद्धि पुरुष की आशा (अज्ञात पदार्थों की प्राप्ति की कामना) एवं प्रतीक्षा (ज्ञात पदार्थों की प्राप्ति की कामना), को, सङ्गत (आशा एवं प्रतीक्षा के संयोग से प्राप्त होने वाले फल- एवं सत्यप्रिय वाणी (से उत्पन्न फल) को, इष्ट (यागादि-जन्य फल) एवं पूर्त (कूप-निर्माण आदि सार्वजनिक हित-कार्यों से उत्पन्न फल) को, सारे पुत्रों और पशुओं को-इन सब को नष्ट कर देता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **आशाप्रतीक्षे-** आशा च प्रतीक्षा चेति (इतरेतर द्वन्द्व.)। जिस इष्ट पदार्थ की प्राप्ति का कोई निश्चित ज्ञान न हो परन्तु उसे प्राप्त करने की इच्छा अवश्य हो, तद्विषयिणी कामना 'आशा' कही जाती है। जिस इष्ट पदार्थ की प्राप्ति निश्चित हो, तद्विषयिणी कामना 'प्रतीक्षा' कही जाती है।
- **संगतम्-**सम्+√गम्+क्त (नपुंसके भावे)।
- **सूनृताम्-** सत्य एवं प्रिय वाणी 'सूनृतं प्रिये।'
- **इष्टम्-** यज्-क्त भावे।
- **पूर्तम्-** (√पृ या √पॄ+क्त)।
- **इष्टापूर्ते-** इष्टं च पूर्तं चेति इष्टापूर्ते (इतरेतर द्वन्द्व.)।
- **वृङ्क्ते-** विनाशयति √वृजी अदादि,लट् प्र.पु. एक.)।
- **अल्पमेधसः-**अल्पा मेधा यस्य सः (बहु.), तस्य।
- **अनश्नन्-**न अश्नन् इति अनश्नन्, उपवसन्नित्यर्थः, नञ्+अश्+शतृ,प्र. पु. एक (नञ् तत्पु.)।

तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मे,
अनश्नन्ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु,
तस्मात्प्रति त्रीन्वरान्वृणीष्व ॥9॥

शब्दार्थ- ब्रह्मन्=हे ब्राह्मणदेवता; **नमस्यः अतिथिः**=आप नमस्कार करने योग्य अतिथि हैं; **ते**=आपको; **नमः अस्तु**=नमस्कार हो; **ब्रह्मन्**=हे ब्राह्मण; **मे स्वस्ति**=मेरा कल्याण; **अस्तु**=हो; **यत्**=(आपने) जो; **तिस्त्र**=तीन; **रात्रीः**=रात्रियों तक; **मे**=मेरे; **गृहे**=घर पर; **अनश्नन्**=बिना भोजन किये; **अवात्सीः**=निवास किया है; **तस्मात्**=इसलिये आप (मुझसे); **प्रति**=प्रत्येक रात्रि के बदले (एक-एक करके); **त्रीन् वरान्**=तीन वरदान्; **वृणीष्व**=माँग लीजिये ।। 9।।

अर्थ- हे ब्रह्मन् ! चूँकि तुम पूज्य अतिथि होकर बिना खाये मेरे घर में तीन रात तक रहे, इसलिये प्रत्येक रात्रि के अनुसार तीन वर चुन लो (ले लो)। तुम्हें हमारा नमस्कार हो, हमारा कल्याण हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **यत्-** 'यस्मात्' के अर्थ में प्रयुक्त अव्यय।
- **तिस्त्रः रात्रीः-**यहाँ 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र के अनुसार द्वितीया विभक्ति हुई है।
- **अवात्सीः-**√वस्+लुङ् म. पु. एक.।
- **नमस्यः-** नमस्+यत् (अर्हार्थे) नमस्कारयोग्य इत्यर्थः। ते
- **नमः, मे स्वस्ति-** 'ते' तथा 'मे' में चतुर्थी नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च' सूत्र के अनुसार हुई है।
- **प्रति-** 'प्रतिरात्रि' के अर्थ में प्रयुक्त अव्यय।
- **स्वस्ति-** 'कल्याण' के अर्थ में प्रयुक्त अव्यय।
- **वरान्-**√वृ+अप्=वर+द्वि. बहु.। 'ऋदोरप्' अर्थात् ऋकारान्त तथा उकारान्त धातुओं में भावार्थक अप् प्रत्यय लगता है, इस नियम से 'व्रियते इति' इस अर्थ में 'अप्' लगा है।

शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्या-
द्वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीत
एतत् त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे ॥10॥

शब्दार्थ- मृत्यो=हे मृत्युदेव; **यथा**=जिस प्रकार, **गौतमः**=(मेरे पिता) गौतमवंशीय= उद्दालक; **मा अभि**=मेरे प्रति; **शान्तसंकल्पः**=शान्त संकल्प वाले; **सुमनाः**=प्रसन्नचित्त (और) **त्वत्प्रसृष्टम्**=आपके द्वारा वापस भेजा जाने पर जब मैं उनके पास जाऊँ तो; **मा प्रतीतः**=वे मुझपर विश्वास करके (यह वही मेरा पुत्र नचिकेता है, ऐसा भाव रखकर); **अभिवदेत्**=मेरे साथ प्रेमपूर्वक बातचीत करें; **एतत्**=यह, (मैं); **त्रयाणाम्**=अपने तीनों वरों में से; **प्रथमम् वरम्**=पहला वर; **वृणे**=माँगता हूँ ।। 10।।

अर्थ- हे यम! मेरे पिता गौतम मेरे प्रति जिससे शोक-रहित, शान्त विचारों वाले एवं प्रसन्नचित्त हो जायँ और आप द्वारा भेजे गये मुझको पहचान कर मुझसे बोलें (बातें करें), (तदर्थ) मैं तीनों में से यह प्रथम वर वरण करता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **शान्तसङ्कल्पः-** शान्तः (√शम् दिवादि.+क्त-'शमादीनामुपधादीर्घः' नियम से शम् को शाम् होने पर 'म्' के स्थान में अनुस्वार और फिर उसके स्थान में परसवर्ण 'न्' होकर 'शान्त' बना) सङ्कल्पः यस्य सः (बहु.)।

- **सुमनाः-** सु शोभनं मनः यस्य सः (बहु.)।
- **वीतमन्युः-**वीतः (वि+√ इण गतौ+क्त) विगतः मन्युः शोकः यस्य सः (बहु.)। **अभि-**अभिलक्ष्य, प्रति इत्यर्थः।
- **त्वत्प्रसृष्टम् -त्वया-** प्रसृष्टः प्रेषितः इति त्वत्प्रसृष्टः (युष्मत्-त्वत् एकवचने+प्र+सृज्+क्त तृ.तत्पु.), तम् ।
- **अभि-** तृतीयापंक्ति-गत यह शब्द 'वदेत्' के पृथक् लिया जाना चाहिये।
- **प्रतीतः-** प्रति+√ इण् गतौ+क्त प्रत्यय

यथा पुरस्तात् भविता प्रतीत
औद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः
सुखँ रात्रीः शयिता वीतमन्यु-
स्त्वां ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम् ॥11॥

शब्दार्थ- त्वाम्=तुमको; **मृत्युमुखात्**=मृत्युके मुख से; **प्रमुक्तम्**=छूटा हुआ; **ददृशिवान्**=देखकर; **मत्प्रसृष्टः**=मुझसे प्रेरित; **आरुणिः**=(तुम्हारे पिता) अरुण-पुत्र; **औद्दालकिः**=उद्दालक; **यथा पुरस्तात्**=पहले की भाँति ही; **प्रतीतः**=यह मेरा पुत्र नचिकेता ही है, ऐसा विश्वास करके; **वीतमन्युः**=दुःख और क्रोधसे रहित; **भविता**=हो जायेगे; **रात्रीः**=(और वे अपनी आयु की शेष) रात्रियों में; **सुखम्**=सुखपूर्वक; **शयिता**=शयन करेंगे ।। 11।।

अर्थ- मेरे द्वारा प्रेरित हुआ (तुम्हारा पिता) अरुण-पुत्र उद्दालक तुम्हें पहले की ही तरह पहचान लेगा और तुम्हें मृत्यु के मुख से छूटा हुआ देखकर चिन्तारहित होकर (आने वाली) रात्रियों में सुख-पूर्वक सोयेगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **पुरस्तात्-पूर्व+अस्ताति।** 'पूर्व' को 'पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम्' (अ.) 4।3।39 से 'पुर्' आदेश हो जाता है। इसका अर्थ यह है कि अस्ताति तथा असि प्रत्यय लगने पर पूर्व को पुर्, अधर को अध् तथा अवर को अव् आदेश हो जाते हैं।
- **भविता-√** भू+लुट् (प्र.पु.,एक.)।
- **रात्रीः-**'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र से द्वितीया विभक्ति हुई है।
- **शयिता-** शी+लुट् (प्र.पु.एक.) 'दृशेश्च' से विकल्प से अनिट् रूप 'ददृश्वान्' भी बनता है।

स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति
न तत्र त्वं न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाऽशनायापिपासे
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥12॥

शब्दार्थ- स्वर्गे लोके=स्वर्गलोक में; **किंचन भयम्**=किंचिन्मात्र भी भय; **न अस्ति**=नहीं है; **तत्र त्वम् न**=वहाँ मृत्युरूप स्वयं आप भी नहीं हैं; **जरया न बिभेति**=वहाँ कोई बुढ़ापे से भी भय नहीं करता; **स्वर्गलोके**=स्वर्गलोक के निवासी; **अशनायापिपासे**=भूख और प्यास; **उभे तीर्त्वा**=इन दोनों से पार होकर; **शोकातिगः**=दुःखों से दूर रहकर; **मोदते**=आनन्द भोगते हैं ।। 12।।

अर्थ- स्वर्गलोक में कोई भय नहीं है। वहाँ न तुम (मृत्यु के देवता यमराज) हो, और न कोई बुढ़ापे से ही डरता है। भूख और प्यास, दोनों को पार करके शोक का अतिक्रमण करके (प्राणी) स्वर्ग में आनन्द करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **जरया-**यहाँ तृतीया का प्रयोग अपाणिनीय है, क्योंकि 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र से 'विभेति' के योग में इसमें पञ्चमी होनी चाहिये थी।
- **अशनायापिपासे-**अशनाया च पिपासा चेति अशनायापिपासे (इतरेतर द्वन्द्व)। √पा+ सन्+अ भावे+ टाप् स्त्रियाम् से 'पिपासा' शब्द बनता है।
- **शोकातिगः** शोकम् अतीत्य गच्छतीति (शोक+अति+√गम्+ड कर्तरि-उपपदसमास)।

स त्वमग्निँ स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो,
प्रब्रूहि त्वँ श्रद्दधानाय मह्यम्।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त,
एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥13॥

शब्दार्थ- मृत्यो=हे मृत्युदेव; **सः त्वम्**=वे आप; **स्वर्ग्यम् अग्निम्**=उपर्युक्त स्वर्ग की प्राप्ति के साधनरूप अग्निको; **अध्येषि**=जानते हैं (अतः); **त्वम्**=आप; **मह्यम्**=मुझ; **श्रद्दधानाय**=श्रद्धालु को (वह अग्निविद्या); **प्रब्रूहि**=भलीभांति समझाकर कहिये; **स्वर्गलोकाः**=स्वर्गलोक के निवासी; **अमृतत्वम्**=अमरत्व को; **भजन्ते**=प्राप्त होते हैं (इसलिये); **एतत्**=यह (मैं); **द्वितीयेन वरेण**=दूसरे वर के रूपमें, **वृणे**=माँगता हूँ ।। 13।।

अर्थ- हे मृत्युदेव! आप स्वर्ग के साधनभूत अग्नि को जानते हैं। मुझ श्रद्धालु के प्रति आप (उस अग्नि का) उपदेश करें (जिसके द्वारा) स्वर्ग लोक निवासी अमरता प्राप्त करते हैं (कर चुके हैं)। दूसरे वर के द्वारा मैं इसी का वर्णन करता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **स्वर्ग्यम्-**स्वर्गाय हितम् (स्वर्ग+यत् हितार्थे)।
- **अध्येषि-**अधि+ इक् स्मरणे, म.पु.एक.।
- **श्रद्दधानाय-**श्रत्+√ धा+शानच्, चतुर्थी एक.।
- **स्वर्गलोकाः-** स्वर्गो लोको येषां ते (बहु.)

प्र ते ब्रवीमि तदु मे निबोध,
स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन् ।
अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां,
विद्धि त्वमेतं निहितं गुहायाम्॥14॥

शब्दार्थ- नचिकेतः=हे नचिकेता; **स्वर्ग्यम् अग्निम्**=स्वर्गदायिनी अग्निविद्या को; **प्रजानन्**=अच्छी तरह जानने वाला मैं; **ते प्रब्रवीमि**=तुम्हारे लिये उसे भलीभाँति बतलाता हूँ; **तत् उ में निबोध**=(तुम) उसे मुझसे भलीभाँति समझ लो; **त्वम् एतम्**=तुम इस विद्या को; **अनन्तलोकाप्तिम्**=अविनाशी लोक की प्राप्ति करानेवाली, **प्रतिष्ठाम्**=उसकी आधारस्वरूपा; **अथो**=और; **गुहायाम् निहितम्**=बुद्धिरूप गुफा में छिपी हुई; **विद्धि**=समझो ।। 14।।

अर्थ- (हे) नचिकेता! स्वर्ग के साधनभूत अग्नि को अच्छी तरह जानता हुआ मैं (उसका) तुम्हारे प्रति उपदेश करता हूँ। उसे तुम मुझसे अच्छी तरह समझ लो। इस अग्नि को तुम अनन्त-कभी न अन्त होने वाले अर्थात् नित्य-स्वर्गलोक की प्राप्ति कराने वाला, (विराट रूप से) इस जगत का आश्रय एवं (विद्वानों की बुद्धि-रूपी) गुहा में स्थित जानो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **तदु-** तत् उ। 'तत्' अग्नि के लिये आया है। 'तम्' के स्थान में 'तत्' का प्रयोग लिङ्ग-व्यत्यय का स्थल है जो वैदिक भाषा में प्रायः प्राप्त होता है। 'उ' निपात निश्चयार्थक है।
- **अनन्तलोकाप्तिम्-** अविद्यमानः अन्तो यस्य सः अनन्तः नित्य इत्यर्थः, बहु.। अनन्तो लोकः अनन्तलोकः स्वर्ग इत्यर्थः। तस्य आप्तिर्यस्मात् सः बहु.। तम्।
- **प्रतिष्ठाम्-** प्रति+√स्था+अङ् (आतश्चोपसर्गे से)+टाप्।
- **निहितम्**-नि+√धा+क्त ('दधातेर्हि' से)।
- **गुहा-**√गुह्+कः+टाप्। गुहा अर्थात् बुद्धि या हृदय।

लोकादिमग्निं तमुवाच तस्मै
या इष्टका यावतीर्वा यथा वा।
स चापि तत् प्रत्यवदद् यथोक्त-
मथास्य मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः॥15॥

शब्दार्थ- तम् लोकादिम्=उस स्वर्गलोक की कारणरूपा; **अग्निम्**=अग्निविद्या का; **तस्मै उवाच**=उस नचिकेता को उपदेश दिया; **याः वा यावतीः**=उसमें कुण्ड=निर्माण आदि के लिये जो-जो और जितनी; **इष्टकाः**=ईंटें आदि आवश्यक होती है; **वा यथा**=तथा जिस प्रकार उनका चयन किया जाता है (वे सब बातें भी बतायीं); **च सः अपि**=तथा उस नचिकेता ने भी; **तत् यथोक्तम्**=वह जैसा सुना था, ठीक उसी प्रकार समझकर; **प्रत्यवदत्**=यमराज को पुनः सुना दिया; **अथ**=उसके बाद; **मृत्युः अस्य तुष्टः**=यमराज उस पर संतुष्ट होकर; **पुनः एव आह**=फिर बोले ।। 15।।

अर्थ- यम ने लोकों के आदि (कारण-भूत) उस अग्नि का, तथा उसके चयन में जैसी जितनी ईंटें होती है, एवं जिस प्रकार उसका चयन किया जाता है, उस सबका नचिकेता के प्रति वर्णन कर दिया और उसने भी उसे ज्यों का त्यों दोहरा दिया। तब उससे प्रसन्न होकर यमराज ने पुनः कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **लोकादिम्-**लोकस्यादिः, तम्।
- **यावतीः-**यत्+वतुप्+ङीप्
- **वा-** 'समुच्चय' अर्थ में प्रयुक्त निपात।
- **यथोक्तम्**- उक्तम् अनतिक्रम्य (अव्ययी.)।

तमब्रवीत्प्रीयमाणो महात्मा
वरं तवेहाद्य ददामि भूयः।
तवैव नाम्ना भवितायमग्निः
सृङ्कां चेमामनेकरूपां गृहाण ॥16॥

शब्दार्थ- प्रीयमाणः=(उसकी अलौकिक बुद्धि देखकर) प्रसन्न हुए; **महात्मा**=महात्मा यमराज; **तम्**=उस नचिकेता से; **अब्रवीत्**=बोले; **अद्य**=अब मैं; **तव**= तुमको; **इह**=यहाँ; **भूयः वरम्**=पुनः यह (अतिरिक्त) वर; **ददामि**=देता हूँ कि; **अयम् अग्निः**=यह अग्निविद्या; **तव एव नाम्ना**=तुम्हारे ही नाम से; **भविता**=प्रसिद्ध होगी; **च इमाम्**=तथा इस; **अनकेरूपाम् सृङ्काम्**=अनेक रूपों वाली रत्नों की माला को भी; **गृहाण**=तुम स्वीकार करो ।। 16।।

अर्थ- प्रसन्न होते हुये महात्मा यम ने उससे कहा-अब मैं तुम्हें फिर एक वर और देता हूँ। यह अग्नि तुम्हारें ही नाम से प्रसिद्ध होगा और तुम इस अनेक रूपों वाली अर्थात् विचित्र माला को ग्रहण करो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **प्रीयमाणः-** प्री (दिवादि, प्रीयते)+शानच्, पुं. प्र. एक.।
- **तव-** 'ददामि' के योग में चतुर्थी होती है, परन्तु यहाँ 'शेष'-सम्बन्ध सामान्य-में षष्ठी हुई है।

- **भूयः-**'पुनः' अर्थ में अव्यय है। यों, बहु+ईयसुन्=भूयस्-भूयः 'बहुतर' या 'अधिकतर' अर्थ में विशेषण पद है किन्तु 'पुनः' अर्थ में अव्यय होकर प्रयुक्त होता है। 'बहोर्लोपो भू च बहोः' सूत्र से बहु को भू आदेश तथा ईयसुन् के ई का लोप हो जाता है।
- **भविता-** भू+लुट्, प्र.पु. एक.।
- **सृङ्का-** प्रस्तुत स्थल में शङ्कराचार्य ने इसके दो अर्थ दिये हैं- (1) शब्दवती रत्नमयी माला (2) कर्म की अकुत्सित (प्रशस्त)

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धिं
त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू ।
ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा
निचाय्येमाँ शान्तिमत्यन्तमेति ॥17॥

शब्दार्थ- त्रिणाचिकेतः=इस (अग्निका शास्त्रोक्त रीति से) तीन बार अनुष्ठान करने वाला; **त्रिभिः संधिम् एत्य**=तीनों (ऋक्, साम, यजुर्वेद)-के साथ सम्बन्ध जोड़कर, **त्रिकर्मकृत्**=यज्ञ, दान और तपरूप तीनों कर्मों को निष्काम-भाव से करता रहने वाला मनुष्य; **जन्ममृत्यू तरति**=जन्म-मृत्यु से तर जाता है; **ब्रह्मजज्ञम्**=(वह) ब्रह्मासे उत्पन्न सृष्टि के जानने वाले; **ईड्यम् देवम्**=स्तवनीय इस अग्निदेवको; **विदित्वा**=जानकर तथा; **निचाय्य**=इसका निष्काम भाव से चयन करके; **इमाम् अत्यन्तम् शान्तिम् एति**=इस अनन्त शान्ति को पा जाता है (जो मुझको प्राप्त है) ।। 17।।

अर्थ- नाचिकेत अग्नि का तीन बार (ज्ञान, अध्ययन एवं अनुष्ठान रूप से) चयन करने वाला मनुष्य तीन व्यक्तियों (माता-पिता-आचार्य) से सम्बन्ध को प्राप्त होकर अर्थात् तीनों से सम्पर्क करके तीन कार्यों (इज्या, अध्ययन और दान) को करता हुआ जन्म और मृत्यु को पार कर जाता है। तथा ब्रह्म से उत्पन्न, ज्ञानवान् और स्तुति-योग्य देव (अग्नि) को जानकर एवं (आत्म भाव से) उसका साक्षात्कार करके इस-स्वबुद्धि-प्रत्यक्ष-शान्ति को आत्यन्तिक रूप से प्राप्त कर लेता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **त्रिणाचिकेतः-**त्रि+नाचिकेतः। पिछले मन्त्र में नचिकेता को दिये गये अतिरिक्त वर के अनुसार इस मन्त्र में यम ने अग्नि को ठीक ही 'नाचिकेत' कहा। 'त्रि' के र के कारण न को ण होने पर 'त्रिणाचिकेत' शब्द बना जिसका अर्थ हुआ नाचिकेत अग्नि का ज्ञान, चिन्तन एवं अनुष्ठान, इन तीन प्रकारों से चयन करने वाला।
- **ब्रह्मजज्ञम्-**ब्रह्मणो जातः ब्रह्मजः (उपपद समास)। स चासौ ज्ञश्चेति ब्रह्मजज्ञः (विशेषणोभयपद कर्मधा.), तम्। यह पद अग्नि देव के लिये ही आया है जिसे पीछे 14वें मन्त्र में 'स्वर्ग्यम् अग्निम्' तथा 14वें मन्त्र में 'लोकादिमग्निम्' कहा है। भू लोक में बप्ता से उत्पन्न प्रथम शरीरी होने के कारण ही उन्हे लोकादि एवं 'ब्रह्मा' कहा।
- **ईड्यम्-√** ईड् (स्तुतौ) + यत् । **निचाय्य-√** नि+ √चि +णिच् (स्वार्थे)+क्त्वा-ल्यप्। **त्रिकर्मकृत्-**त्रयाणां कर्मणां समाहारः त्रिकर्म (समाहार द्विगु)। तत् करोतीति त्रिकर्मकृत्= त्रिकर्म+ √कृ+ क्विप् कर्तरि (उपपद.)। **अत्यन्तम्-**अन्तम् अतिक्रान्तम् इति अत्यन्तं (प्रादिसमास), तत् यथा स्यात् तथा, अतिशयेनेत्यर्थः।

त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा
य एवं विद्वाँश्चिनुते नाचिकेतम् ।
स मृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥18॥

शब्दार्थ- एतत् त्रयम्=ईंटों के स्वरूप, संख्या और अग्नि-चयन-विधि- इन तीनों बातों को; **विदित्वा**-जानकर; **त्रिणाचिकेतः**=तीन बार नाचिकेत-अग्निविद्याका अनुष्ठान करने वाला तथा; **यः एवम्**=जो कोई भी इस प्रकार; **विद्वान्**=जाननेवाला पुरुष; **नाचिकेतम्**=इस नाचिकेत अग्नि का; **चिनुते**=चयन करता है; **सः मृत्युपाशान्**=वह मृत्यु के पाश को; **पुरतः प्रणोद्य**=अपने सामने ही (मनुष्य-शरीर में ही) काटकर; **शोकातिगः**=शोक से पार होकर; **स्वर्गलोके मोदते**=स्वर्गलोक में आनन्द का अनुभव करता है।। 18।।

अर्थ- जो त्रिणाचिकेत इन तीनों (अर्थात् कैसी और कितनी ईंटें होती हैं और अग्नि का चयन कैसे किया जाता है) को जानकर नाचिकेत अग्नि को इस प्रकार आत्मरूप से जानकर उसका चयन करता है, वह मृत्यु के बन्धनों को (शरीर-त्याग से) पूर्व ही तोड़कर शोक-रहित होकर स्वर्ग-लोक में आनन्द करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **नाचिकेतम्-**नचिकेतसः अयम् इति नाचिकेतः (नचिकेतस् +अण्), तम् । यहाँ सकारान्त शब्द नचिकेतस् अकारान्त अर्थात् नचिकेत बन गया है और (उससे अण्) प्रत्यय लगाने पर 'नाचिकेत' शब्द बना है।
- **मृत्युपाशान्-**मृत्योः पाशाः मृत्युपाशाः (षष्ठी तत्पु.), तान्। भाष्यकार शङ्कराचार्य ने 'मृत्युपाश' से अधर्म- अज्ञान-राग द्वेषादि लिया है।
- **प्रणोद्य-** प्र+ √नुद्+णिच्+क्त्वा-ल्यप् ।

एष तेऽग्निर्नचिकेतः स्वर्ग्यो
यमवृणीथा द्वितीयेन वरेण।
एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनास-
स्तृतीयं वरं नचिकेतो वृणीष्व ॥19॥

शब्दार्थ- नचिकेतः=हे नचिकेता; **एषः ते**=यह तुम्हें बतलायी हुई; **स्वर्ग्यः अग्निः**=स्वर्ग प्रदान करने वाली अग्निविद्या है; **यम् द्वितीयेन वरेण अवृणीथाः**=जिसको तुमने दूसरे वर से माँगा था; **एतम् अग्निम्**=इस अग्निको (अब से); **जनासः**=लोग; **तव एव**=तुम्हारे ही नाम से; **प्रवक्ष्यन्ति**=कहा करेंगे; **नचिकेतः**=हे नचिकेता; **तृतीयम् वरम् वृणीष्व**=(अब तुम) तीसरा वर माँगो ।। 19।।

अर्थ- हे नचिकेता! यह रहा तुम्हारा स्वर्ग का साधनभूत अग्नि जिसको तुमने दूसरे वर के द्वारा वरण किया था। लोग इस अग्नि को तुम्हारे ही नाम से कहेंगे (पुकारेंगे)। हे नचिकेता! (अब) तीसरा वर माँगो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **स्वर्ग्य-** स्वर्ग + यत्।
- **जनासः-** 'जन' शब्द का प्रथमा बहु. का रूप। वेद में 'जनाः' का विकल्प से 'जनासः' भी रूप होता है।
- **प्रवक्ष्यन्ति-**प्र+ √ब्रू या वच् + **लट्, प्र.** पु. बहु.। 'ब्रूवो वचिः' सूत्र से ब्रू का लट् में वच आदेश होन पर 'वक्ष्यति' इत्यादि ही रूप बनते हैं।

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये-
ऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं
वराणामेष वरस्तृतीयः ॥20॥

शब्दार्थ- प्रेते मनुष्ये=मरे हुए मनुष्य के विषय में; **या इयम्**=जो यह; **विचिकित्सा**=संशय है; **एके (आहुः) अयम् अस्ति इति**=कोई तो यों कहते हैं कि मरने के बाद यह आत्मा रहता है; **च एके (आहुः) न अस्ति इति**=और कोई ऐसा कहते हैं कि नहीं रहता ; **त्वया अनुशिष्टः**=आपके द्वारा उपदेश पाया हुआ; **अहम् एतत् विद्याम्**=मैं इसका निर्णय भलीभाँति समझ लूँ; **एषः वराणाम्**=यही तीनों वरों में से **तृतीयः वरः**=तीसरा वर है ।। 20।।

अर्थ - मृत मनुष्य के विषय में जो यह सन्देह है, कुछ लोग कहते हैं कि 'रहता है' अन्य लोग कहते हैं कि 'नहीं रहता' (तो) आप शिक्षित हुआ मैं इसको (तत्त्वतः) जानूँ, वरों में यह तीसरा वर है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **प्रेते-**प्र + √इण् (गतौ) + क्त (सप्तमी एक.)। प्र अर्थात् दूर, इत अर्थात् चला गया अर्थात् मृत व्यक्ति।
- **विचिकित्सा-**वि + √कित् + सन् + अ + टाप् ।
- **विद्याम्-** विद् ज्ञाने+ विधिलिङ् उ.पु.एक.।
- **अनुशिष्टः-**अनु + शास् + क्त। शास् धातु के आ के स्थान में इ 'शास इदङ्हलोः' सूत्र से हुआ है।

देवैरत्रापि विचिकित्सितं पुरा
न हि सुविज्ञेमणुरेष धर्मः।
अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व
मा मोपरोत्सीरति मा सृजैनम् ॥21॥

शब्दार्थ- नचिकेतः=हे नचिकेता; **अत्र पुरा**=इस विषयमें पहले; **देवैः अपि**=देवताओं ने भी; **विचिकित्सितम्**=संदेह किया था (परन्तु उनकी भी समझ में नहीं आया); **हि एषः धर्मः अणुः**=क्योंकि यह विषय बड़ा सूक्ष्म है; **न सुविज्ञेयम्**=सहज ही समझ में आने वाला नहीं है (इसलिये); **अन्यम् वरम् वृणीष्व**=तुम दूसरा वर माँग लो; **मा मा उपरोत्सीः**=मुझ पर दबाव मत डालो; **एनम् मा**=इस आत्मज्ञानसम्बन्धी वरको मुझे; **अतिसृज**=लौटा दो ।। 21।।

अर्थ - प्राचीन काल में देवों ने भी इस विषय में सन्देह किया था क्योंकि यह सरलता से जानने योग्य नहीं है। यह आत्मतत्त्व बड़ा सूक्ष्म है, नचिकेता! तुम कोई दूसरा वर ले लो। मेरे लिये रुकावट न उत्पन्न करो। इसे मेरे लिये छोड़ दो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **हि-**'क्योंकि' के अर्थ में प्रयुक्त निपात (अव्यय)
- **उपरोत्सीः-**उप + √रुध् + लुङ्, म. पु. एक.। 'माङि लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार तथा 'न माङ्योगे' सूत्र से माङ् के योग में अट् आगम का निषेध हुआ। अन्यथा उप + अरोत्सीः = उपारोक्षीः रूप होता। **मा-**'माम्' के स्थान में अन्वादेश।
- **अतिसृज-** अति+ सृज् +लोट्, म. पु. एक.।

देवैरत्रापि विचिकित्सितं किल
त्वं च मृत्यो यन्न सुज्ञेयमात्थ।
वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो
नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित् ॥22॥

शब्दार्थ- मृत्यो=हे यमराज; **त्वम् यत् आत्थ**=आपने जो यह कहा कि; **अत्र किल देवैः अपि**=सचमुच इस विषय पर देवताओं ने भी; **विचिकित्सितम्**=विचार किया था (परन्तु वे निर्णय नहीं कर पाये); **च न सुविज्ञेयम्**=और वह सुविज्ञेय भी नहीं है (इतना ही नहीं); **च**=इसके सिवा; **अस्य वक्ता**=इस विषय का कहने वाला भी; **त्वादृक्**=आपके-जैसा; **अन्यः न लभ्यः**=दूसरा नहीं मिल सकता; [**अतः**]=इसलिये मेरी समझ में तो; **एतस्य तुल्यः**=इसके

समान; **अन्यः कश्चित्**=दूसरा कोई भी; **वरः न**=वर नहीं है।। 22।।

अर्थ - हे यमराज! आप जो कहते हैं कि प्राचीन काल में देवों ने भी इसके विषय में सन्देह किया था और यह सरलता से जानने योग्य नहीं है इससे स्पष्ट है कि आप-सदृश इसका दूसरा कोई वक्ता नहीं मिल सकता और इसके समान दूसरा कोई वर (भी) नहीं है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी- विचिकित्सितम्-वि +√ कित् + सन् + क्त। **सुज्ञेयम्** -सु + √ ज्ञा + यत् । **वक्ता-**√ वच् + तृच् कर्तरि, प्रथमा पुं. एक. ।**आत्थ-**√ ब्रू + लट्, म.पु. एक.। **त्वादृक्**-युष्मत्-त्वत्+ √दृश् + क्विन् (त्वादृश्), प्रथमा पुं. एक.। यहाँ 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् च' (अ.) 3।2।60 से क्विन् लगा है। कञ् प्रत्यय लगने पर 'त्वादृश' (कञ् का अ जुड़ने से) रूप बनता है।

शतायुषः पुत्रपौत्रान्वृणीष्व
बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान् ।
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व
स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि ॥23॥

शब्दार्थ- शतायुषः-सैकड़ों वर्षों की आयु वाले; **पुत्रपौत्रान्**=बेटे और पोतों को (तथा); **बहून् पशून्**=बहुत-से गौ आदि पशुओं को (एवं); **हस्तिहिरण्यम्**=हाथी, सुवर्ण और; **अश्वान् वृणीष्व**=घोड़ों को माँग लो; **भूमेः महत् आयतनम्**=भूमि के बड़े विस्तार वाले मण्डल (साम्राज्य) को; **वृणीष्व**=माँग लो; **स्वयम् च**=तुम स्वयं भी; **यावत् शरदः**=जितने वर्षों तक; **इच्छसि**=चाहो; **जीव**=जीते रहो ।। 23।।

अर्थ - (हे नचिकेता!) तुम शतायु पुत्र-पौत्र, अनेक पशु, हाथी, सुवर्ण और घोड़े माँग लो, महान् भूमण्डल भी माँग लो और स्वयं भी जितने वर्ष चाहो, जिओ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी- शतम् आयूंषि येषां ते शतायुषः (बहुव्रीहि.), तान्। **हस्तिहिरण्यम्**-हस्तिनश्च हिरण्यानि चेति हस्तिहिरण्यम् (समाहार द्वन्द्व.)। **यावत् शरदः**- 'शरद्' वर्षवाची स्त्रीलिङ्ग शब्द है। 'शरदः' इसका द्वि. बहु. का रूप है।

एतत्तुल्यं यदि मन्यसे वरं
वृणीष्व वित्तं चिरजीविकां च।
महाभूमौ नचिकेतस्त्वमेधि
कामानां त्वा कामभाजं करोमि ॥24॥

शब्दार्थ- नचिकेतः=हे नचिकेता; **वित्तम् चिरजीविकाम्**=धन, सम्पत्ति और अनन्तकाल तक जीने के साधनों को; **यदि त्वम्**=यदि तुम; **एतत्तुल्यम्**=इस आत्मज्ञानविषयक वरदान के समान; **वरम् मन्यसे वृणीष्व**=वर मानते हो तो माँग लो; **च महाभूमौ**=और तुम इस पृथ्वीलोक में; **एधि**=बड़े भारी सम्राट् बन जाओ; **त्वा कामानाम्**=(मैं) तुम्हें सम्पूर्ण भोगों में से; **कामभाजम्**=अति उत्तम भोगों को भोगनेवाला; **करोमि**=बना देता हूँ ।।24।।

अर्थ - इसके समान यदि तुम कोई और वर समझते हो तो उसे तथा धन और चिरस्थायिनी जीविका माँग लो। हे नचिकेता! तुम इस विस्तृत पृथ्वी पर वृद्धि प्राप्त करो। मैं तुम्हें भोगों को इच्छानुसार भोक्ता बना देता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **चिरजीविकाम्**-चिरं (चिरकालं यावत्) जीविकेति चिरजीविका (सुप्सुपा.), ताम्।
- **एधि-** √एध् वृद्धौ + लोट्, म. पु. एक.।
- **कामानाम्** -काम्यन्ते इति कामाः (√ कम् + णिङ् स्वार्थे + घञ् कर्मणि। 'कमेर्णिङ्' से स्वार्थ में णिङ् प्रत्यय कम् धातु में लगता है) तेषाम्। यहाँ काम का अर्थ भोग या भोग-विषय है।
- **कामभाजम्** -कामः (√कम् + णिङ् + घञ् भावे) इच्छा, तेन तस्माद् वा भजते इति कामभाक् (काम + √भज् + ण्विः, 'भजो ण्विः' इस सूत्र से), तम् ।

ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके
सर्वान् कामाँ् छन्दतः प्रार्थयस्व
इमा रामाः सरथाः सतूर्या
न हीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः।
आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व
नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः ॥25॥

शब्दार्थ- ये ये कामा=जो-जो भोग; **मर्त्यलोके**=मनुष्यलोक में; **दुर्लभाः**=दुर्लभ हैं; **सर्वान् कामान्**=उन सम्पूर्ण भोगों को; **छन्दतः प्रार्थयस्व**=इच्छानुसार माँग लो; **सरथाः सतूर्याः इमाः रामाः**=रथ और नाना प्रकार के बाजों के सहित इन स्वर्ग की अप्सराओं को (अपने साथ ले आओ); **मनुष्यैः ईदृशाः**=मनुष्यों को ऐसी स्त्रियाँ; **न हि लम्भनीयाः**=निःसन्देह अलभ्य हैं; **मत्प्रत्ताभिः**=मेरे द्वारा दी हुई; **आभिः**=इन स्त्रियों से; **परिचारयस्व**=तुम अपनी सेवा कराओ; **नचिकेतः**=हे नचिकेता; **मा अनुप्राक्षीः**=इस बात को मत पूछो ।। 25।।

अर्थ - मृत्यु-लोक (मनुष्य-लोक) में जो-जो भोग (भोग्य विषय) दुर्लभ हैं (उन) सब भोगों को स्वेच्छानुसार माँग लो। रथ एवं वाद्यों के साथ ये रमणियाँ हैं। निस्सन्देह ऐसी (रमणियाँ) मानवों को प्राप्त होने योग्य नहीं होतीं। मेरे द्वारा दी गई इनसे अपनी परिचर्या-सेवा कराओ (किन्तु) नचिकेता! मरण के सम्बन्ध में मत पूछो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **दुर्लभाः**-दुर्+ √लभ् + खल् (ईषद्दुस्सुषु कृच्छ्रार्थेषु खल्, सूत्र से)।
- **हि**- 'निस्सन्देह' के अर्थ में प्रयुक्त निपात।
- **लम्भनीयाः**-√लभ् + णिच् स्वार्थे + अनीयर्। 'लभेश्च' से लभ् में णिच् लगने पर नुम् का आगम होकर लम्भय् हो जाता है।
- **छन्दतः**- छन्द (इच्छावाची अकारान्त पु. शब्द जो सकारान्त नपुंसकलिङ्ग 'छन्दस् शब्द से भिन्न है) + तसिः (तस्) प्रत्यय।
- **सरथाः**-रथैः सह ('तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुव्रीहि)। इसी प्रकार सतूर्याः भी बनेगा।
- **मत्प्रत्ताभिः**- मया प्रत्ताः मत्प्रत्ताः (तृ तत्पु.), ताभिः।
- **प्रत्ता**-प्र+√दा + क्त + टाप् स्त्रियाम्। 'अच् उपसर्गात्तः' सूत्र से 'दा' के स्थान में 'त्' आदेश होने पर प्र + त् + त = प्रत्त शब्द बनता है।
- **परिचारयस्व**- परि + √चर् + णिच् + लोट्, म.पु. एक.।

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्
सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव
तवैव वाहास्तव नृत्यगीते ॥26॥

शब्दार्थ- अन्तक=हे यमराज! (जिनका आपने वर्णन किया, वे); **श्वोभावाः**=क्षणभङ्गुर भोग (और उनसे प्राप्त होने वाले सुख); **मर्त्यस्य**=मनुष्य के; **सर्वेन्द्रियाणाम्**=अन्तःकरणसहित सम्पूर्ण इन्द्रियों का; **यत् तेजः**=जो तेज है; **एतत्**=उसको; **जरयन्ति**=क्षीण कर डालते हैं; **अपि सर्वम्**=इसके सिवा समस्त; **जीवितम्**=आयु (चाहे वह कितनी भी बड़ी क्यों न हो); **अल्पम् एव**=अल्प ही है (इसलिये); **तव वाहाः**=ये आपके रथ आदि वाहन और; **नृत्यगीते**=ये अप्सराओं के नाच-गान; **तव एव**=आपके ही पास रहें (मुझे नहीं चाहिये) ।। 26।।

अर्थ - हे यम! कल तक भी निश्चित रूप से न रहने वाले अर्थात् सर्वथा क्षणिक भोग-पदार्थ मनुष्य की सारी इन्द्रियों के तेज को क्षीण कर देते हैं। सम्पूर्ण जीवन भी तो थोड़ा ही है। अतः आपके वाहन और नाच-गान आपके ही पास रहें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **श्वोभावाः**-श्वः भावः (सत्ता) येषां ते (बहुव्रीहि.)। इसका शब्दार्थ हुआ क्षण-स्थायी, क्षणिक।
- **जरयन्ति**-√ जृ (वयोहानौ) + णिच् + लट् प्र. पु. बहु.।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो
लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा।
जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं
वरस्तु मे वरणीयः स एव ॥27॥

शब्दार्थ- मनुष्यः=मनुष्य; **वित्तेन**=धनसे; **तर्पणीयः न**=कभी भी तृप्त नहीं किया जा सकता है; **चेत्**=जब कि (हमनें); **त्वा अद्राक्ष्म**=आपके दर्शन पा लिये हैं (तब); **वित्तम्**=धन को; **लप्स्यामहे**=(तो हम) पा ही लेंगे; (और) **त्वम् यावत्**=आप जब तक; **ईशिष्यसि**=शासन करते रहेंगे (तब तक तो); **जीविष्यामः**=हम जीते ही रहेंगे (इन सबको भी क्या माँगना है अतः); **मे वरणीयः वरः तु**=मेरे माँगने लायक वर तो; **सः एव**=वह (आत्मज्ञान) ही है ।। 27।।

अर्थ - मनुष्य धन से सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता। यदि आप को देख लिया है तो धन पा ही लेंगे। (और) जब तक आप शासन करेंगे (तब तक तो) हम जियेंगे (ही)। (इसलिए) मेरे लिए तो वही वर वरण करने योग्य है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **तर्पणीयः**-तृप् + अनीयर्।
- **लप्स्यामहे**-√ लभ् + ल्रट् (उ. पु. बहु.)
- **अद्राक्ष्म**-√ दृश् + लुङ् (उ. पु. बहु.)।
- **वरः**-√ वृ + अप् ('ऋदोरप्' सूत्र से)
- **वरणीयः**-√ वृ + अनीयर्।

अजीर्यताम् अमृतानामुपेत्य
जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन् ।
अभिध्यायन्वर्णरतिप्रमोदान्
अतिदीर्घे जीवते को रमेत ॥28॥

शब्दार्थ- जीर्यन् मर्त्यः=यह मनुष्य जीर्ण होने वाला और मरणधर्मा है; **प्रजानन्**=इस तत्त्व को भलीभाँति समझनेवाला; **क्वधःस्थः**=मनुष्यलोक का निवासी; **कः**=कौन (ऐसा) मनुष्य है (जो कि); **अजीर्यताम्**=बुढ़ापे से रहित; **अमृतानाम्**=न मरनेवाले (आप-सदृश) महात्माओं का; **उपेत्य**=सङ्ग पाकर भी; **वर्णरतिप्रमोदान्**=(स्त्रियोंके) सौन्दर्य, क्रीडा और आमोद-प्रमोद का; **अभिध्यायन्**=बार-बार चिन्तन करता हुआ; **अतिदीर्घे**=बहुत काल तक; **जीविते**=जीवित रहने में; **रमेत**=प्रेम करेगा?।। 28।।

अर्थ - नीचे पृथ्वी पर रहने वाला जराग्रस्त एवं मरणाशील कौन विवेकी व्यक्ति जरा एवं मरण से ग्रस्त न होने वाले अजर-अमर

देवों के समीप पहुँचकर वर्ण के राग अर्थात् आसङ्ग से उत्पन्न होने वाले (स्त्री-सम्भोगादि) सुखों को (अस्थिर देखता हुआ अति दीर्घ जीवन में (भी) सुख मानेगा?

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अजीर्यताम्-** नञ् + √जृ + शतृ (पु., षष्ठी बहुवचन)।
- **अमृतानां-**न मृताः अमृता (नञ् तत्पु.), तेषाम्। मर्त्यः **मृङ् प्राणत्यायगे + तन्** = मर्तः (म्रियते इति)मर्त एव मर्त्यः (मर्त +यत् स्वार्थे)
- **क्वधःस्थः-** कोः (पृथिव्या) अधः तिष्ठतीति (कु + अधः + √स्था + कः कर्तरि)
- **प्रजानन्** -प्र + √ज्ञा + शतृ (पुं.प्र.एक.)।
- **अभिध्यायन्-**अभि + √ध्यै + शतृ (पुं. प्र. एक.)।
- **वर्णरतिप्रमोदान्-**वर्णे रतिः (आसक्तिः मोहो वा) वर्णरतिः (स. तत्पु.); तया तस्या वा प्रमोदाः वर्णरतिप्रमोदा (तृ.या पं. तत्पु.); तान्।
- **जीविते-**√ जीव् + क्त (नपुंसके भावे क्तः) जीवने इत्यर्थः।

यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो
यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत् ।
योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टो
नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते ॥29॥

शब्दार्थ- मृत्यो=हे यमराज, **यस्मिन्**=जिस; **महति साम्पराये**= महान् आश्चर्यमय परलोकसम्बन्धी आत्मज्ञान के विषय में; **इदम् विचिकित्सन्ति**=(लोग) यह शङ्का करते हैं कि यह आत्मा मरने के बाद रहता है या नहीं; **(तत्र) यत्**=उसमें जो निर्णय है; **तत् नः ब्रूहि**=वह आप हमें बतलाइये; **यः अयम्**=जो यह; **गूढम् अनुप्रविष्टः वरः**=अत्यन्त गम्भीरता को प्राप्त हुआ वर है; **तस्मात्**=इससे; **अन्यम्**=दूसरा वर; **नचिकेताः**=नचिकेता; **न वृणीते**=नहीं माँगता ।। 29।।

अर्थ - हे यम! जिस (प्रेत) के विषय में (रहता है या नहीं) यह शङ्का (लोग) करते हैं, एवं महान् परलोक के विषय में जो (विज्ञान) है, वह दोनों हमें बतलाइये। यह जो गहनता में प्रविष्ट गूढ वर है, इससे भिन्न (वर) नचिकेता नहीं वरण करता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **साम्पराये- सम्परायः** (सम् + परा + इण् गतौ + अच्) एव साम्परायः (सम्पराय+अण् स्वार्थे)। 'सम्पराय' का अर्थ है परलोक- 'सम् सम्यक् परा दूरम् ईयते गम्यते प्राप्यते इति सम्परायः परलोकः'।

द्वितीया वल्ली

अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेय-
स्ते उभे नानार्थे पुरुषँ सिनीतः।
तयोः श्रेय आददानस्य साधु
भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते ॥1॥

शब्दार्थ- श्रेयः=कल्याण का साधन; **अन्यत्**=अलग है; **उत**=और; **प्रेयः**=प्रिय लगने वाले भोगों का साधन; **अन्यत् एव**=अलग ही है; **ते**=वे; **नानार्थे**=भिन्न-भिन्न फल देने वाले; **उभे**=दोनों साधन; **पुरुषम्**=मनुष्य को; **सिनीतः**=बाँधते हैं - अपनी-अपनी ओर आकर्षित करते हैं; **तयोः**=उन दोनों में से; **श्रेयः**=कल्याण के साधन को; **आददानस्य**=ग्रहण करने वाले का; **साधु भवति**=कल्याण होता है; **उ यः**=परंतु जो; **प्रेयः वृणीते** = सांसारिक भोगों के साधन को स्वीकार करता है; [**सः**=वह;] **अर्थात्**=यथार्थ लाभ से; **हीयते**=भ्रष्ट हो जाता है ।। 1।।

अर्थ - श्रेय (विद्या) और है तथा प्रेय (अविद्या) और ही है। विभिन्न प्रयोजन वाले वे दोनों पुरुष को बाँधते हैं। उनमें से श्रेय का ग्रहण करने वाले का कल्याण (शुभ) होता है और जो प्रेय का वरण करता है, वह पुरुषार्थ से च्युत (भ्रष्ट) हो जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **श्रेयः-** प्रशस्य + ईयसुन् । ईयसुन् तथा इष्ठन् लगने पर 'प्रशस्यस्य श्रः' 5।3।60 सूत्र से प्रशस्य को 'श्र' आदेश हो जाता है। इस प्रकार श्र + ईयस्= श्रेयस् शब्द बनता है।
- **प्रेयः-** प्रिय + ईयसुन्। संरचना की दृष्टि से श्रेयस् तथा प्रेयस्, दोनों ही शब्द विशेषण होने पर भी संज्ञा की तरह प्रयुक्त होते हैं। यहाँ कल्याण या विद्या तथा अकल्याण या अविद्या के अर्थ में ये संज्ञावत् ही प्रयुक्त हुये हैं।
- **नानार्थे-** नाना विभिन्नौ अर्थौ प्रयोजने ययोस्ते, बहुव्रीहि.।
- **सिनीतः-**√ षिञ् बन्धने (क्र्यादि.), लट् प्रथम. द्विवचन।
- **आददानस्य-**आ + √दा + शानच्, ष.एक. (गृह्णतः इत्यर्थः)।
- **हीयते-**√ हा + लट्, प्रथम.एक.।
- **वृणीते-**√ वृञ् वरणे (क्र्यादि.), लट्, प्रथम.एक.। यह उभयपदी धातु है। अतः वृणाति एवं वृणीते दोनों प्रकार के रूप बनते हैं।

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत-
स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते
प्रेयो मन्दो योगक्षेमात् वृणीते ॥2॥

शब्दार्थ- श्रेयः च प्रेयः च=श्रेय और प्रेय-ये दोनों ही; **मनुष्यम्**

एतः=मनुष्य के सामने आते हैं; **धीरः**=बुद्धिमान् मनुष्य; **तौ**=उन दोनों के स्वरूप पर; **सम्परीत्य**=भलीभाँति विचार करके; **विविनक्ति**=उनको पृथक्-पृथक् समझ लेता है; (और) **धीरः**=वह श्रेष्ठ बुद्धि मनुष्य; **श्रेयः हि**=परम कल्याण के साधन को ही; **प्रेयसः**=भोग-साधन की अपेक्षा; **अभिवृणीते**=श्रेष्ठ समझकर ग्रहण करता है (परन्तु); **मन्दः**=मन्द बुद्धि वाला मनुष्य; **योगक्षेमात्**=लौकिक योगक्षेम की इच्छा से; **प्रेयः वृणीते**=भोगों के साधनरूप प्रेय को अपनाता है ।। 2।।

अर्थ - श्रेय और प्रेय (दोनों मिले-जुले से) मनुष्य के पास आते हैं। बुद्धिमान पुरुष उन दोनों को भली-भाँति समझ कर अलग-अलग करता है एवं वह प्रेय के समक्ष श्रेय को ही वरण करता है। किन्तु मूढ योग और क्षेम के कारण प्रेय को वर्णन करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **एतः-**आ + √इण् गतौ, लट् प्रथम. द्वि. (आगच्छत इत्यर्थः)।
- **सम्परीत्य-**सम् + परि + √इण् + क्त्वा-ल्यप्।
- **विविनक्ति-वि+√**विचिर् पृथग्भावे (रुधादि.) लट् प्रथम.एक.।
- **योगक्षेमात्** -योगश्च क्षेमश्चेति योगक्षेमम् (समाहार द्वन्द्व), तस्मात्। यहाँ 'हेतौ' इस सूत्र से कारण अर्थ में पञ्चमी हुई है। 'योग' शब्द 'युजिर्' योगे (रुधादि.) से घञ् प्रत्यय लगकर बना है।

स त्वं प्रियान्प्रियरूपाँ श्च कामा
नभिध्यायन्नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः।
नैताँ सृङ्कां वित्तमयीमवाप्तो
यस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः ॥3॥

शब्दार्थ- नचिकेतः=हे नचिकेता! (उन्हीं मनुष्यों में); **सः त्वम्**=तुम (ऐसे निःस्पृह हो कि); **प्रियान् च**=प्रिय लगने वाले और; **प्रियरूपान्**=अत्यन्त सुन्दर रूपवाले; **कामान्**=इस लोक और परलोक के समस्त भोगों को; **अभिध्यायन्**=भलीभाँति सोच-समझकर; **अत्यस्राक्षीः**=(तुमने) छोड़ दिया; **एताम् वित्तमयीम् सृङ्काम्**=इस सम्पत्तिरूप शृङ्खला (बेड़ी) को; **न अवाप्तः**=(तुम) नहीं प्राप्त हुए (इसके बन्धनमें नहीं फँसे); **यस्याम्**=जिसमें; **बहवः मनुष्याः**=बहुत-से मनुष्य; **मज्जन्ति**=फँस जाते हैं।। 3।।

अर्थ - हे नचिकेता! उस तुमने (पुत्रवित्तादि) प्रिय एवं (अप्सरादि) प्रियरूप भोगों को (उनकी अनित्यता एवं असारता को) सोचते हुए त्याग दिया, (और) इस धनमयी गति (सरणि) को नहीं प्राप्त हुए जिसमें अनेक जन डूब जाते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सः-** इसका तात्पर्य है- उस प्रकार से प्रेय के त्याग के कारण विदित।
- **प्रियरूपान्-**प्रियाणि रूपाणि येषां ते (बहुव्रीहि)।
- **कामान्** -काम्यन्ते इति कामा भोगविषयाः (कर्मणि घञ्), तान्।
- **अभिध्यायन्** -अभि + √ध्यै + शतृ, पुं.प्र.एक.।
- **अत्यस्राक्षीः-**अति + √सृज्, लुङ् मध्यम.एक.।
- **अवाप्तः-**अव + √आप् + क्त कर्तरि। **मज्जन्ति-√** (टु) मस्जो शुद्ध्यौ (तुदादि.), लट् प्रथम.बहु.।

दूरमेते विपरीते विषूची
अविद्या या च विद्येति ज्ञाता।
विद्याभीप्सिनं नचिकेतसं मन्ये
न त्वा कामा बहवोऽलोलुपन्त ॥4॥

शब्दार्थ- या अविद्या=जो कि अविद्या; **च विद्या इति ज्ञाता**=और विद्या नाम से विख्यात हैं; **एते**=ये दोनों; **दूरम् विपरीते**=परस्पर अत्यन्त विपरीत; (और) **विषूची**=भिन्न-भिन्न फल देने वाली हैं, **नचिकेतसम्**=तुम नचिकेताको; **विद्याभीप्सिनम् मन्ये**=मैं विद्या का ही अभिलाषी मानता हूँ (क्योंकि); **त्वा बहवः कामाः**=तुमको बहुत-से भोग; **न अलोलुपन्त**=(किसी प्रकार भी) नहीं लुभा सके ।। 4।।

अर्थ - जो विद्या और अविद्या रूप से जानी जाती हैं, ये दोनों परस्पर अत्यन्त विरुद्ध और विभिन्न दिशाओं को जाने वाली (गतियाँ) हैं अर्थात् विभिन्न फल देने वाले मार्ग हैं। मैं तुझ नचिकेता को विद्या का अभिलाषी मानता हूँ (क्योंकि) अनेक काम्य पदार्थ तुमको (अपने लक्ष्य से) भ्रष्ट नहीं कर सके (अलग नहीं कर सके)।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **ज्ञाता-√** ज्ञा + क्त + टाप्।
- **दूरम्-** अत्यन्त। यहाँ यह अव्यय की तरह प्रयुक्त हुआ है और 'विपरीते' इस विशेषण-पद की विशेषता प्रकट करता है।
- **विपरीते-** वि + परि+√ इण् गतौ + क्त स्त्री., प्रथमा द्वि.।
- **विषूची-**विष् + √अञ्च् गतौ + क्विन् + ङीप् (स्त्रियाम्)।
- **विद्याभीप्सिनम्-**विद्याम् अभीप्सतीति विद्याभीप्सी (विद्या + अभि +√ आप् + सन् + णिनिः- उपपदतत्पु.), तम्।
- **अलोलुपन्त-√** लुप्ऌ छेदने (तुदादि.) + यङ्-लुक्, लङ्लकार प्रथम. बहु.। विमोहन (लुभाना) अर्थ वाली लुप् धातु दिवादिगणी है और इसके रूप लुप्यति, लुप्यतः, लुप्यन्ति इत्यादि होते हैं।

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः
स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा
अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥5॥

शब्दार्थ- अविद्यायाम् अन्तरे वर्तमानाः=अविद्या के भीतर रहते हुए (भी); **स्वयं धीराः**=अपने-आपको बुद्धिमान् (और); **पण्डितम् मन्यमानाः**=विद्वान् मानने वाले ; **मूढाः**=(भोग की इच्छा करने वाले) वे मूर्ख लोग; **दन्द्रम्यमाणाः**=नाना योनियों में चारों ओर भटकते हुए; (तथा) **परियन्ति**=ठीक वैसे ही ठोकरें खाते रहते हैं; **यथा**=जैसे; **अन्धेन एव नीयमानाः**=अन्धे मनुष्य के द्वारा चलाये जाने वाले; **अन्धाः**=अन्धे (अपने लक्ष्य तक न पहुँचकर इधर-उधर भटकते और कष्ट भोगते हैं) ।। 5।।

अर्थ - अविद्या के भीतर रहने वाले, अपने-आप बुद्धिमान् बने हुए, अपने को पण्डित मानने वाले मूढ पुरुष निरन्तर कुटिल (टेढ़े-मेढ़े) मार्गों से चलते हुये वैसे ही भटकते रहते हैं जैसे अन्धे के द्वारा नीयमान अन्धे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अविद्यायामन्तरे**-यह आर्ष प्रयोग है। लौकिक संस्कृत में 'अविद्यायाः अन्तरे' प्रयोग होगा अथवा केवल 'अविद्यायाम्'
- **मन्यमानाः**- मन् (दिवादि.) ज्ञाने + शानच्, पुं. प्रथमा बहु.।
- **दन्द्रम्यमाणाः**- द्रम् गतौ (भ्वादि, दमति) यङ् + शानच् , पु. प्रथमा बहुव.
- **परियन्ति**-परि+ √इण् गतौ, लट्लकार प्रथम. बहु.।
- **मूढाः**- √मुह् + क्त, प्रथम पुं.बहु.।
- **नीयमानाः**- √नी + यक् कर्मणि + शानच्, पुं. प्रथमा बहु.।

न साम्परायः प्रतिभाति बालं
प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्।
अयं लोको नास्ति पर इति मानी
पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥6॥

शब्दार्थ- वित्तमोहेन मूढम्=इस प्रकार सम्पत्ति के मोह से मोहित; **प्रमाद्यन्तम् बालम्**= निरन्तर प्रमाद करने वाले अज्ञानी को; **साम्परायः**=परलोक; **न प्रतिभाति**= नहीं सूझता; **अयम् लोकः**= (वह समझता है) कि यह प्रत्यक्ष दीखनेवाला लोक ही सत्य है; **परः न अस्ति**=इसके सिवा दूसरा (स्वर्ग-नरक आदि लोक) कुछ भी नहीं है; **इति मानी**=इस प्रकार मानने वाला अभिमानी मनुष्य; **पुनः पुनः**=बार-बार; **मे वशम्**=मेरे (यमराज) वश में; **आपद्यते**=आता है।।6।।

अर्थ - धन के मोह से अन्धे हुये, (अतः) प्रमाद करने वाले उस मूढ को परलोक का साधन नहीं सूझता। यही लोक है, परलोक नहीं है, ऐसा मानने वाला वह बार-बार मेरे वशीभूत होता है। (अर्थात् जन्म-मरण की परम्परा को प्राप्त होता है, संसरण करता रहता है, आवागमन से मुक्त नहीं हो पाता)।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **प्रमाद्यन्तम्**-प्र + √मदि हर्षे (दिवादि.) + शतृ, पुं द्वि.एक.। प्र पूर्वक मद् धातु का अर्थ हर्ष न होकर प्रमाद या स्खलन होता है।
- **मानी**-√मन् (दिवादि.) + णिनिः।
- **आपद्यते**- आ +√पद् (दिवादि.), लट् प्रथम.एक.।

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः
शृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विद्युः।
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा-
ऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः॥7॥

शब्दार्थ- यः बहुभिः=जो (आत्मतत्त्व) बहुतों को तो; **श्रवणाय अपि**=सुनने के लिये भी; **न लभ्यः**=नहीं मिलता; **यम्**=जिसको; **बहवः**=बहुत-से लोग; **शृण्वन्तः अपिः**=सुनकर भी; **न विद्युः**=नहीं समझ सकते; **अस्य**=ऐसे इस गूढ़ आत्मतत्त्व का; **वक्ता आश्चर्यः**=वर्णन करने वाला महापुरुष आश्चर्यमय है (बड़ा दुर्लभ है); **लब्धा कुशलः**=उसे प्राप्त करने वाला भी बड़ा कुशल (सफल-जीवन) कोई एक ही होता है; **कुशलानुशिष्टः**=और जिसे तत्त्वकी उपलब्धि हो गयी है, ऐसे ज्ञानी महापुरुष के द्वारा शिक्षा प्राप्त किया हुआ; **ज्ञाता**=आत्मतत्त्व का ज्ञाता भी; **आश्चर्यः**=आश्चर्यमय है (परम दुर्लभ है) ।। 7।।

अर्थ - जो (आत्मा) बहुतों को सुनने के लिये भी प्राप्य नहीं है, जिसे सुनते हुये भी बहुत से लोग जान नहीं पाते हैं, (ऐसे) इस (आत्मा) का निरूपण करने वाला कोई आश्चर्य रूप ही होता है, इसको प्राप्त करने वाला (भी) कोई निपुण पुरुष (ही) होता है, तथा कुशल आचार्य द्वारा उपदिष्ट ज्ञाता भी आश्चर्य रूप होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **लभ्यः**-√ लभ् + यत्
- **शृण्वन्तः**-√ श्रु + शतृ पुं. प्रथमा बहु.।
- **विद्युः**-√विद् ज्ञाने (अदादि) विधिलिङ्, प्रथम. बहु.।
- **कुशलानुशिष्टः**- कुशलेन अनुशिष्टः (अनु +√शास् + क्त-कित् प्रत्यय लगने पर शास् को शिष् हो जाता है) कुशलानुशिष्टः (तृ. तत्पु.)।
- **वक्ता**-√वच् +तृच् +कर्तरि, पुं. प्रथमा एक.।
- **लब्धा**-√लभ् + तृच्, पुं. प्रथमा एक.।

- **ज्ञाता-**√ज्ञा +तृच् पुं. प्रथमा एक.।

न नरेणावरेण प्रोक्त एष
सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः।
अनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्ति
अणीयान् ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात् ॥8॥

शब्दार्थ- अवरेण नरेण प्रोक्तः=अल्पज्ञ मनुष्य के द्वारा बतलाये जाने पर; **बहुधा चिन्त्यमानः**=(और उनके अनुसार) बहुत प्रकार से चिन्तन किये जाने पर भी; **एषः**=यह आत्मतत्त्व; **सुविज्ञेयः न**=सहज ही समझ में आ जाय, ऐसा नहीं है; **अनन्यप्रोक्ते**=किसी दूसरे ज्ञानी पुरुष के द्वारा उपदेश न किये जाने पर ; **अत्र गतिः न अस्ति**=इस विषय में मनुष्य का प्रवेश नहीं होता ; **हि अणुप्रमाणात्**=क्योंकि यह अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु से भी; **अणीयान्**=अधिक सूक्ष्म है; **अतर्क्यम्** =(इसलिये) तर्क से अतीत है।।8।।

अर्थ - (अस्ति-नास्ति, कर्त्ता-अकर्त्ता इत्यादि) अनेक प्रकार से (वादियों द्वारा) विचारित आत्मा तुच्छ या प्राकृत जन के द्वारा उपदिष्ट होने पर अच्छी तरह नहीं जाना जा सकता। किसी अभेददर्शी आचार्य के द्वारा उपदिष्ट इसके विषय में विविध विकल्प अवशिष्ट नहीं रह जाते। क्योंकि यह सूक्ष्म परिमाण वालों से भी सूक्ष्मतर अतश्च तर्क से परे हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अवरेण-** न वरः अवरः (नञ् तत्पुरुष) तेन।
- **प्रोक्तः-**प्र + √वच् + क्त (प्रकर्षेण उक्त इति प्रोक्तः- प्रादि.)।
- **सुविज्ञेयः-**सु + वि +√ज्ञा + यत् (सुष्ठु विज्ञेय- इति)।
- **चिन्त्यमानः-**√ चिन्त + यक् कर्मणि + शानच् ।
- **अनन्यप्रोक्ते-** अविद्यमानः अन्यः यस्मात् सः अनन्यः (बहुव्रीहि.)। 'नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा **चोत्तरपदलोपः** वार्तिक के अनुसार यह समास बना है।
- **अणीयान्-** अणु + ईयसुन्, पुं. प्रथमा एक.। 'अणु' के उकार का लोप होकर अण् + ईयस्= 'अणीयस्' प्रातिपदिक बनता है।
- **अतर्क्यम्-** न तर्क्यम् (√तर्क् + यत्), नञ् तत्पुरुषः।
- **अणुप्रमाणात् -** अणु प्रमाणं यस्य सः (बहु.), तस्मात् ।

नैषा तर्केण मतिरापनेया
प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय प्रेष्ठ।
यां त्वमापः सत्यधृतिर्बतासि
त्वादृङ् नो भूयान्नचिकेतः प्रष्टा॥9॥

शब्दार्थ- प्रेष्ठ=हे प्रियतम!; **याम् त्वम् आपः**=जिसको तुमने पाया है; **एषा मतिः**=यह बुद्धि; **तर्केण न आपनेया**=तर्कसे नहीं मिल सकती (यह तो); **अन्येन प्रोक्ता एव**=दूसरे के द्वारा कही हुई ही; **सुज्ञानाय**=आत्मज्ञान में निमित्तः; [**भवति**=होती है;] **बत**=सचमुच ही (तुम); **सत्यधृतिः**=उत्तम धैर्यवाले; **असि**=हो; **नचिकेतः**=हे नचिकेता! (हम चाहते हैं कि) ; **त्वादृक्**=तुम्हारे-जैसे ही; **प्रष्टा**=पूछने वाले; **नः भूयात्**=हमें मिला करें ।। 9।।

अर्थ - हे प्रेष्ठ! (आत्मा के) सम्यक् ज्ञान के लिए (तार्किक से भिन्न) किसी दूसरे (अनन्य आचार्य) के द्वारा ही उपदिष्ट यह बुद्धि, जिसे तुम प्राप्त हुए हो, तर्क द्वारा नहीं प्राप्त की जा सकती। हर्ष है कि तुम सत्य सङ्कल्प (धारणा) वाले हो। हे नचिकेता! तुम जैसा ही प्रश्नकर्ता हमें प्राप्त हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **आपनेया-** आप् + अनीयर् + टाप्, **आ** + अप् + नी + यत्।
- **सुज्ञानाय-सु** सुन्दरं सुज्ञानं (प्रादि.), तस्मै। इस स्थल में 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या' से चतुर्थी का प्रयोग हुआ है।
- **प्रेष्ठ-** सम्बोधन पद।
- **आपः-**√ आप्+ लुङ्, मध्यम. एक.।
- **सत्यधृतिः-** सत्या धृतिर्यस्य सः (बहुव्रीहि.)।
- **त्वादृक्-**युष्मद्+ √दृश् + क्विन्, पु. प्रथमा. एक.।
- **भूयात्-** आशीर्लिङ्, प्रथमा. एक.।
- **प्रष्टा-**√प्रच्छ् + तृच् कर्तरि, पुं. प्रथमा एक.।

जानाम्यहꣳ शेवधिरित्यनित्यं
न ह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत्।
ततो मया नाचिकेतश्चितोऽग्नि-
रनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् ॥10॥

शब्दार्थ- अहम् जानामि=मैं जानता हूँ कि; **शेवधिः**=कर्मफलरूप निधि; **अनित्यम् इति**=अनित्य है; **हि अध्रुवैः**=क्योंकि अनित्य (विनाशशील) वस्तुओंसे; **तत् ध्रुवम्**=नित्य पदार्थ (परमात्मा); **न हि प्राप्यते**=नहीं मिल सकता; **ततः**= इसलिये; **मया**=मेरे द्वारा (कर्तव्यबुद्धि से); **अनित्यैः द्रव्यैः**=अनित्य पदार्थों के द्वारा; **नाचिकेतः**=नाचिकेत नामक; **अग्निः चितः**=अग्नि का चयन किया गया (अनित्य भोगों की प्राप्ति के लिये नहीं, अतः उस निष्कामभाव की अपूर्व शक्ति से मैं); **नित्यम्**=नित्य वस्तु परमात्मा को ; **प्राप्तवान् अस्मि**=प्राप्त हो गया हूँ ।। 10।।

अर्थ - (कर्मफलरूप) निधि अनित्य है, यह मैं जानता हूँ, नित्य आत्मतत्त्व अनित्य साधनों से निश्चित ही नहीं प्राप्त होता। तथापि मेरे द्वारा नाचिकेत अग्नि (जिसका मैंने अभी तुम्हें उपदेश दिया है)

चयन किया गया। (जिसके परिणाम स्वरूप सांसारिक) अनित्य साधनों से (आपेक्षिक) नित्य स्थान (यमलोक, स्वर्ग) को प्राप्त हुआ हूँ।

कामस्याप्तिं जगतः प्रतिष्ठां
क्रतोरनन्त्यमभयस्य पारम् ।
स्तोममहदुरुगायं प्रतिष्ठां दृष्ट्वा
धृत्या धीरो नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः॥11॥

शब्दार्थ- नचिकेतः=हे नचिकेता !; **कामस्य आप्तिम्**=जिसमें सब प्रकार के भोग मिल सकते हैं; **जगतः प्रतिष्ठाम्**=जो जगत् का आधार; **क्रतोः अनन्त्यम्**=यज्ञ का चिरस्थायी फल; **अभयस्य पारम्**=निर्भयता की अवधि (और); **स्तोममहत्**=स्तुति करने योग्य एवं महत्त्वपूर्ण है (तथा); **उरुगायम्**=वेदों में जिसके गुण नाना प्रकार से गाये गये हैं; **प्रतिष्ठाम्**=(और) जो दीर्घकाल तक की स्थिति से सम्पन्न है, ऐसे स्वर्गलोक को; **दृष्ट्वा धृत्या**=देखकर भी तुमने धैर्यपूर्वक; **अत्यस्राक्षीः**=उसका त्याग कर दिया; **[अतः**=इसलिये;] (मैं समझता हूँ कि) **धीरः[असि]** (तुम) बहुत ही बुद्धिमान् हो ।। 11।।

अर्थ - हे नचिकेता! बुद्धिमान् तुमने यज्ञ के अनन्त फल रूप हरिण्यगर्भ-पद में भोगों की समाप्ति, जगत् का आश्रय (आधार), अभय की परम सीमा, स्तुत्य और महती (अणिमादियुक्त) विस्तीर्ण गति तथा उत्तम स्थिति को देखकर (भी) धैर्य से (उसका) परित्याग कर दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **आप्तिम्-**√ आप् + क्तिन्, द्वि. एक.।
- **प्रतिष्ठाम्-** प्र√ स्था + अङ् अधिकरणे + टाप्, द्वि.एक. (प्रतितिष्ठति अस्यामिति प्रतिष्ठा आश्रयः आधार इत्यर्थः)।
- **अनन्त्यम्-**अनन्त + ष्यञ् भावे। 'आनन्त्यम्' के स्थान में 'अनन्त्यम्'।
- **वैदिक स्वर-** ह्रस्वता का उदाहरण है।
- **पारम्-** परमां सीमां, परमां काष्ठाम्।
- **स्तोममहत्-** स्तोमं च महत् चेति स्तोममहत्, विशेषणोभयपद कर्मधारय.।
- **उरुगायम्-** उरुः (महान्) **गतिः** (गतिः) इति, तम् (विशेषणपूर्वपद कर्मधारय.)।
- **प्रतिष्ठाम्-** प्रति+ √स्था + अङ्भावे + टाप्,द्वि.एक. (प्रतिष्ठानं प्रतिष्ठा, उत्कृष्टा उत्तमा वा स्थितिः)।
- **अत्यस्राक्षीः-** अति + √सृज् + लुङ्, मध्यम.एक.।

तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं
गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्।
अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं
मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति ॥12॥

शब्दार्थ- गूढम्=जो योगमाया के पर्दे में छिपा हुआ; **अनुप्रविष्टम्** =सर्वव्यापी; **गुहाहितम्**=सबके हृदयरूप गुफा में स्थित (अतएव); **गह्वरेष्ठम्**=संसाररूप गहन वन में रहने वाला; **पुराणम्**=सनातन है, ऐसे; **तम् दुर्दर्शं देवम्**=उस कठिनता से देखे जाने वाले परमात्मदेव को; **धीरः**=शुद्ध बुद्धियुक्त साधक; **अध्यात्मयोगाधिगमेन**=अध्यात्मयोग की प्राप्ति के द्वारा; **मत्वा**= समझकर; **हर्षशोकौ जहाति**=हर्ष और शोक को त्याग देता है।। 12।।

अर्थ - धीर पुरुष कठिनता से दीख पड़ने वाले, गूढ स्थान में प्रविष्ट, बुद्धि और विशेषतः उसके गर्त (गहरे स्थान) में स्थित उस पुरातन देव को आत्मविषयक चित्तैकाग्र्य की प्राप्ति के द्वारा जानकर हर्ष और शोक को त्याग देता है। अर्थात् उससे परे हो जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **दुर्दर्शम्-**दुर् + √दृश् + खल् (अ)।
- **गूढम्-**√गुह् + क्त, तम् ।
- **गुहाहितम्-** गुहायाम् आहितः (आ√धा + क्त-'दधातेर्हि' सूत्र से धा के स्थान में 'हि' 'आदेश') गुहाहितः, तम्।
- **गह्वरेष्ठम्-** गह्वरे तिष्ठतीति गह्वरेष्ठः (गह् वरे + √स्था + कः कर्तरि- अलुक् तत्पु.) तम्।
- **पुराणम्-**पुरा + ट्यु (अन)। र के कारण न को 'रषाभ्यां नो णः समानपदे'से ण हो गया।
- **अध्यात्मयोगाधिगमेन-** आत्मनीति अध्यात्मम् (अधि + आत्मन् + टच्)।

एतच्छ्रुत्वा संपरिगृह्य मर्त्यः
प्रवृह्य धर्म्यमणुमेतमाप्य।
स मोदते मोदनीयँ हि लब्ध्वा
विवृतँ सद्म नचिकेतसं मन्ये ॥13॥

शब्दार्थ- मर्त्यः=मनुष्य (जब); **एतत्** =इस; **धर्म्यम्**=धर्ममय (उपदेश)-को; **श्रुत्वा**=सुनकर; **सम्परिगृह्य**=भलीभांति ग्रहण करके; **प्रवृह्य**=(और) उसपर विवेकपूर्वक विचार करके; **एतम्** = इस; **अणुम्** = सूक्ष्म आत्मतत्त्व को; **आप्य**=जानकर (अनुभव कर लेता है, तब); **सः**= वह; **मोदनीयम्** = आनन्दस्वरूप परब्रह्म पुरुषोत्तम को; **लब्ध्वा**=पाकर; **मोदते हि**=आनन्द में ही मग्न हो जाता है; **नचिकेतसम्** =तुम नचिकेता के लिये; **विवृतम् सद्म मन्ये**=(मैं) परमधाम का द्वार खुला हुआ मानता हूँ ।। 13।।

अर्थ - मनुष्य इस आत्मतत्त्व को सुनकर और (आचार्य के अनुग्रह से) भली-भाँति समझकर (शरीर-इन्द्रियादि के) धर्मों से युक्त (मै मोटा हूँ, मैं दुर्बल हूँ, मैं देखता हूँ, सुनता हूँ इत्यादि) रूप में ज्ञात होने वाले इसको उनसे पृथक् करके सूक्ष्म (केवली) तथा

आनन्द रूप में प्राप्त करने से आनन्दित हो जाता है। तुझ नचिकेता के लिये ब्रह्म-लोक खुला है, ऐसा मैं समझता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सम्परिगृह्य-**सम् + परि + √ग्रह् + क्त्वा- ल्यप्।
- **प्रवृह्य-**प्र+ √वृहू उद्यमने (तुदादि.) + क्त्वा- ल्यप् ।
- **धर्म्यम्-**धर्म + यत् । **आप्य-**आ + √आप्ऌ +क्त्वा ल्यप्। कृत्यल्युटो बहुलम् से यहाँ अनीयर् ।
- **मोदनीयम्-**√मुद् हर्षे (भ्वादि.) + अनीयर् कर्ता-अर्थ में जुड़ा है जिससे 'मोदनीय' का अर्थ इस स्थल में 'मोदयिता।' आनन्द-स्वरूप है।
- **विवृतम् -**वि +√वृञ् (तुदादि.) + क्त।
- **सद्म-** नकारान्त नपुं. शब्द है। प्रथमा तथा द्वितीया एकवचन में 'सद्म' रूप बनता है। यहाँ द्वि.एक. में प्रयुक्त है और 'मन्ये' क्रिया का कर्म है।

अन्यत्र धर्मादन्यत्राधर्माद्
अन्यत्रास्मात्कृताकृतात्।
अन्यत्र भूताच्च भव्याच्च
यत् तत्पश्यसि तद्वद॥14॥

शब्दार्थ- यत् तत्=जिस उस परमेश्वरको; **धर्मात् अन्यत्र**=धर्मसे अतीत; **अधर्मात् अन्यत्र**=अधर्म से भी अतीत; **च**=तथा; **अस्मात् कृताकृतात्**= इस कार्य और कारणरूप सम्पूर्ण जगत् से भी; **अन्यत्र**=भिन्न; **च**=और; **भूतात् भव्यात्**=भूत,वर्तमान एवं भविष्यत् -तीनों कालों से तथा इनसे सम्बन्धित पदार्थों से भी; **अन्यत्र**=पृथक्; **पश्यसि**=(आप) जानते हैं; **तत्**=उसे; **वद**=बतलाइये ।। 14।।

अर्थ - जो धर्म से पृथक्, अधर्म से पृथक् तथा इस कार्यकारण रूप प्रपञ्च से भी पृथक् है, और जो भूत एवं भविष्य (वस्तुओं) से भी भिन्न है, ऐसा आप जिसे देखते हैं उसी का मुझसे कथन करें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **कृताकृतात्-** कृतं च अकृतं च कृताकृतम् (समाहार द्वन्द्व), तस्मात्। कृत अर्थात् कार्य, एवं अकृत अर्थात् कारण।
- **भूतात् -** √भू + क्त, पं.एक.।
- **भव्यात्-** √भू + यत्, पं.एक.। भू के उकार को गुण होकर अव् हो गया।

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति
तपाँ सि सर्वाणि च यद्वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते
पदँ संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥15॥

शब्दार्थ- सर्वे वेदाः=सम्पूर्ण वेद; **यत् पदम्** = जिस परम पद का; **आमनन्ति**=बारम्बार प्रतिपादन करते हैं; **च**=और; **सर्वाणि तपांसि**=सम्पूर्ण तप; **यत्** =जिस पद का; **वदन्ति**=लक्ष्य कराते हैं अर्थात् वे जिसके साधन हैं; **यत् इच्छन्तः**=जिसको चाहने वाले साधकगण; **ब्रह्मचर्यम्** =ब्रह्मचर्य का; **चरन्ति**=पालन करते हैं; **तत् पदम्** =वह पद; **ते**=तुम्हें; (मैं) **संग्रहेण**=संक्षेप से; **ब्रवीमि**=बतलाता हूँ; (वह है) **ओम्** =ओम् ; **इति**=ऐसा; **एतत्** =यह (एक अक्षर) ।। 15।।

अर्थ - सारे वेद जिस पद का बार-बार वर्णन करते हैं, समस्त तपों को जिसकी प्राप्ति के लिये (साधन) बताते हैं, जिसकी इच्छा से (मुमुक्षु) ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं, उस पद को मैं तुमसे संक्षेप में कहता हूँ। ऊँ-यही वह पद है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **आमनन्ति-**आ +√ म्ना अभ्यासे (भ्वादि.) + लट् प्रथम.बहु.। इसके रूप मनति, मनतः, मनन्ति बनते हैं।
- **संग्रहेण-** सम् + ग्रह + अप्, तृ.एक.

एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म एतद्ध्येवाक्षरं परम् ।
एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वां यो यदिच्छति तस्य तत् ॥16॥

शब्दार्थ- एतत् =यह; **अक्षरम् एव हि**=अक्षर ही तो; **ब्रह्म**=ब्रह्म हैं; (और); **एतत्** =यह; **अक्षरम् एव हि**=अक्षर ही; **परम्** =परब्रह्म है; **हि**=इसलिये; **एतत् एव**=इसी; **अक्षरम्** =अक्षर को; **ज्ञात्वा**=जानकर; **यः**=जो; **यत्** =जिसको; **इच्छति**=चाहता है; **तस्य**=उसको; **तत्** =वही (मिल जाता है) ।। 16।।

अर्थ - यह अक्षर ही (अपर) ब्रह्म है, यह अक्षर ही पर (ब्रह्म) है। इस अक्षर को ही जानकर जो जिसकी इच्छा करता है, वही उसका हो जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अक्षरम्-** क्षरतीति क्षरम् (√क्षर् + अच् कर्तरि)। न क्षरम् इति अक्षरम् (नञ् तत्पु.)।
- **ब्रह्म-** √बृह् + मनिन्।

एतदालम्बनँ श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् ।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥17॥

शब्दार्थ- एतत् =यही; **श्रेष्ठम्**=अत्युत्तम; **आलम्बनम्**=आलम्बन है; **एतत्** =यही (सबका); **परम आलम्बनम्**=अन्तिम आश्रय है; **एतत्** =इस; **आलम्बनम्** =आलम्बन को; **ज्ञात्वा**=भलीभाँति जानकर (साधक); **ब्रह्मलोके**=ब्रह्मलोक में; **महीयते**=महिमान्वित होता है ।। 17।।

अर्थ - यह ओम् ही श्रेष्ठ आलम्बन है, यही पर आलम्बन है। इस आलम्बन को जानकर पुरुष ब्रह्मलोक में पूजित होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **श्रेष्ठम्-** प्रशस्य + इष्ठन्।
- **आलम्बनम्-** आ + √लम्ब् + ल्युट्-अन।
- **महीयते-**√महीङ् + यक्, लट् प्रथम.एक.। 'कण्ड्वादिभ्यो यक्' 3।1।27 से कण्ड्वादिगण की महीङ् धातु से स्वार्थ में यक् प्रत्यय लगा है।

न जायते म्रियते वा विपश्चि-
न्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥18॥

शब्दार्थ- विपश्चित्=नित्य ज्ञानस्वरूप आत्मा; **न जायते**=न तो जन्मता है; **वा न म्रियते**=और न मरता ही है; **अयम् न**=यह न तो स्वयं; **कुतश्चित्** =किसी से हुआ है; **[न=न]** (इससे); **कश्चित्** =कोई भी; **बभूव**=हुआ है अर्थात् यह न तो किसी का कार्य है और न कारण ही है; **अयम्** =यह; **अजः**=अजन्मा; **नित्यः**=नित्य; **शाश्वतः**=सदा एकरस रहने वाला (और); **पुराणः**=पुरातन है अर्थात् क्षय और वृद्धि से रहित है; **शरीरे हन्यमाने**=शरीर के नाश किये जाने पर भी (इसका); **न हन्यते**=नाश नहीं किया जा सकता ।। 18।।

अर्थ - मेधावी (नित्य चैतन्य-स्वरूप) यह आत्मा न उत्पन्न होता है, न मरता है न तो किसी (अन्य कारण) से उत्पन्न हुआ है, और न स्वयं ही कुछ अन्य वस्तु (कार्य) हुआ है। अजन्मा, नित्य, क्षय-रहित तथा पुरातन यह आत्मा शरीर के मारे जाने पर (भी) नहीं मारा जाता, मृत्यु को नहीं प्राप्त होता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **विपश्चित्-** वि + प्र + √चित् + क्विप् (विप्रकृष्टं चेततीति)। 'पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्' सूत्र के बल से प्र को पश् आदेश हो जाता है।
- **अजः-** नञ्√जन् + डः कर्तरि (न जायते इति अजः उपपदसमास)।
- **हन्यमाने-**√हन् + यक् कर्मणि + शानच्,स.एक.।
- **हन्यते-**√ हन् + यक् कर्मणि + लट्, प्रथम.एक।

हन्ता चेन्मन्यते हन्तुँ हतश्चेन्मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायँ हन्ति न हन्यते॥19॥

शब्दार्थ- चेत्= यदि कोई; **हन्ता**=मारनेवाला व्यक्ति; **हन्तुम्**=अपने को मारने में समर्थ; **मन्यते**=मानता है (और); **चेत्** =यदि; **हतः**=(कोई) मारा जाने वाला व्यक्ति; **हतम्** =अपने को मारा गया; **मन्यते**=समझता है (तो); **तौ उभौ**=वे दोनों ही; **न विजानीतः**=(आत्मस्वरूप को) नहीं जानते (क्योंकि); **अयम्** =यह आत्मा; **न हन्ति**=न तो (किसी को) मारता है (और); **न हन्यते**=न मारा ही जाता है ।। 19।।

अर्थ - यदि मारने वाला आत्मा को मारने के लिये सोचता है, और मारा जाने वाला उसे मारा हुआ समझता है, तो वे दोनों ही उसे नहीं जानते। वस्तुतः न यह मारता है और न मारा जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **विजानीतः-**वि + √ज्ञा + लट्, प्रथम.द्वि.।

अणोरणीयान्महतो महीया-
नात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको
धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः ॥20॥

शब्दार्थ- अस्य=इस; **जन्तोः**=जीवात्मा के; **गुहायाम्**=हृदयरूप गुफा में; **निहितः**=रहने वाला; **आत्मा**=परमात्मा; **अणोः अणीयान्** =सूक्ष्म से अतिसूक्ष्म (और); **महतः महीयान्** =महान् से भी महान है; **आत्मनः तम् महिमानम्** = परमात्मा की उस महिमा को; **अक्रतुः**=कामनारहित (और); **वीतशोकः**=चिन्तारहित (कोई विरला साधक); **धातुप्रसादात्** =सर्वाधार परब्रह्म परमेश्वर की कृपा से ही; **पश्यति**=देख पाता है ।। 20।।

अर्थ - यह अणु से भी अणुतर और महान् से भी महत्तर आत्मा प्राणी (पुरुष) की हृदय-रूप गुहा में स्थित है। निष्काम पुरुष इन्द्रियों की निर्मलता से आत्मा की उस महिमा को देखता है और शोक-रहित हो जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अणीयान्-**अणु + ईयसुन्, पुं प्रथमा.एक.।
- **महीयान्-**महत् + ईयसुन्। इसमें 'टि'-अत् -का लोप होकर मह् + ईयस् = महीयस् शब्द बनता है।
- **अक्रतुः-** अविद्यमानाः क्रतवः (कामाः) यस्य सः (बहु.)।
- **वीतशोकः-**वीतः (वि + √इण् गतौ क्त) शोकः यस्य सः बहु. + **धातुप्रसादात्-**धातूनां प्रसादः प्र + √सद् + घञ् षष्ठीतत्पु.), तस्मात्।
- **महिमानम्-**महत् + इमनिच्, पुं.द्वि.एक.। यहाँ भी 'टि'-अत्-का लोप होने से 'महिमन्' प्रातिपदिक निष्पन्न होता है।

आसीनो दूरं व्रजति शयानो याति सर्वतः।
कस्तं मदामदं देवं मदन्यो ज्ञातुमर्हति ॥21॥

शब्दार्थ- आसीनः=(वह परमेश्वर) बैठा हुआ ही; **दूरम् व्रजति**=दूर पहुँच जाता है; **शयानः**=सोता हुआ (भी); **सर्वतः याति**= सब ओर चलता रहता है; **तम् मदामदम् देवम्** =उस ऐश्वर्य के मद से

उन्मत्त न होने वाले देवको; **मदन्यः कः**=मुझसे भिन्न दूसरा कौन; **ज्ञातुम्** = जानने में; **अर्हति**=समर्थ है ।। 21।।

अर्थ - यह स्थित हुआ (भी) दूर तक जाता है, शयन करता हुआ भी सर्वत्र पहुँचता है। हर्ष से युक्त (भी) और रहित (भी) उस आत्मदेव को मेरे सिवा और कौन जान सकता है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी- आसीनः- आस् + शानच्। 'ईदास' 6।2।173 सूत्र से आस् के आगे जुड़ने वाले शानच् के 'आ' के स्थान में 'ई' हो जाता है। **शयानः-**√ शी + शानच्। 'ई' को गुण होकर 'ए' होने पर,आगे स्थित 'आ' के कारण 'ए' को अय् आदेश होकर श् + अय् + आन= शयान शब्द बनता है। **मदामदम्-** मदश्च अमदश्चेति मदामदः (विशेषणोभयपद कर्मधारय), तम् । **मदन्यः-** मत् (अस्मत् शब्द का पं.एक.का रूप) अन्यः मदन्यः (अस्मत्-मत्+ अन्यः), पं. तत्पु.। अस्मत् को समास में एकवचन में 'मत्' आदेश हो जाता है।

अशरीरँ शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम् ।
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति ॥22॥

शब्दार्थ- अनवस्थेषु=(जो) स्थिर न रहनेवाले (विनाशशील); **शरीरेषु**=शरीरों में; **अशरीरम्** =शरीररहित (एवं); **अवस्थितम्** =अविचलभाव से स्थित है; **महान्तम्** =(उस) महान् ; **विभुम्** =सर्वव्यापी; **आत्मानम्** =परमात्माको; **मत्वा**=जानकर; **धीरः**=बुद्धिमान् महापुरुष; **न शोचति**=(कभी किसी भी कारण से) शोक नहीं करता ।। 22।।

अर्थ - बुद्धिमान् पुरुष समस्त शरीरों में अशरीर अर्थात् शरीर-रहित, अस्थायियों अर्थात् अनित्यों में नित्य रूप से स्थित, महान् तथा सर्वव्यापक आत्मा को जानकर शोक नहीं करता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अशरीरम्-**अविद्यमानं शरीरं यस्य सः (बहु.), तम्।
- **अनवस्थेषु-** अविद्यमाना अवस्था अवस्थितिः येषां ते (बहु.), तेषु।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो
न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्य-
स्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूँ स्वाम् ॥23॥

शब्दार्थ- अयम् आत्मा=यह परब्रह्म परमात्मा; **न**=न तो; **प्रवचनेन**=प्रवचन से; **न मेधया**=न बुद्धि से (और); **न बहुना श्रुतेन**=न बहुत सुनने से ही; **लभ्यः**=प्राप्त हो सकता है; **यम्** =जिसको; **एषः**=यह; **वृणुते**=स्वीकार कर लेता है; **तेन एव लभ्यः**=उसके द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है (क्योंकि); **एषः आत्मा**=यह परमात्मा; **तस्य**=उसके लिये; **स्वाम् तनूम्** =अपने यथार्थ स्वरूप को; **विवृणुते**=प्रकट कर देता है ।।23।।

अर्थ - यह आत्मा न तो प्रवचन से, न मेधा या धारणा-शक्ति से, और न बहुत श्रवण से ही प्राप्त होने योग्य है। जिस साधक को यह आत्मा वरण कर लेता है, उसी के द्वारा (वह) प्राप्त होने योग्य है। उसी साधक के प्रति यह आत्मा अपने स्वरूप को प्रकट कर देता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **प्रवचनेन-**प्र + √वच् + ल्युट् अन, तेन
- **विवृणुते-** वि + वृज् (स्वादि.) + लट् , प्र. एक.

नाविरतो दुश्चरितात् नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् ॥24॥

शब्दार्थ- प्रज्ञानेन=सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा; **अपि**=भी; **एनम्** =इस परमात्मा को; **न दुश्चरितात् अविरतः आप्नुयात्** =न तो वह मनुष्य प्राप्त कर सकता है, जो बुरे आचरणों से निवृत्त नहीं हुआ है; **न अशान्तः**=न वहा प्राप्त कर सकता है,जो अशान्त है; **न असमाहितः**=न वह कि जिसके मन, इन्द्रियाँ संयत नहीं हैं; **वा**=और; **न अशान्तमानसः[आप्नुयात्]**=न वही प्राप्त करता है, जिसका मन शान्त नहीं है।। 24।।

अर्थ - जो पाप-कर्मों से निवृत्त नहीं हुआ है, जिसकी इन्द्रियाँ शान्त नहीं है, जो समाहित नहीं है, और जिसका चित्त शान्त नहीं है, वह आत्मा को केवल (शुष्क) ज्ञान से प्राप्त नहीं कर सकता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अविरतः-**न विरतः (वि +√ रम् + क्त) इति, नञ् तत्पु.।
- **दुश्चरितात्-**दुष्टं चरितम् (√चर् + क्त) इति दुश्चरितम् (दुस्+ चरितम्) प्रादितत्पु., तस्मात् ।
- **अशान्तः-** न शान्तः (√शम् + क्त) इति, नञ् तत्पु.।
- **असमाहितः-**न समाहितः (सम् + आ + √धा + क्त) इति, नञ् तत्पु.।
- **अशान्तमानसः-** अशान्तं मानसं (मनस् + अण् स्वार्थे) यस्य सः (बहुव्रीहिः)।
- **प्रज्ञानेन-** प्र + √ज्ञा + ल्युट्, तेन।

यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनः।
मृत्युर्यस्योपसेचनं क इत्था वेद यत्र सः॥25॥

शब्दार्थ- यस्य=(संहारकाल में) जिस परमेश्वर के; **ब्रह्म च क्षत्रम् च उभे**=ब्राह्मण और क्षत्रिय-ये दोनों ही अर्थात् सम्पूर्ण प्राणिमात्र; **ओदनः**=भोजन; **भवतः**=बन जाते हैं (तथा); **मृत्युः यस्य**=सबका संहार करने वाली मृत्यु (भी) जिसका; **उपसेचनम्**

=उपसेचन (भोज्य वस्तु के साथ लगाकर खाने का व्यञ्जन, तरकारी आदि);**[भवति]** =बन जाता है; **सः यत्र**=वह परमेश्वर जहाँ (और); **इत्था**=जैसा है, यह ठीक-ठीक; **कः वेद**=कौन जानता है ।। 25।।

अर्थ - जिस आत्मा के ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों भात (खाद्य) हैं तथा मृत्यु जिसका शाकादि है, वह जहाँ है उसे कौन (अज्ञ पुरुष) इस तरह (अर्थात् उपर्युक्त साधन-सम्पन्न अधिकारी की तरह) जान सकता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **ब्रह्म-** ब्राह्मण।
- **क्षत्रम्-** क्षत्रिय।
- **ओदनः-** √उन्दी क्लेदने (रुधादि.)+ युच् - अन (अक्षरार्थ- जो पानी में डाल कर पकाया जाय)।
- **उपसेचनम्-**उप + √सिच् + ल्युट् - अन।
- **इत्था-** इत्थम् के अर्थ में प्रयुक्त अव्यय पद।

तृतीया वल्ली

ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके
गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे ।
छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति
पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः ॥1॥

शब्दार्थ- सुकृतस्य लोके=शुभ कर्मों के फलस्वरूप मनुष्य-शरीर में; **परमे परार्धे**=परब्रह्म के उत्तम निवास-स्थान (हृदय-आकाश)-में; **गुहाम् प्रविष्टौ**=बुद्धिरूप गुफा में छिपे हुए; **ऋतम् पिबन्तौ**=सत्य का पान करने वाले (दो हैं); **छायातपौ**=(वे) छाया और धूप की भाँति परस्पर भिन्न हैं; (यह बात) **ब्रह्मविदः**=ब्रह्मवेत्ता ज्ञानी महापुरुष; **वदन्ति**=कहते हैं; **च ये**=तथा जो; **त्रिणाचिकेताः**=तीन बार नाचिकेत-अग्निका चयन कर लेने वाले; (और) **पञ्चाग्नयः**=पञ्चाग्निसम्पन्न गृहस्थ हैं; **[ते वदन्ति]** =वे भी यही बात कहते हैं ।। 1।।

अर्थ - ब्रह्मवेत्ता एवं नाचिकेत अग्नि का तीन बार चयन करने वाले पञ्चाग्नि के उपासंक (गृहस्थ), दोनों ही कहते हैं कि शरीर में बुद्धि रूपी गुहा के भीतर प्रकृष्ट ब्रह्म-स्थान में प्रविष्ट होकर स्वकृत कर्म का फल भोगने वाले छाया और धूप (के समान क्रमशः मलिन एवं शुभ्र) दो तत्त्व हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **गुहां प्रविष्टौ-**बुद्धि या हृदय रूपी गुहा में प्रविष्ट।
- **परार्धे-** परस्य (ब्रह्मणः) अर्धं (स्थानम्) परार्धम् (ष.तत्पु.), तस्मिन्।
- **पिबन्तौ-** पा + शतृ, पुं.प्र.द्विवचन। इसका तात्पर्य है, भोगते हुये।
- **लोके-**√ लोक + घञ् अधिकरणे, लोक्यन्ते साक्षात्क्रियन्ते कर्मफलान्यस्मिन्निति लोकः शरीरम्, तस्मिन्।
- **ब्रह्मविदः-** ब्रह्मन् + √विद् + क्विप् कर्तरि, पुं.प्र.बहु.।
- **पञ्चाग्नयः-**पञ्च अग्नयः उपास्या येषां ते (बहुव्रीहि.)। यह शब्द कर्ममार्गी गृहस्थों के लिये प्रयुक्त है। इन्ही के लिये 'त्रिणाचिकेताः' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है।
- **छायातपौ-**छाया च आतपश्चेति (इतरेतर द्वन्द्व)।

यः सेतुरीजानानामक्षरं ब्रह्म यत्परम् ।
अभयं तितीर्षतां पारं नाचिकेतँ शकेमहि ॥2॥

शब्दार्थ- ईजानानाम्=यज्ञ करने वालों के लिये; **यः सेतु**=जो दुःख समुद्र से पार पहुँचा देने योग्य सेतु है;**[तम्] नाचिकेतम्** =उस नाचिकेत- अग्निको (और); **पारम् तितीर्षताम्** =संसार-समुद्र से पार होने की इच्छा वालों के लिये; **यत् अभयम्** =जो भयरहित पद है;**[तत्] अक्षरम्**=उस अविनाशी; **परम् ब्रह्म**=पर ब्रह्म पुरुषोत्तम को; **शकेमहि**=जानने और प्राप्त करने में भी हम समर्थ हों ।। 2।।

अर्थ - जो यज्ञ करने वालों का सेतु है (अर्थात् दुःख के सागर को पार करने के लिये सेतु के समान है), उस नाचिकेत अग्नि को, एवं जो (संसार-सागर को तैर जाने के इच्छुकों के लिये भय-शून्य किनारा है, उस अविनाशी परब्रह्म को जानने में हम समर्थ हों।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सेतुः-** पुल। नदी, जलाशय या समुद्र के एक पार से दूसरे पार जाने के साधन को सेतु कहते हैं। यहाँ नाचिकेत अग्नि को यज्ञ करने वालों का सेतु कहा है।
- **ईजानानाम्-**√ यज् + (लिङर्थे) कानच्, पुं.ष.बहु.।
- **अक्षरम्-**क्षरतीति क्षरम् विनाशि। नक्षरम् इति अक्षरम् (नञ् तत्पु.)
- **अभयम्-**अविद्यमानं भयं यस्मिन् तत् (नञ् बहुव्रीहि.)
- **तितीर्षताम्-**√तृ + सन् + शतृ, पुं.ष.बहु.।
- **शकेमहि-**√ शक् + विधिलिङ्, उ. पु. बहु.।

आत्मानँ रथिनं विद्धि शरीरँ रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥3॥

शब्दार्थ- आत्मानम्=(हे नचिकेता ! तुम) जीवात्मा को तो; **रथिनम्**=रथ का स्वामी (उसमें बैठकर चलने वाला); **विद्धि**=समझो; **तु**=और; **शरीरम् एव**=शरीर को ही; **रथम्**=रथ (समझो); **तु बुद्धिम्** =तथा बुद्धि को; **सारथिम्**=सारथि (रथ को चलाने वाला); **विद्धि**=समझो; **च मनः एव**=और मन को ही; **प्रग्रहम्**=लगाम (समझो) ।। 3।।

अर्थ - आत्मा को रथी, समझो, शरीर को ही रथ (समझो), बुद्धि को सारथि समझो, तथा मन को ही लगाम (समझो)।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **रथी-** रथ + इनिः (रथः अस्यास्तीति रथी रथस्वामीत्यर्थः)
- **बुद्धिम्-**बुध्यतेऽनयेति (√बुध् + क्तिन् करणे)। बुद्धिः, ताम्।

इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँ ्स्तेषु गोचरान् ।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्ते त्याहुर्मनीषिणः॥4॥

शब्दार्थ- मनीषिणः=ज्ञानीजन (इस रूपक में); **इन्द्रियाणि**=इन्द्रियों को; **हयान्** =घोड़े; **आहुः**=बतलाते हैं (और); **विषयान्** =विषयों को; **तेषु गोचरान्** =उन घोड़ों के विचरने का मार्ग (बतलाते हैं); **आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्** =(तथा) शरीर,इन्द्रिय और मन- इन सबके साथ रहने वाला जीवात्मा ही; **भोक्ता**=भोक्ता है; **इति आहुः**=यों कहते हैं ।। 4।।

अर्थ - मनीषी इन्द्रियों को घोड़े बतलाते हैं, उन इन्द्रियों के घोड़े होने पर उनके (शब्द-स्पर्शादि) विषयों को उनके मार्ग बतलाते हैं, और शरीर इन्द्रिय एवं मन से युक्त आत्मा को भोक्ता-जीव कहते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **मनीषिणः-** मनीषा + इनिः, पुं.प्र.बहु.।
- **गोचरान्-**गच्छन्तीति गावः (गम्-डो) पशव इत्यर्थः, तेषां चराः (√चर् + घञ्) गोचराः,तान्
- **आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्-**आत्मा च इन्द्रियाणि च मनश्चेति आत्मेन्द्रियमनांसि (द्वन्द्व) तैर्युक्तः (तृ. तत्पु.), तम्। यह पद तृतीयमन्त्रोक्त 'आत्मानम्' का विशेषण है।
- **भोक्ता-**भुज + तृच् कर्तरि, पुं. प्रथमा एक.।

यस्त्वविज्ञानवान्भवत्ययुक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वा इव सारथेः ॥5॥

शब्दार्थ- यः सदा=जो सदा; **अविज्ञानवान्**=विवेकहीन बुद्धिवाला; **तु**=और; **अयुक्तेन**=अवशीभूत (चञ्चल); **मनसा**=मन से (युक्त); **भवति**=रहता है; **तस्य**=उसकी; **इन्द्रियाणि**=इन्द्रियाँ; **सारथेः**=असावधान सारथि के; **दुष्टाश्वाः इव**=दुष्ट घोड़ों की भाँति; **अवश्यानि**=वश में न रहने वाली; **[भवन्ति]** = हो जाती हैं ।। 5।।

अर्थ - जो (बुद्धि-सारथी) सदा अविवेकी एवं असमाहित मन से युक्त रहता है, उसके वश में इन्द्रियाँ उसी प्रकार नहीं रहती जैसे इतर सारथी के वश में दुष्ट घोड़े।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **यः-** यह सर्वनाम बुद्धि -सारथी के लिये आया है।
- **अविज्ञानवान्** -विज्ञानं विवेकः तद्वान् (विज्ञान + मतुप्) विवेकीत्यर्थः, न विज्ञानवान् इत्यविज्ञानवान् अविवेकी।
- **युक्तेन-** √युज् समाधौ + क्त, तृ.एक. एकाग्रेण समाहितेनेत्यर्थः।
- **मनसा-** 'इत्थम्भूत-लक्षणे' सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई है। 'मनसा उपलक्षितः युक्तः' यह अर्थ हुआ।

यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः॥6॥

शब्दार्थ- तु यः सदा=परंतु जो सदा; **विज्ञानवान्** =विवेकयुक्त बुद्धिवाला (और); **युक्तेन**=वश में किये हुए; **मनसा**=मन से सम्पन्न; **भवति**=रहता है; **तस्य**=उसकी; **इन्द्रियाणि**=इन्द्रियाँ; **सारथेः** =सावधान सारथि के; **सदश्वाः इव**=अच्छे घोड़ों की भाँति; **वश्यानि**=वश में; = **[भवन्ति]** रहती हैं ।। 6।।

अर्थ - किन्तु जो (बुद्धि-सारथी) सदा विवेकी एवं समाहित (एकाग्र), मन से युक्त रहता है, उसके वश में इन्द्रियाँ उसी प्रकार रहती है जैसे इतर सारथी के वश में अच्छे घोड़े।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **सदश्वाः-**सन्तः अश्वा इति, विशेषणपूर्वपदकर्मधारय.। (सत् √=अस् + शतृ)।

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्यमनस्कः सदाऽशुचिः।
न स तत्पदमाप्नोति स ँसारं चाधिगच्छति॥7॥

शब्दार्थ- यः तु सदा=जो कोई सदा; **अविज्ञानवान्**=विवेकहीन बुद्धिवाला; **अमनस्कः**=असंयतचित्त (और); **अशुचिः**=अपवित्र; **भवति**=रहता है; **सः तत्पदम्** =वह उस परमपद को; **न आप्नोति**=नहीं पा सकता; **च**=और भी; **संसारम् अधिगच्छति**=बार-बार जन्म-मृत्युरूप संसार-चक्र में ही भटकता रहता है ।। 7।।

अर्थ - जो सदा विवेक-रहित, अयुक्त या असावधान मन वाला तथा अपवित्र रहता है, वह उस परम पद को नहीं प्राप्त करता अपितु संसार-आवागमन या जन्म-मृत्यु-परम्परा को प्राप्त करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अमनस्कः-**अविद्यमानं मनो यस्य सः (नञ् बहुव्रीहि), समासान्त कप् प्रत्यय।
- **अशुचिः-** न शुचिः (नञ् तत्पु.)।
- **संसारम्-** सम् + √सृ + घञ् भावे, पुं.द्वि.एक.।

यस्तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः।
स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद् भूयो न जायते ॥8॥

शब्दार्थ- तु यः सदा=परंतु जो सदा; **विज्ञानवान्**=विवेकशील बुद्धि से युक्त; **समनस्कः**=संयतचित्त (और); **शुचिः**=पवित्र; **भवति**=रहता है; **सः तु**= वह तो; **तत्पदम्**=उस परमपद को; **आप्नोति**=प्राप्त कर लेता है; **यस्मात् भूयः**= जहाँ से (लौटकर) पुनः; **न जायते**=जन्म नहीं लेता ।। 8।।

अर्थ - जो सदा विवेक-युक्त, युक्त या सावधान मन वाला तथा पवित्र रहता है, वह उस परम पद को प्राप्त करता है जहाँ से फिर नहीं उत्पन्न होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **समनस्कः-** मनसा सहेति समनस्कः (सह- स + मनस् + कप् प्रत्यय समासान्त) बहुव्रीहि समास।

विज्ञानसारथिर्यस्तु मनःप्रग्रहवान्नरः।
सोऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोः परमं पदम् ॥9॥

शब्दार्थ- यः नरः=जो (कोई) मनुष्य; **विज्ञानसारथिः तु**=विवेकशील बुद्धिरूप सारथि से सम्पन्न (और); **मनः प्रग्रहवान्**=मनरूप लगाम को वश में रखने वाला है; **सः**=वह; **अध्वनः**=संसार मार्ग के; **पारम्** =पार पहुँचकर; **विष्णोः**=सर्वव्यापी परब्रह्म पुरुषोत्तमभगवान् के; **तत् परमम् पदम्** =उस सुप्रसिद्ध परमपदको; **आप्नोति**= प्राप्त हो जाता है ।। 9।।

अर्थ - जो विवेकयुक्त बुद्धिरूपी सारथि से युक्त और मनरूपी लगाम (से इन्द्रिय रूपी घोड़ों) को वश में रखने वाला होता है, वह मनुष्य संसार मार्ग के पार में स्थित परमात्मा के उस परम पद को प्राप्त कर लेता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **विज्ञानसारथिः-** विज्ञानयुक्तः सारथिरिति (शाकपार्थिवादिसमासः)।
- **मनःप्रग्रहवान्-**मन एव प्रग्रह इति मनः प्रग्रहः (अवधारणपूर्वपदकर्मधा.), तद्वान् (मनःप्रग्रह + मतुप्, पुं.प्र.एक.)
- **अध्वनः-**अध्वन् + ङस् (षष्ठी एक.) संसार मार्गस्येत्यर्थः। तत् प्रसिद्धम् इत्यर्थः।

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनस्तु पराबुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान्परः॥10॥

शब्दार्थ- हि इन्द्रियेभ्यः=क्योंकि इन्द्रियों से; **अर्थाः**=शब्दादि विषय; **पराः**=बलवान् हैं; **च**=और; **अर्थेभ्यः**= शब्दादि विषयों से; **मनः**=मन; **परम्** =पर (प्रबल) है; **तु मनसः**=और मन से भी; **बुद्धिः**=बुद्धि; **परा**=पर (बलवती) है; **बुद्धेः**= (तथा) बुद्धि से; **महान् आत्मा**=महान् आत्मा (उन सबका स्वामी होने के कारण); **परः**=अत्यन्त श्रेष्ठ और बलवान् है ।। 10।।

अर्थ- इन्द्रियों से उनके शब्द-रूप-रसादि विषय सूक्ष्म या श्रेष्ठ है, विषयों से मन सूक्ष्म या श्रेष्ठ है, मन से बुद्धि सूक्ष्म या श्रेष्ठ है, बुद्धि से महान् आत्मा अर्थात् हिरण्यगर्भ सूक्ष्म या श्रेष्ठ है।।10।।

व्याकरणात्मक टिप्पणी- इन्द्रियम् -इन्द्र + घ प्रत्यय (इय)। अर्थात् आत्मा के लिए होने से श्रवणादि की 'इन्द्रिय' संज्ञा है।

महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः।
पुरुषान्न परं किंचित्सा काष्ठा सा परा गतिः॥11॥

शब्दार्थ- महतः=उस जीवात्मा से; **परम्**=बलवती है; **अव्यक्तम्** =भगवान् की अव्यक्त मायाशक्ति; **अव्यक्तात्** =अव्यक्त माया से भी; **परः**= श्रेष्ठ है; **पुरुषः**= परमपुरुष (स्वयं परमेश्वर); **पुरुषात्** =परमपुरुष भगवान् से; **परम्**=श्रेष्ठ और बलवान् **किञ्चित्** =कुछ भी; **न**=नहीं है; **सा काष्ठा**=वही सबकी परम अवधि (और); **सा परा गतिः**= वही परम गति है ।। 11।।

अर्थ - हिरण्यगर्भ से अव्यक्त सूक्ष्म या श्रेष्ठ है, अव्यक्त से पुरुष सूक्ष्म या श्रेष्ठ है, पुरुष से सूक्ष्म या श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। वही (सूक्ष्मता की) चरम सीमा है, वही अन्तिम गति-गन्तव्य है।

एष सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः॥12॥

शब्दार्थ- एषः आत्मा=यह सबका आत्मरूप परमपुरुष; **सर्वेषु भूतेषु**=समस्त प्राणियों में रहता हुआ भी; **गूढः**= माया के परदे में छिपा रहने के कारण; **न प्रकाशते**=सबके प्रत्यक्ष नहीं होता; **तु सूक्ष्मदर्शिभिः**=केवल सूक्ष्मतत्त्वों को समझने वाले पुरुषों द्वारा ही ; **सूक्ष्मया अग्र्यया बुद्ध्या**=अति सूक्ष्म तीक्ष्ण बुद्धि से; **दृश्यते** =देखा जाता है ।।12।।

अर्थ - सभी प्राणियों में छिपा हुआ यह आत्मा प्रकाशित नहीं होता (अपितु) सूक्ष्मदर्शी (विद्वानों) द्वारा कुशाग्र और सूक्ष्म बुद्धि से ही देखा जाता है।

इन्द्रियों से उनके शब्द-रूप-रसादि विषय सूक्ष्म या श्रेष्ठ है, विषयों से मन सूक्ष्म या श्रेष्ठ है, मन से बुद्धि सूक्ष्म या श्रेष्ठ है, बुद्धि से महान् आत्मा अर्थात् हिरण्यगर्भ सूक्ष्म या श्रेष्ठ है।।10।।

व्याकरणात्मक टिप्पणी- गूढोत्मा यह वैदिक या आर्ष प्रयोग है, पाणिनि-मत से ठीक रूप नहीं है। पाणिनि-कृत व्याकरण में 'गूढः आत्मा' का सन्धि-कृत रूप 'गूढ आत्मा' होगा। **अग्र्यया-** अग्रमिव इति अग्रवा (तीक्ष्णेत्यर्थः)= अग्र+ यत् + टाप् स्त्रियाम् , तया।

यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि॥13॥

शब्दार्थ- प्राज्ञः=बुद्धिमान् साधक को चाहिये कि; **वाक्**=(पहले) वाक् आदि (समस्त इन्द्रियों) को; **मनसी**=मन में; **यच्छेत्**=निरुद्ध करे; **तत्**= उस मन को; **ज्ञाने आत्मनि**=ज्ञानस्वरूप बुद्धि में;

यच्छेत्=विलीन करे; **ज्ञानम्** = ज्ञानस्वरूप बुद्धि को; **महति आत्मनि**=महान् आत्मा में; **नियच्छेत्**= विलीन करे; (और); **तत्** =उसको; **शान्ते आत्मनि**= शान्तस्वरूप परमपुरुष परमात्मा में; **यच्छेत्** = विलीन करे ।। 13।।

अर्थ - विवेकी पुरुष वाक् (आदि) इन्द्रियों का मन में उपसंहार करे, उसको प्रकाश-स्वरूप बुद्धि में नियन्त्रित या लीन करें, बुद्धि को (सब ओर से रोककर) हिरण्यगर्भ में लगाये, और हिरण्यगर्भ को शान्त-निर्विशेष-निष्कल-ब्रह्म में लीन करे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **प्राज्ञः-** प्रकर्षेण जानातीति प्रज्ञः (प्र + √ज्ञा + क प्रत्यय कर्तरि) प्रज्ञ एव प्राज्ञः (प्र + अण् स्वार्थे)।
- **वाक्-**द्वितीया-एकवचन रूप। 'वाचम्' के लिये प्रथमा एकवचन का रूप छान्दस् विभक्ति -व्यत्यय से प्रयुक्त हुआ है।
- **मनसी-**यह छान्दस् दैर्ध्य का उदाहरण है। 'मनसि' ऐसा ह्रस्व इकारान्त प्रयोग होना था **ज्ञाने आत्मनि, महति आत्मनि, शान्ते आत्मनि-**ज्ञानात्मा बुद्धि है, महानात्मा प्रथम शरीरी हिरण्यगर्भ है, एवं शान्त आत्मा सर्व-विशेष-रहित कार्य- कारणादि समस्त विक्रियाओं से शून्य तथा सर्व- प्रत्यय- साक्षी मुख्य आत्मा है। यही ब्रह्म है।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥14॥

शब्दार्थ- उत्तिष्ठत=(हे मनुष्यों!) उठो; **जाग्रत**=जागो (सावधान हो जाओ और); **वरान् प्राप्य**=श्रेष्ठ महापुरुषों को पाकर -उनके पास जाकर (उनके द्वारा); **निबोधत**=उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो (क्योंकि); **कवयः**=त्रिकालज्ञ ज्ञानीजन; **तत् पथः**=उस तत्त्वज्ञान के मार्ग को; **क्षुरस्य**=छूरे की; **निशिता दुरत्यया**= तीक्ष्ण की हुई दुस्तर; **धारा [इव]** =धार के सदृश; **दुर्गम**= दुर्गम (अत्यन्त कठिन); **वदन्ति**=बतलाते हैं ।। 14।।

अर्थ - उठो, जागो, श्रेष्ठ पुरुषों के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो। तत्त्वज्ञानी लोग छुरे की तेज की गई दुस्तर धार (की तरह) उस (ज्ञान) मार्ग को दुर्गम बतलाते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **उत्तिष्ठत-**उठो अर्थात् आत्मज्ञान की ओर उन्मुख होओ।
- **उद् √स्था**+ लोट् (म.पु.ब.)।
- **जाग्रत-**जागो अर्थात् अज्ञान-निद्रा को त्यागकर ज्ञान प्राप्त करने के लिये उद्यत हो जाओ।
- **वरान्-** श्रेष्ठ आचार्यों को। **प्राप्य-**पाकर। प्र √आप् + क्त्वा-ल्यप्।
- **निबोधत-**(परमात्मा को) जान लो। नि √वुध् +लोट् (म.पु.ब.)।
- **कवयः-** क्रान्त द्रष्टा, ज्ञानी या मेधावी जन।
- **निशिता-**नि + √शो तनूकरणे+क्त= टाप् (तीक्ष्ण)।
- **दुरत्यया-**दुस्तर, कठिन।
- **दुर्गम्-** दुर्√ गम् +ड। यह 'पथः' का विशेषण है।

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं
तथारसं नित्यमगन्धवच्च यत् ।
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं
निचाय्य तन्मृत्युमुखात् प्रमुच्यते॥15॥

शब्दार्थ- यत्=जो; **अशब्दम्** =शब्दरहित; **अस्पर्शम्** =स्पर्शरहित; **अरूपम्** =रूपरहित; **अरसम्** =रसरहित; **च**=और; **अगन्धवत्** =बिना गन्ध वाला है; **तथा**=तथा (जो); **अव्ययम्** =अविनाशी; **नित्यम्** =नित्य; **अनादि**=अनादि; **अनन्तम्**= अनन्त (असीम); **महतः परम्** =महान् आत्मा से श्रेष्ठ (एवं); **ध्रुवम्** =सर्वथा सत्य तत्त्व है; **तत्** = उस परमात्मा को; **निचाय्य**=जानकर (मनुष्य); **मृत्युमुखात्** =मृत्यु के मुख से; **प्रमुच्यते** = सदा के लिये छूट जाता है ।। 15।।

अर्थ - जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध से रहित (अछूता) है, अव्यय अर्थात् अविनाशी तथा नित्य है, अनादि तथा अनन्त है, महत् अर्थात् बुद्धि-तत्त्व से भी पर और ध्रुव अर्थात् कूटस्थ (निश्चल) है, उस आत्म-तत्त्व को जानकर (साधक) मृत्यु के मुख से छूट जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **अशब्दम्-** अविद्यमानः शब्दः यस्मिन् (बहुव्रीहि.)। इसी प्रकार अस्पर्शम् इत्यादि का भी विग्रह जानना चाहिये।
- **अगन्धवत्-** न गन्धवत् (गन्ध + मतुप्) इति, नञ् तत्पु.।
- **निचाय्य-** नि+ चिञ् + णिच् + ल्यप् ।

नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तं सनातनम् ।
उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते॥16॥

शब्दार्थ- मेधावी= बुद्धिमान् मनुष्य; **मृत्युप्रोक्तम्**=यमराज के द्वारा कहे हुए; **नाचिकेतम्** =नचिकेता के; **सनातनम्** = (इस) सनातन; **उपाख्यानम्** = उपाख्यान का; **उक्त्वा**=वर्णन करके; **च**=और; **श्रुत्वा**=श्रवण करके; **ब्रह्मलोके**=ब्रह्मलोक में; **महीयते**=महिमान्वित होता है (प्रतिष्ठित होता है) ।। 16।।

अर्थ - नचिकेता द्वारा प्राप्त तथा मृत्युदेव यम के द्वारा कहे हुये इस सनातन उपाख्यान को कह एवं सुन कर बुद्धिमान् पुरुष

ब्रह्मलोक में महिमान्वित होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **नाचिकेतम्-** नचिकेतस् + अण्।
- **सनातनम्**-सना + ट्यु (तन)।
- **मेधावी-**मेधा+ विनिः ('अस्मायामेधास्रजो विनिः' सूत्र से)।
- **महीयते-** √मही (कण्ड्वादिगणी) + लट् यक् प्रत्यय।

य इमं परमं गुह्यं श्रावयेद् ब्रह्मसंसदि।
प्रयतः श्राद्धकाले वा तदानन्त्याय कल्पते
तदानन्त्याय कल्पत इति॥17॥

शब्दार्थ- यः= जो मनुष्य; **प्रयतः**=सर्वथा शुद्ध होकर; **इमम्**=इस; **परमम् गुह्यम्** =परम गुह्य -रहस्यमय प्रसङ्ग को; **ब्रह्मसंसदि**=ब्राह्मणों की सभा में; **श्रावयेत्** =सुनाता है; **वा**= अथवा; **श्राद्धकाले** =श्राद्धकाल में; **[श्रावयेत्]**=(भोजन करने वालों को) सुनाता है; **तत्** =(उसका) वह श्रवण कराना रूप कर्म; **आनन्त्याय कल्पते** = अनन्त होने में (अविनाशी फल देने में) समर्थ होता है; **तत् आनन्त्याय कल्पते इति** = वह अनन्त होने में समर्थ होता है ।। 17।।

अर्थ - जो व्यक्ति पवित्र होकर (ब्रह्मवेत्ता) ब्राह्मणों की सभा अथवा श्राद्ध के समय इस अत्यन्त गोप्य आख्यान को सुनाता है, वह (सुनाना) अनन्त फल के लिए समर्थ होता है, अथवा वह (श्राद्ध) अनन्त फल के लिए समर्थ होता है।।17।।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

- **प्रयतः**-प्र + √यम् + क्त।
- **ब्रह्मसंसदि**-ब्रह्मणः संसद्, तस्याम् (ब्रह्म-विचारकों की सभा में)।
- **गुह्यम्**-√ गुह + क्यप् (रहस्यमय आख्यान को)।
- **श्रावयेत्**-√ श्रु + णिच् + विधिलिङ् (प्र.पु.एक.)।
- **आनन्त्याय**-अनन्तस्य भावः आनन्त्यम् (अनन्त + ष्यञ्) तस्मै। 'तदानन्त्याय कल्पते' यह वाक्य अध्याय की समाप्ति को सूचित करने के लिए दो बार कहा गया है।

कठोपनिषद् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ

- मृत्यवे त्वा ददामीति (1.1.4)
- सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः (1.1.6)
- नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु,
  तस्मात्प्रति त्रीन्वरान्वृणीष्व (1.1.9)
- शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्या-
  द्वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो। (1.1.10)
- स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति
  न तत्र त्वं न जरया बिभेति। (1.1.12)
- शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके (1.1.18)
- येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये-
  ऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके। (1.1.20)
- शतायुषः पुत्रपौत्रान्वृणीष्व
  बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान् । (1.1.23)
- न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो (1.1.27)
- श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत-
  स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः। (1.2.2)
- मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति (1.2.12)
- न जायते म्रियते वा विपश्चि-
  न्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् । (1.2.18)
- अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
  न हन्यते हन्यमाने शरीरे (1.2.18)
- इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः। (1.3.10)
- महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः।
  पुरुषान्न परं किंचित्सा काष्ठा सा परा गतिः (1.3.11)
- उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
  उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते (1.3.16)

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *

Sanskritganga Official
New App Download from Google Play Store

अभ्यास प्रश्न (कठोपनिषद्)

1. नचिकेतस अग्नेः उपदेष्टाऽभवत्–
(A) यमः (B) ब्रह्मा
(C) विश्वेदेवाः (D) बृहस्पतिः
स्रोत–कठोपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–26

2. कठोपनिषदनुसारं महतः परं किमस्ति–
(A) मनः (B) अव्यक्तम्
(C) पुरुषः (D) आत्मा
स्रोत–कठोपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–82

3. नवकृत्वोपदेश करता है–
(A) उद्दालकेन (B) श्वेतकेतुना
(C) इन्द्रेण (D) नारदेन

4. 'रथ-रूपकं' कुत्र विद्यते–
(A) छान्दोग्ये (B) बृहदारण्यके
(C) श्वेताश्वतरे (D) कठे
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–123

5. एतेषु 'सारथिः' कः उच्यते?
(A) आत्मा (B) शरीरम्
(C) मनः (D) बुद्धिः
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–123, 124

6. कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय में कुल कितने मन्त्र हैं?
(A) 48 (B) 71
(C) 50 (D) 75
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

7. 'कठोपनिषद्' किस वेद से सम्बन्धित है?
(A) ऋग्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) शुक्लयजुर्वेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

8. कस्मिन् वरे यमस्त्रिणाचिकेतसम् अग्निम् अदात्–
(A) प्रथमवरे (B) द्वितीयवरे
(C) तृतीयवरे (D) चतुर्थवरे
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–88, 89

9. कठोपनिषदि नचिकेता द्वितीयवररूपेण किं लब्धवान्?
(A) पितुः प्रसन्नताम् (B) अग्निविद्याम्
(C) जीवनकौशलम् (D) आत्मविद्याम्
स्रोत– ईशादि नौ उपनिषद् (शाङ्करभाष्य)-गीताप्रेस, पेज–209

10. कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय में कितने मन्त्र हैं?
(A) 48 (B) 45
(C) 50 (D) 55
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

11. आध्यात्मिक ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम के संवाद किस उपनिषद् में प्राप्त होता है–
(A) बृहदारण्यक उपनिषद् में (B) छान्दोग्य उपनिषद् में
(C) कठोपनिषद् में (D) केनोपनिषद् में
स्रोत– उपनिषद् अंक - गीताप्रेस, पेज–191

12. कठोपनिषद् में नचिकेता के पिता ने कौन सा यज्ञ किया था–
(A) अश्वमेध (B) दशाश्वमेध
(C) सर्वजित् (विश्वजित्) (D) पितृमेध
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

13. कठोपनिषद् में कितने अध्याय हैं?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 6
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद, गीताप्रेस, पेज–76

14. कठोपनिषद् के अनुसार आत्मा किस प्रकार से प्राप्तव्य है–
(A) श्रवण द्वारा (B) प्रवचन द्वारा
(C) मेधा द्वारा (D) परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा
स्रोत–कठोपनिषद् (ज्ञानकाण्ड)-श्रीरामशर्मा आचार्य, पेज–35-36

15. कठोपनिषद् के अनुसार बुद्धिमान् व्यक्ति किसका वरण करता है–
(A) श्रेय का (B) प्रेय का
(C) श्रेय और प्रेय दोनों का (D) न श्रेय न प्रेय का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–176

1. (A)	2. (B)	3. (A)	4. (D)	5. (D)	6. (B)	7. (B)	8. (B)	9. (B)
10. (A)	11. (C)	12. (C)	13. (A)	14. (D)	15. (A)			

16. कठोपनिषद् में 'सृङ्का' का अर्थ है–

(A) प्रवालजटितमाला (B) तुलसीमाला

(C) रुद्राक्षमाला (D) अकुत्सितकर्ममयीगति

स्रोत–कठोपनिषद् (शाङ्करभाष्य)-गीताप्रेस, पेज–29

17. कठशाखायाः उपनिषदः किं नाम अस्ति–

(A) प्रश्नोपनिषद् (B) ईशावास्योपनिषद्

(C) कठोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

18. कठोपनिषद् कस्याः शाखायाः प्रातिनिध्यं करोति–

(A) कठशाखायाः (B) राणायनीयशाखायाः

(C) कौथुमशाखायाः (D) काण्वशाखायाः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

19. 'नचिकेतोपाख्यानं' कस्मिन्नुपनिषदि प्राप्यते–

(A) ऐतरेयोपनिषदि (B) केनोपनिषदि

(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यके

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.3.16)-गीताप्रेस, पेज–133

20. नचिकेतसः पिता कस्मै तं प्रादात्–

(A) शम्भवे (B) विष्णवे

(C) मृत्यवे (D) वरुणाय

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.1.4)-गीताप्रेस, पेज–78

21. कठोपनिषदनुसारं प्राणेन सम्भवति–

(A) अदितिः (B) आत्मा

(C) बुद्धिः (D) मनः

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–140

22. मन से अधिक गति वाला कौन है–

(A) परमेश्वर (B) वायु

(C) अग्नि (D) देवता

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–82

23. कठोपनिषदि नचिकेतसा किं प्राप्तम्–

(A) हिरण्यादिकम् (B) वरत्रयम्

(C) स्त्रीरत्नम् (D) पुत्रपरिजनादिकम्

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–82

24. यमेन श्रेयप्रेयविवेचनं कस्याम् उपनिषदि विद्यते?

(A) बृहदारण्यके (B) छान्दोग्ये

(C) ईशावास्ये (D) कठोपनिषदि

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.2.2)-गीताप्रेस, पेज–99

25. ''इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः'' इत्यंशो वर्तते–

(A) अग्निसूक्ते (B) ईशावास्योपनिषदि

(C) कठोपनिषदि (D) प्रजापतिसूक्ते

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.3.10)-गीताप्रेस, पेज–128

26. 'उत्तिष्ठत जाग्रत' – के पाठ वाला ग्रन्थ है–

(A) मुण्डकोपनिषदि

(B) प्रश्नोपनिषदि

(C) कठोपनिषदि

(D) छान्दोग्योपनिषदि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–176

27. नचिकेता कस्मात् वरत्रयं लब्धवान्?

(A) इन्द्रात् (B) वशिष्ठात्

(C) यमात् (D) सूर्यात्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति (कठोपनिषद् 1.1.9)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

28. विद्यया कं लोकं प्राप्यते–

(A) देवलोकम् (B) भूलोकम्

(C) सत्यलोकम् (D) पृथ्वीलोकम्

स्रोत–ईशावास्योपनिषद् - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–59

29. 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' इत्ययं श्लोकांशः अस्ति–

(A) ईशावास्योपनिषदि

(B) छान्दोग्योपनिषदि

(C) तैत्तिरीयोपनिषदि

(D) कठोपनिषदि

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.1.27)-गीताप्रेस, पेज–96

24. (D) 25. (C) 26. (C) 27. (C) 28. (A) 29. (D)

11 Unit

शब्दरूप एवं धातुरूप

(क) शब्दरूप

शब्दरूपों के मुख्यतः दो प्रकार हैं- अजन्त और हलन्त।

अजन्त पुँल्लिङ्ग, अजन्त स्त्रीलिङ्ग, अजन्त नपुंसकलिङ्ग तथा हलन्त पुँल्लिङ्ग, हलन्त स्त्रीलिङ्ग, हलन्त नपुंसकलिङ्ग के भेद से यह छह प्रकार का हो जाता है। इसी को व्याकरणशास्त्र में **षड्लिङ्ग** कहते हैं।

शब्दरूप तालिका

1. अजन्त पुँल्लिङ्ग	2. अजन्त स्त्रीलिङ्ग	3. अजन्त नपुंसकलिङ्ग	4. हलन्त पुँल्लिङ्ग	5. हलन्त स्त्रीलिङ्ग	6. हलन्त नपुंसकलिङ्ग
अकारान्त पुं. जैसे- राम, वृक्ष छात्र, जनक आदि।	**आकारान्त स्त्री.** जैसे- विद्या, बालिका लता,रमा आदि।	**अकारान्त नपुं.** फल, मित्र, मुख कमल आदि।	जलमुच्,भूभृत् भवत्,भगवत् आत्मन्,युवन् चन्द्रमस्,विद्वस् आदि।	वाच्,सरित् उपानह्,गिर् प्रावृष्,दिश् अप्सरस् आदि।	नामन्,चर्मन् चक्षुस्,मनस् पयस् आदि।
आकारान्त पुं. जैसे- विश्वपा,गोपा सोमपा आदि ।	**इकारान्त स्त्री.** मति, बुद्धि आदि।	**इकारान्त नपुं.** वारि, दधि,अक्षि आदि।			
इकारान्त पुं. जैसे- हरि, कवि,मुनि पति आदि।	**ईकारान्त स्त्री.** श्री, धी,लक्ष्मी आदि।	**उकारान्त नपुं.** वस्तु, मधु आदि।			
ईकारान्त पुँल्लिङ्ग जैसे- प्रधी, ग्रामणी सुधी आदि।	**उकारान्त स्त्री.** धेनु,रेणु,तनु आदि	**ऋकारान्त नपुं.** कर्तृ, नेतृ आदि			
उकारान्त पुँल्लिङ्ग जैसे- भानु, विष्णु, गुरु आदि।	**ऊकारान्त स्त्री.** वधू, रज्जू,श्वश्रू आदि।				
ऊकारान्त पुँल्लिङ्ग जैसे- स्वयम्भू, सुभ्रू आदि।	**ऋकारान्त स्त्री.** मातृ, स्वसृ,दुहितृ आदि।				
ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग जैसे- पितृ, दातृ, भ्रातृ आदि।					

शब्दरूप-प्रकरणम्

राम (अजन्त अकारान्त पुँल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

लता (आकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

साधु (उकारान्त पुँल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो!	हे साधू!	हे साधवः!

फल (अजन्त अकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्/फलाद्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

नदी (अजन्त ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

मति (बुद्धि) इकारान्त अजन्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै/मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः/मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः/मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम् /मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

मधु (अजन्त उकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु! हे मधो!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

राजन् (**राजा**) हलन्त नकारान्त पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि/राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

वारि (**पानी**) अजन्त इकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि/हे वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

वधू (बहू) अजन्त ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

नोट- इसी प्रकार चमू (सेना), रज्जू (रस्सी), श्वश्रू (सास), कर्कन्धू (बेर) इत्यादि सभी ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप वधू के समान होते हैं।

गो (**गाय या बैल**) ओकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	हे गौः!	हे गावौ!	हे गावः!

मातृ (**माता**) ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

नोट- यातृ (देवरानी), दुहितृ (लड़की) के रूप मातृ के समान होते हैं।

पितृ (पिता) ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

नोट- भातृ (भाई), देवृ (देवर), जामातृ (दामाद) इत्यादि सम्बन्ध-सूचक ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप पितृ के समान चलते हैं।

सर्वनाम शब्दों के रूप

युष्मद् (**तुम**) दकारान्त हलन्त (तीनों लिङ्गों में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् /त्वा	युवाम् /वाम्	युष्मान् /वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् /ते	युवाभ्याम् /वाम्	युष्मभ्यम् /वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव /ते	युवयोः/वाम्	युष्माकम् /वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

नोट- अस्मद् और **युष्मद्** शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में इसी प्रकार चलेंगे। इनका सम्बोधन रूप नहीं होता।

अस्मद् (मैं, हम)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् /मा	आवाम् /नौ	अस्मान् /नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् /मे	आवाभ्याम् /नौ	अस्मभ्यम् /नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम /मे	आवयोः/नौ	अस्माकम् /नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

तद् (**वह**) दकारान्त हलन्त पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत् /तद्	ते	तानि
द्वितीया	तत् /तद्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

किम् (कौन) पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात् /कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात् /कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

सर्व (सब) पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्/द्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्/द्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

अदस् (वह) पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्/अमुष्माद्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्/अमुष्माद्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

संख्यावाचक शब्दों के रूप

एक (एक) एकवचनान्त

	पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एकम्	एका
द्वितीया	एकम्	एकम्	एकाम्
तृतीया	एकेन	एकेन	एकया
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
पञ्चमी	एकस्मात्/द्	एकस्मात्/द्	एकस्याः
षष्ठी	एकस्य	एकस्य	एकस्याः
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

द्वि (दो) द्विवचनान्त

	पुंल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि (तीन) बहुवचनान्त

	पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

चतुर् (चार) बहुवचनान्त

	पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वितीया	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्/चतुर्ण्णाम्	चतुर्णाम्/चतुर्ण्णाम्	चतसृणाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

	पञ्चन् -पाँच बहुवचन	**षष्**-छः बहुवचन	**सप्तन्**-सात बहुवचन
प्रथमा	पञ्च	षट्	सप्त
द्वितीया	पञ्च	षट्	सप्त
तृतीया	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
षष्ठी	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्
सप्तमी	पञ्चसु	षट्त्सु/षट्सु	सप्तसु

	अष्टन्-आठ बहुवचन	**नवन्**- नव बहुवचन	**दशन्** - दस बहुवचन
प्रथमा	अष्टौ/अष्ट	नव	दश
द्वितीया	अष्टौ/अष्ट	नव	दश
तृतीया	अष्टाभिः/अष्टभिः	नवभिः	दशभिः
चतुर्थी	अष्टाभ्यः/अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पञ्चमी	अष्टाभ्यः/अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
षष्ठी	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
सप्तमी	अष्टासु/अष्टसु	नवसु	दशसु

नोट- पञ्चन्, षष्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् इनके रूप पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग-तीनों लिङ्गों में एक समान होंगे।

कति शब्द के रूप बहुवचन में- प्रथमा कति, **द्वितीया** कति, **तृतीया** कतिभिः, **चतुर्थी** कतिभ्यः, **पञ्चमी** कतिभ्यः, **षष्ठी** कतीनाम्, **सप्तमी** कतिषु चलता है।

अभ्यास प्रश्न (शब्दरूप)

1. 'राम' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है?
(A) रामस्य (B) रामयोः
(C) रामाणाम् (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01

2. 'राम'-शब्दस्य रूपेषु 'रामाभ्याम्' इति रूपस्य आवृत्तिः कति वारं भवति?
(A) द्विवारम् (B) त्रिवारम्
(C) चतुर्वारम् (D) पञ्चवारम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01

3. 'राम' शब्द तृतीया द्विवचन का रूप है?
(A) रामाभ्याम् (B) रामान्
(C) रामैः (D) रामेभ्यः
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01

4. 'राम' शब्द षष्ठी एकवचन है?
(A) रामौ (B) रामस्य
(C) रामे (B) रामेषु
स्रोत– रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01

5. 'साधु' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) साधौ (B) साधुषु
(C) साधुना (D) साधुभिः
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–76

6. 'राजन्' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा?
(A) राजि (B) राज्ञि
(C) राज्ञि एवं राजनि (D) राजनि
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–102

7. 'राजन्'-शब्दस्य तृतीयायाः एकवचने किं रूपं भवति?
(A) राजेन (B) राजः
(C) राज्ञे (D) राज्ञा
स्रोत– रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–47

8. 'राजन्' इत्येतत् शब्दरूपमधिकृत्य सत्यकथनं न अस्ति–
(A) अस्मिन् शब्दे 'ज्' इत्यस्यानन्तरं वर्तमानः 'अ' इत्ययं ध्वनिः उपधासञ्ज्ञः अस्ति।
(B) अस्मिन् शब्दे 'राज्' इत्यस्मादनन्तरम् 'अन्' इत्ययमंशः 'टि' संज्ञकः अस्ति।
(C) 'राजन्' इत्येतच्छब्दरूपं प्रातिपदिकसञ्ज्ञम् अस्ति।
(D) 'राजन्' इत्येतच्छब्दरूपं पदसञ्ज्ञम् अस्ति।
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–102

9. 'गो' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा?
(A) गोनाम् (B) गोवाम्
(C) गवाम् (D) गवानाम्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–80

10. 'गावः' पदस्य वचनमस्ति–
(A) एकवचनम् (B) द्विवचनम्
(C) बहुवचनम् (D) निर्वचनम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–20

11. 'पितृ' शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप क्या होगा?
(A) पितरि (B) पितुः
(C) पित्रे (D) पित्रा
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–78

12. 'पितुः' पितृ शब्द का कौन-सा रूप है?
(A) षष्ठी एकवचन (B) द्वितीया बहुवचन
(C) प्रथमा बहुवचन (D) सप्तमी एकवचन
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–78

13. 'पितृ'– शब्दस्य द्वितीया-बहुवचनं चिनुत–
(A) पितरान् (B) पितरीन्
(C) पितॄन् (D) पितराः
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–77

1. (C) 2. (B) 3. (A) 4. (B) 5. (A) 6. (C) 7. (D) 8. (D) 9. (C) 10. (C) 11. (A) 12. (A) 13. (C)

14. 'पितृन्' रूप है?

(A) प्रथमा बहुवचन का (B) द्वितीया बहुवचन का

(C) तृतीया द्विवचन का (D) पञ्चमी बहुवचन का

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–77

15. 'पितृ' शब्दस्य प्रथमा-विभक्तौ एकवचने रूपम् अस्ति–

(A) पिता (B) पितॄन्

(C) पितरान् (D) पित्रा

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–77

16. 'पितृ' शब्द के प्रथमा बहुवचन का रूप है?

(A) पितृः (B) पितराः

(C) पितरः (D) पितारः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–77

17. 'लता' शब्द स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी एकवचन का रूप क्या है–

(A) लतया (B) लतायै

(C) लतायाः (D) लताया

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–85

18. 'लता' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है–

(A) लताः (B) लताम्

(C) लतान् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–आधुनिक संस्कृत व्याकरण और रचना-श्यामनन्दन शास्त्री, पेज–43

19. 'लता'- शब्दस्य रूपेषु 'लते' इति रूपस्य आवृत्तिः कति वारं भवति–

(A) त्रिवारम् (B) चतुर्वारम्

(C) पञ्चवारम् (D) षड्वारम्

स्रोत–आधुनिक संस्कृत व्याकरण और रचना-श्यामनन्दन शास्त्री, पेज–43

20. 'लता'- शब्दस्य सप्तमीबहुवचने रूपम् अस्ति?

(A) लतायाः (B) लतयोः

(C) लतासु (D) लतायै

स्रोत–आधुनिक संस्कृत व्याकरण और रचना-श्यामनन्दन शास्त्री, पेज–43

21. पञ्चमी विभक्ति एकवचन में 'लता' शब्द का रूप है?

(A) लताभिः (B) लतायाम्

(C) लतानाम् (D) लतायाः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22

22. 'नदी' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है?

(A) नदीः (B) नद्यः

(C) नदीन् (D) नद्या

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–26

23. 'नदीः' किस विभक्ति का रूप है?

(A) द्वितीया-बहुवचन (B) प्रथमा-एकवचन

(C) प्रथमा-बहुवचन (D) द्वितीया-एकवचन

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–26

24. 'नदी' इति शब्दस्य तृतीयाविभक्तौ एकवचनं किम्?

(A) नद्यौ (B) नद्याः

(C) नद्या (D) नदीनाम्

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–86

25. 'नदी' शब्द से सप्तमी विभक्ति एकवचन में रूप बनेगा–

(A) नदीम् (B) नद्याः

(C) नद्याम् (D) नदीषु

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–86

26. 'मति' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है?

(A) मत्यै (B) मतये

(C) मत्यै, मतये (D) मत्यै, मतये दोनों नहीं

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–25

27. 'मति' शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप है?

(A) मत्या (B) मत्याः

(C) मतयः (D) मतये

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–25

14. (B) 15. (A) 16. (C) 17. (B) 18. (A) 19. (B) 20. (C) 21. (D) 22. (A) 23. (A) 24. (C) **25.** (C) **26. (C) 27. (B)**

28. 'मति' शब्दस्य तृतीया एकवचने रूपं भवति?

(A) मतिना (B) मत्या

(C) मतेन (D) मतिभिः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–25

29. 'मत्याम्' शब्द रूप है?

(A) मति शब्द के द्वितीया एकवचन का

(B) मति शब्द के द्वितीया बहुवचन का

(C) मति शब्द के षष्ठी बहुवचन का

(D) मति शब्द के सप्तमी एकवचन का

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–25

30. 'माता' रूप का मूल प्रातिपदिक शब्द–

(A) आकारान्त (B) उकारान्त

(C) इकारान्त (D) ऋकारान्त

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–89

31. स्त्रीलिङ्ग 'मातृ' शब्द का द्वितीया विभक्ति बहुवचन का रूप है?

(A) मातुः (B) मातृन्

(C) मातरः (D) मातृः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–89

32. 'मातृ' शब्दस्य तृतीयाविभक्तौ एकवचने रूपं भवति–

(A) मातृणा (B) मात्रया

(C) मात्रा (D) मात्रेण

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–89

33. 'तत्' शब्द स्त्रीलिङ्ग प्रथमा बहुवचन का रूप है–

(A) ते (B) ताः

(C) तानि (D) ताभिः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–82

34. 'फलानाम्' किस विभक्ति का रूप है?

(A) द्वितीया (B) तृतीया

(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–81

35. वारि-शब्दस्य पञ्चमी-एकवचने रूपमस्ति–

(A) वारिणात् (B) वार्यात्

(C) वारिणः (D) वारिणोः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–35

36. वारि-शब्दस्य सप्तमी-एकवचने रूपं भवति–

(A) वारिणी (B) वारीणि

(C) वारिणि (D) वारिणे

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–35

37. 'मधु'-शब्दस्य षष्ठी-विभक्तौ द्विवचने रूपम् अस्ति–

(A) मध्वोः (B) मधवोः

(C) मध्वौ (D) मधुनोः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–36

38. 'मधुनी' किस विभक्ति का रूप है?

(A) द्वितीया (B) चतुर्थी

(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–36

39. 'तत्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग षष्ठीबहुवचन का रूप है?

(A) तेषाम् (B) तस्याम्

(C) तासाम् (D) ताषाम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–82

40. 'तद्' शब्द का पुँल्लिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप बनता है?

(A) तौ (B) तम्

(C) तान् (D) तेषाम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58

41. 'तत्' सर्वनाम शब्द का षष्ठी विभक्ति का रूप है?

(A) तेन (B) तस्य

(C) तस्मिन् (D) तस्मै

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58

42. 'तस्मै' में विभक्ति है–

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58

28. (B) 29. (D) 30. (D) 31. (D) 32. (C) 33. (B) 34. (D) 35. (C) 36. (C) 37. (D) 38. (A) 39. (C) 40. (C) 41. (B) 42. (D)

43. सर्वनाम शब्द 'तद्' पुँल्लिङ्ग प्रथमा विभक्ति बहुवचन का रूप होगा–
(A) तानि (B) ताः
(C) ते (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58

44. तत् के चतुर्थी विभक्ति एकवचन स्त्रीलिङ्ग का रूप है–
(A) ताभ्यः (B) तस्मै
(C) तस्यै (D) तस्याम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–82

45. 'एतद्' शब्द पुँल्लिङ्ग प्रथमा एकवचन का रूप है–
(A) एतम् (B) एषः
(C) एषा (D) एते
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58

46. 'सर्व' शब्द का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) सर्वस्मिन् (B) सर्वस्याम्
(C) सर्वयोः (D) सर्वेषु
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–133

47. 'सर्व' के पञ्चमी एकवचन में रूप बनेगा?
(A) सर्वस्मात् (B) सर्वात्
(C) सर्वस्य (D) सर्वाः
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02

48. सर्वस्य रूप है?
(A) चतुर्थी का (B) पञ्चमी का
(C) षष्ठी का (D) सप्तमी का
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02

49. 'सर्वस्मै' में विभक्ति है–
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) अव्यय है
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02

50. 'सर्वस्यै' में लिङ्ग है–
(A) पुँल्लिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) स्त्रीलिङ्ग एवं पुँल्लिङ्ग
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–145

51. 'किम्' शब्द पुँल्लिङ्ग तृतीया विभक्ति बहुवचन में रूप होगा–
(A) कैः (B) केनैः
(C) केभिः (D) केभ्यः
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–46

52. पुँल्लिङ्ग 'सर्व' शब्द का प्रथमा विभक्ति बहुवचन में क्या रूप होता है?
(A) सर्वाः (B) सर्वे
(C) सर्वौ (D) सर्व
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02

53. पुँल्लिङ्ग 'सर्व' शब्दस्य तृतीया एकवचने रूपमस्ति–
(A) सर्वैः (B) सर्वना
(C) सर्वेण (D) सर्वणा
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02

54. 'युष्मद्' सर्वनाम शब्द पञ्चमी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा–
(A) युष्मत् (B) युष्मभ्यम्
(C) युष्माभिः (D) युष्मात्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

55. 'युष्मद्' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है?
(A) तव (B) त्वत्
(C) युष्मत् (D) युष्माकम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

56. 'त्वत्' किस सर्वनाम का रूप है?
(A) तत् (B) इदम्
(C) अस्मद् (D) युष्मद्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

57. 'युष्मद्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होता है?
(A) त्वयि (B) युष्मासु
(C) युष्माकम् (D) त्वत्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

58. 'युष्मद्' शब्दस्य षष्ठी-विभक्तौ बहुवचने रूपम् अस्ति–
(A) युवयोः (B) युष्माकम्
(C) युषाम् (D) यूवाम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

59. 'युष्मद्' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है–
(A) तव (B) तस्याम्
(C) युष्मदि (D) त्वयि
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

43. (C) 44. (C) 45. (B) 46. (B) 47. (A) 48. (C) 49. (B) 50. (B) 51. (A) 52. (B) 53. (C) 54. (A) 55. (A) 56. (D) 57. (B) 58. (B) 59. (D)

60. 'युष्मद्' शब्द के सप्तमी विभक्ति में दिये गये रूपों में गलत कौन-सा है?
(A) तव (B) त्वयि
(C) युवयोः (D) युष्मासु
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

61. 'युष्माकं गृहं कुत्र अस्ति' इस वाक्य में सर्वनाम है–
(A) युष्माकम् (B) गृहम्
(C) कुत्र (D) अस्ति
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

62. 'युष्मद्' शब्द का चतुर्थी बहुवचन रूप है?
(A) तुभ्यः (B) वः
(C) युष्मेभ्यः (D) युष्मेभ्यम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

63. 'अस्मद्' शब्द का चतुर्थी बहुवचन में रूप होगा?
(A) मह्यम् (B) आवाभ्याम्
(C) अस्मत् (D) अस्मभ्यम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

64. 'मह्यम्' किस सर्वनाम का रूप है?
(A) अस्मद् का (B) युष्मद् का
(C) एतद् का (D) अदस् का
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

65. 'अस्मद्' शब्द का द्वितीया बहुवचन का विकल्प रूप होगा?
(A) मा (B) नौ
(C) नः (D) माम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

66. 'अस्मद्' शब्द सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) मया (B) मम
(C) मयि (D) माम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60

67. 'अस्मद्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग में क्या रूप होगा?
(A) अहम् (B) त्वम्
(C) मया (D) इनमें कोई लिङ्ग नहीं होता
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

68. 'मया' इत्यस्य विभक्तिं वचनं च लिखत–
(A) तृतीया-एकवचनम् (B) चतुर्थी-एकवचनम्
(C) द्वितीया-बहुवचनम् (D) षष्ठी-द्विवचनम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

69. 'अस्मद्'-शब्दस्य प्रथमाविभक्तौ द्विवचने रूपम् अस्ति–
(A) वयम् (B) आवाम्
(C) मया (D) अस्मभ्यम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

70. 'अस्मद्'-शब्दस्य रूपम् अस्ति–
(A) मत् (B) आसन्दः
(C) आस्ताम् (D) अपि
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

71. अस्मद्-शब्दस्य रूपेषु 'नः' इति रूपस्य आवृत्तिः कति वारं भवन्ति?
(A) द्विवारम् (B) चतुर्वारम्
(C) पञ्चवारम् (D) त्रिवारम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

72. 'मया' पद किस शब्द का तृतीया एकवचन का रूप है–
(A) युष्मद् (B) अस्मद्
(C) इदम् (D) अदस्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

73. अस्मद् सर्वनाम का षष्ठी-विभक्ति बहुवचन का रूप है?
(A) मम (B) अस्मभ्यम्
(C) अस्माकम् (D) अस्मत्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60

74. 'मयि' इति पदे विभक्तिः अस्ति?
(A) तृतीया (B) सप्तमी
(C) पञ्चमी (D) सम्बोधन
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60

75. 'अस्मद्' शब्द का पञ्चमी एकवचन में क्या रूप होता है?
(A) माम् (B) मत्
(C) मम (D) अस्मत्
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60

60. (A) 61. (A) 62. (B) 63. (D) 64. (A) 65. (C) 66. (C) 67. (D) 68. (A) 69. (B) 70. (A) 71. (D) 72. (B) 73. (C) 74. (B) 75. (B)

76. 'अस्मद्' शब्द के तृतीया विभक्ति के रूप हैं?

(A) अहम्, आवाम्, वयम्

(B) मया, आवाभ्याम्, अस्माभिः

(C) मत्, आवाभ्याम्, अस्मत्

(D) मम, आवयोः, अस्माकम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

77. 'अस्मभ्यम्' शब्दरूप है?

(A) अस्मद् शब्द के चतुर्थी बहुवचन का

(B) अस्मद् शब्द के तृतीया एकवचन का

(C) अस्मद् शब्द के षष्ठी एकवचन का

(D) अस्मद् शब्द के षष्ठी बहुवचन का

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

78. 'अस्मद्' शब्द के पञ्चमी विभक्ति में दिये हुये रूपों में गलत कौन-सा है?

(A) मत् (B) आवाभ्याम्

(C) अस्मत् (D) अस्मभ्यम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60

79. 'रोचते मे एष मयूरः' में रेखाङ्कित पद की प्रकृति, विभक्ति तथा वचन बताइये–

(A) युष्मद् + चतुर्थी + एकवचन

(B) अस्मद् + षष्ठी + द्विवचन

(C) अस्मद् + चतुर्थी + एकवचन

(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59

80. अदस् (वह) शब्द के स्त्रीलिङ्ग पञ्चमी विभक्ति बहुवचन में रूप होगा?

(A) अमूभ्यः (B) अमूष्याः

(C) अमूः (D) अमुया

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–87

81. 'अदस्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग प्रथमा एकवचन का रूप है?

(A) असौ (B) अदः

(C) अमू (D) अमूः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–86

82. 'अदस्' शब्द का नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप होगा?

(A) अमू (B) अमूनि

(C) अमून् (D) अमू

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–102

83. ''असौ, अमू, अमी'' में किस प्रातिपदिक के रूप हैं?

(A) इदम् शब्द पुँल्लिङ्ग के

(B) अदस् शब्द पुँल्लिङ्ग के

(C) इदम् शब्द स्त्रीलिङ्ग के

(D) इदम् शब्द नपुंसकलिङ्ग के

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–73

84. 'अदस्' शब्दस्य षष्ठीबहुवचनरूपं पुँल्लिङ्गे –

(A) अदसाम् (B) अमूनाम्

(C) अमूषाम् (D) अमीषाम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–73

85. निम्नलिखित में से अशुद्ध शब्दरूप है–

(A) पञ्चानाम् (B) पञ्चसु

(C) पञ्च (D) पञ्चाभ्याम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–44-45

86. 'चतुर्' शब्द का पुँल्लिङ्ग में द्वितीया के बहुवचन का रूप है–

(A) चत्वारि (B) चतस्रः

(c) चत्वारः (D) चतुरः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–45

87. निम्नलिखित में से 'युष्मद्' शब्द के लिये क्या सही कथन है?

(A) मध्यम पुरुषवाची है।

(B) सम्बोधन शब्द के ठीक बाद प्रयोग वर्जित है।

(C) तीनों लिङ्गों में एक समान रूप होते हैं।

(D) उपर्युक्त सभी सही है।

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–122-23

76. (B) 77. (A) 78. (D) 79. (C) 80. (A) 81. (A) 82. (B) 83. (B) 84. (D) 85. (D) 86. (D) 87. (D)

(ख) धातुरूप

धातुसंज्ञा

सूत्र- भूवादयो धातवः (1.3.1)

क्रियावाचक भू आदि की धातुसंज्ञा होती है। ये सभी धातुएँ पाणिनीय धातुपाठ में दी गयी हैं। इनकी संख्या 1970 अर्थात् लगभग 2000 है।

➢ धातुओं के तीन प्रकार से रूप चलते हैं-

(i) परस्मैपदी (√पठ्) - पठति, पठतः, पठन्ति आदि।

(ii) आत्मनेपदी (√लभ्)- लभते, लभेते, लभन्ते आदि।

(iii) उभयपदी (√ज्ञा) - जानाति, जानीतः, जानन्ति
जानीते, जानाते, जानते।

गण (धातुओं के विभाग)

संस्कृत में दस गण होते हैं। संस्कृत व्याकरणशास्त्र में लगभग 2000 धातुयें हैं; प्रत्येक धातु किसी न किसी गण में ही परिगणित है।

	गण		धातुएँ
1.	भ्वादिगण	–	1035 धातुएँ
2.	अदादिगण	–	72 धातुएँ
3.	जुहोत्यादिगण	–	24 धातुएँ
4.	दिवादिगण	–	140 धातुएँ
5.	स्वादिगण	–	35 धातुएँ
6.	तुदादिगण	–	157 धातुएँ
7.	रुधादिगण	–	25 धातुएँ
8.	तनादिगण	–	10 धातुएँ
9.	क्र्यादिगण	–	61 धातुएँ
10.	चुरादिगण	–	411 धातुएँ
	कुल धातुयें	**–**	**1970**

भ्वाद्यदादि जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिक्रीचुरादयः॥

➢ **भ्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** भू (होना), हस् (हँसना), पठ् (पढ़ना), रक्ष् (रक्षा करना), वद् (बोलना), पच् (पकाना), नम् (झुकना), गम् (जाना), दृश् (देखना), सद् (बैठना), स्था (रुकना), पा (पीना), घ्रा (सूँघना), स्मृ (स्मरण करना), जि (जीतना), श्रु (सुनना), वस् (रहना), सेव् (सेवा करना), लभ् (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहन करना), याच् (माँगना), नी (ले जाना) आदि।

➢ **अदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** अद् (खाना), अस् (होना), ब्रू (कहना), दुह् (दुहना), रुद् (रोना), स्वप् (सोना), हन् (मारना), इ (जाना), आस् (बैठना), शी (सोना) आदि।

➢ **जुहोत्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** हु (हवन करना), भी (डरना), दा (देना), धा (धारण करना) आदि।

➢ **दिवादिगण की प्रमुख धातुएँ-** दिव् (चमकना), नृत् (नाचना), नश् (नष्ट होना), भ्रम् (घूमना), युध् (लड़ना), जन् (उत्पन्न होना) आदि।

➢ **स्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** सु (स्नान करना या रस निकालना), आप् (पाना), शक् (सकना) आदि।

➢ **तुदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तुद् (दुःख देना), इष् (चाहना), स्पृश् (छूना), प्रच्छ् (पूँछना), लिख् (लिखना), मृ (मरना), मुच् (छोड़ना) आदि।

➢ **रुधादिगण की प्रमुख धातुएँ-** रुध् (ढकना, रोकना), भुज् (पालन करना, भोजन करना), आदि।

➢ **तनादिगण की प्रमुख धातुएँ-**तन् (फैलाना), कृ (करना) आदि।

➢ **क्र्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** क्री (मोल लेना), ग्रह् (पकड़ना), ज्ञा (जानना) आदि।

➢ **चुरादिगण की प्रमुख धातुएँ-** चुर् (चुराना), चिन्त् (सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना) आदि।

1. भू (होना) 'भू' सत्तायाम्

भ्वादिगण, परस्मैपदी, अकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यमपुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तमपुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यमपुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तमपुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	भवतु/भवतात्	भवताम्	भवन्तु
मध्यमपुरुष	भव/भवतात्	भवतम्	भवत
उत्तमपुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यमपुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तमपुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यमपुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तमपुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

2. गम् (जाना) 'गम्लृँ' गतौ

भ्वादिगण, परस्मैपदी, सकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यमपुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तमपुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यमपुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तमपुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	गच्छतु/गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यमपुरुष	गच्छ/गच्छतात्	गच्छतम्	गच्छत
उत्तमपुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यमपुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तमपुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यमपुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तमपुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

3. सेव् (सेवा करना) 'षेवृ' सेवने

भ्वादिगण, आत्मनेपदी, सकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यमपुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तमपुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यमपुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तमपुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यमपुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तमपुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यमपुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तमपुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यमपुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तमपुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

4. हृ (ले जाना, हरण या चोरी करना) हृञ् हरणे

भ्वादिगण, उभयपदी, सकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हरति	हरतः	हरन्ति
मध्यमपुरुष	हरसि	हरथः	हरथ
उत्तमपुरुष	हरामि	हरावः	हरामः

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
मध्यमपुरुष	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उत्तमपुरुष	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हरतु/हरतात्	हरताम्	हरन्तु
मध्यमपुरुष	हर/हरतात्	हरतम्	हरत
उत्तमपुरुष	हराणि	हराव	हराम

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
मध्यमपुरुष	हरेः	हरेतम्	हरेत
उत्तमपुरुष	हरेयम्	हरेव	हरेम

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
मध्यमपुरुष	अहरः	अहरतम्	अहरत
उत्तमपुरुष	अहरम्	अहराव	अहराम

5. लभ् (पाना) 'डुलभँष्' प्राप्तौ

भ्वादिगण, आत्मनेपदी, सकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यमपुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तमपुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यमपुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तमपुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यमपुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तमपुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यमपुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तमपुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यमपुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तमपुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

6. रम् (रमण या क्रीडा करना)

रमु क्रीडायाम्

भ्वादिगण, आत्मनेपदी, अकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	रमते	रमेते	रमन्ते
मध्यमपुरुष	रमसे	रमेथे	रमध्वे
उत्तमपुरुष	रमे	रमावहे	रमामहे

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	रंस्यते	रंस्येते	रंस्यन्ते
मध्यमपुरुष	रंस्यसे	रंस्येथे	रंस्यध्वे
उत्तमपुरुष	रंस्ये	रंस्यावहे	रंस्यामहे

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	रमताम्	रमेताम्	रमन्ताम्
मध्यमपुरुष	रमस्व	रमेथाम्	रमध्वम्
उत्तमपुरुष	रमै	रमावहै	रमामहै

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	रमेत	रमेयाताम्	रमेरन्
मध्यमपुरुष	रमेथाः	रमेयाथाम्	रमेध्वम्
उत्तमपुरुष	रमेय	रमेवहि	रमेमहि

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अरमत	अरमेताम्	अरमन्त
मध्यमपुरुष	अरमथाः	अरमेथाम्	अरमध्वम्
उत्तमपुरुष	अरमे	अरमावहि	अरमामहि

7. शी (सोना, शयन करना) शीङ् स्वप्ने

अदादिगण, आत्मनेपदी, अकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	शेते	शयाते	शेरते
मध्यमपुरुष	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उत्तमपुरुष	शये	शेवहे	शेमहे

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
मध्यमपुरुष	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उत्तमपुरुष	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
मध्यमपुरुष	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उत्तमपुरुष	शयै	शयावहै	शयामहै

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
मध्यमपुरुष	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उत्तमपुरुष	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अशेत	अशेयाताम्	अशेरत
मध्यमपुरुष	अशेथाः	अशेयाथाम्	अशेध्वम्
उत्तमपुरुष	अशेयि	अशेवहि	अशेमहि

8. श्रु (सुनना) श्रु श्रवणे

भ्वादिगण, परस्मैपदी, सकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
मध्यमपुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तमपुरुष	शृणोमि	शृणुवः/शृण्वः	शृणुमः/शृण्मः

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यमपुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तमपुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	शृणोतु/शृणुतात्	शृणुताम्	शृण्वन्तु
मध्यमपुरुष	शृणु /शृणुतात्	शृणुतम्	शृणुत
उत्तमपुरुष	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यमपुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तमपुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यमपुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तमपुरुष	अशृणवम्	अशृणुव/अशृण्व	अशृणुम/अशृण्म

9. स्था (ठहरना) 'ष्ठा' गतिनिवृत्तौ

भ्वादिगण, परस्मैपदी, अकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यमपुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तमपुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यमपुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तमपुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	तिष्ठतु/तिष्ठतात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यमपुरुष	तिष्ठ/तिष्ठतात्	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तमपुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यमपुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तमपुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यमपुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तमपुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

10. दृश् (देखना) 'दृशिँर्' प्रेक्षणे

भ्वादिगण, परस्मैपदी, सकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यमपुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तमपुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तमपुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पश्यतु/पश्यतात्	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यमपुरुष	पश्य/पश्यतात्	पश्यतम्	पश्यत
उत्तमपुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यमपुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तमपुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यमपुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तमपुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

11. (क) दा (देना) 'डुदाञ्' दाने

जुहोत्यादिगण, उभयपदी, सकर्मक
(परस्मैपदी)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यमपुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तमपुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यमपुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तमपुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ददातु/दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
मध्यमपुरुष	देहि/दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उत्तमपुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यमपुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तमपुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यमपुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तमपुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

(ख) दा (देना) 'डुदाञ्' दाने

जुहोत्यादिगण, उभयपदी, सकर्मक
(आत्मनेपदी)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
मध्यमपुरुष	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उत्तमपुरुष	ददे	दद्वहे	दद्महे

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
मध्यमपुरुष	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उत्तमपुरुष	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
मध्यमपुरुष	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उत्तमपुरुष	ददै	ददावहै	ददामहै

विधिलिङ् (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
मध्यमपुरुष	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उत्तमपुरुष	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
मध्यमपुरुष	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उत्तमपुरुष	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

12. (क) कृ (करना) 'डुकृञ्' करणे

तनादिगण, उभयपदी, सकर्मक

(परस्मैपदी)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यमपुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तमपुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यमपुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तमपुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	करोतु/कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यमपुरुष	कुरु/कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उत्तमपुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यमपुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तमपुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यमपुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तमपुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

(ख) कृ (करना) 'डुकृञ्' करणे

तनादिगण, उभयपदी, सकर्मक

(आत्मनेपदी)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यमपुरुष	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तमपुरुष	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
मध्यमपुरुष	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उत्तमपुरुष	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्यमपुरुष	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तमपुरुष	करवै	करवावहै	करवामहै

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
मध्यमपुरुष	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उत्तमपुरुष	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
मध्यमपुरुष	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उत्तमपुरुष	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

13. पठ् (पढ़ना) 'पठँ' व्यक्तायां वाचि

भ्वादिगण, परस्मैपदी, सकर्मक

लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यमपुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तमपुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यमपुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तमपुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पठतु/पठतात्	पठताम्	पठन्तु
मध्यमपुरुष	पठ/पठतात्	पठतम्	पठत
उत्तमपुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यमपुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तमपुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यमपुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तमपुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

अभ्यास प्रश्न (धातुरूप)

1. 'अलभथाः' इति शब्दरूपमस्ति -
(A) लटि प्रथमपुरुषे एकवचनम्
(B) लोटि मध्यमपुरुषे एकवचनम्
(C) लृटि उत्तमपुरुषे एकवचनम्
(D) लङि मध्यमपुरुषे एकवचनम्

2. 'दा' धातोः आत्मनेपद-लोट्लकार-उत्तमपुरुषैकवचने रूपं वर्तते।
(A) दासीय (B) ददीय
(C) ददै (D) ददे

3. 'कृ' धातोः आत्मनेपद-लङ्लकारस्य उत्तमपुरुषैकवचने रूपं विद्यते-
(A) अकुर्वत (B) अकुरुत
(C) कुर्वे (D) अकुर्वि

4. 'दा' धातोः 'लटि'-प्रथमपुरुषद्विवचने रूपं भवति-
(A) ददाति (B) दग्धः
(C) दतः (D) दत्तः

5. 'भू' धातोः - लोट्लकारस्य मध्यमपुरुषस्य एकवचने रूपमस्ति-
(A) भवतम् (B) भवताम्
(C) भवतात् (D) भवत

6. 'भू' धातोः विधिलिङ्लकारे मध्यमपुरुषैकवचनस्य रूपं किम्?
(A) भवेः (B) भव
(C) भूयाः (D) भवेयुः

1. (D) **2.** (C) **3.** (D) **4.** (D) **5.** (C) **6.** (A)

7. 'दृश्' धातोः लट्लकारस्य प्रथमपुरुषबहुवचने रूपमस्ति–
(A) द्रक्ष्यति (B) द्रक्ष्यन्ति
(C) दृश्यन्ति (D) पश्यन्ति

8. 'पठ्' धातोः लङ्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचनस्य रूपमिदं सिद्ध्यति-
(A) अपठत् (B) अपठन्
(C) अपठाम (D) अपठम्

9. 'कृ' धातोः लोट्लकारस्य अन्यपुरुषैकवचनरूपमस्ति विकल्परूपेण-
(A) कुरुतात् (B) कुरु
(C) कुरुतम् (D) कुरुत

10. 'दा' धातोः विधिलिङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य बहुवचनमस्ति-
(A) दद्यात (B) ददेत्
(C) ददेध्वम् (D) दद्यात्

11. 'कृ' धातोः लोट्लकारे उत्तमपुरुषैकवचनमस्ति-
(A) करवाणि (B) करानि
(C) कृवाणि (D) करवानि

12. 'दृश्' धातोः लृट्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने रूपं भवति-
(A) पश्यन्ति (B) दर्शष्यन्ति
(C) दर्शयिष्यन्ति (D) द्रक्ष्यन्ति

13. 'गम्' धातोः लङ्लकारे मध्यमपुरुषद्विवचने रूपं भवति-
(A) अगच्छत् (B) अगमतम्
(C) अगच्छतम् (D) अगच्छाव

14. 'सेव्' धातोः लट्लकारे मध्यमपुरुषबहुवचने रूपं भवति-
(A) सेवत (B) सेवेताम्
(C) सेवध्वे (D) सेवन्ते

15. 'दा' धातोः लट्लकारे उत्तमपुरुषबहुवचने रूपं भवति-
(A) ददामः (B) दद्मः
(C) ददानि (D) दद्याम

16. 'कृ' धातोः लङ्लकारे उत्तमपुरुषबहुवचने रूपं भवति-
(A) अकुर्म (B) अकरवाम
(C) अकुर्याम (D) अकुरुत

17. 'दृश्' धातोः विधिलिङि उत्तमपुरुषैकवचने रूपं स्यात्-
(A) दृश्येयम् (B) पश्येम
(C) पश्येम् (D) पश्येयम्

18. 'लभ्' धातोः लोट्लकारप्रथमपुरुष-बहुवचने रूपं स्यात्-
(A) लभन्ताम् (B) लभेताम्
(C) लभताम् (D) लभध्वम्

19. 'शृण्वन्तु, श्रोष्यन्ति, शृण्वन्ति' इत्यत्र लकारक्रमः वर्तते–
(A) विधिलिङ्लकारः, लृट्लकारः, लोट्लकारः
(B) लोट्लकारः, लट्लकारः, लृट्लकारः
(C) लोट्लकारः, लृट्लकारः, लट्लकारः
(D) लङ्लकारः, लोट्लकारः, लट्लकारः

20. 'डुकृञ्' धातोः आत्मनेपदे विधिलिङ्मध्यमपुरुषैकवचने रूपं स्यात्-
(A) कुर्वीत (B) कुरुष्व
(C) कुर्याः (D) कुर्वीथाः

21. 'भू' धातोः लोट्-लकारे प्रथमपुरुषस्य एकवचनस्य रूपं स्यात्-
(A) भवन्तु (B) भवतात्
(C) भवताम् (D) भावथात

22. लोट्लकारस्य रूपमस्ति-
(A) पठेत् (B) पठेः
(C) पठतम् (D) पठेतम्

23. 'दा' धातोः लोट्-लकारे मध्यमपुरुषबहुवचनमस्ति-
(A) दत्त (B) दत्तः
(C) ददन्तु (D) दधात

24. 'कृ' धातोः लट्लकारस्य मध्यमपुरुषैकवचने रूपं विद्यते–
(A) करोति (B) करोमि
(C) करोसि (D) करोषि

25. 'पठ्' धातोः लङ्लकारस्य उत्तमपुरुषैकवचने रूपम् अस्ति–
(A) अपठम् (B) अपठः
(C) अपठत् (D) अपठन्

26. 'स्था' धातोः लट्लकारे मध्यमपुरुषस्य बहुवचने रूपं भवति–
(A) स्थास्यसि (B) स्थास्यथ
(C) तिष्ठतः (D)तिष्ठथ

27. 'लभ्' धातोः लोट्लकारे उत्तमपुरुषबहुवचने भवति–
(A) लभन्ताम् (B) लभै
(C) लभावहै (D) लभामहै

28. 'पठ्' धातोः लङ्लकारे मध्यमपुरुष-बहुवचने रूपमस्ति-
(A) अपठत् (B) अपठत
(C) अपठतम (D) अपठताम्

7. (D)	**8.** (B)	**9.** (A)	**10.** (A)	**11.** (A)	**12.** (D)	**13.** (C)	**14.** (C)	**15.** (B)	**16.** (A)	**17.** (D)
18. (A)	**19.** (C)	**20.** (D)	**21.** (B)	**22.** (C)	**23.** (A)	**24.** (D)	**25.** (A)	**26.** (D)	**27.** (D)	**28.** (B)

29. 'भू' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा–

(A) भवामि (B) भवथ

(C) भवन्ति (D) भवति

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

30. 'दा' धातु के मध्यमपुरुष के रूप किस वर्ग में हैं?

(A) ददाति, दत्तः, ददति (B) ददासि, दत्थः, दत्थ

(C) ददामि, दद्वः, दद्मः (D) दद्यात्, दद्याताम्, दद्युः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–299

31. 'लभ्' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा–

(A) लभते (B) लभेते

(C) लभेत (D) लभति

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–203

32. 'ददति' रूप बनता है–

(A) प्रथमपुरुष एकवचन में (B) प्रथमपुरुष द्विवचन में

(C) प्रथमपुरुष बहुवचन में (D) उत्तमपुरुष बहुवचन में

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–299

33. 'गम्' धातु लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन में रूप होता है–

(A) गच्छतः (B) गच्छामि

(C) गच्छत (D) गच्छथः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131

34. 'गच्छति' पद है–

(A) गम् + लट् + प्रथम पुरुष एकवचन

(B) गम् + शतृ + सप्तमी एकवचन + पुँल्लिङ्ग

(C) गम् + शतृ + सप्तमी एकवचन + नपुंसकलिङ्ग

(D) उपर्युक्त सभी

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–149

35. 'पठामः' पठ् धातु का रूप है–

(A) लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन

(B) लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन

(C) लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन

(D) विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन।

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–172

36. 'तिष्ठामि' इति क्रियापदस्य लकारं लिखत–

(A) लट् (B) लृट्

(C) लङ् (D) लोट्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234

37. पठ् धातु के वर्तमानकाल में मध्यमपुरुष के एकवचन का रूप है–

(A) पठति (B) पठसि

(C) पठन्ति (D) पठामि

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–172

38. 'भू' धातु लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है–

(A) बभूव (B) बभूवतुः

(C) बभूवुः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

39. 'गम्' धातु लिट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन में रूप बनता है–

(A) जगाम (B) जग्मुः

(C) जग्म (D) जग्मतुः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131

40. 'गम् धातु' लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में हो जाता है–

(A) अगच्छत् (B) जग्मुः

(C) जगाम (D) अगमत्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131

41. 'गम् धातु' लिट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप है–

(A) जगाम (B) जग्मतुः

(C) जग्मथुः (D) जग्म

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131

42. 'बभूव' रूप किस लकार का है?

(A) लङ् (B) लुङ्

(C) लिट् (D) लिङ्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

29. (D) 30. (B) 31. (A) 32. (C) 33. (D) 34. (A) 35. (A) 36. (A) 37. (B) 38. (A) 39. (C) 40. (C) 41. (B) 42. (C)

43. संस्कृत में भविष्यकाल के लिये किस लकार का प्रयोग किया जाता है?

(A) लट्लकार (B) लोट्लकार

(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–296

44. 'दृश्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा?

(A) अपश्यत् (B) द्रक्ष्यति

(C) द्रक्ष्यन्ति (D) पश्यतु

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–154

45. 'गम्' धातु लृट्लकार उत्तमपुरुष में एकवचन का रूप है?

(A) गमिष्यामि (B) गच्छताम्

(C) अगच्छत् (D) अगच्छन्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131

46. 'द्रक्ष्यसि' क्रिया का लकार है–

(A) लुट् (B) लृट्

(C) लुङ् (D) लट्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–154

47. 'दास्यन्ति' इति कस्य लकारस्य कस्य पुरुषस्य कस्य वचनस्य च रूपम् अस्ति?

(A) लट्लकारः मध्यमपुरुषः एकवचनम्

(B) लृट्लकारः प्रथमपुरुषः बहुवचनम्

(C) लोट्लकारः प्रथमपुरुषः एकवचनम्

(D) विधिलिङ्लकारः मध्यमपुरुषः द्विवचनम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–300

48. 'भू' धातु का 'भवत' रूप–

(A) विधिलिङ्लकार म.पु. बहुवचन का है।

(B) लोट्लकार म.पु. बहुवचन का है।

(C) लङ्लकार म.पु. बहुवचन का है।

(D) लोट्लकार प्र.पु. एकवचन का है।

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

49. 'भू' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में रूप होगा–

(A) भव (B) भवतम्

(C) भवत (D) भवन्तु

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

50. 'भू' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में हो जाता है–

(A) भविता (B) भवतु

(C) भवतः (D) भव

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

51. 'भू' धातु लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन में हो जाता है–

(A) भवामि (B) भवानि

(C) भविष्यामि (D) भवन्तु

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

52. 'पठ्' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप है–

(A) पठ (B) पठामि

(C) पठताम् (D) पठतु

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–172

53. 'भवानि' में लकार है–

(A) लट् (B) लोट्

(C) लङ् (D) विधिलिङ्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

54. 'दृश्' धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप है–

(A) पश्यतम् (B) पश्यताम्

(C) पश्याव (D) अपश्यन्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–154

55. 'गच्छतु' इत्यत्र कः लकारः?

(A) लोट् (B) लट्

(C) लङ् (D) लृट्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131

43. (C) 44. (B) 45. (A) 46. (B) 47. (B) 48. (B) 49. (A) 50. (B) 51. (B) 52. (C) 53. (B) 54. (A) 55. (A)

56. 'कृ' धातोः लोट्लकारे अन्यपुरुषस्य एकवचनमस्ति–

(A) करोति (B) करोषि

(C) कृवाणि (D) करवानि

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514

57. 'कृ' धातोः लोट्लकारस्य मध्यमपुरुष-एकवचनरूपमस्ति विकल्परूपेण–

(A) कुरुतात् (B) कुरु

(C) कुरुतम् (D) कुरुत

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514

58. 'भू' धातु लोट्लकार म.पु. बहुवचन में रूप होगा–

(A) भवतम् (B) भवत

(C) भवन्तु (D) भवेत

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

59. 'गच्छ' इति क्रियापदे लकारः अस्ति–

(A) लोट् (B) लृट्

(C) लट् (D) विधिलिङ्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131

60. 'श्रूयताम्' इति रूपम् अस्ति–

(A) लोट्लकारस्य (B) लिङ्लकारस्य

(C) लट्लकारस्य (D) लुट्लकारस्य

स्रोत– धातुरत्नाकर (पञ्चम भाग), पेज–315

61. 'गम्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप बनता है–

(A) अगच्छम् (B) अगच्छाव

(C) अगच्छाम (D) अगच्छः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131

62. 'भू' धातु परस्मैपद का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है–

(A) अभवन् (B) भवतु

(C) अभवः (D) भवताम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104

63. 'अभवत्' रूप है?

(A) लङ् प्र. पु. एकवचन (B) लङ् म. पु. बहुवचन

(C) लुङ् प्र. पु. एकवचन (D) लुङ् म. पु. बहुवचन

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104

64. 'लभ्' धातोः लङ्लकारस्य प्रथमपुरुषस्य एकवचने रूपं भवति–

(A) अलभताम् (B) अलभम्

(C) अलभत (D) अलभावहै

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–204

65. 'अलभत' में कौन सा लकार है?

(A) लट् (B) लोट्

(C) लङ् (D) विधिलिङ्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–204

66. लङ्लकार में गम् धातु का शुद्ध रूप है–

(A) अगच्छः (B) अगच्छेत्

(C) अगमः (D) अगमिष्यः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131

67. 'स्था' धातु लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप है–

(A) अतिष्ठताम् (B) अतिष्ठः

(C) अतिष्ठतम् (D) अस्थातम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234

68. 'कृ' धातु (परस्मैपदी) लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप है–

(A) अकुर्वाथाम् (B) अकरोः

(C) अकरोतम् (D) अकुरुतम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514

69. 'पठ्' धातोः लङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य एकवचने रूपं भवति–

(A) अपठत् (B) अपठतम्

(C) अपठम् (D) अपठः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173

56.(A) 57.(A) 58.(B) 59.(A) 60.(A) 61.(C) 62.(C) 63.(A) 64.(C) 65.(C) 66.(A) 67.(C) 68.(D) 69.(D)

70. 'अभवन्' में लकार है–

(A) लट् (B) लोट्

(C) विधिलिङ् (D) लङ्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104

71. 'अभवत्' पदे लकारोऽस्ति–

(A) विधिलिङ् (B) लुङ्

(C) लोट् (D) लङ्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104

72. 'अकरोः' रूप है–

(A) 'कृ' धातु, लोट्लकार, प्र. पु., एकवचन

(B) 'कृ' धातु, लङ्लकार, म. पु., एकवचन

(C) 'कृ' धातु, लट्लकार, प्र. पु., बहुवचन

(D) 'कृ' धातु, लृट्लकार, उ. पु., द्विवचन

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514

73. 'स्था' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा–

(A) तिष्ठत् (B) अतिष्ठति

(C) अतिष्ठन् (D) अतिष्ठत

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234

74. पठ् के लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप निम्नलिखित में से कौन-सा होगा?

(A) अपठाम (B) अपठाव

(C) अपठम् (D) अपठन्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173

75. 'गच्छेत' किस लकार का रूप है?

(A) लट्लकार का (B) लोट्लकार का

(C) लङ्लकार का (D) विधिलिङ्लकार का

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–132

76. 'पठ्' धातु के विधिलिङ् में प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होता है–

(A) पठानि (B) पठेयुः

(C) अपठाव (D) पठन्ति

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173

77. 'लभ्' धातु आत्मनेपद के विधिलिङ् मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है–

(A) लभेध्वम् (B) लभध्वम्

(C) लभेत (D) लभेः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–204

78. 'दा'–धातोः विधिलिङ्लकारे प्रथमपुरुषस्य एकवचनमस्ति–

(A) दद्यात् (B) ददेत्

(C) ददेध्वम् (D) दद्याम

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–300

79. 'पठेत्' रूप है–

(A) लट् प्रथमपुरुष एकवचन

(B) लट् म. प. बहुवचन

(C) विधिलिङ् प्र. पु. एकवचन

(D) विधिलिङ् म. प. बहुवचन

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173

80. 'पठ्' धातु विधिलिङ् प्रथमपुरुष द्विवचन में हो जाता है–

(A) पठ (B) पठताम्

(C) पठेताम् (D) पठेत्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173

81. 'सेव्' धातोः विधिलिङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य एकवचनमस्ति–

(A) सेवेथाः (B) सेवसे

(C) सेवेयाथाम् (D) सेवेताम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–233

82. 'दद्युः' निम्नलिखित में से रूप है–

(A) लृट्लकार का (B) लङ्लकार का

(C) विधिलिङ्लकार का (D) लट्लकार का

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–300

83. भू-धातोः विधिलिङ्लकारे मध्यमपुरुष-एकवचनस्य रूपं किम्?

(A) भवेः (B) भव

(C) भूया (D) भवेयुः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104

70. (D) 71. (D) 72. (B) 73. (D) 74. (A) 75. (D) 76. (B) 77. (A) 78. (A) 79. (C) 80. (C) 81. (A) 82. (C) 83. (A)

84. 'स्था' धातोः विधिलिङ्लकारस्य मध्यमपुरुषस्य एकवचने किं रूपं भवति?

(A) तिष्ठतु (B) तिष्ठानि

(C) तिष्ठेः (D) तिष्ठेयम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234

85. 'भवेयुः' क्रियापदे वर्तते–

(A) लट्प्रथमपुरुषे एकवचनम्

(B) विधिलिङ्मध्यमपुरुषे द्विवचनम्

(C) विधिलिङ्प्रथमपुरुषे बहुवचनम्

(D) विधिलिङ्-उत्तमपुरुषे बहुवचनम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104

86. 'ददामि' किस धातु का रूप है?

(A) वद् (B) धा

(C) दा (D) दध

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–299

87. 'सेवामहे' में वचन है–

(A) एकवचन (B) द्विवचन

(C) बहुवचन (D) अवचन

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–232

88. 'सेवते' में धातु है–

(A) सेव् (B) सैव्

(C) सिव् (D) साव्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–232

89. 'तिष्ठति' में धातु है–

(A) गच्छ (B) स्था

(C) तिष्ठ् (D) तिष्ठति

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234

90. 'हृ' धातोः रूपं न भवति–

(A) हरामी (B) हरामि

(C) हराणि (D) अहरत्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–239

91. इनमें से कौन-सी धातु सकर्मक नहीं है?

(A) पठ् (B) हन्

(C) लिख् (D) नृत्

स्रोत–बृहद्धातुकुसुमाकर - हरेकान्त मिश्र, पेज-407

92. धातुएँ कितने प्रकार की होती हैं?

(A) दो प्रकार से

(B) तीन प्रकार से

(C) चार प्रकार से

(D) पाँच प्रकार से

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–301

93. भू धातुः–

(A) अकर्मकः (B) सकर्मकः

(C) द्विकर्मकः (D) एककर्मकः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–311-312

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *

Sanskritganga Official

New App Download from Google Play Store

84. (C) 85. (C) 86. (C) 87. (C) 88. (A) 89. (B) 90. (A) 91. (D) 92. (B) 93. (A)

12 Unit वैदिक साहित्य का इतिहास

वेदों का रचनाकाल

- वेदों का रचनाकाल निर्धारण वैदिक वाङ्मय की एक जटिल समस्या है। विभिन्न विद्वानों ने भाषा, रचनाशैली, धर्म एवं दर्शन, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष, उत्खनन में प्राप्त सामग्री, अभिलेख आदि के आधार पर वेदों का रचनाकाल निर्धारित करने का प्रयास किया है, किन्तु इनसे अभी तक कोई सर्वमान्य रचनाकाल निर्धारित नहीं हो सका है।
- भारतीय षड्दर्शन- पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा (वेदान्त), सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक एवं वेदभाष्यकारों ने वेद के अपौरुषेयत्व का कथन किया है। पूर्वमीमांसा वेद को नित्य एवं अनुत्पन्न मानती है।
- पाश्चात्त्य विद्वान् भारतीय परम्परागत 'वेद के अपौरुषेयत्व सिद्धान्त' को स्वीकार नहीं करते। उनका मानना है कि वेद आर्यों की रचना है, मानवकृत (पौरुषेय) हैं; अतएव अपौरुषेय नहीं है।

प्रो. मैक्समूलर का मत-

- प्रो. मैक्समूलर ने सन् 1859 ई. में स्वरचित ग्रन्थ **"A History of Ancient Sanskrit literature"** में वेदों के काल निर्णय का सर्वप्रथम प्रयास किया।
- मैक्समूलर के अनुसार सर्वप्राचीन ऋग्वेद की रचना 1200 ई. पू. (विक्रमपूर्व) में हुई होगी, क्योंकि विक्रम से लगभग 500 वर्ष पूर्व उदित हुआ बौद्ध धर्म वैदिक वाङ्मय की सत्ता को स्वीकार करता है।
- प्रो. मैक्समूलर ने समग्र वैदिककाल को चार विभागों में बाँटा है – 1. छन्दकाल 2. मन्त्रकाल 3. ब्राह्मणकाल 4. सूत्रकाल इसमें प्रत्येक युग की विचार धारा के उदय तथा ग्रन्थ रचना के लिए उन्होंने 200 वर्षों का काल माना है।

1. छन्दकाल - 1200 से 1000 विक्रमपूर्व (ई. पू.)
2. मन्त्रकाल - 1000 से 800 विक्रमपूर्व (ई. पू.)
3. ब्राह्मणकाल - 800 ई. पू. से 600 विक्रमपूर्व (ई. पू.)
4. सूत्रकाल - 600 ई. पू. से 400 ई. पू. तक

- सन् 1890 ई. में प्रकाशित **'Physical Religion'** (भौतिक धर्म) नामक अपनी पुस्तक में प्रो. मैक्समूलर ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए लिखा है कि- ''इस भूतल पर कोई भी ऐसी शक्ति नहीं है, जो कभी निश्चय कर सके कि वैदिक मन्त्रों की रचना 1000 या 1500 या 2000 या 3000 विक्रमपूर्व में की गयी हो।''
- परन्तु हम भारतीयों का दुर्भाग्य कि वेदों के काल निर्णय के विषय में मैक्समूलर के 1200 विक्रमपूर्व को ही हम सनातन सत्य मानते आ रहे हैं, परीक्षाओं में भी यह प्रश्न प्रमुखता से पूछा जा रहा है, जबकि इस मत के प्रणेता मैक्समूलर ने स्वयं इसे अपनी भूल मानते हुए, इस मत का खण्डन कर चुके हैं।

ए. वेबर का मत-

- जर्मन विद्वान प्रो. ए. वेबर ने कहा है– ''वेदों का समय निश्चित नहीं किया जा सकता। वे उस तिथि के बने हुए हैं, जहाँ तक पहुँचने के लिए हमारे पास उपयुक्त साधन नहीं है। वर्तमान प्रमाण, हम लोगों को उस समय के उन्नत शिखर तक पहुँचाने में असमर्थ हैं।''
- प्रो. वेबर यह भी कहते हैं कि – ''वेदों के समय को कम से कम 1200 ई. पू. या 1500 ई. पू. के बाद का कथमपि स्वीकार नहीं किया जा सकता।''
- प्रो. वेबर ने अपनी पुस्तक "History of Indian literature" में यहाँ तक लिख दिया कि – "Any such of attempt of defining the relic antiquity is absolutely fruitless" अर्थात् वेदों का काल निर्धारण के लिए प्रयत्न करना सर्वथा बेकार है।

डॉ. जैकोबी का मत-

- जर्मन विद्वान डॉ. जैकोबी का वैदिक काल विषयक सिद्धान्त ज्योतिष की आधार शिला पर अवलम्बित है; जो बालगंगाधर तिलक के मत से मिलता-जुलता है।
- डॉ. जैकोबी ने कृत्तिका और बसन्तपात के आधार पर वेदमन्त्रों का रचनाकाल 4590 ई. पू. तथा ब्राह्मण ग्रन्थों का रचनाकाल 2500 ई. पू. के पश्चात् स्वीकार किया है।
- इसप्रकार संक्षेप में याकोबी के अनुसार 4500 ई. पू. से 3000 ई. पू. ऋग्वेद का रचनाकाल है तथा 3000 ई. पू. से. 2000 ई. पू. ब्राह्मणों का रचनाकाल है।

बालगंगाधर तिलक का मत-

- लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद में उपलब्ध ज्योतिष विषयक साक्ष्यों के आधार पर वेदों का काल 4000 से 6000 विक्रमपूर्व स्वीकार किया है।
- तिलक जी ने वैदिक काल को चार विभागों में रखा है-
  1. अदितिकाल - 6000 से 4000 विक्रम पूर्व तक
  2. मृगशिरा काल - 4000 से 2500 विक्रमपूर्व तक (ऋग्वेदसंहिता का मन्त्रकाल)
  3. कृत्तिका काल - 2500 से 1400 विक्रमपूर्व तक (तैत्तिरीय संहिता व ब्राह्मणकाल)
  4. अन्तिम काल - 1400 से 500 विक्रमपूर्व तक (सूत्रग्रन्थों का रचनाकाल)
- लोकमान्य तिलक जी ने **"Orion" (ओरायन)** के पश्चात् लिखे गये अपने ग्रन्थ "Arctic Home in the Vedas" में वेदकाल को 10000 (दस हजार) ई. पू. बतलाया। उन्होंने विज्ञान तथा ज्योतिष के आधार पर यह सिद्ध किया कि भारत में आने से पूर्व आर्य लोग उत्तरी ध्रुव में रहते थे, और वहाँ पर भी वे वैदिक धर्म को ही मानते थे।

एम. विण्टरनित्स का मत-

- विण्टरनित्स ने ब्राह्मणग्रन्थों, पाणिनि व्याकरण की संस्कृत भाषा तथा अशोक के शिलालेखों की भाषा – इन सबका वैदिक भाषा से साम्य को ध्यान में रखते हुए, ऋग्वेद का काल जैकोबी तथा तिलक द्वारा निर्धारत तिथि (4500 से 6000 ई. पू.) के बीच में स्वीकार किया है।

भारतीय परम्परागत विचार-

- भारतीय परम्परावादी विद्वानों के मतानुसार वेदों का काल निर्धारण करना मूर्खता ही नहीं बल्कि असम्भव है।
- भारतीय परम्परागत विद्वानों का विचार है कि – 'वेद नित्य हैं, और सृष्टि के प्रारम्भ से ही वेदों का आविर्भाव हुआ है, ऋग्वेद का पुरुष सूक्त वेदों की उत्पत्ति के लिए स्वयं प्रमाण हैं-
  तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
  छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्मादजायत॥
- भारतीय मत में जिस परमात्मा ने सृष्टि की उत्पत्ति की उसी ने सृष्टि के पूर्व वेदों की रचना की होगी, इसीलिए वेद अपौरुषेय हैं।
- भारतीय परम्परावादी विद्वानों का कहना है कि सृष्टिकर्ता विधाता ने सृष्ट्युत्पत्ति के पूर्व जिस विचारधारा की सर्वप्रथम कल्पना अपनी बुद्धि में की, वही आम्नाय या वेद हैं।
- ऋग्वेद का ही कथन है- **''तस्मादृचो पातक्षन् यजुस्तस्मादपाकयन्। सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुखम्॥''**
- आदि शङ्कराचार्य ने वेदों का सर्वज्ञानमयत्व मानते हुए कहते हैं- **महतः ऋग्वेदादेः शास्त्रस्य अनेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः...** अर्थात् ऋग्वेदादि महान् शास्त्र अनेक विद्यास्थानों से विकसित हुआ है, और यह प्रदीपवत् समस्त विषयों को प्रकाशित करता है। इसप्रकार के सर्वज्ञान सम्पन्न शास्त्र का उत्पत्ति स्थान ब्रह्म ही हो सकता है, क्योंकि सर्वज्ञ परब्रह्म परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी से ऋग्वेदादि सर्वज्ञानसम्पन्न शास्त्र की उत्पत्ति नहीं हो सकती।
- **''ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।''** के अनुसार सर्वज्ञानमय पूर्णवेद की उत्पत्ति पूर्णब्रह्म से ही सम्भव है।
- भगवान् बादरायण व्यास ने भी ब्रह्मसूत्रस्थ **''विप्रतिषेधाच्च''** के द्वारा इसी मत को सूचित किया है।
- भगवान् जैमिनि ने पूर्वमीमांसादर्शन में **''नित्यस्तु स्याद् दर्शनस्य परार्थत्वात्''** इत्यादि छः सूत्रों द्वारा अनित्यवादी पक्षों के तर्कों का खण्डन करते हुए, वेदों का नित्यत्व प्रतिपादित करते हैं।
- उत्तरमीमांसा में महर्षि बादरायण व्यास जी ने **'शास्त्रयोनित्वात्'** इस सूत्र के द्वारा वेदों का उद्गम परब्रह्म से ही हुआ है। इस सिद्धान्त को स्थापित किया है।
- नैयायिकों का मानना है कि- "सृष्टि के आदि में ईश्वर की निःश्वासवायु से वेदों की उत्पत्ति हुई-
  ''अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
  आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः॥''
- इसप्रकार भारतीय परम्परावादी विद्वान् वेदों को नित्य स्वीकार करते हुए अपौरुषेय मानते हैं।

वेदों का सामान्य परिचय

➢ भारतीय संस्कृति और हिन्दूधर्म का **'वेद'** ही मूल आधार है। विश्व का सर्वप्रथम वाङ्मय **'वेद'** ही है। **'मानवसृष्टि'** के पूर्व परमेश्वर ने उनके कल्याणार्थ **'वेद'** का आविष्कार किया। **'वेद'** को अनादि और **'अपौरुषेय'** कहा जाता है।

➢ **वेद शब्द की निष्पत्तिः –** 'वेद' शब्द की निष्पत्ति 'विद्' धातु से 'भाव' 'कर्म' और 'करण' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय के जोड़ देने पर होती है। अतः 'वेद' शब्द का अर्थ ज्ञान, ज्ञान का विषय और ज्ञान का साधन किया जाता है।

(i) विद सत्तायाम् (होना, दिवादिगण)
(ii) विद ज्ञाने (जानना, अदादिगण)
(iii) विद विचारणे (विचारना, रुधादिगण)
(iv) विदऌ लाभे (प्राप्त करना, तुदादिगण)

इसके लिये कारिका है-

सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे।
विन्दति विन्दते प्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात्॥

वेद की परिभाषा या लक्षण

➢ **आचार्य सायण ने वेद शब्द की परिभाषा की है-**
इष्टप्राप्त्यनिष्ट-परिहारयोरलौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।
अर्थात् जो ग्रन्थ इष्ट-प्राप्ति और अनिष्ट-निवारण का अलौकिक उपाय बताते हैं, उन्हें वेद कहते हैं।

➢ ऋक्प्रातिशाख्य की व्याख्या में विष्णुमित्र ने वेद का अर्थ किया है- **विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादि-पुरुषार्था इति वेदाः** (विष्णुमित्र)

➢ वेद शब्द का भावार्थ

(i) जिन ग्रन्थों के द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ-चतुष्टय के अस्तित्व का बोध होता है।
(ii) इनसे पुरुषार्थचतुष्टय का ज्ञान प्राप्त होता है।
(iii) इनसे पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति होती है।
(iv) इनमें पुरुषार्थचतुष्टय का विवेचन किया जाता है।

➢ लौगाक्षिभास्करानुसार वेद का लक्षण-

'अपौरुषेयं वाक्यं वेदः' - अपौरुषेय वाक्य ही वेद है।

➢ श्रुति, निगम, आगम, त्रयी, छन्दस्, आम्नाय, स्वाध्याय वेदों के अर्थ में इन शब्दों का भी प्रयोग होता है।

वेद के प्रकार- वैदिक-साहित्य को सुविधा की दृष्टि से चार भागों में बाँटा जाता है-

1. वेदों की संहिताएँ
2. ब्राह्मण-ग्रन्थ
3. आरण्यक-ग्रन्थ
4. उपनिषद्

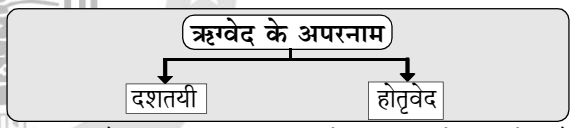
➢ **वैदिक संहिताएँ-** वेदों की चार संहिताएँ हैं-
(i) ऋग्वेदसंहिता (ii) यजुर्वेदसंहिता
(iii) सामवेदसंहिता (iv) अथर्ववेदसंहिता

1.ऋग्वेद

➢ वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीन व प्रथम ग्रन्थ का नाम ऋग्वेद है।

➢ ऋग्वेद शब्द में ऋच् या ऋक् का अर्थ है- 'स्तुतिपरक मन्त्र।' **'ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्।'** जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है, उन्हें ऋक् या ऋचा कहते हैं।

➢ ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं, अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं।



➢ भाषा, शैली, व्याकरण एवं मन्त्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह किसी एक समय की रचना नहीं, अपितु विभिन्न काल में विभिन्न ऋषियों द्वारा प्रणीत रचनाओं का संग्रह-ग्रन्थ है। ऋचाओं के संग्रह के कारण इसे ऋग्वेद-संहिता भी कहते हैं।

➢ यहाँ पर 'संहिता' शब्द का प्रयोग संकलन या संग्रह अर्थ में होता है।

➢ 'होता' ऋग्वेद का प्रतिनिधित्व करता है और यज्ञ में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करता है।

➢ चारों वेदों में ऋग्वेद सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और आदरणीय माना जाता है।

➢ ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद है।

➢ भारतीय और पाश्चात्त्य सभी विद्वान् इसको विश्व का सबसे प्राचीन ग्रन्थ मानते हैं।

➢ इसमें अधिकांश देव इन्द्र, विष्णु, मरुत् आदि प्राकृतिक तत्त्वों के प्रतिनिधि हैं।

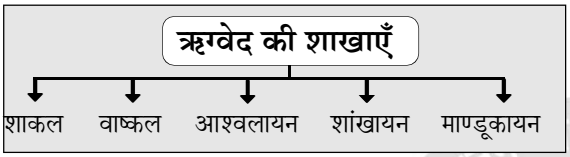
➢ ऋग्वेद चारों वेदों में सबसे विशालकाय ग्रन्थ है।

ऋग्वेद की शाखायें-

- महर्षि पतञ्जलि (150 ई.पू.) ने महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया है। **'एकविंशतिधा बाहृवृच्यम्'**
- इनमें से केवल पाँच शाखाओं का मुख्य रूप से उल्लेख प्राप्त होता है-

➢ **चरणव्यूह के अनुसार प्रमुख पाँच शाखायें ये हैं–**

(i) शाकल (ii) वाष्कल (iii) आश्वलायन
(iv) शांखायन (v) माण्डूकायन



(i) शाकल शाखा- सम्प्रति ऋग्वेद की यही शाखा प्रचलित है। यही शाखा उपलब्ध है। शाकल शाखा में 1017 सूक्त हैं।

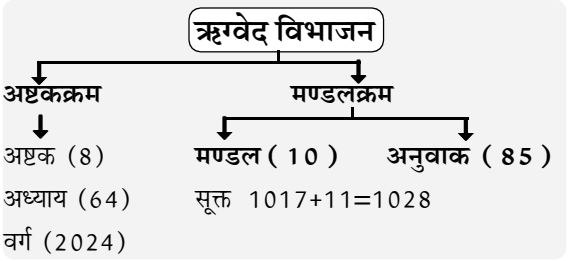
(ii) वाष्कल शाखा- यह शाखा उपलब्ध नहीं है। वाष्कल शाखा में 1025 सूक्त थे।

(iii) आश्वलायन शाखा- यह संहिता और इसके ब्राह्मण ग्रन्थ सम्प्रति उपलब्ध नहीं है। इस शाखा के श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र ही उपलब्ध हैं।

(iv) शांखायन- यह शाखा उपलब्ध नहीं है। इसके ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौत सूत्र और गृह्यसूत्र ही प्राप्त हैं।

(v) माण्डूकायन- यह शाखा अप्राप्य है।

ऋग्वेद का विभाजन- (i) अष्टकक्रम (ii) मण्डलक्रम



- आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद भी कहा जाता है।
- ऋग्वेद की उत्पत्ति अग्नि से हुई है।
- ऋग्वेद वाक्तत्त्व का संकलन है।
- ऋग्वेद में ऋचाओं का दो प्रकार से विभाजन है-
  (i) अष्टकक्रम (ii) मण्डलक्रम
- प्रत्येक अष्टक में 8 अध्याय होते हैं, इसप्रकार कुल 64 अध्याय हैं।
- प्रत्येक अध्याय के अवान्तर विभागों का नाम 'वर्ग' है।
- ऋग्वेद में समस्त वर्गों की संख्या 2024 है।
- मण्डलक्रम के अनुसार सम्पूर्ण ऋग्वेद दस मण्डलों में विभक्त है। अतः इसे **'दशतयी'** नाम से भी जाना जाता है।
- प्रत्येक मण्डल में अनुवाक, सूक्त और मन्त्र हैं।
- ऋग्वेद के दश मण्डलों में 85 अनुवाक हैं।
- ऋग्वेद में कुल सूक्तों की संख्या 1028 है। जिसमें 11 बालखिल्य सूक्त हैं।
- मन्त्रों की संख्या 10580-1/4 या (10552) हैं।

➢ अष्टक के अनुसार ऋग्वेद में-

अष्टक-8 अध्याय=64 वर्ग-2024 मन्त्र=10552

नोट- कुछ विद्वानों के अनुसार वर्गों की संख्या 2006 भी बतायी गयी है।

ऋग्वेदीय ब्राह्मण- ऋग्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मणों की संख्या दो है।
(i) ऐतरेय ब्राह्मण (i) कौषीतकि ब्राह्मण (शांखायन ब्राह्मण)

(i) ऐतरेय ब्राह्मण-

- ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय हैं।
- प्रत्येक पाँच अध्यायों की एक पञ्चिका और प्रत्येक अध्याय में कण्डिकाएँ हैं, जिसे खण्ड भी कहते हैं।
- ऐतरेय ब्राह्मण में 8 पञ्चिकायें तथा 285 खण्ड हैं।

(ii) कौषीतकि ब्राह्मण-

- कौषीतकि ब्राह्मण शांखायन शाखा का ब्राह्मण है, इसलिये इसे 'शांखायन ब्राह्मण' भी कहते हैं।
- कौषीतकि ब्राह्मण में 30 अध्याय हैं, 226 खण्ड हैं।
- प्रत्येक अध्याय में पाँच से लेकर सत्रह तक खण्ड हैं, कुल खण्डों की संख्या 226 है।

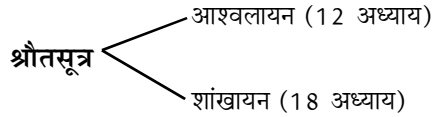
ऋग्वेदीय आरण्यक- ऋग्वेद से सम्बद्ध दो आरण्यक ग्रन्थ हैं-
(i) ऐतरेय आरण्यक (ii) शांखायन आरण्यक

- ऐतरेय आरण्यक में 5 भाग हैं। इन भागों को आरण्यक या प्रपाठक कहते हैं।
- शांखायन आरण्यक में 15 अध्याय हैं।

ऋग्वेदीय उपनिषद्- ऋग्वेद के 2 उपनिषद् प्राप्त होते हैं-
(i) ऐतरेय उपनिषद् (ii) कौषीतकि उपनिषद्

- ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम ऐतरेयोपनिषद् है।
- ऐतरेय उपनिषद् में तीन अध्याय हैं।
- कौषीतकि उपनिषद् में चार अध्याय हैं।

ऋग्वेदीय श्रौतसूत्र-



ऋग्वेदीय धर्मसूत्र- वासिष्ठ (वसिष्ठ) धर्मसूत्र। इसमें 4 अध्याय हैं।

ऋग्वेदीय प्रातिशाख्य-

- ऋक्-प्रातिशाख्य ऋग्वेद का एकमात्र उपलब्ध प्रातिशाख्य है। इसके रचयिता शौनक हैं।
- ऋग्वेद प्रातिशाख्य तीन अध्यायों में विभक्त है, प्रत्येक अध्याय में 6 पटल हैं, कुल 18 पटल हैं।

ऋग्वेदीय शुल्बसूत्र- ऋग्वेद का कोई शुल्बसूत्र नहीं प्राप्त होता है।

ऋग्वेदीय शिक्षा- ऋग्वेद के दो शिक्षा ग्रन्थ प्राप्त होते हैं-

(i) पाणिनीय शिक्षा (ii) वसिष्ठ शिक्षा

ऋग्वेद का वर्ण्य-विषय-

- यास्क के अनुसार ऋग्वेद की विषयवस्तु है-

(i) धर्मनिरपेक्ष (ii) धार्मिक सूक्त (iii) दार्शनिक सूक्त

धार्मिक सूक्त- ऋग्वेद का अधिकांश भाग धार्मिक सूक्तों की श्रेणी में आता है।

- धार्मिक सूक्तों में विभिन्न देवों को सम्बोधित करते हुए उनकी स्तुति की गयी है- जैसे-

इन्द्रसूक्त (1/32) विष्णु सूक्त (1/154)
अग्निसूक्त (1/1) सवितृ सूक्त (1/35)
वरुण सूक्त (1/25) पर्जन्य सूक्त (5/83)
उषा सूक्त (1/48) उषस् सूक्त (4/51)
मरुत् सूक्त (1/85) अश्विन् सूक्त (7/71)

दार्शनिक सूक्त-

- ऋग्वेद के लगभग 12 सूक्त ऐसे हैं, जिनमें उच्चकोटि के दार्शनिक विचारों के बीज मिलते हैं।
- दार्शनिक सूक्त अपेक्षाकृत अर्वाचीन दशम मण्डल में उपलब्ध होते हैं।
- दार्शनिक सूक्तों में दशम मण्डल में आये हुये नासदीय सूक्त, हिरण्यगर्भसूक्त, पुरुषसूक्त तथा वाक्सूक्त का विशेष महत्त्व है।

नासदीय सूक्त	-	10/129
हिरण्यगर्भ सूक्त	-	10/121
पुरुष सूक्त	-	10/90
वाक् सूक्त	-	10/125

- इनमें नासदीय, पुरुष तथा हिरण्यगर्भ सूक्त सृष्टि उत्पत्ति विषयक सूक्त माने जाते हैं।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण सूक्त-

दानस्तुति (10/107,117) सञ्ज्ञान सूक्त (10/191)
श्रद्धा सूक्त (10/151) अस्यवामीय (1/164)
मण्डूक (7/103)

संवाद सूक्त-

ऋग्वेद में कुछ ऐसे सूक्त हैं जिनमें प्राचीनतम कथा-साहित्य की प्रधानता है, उन्हें **'संवाद सूक्त'** का नाम दिया गया है।

- डॉ. ओल्डेनवर्ग ने संवाद सूक्तों को **'आख्यानसूक्त'** कहा है। ये सूक्त संख्या में लगभग 20 माने गये हैं, जिनमें अधिकांशतः दशम मण्डल में उपलब्ध होते हैं-

मुख्य संवाद सूक्त-

(i) पुरूरवा-उर्वशी संवाद (10.95)
(ii) यम-यमी संवाद (10.10)
(iii) सरमा-पणि संवाद (10/108)
(iv) इन्द्र–मरुत् संवाद (1/165)
(v) अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद (1/179)
(vi) विश्वामित्र-नदी संवाद (3/33)

ऋग्वेदीय देवता- 'तिस्रः एव देवताः' अर्थात् यास्क के निरुक्त में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन किया गया है-

(i) पृथिवीस्थानीय (अग्नि, बृहस्पति, सोम आदि)
(ii) अन्तरिक्षस्थानीय (इन्द्र, रुद्र आदि)
(iii) द्युस्थानीय (सूर्य आदि)

मन्त्र-द्रष्टा ऋषिकायें-

- ऋग्वेद में 24 ऋषिकाओं द्वारा दृष्ट मन्त्र 224 हैं। घोषा-काक्षीवती, यमी-वैवस्वती, इन्द्राणी, आत्रेयी, उर्वशी, अदिति, अपाला आदि ऋषिकायें हैं।

ऋग्वेद का रचना विन्यास-क्रम-

- ऋग्वेद को पौरुषेय मानने वाले, भारतीय एवं पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद के विभिन्न मण्डलों की रचना में शताब्दियों का अन्तर रहा है।
- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन अंश द्वितीय से सप्तम मण्डल तक माना जाता है।
- 2 से 7 तक के मण्डल को **'वंश मण्डल'** अथवा **'परिवार-मण्डल'** कहते हैं।
- 8वें मण्डल में अधिकांश सूक्त के ऋषि कण्व तथा अङ्गिरा वंश के हैं।

- 9वें मण्डल में समस्त मन्त्र सोम विषयक हैं। इसे 'पवमान सोम मण्डल' भी कहा जाता है।
- ऋग्वेद का दशम मण्डल अर्वाचीन है।
- दशम मण्डल में देवताओं की स्तुति से सम्बद्ध सूक्त अपेक्षाकृत बहुत कम है।

ऋग्वेद के भाष्यकर्ता-

(1) स्कन्दस्वामी-

- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध है।
- स्कन्दस्वामी ने 600-625 ई. के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा।
- स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक प्राप्त होता है।

(2) नारायण तथा उद्गीथ-

- ऋग्वेद के मध्यभाग पर नारायण एवं अन्तिम भाग पर उद्गीथ ने भाष्य लिखा है।
- उद्गीथ ने अपने भाष्य में प्रत्येक अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है। 'वनवासीविनिर्गताचार्यस्य उद्गीथस्य कृता ऋग्वेदभाष्ये----'

(3) वेंकटमाधव-

- इनका समय 1050 से 1150 ई. के मध्य माना जाता है। इन्होंने प्रथम अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है।

(4) धानुष्क यज्वा-

- इन्हें त्रिवेदी भाष्यकार कहा गया है।
- ये वैष्णव आचार्य थे। इनका समय लगभग 1300 विक्रम संवत् माना जाता है।

(5) आनन्दतीर्थ-

- इनका समय 1225 से 1335 ई. तक माना जाता है।
- इनका दूसरा नाम 'मध्व' भी है।
- इन्होनें ऋग्वेद के कुछ सूक्तों पर पद्यात्मक भाष्य भी किया है।

(6) सायण-

- वेदों के भाष्यकर्त्ताओं में आचार्य सायण का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
- उन्होंने अपने बड़े भाई-माधव के आदेशानुसार भाष्य किया।
- सायण ने अपने भाई के नाम पर भाष्य का नाम 'माधवीय वेदार्थप्रकाश' रखा।
- सायण ने 'ऋग्वेदभाष्यभूमिका' भी लिखी।

ऋग्वेद के पाश्चात्त्य विद्वान् एवम् अनुवादक-

- **मैक्समूलर-** इन्होंने सायण-भाष्य-सहित ऋग्वेद का सम्पादन किया।
- **विल्सन-** विल्सन ने सर्वप्रथम पूरे ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद 1850 ई. में प्रकाशित किया।
- **प्रो. ग्रिफिथ-** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया।
- **प्रो. ओल्डेनवर्ग-** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का भाष्य जर्मन भाषा में दो भागों में प्रकाशित किया।

ऋग्वेद के महत्त्वपूर्ण मन्त्र-

- **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।**
  अर्थ- ब्रह्मरूपी पुरुष के मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुआ, दोनों बाहुओं से क्षत्रिय बनाया गया, दोनों उरुओं (जघनों) से वैश्य हुआ और पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ। (10.90.12)
- **अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।**
  होतारं रत्नधातमम् (ऋ. 1.1.1)
  अर्थ- यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलाने वाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।
- **तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।**
  छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्मादजायत॥
  अर्थ- सर्वात्मक पुरुष के होम से युक्त उस यज्ञ से ऋक् और साम उत्पन्न हुए। उससे गायत्री आदि छन्द उत्पन्न हुए और उसी से यजुः की भी उत्पत्ति हुई। (ऋ. 10.90.9)
- **य आत्मदा बलदा---यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः।**
  अर्थ- जिन प्रजापति ने जीवात्मा को बल दिया है, जिनकी आज्ञा सारे देवता मानते हैं, जिनकी छाया अमृत-रूपिणी है और जिनके अधीन में मृत्यु है, उन 'क' नामवाले आदि की स्तुति करता हूँ। (ऋ. 10.121.2)
- **अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्।** (ऋ. 10.125.3)
  अर्थ- मैं राज्य की अधीश्वरी हूँ और धन देने वाली हूँ।
- **हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।**
  (ऋ. 10.121.1)
  अर्थ- सबसे पहले केवल परमात्मा व हिरण्यगर्भ थे। उत्पन्न होने पर वे सारे प्राणियों के अद्वितीय अधीश्वर थे।
- **न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति।**
  अर्थ- स्त्रियों का प्रेम वा मैत्री स्थायी नहीं होता।
- **सहस्त्रशीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।** (ऋ. 10.90.1)
  अर्थ- विराट् पुरुष (ईश्वर), सहस्त्र (अनन्त) शिरों, अनन्त चक्षुओं और अनन्त चरणों वाले हैं।
- **सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।**
  अर्थ- स्तोताओं, तुम सम्मिलित होओ, एक साथ होकर स्तोत्र

पढ़ो और तुम लोगों का मन एक सा हो। (10.191.2)

➢ **समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।**
अर्थ- पुरोहितों की स्तुति एक सी हो, इनका आगमन एक साथ हो; और इनके मन तथा चित्त एक समान हों।

➢ **द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते।** (ऋ. 2.12.13)
अर्थ- इन्द्र के लिये द्युलोक और पृथिवी लोक भी प्रणाम करने के लिये स्वयं झुक जाते हैं।

मण्डल	अनुवाक	सूक्तसंख्या	मन्त्र संख्या	ऋषि नाम
प्रथम	24	191	2006	मधुच्छन्दा, मेधातिथि, दीर्घतमा
द्वितीय	04	43	429	गृत्समद
तृतीय	05	62	617	विश्वामित्र
चतुर्थ	05	58	589	वामदेव
पञ्चम	06	87	727	अत्रि
षष्ठ	06	75	765	भरद्वाज
सप्तम	06	104	841	वसिष्ठ
अष्टम	10	92+11	1716	कण्व, भृगु, अंगिरस
नवम	07	114	1108	सोम, पवमान
दशम	12	191	1754	त्रित, विमद, श्रद्धा, कामायनी
योग	**85**	**1028**	**10552**	

नोट- मण्डल के ऋषि- ''मगृविवाअभवक''
ऋषियों के आदि वर्ण के नाम से क्रमानुसार मण्डल के ऋषियों का यह ट्रिक बनाया गया है। म से मधुच्छन्दा, गृ से गृत्समद, वि से विश्वामित्र, वा से वामदेव, अ से अत्रि, भ से भरद्वाज, व से वशिष्ठ, क से कण्व।

ऋग्वेद संहिता-एक दृष्टि में

आचार्य - पैल
ऋत्विक् - होता
उपवेद - आयुर्वेद
अपरनाम - दशतयी
विभाजन - 1. अष्टक 2. मण्डल
अष्टक - 8
मण्डल - 10
अध्याय - 64
वर्ग - 2024 (कुछ मत में 2006)
मन्त्र - 10580-1/4 (10552)
अनुवाक - 85
सूक्त - 1028
उत्पत्ति देवता - अग्नि
शाखा - 1. शाकल 2. बाष्कल
3. आश्वलायन 4. शांखायन
5. माण्डूकायन
ब्राह्मण - 1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
आरण्यक - 1. ऐतरेय आरण्यक
2. शांखायन आरण्यक
उपनिषद् - 1. ऐतरेय 2. कौषीतकि
श्रौतसूत्र - 1. आश्वलायन 2. शांखायन
गृह्यसूत्र - 1.आश्वलायन 2. शांखायन
3. कौषीतकि (शाम्बव्य)
धर्मसूत्र - 1.वसिष्ठ (वासिष्ठ)
शुल्बसूत्र - कोई नहीं

शिक्षा	-	1. पाणिनीय शिक्षा 2. वसिष्ठ शिक्षा
प्रातिशाख्य	-	ऋक्-प्रातिशाख्य
भाष्यकार	-	स्कन्दस्वामी, नारायण, उद्गीथ, माधवभट्ट, वेङ्कटमाधव, धानुष्क यज्वा, आनन्दतीर्थ, आत्मानन्द, सायण।

2. यजुर्वेद

- विश्ववाङ्मय का सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद है, वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
- 'यजुष्' शब्द का अर्थ है- 'पूजा या यज्ञ'
- 'यजुष्' शब्द 'यज्' धातु + उसि प्रत्यय से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है- यज्ञ के साधक मन्त्र।
- 'यजुष्' गद्य पद्यात्मक है। इसीलिए इसे **'अनियताक्षरावसानम्'** कहा गया है, अर्थात् जिसमें पद्यों के समान अक्षरों की संख्या निश्चित नहीं होती है।
- **'शेषे यजुः शब्दः'** अर्थात् पद्यबन्ध और गीति से रहित मन्त्रात्मक रचना को 'यजुष्' कहते हैं।
- यजुर्वेद के मन्त्रों का विषय यज्ञ- विधियों को सम्पन्न करना है।
- यज्ञ अनेक प्रकार के होते हैं। यज्ञों का अनुष्ठान देवताओं की प्रसन्नता के लिये किया जाता है।
- आचार्य यास्क निरुक्त के सातवें अध्याय में 'यजुष्' की व्याख्या करते हुए कहते हैं- **'यजुर्यजतेः'** अर्थात् यज्ञ से सम्बद्ध मन्त्रों को यजुष् कहते हैं।

यजुर्वेद के भाग

यजुर्वेद के सम्प्रदाय

ब्रह्म सम्प्रदाय	आदित्य सम्प्रदाय
(कृष्ण यजुर्वेद)	(शुक्ल यजुर्वेद)

- यजुर्वेद के दो भाग हैं- कृष्ण और शुक्ल
- यजुर्वेद के दो सम्प्रदाय हैं- (i) ब्रह्म सम्प्रदाय और (ii) आदित्य सम्प्रदाय
- ब्रह्म सम्प्रदाय के अन्तर्गत कृष्ण यजुर्वेद तथा आदित्य सम्प्रदाय के अन्तर्गत शुक्ल यजुर्वेद आता है।
- यद्यपि प्राचीनकाल में, यजुर्वेद की सौ या एक सौ एक शाखा **'एकशतमध्वर्युशाखाः' 'यजुरेकशताध्वकम्', 'शाखानां तु शतेनाथयजुर्वेदमथाकरोत्',** प्राप्त होने का विवरण प्राप्त होता है।
- शुक्लयजुर्वेद की दो संहितायें प्राप्त होती हैं- वाजसनेयि संहिता या माध्यन्दिन संहिता तथा काण्व संहिता दोनों ही संहिताओं में चालीस अध्याय प्राप्त होते हैं।
- सम्प्रति कृष्णयजुर्वेद की केवल चार शाखाएँ ही उपलब्ध होती है- तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक, कपिष्ठल
- यज्ञादि कर्मों के प्रतिपादक गद्यात्मक मन्त्रों को 'यजुष्' कहा जाता है।
- यजुर्वेद कर्मकाण्ड का वेद है जिसका संकलन अध्वर्यु नामक ऋत्विक् के उपयोग के लिये किया गया।
- पतञ्जलि ने महाभाष्य में यजुर्वेद की सौ या एक सौ एक शाखाओं का उल्लेख किया है- **'एकशतमध्वर्युशाखाः'**
- चरणव्यूह में यजुर्वेद की 86 शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।
- वर्तमान समय में शुक्ल यजुर्वेद की दो तथा कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है-

यजुर्वेद की शाखा

शुक्ल यजुर्वेद- (क) माध्यन्दिनशाखा (ख) काण्वशाखा

कृष्णयजुर्वेद- (1) तैत्तिरीयशाखा (2) मैत्रायणीशाखा (3) कठ-शाखा (4) कपिष्ठल-शाखा

शुक्ल यजुर्वेद-

- शुक्ल यजुर्वेद को 'वाजसनेयिसंहिता' कहते हैं।
- शुक्ल यजुर्वेद के **ऋषि याज्ञवल्क्य** हैं जो मिथिला के निवासी थे।
- शुक्ल यजुर्वेद में यज्ञों के विशुद्ध मन्त्रात्मक भाग हैं।
- शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं- (i) माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा तथा (ii) काण्व शाखा।
- माध्यन्दिन शाखा में चालीस अध्याय, 303 अनुवाक तथा 1975 मन्त्र हैं।
- काण्व शाखा का विभाजन अध्याय और अनुवाक के रूप में हुआ है।
- काण्वशाखा में 40 अध्याय, 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र प्राप्त होते हैं।

शुक्ल यजुर्वेद- माध्यन्दिन या वाजसनेयी संहिता (40 अध्याय, 303 अनुवाक और 1975 मन्त्र)
काण्व संहिता (40 अध्याय, 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र)

शुक्ल यजुर्वेद की विषयवस्तु-

- प्रथम दो अध्यायों में दर्श एवं पौर्णमास यज्ञों से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं।
- अध्याय तीन में अग्निहोत्र एवं चातुर्मास्य यज्ञों से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं।
- अग्निष्टोम और सोमयाग का वर्णन अध्याय चार से आठ में वर्णित है।
- वाजपेय और राजसूय याग का वर्णन अध्याय नौ और दस में वर्णित है।
- अध्याय ग्यारह से अठारह तक अग्निचयन और विविध प्रकार की वेदियों के निर्माण से सम्बन्धित मन्त्र हैं।
- अध्याय सोलह को **'रुद्राध्याय'** कहा जाता है।
- सौत्रामणी याग का निरूपण अध्याय 19 से 21 में है।
- अध्याय 22-25 तक **अश्वमेध यज्ञ** का विधान वर्णित है।
- 26 से 29 अध्याय को **'खिल अध्याय'** कहते हैं।
- पुरुषमेध का वर्णन अध्याय तीस में प्राप्त होता है।
- अध्याय 31 को **'पुरुषसूक्त'** और **'विष्णुसूक्त'** भी कहते हैं।
- विराट् पुरुष के दार्शनिक और आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन अध्याय 32 में है।
- अध्याय 33 में **'सर्वमेध सूक्त'** है।
- शिवसंकल्प उपनिषद् या **'शिवसंकल्प सूक्त'** अध्याय 34 में है।
- अध्याय 35 में **'पितृमेध'** का वर्णन है।
- अध्याय 36-38 में प्रवर्ग्यनामक यज्ञ से सम्बन्धित मन्त्र हैं।
- अध्याय 39 को **'प्रायश्चित्त अध्याय'** भी कहा जाता है।
- अध्याय 39 में अन्त्येष्टि से सम्बन्धित मन्त्र हैं।
- अध्याय 40 को **'ईशोपनिषद्'** कहा जाता है।

शुक्लयजुर्वेद के ब्राह्मण

- शुक्ल यजुर्वेद का केवल एक ब्राह्मण ग्रन्थ है- **शतपथ ब्राह्मण**
- शतपथ ब्राह्मण के रचयिता **'याज्ञवल्क्य'** माने गये हैं।
- शतपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन तथा काण्व दोनों शाखाओं से है।
- शतपथ ब्राह्मण में अध्यायों की संख्या 100 है।
- 'गणरत्न महोदधि' शतपथ ब्राह्मण को परिभाषित करते हुए कहते हैं, **'शतं पन्थानो मार्गा नामाध्याया यस्य तत् शतपथम्'** अर्थात् जिसमें सौ अध्याय रूपी मार्ग हैं उसे शतपथ कहते हैं।
- काण्व शाखीय शतपथ ब्राह्मण का सम्पादन आचार्य **जे. एगलिंग** ने किया।
- काण्व शाखीय शतपथ ब्राह्मण में 104 अध्याय हैं।
- माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड, 100 अध्याय, 438 ब्राह्मण तथा 7624 कण्डिकाएँ हैं।

शतपथ ब्राह्मण के महत्त्वपूर्ण आख्यान

(i) मनु एवं श्रद्धा का आख्यान
(ii) जलप्लावन की कथा तथा मत्स्याख्यान
(iii) इन्द्र- वृत्र-युद्ध का आख्यान
(iv) स्त्री- कामुक गन्धर्व का आख्यान
(v) कद्रू- सुपर्णी का आख्यान
(vi) च्यवन- सुकन्या का आख्यान
(vii) पुरूरवा- उर्वशी का आख्यान
(viii) वाणी का आख्यान

शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक- 'बृहदारण्यक'

- शुक्ल-यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण की माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं के अन्तिम छह अध्यायों को बृहदारण्यक कहते हैं।
- बृहदारण्यक का प्रथम प्रकाशन 1889 ई. आटो वोह्टलिङ्क ने किया।

शुक्ल यजुर्वेद के उपनिषद्-

(i) ईशावास्योपनिषद्-

- ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का 40 वाँ अध्याय है।
- ईशावास्योपनिषद् में कुल 18 मन्त्र हैं।
- ईशावास्योपनिषद् का प्रारम्भ 'ईशावास्यम्' से होता है।
- सबसे छोटा उपनिषद् किन्तु महत्त्व की दृष्टि से सर्वोपरि है।
- ईशावास्योपनिषद् में विद्या-अविद्या तथा सम्भूति-असम्भूति का निरूपण है।

(ii) बृहदारण्यकोपनिषद् -

- बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14 वें काण्ड का अन्तिम भाग है।

- बृहदारण्यकोपनिषद् सबसे बड़ा एवं प्राचीनतम उपनिषद् है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में तीन भाग हैं, प्रत्येक भाग में दो-दो अध्याय हैं।
- प्रथम भाग को **'मधुकाण्ड'**, द्वितीय भाग को **'याज्ञवल्क्य काण्ड'**, तृतीय भाग को **'खिलकाण्ड'** कहते हैं।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में कुल अध्यायों की संख्या छह है।
- प्रत्येक अध्याय ब्राह्मणों में विभाजित हैं, जो निम्नवत् हैं-

अध्याय	ब्राह्मण	मन्त्र
प्रथम अध्याय	छह	80
द्वितीय अध्याय	छह	66
तृतीय अध्याय	नौ	92
चतुर्थ अध्याय	छह	82
पञ्चम अध्याय	पन्द्रह	15
षष्ठ अध्याय	पाँच	75

- याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद बृहदारण्यकोपनिषद् में प्राप्त होता है।
- जनक और याज्ञवल्क्य संवाद, याज्ञवल्क्य और वचक्नु की कन्या गार्गी का संवाद भी इस उपनिषद् में प्राप्त होते हैं।

शुक्ल यजुर्वेद–एक अध्ययन

- **ऋत्विक्-** अध्वर्यु
- **शाखा-** माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा- 40 अध्याय, 303 अनुवाक, 1975 मन्त्र।
- काण्व शाखा- 40 अध्याय, 328 अनुवाक, 2086 मन्त्र।
- **उपनिषद्-**
  - **1-** ईशावास्योपनिषद् - 18 मन्त्र।
  - **2-** बृहदारण्यकोपनिषद्- 6 अध्याय, 47 ब्राह्मण।

कल्पसूत्र-

श्रौतसूत्र = कात्यायन श्रौतसूत्र - 26 अध्याय

गृह्यसूत्र = पारस्कर गृह्यसूत्र - 3 काण्ड, वैजवाप गृह्यसूत्र

शुल्बसूत्र-

(1) बौधायन शुल्बसूत्र (2) मानव शुल्बसूत्र
(3) आपस्तम्ब शुल्बसूत्र (4) कात्यायन शुल्बसूत्र
(5) मैत्रायणीय शुल्बसूत्र
(6) हिरण्यकेशी या सत्याषाढशुल्बसूत्र
(7) वराह शुल्बसूत्र

धर्मसूत्र - हारीत और शंख धर्मसूत्र

शिक्षाग्रन्थ- याज्ञवल्क्य शिक्षा (116 श्लोक), वासिष्ठी शिक्षा पाराशरी शिक्षा, कात्यायनी शिक्षा।

प्रातिशाख्य ग्रन्थ-

वाजसनेयि - प्रातिशाख्य, रचयिता - कात्यायन, अध्याय - 8

कृष्ण यजुर्वेद-

- कृष्ण यजुर्वेद का सम्बन्ध 'ब्रह्म सम्प्रदाय' से है।
- इसमें मन्त्रों के साथ व्याख्या और विनियोग वाला अंश मिश्रित है।
- कृष्णयजुर्वेद के पारायणकर्ता को मिश्र नाम दिया गया है।
- चरणव्यूह में कृष्ण यजुर्वेद की 69 शाखाओं का उल्लेख मिलता है।
- कृष्ण यजुर्वेद में तैत्तिरीय शाखा के दो भेद हैं-
  (1) औख्य (2) खाण्डिकेय

कृष्ण यजुर्वेद की शाखा-

(1) तैत्तिरीयशाखा (2) मैत्रायणीशाखा (3) कठ (4) कपिष्ठल

- वर्तमान समय में कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयसंहिता प्रतिनिधि संहिता है।
- इसके ऋषि तित्तिर हैं, जो वैशम्पायन के शिष्य थे।
- तैत्तिरीय शाखा में 7 काण्ड, 44 प्रपाठक, 631 अनुवाक हैं।
- तैत्तिरीय संहिता का विशेष प्रचार महाराष्ट्र, आन्ध्र, दक्षिण भारत में है।
- आचार्य सायण ने सर्वप्रथम तैत्तिरीय संहिता का विस्तृत भाष्य लिखा था।
- भट्टभास्कर मिश्र ने 11वीं शती में ज्ञानयज्ञ नामक भाष्य तैत्तिरीय संहिता के ऊपर लिखा।
- तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद डॉ. कीथ ने किया।

(i) तैत्तिरीय संहिता की विषय-वस्तु-

काण्ड		विषयवस्तु
प्रथम	-	दर्शपूर्णमास, अग्निष्टोम यज्ञ, राजसूय
द्वितीय	-	पशुविधान, इष्टि
तृतीय	-	पवमानग्रह आदि
चतुर्थ	-	अग्निचिति, देवयजनग्रह आदि
पञ्चम	-	चितिनिरूपण, वायव्य पशु आदि
षष्ठ	-	सोममन्त्रब्राह्मण
सप्तम	-	अश्वमेध, षड्रात्र, सत्रकर्म आदि

(ii) मैत्रायणी संहिता- मैत्रायणी संहिता में 4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 3144 मन्त्र हैं।

मैत्रायणी संहिता

काण्ड	प्रपाठक	मन्त्र
4	54	3144

मैत्रायणी संहिता की विषय वस्तु-

काण्ड	विषय वस्तु
प्रथम	दर्शपूर्णमास, अध्वर, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, वाजपेय याग
द्वितीय	काम्य इष्टियाँ, राजसूय, अग्निचिति
तृतीय	अग्निचिति, अध्वर आदि की विधि, सौत्रामणी और अश्वमेध याग
चतुर्थ	खिल नाम से प्रसिद्ध, राजसूय, अध्वर, प्रवर्ग्य आदि से सम्बन्धित सामग्री

- मैत्रायणी संहिता में ऋग्वेद से 1701 ऋचाएँ उद्धृत की गई हैं।

(iii)काठक या कठ शाखा-

- काठक शाखा पाँच खण्डों में विभक्त है।
- पाँच खण्डों के नाम हैं- इठिमिका, मध्यमिका, ओरिमिका, याज्यानुवाक्या, अश्वमेधादि अनुवचन।
- उपखण्डों को 'स्थानक' और 'अनुवचन' नाम से सम्बोधित किया गया है।
- कठ शाखा में चालीस स्थानक, तेरह अनुवचन, 843 अनुवाक, 3028 मन्त्र एवं ब्राह्मण की मिश्रित संख्या 18 हजार है।
- कठ शाखा के विषय में **पतञ्जलि** का कथन- **'ग्रामे-ग्रामे काठकं कालापकं च प्रोच्यते।'**

(iv) कठ-कपिष्ठल शाखा-

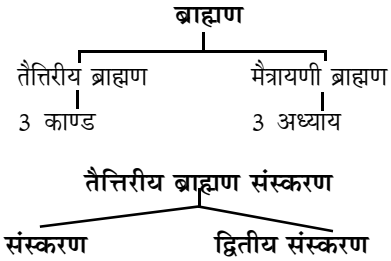
- यह शाखा चरणव्यूह के अनुसार चरकों की 12 शाखाओं में से एक है।
- इस शाखा के प्रवर्तक कपिष्ठल ऋषि थे।
- कृष्ण यजुर्वेद की कठ-कपिष्ठल शाखा अपूर्ण रूपेण प्राप्त है।
- कठ- कपिष्ठल की केवल एक प्रति उपलब्ध है, जो सरस्वती भवन पुस्तकालय काशी में सुरक्षित है।
- इस शाखा का विभाजन ऋग्वेद के समान अष्टक एवं अध्यायों में हैं।
- कठ- कपिष्ठल शाखा में कुल **छह अष्टक, 48 अध्याय** हैं।

कृष्णयजुर्वेदीय ब्राह्मण-

- दो ब्राह्मण- (i) तैत्तिरीय ब्राह्मण (ii) मैत्रायणी ब्राह्मण

(i) तैत्तिरीय ब्राह्मण-

- तैत्तिरीय ब्राह्मण के रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य तित्तिर हैं।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण का प्रथम संस्करण 1890 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण का द्वितीय संस्करण 1899 ई. पूना से प्रकाशित हुआ।



(1890 कलकत्ता से प्रकाशित) (1899 ई. में पूना से प्रकाशित)

तैत्तिरीय ब्राह्मण की विषय-वस्तु–

काण्ड		विषय-वस्तु
प्रथम	-	अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, राजसूय, सोमयाग, नक्षत्रेष्टि का वर्णन
द्वितीय	-	अग्निहोत्र, सौत्रामणी, बृहस्पति
तृतीय काण्ड	-	नक्षत्रेष्टि का वर्णन विस्तार के साथ

(ii) मैत्रायणी ब्राह्मण-

- मैत्रायणी ब्राह्मण में तीन अध्याय हैं।
- मैत्रायणी ब्राह्मण मैत्रायणी संहिता का चतुर्थ अध्याय ही माना जाता है।
- रात्रि की उत्पत्ति का आख्यान इस ब्राह्मण में प्राप्त होता है।
- पर्वतोपाख्यान भी मैत्रायणी ब्राह्मण में वर्णित है।

कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यक- कृष्ण यजुर्वेद के दो आरण्यक उपलब्ध हैं- (i) तैत्तिरीय आरण्यक (ii) मैत्रायणीय आरण्यक

(i) तैत्तिरीय आरण्यक-

- राजेन्द्र लाल मिश्र ने 1782 ई. में सायण भाष्य के साथ प्रकाशित किया।
- इसमें दस प्रपाठक या परिच्छेद हैं।
- प्रपाठकों का नामकरण उनके प्रथमपद के आधार पर किया गया है।
- तैत्तिरीय आरण्यक में कुल 170 अनुवाक हैं।
- सप्तम से नवम प्रपाठक को **तैत्तिरीयोपनिषद्** कहते हैं।
- दशम प्रपाठक को **महानारायणीयोपनिषद्** कहते हैं जिसे खिल कहते हैं।
- तैत्तिरीयारण्यक में कुरुक्षेत्र, खाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य, काशी आदि के भौगोलिक नामों का उल्लेख है।

- **'श्रमण'** शब्द का प्रयोग तपस्वी के अर्थ में किया गया है।
- तैत्तिरीय आरण्यक में जल के चार रूप बताये गये हैं- मेघ, विद्युत्, गर्जन, वृष्टि।
- जल के छह प्रकार बताये गयें हैं- वृष्टि का जल, कूपजल, तडागजल, नद्यादि जल, पात्रजल, झरने का जल।

तैत्तिरीय आरण्यक में प्रतिपादित विषय

आरण्यक		प्रतिपादित विषय
प्रथम प्रपाठक	-	आरुण-केतुक नामक अग्नि की उपासना और इष्टिका-चयन का वर्णन।
द्वितीय प्रपाठक	-	स्वाध्याय और पञ्च महायज्ञों का वर्णन
तृतीय प्रपाठक	-	चातुर्होत्र चिति से सम्बद्ध मन्त्र
चतुर्थ प्रपाठक	-	प्रवर्ग्य होम से सम्बद्ध मन्त्र
पञ्चम प्रपाठक	-	यज्ञ सम्बन्धी कतिपय संकेत
षष्ठ प्रपाठक	-	पितृमेध सम्बन्धी मन्त्रों का संकलन
सप्तम-नवम	-	तैत्तिरीय उपनिषद्
दशम प्रपाठक	-	महानारायणीय उपनिषद् (खिलकाण्ड)

(ii) मैत्रायणीय आरण्यक

- मैत्रायणीय आरण्यक को मैत्रायणीय उपनिषद् भी कहते हैं।
- मैत्रायणीय आरण्यक में सात प्रपाठक हैं।
- इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों के अंश मिश्रित हैं।
- मैत्रायणीय आरण्यक में परमात्मा को अग्नि और प्राण कहा गया है।
- अश्वपति, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, शर्यांति, ययाति, युवनाश्व आदि राजाओं का उल्लेख मैत्रायणीय आरण्यक में प्राप्त होता है।

मैत्रायणीय आरण्यक में प्रतिपादित विषय

आरण्यक		प्रतिपादित विषय
प्रथम प्रपाठक	-	ब्रह्मयज्ञ। राजा बृहद्रथ को वैराग्य और मुनि शाकायन्य द्वारा उसे उपदेश
द्वितीय प्रपाठक	-	शाकायन्य द्वारा ब्रह्मविद्या का उपदेश
तृतीय प्रपाठक	-	जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन, कर्मफल और पुनर्जन्म
चतुर्थ प्रपाठक	-	ब्रह्म-सायुज्य-प्राप्ति के उपाय
पञ्चम प्रपाठक	-	कौत्सायनी स्तुति, ब्रह्म की अनेक रूपों में स्थिति
षष्ठ प्रपाठक	-	प्रणव, उद्गीथ और गायत्री की उपासना, आत्मयज्ञ का वर्णन, षडङ्ग योग, शब्दब्रह्म, निर्विषय मन से मोक्षप्राप्ति।
सप्तम प्रपाठक	-	आत्म-स्वरूप वर्णन

कृष्ण-यजुर्वेद के उपनिषद्-

- तैत्तिरीयोपनिषद्, कठोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्, मैत्रायणीयोपनिषद्, महानारायणोपनिषद्।

तैत्तिरीयोपनिषद्-

- तैत्तिरीय आरण्यक के तीन प्रपाठकों (7,8,9) को तैत्तिरीय उपनिषद् कहते हैं।
- तैत्तिरीय उपनिषद् का प्रारम्भ 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः' से होता है।
- तैत्तिरीय उपनिषद् में तीन वल्ली हैं- शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्द वल्ली, भृगुवल्ली।
- शिक्षावल्ली में 12 अनुवाक, ब्रह्मानन्दवल्ली में नौ अनुवाक, भृगुवल्ली में 10 अनुवाक हैं।
- भृगु-वरुण संवाद, पञ्चकोश निरूपण का उल्लेख तैत्तिरीयोपनिषद् में प्राप्त होता है।

तैत्तिरीयोपनिषद् का विभाजन-

वल्ली		अनुवाक
शिक्षावल्ली	-	12
ब्रह्मानन्दवल्ली	-	9
भृगुवल्ली	-	10

कठोपनिषद्-

- कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित है।
- कठोपनिषद् में दो अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय में तीन खण्ड हैं।
- यम- नचिकेता की कथा कठोपनिषद् में प्राप्त होती है।
- श्रेय-प्रेय का निरूपण कठोपनिषद् में प्राप्त होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद्-

- श्वेताश्वतरोपनिषद् में कुल छह अध्याय हैं।

- इस उपनिषद् में सांख्य, योग, वेदान्त दर्शन के सिद्धान्त प्रतिपादित हैं।
- श्वेताश्वतरोपनिषद् में जगत् के मिथ्यात्त्व की कल्पना नहीं है।
- शिव को परमेश्वर कहा गया है।
- कपिल ऋषि का उल्लेख इस उपनिषद् में प्राप्त होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में प्रतिपादित विषय

अध्याय		प्रतिपादित विषय
प्रथम	-	हंस, त्रैतवाद, माया, क्षर-अक्षर, सत्य-तप से आत्मदर्शन
द्वितीय	-	योग, योगविधि, ब्रह्म-तत्त्व का वर्णन
तृतीय	-	रुद्र, विश्वरूप, जीव का स्वरूप, आत्मा का स्वरूप
चतुर्थ	-	एकेश्वरवाद, त्रैतवाद, प्रकृति, माया-मायी, शिव, ब्रह्मरूप
पञ्चम	-	क्षर-अक्षर, कपिल ऋषि, जीवात्मा का स्वरूप
षष्ठ	-	ब्रह्म के अनेक नाम, हंस, ईश्वर प्रकृति एवं जीव का नियन्ता, गुरुभक्ति

मैत्रायणीयोपनिषद्-

- इसे 'मैत्री उपनिषद्' भी कहते हैं।
- इसमें सात अध्याय हैं।
- मैत्रायणीय आरण्यक को मैत्रायणी उपनिषद् कहते हैं।
- इसमें वेद विरोधी सम्प्रदायों का उल्लेख है।
- आत्मा का बाह्य प्रतीक सूर्य है और आभ्यन्तर प्रतीक प्राण है।
- प्रकृति के सत्त्व, रजस् , तमस् इन तीन गुणों का ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र से सम्बन्ध बताया गया है।

महानारायणोपनिषद्-

- तैत्तिरीय आरण्यक का दशम प्रपाठक महानारायणोपनिषद् कहा जाता है।
- इसके तीन पाठ मिलते हैं- द्रविण, आन्ध्र, कर्णाटक।
- इसे **याज्ञिक्युपनिषद्** भी कहते हैं।
- नारायण का परमात्म-तत्त्व के रूप में उल्लेख है।

कृष्णयजुर्वेद-एक अध्ययन

- **ऋत्विक्**-अध्वर्यु
- **शाखा- तैत्तिरीय-** 7 काण्ड,44 प्रपाठक, 631 अनुवाक।

मैत्रायणीय- 4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 3144 मन्त्र।

कठ (काठक)- 5 खण्ड, 40 स्थानक, 13 अनुवचन, 843 अनुवाक, 3028 मन्त्र।

कपिष्ठल (कठ)- 6 अष्टक, 48 अध्याय

ब्राह्मण- तैत्तिरीय ब्राह्मण-3 काण्ड
मैत्रायणीय ब्राह्मण-3 अध्याय

आरण्यक-तैत्तिरीय आरण्यक-10 प्रपाठक
मैत्रायणीय आरण्यक-सात प्रपाठक

उपनिषद्- तैत्तिरीयोपनिषद्- 3 वल्ली,
कठोपनिषद्- 2 अध्याय
श्वेताश्वतरोपनिषद्- 6 अध्याय
मैत्रायणीयोपनिषद्- 7अध्याय
महानारायणोपनिषद्

श्रौतसूत्र- बौधायन श्रौतसूत्र-रचयिता बोधायन, 30 प्रश्नों में विभाजित
वाधूल श्रौतसूत्र
मानव श्रौतसूत्र
भारद्वाज श्रौतसूत्र
आपस्तम्ब श्रौतसूत्र
काठक श्रौतसूत्र
सत्याषाढ श्रौतसूत्र- (24 प्रश्न)
वाराह श्रौतसूत्र
वैखानस श्रौतसूत्र- (32 अध्याय)

गृह्यसूत्र-

बौधायन गृह्यसूत्र, मानव गृह्यसूत्र, भारद्वाज गृह्यसूत्र, आपस्तम्ब गृह्यसूत्र, काठक गृह्यसूत्र,आग्निवेश्य गृह्यसूत्र, हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र, वाराह गृह्यसूत्र, वैखानस गृह्यसूत्र

शुल्बसूत्र-

बौधायन शुल्बसूत्र, मानव शुल्बसूत्र, आपस्तम्ब शुल्बसूत्र कात्यायन शुल्बसूत्र, मैत्रायणीय शुल्बसूत्र, हिरण्यकेशि (सत्याषाढ) शुल्बसूत्र, वाराह शुल्बसूत्र

शिक्षाग्रन्थ-

- ☆ व्यास शिक्षा
- ☆ वशिष्ठ शिक्षा
- ☆ भारद्वाज शिक्षा
- ☆ माण्डव्य शिक्षा

3- सामवेद

सामवेद का परिचय-

- वैदिक वाङ्मय में सामवेद का विशिष्ट स्थान है।
- सामवेद वेदों का सार है।
- भारतीय परम्परा के अनुसार कृष्णद्वैपायन व्यास ने साममन्त्रों का भी संकलन किया जो सामवेद संहिता के नाम से प्रसिद्ध है।
- बृहद्देवता ने स्पष्ट प्रतिपादित किया है कि जो साम को जानता है, वह वेद के रहस्य को जानता है। '(सामानि यो वेत्ति स वेद-तत्त्वम्)'
- गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं सामवेद को अपना ही स्वरूप बतलाया है। **'वेदानां सामवेदोऽस्मि'**
- पूर्वमीमांसा में गीति या गान को साम कहा गया है। **'गीतिषु सामाख्या'** (पूर्व. 2.1.36)
- सामन् या साम का अर्थ- 'गीतियुक्त मन्त्र' है। साम के लिये गीतियुक्त होना अनिवार्य है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में साम की व्युत्पत्ति इस प्रकार बतायी गयी है कि सा का अर्थ है 'ऋक्' और अम् का अर्थ स्वर अर्थात् ऋक् से सम्बद्ध स्वर प्रधान गायन को साम कहते हैं।

'सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्। तया सह सम्बद्धः अयो नाम स्वरः यत्र वर्तते तत्साम।'

- शतपथ का कथन है कि सूर्य से सामवेद की उत्पत्ति हुई है। अतः यह सूर्य पुत्र है। इसमें सूर्य की शक्ति है।

सामवेद संहिता का स्वरूप-

- सामवेद का ऋत्विक् उद्गाता है।
- उद्गाता ऋग्वेद की ऋचाओं का शास्त्रीय तथा परम्परागत रूप से गायन करता है।
- ऋक् और साम में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- सामवेद में ऋग्वेद के लगभग सभी मण्डलों से मन्त्र सङ्ग्रहीत हैं किन्तु अधिकांश मन्त्र आठवें तथा नौवें मण्डल से ग्रहण किये गये हैं।
- बृहत् साम, रथन्तर साम आदि का ऋग्वेद में उल्लेख प्राप्त होता है।

सामवेद का विभाजन-

- प्राचीन दृष्टि से सामवेद को दो संहिताओं में विभक्त किया गया है-

(i) आर्चिक संहिता (ii) गान संहिता

- आर्चिक शब्द का अर्थ 'ऋक् समूह' है। आर्चिक संहिता के भी दो भेद किये गये हैं-

(i) पूर्वार्चिक (ii) उत्तरार्चिक

- गानसंहिता को भी दो भागों में विभाजित किया गया है-

(i) ग्रामगेय (ii) अरण्यगेय

- सामवेद के मुख्य भाग हैं- (i) पूर्वार्चिक (ii) उत्तरार्चिक

i-पूर्वार्चिक–

- पूर्वार्चिक में चार काण्ड हैं-

(i) आग्नेय काण्ड (ii) ऐन्द्र काण्ड
(iii) पावमान काण्ड (iv) आरण्य काण्ड

- परिशिष्ट के रूप में महानाम्नी आर्चिक भी है। इसमें छह अध्याय (प्रपाठक) हैं। अध्यायों के अनुसार काण्डों को बाँटा गया है।
- अध्याय 1 को **आग्नेय काण्ड** माना जाता है।
- अध्याय 2 से 4 को **ऐन्द्र काण्ड** माना जाता है।
- अध्याय 5 को **पावमान काण्ड** माना जाता है।
- अध्याय 6 को **आरण्य काण्ड** और परिशिष्ट को 'महानाम्नी आर्चिक' माना जाता है।

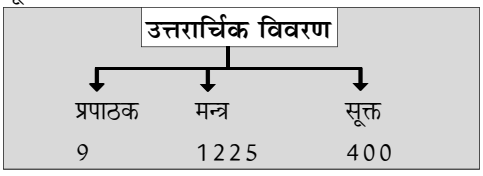
पूर्वार्चिक विवरण

काण्ड	विषय	अध्याय (प्रपाठक)	खण्ड	मन्त्र
1. आग्नेय	अग्नि देवता	1	12	114
2. ऐन्द्र	इन्द्र देवता	2 से 4	12	352
3. पावमान	सोम देवता	5	11	119
4. आरण्य	इन्द्र, अग्नि, सोम	6	5	55
5. महानाम्नी आर्चिक	इन्द्र	परिशिष्ट		10
	पूर्वार्चिक मन्त्र संख्या = 650			

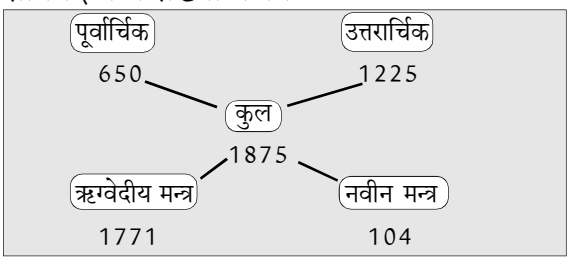
- प्रथम से पञ्चम प्रपाठक **ग्रामगान** कहलाता है।
- छठा प्रपाठक **अरण्यगान** कहलाता है।

ii-उत्तरार्चिक-

- इसमें 9 प्रपाठक, 21 अध्याय हैं, कुल मन्त्र = 1225, कुल सूक्त 400 हैं।



सामवेद मन्त्र संख्या वर्णन-



➢ सामवेद के कुल मन्त्र = 1875 हैं।

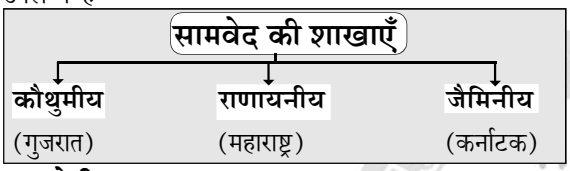
सामवेदीय शाखाएँ-

➢ महाभाष्य में पतञ्जलि ने सामवेद की एक सहस्र शाखाओं का उल्लेख किया है- **'सहस्रवर्त्मा सामवेदः'**

➢ जैमिनिगृह्यसूत्र में 13 शाखाओं का उल्लेख मिलता है।

➢ जैमिनि, तलवकार, सात्युग्र, राणायनीय, दुर्वासस्, भागुरि, गौरुण्डि, गौर्गुलजि, औपमन्यव, कारडि, सार्वणि, गार्ग्य, वार्षगण्य और दैवन्त्य।

उपर्युक्त 13 शाखाओं में से आजकल केवल तीन शाखाएं ही उपलब्ध हैं-



सामवेदीय ब्राह्मण-

➢ सामवेद के उपलब्ध ब्राह्मण 8 हैं, जिनका उल्लेख सायण ने इसप्रकार किया है-

अष्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः प्रौढं ब्राह्मणमादिमम्।
षड्विंशाख्यं द्वितीयं स्यात् ततः सामविधिर्भवेत्।
आर्षेयं देवताध्यायो भवेदुपनिषत् ततः।
संहितोपनिषद् वंशो ग्रन्था अष्टावितीरिताः॥

1. ताण्ड्य ब्राह्मण-

➢ इसे पञ्चविंश, महाब्राह्मण और ब्राह्मण भी कहते हैं।

➢ इसमें 25 अध्याय हैं तथा पाँच-पाँच अध्यायों की एक पञ्चिका है।

➢ इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय सोमयाग है।

➢ इसके रचयिता सामवेदीय **आचार्य ताण्डि** माने जाते हैं।

2. षड्विंश ब्राह्मण-

➢ इसमें 26 अध्याय हैं।

➢ इसको पञ्चविंश (ताण्ड्य) ब्राह्मण का परिशिष्ट माना जाता है।

➢ इसके अन्तिम अध्याय को अद्भुत ब्राह्मण कहते हैं।

➢ इन्द्र–अहल्या का प्रसिद्ध आख्यान इस ब्राह्मण में प्राप्त होता है।

3. सामविधान ब्राह्मण-

➢ इसमें तीन प्रपाठक और 25 अनुवाक हैं।

➢ इसमें प्रतिपादित विषय अधिकांशतः धर्मशास्त्र के क्षेत्र में आते हैं।

4. आर्षेय ब्राह्मण-

➢ इस ब्राह्मण में 3 प्रपाठक हैं, जो 82 खण्डों में विभक्त हैं।

➢ इसमें सामगानों के नाम तथा इनके अन्य नामों का उल्लेख है।

5. दैवत ब्राह्मण-

➢ इसमें चार खण्ड हैं।

➢ जो सूत्र शैली में लिखा गया है।

➢ इसमें सामगानों के देवताओं का विशेषरूप से वर्णन है।

6. उपनिषद् ब्राह्मण-

➢ इसे **मन्त्र ब्राह्मण** और **छान्दोग्य ब्राह्मण** भी कहा जाता है।

➢ इसमें 10 प्रपाठक हैं, प्रत्येक प्रपाठक के 8-8 खण्ड हैं। इस पर दो व्याख्याएँ हैं-

(1) गुणविष्णु कृत छान्दोग्य मन्त्र-भाष्य

(2) सायण कृत-वेदार्थ प्रकाश

7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण-

➢ 'संहितोपनिषद् ब्राह्मण' रहस्य को बताने वाला ब्राह्मण ग्रन्थ माना जाता है।

➢ इसमें 5 खण्ड हैं, जो सूत्रों में विभक्त हैं।

8. वंश ब्राह्मण-

➢ यह ब्राह्मण बहुत छोटा है। इसमें तीन खण्ड हैं।

➢ इसमें स्वयंभू ब्रह्मा से सामवेद की परम्परा का प्रारम्भ माना जाता है।

अन्य ब्राह्मण-

➢ आठ ब्राह्मणों के अतिरिक्त इसी वेद से सम्बद्ध जैमिनीय या तलवकार ब्राह्मण भी है, जो 9वाँ ब्राह्मण माना जाता है।

➢ जैमिनीय ब्राह्मण में 3 काण्ड हैं, जो खण्डों में विभक्त हैं।

सामवेदीय आरण्यक- इसके दो आरण्यक प्राप्त होते हैं।

(1) तलवकार (तवल्कार) (2) छान्दोग्य

सामवेदीय उपनिषद्-

सामवेद के 2 उपनिषद् प्राप्त होते हैं-

(1) केन उपनिषद् (2) छान्दोग्य उपनिषद्

(1) केनोपनिषद्- केन उपनिषद् में 4 खण्ड हैं।

प्रथम खण्ड - 8 मन्त्र, **द्वितीय खण्ड** - 5 मन्त्र, **तृतीय खण्ड** - 12 मन्त्र, **चतुर्थ खण्ड** - 9 मन्त्र

➢ इसको **'तलवकार उपनिषद्'** भी कहते हैं।

➢ इसमें प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक हैं और शेष दो गद्यात्मक हैं।

(2) छान्दोग्योपनिषद्-

➢ इसमें 8 अध्याय या प्रपाठक हैं।

➢ इसके प्रथम एवं द्वितीय अध्याय में ॐ, उद्गीथ एवं साम के गूढ़ रहस्यों का मार्मिक विवेचन है।

छान्दोग्योपनिषद्

अध्याय		खण्ड		मन्त्र
प्रथम	-	13	-	104
द्वितीय	-	24	-	82
तृतीय	-	19	-	94
चतुर्थ	-	17	-	78
पञ्चम	-	24	-	88
षष्ठ	-	16	-	69
सप्त	-	26	-	51
अष्ट	-	15	-	62

सामवेदीय प्रातिशाख्य ग्रन्थ-

सामवेदीय प्रातिशाख्य ग्रन्थ तीन हैं-

प्रातिशाख्य		रचनाकार		प्रपाठक
1. ऋक्तन्त्र	-	शाकटायन	-	5
2. पुष्पसूत्र	-	गोभिल	-	10
3. सामतन्त्र	-	औदव्रजि	-	13

सामवेदीय शिक्षाग्रन्थ- सामवेद में 3 शिक्षाग्रन्थ प्राप्त होते हैं।

शिक्षा		लेखक
गौतमी	-	गौतम
लोमशी	-	लोमश
नारदीय	-	नारद

सामवेदीय कल्पसूत्रों का वर्गीकरण

सामवेदीय श्रौतसूत्र- आर्षेय (मशक कल्पसूत्र) क्षुद्रकल्पसूत्र, जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण, निदान तथा उपनिदान।
इनमें प्रकाशित श्रौतसूत्रों की संख्या 4 हैं-
(1) आर्षेय या मशक कल्पसूत्र
(2) लाट्यायन
(3) द्राह्यायण
(4) जैमिनीय

सामवेदीय गृह्यसूत्र- सामवेदीय गृह्यसूत्र पाँच हैं-
(i) गोभिल (ii) खादिर (iii) द्राह्यायण (iv) जैमिनीय
(v) कौथुम

सामवेदीय धर्मसूत्र-

➢ सामवेद का **'गौतम धर्मसूत्र'** एकमात्र धर्मसूत्र है।
➢ इसके प्रणेता आचार्य गौतम हैं।
➢ इसमें 28 अध्याय और 1000 सूत्र हैं।
➢ **इसमें कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता है।**

सामवेद में सामगान के भेद- सामयोनि मन्त्रों का आश्रय लेकर ऋषियों ने विभिन्न गानों की रचना की है, सामगान के चार प्रकार हैं-

(1) ग्रामगेयगान- इसे **'प्रकृतिगान'** और **'गेयगान'** भी कहते हैं।

(2) आरण्यगान- इसे **'रहस्यगान'** भी कहते हैं। यह वनों या पवित्र स्थानों पर ही गाया जाता है।

(3) ऊहगान- ऊह का अर्थ है- विचारपूर्वक विन्यास। यह सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसरों पर गाया जाता है।

(4) उह्यगान- ऊह्यगान रहस्यगान है।

सामगान के विभाग

➢ सामगान के पाँच भाग निम्न हैं-

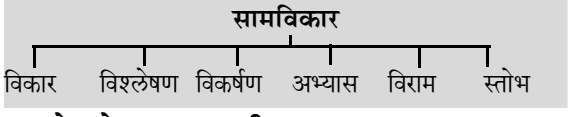
'प्रस्तावोद्गीथप्रतिहारोपद्रवनिधनानि भक्तयः'

अर्थात् सामगान के प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव और निधन ये पाँच भाग हैं।

भक्ति		गायक		मन्त्र का अंश
प्रस्ताव	-	प्रस्तोता	-	हुँ औग्नाइ
उद्गीथ	-	उद्गाता	-	ओम्
प्रतिहार	-	प्रतिहर्ता	-	नि होता सत्सि बर्हिषि ओम्
उपद्रव	-	उद्गाता	-	नि होता सत्सि ब।
निधन	-	तीनों मिलकर	-	र्हिषि ओम्

सामविकार-

➢ सामगान में संगीत के अनुकूल जो शाब्दिक परिवर्तन किया जाता हैं उसे **'सामविकार'** कहा जाता हैं। सामविकार के छह प्रकार होते हैं।



सामवेद के कुछ स्मरणीय तथ्य-

➢ सामवेद में गायन पद्धति है। इसमें स्वरों का सम्मिश्रण है।

- सामवेदीय मन्त्रों के ऊपर 1,2,3 संख्याएं दी गयी हैं।
  1- उदात्त 2- अनुदात्त 3-स्वरित
- नारदीय शिक्षा के अनुसार सामवेद में स्वर आदि के सूचक हैं-
  ''सप्त स्वराः, त्रयो ग्रामाः, मूर्च्छनास्त्वेकविंशतिः।
  ताना एकोनपञ्चाशत्, इत्येतत् स्वरमण्डलम्॥''
- अर्थात् स्वर सात हैं।
- ग्राम तीन हैं।
- मूर्च्छनाएँ 21 हैं।
- तान 49 हैं।

सप्त स्वर		
षड्ज	-	(स)
ऋषभ	-	(रे)
गान्धार	-	(ग)
मध्यम	-	(म)
पञ्चम	-	(प)
धैवत	-	(ध)
निषाद	-	(नि)

सामवेदीय भाष्यकार-

- सामवेद के भाष्यकार के रूप में इन आचार्यों का वर्णन प्राप्त होता है।

1. **माधव-** ये सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं। इनके भाष्य का नाम **'विवरण'** है।
2. **गुणविष्णु-** इन्होंने सामवेद की कौथुम शाखा पर 'छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य' लिखा है।
3. **भरतस्वामी-** इन्होंने सम्पूर्ण सामवेद पर भाष्य लिखा था, यह अभी प्रकाशित नहीं है।

भाष्यकार	भाष्य	वर्ष
माधव	विवरण	600 ई. लगभग
गुणविष्णु	छान्दोग्य मन्त्रभाष्य	12 वीं शती ई. उत्तरार्ध
भरतस्वामी	सम्पूर्ण सामवेद पर	14 वीं शती ई. पूर्वार्ध

सामवेद के भारतीय अनुवादक-

अनुवादक		भाषा
1. सत्यव्रत सामश्रमी	-	बङ्गला-अनुवाद
2. तुलसीराम स्वामी	-	हिन्दी-भाष्य
3. जयदेव विद्यालङ्कार	-	हिन्दी-भाष्य
4. श्रीराम शर्मा	-	हिन्दी-भाष्य
5. वीरेन्द्र शास्त्री	-	हिन्दी-अनुवाद
6. रामनाथ वेदालङ्कार	-	संस्कृत हिन्दी- भाष्य

सामवेद के पाश्चात्त्य अनुवादक

अनुवादक	विषय	भाषा	वर्ष
स्टेवेन्सन	राणायनीय शाखा	अंग्रेजी	1843 ई.
बेन्फे	कौथुम शाखा	जर्मन	1848 ई.
कैलेन्ड	जैमिनीय शाखा	रोमन	1907 ई.
ग्रिफिथ	सम्पूर्ण सामवेद	अंग्रेजी	1899 ई.
वेबर	अद्भुत ब्राह्मण	जर्मन	1858 ई.
बर्नेल	सामविधान ब्राह्मण		1873 से
	दैवत ब्राह्मण		1877 तक
	वंश-ब्राह्मण		
	संहितोपनिषद् ब्राह्मण		
	आर्षेय ब्राह्मण		
एर्टल	जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण	अंग्रेजी	
कैलेन्ड	जैमिनीय ब्राह्मण	जर्मन	
स्टेनो कोनो	सामविधान ब्राह्मण		1893ई.
ग्रास्ट्रा	जैमिनीय गृह्यसूत्र	डच	1906ई.

➢ सामवेद- संहिता एक दृष्टि में

आचार्य - जैमिनि
ऋत्विक् - उद्गाता
उपवेद - गान्धर्ववेद
देवता - आदित्य (सूर्य)
विभाजन - दो भागों में (पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक)

पूर्वार्चिक	-	4 काण्ड, 6 अध्याय (प्रपाठक)
उत्तरार्चिक	-	9 प्रपाठक, 1225 मन्त्र, 400 सूक्त
शाखा	-	1- कौथुमीय 2. राणायनीय 3. जैमिनीय
ब्राह्मण	-	8 या 9
आरण्यक	-	2 (तलवकार, छान्दोग्य)
उपनिषद्	-	2 (केनोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्)
प्रातिशाख्य	-	3 (ऋक्तन्त्र, पुष्पसूत्र, सामतन्त्र)
शिक्षा	-	3 (गौतमी, लोमशी, नारदीय,)
श्रौतसूत्र	-	4 (आर्षेय, लाट्यायन, द्राह्यायण, जैमिनीय)
गृह्यसूत्र	-	5 (गोभिल, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय, कौथुम)
धर्मसूत्र	-	1 (गौतम धर्मसूत्र)
शुल्बसूत्र	-	नहीं प्राप्त होता है।
सामगान	-	4 (ग्रामगेयगान, आरण्यगान, ऊहगान, ऊह्यगान)
सामविकार	-	6 (विकार, विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम, स्तोभ)
सामभक्तियाँ	-	5 (प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव, निधन)
भाष्यकार	-	माधव, गुणविष्णु, भरतस्वामी।

4. अथर्ववेद

➢ **अथर्ववेद का अर्थ-** 'अथर्वों का वेद।' अर्थात् अभिचार मन्त्रों से सम्बन्धित ज्ञान। वेदों की चारों संहिताओं में अथर्ववेद की एक निजी और अन्यतम विशिष्टता रही है। इस वेद के **'अथर्व'** शब्द की सुन्दर व्याख्या यास्काचार्य के निरुक्त तथा गोपथ ब्राह्मण में उपलब्ध है। निरुक्त के अनुसार **'थर्व'** धातु गत्यर्थक है और **'अथर्व'** का अर्थ है- **'गतिहीन अथवा स्थिरता युक्त।'** अर्थात् जिसमें चित्त में स्थिरता एवं दृढ़ता लाई जा सके। तदनुसार गोपथ ब्राह्मण में प्रस्तुत है कि- समीपस्थ आत्मा को अपने अन्दर देखना।

➢ पाणिनीय धातु पाठ में **'थर्वी'** धातु हिंसा के अर्थ में पठित है। 'थर्व' धातु कुटिलता एवं हिंसावाची है। अतः अकुटिलता तथा अहिंसा योग से ब्रह्म प्राप्ति कराने के कारण इस संहिता को अथर्ववेद कहा गया।

अथर्ववेद की शाखाएँ-

➢ पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'नवधाऽऽथर्वणो वेदः' कहकर इस वेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार हैं- 1. पैप्पलाद 2. तौद (स्तौद) 3. मौद 4. शौनकीय 5.जाजल 6.जलद 7.ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य

➢ प्रपञ्चहृदय, चरणव्यूह और सायण की अथर्ववेद-भाष्य भूमिका में भी नौ शाखाओं का उल्लेख मिलता है।

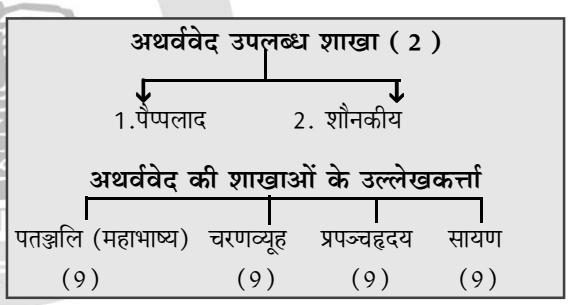
➢ इसमें केवल पैप्पलाद एवं शौनकीय शाखा उपलब्ध होती है।

अथर्ववेद के उपवेद-

➢ गोपथ ब्राह्मण में अथर्ववेद के पाँच उपवेदों का उल्लेख है- 1. सर्पवेद 2. पिशाचवेद 3. असुरवेद 4. इतिहासवेद 5.पुराणवेद

अथर्ववेद के अपर नाम-

➢ ब्रह्मवेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, भिषग्वेद, क्षत्रवेद, महीवेद, छन्दोवेद, अंगिरसवेद, भैषज्यवेद, भृग्वंगिरोवेद



उपलब्ध शाखा

➢ 1. **शौनकीय शाखा (शौनक)**

➢ आजकल अथर्ववेद संहिता की शौनकीय शाखा ही प्रचलित है।

➢ इसमें 20 काण्ड,730 सूक्त, 5987 मन्त्र हैं।

➢ इसमें सबसे बड़े तीन काण्ड हैं- काण्ड-20 (958 मन्त्र)
काण्ड- 6 (454 मन्त्र)
काण्ड-19 (453 मन्त्र)

➢ सबसे छोटा काण्ड-17 वाँ काण्ड है (30 मन्त्र)

➢ **2. पैप्पलाद शाखा**

➢ पिप्पलाद ऋषि के नाम पर इस शाखा का नामकरण हुआ पैप्पलाद।

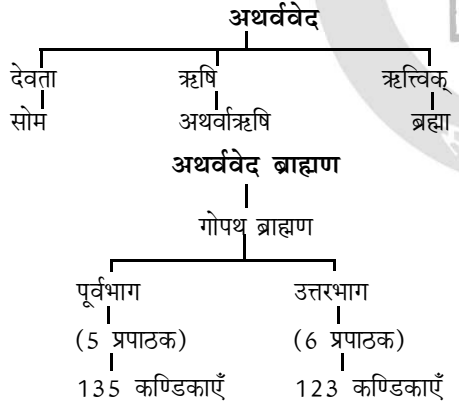
➢ इस शाखा की संहिता 'पैप्पलाद संहिता' है।

➢ इस शाखा की एक मात्र प्रति कश्मीर की शारदा लिपि में प्राप्त हुई थी।

- तत्कालीन काश्मीर नरेश ने 1875 ई0 में वह प्रति प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् डॉ0 राय को उपहार रूप में दी।
- प्रपञ्चहृदयकार ने पैप्पलाद शाखा का संकेत किया है। उन्होंने पैप्पलाद शाखा को 20 काण्डों का बताया।
- 1901 ई0 में अमेरिका में इसकी फोटो स्टेट प्रति छपी, बाद में डॉ0 रघुवीर ने भी इसका सुन्दर संस्करण प्रकाशित किया।
- पतञ्जलि के प्रमाण से यह स्पष्ट है कि महाभाष्यकाल में अथर्ववेद की यही शाखा सर्वाधिक प्रचलित थी।

अथर्ववेद के महत्त्वपूर्ण सूक्त

1. पृथिवीसूक्त (12वाँ काण्ड)
2. ब्रह्मचर्य सूक्त (11वाँ काण्ड)
3. काल सूक्त (19वाँ काण्ड)
4. विवाह सूक्त (14वाँ काण्ड)
5. व्रात्य सूक्त (15वाँ काण्ड)
6. मधुविद्या सूक्त (9वाँ काण्ड)
7. ब्रह्मविद्या सूक्त
8. रोहित सूक्त (13वाँ काण्ड)
9. कौशिक सूक्त
10. आयुष्यकर्म सूक्त
11. भैषज्यकर्म सूक्त
12. आरोग्यमन्त्र सूक्त
13. पौष्टिक मन्त्र
14. शान्ति सूक्त
15. प्रकीर्ण सूक्त



- **अथर्ववेदीय-ब्राह्मण**

गोपथ ब्राह्मण

- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है।
- गोपथ ब्राह्मण पैप्पलाद शाखा से सम्बद्ध है-
- पैप्पलाद शाखा के अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र- **'शं नो देवीरभिष्टये'** है।
- गोपथ ब्राह्मण दो भागों में विभक्त है- पूर्वभाग (5 प्रपाठक) उत्तरभाग (6 प्रपाठक) = 11 प्रपाठक हैं।
- पूर्वगोपथ ब्राह्मण में 135 कण्डिकाएँ हैं। उत्तर गोपथ ब्राह्मण में 123 कण्डिकाएँ हैं।
- कुल मिलाकर गोपथ ब्राह्मण में 11 प्रपाठक, 258 कण्डिकाएँ हैं।
- अथर्ववेद का आरण्यक नहीं उपलब्ध है।

अथर्ववेदीय उपनिषद्

- अथर्ववेद के उपलब्ध उपनिषद् तीन हैं-
- 1. प्रश्नोपनिषद् 2. मुण्डकोपनिषद् 3. माण्डूक्योपनिषद्

1. प्रश्न उपनिषद्

- यह अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा से सम्बद्ध है, जो सम्पूर्ण गद्यमय है।
- पिप्पलाद ऋषि अपने छह शिष्य ऋषियों द्वारा पूछे गये अध्याय विषयक प्रश्नों का समुचित उत्तर देते हैं, इन प्रश्नों के कारण ही इस उपनिषद् का नाम प्रश्नोपनिषद् पड़ा।
- छह शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं-
  1. कबन्धी कात्यायन
  2. भार्गव वैदर्भि
  3. कौसल्य आश्वलायन
  4. सौर्य्यायणी
  5. शैव्यसत्यकाम
  6. सुकेशा भारद्वाज

अथर्ववेदीय उपनिषद्

प्रश्न-उपनिषद्	मुण्डक उपनिषद्	माण्डूक्य उपनिषद्
(सम्पूर्ण गद्यमय)	मुण्डक-3	(लघुकाय उपनिषद)
* पिप्पलाद ऋषि द्वारा अपने छह शिष्यों को आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर देना	* प्रत्येक मुण्डक 2-2 खण्डों में विभक्त	* कुल 12 वाक्य।
* इसी कारण इस उपनिषद् का नाम प्रश्न-उपनिषद् नाम पड़ा।	* सत्यमेव जयते महावाक्य	* खण्ड ऋचा कण्डिका में विभाजन
	*'द्वा सुपर्णा सयुजा' मन्त्र	* ओङ्कार का विशेष वर्णन
	* वेदान्त शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग	* ब्रह्म की चार अवस्थाओं का वर्णन
		* चतुष्पाद आत्मा का वर्णन

2. मुण्डकोपनिषद्

- 1. अथर्ववेदीय मुण्डकोपनिषद् कुल तीन मुण्डकों तथा प्रत्येक मुण्डक दो-दो खण्डों में विभक्त है।
- यह मुण्डकों अर्थात् संन्यासियों के लिये विरचित हुई है।
- इस उपनिषद् में ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा (अर्थवन्) को

ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया है।

- प्रसिद्ध वाक्य **'सत्यमेव जयते'** इसी उपनिषद् में है।
- द्वैतवाद का प्रतिपादक **''द्वा सुपर्णा सयुजा''** मन्त्र इसी उपनिषद् का है।
- वेदान्त शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इसी उपनिषद् में उपलब्ध है।

3. माण्डूक्योपनिषद्

- यह उपनिषद् लघुकाय है।
- इसमें कुल 12 वाक्य/खण्ड/कण्डिकाएँ हैं।
- इसमें विशेष रूप से ओङ्कार का रहस्य वर्णित है।
- इसमें बताया गया है कि यह सारा संसार, वर्तमान, भूत और भविष्य सब कुछ **'ओम्'** की ही व्याख्या है।
- इसी में ही ब्रह्म की चार अवस्थाएं बतायी गयी हैं- जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय
- इसी सन्दर्भ में चतुष्पाद् आत्मा का सूक्ष्मविवेचन भी प्राप्त होता है।

अथर्ववेद कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
वैतानसूत्र	कौशिक सूत्र	उपलब्ध नहीं हैं।	उपलब्ध नहीं हैं।

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र

- अथर्ववेद का श्रौतसूत्र वैतान ही उपलब्ध है।

  वैतान श्रौतसूत्र - ब्रह्मा नामक ऋत्विज, उसके सहायक तथा यजमान के सभी कर्तव्यों का उल्लेख इस श्रौतसूत्र के पहले ही अध्याय में दर्शपूर्णमास के विवरण में प्रतिपादित है।
- यह श्रौतसूत्र गोपथ ब्राह्मण पर आश्रित है।
- इसमें 8 अध्याय और 43 कण्डिकाएँ हैं।
- ये श्रौतकर्म बतलाये गये हैं- दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, उक्थ्य, षोडशी, अतिरात्र,वाजपेय, अग्निचयन, राजसूय आदि

अथर्ववेदीय-गृह्यसूत्र-

- अथर्ववेद का एकमात्र गृह्यसूत्र कौशिक (कौशिकसूत्र) उपलब्ध है।
- कौशिकसूत्र का अथर्ववेद की शौनकीय शाखा से विशेष सम्बन्ध है।
- इसमें 14 अध्याय हैं। उनका विभाजन 141 कण्डिकाओं में हुआ है।
- शान्तिकर्म और अभिचार कर्मों का विशद विवेचन है।
- इसमें प्रायः प्रायश्चित्त कर्म और भविष्यवाणी का विशद विवेचन है।
- कौशिक सूत्र को **'संहिता विधि'** या **'संहिता कल्प'** संज्ञा प्राप्त है।
- अथर्ववेद का धर्मसूत्र उपलब्ध नहीं है।
- अथर्ववेद का शुल्बसूत्र भी उपलब्ध नहीं है।

अथर्ववेद के शिक्षाग्रन्थ

- अथर्ववेद का केवल एक शिक्षाग्रन्थ है– माण्डूकी शिक्षा।

माण्डूकी शिक्षा

- यह श्लोकात्मक है।
- साम स्वरों का इसमें विशद विवेचन है। इसमें कुल 179 श्लोक हैं।
- अथर्ववेद के स्वरों तथा वर्णों को भली-भाँति जानने के लिये यह शिक्षा उपयोगी है।

अथर्ववेदीय शिक्षाग्रन्थ

माण्डूकी शिक्षा

179 श्लोक
(स्वरों और वर्णों का वर्णन)

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- अथर्ववेद के दो प्रातिशाख्य उपलब्ध हैं।

(i) शौनकीय चतुरध्यायिका

(ii) अथर्ववेद प्रातिशाख्य

अथर्ववेद प्रातिशाख्य

शौनकीय चतुरध्यायिका	अथर्ववेद-प्रातिशाख्य
• 4 अध्याय	• 3 प्रपाठक
• सूत्र संख्या- 434	• प्रथम प्रपाठक में 3 पाद हैं।
• सबसे प्राचीन प्रातिशाख्य	• द्वितीय और तृतीय प्रपाठक में 4पाद हैं।
	• कुल सूत्र संख्या 221 है।

1. शौनकीय चतुरध्यायिका

- इसके लेखक शौनक हैं।
- इसमें चार अध्याय हैं और 434 सूत्र हैं।

- 1. ध्वनि विचार 2. सन्धि विवेचन 3. संहिता पाठ में दीर्घत्त्व, द्वित्त्व, णत्त्व, स्वरसन्धि। 4. अवग्रह, प्रगृह्य आदि का विवेचन।
- यही सबसे प्राचीन अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य है।
- इसको इंग्लिश अनुवाद के सहित संस्करण डॉ0 ह्विटनी ने प्रकाशित किया है।
- प्रथम अध्याय में 105 सूत्र हैं।
- द्वितीय अध्याय में 107 सूत्र हैं।
- तृतीय अध्याय में 96 सूत्र हैं।
- चतुर्थ अध्याय में 126 सूत्र हैं।

2. अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- यह तीन प्रपाठकों में विभक्त है।
- प्रपाठक पुनः पादों तथा सूत्रों में विभक्त हैं।
- प्रथम प्रपाठक में 3 पाद हैं।
- द्वितीय और तृतीय प्रपाठक में चार-चार पाद हैं।
- कुल सूत्र संख्या 221 है।
- इस प्रातिशाख्य में सन्धि,स्वर तथा पदपाठ के नियम बताये गये हैं।
- जिनमें स्वरों का वर्णन अधिक विस्तार से किया गया है।
- डॉ. सूर्यकान्त ने इसका एक सुन्दर संस्करण 1940 में लाहौर से प्रकाशित किया था।
- इस ग्रन्थ की भाषा शैली सूत्रात्मक है।
- इस प्रातिशाख्य ग्रन्थ में अथर्ववेद के उच्चारण सम्बन्धी नियमों का भी उल्लेख है।

अथर्ववेद के भारतीय भाष्यकार

दुर्गादास लाहिड़ी

- सायण-भाष्य सहित अथर्ववेद (शौनक शाखा) को 5 भागों में प्रकाशित किया।

शंकर पाण्डुरंग-

- अथर्ववेद को सायण भाष्य-सहित संस्करण 4 भागों में प्रकाशित किया गया था। (बम्बई 1898 ई.)
- यह बहुत शुद्ध संस्करण है।

सातवलेकर-

- अथर्ववेद संहिता (शौनकीय) 1943 ई0 में प्रकाशित की।
- इन्होंने 'अथर्ववेद' का सुबोध-भाष्य पाँच भागों में प्रकाशित किया।
- इन्हें आधुनिक युग का 'सायण' कहा जाता है।
- यह अथर्ववेद का सर्वोत्तम व्याख्या-ग्रन्थ है ।
- यह ग्रन्थ श्रीसातवलेकर के अगाध वेदज्ञान और अथक् परिश्रम का परिचायक है।

क्षेमकरण त्रिवेदी

- सम्पूर्ण ऋग्वेद का हिन्दी भाष्य किया है।

जयदेव विद्यालंकार

- सम्पूर्ण अथर्ववेद का हिन्दी भाष्य किया ।

श्रीरामशर्मा

- इन्होंने अथर्ववेद को हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया है।

विश्वबन्धु-

- सायणभाष्य सहित अथर्ववेद पाँच भागों में निकाला है।

अथर्ववेदीय-शिक्षाग्रन्थ-भाष्यकार

भगवद्दत्त-

- अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका और माण्डूकीशिक्षा पर भाष्य टीका लिखी।

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य-भाष्यकार

विश्वबन्धु-

- अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य और अथर्ववेदीय बृहत्सर्वानुक्रमणी पर भाष्यटीका लिखी।

अथर्ववेदीय ब्राह्मण-भाष्यकार

राजेन्द्र लाल मिश्र- ➢ गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य लिखा।

क्षेमकरण त्रिवेदी-

- गोपथ ब्राह्मण हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया।

डॉ0 विजयपाल शास्त्री-

- गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य मिलता है।

अथर्ववेदीय पाश्चात्त्य विद्वान्

रोठ और ह्विटनी-

- अथर्ववेद संहिता (शौनकीय-शाखा) का सर्वप्रथम सम्पादन किया और 1856 ई0 में उसे प्रकाशित किया।

ब्लूमफील्ड और गार्वे-

- अथर्ववेद (पैप्पलादशाखा) की एक अतिजीर्ण कश्मीर से शारदा लिपि में प्राप्त प्रति से फोटो-प्रति तीन बड़ी जिल्दों में 1901 ई0 में छपवाई।

कैलेण्ड-

➢ अथर्ववेद-संहिता का एक आलोचनात्मक संस्करण उट्रिच (हालैंड) से प्रकाशित किया।

ग्रिफिथ-

➢ अथर्ववेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद वाराणसी से 1895-1898 में छपवाया था।

ह्विटनी और लानमान-

➢ अथर्ववेद का अंग्रेजी में अनुवाद 150 पृष्ठ की भूमिका तथा विविध टिप्पणियों से युक्त है।

➢ जो 1905 ई0 में दो भागों में प्रकाशित किया।

ब्लूमफील्ड

➢ पैप्पलाद संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद 1901 ई0 में प्रकाशित किया था।

➢ अथर्ववेदीय ब्राह्मण के पाश्चात्य अनुवादक

गास्ट्रा-

➢ गोपथ ब्राह्मण का एक सुन्दर संस्करण 1919 ई0 में प्रकाशित किया।

➢ अथर्ववेदीय कल्पसूत्र के पाश्चात्य अनुवादक

ब्लूमफील्ड-

➢ अथर्ववेदीय कौशिक सूत्र 1890 ई0 में प्रकाशित किया था।

अथर्ववेद संहिता-एक दृष्टि में

➢ **आचार्य** - सुमन्तु

- **ऋषि-** अथर्वा
- **ऋत्विक्** - ब्रह्मा

➢ **उपवेद-** पिशाचवेद, सर्पवेद,पुराणवेद,इतिहासवेद,असुरवेद

- **अपरनाम-** ब्रह्मवेद, क्षत्रवेद, महीवेद, छन्दोवेद, आदि।
- **विभाजन-** काण्ड में
- **काण्ड-** 20 काण्ड

➢ **उत्पत्ति देवता-** सोम

➢ **शाखायें**

- पैप्पलाद → तौद
- मौद → शौनकीय
- जाजल → जलद
- ब्रह्मवद → देवदर्श
- चारणवैद्य

➢ **उपलब्ध शाखा-** पैप्पलाद, शौनकीय (शौनक)

ब्राह्मण- गोपथ ब्राह्मण
आरण्यक- उपलब्ध नहीं
उपनिषद्- प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य
श्रौतसूत्र- वैतान श्रौतसूत्र
गृह्यसूत्र- कौशिक गृह्यसूत्र
धर्मसूत्र- उपलब्ध नहीं
शुल्बसूत्र- उपलब्ध नहीं
शिक्षा- माण्डूकी शिक्षा
प्रातिशाख्य- 1. शौनकीय-चतुरध्यायिका
2. अथर्ववेद-प्रातिशाख्य

भारतीय भाष्यकार-

1. दुर्गादास लाहिड़ी
2. शंकर पांडुरंग पण्डित
3. सातवलेकर
4. क्षेमकरण त्रिवेदी
5. जयदेव विद्यालंकार
6. श्रीरामशर्मा
7. विश्वबन्धु
8. डॉ0 रघुवीर
9. भगवद्दत्त
10. डॉ0 विजयपाल शास्त्री
11. राजेन्द्र लाल मिश्र

पाश्चात्त्य अनुवादकार

1. रोठ और ह्विटनी
2. ब्लूमफील्ड और गार्वे
3. कैलेण्ड
4. ग्रिफिथ
5. ह्विट्नी और लानमान
6. गास्ट्रा

वेदाङ्गों का सामान्य परिचय

➢ वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिये जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है, उन्हे वेदाङ्ग कहते हैं।

➢ वेदाङ्ग का अर्थ है- वेदों के अङ्ग। वेदानाम् अङ्गानि = वेदाङ्गानि।

➢ वेदाङ्ग में अङ्ग शब्द का अर्थ है 'वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।' 'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि।'

➢ वेदाङ्गों के द्वारा मन्त्रों के अर्थ, उनकी व्याख्या तथा यज्ञ में उनके विनियोग आदि का बोध होता है।

➢ वेदाङ्गों की संख्या छह है - **शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प।** वेदाङ्ग के विषय में पाणिनीय

शिक्षा में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

'छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

(पा0शि041-42)

1. छन्द	-	पाद (पैर)
2. कल्प	-	हस्त (हाथ)
3. ज्योतिष	-	चक्षु (नेत्र)
4. निरुक्त	-	श्रोत्र (कान)
5. शिक्षा	-	घ्राण (नाक/नासिका)
6. व्याकरण	-	मुख

- वेदाङ्गों का सर्वप्रथम उल्लेख मुण्डकोपनिषद् में अपरा विद्या के अन्तर्गत चारों वेदों के नाम के बाद हुआ।
- उपनिषदों में दो प्रकार की विद्या का उल्लेख प्राप्त होता है- पराविद्या,अपराविद्या।
- अपराविद्या के अन्तर्गत चार वेद तथा छह वेदाङ्ग आते हैं।

1.शिक्षा वेदाङ्ग का परिचय

- शिक्षा का अर्थ है- वर्णोच्चारण की शिक्षा देना।
- **'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा'** अर्थात् जिसमें स्वर, वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है, उसे शिक्षा कहते हैं ।
- शिक्षा को वेद का घ्राण कहा गया है- **'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य'।**
- तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षा के छह अङ्गों का उल्लेख है जो, हैं –1.वर्ण, 2.स्वर, 3.मात्रा, 4.बल, 5.साम, 6.सन्तान

शिक्षाग्रन्थ-

- वर्तमान में उपलब्ध शिक्षाग्रन्थ 35 हैं। 32 शिक्षाग्रन्थों का एक संकलन **'शिक्षा-संग्रह'** नाम से प्रकाशित हुआ।

पाणिनीय शिक्षा-

- पाणिनीय शिक्षा वैदिक और लौकिक दोनों के लिये उपयुक्त है।
- पाणिनीय शिक्षा में साठ (60) श्लोक हैं।
- पाणिनीय शिक्षा में वर्णों की संख्या, उच्चारण-प्रक्रिया का ध्वनि-शास्त्रीय वर्णन, स्थान और प्रयत्न का विवरण, संवृत, विवृत, घोष, अघोष, पाठक के गुण-दोषों का वर्णन आदि प्राप्त होता है।
- **भारद्वाज शिक्षा-** पदों की शुद्धता तथा ध्वनि-भेद से उदात्त आदि स्वरों में भेद का वर्णन किया गया है।
- **याज्ञवल्क्य शिक्षा-** याज्ञवल्क्य शिक्षा में 232 श्लोक हैं। इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है।
- वर्णों के भेद,स्वरूप,परस्पर साम्य-वैषम्य,लोप आगम-विकार,प्रकृतिभाव आदि का वर्णन है।
- **प्रातिशाख्य प्रदीप शिक्षा-**
  इसमें स्वर-वर्ण आदि की शिक्षा का विवेचन तथा प्राचीन वैयाकरण के मतों का उल्लेख प्राप्त होता है।
- **नारदीय शिक्षा-**
  नारदीय शिक्षा में सामवेद के स्वरों का विस्तार से वर्णन है।
- **अन्य महत्त्वपूर्ण शिक्षा ग्रन्थ-** व्यासशिक्षा, वशिष्ठशिक्षा,कात्यायनी शिक्षा, पाराशरी शिक्षा,माण्डव्य शिक्षा,माध्यन्दिनी शिक्षा,वर्णरत्नप्रदीपिका,केशवी शिक्षा,स्वराङ्कन शिक्षा,स्वरभक्ति लक्षण शिक्षा

2. व्याकरण वेदाङ्ग का परिचय

व्याकरण को वेदों का मुख माना जाता है। **'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'।**

- जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के प्रकृति प्रत्यय का विवेचन किया जाता है, उसे व्याकरण कहते हैं- **'व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्'**
- व्याकरणशास्त्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है- वैदिक व्याकरण तथा लौकिक व्याकरण।
- व्याकरण-शास्त्र में पद-पदार्थ, वाक्य-वाक्यार्थ आदि का विवेचन प्राप्त होता है।
- ऋग्वेद के एक मन्त्र में व्याकरणशास्त्र को एक वृषभ के रूप में बाँधा गया है-

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याम् आविवेश।।

- चत्वारि शृंङ्गाणि - नाम,आख्यात,उपसर्ग,निपात।
- त्रयो पादाः - भूत, भविष्य, वर्तमान काल
- सप्त हस्तासः - सात विभक्तियाँ
- त्रिधा बद्धः - उर,कण्ठ,शिर तीन स्थानों से बँधा हुआ।
- शब्दों की व्युत्पत्ति तथा अर्थबोध के लिये व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। व्याकरणशास्त्र के पाँच प्रयोजन हैं- **'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः'**

1. **रक्षा** - वेदों की रक्षा के लिये
2. **ऊह (तर्क)** - यथास्थान विभक्ति-परिवर्तन, वाच्य-परिवर्तन आदि के लिए।
3. **आगम** - ब्राह्मण को निष्काम भाव से वेद पढ़ना चाहिए।
4. **लघु** - सरलता या सङ्क्षेप ढङ्ग से शब्द ज्ञान के लिये।
5. **असन्देह** - शब्द और अर्थ विषयक सन्देह के निराकरण के लिये।

प्रातिशाख्य ग्रन्थ-

प्रातिशाख्य शब्द का अर्थ है 'प्रत्येक शाखा से सम्बद्ध व्याकरण आदि का बोध कराने वाला ग्रन्थ।'

- प्रातिशाख्य ग्रन्थों का शिक्षा, व्याकरण और छन्द तीनों से साक्षात् सम्बन्ध है।
- वेदों के यथार्थ ज्ञान के लिये वर्णोच्चारणशिक्षा, सन्धि नियम, शब्दरूप, धातुरूप, उदात्तादि स्वर और छन्दों का ज्ञान आवश्यक है इस आवश्यकता की पूर्ति के हेतु प्रातिशाख्य ग्रन्थों की रचना हुई।

ऋक्प्रातिशाख्य-

- ऋक्प्रातिशाख्य का सम्बन्ध ऋग्वेद की शाकल शाखा से है।
- ऋक्प्रातिशाख्य के रचयिता आचार्य शौनक हैं।

ऋक्प्रातिशाख्य में प्रतिपादित विषय-

- पारिभाषिक शब्दों के लक्षण, विभिन्न सन्धियों का विवेचन, क्रमपाठ का विवरण, पद विभाग और व्यञ्जनों के स्वरूप का विवेचन।

विशेष-विष्णुमित्र कृत वृत्ति। यह प्रारम्भ के दो वर्गों पर ही प्राप्य है।

शुक्ल यजुःप्रातिशाख्य या वाजसनेयिप्रातिशाख्य-

- इस प्रातिशाख्य के रचयिता कात्यायन हैं।
- शुक्लयजुःप्रातिशाख्य में आठ अध्याय हैं।
- शुक्लयजुःप्रातिशाख्य में दस प्राचीन ऋषियों के नामों का उल्लेख है, जो इस प्रकार हैं- काण्व, काश्यप, गार्ग्य, माध्यन्दिन, शाकटायन, शाकल्य, शौनक आदि हैं।

तैत्तिरीयप्रातिशाख्य-

- तैत्तिरीयप्रातिशाख्य का सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है। इसके दो प्रश्नों (खण्डों) में बारह-बारह अध्याय हैं, इस प्रकार इस प्रातिशाख्य में कुल चौबीस अध्याय हैं।

सामवेदीय प्रातिशाख्य-(पुष्पसूत्र)

- पुष्पसूत्र के प्रणेता पुष्प ऋषि हैं।
- इसमें 10 प्रपाठक हैं, जिनका सम्बन्ध सामगान से है।
- पुष्पसूत्र पर अजातशत्रु की व्याख्या उपलब्ध है।
- पुष्पसूत्र में स्तोभ का मुख्य रूप से विवेचन है।

ऋक्तन्त्र-

- ऋक्तन्त्र सामवेद की कौथमुशाखा से सम्बन्धित है।
- 'ऋक्तन्त्र व्याकरण' भी इसे कहा जाता है।
- ऋक्तन्त्र में पाँच प्रपाठक तथा 280 सूत्र हैं।
- ऋक्तन्त्र के रचयिता शाकटायन हैं।
- वर्णोच्चारण शिक्षा, सन्धिविचार, पदान्त वर्णों के विभिन्न परिवर्तन आदि इसके वर्ण्य विषय हैं।
- ऋक्तन्त्र में पारिभाषिक संज्ञाएँ तीन प्रकार की हैं - कृत्रिम, आदि या अन्त का अक्षर तथा अन्वर्थक।

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य-

- अथर्ववेद से सम्बन्धित दो प्रातिशाख्य उपलब्ध हैं-
- 1. शौनकीयचतुरध्यायिका 2. अथर्ववेदप्रातिशाख्य।

3.छन्द वेदाङ्ग का परिचय

- छन्द शब्द **'छद् धातु'** (ढँकना) से बना है।
- **'छन्दांसि छादनात्'** (आचार्य यास्क) अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है।-आचार्य यास्क।
- **'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'** जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है, उसे छन्द कहते हैं। **(आचार्य कात्यायन)**
- वैदिक छन्दों का आधार अक्षर या वर्णों की संख्या है।
- छन्द को वेद का पाद (पैर) कहा जाता है **'छन्दः पादौ तु वेदस्य'।**
- आठ अध्यायों में विभक्त 'छन्दसूत्र' के रचयिता आचार्य पिङ्गल हैं।
- वैदिक छन्द वृत्तात्मक हैं तथा इनमें मात्रिक छन्दों का अभाव है।
- वैदिक छन्दों को 'अक्षर-छन्द' भी कहा जाता है।
- 'वैदिक छन्द' दो प्रकार के होते हैं- **'अक्षरगणनानुसारी'** तथा **पादाक्षरगणनानुसारी।**
- जिसमें अक्षरों की गणना हो उसे **अक्षरगणनानुसारी** तथा जिसमें पदों की गणना हो उसे **'पादाक्षरगणनानुसारी'** छन्द कहते हैं।
- वैदिक छन्दों की कुल संख्या 26 है।
- ऋग्वेद में प्रयुक्त छन्दों की संख्या बीस है।
- वेदों में मुख्य रूप से सात छन्दों का प्रयोग है, जो हैं- गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती।
- हलायुध ने छन्दसूत्र पर **'मृतसंजीवनी'** टीका लिखी।
- ऋग्वेद में अधिकांश 20 अक्षरों वाले छन्दों से लेकर 48 अक्षरों वाले छन्द हैं।

छन्द विषयक नियम-

- पद के अन्त के साथ शब्द का अन्त होता है।
- ह्रस्व स्वर के बाद संयुक्त वर्ण होंगे तो पूर्ववर्ती लघु स्वर को

गुरु माना जाता है। बाद में कोई स्वर हो तो पूर्ववर्ती दीर्घस्वर को ह्रस्व कर दिया जाता है।

- शब्द के अन्तर्गत और सन्धि स्थानों में प्राप्त य्, व् को आवश्यकतानुसार क्रमशः इ, उ पढ़ा जाता है।
- एकादेश हुए स्वरों को उच्चारण के समय आवश्यकतानुसार एकादेश से पूर्व की स्थिति में पढ़ा जाता है।
- ए और ओ के बाद पूर्वरूप हुए अ को आवश्यकतानुसार फिर अ पढ़ा जाता है।

छन्द नाम	अक्षर/वर्ण	पाद
गायत्री	24	3
उष्णिक्	28	3
अनुष्टुप्	32	4
बृहती	36	4
पंक्ति	40	5
त्रिष्टुप्	44	4
जगती	48	4
अतिजगती	52	5
अतिशक्वरी	60	5
अष्टि	64	5

''गाउअबृपंत्रिज'' गा = गायत्री, **उ** = उष्णिक्, **अ** = अनुष्टुप् **बृ** = बृहती, **पं** = पङ्क्ति, **त्रि** = त्रिष्टुप् **ज** = जगती

4. निरुक्त वेदाङ्ग का परिचय

- निरुक्त आचार्य यास्क की कृति है। जिसमें बारह अध्याय हैं। तथा दो अध्याय परिशिष्ट के रूप में है। इस प्रकार परिशिष्ट सहित कुल चौदह अध्याय हैं।
- निरुक्त वेदपुरुष का कान है **'निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते'।**
- निरुक्त निघण्टु का व्याख्यान ग्रन्थ है, जिसमें ऋग्वेद के शब्दों का संग्रह है।
- निरुक्त के प्रारम्भिक तीन अध्याय **'नैघण्टुक काण्ड'** कहे जाते हैं।
- चार, पाँच, छह अध्याय को **'नैगम काण्ड'** कहा जाता है।
- निरुक्त में तीन काण्ड हैं- नैघण्टुक काण्ड, नैगम काण्ड,दैवत काण्ड।
- दुर्गाचार्य, यास्क कृत निरुक्त के प्रसिद्ध टीकाकार हैं।
- वेदों के अर्थों को स्पष्ट करने में निरुक्त आवश्यक है और व्याकरण शास्त्र का पूरक है।
- वेदमन्त्रों के कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति निरुक्त करता है- **'अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'-सायण**
- निरुक्त में चार प्रकार के पद हैं- नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात **'चत्वारि पदजातानि नामाख्याते च, उपसर्ग निपाताश्च'।**

5. ज्योतिष वेदाङ्ग का परिचय

- आचार्य पाणिनि ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है **'ज्योतिषामयनं चक्षुः'**
- ज्योतिष का अर्थ है- ज्योतिर्विज्ञान। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशीय पदार्थों की गणना ज्योतिर्मय पदार्थों के अन्तर्गत होती है।
- 'वेदाङ्ग ज्योतिष' भारतीय ज्योतिष-शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ है, जिसके रचयिता **लगध** नामक ऋषि हैं।

वेदाङ्ग ज्योतिष में प्रतिपादित विषय-

- काल का विभाजन, नक्षत्र और नक्षत्र देवता, युग के वर्ष, काल और तिथि का निर्णय, अयन और पर्व निर्धारण, नक्षत्रों का काल विभाजन, तिथि-नक्षत्र, नक्षत्र और पर्व का काल निर्धारण, अधिक मास आदि।
- वेदाङ्ग ज्योतिष के अनुसार **पाँच सौर वर्षों का** एक युग होता है।
- पाँच सौर वर्षों के नाम हैं- संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इद्वत्सर, वत्सर।
- पाँच वर्ष का युग मानने का कारण- पाँच वर्ष बाद सूर्य और चन्द्रमा राशिचक्र के उसी नक्षत्र पर पुनः एक क्रम में होते हैं।

6.कल्प वेदाङ्ग का परिचय

- कल्पसूत्र ग्रन्थ का तात्पर्य प्रयोगविधि के यथार्थ प्रतिपादक ग्रन्थों से है।
- जिनसे सिद्ध प्रयोग का ज्ञान हो, वह कल्प है।
- सिद्ध प्रयोगों के बोधक होने के कारण कल्प अनुष्ठान के साधन होते हैं।
- जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया गया है, उन्हें कल्प कहते हैं- आचार्य सायण।
- जिन ग्रन्थों में वैदिक कर्मों का साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया गया है, उन्हें कल्प कहते हैं।
- **कल्पसूत्र के भेद-** कल्पसूत्र के चार भेद हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र।

1. श्रौतसूत्र

- श्रौत शब्द का अर्थ है 'श्रुति द्वारा प्रतिपादित या वेदों में वर्णित।'
- श्रौतसूत्रों में यज्ञ-याग इष्टियों का विस्तृत विवेचन और वर्णन है।
- दर्श-पूर्णमासयाग, सोमयाग, वाजपेययाग, राजसूययाग, अश्वमेधयाग, सौत्रामणियाग आदि का विवेचन श्रौत्रसूत्र में प्राप्त होता है।

- दर्शपौर्णमास यज्ञ में चार ऋत्विक् होते हैं- अध्वर्यु, ब्रह्मा, होता, आग्नीध्र।
- **सात हविर्यज्ञ के नाम-** अग्न्याधान,अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रहायण, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध, सौत्रामणि।
- **सात सोमयाग के नाम-** (i) अग्निष्टोम, (ii) अत्यग्निष्टोम, (iii) उक्थ्य, (iv) षोडशी, (v) वाजपेय, (vi) अतिरात्र, (vii) आप्तोर्याम।
- चातुर्मास्य यज्ञ में चार पर्व होते हैं- वैश्वदेव, वरुणप्रघास, साकमेध, शुनासीरीय।
- सौत्रामणी एक पशुयाग है, जो इन्द्र के निमित्त किया जाता है।

2.गृह्यसूत्र

- गृह्यसूत्र में गृहस्थ से सम्बन्धित षोडश संस्कार, पञ्चमहायज्ञ, सात पाकयज्ञ, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, पशुपालन और कृषिकर्म, आदि से सम्बद्ध यज्ञों की विधियों का वर्णन प्राप्त होता है।
- गृह्यसूत्र का सम्बन्ध गृहस्थ जीवन से है, गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित सभी संस्कार इसमें वर्णित हैं।
- गृह्यसूत्र में 42 संस्कारों का वर्णन है, किन्तु गौतम चालीस संस्कार मानते हैं- गृह्यसूत्रों से जनपदों और ग्रामों में प्रचलित लोकधर्म और प्रथाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

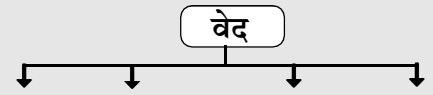
3. धर्मसूत्र

- धर्मसूत्र आचार संहिता से सम्बद्ध ग्रन्थ है।
- धर्मसूत्र स्मृतियों के पूर्वरूप हैं।
- समाज को शान्ति और स्थिरता प्रदान करना धर्मसूत्रों का उद्देश्य है।
- करनिर्धारण, कर के प्रकार, कर का उपयोग, सम्पत्ति विभाजन, स्त्रीधन का स्वरूप आदि विषयों का वर्णन धर्मसूत्रों में प्राप्त होता है।

4. शुल्बसूत्र

- शुल्बसूत्र गणितशास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं।
- शुल्बसूत्र में गणितशास्त्र के अङ्ग ज्यामितिशास्त्र से सम्बद्ध अनेक प्रमेय दिए गए हैं।
- यज्ञ की वेदी के निर्माण की विधि एवं छोटी - बड़ी वेदियों का वर्णन शुल्बसूत्र में प्राप्त होता है ।
- शुल्ब शब्द का अर्थ 'रस्सी' है ।
- रेखागणित की दृष्टि से शुल्ब सूत्रों का काफी महत्त्व है ।

वैदिक वाङ्मय-एक दृष्टि में



वेद	आचार्य	वेद	आचार्य
ऋग्वेद -	पैल	यजुर्वेद -	वैशम्पायन
सामवेद -	जैमिनि	अथर्ववेद -	सुमन्तु
वेद	**ऋत्विक्**	**वेद**	**देवता**
ऋग्वेद -	होता	ऋग्वेद -	अग्नि
यजुर्वेद -	अध्वर्यु	यजुर्वेद -	वायु
सामवेद -	उद्गाता	सामवेद -	आदित्य (सूर्य)
अथर्ववेद -	ब्रह्मा	अथर्ववेद -	सोम
वेद	**उपवेद**	**वेद**	**शाखा**
ऋग्वेद -	आयुर्वेद	ऋग्वेद -	शाकल, बाष्कल
यजुर्वेद -	धनुर्वेद	यजुर्वेद -	माध्यन्दिन (वाजसनेयि), काण्व,तैत्तिरीय, मैत्रायणीय,कठ, कपिष्ठल
सामवेद -	गान्धर्ववेद		
अथर्ववेद -	सर्पवेद	सामवेद -	कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय
		अथर्ववेद -	शौनक, पैप्पलाद

वेद	ब्राह्मण
1. ऋग्वेद -	ऐतरेय, कौषीतकि (शांखायन)
2. (i) शुक्लयजुर्वेद -	शतपथ ब्राह्मण
(ii) कृष्णयजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण
3. सामवेद -	तांड्य (पंचविंश), षड्विंश, सामविधान, आर्षेय, देवताध्याय, उपनिषद् (मन्त्रब्राह्मण), संहितोपनिषद्, वंश ब्राह्मण
4. अथर्ववेद -	गोपथ ब्राह्मण

वेद	आरण्यक
☆ ऋग्वेद -	ऐतरेय, शांखायन (कौषीतकि)
☆ शुक्लयजुर्वेद -	बृहदारण्यक
☆ कृष्णयजुर्वेद -	तैत्तिरीय आरण्यक
☆ सामवेद -	तलवकार आरण्यक

☆ **नोट-** अथर्ववेद का आरण्यक नहीं प्राप्त है।

वेद		उपनिषद्
☆ ऋग्वेद	-	ऐतरेय, शांखायन, कौषीतकि
☆ शुक्लयजुर्वेद	-	ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्
☆ कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायण
☆ सामवेद	-	छान्दोग्य, केनोपनिषद्
☆ अथर्ववेद	-	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य

वेद		शिक्षाग्रन्थ
☆ ऋग्वेद	-	पाणिनीय शिक्षा, स्वराङ्कुशा, षोडशश्लोकी, शैशिरीय, आपिशलि शिक्षा
☆ शुक्लयजुर्वेद	-	याज्ञवल्क्यशिक्षा, वासिष्ठी शिक्षा, कात्यायनी पाराशरी, माध्यन्दिनी शिक्षा आदि।
☆ कृष्णयजुर्वेद	-	भारद्वाज शिक्षा, व्यास शिक्षा, शम्भु शिक्षा, कौहलीय, सर्वसम्मत, आरण्य, सिद्धान्त शिक्षा आदि।
☆ सामवेद	-	गौतमी शिक्षा, लोमशी शिक्षा, नारदीय शिक्षा
☆ अथर्ववेद	-	माण्डूकी शिक्षा

वेद		श्रौतसूत्र
☆ ऋग्वेद	-	शांखायन, आश्वलायन
☆ **यजुर्वेद-**		
(i) शुक्लयजुर्वेद	-	कात्यायन श्रौतसूत्र
(ii) कृष्णयजुर्वेद	-	बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ (हिरण्यकेशी), वैखानस, वाराह
☆ सामवेद	-	आर्षेय कल्प या मशक, लाट्यायन,द्राह्यायण, जैमिनीय
☆ अथर्ववेद	-	वैतान श्रौतसूत्र

वेद		गृह्यसूत्र
☆ ऋग्वेद	-	आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि
☆ यजुर्वेद	-	पारस्कर गृह्यसूत्र बौधायन, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, अग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस
☆ सामवेद	-	गोभिल, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय, कौथुम
☆ अथर्ववेद	-	कौशिक

वेद		धर्मसूत्र
☆ ऋग्वेद	-	वासिष्ठ धर्मसूत्र
☆ यजुर्वेद	-	बौधायन, वैखानस, आपस्तम्ब, विष्णु, हारीत, हिरण्यकेशी, शंख
☆ सामवेद	-	गौतम धर्मसूत्र
☆ अथर्ववेद	-	कोई धर्मसूत्र प्राप्त नहीं है

वेद		शुल्बसूत्र
☆ ऋग्वेद	-	कोई शुल्बसूत्र नहीं
☆ शुक्लयजुर्वेद	-	कात्यायन शुल्बसूत्र
☆ कृष्णयजुर्वेद	-	बौधायन, आपस्तम्ब, मानव
☆ सामवेद	-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।
☆ अथर्ववेद	-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।

3. उपनिषदों का सामान्य परिचय

भूमिका

➢ उपनिषद् उप+नि+सद्+क्विप् प्रत्यय अर्थात् उप और नि उपसर्गपूर्वक सद् (सद्ऌ) धातु से क्विप् प्रत्यय लगने से बनता है। जिसका अर्थ गुरु के समीप बैठ कर ज्ञान प्राप्त करना है।

➢ जो विद्या समस्त अनर्थों के उत्पादक सांसारिक क्रिया-कलापों का नाश करती है, संसार के कारणभूत अविद्या (माया) के बन्धन को शिथिल करती है और ब्रह्म का साक्षात्कार कराती है उसे 'उपनिषद्' कहते हैं।

''उपनिषादयति सर्वानर्थकरं संसारं विनाशयति, संसारकारणभूतामविद्यां च शिथिलयति, ब्रह्म च गमयति इति उपनिषद्।''(ईशावास्योपनिषद् भूमिका-1)

➢ आचार्य शङ्कर के अनुसार उपनिषद् शब्द का प्रमुख अर्थ 'ब्रह्मविद्या' है और ब्रह्मविद्याप्रतिपादक ग्रन्थ-विशेष गौण अर्थ है। **तस्मात् विद्यायां मुख्यया वृत्त्या उपनिषद् शब्दो वर्तते ग्रन्थे तु भक्त्या** (कठोपनिषद् भाष्य पृष्ठ-2)

➢ प्राचीनकाल में उपनिषद् विद्या का अध्ययन-अध्यापन रहस्

(एकान्त) स्थान में किया जाता था, इसलिए इसे **'रहस्य-विद्या'** भी कहते हैं।

- जिन ग्रन्थों में रहस्यात्मकज्ञान आत्मविद्या की चर्चा की जाती है उसे उपनिषद् कहते हैं और वेद का अन्तिम भाग होने के कारण उसे 'वेदान्त' भी कहते हैं।
- उपनिषदों की संख्या 108 से लेकर 200 तक मानी जाती है।
- मुक्तिकोपनिषद् में उपनिषदों की संख्या 108 बताई गई है।
- उपनिषद्वाक्यमहाकोश में 223 उपनिषदों का उल्लेख है।
- शंकराचार्य ने 10 उपनिषदों को प्रामाणिक और प्राचीन माना है। इनका पाण्डित्यपूर्ण भाष्य लिखा है।

10 उपनिषदों के नाम-

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरिः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा। (मुक्तक.1.3)

उपनिषदों का वेदानुसार वर्गीकरण-

वेद	उपनिषद्
1. ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि आदि
2. (क) शुक्ल यजुर्वेद	बृहदारण्यक, ईश आदि
2. (ख) कृष्ण यजुर्वेद	कठ, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी आदि
3. सामवेद	केन, छान्दोग्य आदि
4. अथर्ववेद	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य आदि

उपनिषदों का रचनाकाल-

1. प्रथम रचनाकाल (700ई. पूर्व) के उपनिषद्-

(1) ईश (2) छान्दोग्य (3) बृहदारण्यक

2. द्वितीय रचनाकाल (600 ई. पूर्व) के उपनिषद्-

(4) ऐतरेय और (5) तैत्तिरीय

3. तृतीय रचनाकाल (500 ई. पूर्व से 400 ई. पूर्व) के उपनिषद्-

(6) प्रश्न (7) केन (8) कठ (9) मुण्डक और (10) माण्डूक्य

4- चतुर्थ रचनाकाल (200ई.पू. से 100ई.पू.) के उपनिषद्-

(11) कौषीतकि, (12) मैत्रायणी, (13) श्वेताश्वतर, (14) महानारायणी

उपनिषदों का अनुवाद-

- दाराशिकोह ने 50 उपनिषदों का फारसी में अनुवाद **'सिर्र-ए-अकबर'** (महान् रहस्य) नाम से 1657 ई. में किया था।
- दाराशिकोह का कथन था कि कुरान में 'किताबिम मक्नुनिन' (छिपी हुई किताब) का उल्लेख है और यह छिपी हुई किताब उपनिषदें ही हैं।
- 1879-84 में मैक्समूलर ने **'सीक्रेड बुक्स आफ द ईस्ट'** ग्रन्थमाला में 12 उपनिषदों का अँग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया।
- आर. ह्यूम ने 1821 में तेरह प्रमुख उपनिषदों का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया।
- सीताराम शास्त्री तथा गङ्गानाथ झा ने 1898-1901 ई. के मध्य 8 उपनिषदों का अँग्रेजी अनुवाद किया था।

प्रमुख उपनिषदों का संक्षिप्त विवरण

1- ईश उपनिषद्

- शुक्लयजुर्वेद की काण्व एवं वाजसनेयी संहिता का चालीसवाँ अध्याय 'ईशावास्योपनिषद्' के नाम से प्रसिद्ध है।
- इसका प्रथम मन्त्र 'ईशावास्य' शब्द समूह से प्रारम्भ होता है।
- इसमें केवल 18 मन्त्र हैं।
- यह मूल रूप से यजुर्वेद का 40वाँ अध्याय है।
- ईशोपनिषद् लघुकाय है किन्तु महत्त्व की दृष्टि से सर्वोपरि है।
- इसमें वेद के सार एवं गूढतत्त्व का विवेचन है।

18 मन्त्रों का सारांश-

मन्त्र-1 ईश्वर सारे चर-अचर जगत् में व्याप्त है। त्याग भाव से संसार का उपभोग करो। दूसरों के धन के लिए लालायित न हो।

मन्त्र-2 सौ वर्ष तक निष्काम भाव से कर्म करते रहो।

मन्त्र-3 आत्महत्या करने वाले घोर नरक में जाते हैं। इसका यह भी अभिप्राय है कि जो आत्मा की आवाज नहीं सुनते हैं वे घोर नरक में जाते हैं।

मन्त्र-4 जो परमेश्वर सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त है, वो परमेश्वर कैसा है .... इसकी जिज्ञासा की गयी है।

मन्त्र-5 ईश्वर चल-अचल दूर-पास और बाहर-भीतर सर्वत्र है।

मन्त्र-6 परब्रह्म परमेश्वर को जानने वाले महापुरुष की स्थिति का वर्णन ....

मन्त्र-7 सबको आत्मवत् देखने से कभी भी मोह-शोक नहीं होता।

मन्त्र-8 ईश्वर निराकार सर्वव्यापक शुद्ध और निष्पाप है। वही सबको कर्मानुसार ऐश्वर्य देता है।

मन्त्र- (9-11) अविद्या (कर्ममार्ग) और विद्या (ज्ञानमार्ग) दोनों का समन्वय रखो। कर्ममार्ग से भौतिक सुख और ज्ञानमार्ग से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मन्त्र- (12-14) संभूति (भौतिकवाद) और असंभूति का

समन्वय रखो। असंभूति से लौकिक सुख और संभूति से अमरत्त्व मिलता है।

मन्त्र-15 सत्य का सुख सुनहरे पात्र (भौतिक आकर्षक) से ढका हुआ है। इसको हटाकर सत्यरूप परमात्मा का दर्शन करें।

मन्त्र-16 जो पुरुष (शक्ति, उर्जा) सूर्य में हैं, वही जीव में भी है।

मन्त्र-17 शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है। सदा ओम् का स्मरण करो।

मन्त्र-18 हम ऐश्वर्य के लिए सन्मार्ग पर चलें।

ईशावास्योपनिषद् का शान्तिपाठ-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

ईशोपनिषद् की सूक्तियाँ-

1- ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।। (ईश.1)

2- कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।(ईशावास्योपनिषद्-2)

3- विद्ययाऽमृतमश्नुते। (ईशो.11)

4- अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्। (ईश. 18)

2- केन उपनिषद्

- केनोपनिषद् का सबन्ध सामवेद से है।
- इस उपनिषद् का आरम्भ, 'केनोषितं पतति' वाक्य से हुआ है। 'केन' पद के कारण ही इसका नाम 'केनोपनिषद्' पड़ा है।
- इसी को 'जैमिनीयोपनिषद् और तलवकारोपनिषद्' भी कहा जाता है।

3- कठ उपनिषद्

- कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह यजुर्वेद की कठशाखा से सम्बन्धित है।
- कठोपनिषद् में 2 अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में 3-3 वल्लियाँ हैं।

कठोपनिषद्

प्रथम अध्याय	द्वितीय अध्याय
प्रथम वल्ली - 29 मन्त्र	प्रथमवल्ली - 15 मन्त्र
द्वितीय वल्ली - 25 मन्त्र	द्वितीयवल्ली - 15 मन्त्र
तृतीय वल्ली - 17 मन्त्र	तृतीयवल्ली - 18 मन्त्र
कुल मन्त्र = 71 मन्त्र	कुलमन्त्र = 48 मन्त्र

4– प्रश्न उपनिषद्

- पिप्पलाद मुनि के आश्रम में आये छह ऋषि उनसे ब्रह्म और जगत् के विषय में (अध्यात्म विषयक) प्रश्नों को पूछते हैं। प्रश्नों के कारण ही इसे 'प्रश्नोपनिषद्' कहा जाता है।
- प्रश्नोपनिषद् का सम्बन्ध अथर्ववेद से है।

क्रमाङ्क	ऋषियों के नाम	ऋषियों के द्वारा पूँछे गये प्रश्न
1.	कबन्धी कात्यायन	समस्त प्रजा कहाँ से और कैसे उत्पन्न हुई है?
2.	भार्गव	प्रजा को धारण करने वाले देवता कितने हैं?
3.	आश्वलायन	प्राणों की उत्पत्ति कहाँ से होती है?
4.	गार्ग्य सौर्यायणी	आत्मा की जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति-इन तीन अवस्थाओं का क्या रहस्य है?
5.	सत्यकाम	ओ३म् (ऊँ) की उपासना का फल क्या है?
6.	सुकेशा	षोडशकला सम्पन्न पुरुष कौन है, कहाँ रहता है!

5- मुण्डक उपनिषद्

- प्रश्नोपनिषद् का शान्तिपाठ ही मुण्डकोपनिषद् का भी शान्ति पाठ है।
- मुण्डक शब्द का अर्थ है- **'मुंडे हुए सिर वाला'**। यह मुण्डित अर्थात् संन्यासियों के लिए विरचित है।
- अथर्ववेद की शौनक शाखा से सम्बद्ध मुण्डकोपनिषद् है।
- इस उपनिषद् में 3 मुण्डक (अध्याय) हैं। प्रत्येक मुण्डक में 2-2 खण्ड हैं।

मुण्डकोपनिषद्

प्रथम मुण्डक मन्त्र	द्वितीय मुण्डक मन्त्र	तृतीय मुण्डक मन्त्र
प्रथम खण्ड-9	प्रथम खण्ड-10	प्रथम खण्ड-10
द्वितीय खण्ड-13	द्वितीय खण्ड-11	द्वितीय खण्ड-11

6- माण्डूक्य उपनिषद्

- माण्डूक्योपनिषद् आकार में जितना छोटा है, सैद्धान्तिक दृष्टि से इसका महत्त्व उतना ही अधिक है। इसमें केवल 12 वाक्य या खण्ड हैं।

- माण्डूक्य उपनिषद् में **ॐकार** (ओम्) की बहुत ही मार्मिक व्याख्या की गई है।
- **ॐकार** में तीन मात्राएँ होती हैं और चौथा अंश केवल 'अ' होता है।
- माण्डूक्योपनिषद् के आधार पर वेदान्त दर्शन का प्रासाद खड़ा हुआ है। वेदान्त की मूलभावना इस उपनिषद् में प्राप्त होती है।

ओम् की मात्रा	ब्रह्मा की चार अवस्था	आत्मा का स्वरूप	विषय
अ	जागरित	वैश्वानर	स्थूलभुक् (स्थूल)
उ	स्वप्न	तैजस	प्रविविक्तभुक् (सूक्ष्म)
म्	सुषुप्ति	प्राज्ञ	आनन्दभुक् (आनन्द)
--	तुरीय	अद्वैत शिव	अवर्णनीय

- माण्डूक्योपनिषद् में 12 वाक्य (खण्ड) हैं।
- यह लघुकाय एवं गद्यात्मक है।
- माण्डूक्योपनिषद् का शान्तिपाठ भी मुण्डक और प्रश्नोपनिषद् के समान है।

7- तैत्तिरीय उपनिषद्

- कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध तैत्तिरीय ब्राह्मण का अन्तिम भाग तैत्तिरीय आरण्यक है। तैत्तिरीय आरण्यक के 10 प्रपाठकों में सप्तम, अष्टम एवं नवम प्रपाठकों को तैत्तिरीयोपनिषद् कहते हैं।
- तैत्तिरीयोपनिषद् में तीन अध्याय हैं जिन्हें क्रमश- शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली एवं भृगुवल्ली कहते हैं।

1- शिक्षावल्ली में 12 अनुवाक हैं।
2- ब्रह्मानन्दवल्ली में 9 अनुवाक हैं।
3- भृगुवल्ली में 10 अनुवाक हैं।

तैत्तिरीय उपनिषद् के महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ-

1. भाषाविज्ञान- शिक्षावल्ली में शिक्षा की व्याख्या करते हुए भाषा विज्ञान से सम्बद्ध 6 शब्द दिये गये हैं-

1. वर्ण 2. स्वर 3. मात्रा 4. बल 5. साम 6. सन्तान

वर्णः, स्वरः, मात्रा, बलम्, साम्, सन्तानः इत्युक्तः शीक्षाध्यायः।

8. ऐतरेय उपनिषद्

- ऐतरेयोपनिषद् का सम्बन्ध ऐतरेय ब्राह्मण से है। ऐतरेय ब्राह्मण के अन्तिम भाग को ऐतरेय आरण्यक कहते हैं।
- ऐतरेय आरण्यक में द्वितीय आरण्यक के चतुर्थ से षष्ठ अध्यायों को 'ऐतरेय उपनिषद्' कहते हैं।
- ऐतरेयोपनिषद् सबसे लघुकाय उपनिषद् है। इसमें कुल 3 अध्याय हैं।

9. छान्दोग्य उपनिषद्

- यह सामवेद से सम्बद्ध तवल्कार शाखा का छान्दोग्य ब्राह्मण है।
- छान्दोग्य ब्राह्मण के अन्तिम 8 अध्यायों को ही छान्दोग्य उपनिषद् कहा जाता है।
- यह सन्धि-कालीन उपनिषद् है। इसका आकार बहुत बड़ा है।

अध्याय	खण्ड
प्रथम अध्याय	13
द्वितीय अध्याय	24
तृतीय अध्याय	19
चतुर्थ अध्याय	17
पञ्चम अध्याय	24
षष्ठ अध्याय	16
सप्त अध्याय	26
अष्ट अध्याय	15

10. बृहदारण्यक उपनिषद्

- शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्यायों को बृहदारण्यक उपनिषद् कहा जाता है।
- यह शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है।
- यह विशालकाय एवं प्राचीनतम उपनिषद् है।
- यह उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद से संबद्ध है।
- ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् तीनों में इसकी चर्चा होती है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में प्रमुख दार्शनिक याज्ञवल्क्य के विचार मिलते हैं।
- पुनर्जन्म का सर्वप्रथम उल्लेख भी बृहदारण्यकोपनिषद् में मिलता है।
- इस उपनिषद् में तीन भाग हैं और प्रत्येक भाग में 2-2 अध्याय हैं। अर्थात् कुल 6 अध्याय हैं।

11- श्वेताश्वतर उपनिषद्

➢ यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध अनुपलब्ध श्वेताश्वतरसंहिता का एक अंश है।

➢ यह निश्चय ही कठोपनिषद् के बाद की रचना प्रतीत होती है क्योंकि उससे बहुत अंश इसमें लिये गये है।

➢ श्वेताश्वतर उपनिषद् का उद्देश्य शैवधर्म को गौरव प्रदान करना प्रतीत होता है।

➢ इसमें सांख्य, योग और वेदान्त के सिद्धान्तों का प्रातिपादन है।

➢ श्वेताश्वतरोपनिषद् में शिव का परम पुरुष के रूप में वर्णन है। गीता पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा है। क्षर, अक्षर, प्रधान आदि तत्त्व इसी से लिए गये हैं।

➢ इसमें कपिल ऋषि का स्पष्ट उल्लेख है।

➢ इसमें कुल 6 अध्याय हैं।

12. कौषीतकि उपनिषद्

➢ यह कौषीतकि ब्राह्मण से सम्बद्ध है। कौषीतकि ब्राह्मण से सम्बद्ध कौषीतकि आरण्यक है।

➢ कौषीतकि आरण्यक के तृतीय अध्याय से षष्ठ अध्याय तक को कौषीतकि उपनिषद् कहते हैं।

➢ इसे ही कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषद् भी कहते हैं।

➢ इस उपनिषद् में कुल 4 अध्याय हैं-

13. मैत्रायणी उपनिषद्

➢ यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी संहिता से सम्बद्ध है। यह परवर्तीकाल की रचना प्रतीत होती है। प्राचीनतम उपनिषदों की भाँति यह गद्यबद्ध है।

➢ मैत्रायणी उपनिषद् में वैदिक भाषा के कोई चिह्न नहीं दिखाई देते हैं।

➢ यह उपनिषद् अपने विचित्र सिद्धान्तों के कारण प्रख्यात है।

➢ इसमें सांख्य दर्शन के तत्त्वों के उल्लेख के साथ ही, योग के छः अङ्गों का और छह योग के मन्त्र-सिद्धान्तों का भी वर्णन है।

➢ मैत्रायणीय आरण्यक को ही मैत्रायणी उपनिषद् कहते हैं।

➢ मैत्रायणी उपनिषद् में कुल सात अध्याय हैं जिनमें षष्ठ अध्याय के अन्तिम 8 प्रपाठक और सप्तम अध्याय परिशिष्ट रूप में है।

➢ इसका मुख्य विषय आत्मा के स्वरूप का विवेचन है।

14- महानारायणोपनिषद्

➢ कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध तैत्तिरीय आरण्यक का दशम प्रपाठक महानारायणोपनिषद् कहा जाता है। जो इस आरण्यक का परिशिष्ट भाग माना जाता है।

➢ यह सायणभाष्य के साथ प्रकाशित है।

इसमें अनुवाकों की संख्या में मतभेद है-

1. **द्रविणों के अनुसार-** 64 अनुवाक
2. **आन्ध्रों के अनुसार-** 80 अनुवाक
3. **कर्नाटकों के अनुसार-** 74 अनुवाक

(इन तीनों में आन्ध्र पाठ ही मान्य हैं।)

➢ महानारायणी उपनिषद् को 'याज्ञिक्युपनिषद्' भी कहते हैं।

उपनिषदों की प्रमुख सूक्तियाँ

➢ नेति नेति। बृहद् (4/5/3)

➢ नेह नानास्ति किञ्चन् । बृहद् (4/4/19)

➢ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतिर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

➢ वाग्वै गायत्री। छन्दोग्य (3/12/1)

➢ वाग्वै ब्रह्म। बृहदारण्यक (1/3/31)

➢ अतिथिदेवो भव। तैत्तिरीयोपनिषद् (1/11/2)

➢ ओमिति ब्रह्म। ओमितीयं सर्वम्। तैत्तिरीयोपनिषद् (1/8)

➢ सर्वव्यापिनमोकारं मत्त्वा धीरो न शोयति- माण्डूक्य उपनिषद्

➢ यदेव विद्यया करोमि श्रद्वयोपनिषदा तदेव वीर्यवत्तरं भवति।
जो कर्मविद्या, श्रद्वा और योग से युक्त होकर किया जाता है, वही प्रबलतर होता है।

➢ तरन्ति शोकमात्मविद्। छन्दोग्योपनिषद्

➢ त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति।

➢ सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् - मुण्डकोपनिषद्

➢ न विभेति कदाचनेति
धर्मात्मा कभी किसी से नहीं डरते, क्योंकि जिसका मार्ग सच्चा है, वह किसी से क्यों डरेगा।

➢ मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। तैत्तिरीयोपनिषद् (1/11/8)
माता-पिता की पूजा देवता के समान करनी चाहिए क्योंकि दोनों प्रत्यक्ष देव हैं। जिनका आशीर्वाद पग–पग पर लगता है।

➢ मा गृधः कस्यस्विद्धनम्। (ईशावास्योपनिषद् मन्त्र-1)
किसी के धन का लालच मत करो।

➢ सर्वेषां वेदानां वागेकायनम्। बृहदारण्यक उपनिषद् (2/4/11)
सभी वेदों की वाणी ही एकमात्र मार्ग है।

➢ प्रजाकामो वै प्रजापतिः। प्रश्नोपनिषद् (1/4)
काम भी मन का आवश्यक भाव है। इसके बिना मन कुछ भी नहीं कर सकता।

अभ्यास प्रश्न (वैदिक साहित्य)

1. वेदः अस्ति–

(A) श्रुतिः (B) स्मृतिः

(C) सदाचारः (D) धर्मः

स्रोत–मनुस्मृति (2/10)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–119

2. 'श्रुति' किसे कहते हैं–

(A) स्मृति (B) वेद

(C) सूक्ति (D) ब्रह्मसूत्र

स्रोत–मनुस्मृति (2/10)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–119

3. वेदः कः–

(A) अपौरुषेयं वाक्यम्

(B) अङ्ग-प्रधान-सम्बन्ध-बोधकं वाक्यम्

(C) कर्मबोधकं वाक्यम्

(D) समभिव्यवहारः वाक्यम्

स्रोत– अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–58

4. वेदों की संख्या है?

(A) त्रयः (B) चत्वारः

(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–03

5. वेदों को किसने विभाजित किया है?

(A) यास्कः (B) विश्वामित्रः

(C) महीधरः (D) कृष्णद्वैपायनः (व्यासः)

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–04

6. 'वेद' शब्द का अर्थ है?

(A) दर्शन (B) ऋषिमत

(C) ज्ञान (D) सिद्धान्त

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–02

7. मीमांसा की दृष्टि से वेद के प्रकार हैं–

(A) विधि-मन्त्र-नामधेय-निषेध-अर्थवाद

(B) मन्त्र एवं ब्राह्मण (C) द्रव्य एवं देवता

(D) चारों वेद एवं वेदाङ्ग

स्रोत– अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–20

8. वेद इन्हें कहते हैं?

(A) धर्मसूत्र-उपनिषद् (B) शिक्षा-प्रातिशाख्य

(C) श्रौत-गृह्यसूत्र (D) मन्त्र-ब्राह्मण

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–02

9. वेदों के काव्यात्मक हिस्से को कहा जाता है?

(A) ब्राह्मण (B) आरण्यक

(C) संहिता (D) उपनिषद्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

10. संहितापाठानन्तरं क्रियते?

(A) सन्धिपाठः (B) समासपाठः

(C) पदपाठः (D) क्रमपाठः

स्रोत– वैदिकसूक्तसंग्रह – विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–13

11. 'वेदत्रयी' समूह क्या है?

(A) ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद

(B) ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

(C) अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद

(D) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास–पारसनाथ द्विवेदी, पेज–03

12. 'त्रयी' इति संज्ञा–

(A) वेदस्य (B) वर्णस्य

(C) गुणस्य (D) मन्त्रस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–03

13. वेदारम्भः कुतः प्रारभ्यते?

(A) संहितापाठतः (B) पदपाठतः

(C) जटापाठतः (D) घनपाठतः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08

14. कः कथ्यते वेदनिन्दकः–

(A) वेदवित् (B) नास्तिकः

(C) आस्तिकः (D) नैयायिकः

स्रोत–मनुस्मृति (2/11)-शिवराजाचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–120

1. (A) 2. (B) 3. (A) 4. (B) 5. (D) 6. (C) 7. (A) 8. (D) 9. (C) 10. (C) 11. (D) 12. (A) 13. (A) 14. (B)

15. ऋग्वेदीयः ऋत्विक्–

(A) ब्रह्मा (B) उद्गाता

(C) अध्वर्युः (D) होता

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07

16. 'होता' कस्य वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति?

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य

(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07

17. पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार प्राचीनतम वेद कौन है?

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद

(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–04

18. ऋग्वेद का दूसरा नाम है–

(A) दशाध्यायी (B) दशतयी

(C) दशमण्डली (D) गानवेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-कर्णसिंह, पेज–36

19. 'दशतयी' से किस वेद को जाना जाता है?

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद

(C) आयुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–36

20. आयुर्वेदः कस्य वेदस्योपवेदः–

(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य

(C) यजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

21. मण्डलक्रमः केन वेदेन सम्बद्धः –

(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन

(C) यजुर्वेदेन (D) सामवेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–36

22. ऋग्वेद की सृष्टि किससे हुयी है?

(A) वायु से (B) अग्नि से

(C) जल से (D) आकाश से

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

23. ऋग्वेद का प्रथमसूक्त है–

(A) अग्निसूक्त (B) रुद्रसूक्त

(C) पर्जन्यसूक्त (D) सवितृसूक्त

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

24. ऋग्वेद में ..... सूक्त हैं?

(A) 1008 (B) 1018

(C) 1028 (D) 1038

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–06

25. पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की शाखाओं की संख्या है–

(A) सहस्रम् (1000) (B) शतम् (100)

(C) एकविंशतिः (21) (D) नव (9)

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

26. प्रसिद्ध ऋग्वेद सम्बद्ध है–

(A) शाकलशाखा से (B) वाष्कलशाखा से

(C) आश्वलायनशाखा से (D) शांखायनशाखा से

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

27. 'शाकलसंहिता' किस वेद की है–

(A) अथर्ववेद (B) ऋग्वेद

(C) सामवेद (D) शुक्लयजुर्वेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

28. 'वाष्कलसंहिता' वर्तते–

(A) शुक्लयजुर्वेदस्य (B) सामवेदस्य

(C) ऋग्वेदस्य (D) कृष्णयजुर्वेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

29. माण्डूकायनशाखा से सम्बन्धित है–

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद

(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29

30. स्कन्दस्वामी का भाष्य किससे सम्बद्ध है–

(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से

(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–10

15. (D) 16. (A) 17. (A) 18. (B) 19. (A) 20. (A) 21. (B) 22. (B) 23. (A) 24. (C) **25.** (C) **26. (A) 27. (B) 28. (C) 29. (A) 30. (A)**

31. ऋग्वेदस्य शाखाः–
(A) 5 (B) 6
(C) 8 (D) 7
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29

32. वंशीयमण्डल विभक्त हैं–
(A) यजुर्वेदे (B) ऋग्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–30

33. दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति–
(A) माध्यन्दिन-संहितायाम् (B) तैत्तिरीय-संहितायाम्
(C) ऋग्वेद-संहितायाम् (D) काण्व-संहितायाम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–55

34. पुरुषसूक्त ऋग्वेद के ..... मण्डल में है–
(A) प्रथममण्डल (B) नवममण्डल
(C) दशममण्डल (D) सप्तममण्डल
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह ऋग्वेद (10/90)-विजयशङ्कर पाण्डेय,पेज–18

35. ऋग्वेद में मन्त्रों की संज्ञा है–
(A) साम (B) ऋचा
(C) यजुः (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–28

36. पुरूरवा-उर्वशी संवाद किस वेद में है–
(A) ऋग्वेद में (B) यजुर्वेद में
(C) सामवेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–55

37. 'बालखिल्यसूक्त' ऋग्वेद के किस मण्डल में है–
(A) अष्टम (B) प्रथम
(C) तृतीय (D) दशम
स्रोत–ऋग्वेद (8/49) भाग-3-वेदान्ततीर्थ, पेज–177, 350

38. ऋग्वेद का कौन-सा मण्डल सबसे अर्वाचीन है–
(A) दशम (B) अष्टम
(C) द्वितीय (D) सप्तम
स्रोत–ऋग्वेद (भाग-4) - वेदान्ततीर्थ, पेज–08

39. प्रसिद्ध 'शुनःशेपाख्यान' जिसमें मिलता है, वह वेद है–
(A) ऋग्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–264

40. ऋग्वेदेऽग्निसूक्तेऽग्निरुच्यते–
(A) सुतपा (B) पुरोहितः
(C) यज्ञः (D) सर्वकल्याणः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–55

41. कः ऋग्वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति–
(A) होता (B) अध्वर्युः
(C) उद्गाता (D) ब्रह्मा
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–04

42. ऋग्वेदस्य कस्य मण्डलस्य नाम पवमानमण्डलम् अस्ति–
(A) प्रथमस्य (B) द्वितीयस्य
(C) पञ्चमस्य (D) नवमस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–112

43. ऋग्वेद में कौन दार्शनिक सूक्त है–
(A) पुरुष (B) अग्नि
(C) सूर्य (D) पर्जन्य
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–53

44. कस्मिन् सूक्ते सृष्टिप्रक्रिया वर्णितास्ति–
(A) शिवसङ्कल्पे (B) पुरुषसूक्ते
(C) रुद्रसूक्ते (D) इन्द्रसूक्ते
स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

45. 'विश्वामित्र-नदी-संवादो' वर्तते–
(A) ऋग्वेदस्य दशममण्डले (B) ऋग्वेदस्य तृतीयमण्डले
(C) यजुर्वेदस्य पञ्चमाध्याये (D) अथर्ववेदस्य द्वितीयकाण्डे
स्रोत–ऋग्वेद (3.33) (भाग-2) - वेदान्ततीर्थ, पेज–82

46. शांखायनशाखा कस्य वेदस्य–
(A) कृष्णयजुर्वेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) शुक्लयजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29

47. ऋग्वेद में मण्डलों की संख्या है–
(A) नव (9) (B) विंशतिः (20)
(C) दश (10) (D) द्वादश (12)
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–36

48. किस वेद का अष्टक और मण्डल दो प्रकार का विभाजन है?
(A) ऋग्वेद का (B) शुक्लयजुर्वेद का
(C) कृष्णयजुर्वेद का (D) सामवेद का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

31. (A) 32. (B) 33. (C) 34. (C) 35. (B) 36. (A) 37. (A) 38. (A) 39. (A) 40. (B) 41. (A) 42. (D) 43. (A) 44. (B) 45. (B) 46. (B) 47. (C) 48. (A)

49. ऋग्वेद में कितने अष्टक हैं?
(A) दश (10) (B) नव (9)
(C) पाँच (5) (D) आठ (8)
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29

50. ऋग्वेदे कति मन्त्राः सन्ति?
(A) 1552 (B) 8552
(C) 10552 (D) 11552
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

51. खिलसूक्तैः सह ऋग्वेदे कति सूक्तानि सन्ति?
(A) 1000 (B) 1028
(C) 1100 (D) 1300
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–30

52. वेद विकृतियाँ हैं–
(A) 8 (आठ) (B) 9 (नौ)
(C) 6 (छः) (D) 5 (पाँच)
स्रोत–वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–32 (परिशेष)

53. ऋग्वेदस्य प्रत्येकम् अष्टकेषु कति अध्यायाः भवन्ति?
(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) अष्ट
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

54. वेदाध्ययने प्रकृतिपाठः कतिविधो भवति?
(A) पञ्चविधः (B) सप्तविधः
(C) नवविधः (D) त्रिविधः
स्रोत–वैदिक साहित्य एव संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–198

55. अष्टकक्रमे ऋग्वेदे कति अध्यायाः सन्ति?
(A) 20 (B) 40
(C) 64 (D) 100
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति -कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

56. 'संहिता' शब्दस्य निष्पत्तिः भवति–
(A) √पठ् (B) √गम्
(C) √अस् (D) √धा
स्रोत–संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश-वामन शिवरामआप्टे, पेज–1053

57. गद्यात्मक वेद है?
(A) सामवेद (B) अथर्ववेद
(C) यजुर्वेद (D) ऋग्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–93

58. जिस वेद की रचना गद्य और पद्य दोनों में की गयी है उसका नाम है?
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–93

59. यजुर्वेद का प्रमुख विषय है?
(A) ज्ञान (B) कर्मकाण्ड
(C) भक्ति (D) उपासना
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–06

60. 'अध्वर्युवेदः' कस्य वेदस्यापरं नाम अस्ति?
(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) यजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63

61. वेदव्यासः यजुर्वेदस्य ज्ञानं कस्मै दत्तवान्?
(A) श्रीकृष्णाय (B) वैशम्पायनाय
(C) याज्ञवल्क्याय (D) सुमन्तवे
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड)–बलदेव उपाध्याय, पेज–223

62. 'धनुर्वेदः' कस्य वेदस्योपवेदः–
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

63. पतञ्जलि के अनुसार यजुर्वेद की कितनी शाखायें हैं–
(A) इक्कीस (21) (B) नौ (9)
(C) एक सौ (100) (D) एक हजार (1000)
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–93

64. कः यज्ञस्य नेता–
(A) होता (B) अध्वर्युः
(C) ब्रह्मा (D) उद्गाता
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66

65. ब्रह्मा वायोः सकाशात् किं प्रकाशितवान्–
(A) ऋग्वेदम् (B) यजुर्वेदम्
(C) सामवेदम् (D) अथर्ववेदम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

66. अध्वर्यु किस वेद का पुरोहित है?
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66

49. (D) 50. (C) 51. (B) 52. (A) 53. (D) 54. (D) 55. (C) 56. (D) 57. (C) 58. (C) 59. (B) 60. (C)
61. (B) 62. (B) 63. (C) 64. (B) 65. (B) 66. (B)

67. यजुर्मन्त्रः कीदृशो भवति–
(A) गद्यात्मकः (B) पद्यात्मकः
(C) गानात्मकः (D) वादनात्मकः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63

68. शुक्लत्वकृष्णत्वभेदः कस्य वेदस्य विद्यते?
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64

69. कः वेदः अनियताक्षरावसानात्मको भवति–
(A) ऋग्वेदः (B) यजुर्वेदः
(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63

70. सायणाचार्यः प्रथमतया कस्य वेदस्य व्याख्यां कृतवान्?
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13

71. 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' शुक्लयजुर्वेदस्य कस्मिन् अध्याये प्राप्यते?
(A) दशमे (B) एकादशे
(C) त्रिंशे (D) चत्वारिंशे
स्रोत–यजुर्वेद (20/14) - वेदान्ततीर्थ, पेज–487

72. शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है–
(A) ताण्ड्यमहाब्राह्मण (B) ऐतरेयब्राह्मण
(C) शतपथब्राह्मण (D) कौषीतकिब्राह्मण
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–130

73. 'वाजसनेयी-संहिता' नाम –
(A) ऋग्वेदस्य (B) कृष्णयजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) शुक्लयजुर्वेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

74. माध्यन्दिनसंहितायाम् अनुदात्तस्वरचिह्नं कुत्र दीयते?
(A) उपरिष्टात् (B) तिर्यक्
(C) अधः (D) सर्वतः
स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (प्रथम खण्ड)–बलदेव उपाध्याय, पेज–269

75. 'माध्यन्दिनम्' शाखा कस्य वेदस्य?
(A) यजुर्वेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) कस्यापि न
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

76. ईशावास्योपनिषद् किस संहिता से सम्बद्ध है?
(A) गर्गसंहिता से (B) काण्वसंहिता से
(C) पराशरसंहिता से (D) ऋग्वेदसंहिता से
स्रोत–ईशावास्योपनिषद् - दीपक कुमार, भूमिका पेज-11

77. याज्ञवल्क्य का सम्बन्ध किस वेद से है–
(A) ऋग्वेद से (B) शुक्लयजुर्वेद से
(C) कृष्णयजुर्वेद से (D) सामवेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64

78. शुक्लयजुषः शाखा वर्तते–
(A) शांखायनः (B) शौनकः
(C) माध्यन्दिनः (D) राणायनीयः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64-65

79. 'माध्यन्दिन-संहिता' किस वेद से सम्बद्ध है?
(A) कृष्णयजुर्वेद से (B) शुक्लयजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

80. 'ईशोपनिषद्' कस्य वेदस्यान्तिमोऽध्यायः?
(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) यजुर्वेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–174

81. वाजसनेयिसंहिता कस्य वेदस्य संहिताऽस्ति?
(A) ऋग्वेदस्य (B) शुक्लयजुर्वेदस्य
(C) कृष्णयजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

82. कात्यायनश्रौतसूत्र किस वेद से सम्बद्ध है–
(A) शुक्लयजुर्वेद (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) ऋग्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

83. 'शिवसङ्कल्पसूक्त' किस वेद से सम्बन्धित है?
(A) शुक्लयजुर्वेद से (B) सामवेद से
(C) ऋग्वेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

84. शुक्लयजुर्वेद इस नाम से भी जाना जाता है–
(A) कठसंहिता (B) शाकलसंहिता
(C) वाजसनेयिसंहिता (D) मैत्रायणीसंहिता
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64

67. (A) 68. (B) 69. (B) 70. (B) 71. (D) 72. (C) 73. (D) 74. (C) 75. (A) 76. (B) 77. (B) 78. (C) 79. (B) 80. (D) 81. (B) 82. (A) 83. (A) 84. (C)

85. काण्वसंहिता किस वेद से सम्बन्धित है?
(A) ऋग्वेद से (B) शुक्लयजुर्वेद से
(C) कृष्णयजुर्वेद से (D) सामवेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

86. माध्यन्दिनशाखायाः कः अध्यायः रुद्राध्यायः कथ्यते?
(A) षोडशः (B) अष्टादशः
(C) विंशः (D) एकत्रिंशः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

87. माध्यन्दिनशाखायाः कस्मिन् अध्याये शिवसङ्कल्प–सूक्तमस्ति?
(A) त्रिंशे (B) चतुस्त्रिंशे
(C) पञ्चत्रिंशे (D) चत्वारिंशे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

88. यजुर्वेद की मुख्यतया कितनी शाखायें हैं?
(A) द्वि (B) त्रि
(C) पञ्च (D) अष्ट
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64

89. शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्पसूक्त का अध्याय है?
(A) 34 (B) 30
(C) 40 (D) 20
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

90. शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिनसंहिता में कितने अध्याय हैं?
(A) 5 (पञ्च) (B) 10 (दश)
(C) 40 (चत्वारिंशत्) (D) 20 (विंशतिः)
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

91. मैत्रायणी शाखा से सम्बन्धित वेद है–
(A) सामवेद (B) अथर्ववेद
(C) शुक्लयजुर्वेद (D) कृष्णयजुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–69

92. कृष्णयजुर्वेदस्य कति शाखाः सम्प्रति उपलभ्यन्ते?
(A) 02 (B) 04
(C) 06 (D) 08
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

93. तैत्तिरीयशाखायां कति अष्टकाः खण्डाः वा सन्ति?
(A) 03 (B) 05
(C) 06 (D) 07
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

94. तैत्तिरीयसंहितायां काण्डसंख्या अस्ति?
(A) षट् (B) सप्त
(C) अष्ट (D) दश
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–98

95. तैत्तिरीयसंहितायां कति प्रपाठकाः सन्ति?
(A) अशीतिः (B) पञ्चाशत्
(C) चतुश्चत्वारिंशत् (D) एकोनपञ्चाशत्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

96. काण्वशाखा किस वेद की है?
(A) सामवेद (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) यजुर्वेद
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

97. काण्वसंहितायां कति मन्त्राः प्राप्यन्ते?
(A) 1000 (B) 2000
(C) 2086 (D) 3000
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

98. तैत्तिरीयसंहितायां कति अनुवाकाः स्वीक्रियन्ते?
(A) 250 (B) 270
(C) 470 (D) 631
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

99. कृष्णयजुर्वेदे कति काण्डानि सन्ति?
(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) विंशतिः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

100. 'कठशाखा' सम्बन्धित है–
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) अथर्ववेद से (D) यजुर्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

101. मन्त्रब्राह्मणयोः सम्मिश्रणं वर्तते–
(A) ऋग्वेदे (B) कृष्णयजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी,पेज–68, 69

102. तैत्तिरीयसंहिता सम्बन्धित है–
(A) ऋग्वेद से (B) अथर्ववेद से
(C) सामवेद से (D) कृष्णयजुर्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

85. (B) 86. (A) 87. (B) 88. (A) 89. (A) 90. (C) 91. (D) 92. (B) 93. (D) 94. (B) 95. (C) 96. (D) 97. (C) 98. (D) 99. (C) 100. (D) 101. (B) 102. (D)

103. मैत्रायणी-संहिता कस्य वेदस्य वर्तते?
(A) कृष्णयजुर्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) ऋग्वेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

104. कृष्णयजुर्वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?
(A) पारस्करगृह्यसूत्रम् (B) बौधायनगृह्यसूत्रम्
(C) गोभिलगृह्यसूत्रम् (D) कौशिकगृह्यसूत्रम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–229

105. कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा किस नाम से जानी जाती है?
(A) आर्षेय (B) तैत्तिरीय
(C) ताण्ड्य (D) काण्व
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

106. सामवेद का दूसरा नाम है?
(A) स्तुतिवेद (B) कर्मवेद
(C) गानवेद (D) धनुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–87-88

107. उत्तरार्चिक किस वेद से सम्बद्ध है–
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80

108. सङ्गीत का प्राचीनतम ग्रन्थ है?
(A) सामवेद (B) यजुर्वेद
(C) ऋग्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87

109. 'उद्गाता' का सम्बन्ध किस वेद से है?
(A) ऋग्वेद (B) अथर्ववेद
(C) सामवेद (D) यजुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88

110. सामवेदीयः ऋत्विक्–
(A) अध्वर्युः (B) ब्रह्मा
(C) उद्गाता (D) होता
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88

111. सामवेद संहिता का उपवेद कौन है?
(A) गान्धर्ववेद (B) आयुर्वेद
(C) धनुर्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

112. साम्प्रतं सामवेदस्य उपलभ्यमानायाः शाखायाः संख्या–
(A) 3 (B) 4
(C) 1000 (D) 100
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–88-89

113. सहस्त्रशाखो वेदः–
(A) यजुर्वेदः (B) ऋग्वेदः
(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–88-89

114. 'राणायनीयशाखा' कस्य वेदस्य?
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–89

115. 'जैमिनिशाखा' किस वेद से सम्बन्धित हैं?
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–89

116. 'कौथुम-शाखा' से सम्बद्ध वेद है -
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–89

117. उद्गातृगणे कति ऋत्विजो भवन्ति–
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) षट् (D) पञ्च
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–82

118. निम्न में से कौन-सा वेद सङ्गीतशास्त्र से सम्बन्धित है?
(A) सामवेद (B) यजुर्वेद
(C) अथर्ववेद (D) ऋग्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

119. ऋक्तन्त्रं कस्य वेदस्य कृते–
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–180

120. सामवेदस्य प्रमुख–प्रतिपाद्यविषयोऽस्ति–
(A) गानम् (B) ज्ञानम्
(C) स्तुति (D) यागयज्ञादिकम्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87

103. (A) 104. (B) 105. (B) 106. (C) 107. (C) 108. (A) 109. (C) 110. (C) 111. (A) 112. (A) 113. (C) 114. (C) 115. (C) 116. (C) 117. (B) 118. (A) 119. (C) 120. (A)

121. सामवेद में 'साम' का अर्थ है–
(A) उपासना (B) कर्म
(C) गायन (D) ज्ञान
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87

122. कः सामवेदस्य मन्त्राणां गायनं करोति–
(A) होता (B) अध्वर्युः
(C) उद्गाता (D) ब्रह्मा
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88

123. 'संहितोपनिषद् ब्राह्मणं' कस्मिन् वेदे विद्यते–
(A) सामवेदे (B) ऋग्वेदे
(C) यजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

124. सामाख्या कुत्र भवति?
(A) सूत्रेषु (B) मन्त्रेषु
(C) गीतिषु (D) प्रयोगेषु
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

125. 'गीतिषु सामाख्या' इति कस्मिन् ग्रन्थे उक्तमस्ति -
(A) महाभाष्ये (B) निरुक्ते
(C) जैमिनीयसूत्रे (D) वेदान्तसूत्रे
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87

126. 'मशकसूत्र' से सम्बन्धित वेद है–
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी,पेज–219

127. सामवेदस्य कति ब्राह्मणानि सन्ति–
(A) 09 (B) 08
(C) 11 (D) 15
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135

नोट– आचार्य सायण ने सामवेदीय ब्राह्मणों की संख्या 8 मानी है।

128. सामसंज्ञा भवति–
(A) ऋचाम् (B) गानानाम्
(C) ब्राह्मणानाम् (D) उपनिषदाम्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87

129. सत्यव्रतसामश्रमी कस्य वेदस्य प्रकाण्डविद्वान् आसीत्?
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–29

130. पतञ्जलिमतानुसारं सामवेदस्य शाखाः सन्ति–
(A) 1000 (B) 800
(C) 950 (D) 990
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–83

131. दीनानाथ चुलेटमहोदयानुसारं वेदस्य रचना कदा अभवत्–
(A) 3 लक्षवर्षपूर्वम् (B) 4 लक्षवर्षपूर्वम्
(C) सहस्रवर्षपूर्वम् (D) शतवर्षपूर्वम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

132. उत्तरार्चिके प्रपाठकस्य संख्या–
(A) 5 (B) 6
(C) 9 (D) 13
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–90

133. पूर्वार्चिक-उत्तरार्चिक-भेदेन विभक्तो वेदः –
(A) यजुर्वेदः (B) ऋग्वेदः
(C) अथर्ववेदः (D) सामवेदः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80

134. सामवेदस्य भागाः कति?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80

135. सामवेदस्य मन्त्राणां (ऋचाणां) संख्या–
(A) 1500 (B) 1549
(C) 1600 (D) 1700
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–90

136. सामवेदे कति ऋचः स्वतन्त्ररूपेण सन्ति?
(A) 20 (B) 25
(C) 75 (D) 100
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–90

137. सामसंहिता कति भागेषु विभक्ताऽस्ति?
(A) भागद्वये (B) भागत्रये
(C) भागचतुष्टये (D) भागदशके
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80

138. पूर्वार्चिक में प्रपाठकों की संख्या है–
(A) 4 (B) 5
(C) 6 (D) 10
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80

121. (C) 122. (C) 123. (A) 124. (C) 125. (C) 126. (B) 127. (B) 128. (B) 129. (C) 130. (A)
131. (B) 132. (C) 133. (D) 134. (A) 135. (B) 136. (C) 137. (A) 138. (C)

139. सामवेदीयपूर्वार्चिके कियन्तः मन्त्राः विलसन्ति?
(A) 650 (B) 1771
(C) 227 (D) 450
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80

140. सामवेदीयशिक्षाग्रन्थाः –
(A) 4 (B) 5
(C) 3 (D) 6
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर,पेज–254

141. सामविकाराः परिगणिताः सन्ति–
(A) सप्त (B) षट्
(C) चत्वारः (D) त्रयः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–92

142. कः ऋषिः अथर्वसंहितायाः द्रष्टा अस्ति–
(A) अथर्वः (B) सुमन्तुः
(C) वैशम्पायनः (D) कात्यायनः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर,पेज–119

143. किस संहिता को 'ब्रह्मवेद' कहा गया है?
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–119

144. 'अथर्वाङ्गिरस' नाम्ना कः वेदः ज्ञायते?
(A) ऋग्वेदः (B) धनुर्वेदः
(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–97

145. वेदों में सबसे अर्वाचीन वेद है?
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) यजुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–114

146. 'भैषज्यवेद' यह किसका नामान्तर है?
(A) ऋग्वेद का (B) सामवेद का
(C) यजुर्वेद का (D) अथर्ववेद का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

147. भैषज्यसूक्तानि वर्तन्ते –
(A) सामवेदे (B) ऋग्वेदे
(C) यजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

148. वैतानश्रौतसूत्रमस्ति –
(A) ऋग्वेदीयम् (B) यजुर्वेदीयम्
(C) सामवेदीयम् (D) अथर्ववेदीयम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

149. प्रसिद्ध अथर्ववेद सम्बद्ध है–
(A) शौनकशाखा से (B) शाकलशाखा से
(C) कौथुमशाखा से (D) मैत्रायणीशाखा से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99

150. 'जाजलशाखा' जिस वेद की शाखा है, वह है–
(A) शुक्लयजुर्वेद (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) सामवेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

151. 'पैप्पलादशाखा' जिस वेद की है, वह है–
(A) सामवेद (B) यजुर्वेद
(C) ऋग्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99

152. कौन सा वेद वेदत्रयी का भाग नही है–
(A) सामवेद (B) ऋग्वेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–101

153. अभिचारसूक्तानि दृश्यन्ते–
(A) ऋग्वेदे (B) सामवेदे
(C) कृष्णयजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–106

154. 'भूमिसूक्त' किस वेद में है–
(A) अथर्ववेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) ऋग्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

155. पृथिवी की पूजा इसमें है–
(A) तैत्तिरीयब्राह्मण (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) गृह्यसूत्र
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

156. निम्नलिखित चार वेदों में से किस एक में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है–
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) यजुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–106

139. (A)	**140. (C)**	**141. (B)**	**142. (A)**	**143. (D)**	**144. (D)**	**145. (C)**	**146. (D)**	**147. (D)**	**148. (D)**
149. (A)	**150. (B)**	**151. (D)**	**152. (D)**	**153. (D)**	**154. (A)**	**155. (C)**	**156. (C)**		

157. आयुर्वेद अर्थात् 'जीवन का विज्ञान' का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है–

(A) आरण्यक (B) सामवेद

(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–105

158. अथर्ववेद का गृह्यसूत्र कौन है?

(A) खादिर गृह्यसूत्र (B) वैखानस गृह्यसूत्र

(C) कौशिक गृह्यसूत्र (D) पारस्कर गृह्यसूत्र

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड)-बलदेव उपाध्याय/ओम्प्रकाश पाण्डेय, पेज–154

159. अथर्ववेद से सम्बद्ध कौन सी शिक्षा है?

(A) लोमशी शिक्षा (B) माण्डूकी शिक्षा

(C) गौतमी शिक्षा (D) केशवी शिक्षा

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–306

160. औषधि वनस्पतियों के विषय में सूचना किस वेद में मिलती है–

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद

(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–106

161. 'कौशिकगृह्यसूत्र' से सम्बन्धित वेद है–

(A) अथर्ववेद (B) ऋग्वेद

(C) सामवेद (D) शुक्लयजुर्वेद

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड)-बलदेव उपाध्याय/ओम्प्रकाश पाण्डेय, पेज–154

162. लौकिकविषयस्य सर्वाधिकं वर्णनं कस्मिन् वेदे विद्यते?

(A) यजुर्वेदे (B) अथर्ववेदे

(C) ऋग्वेदे (D) सामवेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–96

163. शौनक व पिप्पलादशाखा का सम्बन्ध किस वेद से है?

(A) सामवेद से (B) ऋग्वेद से

(C) अथर्ववेद से (D) यजुर्वेद से

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99

164. अथर्ववेद संहिता की कितनी शाखायें प्राप्त हैं–

(A) षट् (B) सप्त

(C) नव (D) दश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

165. अथर्ववेद कितने काण्डों में विभाजित है–

(A) विंशतिः (B) दश

(C) षट् (D) अष्टादश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–100

166. अथर्वसंहिता कति खण्डेषु विभक्ताऽस्ति?

(A) 10 (B) 20

(C) 30 (D) 40

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–100

167. अथर्वसंहितायाः खण्डानां किं नामास्ति?

(A) पाठकः (B) अनुवाकः

(C) काण्डः (D) उल्लासः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–103-104

168. अथर्ववेदे कति प्रपाठकाः सन्ति?

(A) 20 (B) 34

(C) 40 (D) 80

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–123

169. अथर्ववेदे कति अनुवाकाः सन्ति–

(A) 10 (B) 11

(C) 111 (D) 444

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथमखण्ड)-बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–343

170. अथर्ववेदे कति सूक्तानि सन्ति?

(A) 200 (B) 400

(C) 700 (D) 731

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–104

171. अथर्ववेदे कति मन्त्राः सन्ति?

(A) 5987 (B) 10580

(C) 1875 (D) 18000

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–103-04

172. अथर्ववेदस्य विभाजनं प्राप्यते–

(A) सूक्तेषु (B) काण्डेषु

(C) सर्गेषु (D) अध्यायेषु

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–103-04

173. विलुप्ता 'मौद'–शाखा कस्य वेदस्य वर्तते?

(A) सामवेदस्य (B) अथर्ववेदस्य

(C) ऋग्वेदस्य (D) शुक्लयजुर्वेदस्य

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

157. (D) 158. (C) 159. (B) 160. (D) 161. (A) 162. (B) 163. (C) 164. (C) 165. (A) 166. (B)
167. (C) 168. (B) 169. (C) 170. (D) 171. (A) 172. (B) 173. (B)

174. 'सुमन्तु'– ऋषये व्यासः कं वेदं प्रोक्तवान्?
(A) यजुर्वेदम् (B) ऋग्वेदम्
(C) अथर्ववेदम् (D) सामवेदम्
स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड)-बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–341

175. 'नैरुक्त्यं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्। प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ..... तदिहोच्यते' इति पूरयत।।
(A) आरण्यकम् (B) पुराणम्
(C) ब्राह्मणम् (D) सूक्तम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–113

176. ग्रन्थवाचकः ब्राह्मणलक्षणं कतिधा प्रतिपाद्यते?
(A) नव (B) दश
(C) द्वादश (D) पञ्चदश
स्रोत–वैदिक सा. एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115-116

177. विधिवाक्यम् वर्तते–
(A) मन्त्रः (B) नामधेयम्
(C) निषेधः (D) ब्राह्मणः
स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इति. (खण्ड-1)-बलदेव, पेज–73

178. ब्राह्मणं नाम–
(A) शास्त्रम् (B) यज्ञविधिप्रकाशनम्
(C) सामगानम् (D) प्रायश्चित्तविधानम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–73

179. ब्राह्मणग्रन्थों का विषय नहीं है–
(A) छन्दविवेचन (B) विधि
(C) पुराकल्प (D) प्रशंसा
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–117

180. ऋग्वेद के कितने ब्राह्मणग्रन्थ हैं?
(A) 3 (B) 2
(C) 5 (D) 4
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

181. 'चरैवेति-चरैवेति' उपदेशः कुत्र लभ्यते?
(A) शुनःशेपाख्याने (B) यम-यमी-संवादे
(C) सरमा-पणि-संवादे (D) वाङ्मनस्-संवादे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

182. विधिभागरूपेण स्वीक्रियते–
(A) ब्राह्मणग्रन्थः (B) उपनिषद्ग्रन्थः
(C) धर्मशास्त्रम् (D) आरण्यकम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–73

183. 'हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः' जिसको परिभाषित करता है, वह ग्रन्थ है–
(A) कठोपनिषद् (B) ब्राह्मण
(C) आरण्यक (D) गीता
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–117

184. ब्राह्मणग्रन्थानां प्रतिपाद्यविषयस्य कति प्रकाराः?
(A) द्वादश (B) षोडश
(C) चत्वारः (D) दश
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज–62

185. ऐतरेय ब्राह्मण में अध्यायों की संख्या कितनी है?
(A) दश (B) विंशतिः
(C) त्रिंशत् (D) चत्वारिंशत्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

186. ऐतरेयब्राह्मण किस वेद से सम्बद्ध है?
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

187. ऋग्वेदस्य ब्राह्मणम्–
(A) ऐतरेयब्राह्मणम् (B) तैत्तिरीयब्राह्मणम्
(C) आर्षेयब्राह्मणम् (D) गोपथब्राह्मणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

188. 'चरैश्चरैवेति' इति कस्मिन् ब्राह्मणे अस्ति?
(A) शतपथब्राह्मणे (B) ऐतरेयब्राह्मणे
(C) तैत्तिरीयब्राह्मणे (D) गोपथब्राह्मणे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

189. 'हरिश्चन्द्रोपाख्यानं' कस्मिन् ब्राह्मणे उपलभ्यते?
(A) ऐतरेयब्राह्मणे (B) गोपथब्राह्मणे
(C) शतपथब्राह्मणे (D) पञ्चविंशब्राह्मणे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–68

190. 'शुनःशेपाख्यान' सर्वप्रथम कहाँ प्राप्त होता है?
(A) ऐतरेय (B) तैत्तिरीय
(C) गोपथ (D) शतपथ
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–126

174. (C) 175. (C) 176. (B) 177. (D) 178. (B) 179. (A) 180. (B) 181. (A) 182. (A) 183. (B)
184. (D) 185. (D) 186. (A) 187. (A) 188. (B) 189. (A) 190. (A)

191. 'शांखायनब्राह्मणं' कस्य वेदस्य?
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

192. शांखायनब्राह्मणे कियन्तोऽध्यायाः विद्यन्ते?
(A) 15 (B) 25
(C) 30 (D) 42
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

193. शांखायनब्राह्मणस्य अपरं नाम किम् अस्ति?
(A) आख्यानम् (B) ताण्ड्यम्
(C) कौषीतकि (D) कौथुमम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

194. शतपथब्राह्मण किस वेद से सम्बन्धित है?
(A) सामवेद से (B) शुक्लयजुर्वेद से
(C) ऋग्वेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–129

195. शतपथ-ब्राह्मण में काण्डों की संख्या है?
(A) दश (10) (B) नव (9)
(C) पञ्चदश (15) (D) चतुर्दश (14)
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–129-130

196. शुक्लयजुर्वेद के शतपथब्राह्मण में कितने अध्याय हैं?
(A) 64 (B) 10
(C) 13 (D) 100
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

197. शतपथ ब्राह्मण कितने हैं?
(A) 1 (B) 4
(C) 2 (D) 5
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

198. 'बृहदारण्यकोपनिषद्' किस ब्राह्मण में है?
(A) तैत्तिरीय में (B) शतपथ में
(C) ऐतरेय में (D) गोपथ में
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–130

199. माध्यन्दिनशतपथे कति प्रपाठकाः सन्ति–
(A) दश (B) द्वादश
(C) अष्टषष्टिः (D) सप्तसप्ततिः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

200. 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते–
(A) महाभारते (B) ऋग्वेदे
(C) महाभाष्ये (D) शतपथब्राह्मणे
स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड)-बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–403

201. 'शतपथब्राह्मणस्य' आंग्लानुवादः कृतो वर्तते–
(A) जी. थीबोमहोदयेन (B) जे. एग्लिंगमहोदयेन
(C) एम. विलियम्समहोदयेन (D) डब्लू. कैलेण्डमहोदयेन
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–655

202. ताण्ड्य ब्राह्मण किस वेद से सम्बन्धित है?
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135

203. सामवेदीयं ब्राह्मणम्–
(A) ऐतरेयम् (B) ताण्ड्यम्
(C) शतपथम् (D) तैत्तिरीयम्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135

204. वेबरमहाभागः यजुर्वेदीयानां शतपथब्राह्मणग्रन्थानाम् आलोचनात्मकं संस्करणं कदा अप्रकाशयत्।
(A) 1855 ई0 (B) 1955 ई0
(C) 1850 ई0 (D) 1852 ई0
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–34

205. पञ्चविंशब्राह्मणं कस्य ब्राह्मणस्य अपरं नाम अस्ति?
(A) शतपथस्य (B) ताण्ड्यस्य
(C) ऐतरेयस्य (D) वंशस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135

206. अद्भुतब्राह्मण से सम्बन्धित वेद है?
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–137

207. षड्विंश ब्राह्मण किस वेद से सम्बद्ध है?
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) यजुर्वेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135

208. आर्षेयब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धम्?
(A) सामवेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) यजुर्वेदेन
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

191. (A) 192. (C) 193. (C) 194. (B) 195. (D) 196. (D) 197. (C) 198. (B) 199. (C) 200. (D)
201. (B) 202. (C) 203. (B) 204. (A) 205. (B) 206. (C) 207. (B) 208. (A)

209. देवताध्यायब्राह्मणम्?
(A) अथर्ववेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) सामवेदस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

210. संहितोपनिषद्ब्राह्मण से सम्बद्ध वेद है–
(A) शुक्लयजुर्वेद (B) ऋग्वेद
(C) अथर्ववेद (D) सामवेद
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

211. 'जैमिनीयब्राह्मणं' केन वेदेन सम्पृक्तम्?
(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

212. पञ्चविंशब्राह्मणम्?
(A) ऋग्वेदीयम् (B) सामवेदीयम्
(C) यजुर्वेदीयम् (D) अथर्ववेदीयम्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–135

213. अथर्ववेद का ब्राह्मणग्रन्थ है?
(A) ऐतरेय (B) गोपथ
(C) शांखायन (D) ताण्ड्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

214. गोपथ ब्राह्मण के अनुसार 'सर्पवेद' जिसका उपवेद है, वह है?
(A) अथर्ववेद (B) सामवेद
(C) ऋग्वेद (D) यजुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

215. निम्नलिखित में से कौन सा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है?

वेद	ब्राह्मण
(A) ऋग्वेद	ऐतरेयब्राह्मण
(B) सामवेद	तैत्तिरीयब्राह्मण
(C) यजुर्वेद	शतपथब्राह्मण
(D) अथर्ववेद	गोपथब्राह्मण

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75-76

216. सायणमतानुसारम् अरण्ये पठनीयाः सन्ति–
(A) वेदाः (B) आरण्यकाः
(C) उपनिषदः (D) ब्राह्मणग्रन्थाः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

217. को नाम आरण्यकस्य मुख्यविषयः –
(A) ज्ञानम् (B) उपासनादिकम्
(C) गानम् (D) स्तुतिः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–143

218. आरण्यकानि सम्बद्धानि सन्ति -
(A) गृहस्थाश्रमेण (B) वानप्रस्थाश्रमेण
(C) ब्रह्मचर्याश्रमेण (D) लोकाश्रमेण
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

219. सामवेदीय आरण्यकों की संख्या है–
(A) पाँच (B) चार
(C) दो (D) तीन
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

220. 'आरण्यकञ्च वेदेभ्यः औषधिभ्योऽमृतं यथा' इति उक्तम्–
(A) सायणेन (B) कृष्णद्वैपायनेन
(C) यास्केन (D) मनुना
स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–234

221. के ग्रन्थाः वनेषु रचिताः?
(A) वाल्मीकिरामायणम् (B) उपनिषदः
(C) अष्टादशपुराणानि (D) आरण्यकाः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

222. ऐतरेय आरण्यक सम्बन्धित है–
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

223. 'बृहदारण्यकं' कया शाखया संयुक्तमस्ति–
(A) शाकलशाखया (B) वाष्कलशाखया
(C) काण्वशाखया (D) राणायनीयशाखया
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

224. 'बृहदारण्यकम्' किस वेद का है?
(A) यजुर्वेद का (B) अथर्ववेद का
(C) ऋग्वेद का (D) सामवेद का
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

225. तैत्तिरीय-आरण्यक किस वेद से सम्बद्ध है–
(A) ऋग्वेद से (B) कृष्णयजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

209. (D) 210. (D) 211. (C) 212. (B) 213. (B) 214. (A) 215. (B) 216. (B) 217. (A) 218. (B)
219. (C) 220. (B) 221. (D) 222. (A) 223. (C) 224. (A) 225. (B)

226. पञ्चमहायज्ञ इसमें होता है–
(A) बृहदारण्यकोपनिषद् (B) तैत्तिरीयारण्यक
(C) ऋग्वेद (D) पैप्पलादशाखा
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

227. 'तैत्तिरीयारण्यकस्य' कस्मिन् प्रपाठके तैत्तिरीयोपनिषद् विद्यते–
(A) प्रथमे (B) सप्तमे
(C) तृतीये (D) चतुर्थे
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–144

228. तैत्तिरीयारण्यकस्य प्रपाठकसंख्या का विद्यते–
(A) सप्त (B) दश
(C) नव (D) पञ्च
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

229. यजुर्वेदेन सम्बद्धस्य आरण्यकस्य किं नाम अस्ति–
(A) ऐतरेयारण्यकम् (B) तैत्तिरीयारण्यकम्
(C) तलवकारारण्यकम् (D) छान्दोग्यारण्यकम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

230. 'तैत्तिरीयारण्यके' पञ्चयज्ञानां वर्णनं कस्मिन् प्रपाठके विद्यते–
(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये (D) चतुर्थे
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी,पेज–144

231. 'महानारायणीय उपनिषद्' कस्मिन्नारण्यके अस्ति–
(A) ऐतरेये (B) शतपथे
(C) ताण्ड्ये (D) तैत्तिरीये
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–144-145

232. मैत्रायणी आरण्यक में कितने प्रपाठक हैं?
(A) 5 (B) 7
(C) 10 (D) 8
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

233. सामवेदस्य आरण्यकम् अस्ति–
(A) तलवकारः (B) जैमिनीयम्
(C) नारदीयम् (D) प्रौष्ठपदीयम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

234. वेदस्य अपौरुषेयत्वं कः न स्वीकरोति–
(A) विन्टरनित्सः (B) सायणः
(C) माधवः (D) दयानन्दः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17,18,23

235. तलवकारारण्यकस्य नामान्तरम्–
(A) जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मणम् (B) गोपथब्राह्मणम्
(C) तैत्तिरीयब्राह्मणम् (D) ऐतरेयब्राह्मणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

236. तलवकारारण्यके अध्यायाः –
(A) 6 (B) 10
(C) 4 (D) 2
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–79

237. 'छान्दोग्य आरण्यक' किस वेद से सम्बन्धित है–
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) अथर्ववेद से (D) यजुर्वेद से
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–79

238. कस्य वेदस्यारण्यकं नोपलभ्यते–
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–79

239. 'उपनिषद्' शब्द का अर्थ है–
(A) महाविद्या (B) आत्मविद्या
(C) संवर्गविद्या (D) अग्निविद्या
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–147

240. ज्ञानकाण्ड इनका विषय है–
(A) शुक्लयजुर्वेद (B) प्रातिशाख्य
(C) उपनिषद् (D) ब्राह्मणग्रन्थ
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–170

241. भगवान् आद्यशङ्कराचार्यः कियतीनामुपनिषदां भाष्यं कृतवान्–
(A) 7 (B) 10
(C) 13 (D) 15
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–169

242. उपनिषद् शब्दे कः धातुरस्ति–
(A) सद् (B) गम्
(C) पठ् (D) पा
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–167

243. 'उपनिषदों' की विषयवस्तु है?
(A) दर्शन (B) कर्मकाण्ड
(C) भक्ति (D) उपर्युक्त सभी
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–146

226. (B) 227. (B) 228. (B) 229. (B) 230. (B) 231. (D) 232. (B) 233. (A) 234. (A) 235. (A)
236. (C) 237. (B) 238. (D) 239. (B) 240. (C) 241. (B) 242. (A) 243. (A)

244. निम्नाङ्कित में से कौन प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित है–
(A) वेद (B) रामायण
(C) उपनिषद् (D) रघुवंश
स्रोत– वेदान्तसार - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–10

245. वेदानाम् अन्तिमभागं ..... इत्युच्यते–
(A) धर्मः (B) उपनिषद्
(C) उत्तमः (D) ब्राह्मणः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–147

246. उपनिषद् इति पदे कः प्रत्ययो अस्ति–
(A) यत् (B) क्विप्
(C) ण्यत् (D) क्यप्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–167

247. महानारायणोपनिषद् कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते?
(A) बृहदारण्यके (B) छान्दोग्ये
(C) तैत्तिरीयारण्यके (D) ऐतरेयारण्यके
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–164

248. सांख्य-योग शैवदर्शन प्रतिपादक उपनिषद् ग्रन्थ है–
(A) कठोपनिषद् (B) केनोपनिषद्
(C) प्रश्नोपनिषद् (D) श्वेताश्वतरोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–185

249. कौषीतकि-उपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है?
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–150

250. ईशावास्योपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है?
(A) ऋग्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) कृष्णयजुर्वेद (D) सामवेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–150

251. ईशावास्योपनिषद् है–
(A) काण्वसंहिता में (B) कौथुमसंहिता में
(C) शाकलसंहिता में (D) पैप्पलादसंहिता में
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–153

252. विद्यया किम् अश्नुते–
(A) क्षीरम् (B) जलम्
(C) विषम् (D) अमृतम्
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–36

253. 'ईशोपनिषद्' क्या कहलाता है–
(A) आरण्यक (B) वेदान्त
(C) ब्राह्मण (D) कल्प
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–07

254. विन्टरनित्स के अनुसार ऋग्वेद का समय है-
(A) 1500 BC (B) 2500 BC
(C) 3500 BC (D) 4500 BC
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42

255. शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद् है–
(A) ईशावास्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्
(C) मुण्डकोपनिषद् (D) केनोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66, 67

256. शुक्लयजुर्वेद सम्बद्ध उपनिषद् हैं–
(A) उनविंशतिः (19) (B) दश (10)
(C) द्वात्रिंशत् (32) (D) एकत्रिंशत् (31)
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168

257. 'ईशावास्योपनिषदि' कति मन्त्राः सन्ति?
(A) 10 (B) 18
(C) 28 (D) 40
स्रोत– ईशावास्योपनिषद् - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–18

258. 'बृहदारण्यक' उपनिषद् सम्बद्ध है–
(A) ऋग्वेद से (B) शुक्लयजुर्वेद से
(C) अथर्ववेद से (D) सामवेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–183

259. 'मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य-संवादः' कस्यामुपनिषदि उपलभ्यते?
(A) कठोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) ईशोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी,पेज–184

260. शुनःशेपस्य पितुर्नामास्ति–
(A) हरिश्चन्द्रः (B) नारायणः
(C) प्रजापतिः (D) अजीगर्तः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–126

261. 'रथ-रूपकं' कुत्र विद्यते–
(A) छान्दोग्ये (B) बृहदारण्यके
(C) श्वेताश्वतरे (D) कठे
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–123

244. (C) 245. (B) 246. (B) 247. (C) 248. (D) 249. (A) 250. (B) 251. (A) 252. (D) 253. (B)
254. (B) 255. (A) 256. (A) 257. (B) 258. (B) 259. (D) 260. (D) 261. (D)

262. कृष्णयजुर्वेदः सम्बद्धः अस्ति–
(A) छान्दोग्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्
(C) ऐतरेयोपनिषद् (D) ईशावास्योपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

263. प्रथमः वेदकालनिर्णायकोऽस्ति–
(A) राथः (B) मैक्समूलरः
(C) सायणः (D) मैक्डॉनलः
स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–94

264. आध्यात्मिक ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम के संवाद किस उपनिषद् में प्राप्त होता है–
(A) बृहदारण्यक उपनिषद् में (B) छान्दोग्य उपनिषद् में
(C) कठोपनिषद् में (D) केनोपनिषद् में
स्रोत–उपनिषद् अंक - गीताप्रेस, पेज–191

265. कठोपनिषद् में कितने अध्याय हैं?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 6
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद, गीताप्रेस, पेज–76

266. कठोपनिषद् में 'सृङ्का' का अर्थ है–
(A) प्रवालजटितमाला (B) तुलसीमाला
(C) रुद्राक्षमाला (D) अकुत्सितकर्ममयीगति
स्रोत–कठोपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–29

267. कठशाखायाः उपनिषदः किं नाम अस्ति–
(A) प्रश्नोपनिषद् (B) ईशावास्योपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) केनोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

268. 'नचिकेतोपाख्यानं' कस्मिन्नुपनिषदि प्राप्यते–
(A) ऐतरेयोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यके
स्रोत– ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.3.16)-गीताप्रेस, पेज–133

269. 'तैत्तिरीय उपनिषद्' का वेद है–
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–155

270. तैत्तिरीयोपनिषदि केन वेदेन सम्बद्धा–
(A) शुक्लयजुर्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–155

271. तैत्तिरीयोपनिषदि कत्यनुवाकाः सन्ति?
(A) द्वादश (B) षोडश
(C) अष्ट (D) पञ्चदश
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–155

272. शिक्षावल्ली प्राप्यते–
(A) कठोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) रामायणे
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–155

273. 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव' इत्यादि वाक्य किस उपनिषद् से उद्धृत है?
(A) कठोपनिषद् (B) प्रश्नोपनिषद्
(C) माण्डूक्योपनिषद् (D) तैत्तिरीयोपनिषद्
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–364

274. 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः' इति उक्तिः कुतः उद्धृता–
(A) कठोपनिषदः (B) तैत्तिरीयोपनिषदः
(C) पाणिनीयशिक्षातः (D) याज्ञवल्क्यशिक्षातः
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (तैत्तिरीयोपनिषद् 1.2)-गीताप्रेस, पेज–333

275. 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा–
(A) ऋग्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–157

276. दस उपनिषदों के अन्तर्गत किस उपनिषद् की गणना नहीं की गई है–
(A) मुण्डकोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) श्वेताश्वतरोपनिषद् (D) ऐतरेयोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168

277. 'नारद-सनत्कुमारसंवाद' आता है–
(A) केनोपनिषद् (B) तैत्तिरीयोपनिषद्
(C) छान्दोग्योपनिषद् (D) प्रश्नोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181

278. छान्दोग्योपनिषदः अध्यायानां संख्या–
(A) 4 (B) 3
(C) 8 (D) 16
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181

279. कौन सा उपनिषद् सामवेद का अंश है–
(A) कठोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) ईशोपनिषद् (D) केनोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–159

262. (B) 263. (B) 264. (C) 265. (A) 266. (D) 267. (C) 268. (C) 269. (B) 270. (B) 271. (A)
272. (C) 273. (D) 274. (B) 275. (D) 276. (C) 277. (C) 278. (C) 279. (B)

280. उपनिषद् ब्राह्मणम्–
(A) ऐतरेयोपनिषद् (B) केनोपनिषद्
(C) छान्दोग्योपनिषद् (D) कठोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–159

281. निम्न में से सामवेद से सम्बद्ध उपनिषद् कौन है?
(A) छान्दोग्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्
(C) ईशावास्योपनिषद् (D) ऐतरेयोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–159

282. 'तलवकारोपनिषद्' का सम्बन्ध है–
(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–161

283. 'केनोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा–
(A) कृष्णयजुर्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–161

284. केनोपनिषद् केन ब्राह्मणग्रन्थेन सम्बद्धा–
(A) शतपथब्राह्मणेन (B) पञ्चविंशब्राह्मणेन
(C) तलवकारब्राह्मणेन (D) गोपथब्राह्मणेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

285. केनोपनिषदः सम्बन्धः अस्ति–
(A) यजुर्वेदेन
(B) सामवेदस्य तवलकारशाखया
(C) अथर्ववेदेन
(D) ऋग्वेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

286. प्रश्नोपनिषद्–
(A) ऋग्वेदीया (B) यजुर्वेदीया
(C) सामवेदीया (D) अथर्ववेदीया
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–162

287. अथर्ववेदीय उपनिषद् है–
(A) मुण्डकोपनिषद् (B) ईशावास्योपनिषद्
(C) बृहदारण्यकोपनिषद् (D) केनोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–150

288. अथर्ववेदीया–
(A) कौषीतक्युपनिषत् (B) छान्दोग्योपनिषत्
(C) माण्डूक्योपनिषत् (D) ऐतरेयोपनिषत्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–163

289. सबसे पहले चार आश्रमों का वर्णन आया है, वह उपनिषद् है?
(A) ईश (B) बृहदारण्यक
(C) छान्दोग्य (D) जाबालोपनिषद्
स्रोत–108 उपनिषद् (ब्रह्मविद्या खण्ड)-श्रीरामशर्मा आचार्य, पेज–191, 192

290. 'भक्ति' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख कहाँ मिलता है?
(A) वेद (B) पुराण
(C) उपनिषद् (D) रामायण

291. वेदाङ्गानां संख्या भवति–
(A) त्रीणि (B) पञ्च
(C) षड् (D) सप्त
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

292. वेदाङ्गं नास्ति–
(A) व्याकरणम् (B) ज्योतिषम्
(C) कल्पशास्त्रम् (D) साहित्यम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

293. सुमेलयतु–

(क) शिक्षा	**1. पादः**
(ख) व्याकरणम्	**2. नासिका**
(ग) छन्दः	**3. मुखम्**
(घ) निरुक्तम्	**4. श्रोत्रम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	2	3	1	4
(D)	3	2	4	1

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

294. 'प्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बद्ध है?
(A) व्याकरण से (B) ज्योतिष से
(C) शिक्षा से (D) कल्प से
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

295. वेदाङ्ग शिक्षा का सम्बन्ध है–
(A) वर्णोत्पत्ति तथा उच्चारण से
(B) दण्डनीति से
(C) सामाजिक नियम से
(D) कर्मकाण्ड से
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

280. (C) 281. (A) 282. (C) 283. (B) 284. (C) 285. (B) 286. (D) 287. (A) 288. (C) 289. (D)
290. (C) 291. (C) 292. (D) 293. (C) 294. (C) 295. (A)

296. शिक्षावेदाङ्गस्य को विषयः?
(A) यज्ञः (B) उपासना
(C) मोक्षः (D) उच्चारणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

297. वेदपुरुष का शिक्षा है?
(A) घ्राण (B) नासिका
(C) हस्त (D) पाद
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

298. शिक्षाङ्गस्य विषयाः कियन्तः उपदिष्टाः–
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

299. 'बलम्' इत्यनेन किं गृह्यते–
(A) स्थानप्रयत्नौ (B) बर्हिः
(C) वनम् (D) बाह्यम्
स्रोत-संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–87

300. शुक्लयजुर्वेदेन सम्बद्धा शिक्षा का अस्ति?
(A) पाणिनीयशिक्षा (B) याज्ञवल्क्यशिक्षा
(C) कैवल्यशिक्षा (D) शौनकशिक्षा
स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–41

301. कस्य वेदाङ्गस्य प्रतिपादनं वेदपुरुषस्य घ्राणरूपेणास्ति?
(A) शिक्षायाः (B) निरुक्तस्य
(C) व्याकरणस्य (D) कल्पस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

302. पाणिनीयशिक्षानुसारं लिखितपाठकः कः भवति?
(A) उत्तमः (B) उत्तमोत्तमः
(C) अधमः (D) श्रेष्ठः
स्रोत–पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-32)-शिवराजाचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज–43

303. 'ऋक्प्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बन्धित है?
(A) व्याकरण से (B) कल्प से
(C) निरुक्त से (D) शिक्षा से
स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड)- बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज– भू. 13

304. 'गृह्यसूत्र' किसके भाग हैं–
(A) शिक्षा के (B) कल्प के
(C) निरुक्त के (D) ज्योतिष के
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

305. कल्पसूत्र का विषय है–
(A) यज्ञ-वेदी-निर्माण
(B) मन्त्रों के शुद्धातिशुद्ध उच्चारण का ज्ञान
(C) वैदिकपदों का निर्वचन
(D) भावबोधक हेतु
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

306. श्रौतसूत्रों का वर्ण्य विषय है–
(A) आश्रमकर्त्तव्य (B) यज्ञवेदीनिर्माण
(C) वैदिकयज्ञ (D) संस्कार
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

307. इनमें से 'वेदाङ्ग' है–
(A) ऋग्वेद (B) कल्प
(C) सामवेद (D) कृष्णयजुर्वेद
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

308. 'धर्मसूत्रम्' आयाति–
(A) शिक्षायाम् (B) छन्दसि
(C) कल्पे (D) निरुक्ते
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

309. कः कल्पसूत्रविषयः–
(A) यागप्रयोगक्रमप्रतिपादनम् (B) शब्दार्थनिरूपणम्
(C) पाठभेदनिरूपणम् (D) वेदार्थनिरूपणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

310. कल्पग्रन्थेषु किं न गण्यते–
(A) आपस्तम्बश्रौतसूत्रम् (B) कात्यायनश्रौतसूत्रम्
(C) बौधायनधर्मसूत्रम् (D) उणादिसूत्रम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

311. निम्न में से कौन कल्प वेदाङ्ग से सम्बद्ध है–
(A) बृहद्देवता (B) चाणक्यसूत्र
(C) बौधायनशुल्बसूत्र (D) मनुस्मृति
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

312. 'पारस्करगृह्यसूत्र' की गणना किस वेदाङ्ग में की जाती है?
(A) शिक्षा (B) व्याकरण
(C) कल्प (D) निरुक्त
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

296. (D) 297. (A) 298. (D) 299. (A) 300. (B) 301. (A) 302. (C) 303. (D) 304. (B) 305. (A)
306. (C) 307. (B) 308. (C) 309. (A) 310. (D) 311. (C) 312. (C)

313. कल्पः वेदस्य–

(A) पादौ (B) चक्षुः

(C) हस्तौ (D) श्रोत्रम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

314. सुमेलित कीजिए–

(क) श्रौतसूत्र	**1. धार्मिक तथा लौकिक विधि एवं प्रशासन**
(ख) गृह्यसूत्र	**2. महाबलिदानों को सम्पन्न करने के नियम**
(ग) धर्मसूत्र	**3. दैनिक जीवन से सम्बन्धित समारोहों के लिए निर्देश**
(घ) शुल्बसूत्र	**4. बलिवेदियों तथा अग्निवेदियों के माप तथा निर्माण सम्बन्धी नियम**

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	3	2	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	2	3	1	4

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–307-308

315. शुल्बसूत्राणां प्रतिपाद्यो विषयः–

(A) आश्रमविधानम् (B) स्वरपाठः

(C) वेदिनिर्माणम् (D) प्रकृतिप्रत्ययविधानम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

316. कल्पे सूत्रग्रन्थाः कतिविधाः भवन्ति–

(A) दशविधाः (B) सप्तविधाः

(C) पञ्चविधाः (D) चतुर्विधाः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

317. शुक्लयजुर्वेदस्य श्रौतसूत्राणि कति?

(A) एकम् (B) द्वे

(C) त्रीणि (D) चत्वारि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

318. यजुर्वेदसम्बद्धं श्रौतसूत्रम्?

(A) हिरण्यकेशीयम् (B) वैतानम्

(C) शाङ्खायनम् (D) लाट्यायनम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

319. अथर्ववेदीयं श्रौतसूत्रं किम्?

(A) लाट्यायनम् (B) बौधायनम्

(C) आश्वलायनम् (D) वैतानम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

320. शुल्बसूत्रे शुल्बशब्दस्यार्थः कोऽस्ति?

(A) परिमाणम् (B) लेखनम्

(C) पठनम् (D) ज्ञानम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–239

321. षोडशसंस्कारः कस्य विषयः?

(A) धर्मसूत्रस्य (B) श्रौतसूत्रस्य

(C) गृह्यसूत्रस्य (D) शुल्बसूत्रस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

322. कृष्णयजुर्वेदस्य कति गृह्यसूत्राणि–

(A) दश (B) नौ

(C) पञ्चदश (D) द्वादश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–229

323. कल्पान्तर्गतो वर्तते?

(A) छन्दःसूत्रम् (B)गृह्यसूत्रम्

(C) वर्णसूत्रम् (D) प्रातिशाख्यम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

324. मुख्यतया कर्मकाण्डं कतमद् वेदाङ्गं प्रतिपादयति?

(A) निरुक्तम् (B) कल्पः

(C) छन्दः (D) शिक्षा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

325. एतेषु वेदाङ्गेषु भाषाविज्ञान-विषयः किं नास्ति?

(A) कल्पः (B) शिक्षा

(C) व्याकरणम् (D) निरुक्तम्

326. 'वाधूलशुल्बसूत्रम्' केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

(A) अथर्ववेदेन (B) सामवेदेन

(C) ऋग्वेदेन (D) यजुर्वेदेन

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–232

327. 'वैतानश्रौतसूत्र' से सम्बन्धित है–

(A) अथर्ववेद (B) शुक्लयजुर्वेद

(C) सामवेद (D) कृष्णयजुर्वेद

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

313. (C) 314. (D) 315. (C) 316. (D) 317. (A) 318. (A) 319. (D) 320. (A) 321. (C) 322. (B) 323. (B) 324. (B) 325. (A) 326. (D) 327. (A)

328. कल्पसूत्रं किम्–
(A) श्रौतसूत्रम् (B) शुल्बसूत्रम्
(C) गृह्यसूत्रम् (D) उपर्युक्तं सर्वम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

329. षट् वेदाङ्ग में प्रधान है–
(A) शिक्षा (B) कल्प
(C) व्याकरण (D) ज्योतिष
स्रोत-वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–180

330. व्याकरणं वेदपुरुषस्य कीदृशम् अङ्गं भवति–
(A) हस्तः (B) मुखम्
(C) पादः (D) नासिका
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194

331. पदानां प्रकृतेः प्रत्ययस्य च उपदेशकं वेदाङ्गम् अस्ति–
(A) कल्पम् (B) शिक्षा
(C) व्याकरणम् (D) छन्दः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–193

332. निरुक्त के कितने प्रतिपाद्य विषय हैं–
(A) दश (B) तीन
(C) नौ (D) पाँच
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206

333. निरुक्ते एकस्य पदस्य बह्वर्थमादाय किं काण्डं प्रवर्तते–
(A) नैघण्टुकम् (B) दैवतम्
(C) नैगमम् (D) उत्तरषट्कम्
स्रोत– हिन्दी निरुक्त-कपिलदेव शास्त्री, भू. पेज–11

334. निघण्टु-शब्देनोच्यते–
(A) वैदिकशब्दकोशः (B) निरुक्तम्
(C) निधानम् (D) कारकम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

335. 'निरुक्त' किसका अङ्ग है–
(A) व्याकरण का (B) वेद का
(C) उपनिषद् का (D) भाषा का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

336. परिशिष्टभाग को छोड़कर निरुक्त में कितने अध्याय हैं–
(A) 6 (B) 12
(C) 14 (D) 17
स्रोत– हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू0 25

337. निरुक्तेऽस्ति–
(A) वेदमन्त्राणां सङ्ग्रहः (B) वैदिकयज्ञानां प्रक्रिया
(C) वेदमन्त्राणां स्वरविवेचनम् (D) वैदिकशब्दानां निर्वचनम्
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–165

338. श्रौतस्थानीयं वेदाङ्गं निरूपितमस्ति–
(A) गृह्यसूत्रम् (B) प्रातिशाख्यम्
(C) निरुक्तम् (D) कल्पसूत्रम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

339. यास्कमते पदभेदाः सन्ति?
(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) त्रिविधः (D) द्वौ
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206

340. 'नैगमकाण्डं' कुत्र वर्तते–
(A) कल्पे (B) निरुक्ते
(C) ज्योतिषे (D) व्याकरणे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

341. आख्यातस्य लक्षणं कुत्र वर्तते–
(A) शिक्षायाम् (B) ज्योतिषे
(C) छन्दसि (D) निरुक्ते
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–207

342. देवतानां स्थानानि वर्णितानि सन्ति–
(A) व्याकरणे (B) शिक्षायाम्
(C) कल्पे (D) निरुक्ते
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

343. वेदाङ्गेषु निरुक्तं भवति–
(A) मुखम् (B) श्रोत्रम्
(C) घ्राणम् (D) पादः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

344. नैघण्टुकं काण्डं वर्तते–
(A) शिक्षायाम् (B) शुल्बसूत्रे
(C) छन्दःसूत्रे (D) निघण्टुग्रन्थे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–205

345. अर्थप्रधानं वर्तते–
(A) निरुक्तम् (B) छन्दः
(C) शिक्षा (D) कल्पः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–93

328. (D)	**329. (C)**	**330. (B)**	**331. (C)**	**332. (D)**	**333. (C)**	**334. (A)**	**335. (B)**	**336. (B)**	**337. (D)**
338. (C)	**339. (A)**	**340. (B)**	**341. (D)**	**342. (D)**	**343. (B)**	**344. (D)**	**345. (A)**		

346. 'समुद्द्रवन्त्यस्मादापः' इत्यनेन को निर्दिश्यते–
(A) मेघः (B) ह्रदः
(C) समुद्रः (D) नदी
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–214

347. निरुक्तग्रन्थे काण्डसंख्या वर्तते–
(A) चतुर्दश (B) द्वादश
(C) पञ्च (D) त्रीणि
स्रोत–हिन्दी निरुक्त-कपिलदेव शास्त्री, भूमिका-पेज–11

348. व्याकरण का कात्स्न्र्य है–
(A) छन्दशास्त्रम् (B) निरुक्तम्
(C) ज्योतिषम् (D) कल्पसाहित्यम्
स्रोत–हिन्दी निरुक्त-कपिलदेव शास्त्री, पेज–125

349. 'इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः' का पाठ जिसमें है, वह ग्रन्थ है?
(A) वाक्यपदीय (B) महाभाष्य
(C) निरुक्त (D) अष्टाध्यायी
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–18

350. वेदाङ्गेषु किं व्याकरणस्य पूरकं भवति–
(A) शिक्षा (B) कल्पः
(C) निरुक्तम् (D) ज्योतिषम्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–185

351. 'आचार्य'-शब्दनिर्वचनेषु कतमं निर्वचनं निरुक्तसम्मतं नास्ति–
(A) आचारं ग्रहणाति (B) आचारं ग्राहयति
(C) आचिनोत्यर्थान् (D) आचिनोति बुद्धिम्
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–35

352. निरुक्तं नाम–
(A) व्याकरणम् (B) प्रमाणम्
(C) निर्वचनविज्ञानम् (D) वचनम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

353. 'निघण्टु'- ग्रन्थे विद्यमानाः काण्डाः–
(A) 3 (B) 4
(C) 6 (D) 2
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–93

354. निरुक्ते विषयान् प्रतिपादयति–
(A) कात्यायनः (B) यास्कः
(C) पाणिनिः (D) गौतमः
स्रोत– हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, भू. पेज–13

355. निघण्टुग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति?
(A) 5 (B) 7
(C) 10 (D) 12
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, भू. पेज–25

356. यास्कमते आख्यातलक्षणं किं?
(A) भावप्रधानः (B) सत्त्वप्रधानः
(C) धातुप्रधानः (D) शब्दप्रधानः
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–10

357. यास्कानुसारं 'नाम' कीदृशं भवति–
(A) भावप्रधानः (B) सत्त्वप्रधानः
(C) धातुप्रधानः (D) शब्दप्रधानः
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–10

358. निरुक्तं कस्य ग्रन्थस्य व्याख्यारूपेणास्ति?
(A) निघण्टोः (B) गीतायाः
(C) अष्टाध्याय्याः (D) ऋक्प्रातिशाख्यम्
स्रोत–हिन्दी निरुक्त-कपिलदेव शास्त्री, भू, पेज–23

359. सामान्यतया निरुक्ताध्यायानां संख्या कति मन्यते?
(A) दश (B) चतुर्दश
(C) विंशतिः (D) एकविंशतिः
स्रोत–हिन्दी निरुक्त-कपिलदेव शास्त्री, भू, पेज–25

360. यास्करचितस्य निरुक्तस्य आधारग्रन्थः कोऽस्ति?
(A) संहिता (B) ब्राह्मणम्
(C) निघण्टुः (D) कल्पः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–93

361. 'निरुक्तं' किमस्ति–
(A) वेदः (B) महाकाव्यम्
(C) वेदाङ्गम् (D) उपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

362. अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तत्–
(A) निरुक्तम् (B) व्याकरणम्
(C) छन्दः (D) ज्योतिषम्
स्रोत–हिन्दी निरुक्त-कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू.-11

363. 'निघण्टु' इति वैदिककोशस्य भाष्यरूपेण अस्ति–
(A) छन्दसूत्रम् (B) महाभाष्यम्
(C) निरुक्तम् (D) शिक्षासूत्रम्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–183

346. (C) 347. (D) 348. (B) 349. (C) 350. (C) 351. (A) 352. (C) 353. (A) 354. (B) 355. (A)
356. (A) 357. (B) 358. (A) 359. (B) 360. (C) 361. (C) 362. (A) 363. (C)

364. मैक्समूलरमतानुसारं वेदानां रचनाकालः–
(A) ई0पू0 षट्ससहस्रवर्षेभ्यः प्राक्
(B) ई0 पू0 द्वादशशतवर्षेभ्यः प्राक्
(C) ई0 पू0 सप्तसहस्रवर्षेभ्यः प्राक्
(D) ई0 पू0 सार्धद्विसहस्रवर्षेभ्यः प्राक्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

365. दुर्गाचार्य की व्याख्या से सम्बन्धित ग्रन्थ है?
(A) निरुक्त (B) योगसूत्र
(C) न्यायसूत्र (D) पाणिनिसूत्र
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–205

366. निघण्टोः पञ्चमाध्यायाः केन नाम्ना ज्ञायते?
(A) नैघण्टुकनाम्ना (B) नैगमनाम्ना
(C) दैवतनाम्ना (D) नैरुक्तनाम्ना
स्रोत–निरुक्तम्-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–02

367. निरुक्तशास्त्रसम्मताः देवताः सन्ति?–
(A) एकादश (B) त्रयस्त्रिंशत्
(C) कोटिशः (D) तिस्रः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–186

368. निम्न में से कौन सा वेदाङ्ग है–
(A) आरण्यक (B) छन्दस्
(C) ब्राह्मण (D) उपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

369. वेदाङ्ग 'छन्दस्' के प्रणेता हैं–
(A) वेदव्यास (B) श्वेतकेतु
(C) पिङ्गल (D) जैमिनि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199

370. किस वेदाङ्ग को पाद कहा गया है–
(A) छन्द (B) ज्योतिष
(C) कल्प (D) व्याकरण
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

371. पिङ्गलच्छन्दः सूत्रे वर्ण्यविषयः कः?
(A) छन्दः (B) यज्ञः
(C) अर्थवादः (D) मन्त्रः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199, 200

372. किं शास्त्रं वृत्तशास्त्रं कथ्यते?
(A) व्याकरणम् (B) ज्योतिषम्
(C) छन्दः (D) निरुक्तम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199

373. प्रसिद्धानि वैदिकछन्दांसि कति सन्ति?
(A) सप्त (B) चतुर्दश
(C) पञ्चदश (D) विंशतिः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–28

374. गायत्रीछन्द में अक्षर होते हैं–
(A) 24 (चतुर्विंशतिः) (B) 32 (द्वात्रिंशत्)
(C) 36 (षट्त्रिंशत्) (D) 40 (चत्वारिंशत्)
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–28

375. वेदे 'गायत्री' एकम्–
(A) मन्त्रः (B) स्त्रीपात्रः
(C) छन्दः (D) ऋषिः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

376. उष्णिक्वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति?
(A) 16 (B) 18
(C) 20 (D) 28
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

377. अनुष्टुप्-छन्दसि प्रतिपादं कत्यक्षराणि–
(A) पञ्च (B) अष्ट
(C) दश (D) द्वादश
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

378. अनुष्टुप्-छन्दसि कति पादाः भवन्ति–
(A) पञ्च (B) त्रयः
(C) चत्वारः (D) सप्तः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

379. अनुष्टुप् छन्द में अक्षरों की संख्या कितनी है?
(A) 24 (B) 32
(C) 38 (D) 48
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

380. द्वात्रिंशत् अक्षराणि भवन्ति–
(A) बृहतीछन्दसि (B) पंक्तिछन्दसि
(C) जगतीछन्दसि (D) अनुष्टुप्-छन्दसि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

381. त्रिष्टुप्-छन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति?
(A) 28 (B) 36
(C) 44 (D) 48
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

364. (B) 365. (A) 366. (C) 367. (D) 368. (B) 369. (C) 370. (A) 371. (A) 372. (C) 373. (A)
374. (A) 375. (C) 376. (D) 377. (B) 378. (C) 379. (B) 380. (D) 381. (C)

382. वैदिकछन्दः–
(A) त्रिष्टुप् (B) उपेन्द्रवज्रा
(C) वसन्ततिलका (D) आर्या
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–28, 29

383. जगती-छन्दसि प्रतिपादं कति अक्षराणि भवन्ति?
(A) दश (B) द्वादश
(C) षोडश (D) अष्ट
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

384. जगती-वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति?
(A) 24 (B) 28
(C) 32 (D) 48
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

385. अतिजगती-वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति–
(A) 24 (B) 32
(C) 52 (D) 70
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

386. वैदिकछन्दसि कस्मिन्नपि पादे एकाक्षरन्यूनता अधिकतां कथयति–
(A) निचृत्/भुरिक् (B) विराड्/स्वरात्
(C) भुरिक्/विराड् (D) निचृत्/स्वराट्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

387. किस वेदाङ्ग को 'चक्षु' कहा जाता है–
(A) शिक्षा (B) कल्पः
(C) ज्योतिषम् (D) निरुक्तम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

388. मैक्समूलरमतानुसारं वेदस्य मन्त्र रचना कदा अभवत्?
(A) 1000 ई० पू० (B) 2000 ई० पू०
(C) 4000 ई० पू० (D) 5000 ई० पू०
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42

389. यज्ञकालनिर्णयार्थं कस्य वेदाङ्गस्य उपयोगः–
(A) कल्पस्य (B) ज्योतिषस्य
(C) शिक्षायाः (D) निरुक्तस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–90

390. कालविधानशास्त्रं किं कथ्यते–
(A) कल्पः (B) निरुक्तम्
(C) व्याकरणम् (D) ज्योतिषम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–90

391. वेदस्य किं नयनम्–
(A) ज्योतिषम् (B) छन्दः
(C) व्याकरणम् (D) कल्पः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

392. मुहूर्तचिन्तामणेः कर्ताऽस्ति -
(A) नीलकण्ठदैवज्ञः (B) गणेशदैवज्ञः
(C) रामदैवज्ञः (D) अनन्तदैवज्ञः
स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–भू.7

393. नक्षत्राणां संख्याऽस्ति–
(A) द्वादश (12) (B) विंशतिः (20)
(C) सप्तविंशतिः (27) (D) चतुर्दश (14)
स्रोत–ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक-गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–11

394. सूर्यग्रहणं भवति -
(A) पूर्णिमायाम् (B) अमावस्याम्
(C) संक्रान्तौ (D) अमावस्यां शराभावे
स्रोत–संस्कृतपरम्परागतविषय-शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–35

395. वेदस्य चक्षुर्भवति–
(A) धर्मशास्त्रम् (B) ज्योतिषम्
(C) व्याकरणम् (D) छन्दः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

396. नित्याः खलु वेदा इति केषाम् अभिमतम्–
(A) मोक्षमूलरस्य (B) जैकोबीमहोदयस्य
(C) वेबरस्य (D) प्राचीनभारतीयपरम्परायाः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–11-15

397. वेदस्य अपौरुषेयत्वं कः स्वीकरोति–
(A) वेबरः (B) मैक्समूलरः
(C) विल्सनः (D) जैमिनिः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–12

398. वेदकालविषये भारतीयपरम्परागतविचारं कः परिपोषयति।
(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः
(C) विन्टरनित्सः (D) सायणः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17

399. किस विद्वान् के अनुसार ऋग्वेद का आरम्भकाल 6000 ई० पू० है–
(A) बालगङ्गाधरतिलक (B) वेबर
(C) मैक्समूलर (D) याकोबी
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

382. (A) 383. (B) 384. (D) 385. (C) 386. (A) 387. (C) 388. (A) 389. (B) 390. (D) 391. (A)
392. (C) 393. (C) 394. (D) 395. (B) 396. (D) 397. (D) 398. (D) 399. (A)

400. किसने 'उत्तर ध्रुव' को वेदों का रचना स्थान माना है?

(A) बालगङ्गाधर तिलक (B) वेबर

(C) मैक्समूलर (D) मैक्डोनल

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–62

401. वेदकालस्य निर्धारणे भारतीयज्योतिषपरम्परा केन परिपालिता–

(A) विन्टरनित्सः

(B) मैक्समूलरः

(C) वेबरः

(D) बालगङ्गाधरतिलकः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

402. बालगङ्गाधरतिलकम् अनुसृत्य वेदस्य रचनाकालम् अस्ति।

(A) 6000 ई० पू० तः 4000 ई० पू० पर्यन्तम्

(B) 5000 ई० पू० तः 3000 ई० पू० पर्यन्तम्

(C) 5000 ई० पू० तः 4000 ई० पू० पर्यन्तम्

(D) 6000 ई० पू० तः 5000 ई० पू० पर्यन्तम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

403. नक्षत्रसम्पातादिना वेदकालं कः प्रतिपादयति–

(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः

(C) बालगङ्गाधरतिलकः (D) जैकोबी

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

404. वैदिककाल निर्णये ज्योतिषस्य उपयोगः केन कृतः–

(A) विन्टरनित्सः (B) लोकमान्यबालगङ्गाधरतिलकः

(C) मैक्समूलरः (D) मैक्डोनलः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

405. ज्योतिषमाधारीकृत्य वेदानां कालं चतुःसहस्रविक्रमपूर्वं मन्यमानो विद्वानस्ति–

(A) बालगङ्गाधरतिलकः

(B) वासुदेवशरणअग्रवालः

(C) मैक्समूलरः

(D) विण्टरनित्सः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–41

406. 'वेदा अपौरुषेयाः सन्ति'-इति मतम् अस्ति।

(A) मैक्समूलरस्य (B) दयानन्दस्य

(C) विन्टरनित्सस्य (D) सर्वेषामेव

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–18

407. छन्दः कालादिनाभिः वेदकालं प्रथमतः कः प्रतिपादयति–

(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः

(C) बालगङ्गाधरतिलकः (D) विन्टरनित्सः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42

408. मैक्समूलर के अनुसार वेद का समय है।

(A) 300 वि० पू० (B) 500 वि० पू०

(C) 100 वि० पू० (D) 1200 वि० पू०

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *

Sanskritganga Official

New App Download from Google Play Store

400. (A) 401. (D) 402. (A) 403. (C) 404. (B) 405. (A) 406. (B) 407. (A) 408. (D)

13 Unit

लघुसिद्धान्तकौमुदी
माहेश्वरसूत्र,प्रत्याहार एवं समास

1. माहेश्वर सूत्र, प्रत्याहार

वरदराज का सामान्य परिचय

- संस्कृतवाङ्मय की आधारशिला व्याकरण है।
- व्याकरण को वेद के छः अङ्गों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसको वेदपुरुष का मुख माना गया है- **'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'**
- पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, जयादित्य-वामन, भर्तृहरि, भट्टोजिदीक्षित, वरदराज, नागेशभट्ट आदि व्याकरणशास्त्र के प्रमुख आचार्य हैं।
- पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि व्याकरण के **'मुनित्रय'** कहे जाते हैं। उक्तं च **'मुनित्रयं नमस्कृत्य .....'।**
- व्याकरणशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ अष्टाध्यायी की रचना आचार्य पाणिनि ने की है।
- अष्टाध्यायी के सूत्रों पर कात्यायन (वररुचि) ने लगभग 5000 वार्तिकों की रचना की।
- सूत्र और वार्तिकों की व्याख्या के रूप में महर्षि पतञ्जलि ने 84 आह्निकों में भाष्य लिखा। जिसे 'व्याकरणमहाभाष्यम्' के नाम से भी जाना जाता है।
- प्रक्रिया ग्रन्थों में भट्टोजिदीक्षित की रचना 'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी' अतिप्रसिद्ध है, जिसमें पाणिनि के समस्त 4000 सूत्रों का समावेश है।
- भट्टोजिदीक्षित ने शब्दकौस्तुभ नामक बृहत्तम दार्शनिक ग्रन्थ एवं वैयाकरणसिद्धान्त के टीकात्मक ग्रन्थ 'प्रौढ़मनोरमा' आदि की भी रचना की है।
- दीक्षित जी ने अष्टाध्यायी सूत्रक्रम के आधार पर शब्दकौस्तुभ और प्रक्रियानुसार सिद्धान्तकौमुदी की रचना की है।
- आचार्य वरदराज दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे।
- इनके पिता का नाम दुर्गातनय तथा गुरु का नाम महामहोपाध्याय भट्टोजिदीक्षित था।
- वरदराज जी का समय लगभग 17वीं शताब्दी माना जाता है।
- वरदराज आचार्य ने सिद्धान्तकौमुदी (भट्टोजिदीक्षित) को सरल बनाने के लिए **लघुसिद्धान्तकौमुदी** और **मध्यसिद्धान्तकौमुदी** दो बालोपयोगी व्याकरण के ग्रन्थ लिखे हैं।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी में 1277 सूत्र हैं तथा मध्यसिद्धान्तकौमुदी में 2315 सूत्र हैं।
- वरदाचार्य ने चान्द्रव्याकरण आदि से प्रभावित होकर **'सारसिद्धान्तकौमुदी'** की रचना की।
- सारसिद्धान्तकौमुदी में 750 पाणिनीय सूत्रों का समावेश किया है।
- वरदराज आचार्य ने 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' में नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण किया है-

  'नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम् ।
  पाणिनीयप्रवेशाय लघुसिद्धान्तकौमुदीम् ॥'

  मैं (वरदराज) शुद्ध और उत्तम गुणों से युक्त सरस्वती देवी को प्रणाम करके पाणिनी-मुनि-विरचित व्याकरणशास्त्र में विद्यार्थियों के प्रवेश के लिए 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' ग्रन्थ को बनाता हूँ।
- लघुसिद्धान्त में वर्णित विषयों का क्रम निम्नलिखित है - (1) सञ्ज्ञाप्रकरण (2) सन्धि (3) सुबन्त (4) अव्यय (5) तिङन्त (6) प्रक्रिया (7) कृदन्त (8) कारक (9) समास (10) तद्धित (11) स्त्री-प्रत्यय।

➢ महर्षि पाणिनि ने संस्कृत का व्याकरण बनाने की इच्छा से घोर तप करके भगवान् महेश्वर (शिव) को प्रसन्न किया। प्रसन्न होकर शिव ने नृत्य के साथ जो डमरु वादन किया उसी से महर्षि पाणिनि को ये 14 सूत्र सुनायी पड़े। भगवान् महेश्वर के डमरु से उत्पन्न होने के कारण इन्हें **''माहेश्वर सूत्र''** कहा जाता है।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

नटराज भगवान् शिव ने नृत्य के अवसान में सनकादि सिद्धों के उद्धार की कामना से चौदह बार डमरु बजाया जिसमें 14 शिवसूत्रों का ताना बाना निहित था।

➢ अइउण्, ऋऌक् आदि ये चौदह सूत्र हैं इसलिए इन्हें **''चतुर्दशसूत्र''** कहते हैं।

➢ इन्हीं सूत्रों से प्रत्याहार बनाये जाते हैं, अतः इन्हें **''प्रत्याहारसूत्र''** भी कहते हैं।

➢ भगवान् शिव के डमरु से निकलकर पाणिनि को प्राप्त हुए हैं, अतः इन्हें **''शिवसूत्र''** या **''माहेश्वरसूत्र''** भी कहते हैं।

➢ इन सूत्रों में संस्कृत वर्णमाला है अतः इन्हें **''वर्णसमाम्नायसूत्र''** भी कहते हैं।

चतुर्दश माहेश्वर सूत्र			
1. अइउण्	**2. ऋऌक्**	**3. एओङ्**	**4. ऐऔच्**
5. हयवरट्	**6. लण्**	**7. ञमङणनम्**	
8. झभञ्	**9. घढधष्**	**10. जबगडदश्**	
11. खफछठथचटतव्		**12. कपय्**	
13. शषसर्		**14. हल्**	

माहेश्वरसूत्रों के विषय में ज्ञातव्य तथ्य–

➢ माहेश्वरसूत्रों में सबसे पहिले स्वर हैं; उसके बाद अन्तःस्थ वर्ण य् व् र् ल् हैं। उसके बाद वर्गों के पञ्चम वर्ण, फिर चतुर्थ वर्ण, तदनन्तर तृतीयवर्ण फिर द्वितीय वर्ण तब प्रथमवर्ण, सबसे अन्त में श् ष् स् ह् ये चार ऊष्म वर्ण गिने गये हैं।

➢ इन चतुर्दशसूत्रों के अन्त में जो ण् क् ङ् च् आदि व्यञ्जन वर्ण हलन्त हैं उनका नाम 'इत्' है। **''एषाम् अन्त्याः इतः''**

➢ इन इत्संज्ञक वर्णों का लोप हो जाता है। कुल 14 इत्संज्ञक वर्ण होते हैं। 'लण्' सूत्र का अकार भी इत्संज्ञक होने से इत्संज्ञक वर्ण 15 भी कहे जा सकते हैं। **''लण्मध्ये तु इत्संज्ञकः''** इत् को 'अनुबन्ध' भी कहा जाता है। अर्थात् 'अनुबन्ध' और 'इत्' पर्यायवाची हैं।

➢ प्रत्याहार बनाने में इत्संज्ञकवर्णों का प्रयोग किया जाता है किन्तु प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों को नही गिना जाता है।

जैसे- **'अच्' प्रत्याहार** ''अइउण् ऋऌक् एओङ् ऐऔच्'' इन चार सूत्रों से बना है। यहाँ अइउण् के 'अ' से लेकर ऐऔच् के 'च्' के बीच आने वाले सभी वर्ण ''अच्'' प्रत्याहार में गिने जायेंगे किन्तु ''ण् क् ङ् और च्'' ये चार इत्संज्ञक वर्ण 'अच्' प्रत्याहार में नही गिने जायेंगे।

अतः 'अच्' के अन्तर्गत- ''अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ'' ये 9 वर्ण आते हैं। जिसमें इत्संज्ञक वर्ण नहीं गिने गये हैं।

➢ माहेश्वरसूत्रों के पाँचवे सूत्र 'हयवरट्' में 'ह' वर्ण गिना गया है तथा चौदहवें सूत्र 'हल्' में भी 'ह' वर्ण गिना गया है। अतः माहेश्वर सूत्रों में हकार की दो बार गणना की गयी है।

➢ माहेश्वरसूत्रों में हकार का दो बार ग्रहण क्यों? 'अट्' और 'शल्' प्रत्याहार में 'ह' वर्ण को शामिल करने के लिए तथा 'अर्हेण' और 'अधुक्षत' आदि प्रयोगों की सिद्धि के लिए।

➢ माहेश्वर सूत्रों में 'ण्' इत्संज्ञक वर्ण दो बार आया है- एक बार अइउण् में दूसरी बार लण् में।

इत्संज्ञा करने वाला सूत्र-

➢ **हलन्त्यम् -** (1.3.3) उपदेशावस्था में जो अन्तिम हल् होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है।

इत्संज्ञक वर्णों का लोप करने वाला सूत्र-

तस्य लोपः - जिस वर्ण की इत्संज्ञा होती है, उसका लोप हो जाता है। इसीलिए 'अइउण्' में जो 'ण्' है ऋऌक् में जो 'क्' है इनकी ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होकर ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप हो जाता है। अतएव प्रत्याहार वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों की गिनती नहीं की जाती।

उपदेश क्या है- ''उपदेश आद्योच्चारणम्''

पाणिनि कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण या प्रथम पाठ किया, उसे व्याकरणशास्त्र में 'उपदेश' कहा जाता है। यहाँ 'अइउण् ऋऌक् आदि चौदह सूत्रों को महर्षि पाणिनि ने महेश्वर के डमरू की ध्वनि को प्रथम बार उच्चारण किया अतः ये 14 सूत्र भी 'उपदेश' कहलाये।

- भू आदि धातु, अइउण् आदि सूत्र, उणादि सूत्र, वार्तिक, लिङ्गानुशासन, आगम, प्रत्यय, और आदेश, ये उपदेश माने जाते हैं। कहा भी गया है-

धातु-सूत्र-गणोणादि-वाक्यलिङ्गानुशासनम्।
आगम-प्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥

प्रत्याहार संज्ञा

- **प्रति + आङ् + हृ + घञ् = प्रत्याहारः**
- 'प्रत्याहार' शब्द का अर्थ है- संक्षेपीकरण।
- ''प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः''
- जिनकी सहायता से कम से कम शब्दों में अधिकतम बात कही जा सके, उन्हें प्रत्याहार कहते हैं।

प्रत्याहार संज्ञा विधायक सूत्र- ''आदिरन्त्येन सहेता''

अन्त्य इत् वर्ण के साथ जो आदि वर्ण वह मध्यगामी सभी वर्णों का बोधक होता हुआ स्वयं का भी बोध कराता है। जैसे- अण् प्रत्याहार 'अइउण्' सूत्र के 'अ' से लेकर इत्संज्ञक वर्ण 'ण्' से मिलकर बना है जिसमें अ इ उ ये तीन वर्ण आते हैं।

- इसीप्रकार 'इक्' प्रत्याहार अइउण्, ऋऌक् इन दो सूत्रों से बना है। यहाँ इ से लेकर क् के बीच के सभी वर्ण इ उ ऋ ऌ इक् प्रत्याहार में गिने जाते हैं।

प्रत्याहारों की संख्या- संस्कृत व्याकरण में कुल **42 प्रत्याहार** हैं। कुछ विद्वान् 'रँ' और 'ञम्' प्रत्याहार भी मानते हैं अतः इनके अनुसार प्रत्याहार 43 अथवा 44 हो जाते हैं।

प्रत्याहारों के विषय में कुछ विशेष जानकारी

- 'अच्' प्रत्याहार में समस्त 9 स्वरवर्ण आते हैं, ये अइउण् से ऐऔच् तक के चार सूत्रों से बना है। इसीलिए स्वरों को ''**अच्**'' भी कहा जाता है।
- 'हल्' प्रत्याहार में समस्त 33 व्यञ्जन वर्ण आते हैं, जो हयवरट् से लेकर हल् तक के 10 सूत्रों से बना है। इसीलिए व्यञ्जनों को ''**हल्**'' भी कहा जाता है।
- 'झष्' प्रत्याहार में वर्गों के चौथे वर्ण (झ् भ् घ् ढ् ध्) आते हैं जो झभञ् और घढधष् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'जश्' प्रत्याहार में वर्गों के तीसरे वर्ण (ज् ब् ग् ड् द्) आते हैं, जो 'जबगडदश्' सूत्र से बना है।
- 'चय्' प्रत्याहार में वर्गों के प्रथम वर्ण (च् ट् त् क् प्) आते हैं।
- 'शल्' प्रत्याहार में चारों ऊष्मवर्ण (श् ष् स् ह्) आते हैं। जो शषसर् और हल् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'यण्' प्रत्याहार में चारों अन्तःस्थ वर्ण (य् व् र् ल्) आते हैं। जो हयवरट् और लण् इन दो सूत्रों से बना है।
- अइउण् ऋऌक् एओङ् ऐऔच् आदि 14 सूत्रों के अन्त में जो ण् क् ङ् च् आदि हल् वर्ण लगे हुए हैं; इनका प्रयोजन प्रत्याहार बनाना है। जैसा कि कहा गया है, ''**णादयोऽणाद्यर्थाः--**''

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *
Sanskritganga Official
New App Download from Google Play Store

माहेश्वर सूत्रों के इत्संज्ञक वर्णों से मिलकर बनने वाले 42 प्रत्याहार

सूत्र	इत्संज्ञकवर्ण	प्रत्याहार	प्रत्याहारों की संख्या
1. अइउण्	इसके 'ण्' से एक प्रत्याहार	अण्	1
2. ऋऌक्	इसके 'क्' से तीन प्रत्याहार	अक् इक् उक्	3
3. एओङ्	इसके 'ङ्' से एक प्रत्याहार	एङ्	1
4. ऐऔच्	इसके 'च्' से चार प्रत्याहार	अच् इच् एच् ऐच्	4
5. हयवरट्	इसके 'ट्' से एक प्रत्याहार	अट्	1
6. लण्	इसके 'ण्' से तीन प्रत्याहार	अण् इण् यण्	3
7. ञमङणनम्	इसके 'म्' से तीन प्रत्याहार	अम् यम् ङम्	3
8. झभञ्	इसके 'ञ्' से एक प्रत्याहार	यञ्	1
9. घढधष्	इसके 'ष्' से दो प्रत्याहार	भष् झष्	2
10. जबगडदश्	इसके 'श्' से छह प्रत्याहार	अश् हश् वश् जश् झश् बश्	6
11. खफछठथचटतव्	इसके 'व्' से एक प्रत्याहार	छव्	1
12. कपय्	इसके 'य्' से पाँच प्रत्याहार	यय् मय् झय् खय् चय्	5
13. शषसर्	इसके 'र्' से पाँच प्रत्याहार	यर् झर् खर् चर् शर्	5
14. हल्	इसके 'ल्' से छह प्रत्याहार	अल् हल् वल् रल् झल् शल्	6
		कुल-42	

संस्कृतव्याकरण के 42 प्रत्याहार

क्र.	प्रत्याहार:	वर्णा:	कुलवर्णा:	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
01.	**अण्**	अ, इ, उ	03 वर्ण	**उरण्** रपरः (1.1.51)
02.	**अक्**	अ, इ, उ,ऋ, ऌ	05 वर्ण	**अकः** सवर्णे दीर्घः (6.1.101)
03.	**अच्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ (सम्पूर्ण स्वरवर्ण)	09 वर्ण	**अचो**ऽन्त्यादि टि (1.1.64)
04.	**अट्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र	13 वर्ण	शश्छोऽ**टि** (8.4.63)
05.	**अण्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	14 वर्ण	**अणु**दित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः (1.1.69)
06.	**अम्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	19 वर्ण	पुमः खय्**म्**परे (8.3.6)
07.	**अश्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	29 वर्ण	"भो भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि" (8.3.17)

क्र.	प्रत्याहार:	वर्णा:	कुलवर्णा:	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
08.	अल्	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स (ह) (सम्पूर्ण वर्णमाला)	42 वर्ण	**अलो**ऽन्त्यात्पूर्व उपधा (1.1.65)
09.	इक्	इ,उ,ऋ,ऌ	04 वर्ण	**इको** गुणवृद्धी (1.1.3)
10.	इच्	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ	08 वर्ण	**इच** एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च (6.3.68)
11.	इण्	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	13 वर्ण	**इण**कोः (8.3.57)
12.	उक्	उ,ऋ,ऌ	03 वर्ण	**उगि**तश्च (4.1.6)
13.	एङ्	ए,ओ (गुणसंज्ञकवर्ण)	02 वर्ण	**एङि** पररूपम् (6.1.94)
14.	एच्	ए,ओ,ऐ,औ	04 वर्ण	**एचो**ऽयवायावः (6.1.78)
15.	ऐच्	ऐ,औ (वृद्धिसंज्ञकवर्ण)	02 वर्ण	वृद्धिरा**दैच्** (1.1.1)
16.	हश्	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	20 वर्ण	**हशि** च (6.1.114)
17.	हल्	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क, प,श,ष,स, (ह) (सम्पूर्ण व्यञ्जनवर्ण)	33 वर्ण	**हलो**ऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)
18.	यण्	य,व,र,ल, (अन्तःस्थवर्ण)	04 वर्ण	इको **यण**चि (6.1.77)
19.	यम्	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	09 वर्ण	हलो **यमां** यमि लोपः (8.4.64)
20.	यञ्	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ	11 वर्ण	अतो दीर्घो **यञि** (7.3.101)
21.	यय्	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	29 वर्ण	अनुस्वारस्य **ययि** परसवर्णः (8.4.58)
22.	यर्	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स	32 वर्ण	**यरो**ऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)
23.	वश्	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	18 वर्ण	नेड् **वशि** कृति (7.2.8)
24.	वल्	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ, ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	32 वर्ण	लोपो व्यो**र्वलि** (6.1.66)

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
25.	**रल्**	र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	31 वर्ण	"**रलो** व्युपधाद्धलादेः सँश्च" (1.2.26)
26.	**मय्**	म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ,ध, ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प	24 वर्ण	**मय** उञो वो वा (8.3.33)
27.	**ङम्**	ङ,ण,न	03 वर्ण	**ङमो** ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् (8.3.32)
28.	**झष्**	झ,भ,घ,ढ,ध (वर्गों के चतुर्थ वर्ण)	05 वर्ण	एकाचो बशो भष् (8.2.37) **झष**न्तस्य स्ध्वोः
29.	**झश्**	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	10 वर्ण	झलां जश् **झशि** (8.4.53)
30.	**झय्**	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	20 वर्ण	**झयो** होऽन्यतरस्याम् (8.4.62)
31.	**झर्**	झ,भ,ध,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क, प,श,ष,स,	23 वर्ण	**झरो** झरि सवर्णे (8.4.65)
32.	**झल्**	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड, द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क,प,श,ष,स,ह	24 वर्ण	**झलो** झलि (8.2.26)
33.	**भष्**	भ,घ,ढ,ध	04 वर्ण	एकाचो बशो **भष्** झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
34.	**जश्**	ज,ब,ग,ड,द (वर्गों के तृतीय अक्षर)	05 वर्ण	झलां **जशो**ऽन्ते (8.2.39)
35.	**बश्**	ब,ग,ड,द	04 वर्ण	एकाचो **बशो** भष् झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
36.	**खय्**	ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प (वर्गो के द्वितीय एवं प्रथम वर्ण)	10 वर्ण	पुमः **खय्य**म्परे (8.3.6)
37.	**खर्**	ख,फ,छ,ठ,थ,च, ट,त,क,प,श,ष,स	13 वर्ण	**खरि** च (8.4.54)
38.	**छव्**	छ,ठ,थ,च,ट,त	06 वर्ण	नश्**छव्य**प्रशान् (8.3.7)
39.	**चय्**	च,ट,त,क,प (वर्गों के प्रथम अक्षर)	05 वर्ण	**चयोः द्वितीयाः शरि** (8.4.47) पौष्करशादेः वार्त्तिक-
40.	**चर्**	च,ट,त,क,प,श,ष,स	08 वर्ण	अभ्यासे **चर्च** (8.4.54)
41.	**शर्**	श,ष,स	03 वर्ण	वा **शरि** (8.3.36)
42.	**शल्**	श,ष,स,ह (ऊष्मवर्ण)	04 वर्ण	"**शल** इगुपधादनिटः क्सः" (3.1.45)
■	**रँ**	र,ल	02 वर्ण	उरण् **रप**रः (1.1.51)
■	**ञम्**	ञ,म,ङ,ण,न (वर्गों के पञ्चमवर्ण)	05 वर्ण	**ञमन्ताड्डः** (उणादि.1.114)

वर्णों का आभ्यन्तर एवं बाह्य प्रयत्न

प्रयत्न- वर्णों के उच्चारण करने की चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न दो प्रकार का होता है-

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न (ii) बाह्य प्रयत्न

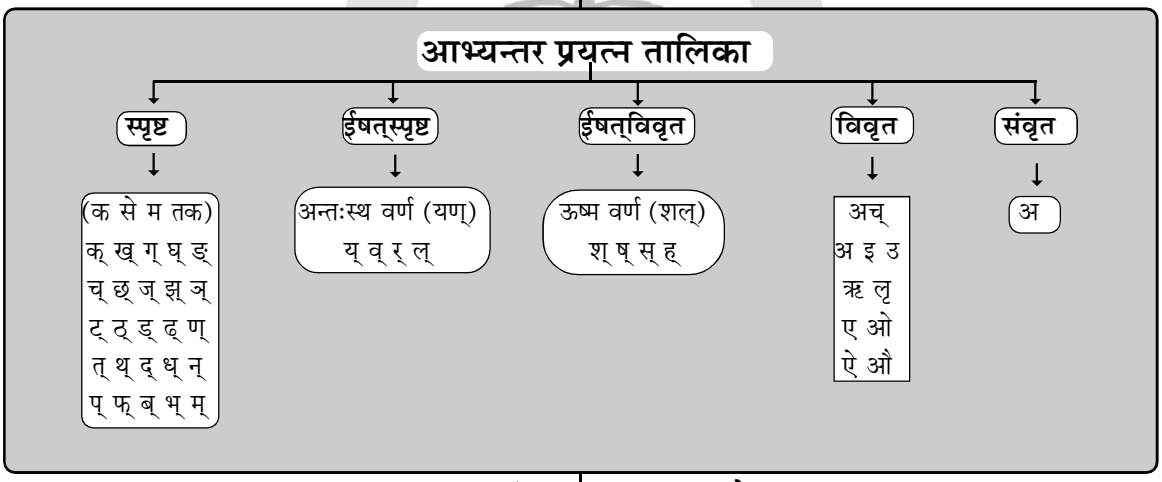
''यत्नो द्विधा आभ्यन्तरो बाह्यश्च''

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न- 'आभ्यन्तर' का अर्थ है भीतर/आभ्यन्तर प्रयत्न से तात्पर्य उस चेष्टा से है, जो वर्णों के उच्चारण के पूर्व मुख के अन्दर होती है।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है-

1. **स्पृष्ट-** इस आभ्यन्तर प्रयत्न में जिह्वा-कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती है, इसलिए इन्हें **'स्पर्श वर्ण'** कहते हैं। इसमें क से म तक के **25 वर्ण** आते हैं। **''स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्''**
2. **ईषत् स्पृष्ट-** ईषत् का अर्थ है- थोडा स्पृष्ट का अर्थ है- छुआ गया।
   इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थान को थोडा स्पर्श करती है। इसमें य् व् र् ल् (यण्) अन्तःस्थ वर्ण आते हैं। **''ईषत्स्पृष्टम् अन्तःस्थानाम्''**
3. **विवृत-** विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इनके उच्चारण में मुँह खोलना पड़ता है। यह प्रयत्न स्वरों का है। **''विवृतं स्वराणाम्''**
   जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ए ओ ऐ औ सभी स्वर विवृत हैं।
4. **ईषत् विवृत-** ईषत् का अर्थ है- थोड़ा, विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इसमें जिह्वा को कम उठाना पड़ता है। शल् अर्थात् श् ष् स् ह इन चार ऊष्म वर्णों का प्रयत्न ईषत्विवृत होता है।
   ''ईषत्विवृतम् ऊष्मणाम्''
5. **संवृत-** संवृत का अर्थ है- ढका हुआ या बन्द। इसमें वायु का मार्ग बन्द रहता है। प्रयोग करने अर्थात् उच्चारणावस्था में ह्रस्व 'अ' का प्रयत्न संवृत होता है।
   ''ह्रस्वस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतम्''
   किन्तु शास्त्रीय (साधनिका या प्रयोगसिद्धि) अवस्था में 'अ का प्रयत्न अन्य स्वरों की भाँति विवृत ही होता है-
   ''प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव''

आभ्यन्तर प्रयत्न तालिका



बाह्य प्रयत्न- मुख से जब वर्ण बाहर निकलने लगते हैं उस समय उच्चारण की जो चेष्टा होती है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार का होता है- **''बाह्यप्रयत्नस्तु एकादशधा''**
1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष 7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित।

विवार श्वास अघोष- खर् प्रत्याहार (ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स्) के अन्तर्गत आने वाले वर्णों का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास और अघोष होगा। **''खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च''**

विवार श्वास अघोष

खर्
ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प्
श् ष् स्

संवार नाद घोष- हश् प्रत्याहार (ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्) के अन्तर्गत आने वाले सभी व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न संवार नाद घोष होगा। -
''हशः संवारा नादा घोषाश्च'' इसे संक्षेप में ''संनाघो हशः'' भी कह सकते हैं।

संवार नाद घोष

हश्
ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ्
घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्

अल्पप्राण- अल्प का अर्थ है- थोड़ा। 'प्राण' का अर्थ होता है- वायु। जिस वर्ण से बोलने के लिए भीतर से कम वायु फेंकना

पड़े उसे 'अल्पप्राण' कहते हैं।

➢ वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण् (य् व् र् ल्) का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

''वर्गाणां प्रथम-तृतीय-पञ्चमा यणश्च अल्पप्राणाः''

अल्पप्राण वर्ण
कवर्ग - क ग ङ
चवर्ग - च ज ञ
टवर्ग - ट ड ण
तवर्ग - त द न
पवर्ग - प ब म
यण् - य व र ल

➢ इसप्रकार 19 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

महाप्राण- महा का अर्थ है- अधिक या ज्यादा, प्राण का अर्थ हुआ-वायु। जिस वर्ण को बोलने के लिए भीतर से अधिक वायु फेंकना पड़े उसे महाप्राण कहते हैं।

➢ वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् (श् ष् स् ह) वर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

''वर्गाणां द्वितीय-चतुर्थौ शलश्च-महाप्राणाः''

महाप्राण वर्ण
कवर्ग - ख घ
चवर्ग - छ झ
टवर्ग - ठ ढ
तवर्ग - थ ध
पवर्ग - फ भ
शल् - श ष स ह

इस प्रकार कुल 14 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

ध्यान दें- किसी भी वर्ण का चार बाह्यप्रयत्न होगा। यदि वर्ण हश् प्रत्याहार का हैं तो संवार नाद घोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा और यदि वर्ण खर् प्रत्याहार का है तो विवार श्वास अघोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा। जैसे-

ह- संवार नाद घोष महाप्राण **ख-** विवार श्वास अघोष महाप्राण
य- संवार नाद घोष अल्पप्राण **क-** विवार श्वास अघोष अल्पप्राण

उदात्त- उच्चैरुदात्तः (1.2.29) मुख के भीतर जो कण्ठ तालु आदि उच्चारण स्थान हैं उनमें ऊर्ध्व भाग से बोले जाने वाले अच् (स्वर) की उदात्त संज्ञा होगी।

अनुदात्त- नीचैरनुदात्तः (1.2.30) कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थानों के निम्न (अधोभाग) भाग से उच्चरित अच् (स्वर) की अनुदात्त संज्ञा होती है।

स्वरित- समाहारः स्वरितः (1.2.31) जहाँ उदात्त और अनुदात्त दोनों का समाहार होता है, उस अच् (स्वर) की स्वरित संज्ञा होगी।

➢ उदात्त अनुदात्त और स्वरित प्रयत्न केवल स्वरों के होते हैं।

➢ उदात्त अनुदात्त और स्वरित को समझने के लिए वैदिकग्रन्थों में विशेष चिह्नों का प्रयोग किया गया है-

➢ अनुदात्त अक्षर के नीचे पड़ी लाइन, स्वरित के ऊपर खड़ी लाइन होती है जबकि उदात्त के लिए कोई चिह्न नहीं होता।

जैसे- **स नः पि॒तेव॑ सू॒नवे, अग्ने॑ सूपाय॒नो भ॑व।**
(ऋग्वेद 1.1.9)

बाह्यप्रयत्न तालिका

विवार श्वास अघोष	संवार नाद घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
खर् क ख च छ ट ठ त थ प फ श ष स	**हश्** ग घ ङ ज झ ञ ड ढ ण द ध न ब भ म ह य व र ल	**वर्गों के प्रथम तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण्** क ग ङ च ज ञ ट ड ण त द न प ब म य व र ल	**वर्गों के द्वितीय चतुर्थ वर्ण और शल्** ख घ छ झ ठ ढ थ ध फ भ श ष स ह	अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ

अभ्यास प्रश्न (माहेश्वर सूत्र, प्रत्याहार)

1. प्रत्याहार विधायक सूत्र है–
(A) आदिरन्त्येन सहेता (B) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
(C) कादयो मावसानाः (D) हलोऽनन्तराः संयोगः
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.70) - ईश्वरचन्द्र, पेज–52

2. वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् वर्णों की संज्ञा होती है?
(A) अल्पप्राण (B) महाप्राण
(C) घोष (D) अघोष
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17

3. 'वर्गाणां प्रथम-तृतीय-पञ्चमाः यणश्चाल्पप्राणाः' इत्यत्र 'च'–कारः कस्य बोधकः –
(A) 'हश्'-प्रत्याहारस्य (B) 'शल्'-प्रत्याहारस्य
(C) 'खर्'-प्रत्याहारस्य (D) अचाम्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-1)- पेज–25

4. माहेश्वर सूत्रों में 'ह' व्यञ्जन कितनी बार प्रयुक्त हुआ है–
(A) 15 (B) 2
(C) 14 (D) 8
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13

5. संस्कृत व्याकरण में ऊष्म वर्ण हैं–
(A) य् व् र् ल् (B) श् ष् स् ह्
(C) अ इ उ ऋ (D) ए ऐ ओ औ
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17

6. माहेश्वर सूत्रों की संख्या है ?
(A) दश (B) चतुर्दश
(C) पञ्चदश (D) चत्वारि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13

7. 'अच्' प्रत्याहारे कति वर्णाः सन्ति ?
(A) चत्वारः (B) त्रयोदश
(C) दश (D) नव
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–17

8. 'अ इ उ ण्' इति कीदृशं सूत्रम्–
(A) परिभाषा (B) संज्ञा
(C) अधिकारः (D) नियमः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13

9. 'शिवसूत्रजाल' किसको कहते हैं?
(A) माहेश्वरसूत्रों को (B) वार्तिकसूत्रों को
(C) अष्टाध्यायी के सूत्रों को (D) उणादिसूत्रों को
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13

10. महर्षि पाणिनि ने संस्कृत की वर्णमाला को विभाजित किया है–
(A) 12 खण्डों में (B) 14 खण्डों में
(C) 16 खण्डों में (D) 18 खण्डों में
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13

11. शम्भु के मतानुसार संस्कृत वर्णों की संख्या है–
(A) 48 (B) 42
(C) 64 (D) 47
स्रोत–पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-3) शिवराजाचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–58

12. माहेश्वरसूत्राणां पारम्परिकं नामास्ति प्रशस्यतरम्–
(A) वर्णभेदः (B) वर्णसंस्कारः
(C) वर्णतन्त्रम् (D) वर्णवेदः
स्रोत–लघुशब्देन्दुशेखर - वैकुण्ठनाथशास्त्री, पेज–12

13. अक् प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन-कौन से वर्ण आते हैं?
(A) अ, इ, उ, ऋ, ऌ (B) अ, इ, उ
(C) ऋ, ऌ (D) सभी स्वर
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–15

14. 'ɸप' तथा 'ɸफ' को कहा जाता है–
(A) प् तथा फ् (B) जिह्वामूलीय
(C) उपध्मानीय (D) यम वर्ण
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–18

1. (A) 2. (B) 3. (D) 4. (B) 5. (B) 6. (B) 7. (D) 8. (B) 9. (A) 10. (A)
11. (B) 12. (D) 13. (A) 14. (C)

15. वर्णमाला किसे कहेंगे?

(A) शब्द समूह को

(B) वर्णों के संकलन को

(C) शब्द गणना को

(D) वर्णों के व्यवस्थित समूह को

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13

16. पाणिनीय शिक्षा में ध्वनियों को वर्गीकृत करने के कौन-से पाँच आधार स्वीकार किये गए हैं?

(A) स्वर, काल, स्थान, संवाद, नाद

(B) स्वर, स्थान, काल, प्राण, सुर

(C) काल, प्रयत्न, स्थान, प्राण, अनुदात्त

(D) स्वर, काल, स्थान, प्रयत्न, अनुप्रदान

स्रोत–पाणिनीयशिक्षा - दामोदर महतो, पेज–16

17. 'स्वर' के प्रकार हैं–

(A) ह्रस्व (B) दीर्घ

(C) प्लुत (D) उपर्युक्त तीनों

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.27) - ईश्वरचन्द्र, पेज–65

18. चतुर्दश माहेश्वरसूत्रों में किस-किस वर्ण की दो बार आवृत्ति हुई है?

(A) लकार व हकार की (B) रकार व लकार की

(C) णकार व हकार की (D) ककार व हकार की

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13

19. माहेश्वरसूत्रेषु हकारादिषु अकारः किमर्थः?

(A) इत्-संज्ञार्थः (B) उच्चारणार्थः

(C) व्यर्थः (D) हल्प्रत्याहारे ग्रहणार्थः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–14

20. 'यण्' प्रत्याहार में होगा–

(A) य्, क्, व्, ल् (B) ष्, अ, र्, ल्

(C) य्, व्, र्, ल् (D) य्, र्, ल्, ष्

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

21. 'चर्' प्रत्याहार में निम्नलिखित वर्ण आते हैं–

(A) च्, ट्, त्, क्, प्

(B) च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्

(C) श्, ष्, स्

(D) श्, ष्, स्, ह्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

22. अधोलिखित में कौन वर्ण 'झष्' प्रत्याहार में आता है–

(A) ख् (B) ज्

(C) ठ् (D) ध्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

23. 'अक्' क्या है–

(A) प्रत्याहार (B) उपसर्ग

(C) वार्तिक (D) प्रत्यय

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

24. लकारस्य कस्मिन् प्रत्याहारे ग्रहणं सम्भवति?

(A) अण् (B) अच्

(C) झल् (D) शल्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

25. प्रत्याहारे केषां ग्रहणं नेष्यते–

(A) अचाम् (B) अलाम्

(C) इताम् (D) आदिवर्णानाम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

26. 'अट्' प्रत्याहारे हकारग्रहणस्य किं प्रयोजनम्?

(A) दवो हसतीत्यत्र उत्वम् (B) अर्हेण इत्यत्र णत्वम्

(C) अभवदित्यत्र अडागमः (D) उच्चारणार्थः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-1), पेज–585

27. 'हल्' क्या है?

(A) प्रत्याहार (B) प्रत्यय

(C) उपसर्ग (D) वार्तिक

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–11

15. (D) 16. (D) 17. (D) 18. (C) 19. (B) 20. (C) 21. (B) 22. (D) 23. (A) 24. (A) **25.** (C) **26. (B) 27. (A)**

28. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रत्याहार सर्वाधिक वर्णों को परिगणित करता है?

(A) अच् (B) यर्

(C) अश् (D) जश्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

29. वर्गों के तीसरे वर्ण किस प्रत्याहार में आते हैं?

(A) हश् (B) जश्

(C) शल् (D) झष्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

30. किस प्रत्याहार में सभी स्वर आते हैं?

(A) अल् (B) अच्

(C) अट् (D) अम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–9

31. 'उक्' प्रत्याहारे कति वर्णाः सन्ति–

(A) य् व् र् ल् (B) ए ओ ऐ औ

(C) श् ष् स् र् (D) उ ऋ ऌ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–9

32. 'जश्' प्रत्याहारे कस्य ग्रहणं सम्भवति–

(A) यकारस्य (B) अकारस्य

(C) मकारस्य (D) गकारस्य

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

33. 'र'–प्रत्याहारे कस्य वर्णस्य संग्रहः?

(A) हकारस्य (B) लकारस्य

(C) वकारस्य (D) यकारस्य

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-एक)-गोपालदत्त पाण्डेय,पेज–11

34. 'हल् प्रत्याहार' में कितने वर्ण होते हैं?

(A) 33 (B) 34

(C) 35 (D) 36

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–11

35. 'र' प्रत्याहारः केन स्वीकृतः–

(A) दीक्षितेन (B) नागेशेन

(C) कैय्यटेन (D) वरदराजेन

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-एक)-गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–15

36. प्रत्याहारसूत्रेषु नवमं सूत्रमस्ति–

(A) हयवरट् (B) कपय्

(C) झभञ् (D) घढधष्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13

37. माहेश्वरसूत्राणामुपयोगिता किमर्थम्?

(A) सन्धिज्ञानाय (B) वर्णज्ञानाय

(C) प्रत्याहारसिद्ध्यै (D) व्याकरणज्ञानाय

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज–2

38. यञ्-प्रत्याहारे कः नास्ति?

(A) म (B) भ

(C) ढ (D) व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10

संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम्

UP. TGT, PGT (संस्कृत) के छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तक में हर प्रश्न का महामंथन

आपके शिक्षक बनने का सपना हम करेंगे साकार

TGT प्रश्न मीमांसा

PGT प्रश्न मीमांसा

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करने के लिए हमें कॉल करें 8004545095, 8004545096

28. (B) 29. (B) 30. (B) 31. (D) 32. (D) 33. (B) 34. (A) 35. (A) 36. (D) 37. (C) 38. (C)

2. समास प्रकरण

➢ **समासः** - सम् √अस् + घञ् = समासः

➢ **'अनेकपदानाम् एकपदीभवनं समासः'** अर्थात् अनेकपदों का एकपद हो जाना 'समास' कहलाता है।

➢ **'समसनं समासः'** अर्थात् संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। 'समास' का अर्थ है- संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं; तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, और बना हुआ शब्द 'समास' कहलाता है।

विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।
पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते॥

अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है, और अनेक पद मिलकर एकपद बन जाता है, उसे 'समास' कहते हैं।

जैसे- दशरथस्य पुत्रः = **दशरथपुत्रः**

पीतम् अम्बरं यस्य सः = **पीताम्बरः**

➢ **विग्रह- ''वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः''** समासवृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता है, उसे 'विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'पीताम्बरः' इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए ''पीतम् अम्बरं यस्य सः'' यह जो वाक्य है यही विग्रह कहा जाता है।

समास विग्रह- विग्रह दो प्रकार का होता है-

(i) लौकिक विग्रह (ii) अलौकिक विग्रह

(i) लौकिक विग्रह- लोक के समझने लायक विग्रह को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'दशरथपुत्रः' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह होगा- दशरथस्य पुत्रः।

(ii) अलौकिक विग्रह- जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीय प्रक्रिया के लिए विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'दशरथ ङस् पुत्र सु' यह ''दशरथपुत्रः'' इस सामासिक पद का अलौकिक विग्रह होगा।

समस्त पद या **सामासिक पद-** समास होने पर जो शब्द बनता है, उसे 'समस्तपद' या 'सामासिक पद' कहते हैं।

जैसे- अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिकपद कहें जायेंगे।

समास के भेद

'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के लेखक वरदराज ने समास के पाँच प्रकार बताये हैं- **'समासः पञ्चधा'**। किन्तु माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तकों में **समास के छह भेद** बताये गये हैं; अतः आप सभी UP-TET के परीक्षार्थियों के लिए समास के छह भेद ही मानना चाहिए।

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं-

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

नोट- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में तत्पुरुष का भेद कर्मधारय और कर्मधारय का भेद द्विगु समास को बताते हैं अतः इनके अनुसार समास चार प्रकार का ही होता है।

1. अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव- 'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान/मुख्य हो, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है।

ध्यान दें- समास में सामान्यतया दो पद होते हैं। इनमें पहले आने वाला पद 'पूर्वपद' और उसके बाद आनेवाला पद 'उत्तरपद' होता है। 'उत्तर' पद का एक अर्थ 'बाद में' या 'बाद वाला' भी है।

जैसे-

समास	पूर्वपद	उत्तरपद
उपनदम्	उप	नदम्

विशेष ध्यान रखें- अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है, तथा नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः' अर्थात् जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर 'अव्यय' हो जाय, वही अव्ययीभाव समास है।

जैसे- शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति।

यहाँ 'शक्ति' शब्द अव्यय नहीं है किन्तु 'यथा' इस अव्यय के साथ समास होने के कारण 'यथाशक्ति' यह पूरा पद अव्यय हो गया; और नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त है।

अव्ययीभाव समास करने वाला सूत्र-

''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु'' (2.1.6)

सूत्र का अर्थ- विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि (वृद्धि का अभाव), अर्थाभाव, अत्यय (नष्ट होना), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्दप्रादुर्भाव (शब्द और सादृश्य), पश्चात्, यथा, आनुपूर्व्य (क्रमशः), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समान), सम्पत्ति, साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) अर्थों में विद्यमान अव्यय का समर्थ सुबन्त पदों के साथ नित्य से समास होता है।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण-

1. **'विभक्ति'** के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त (पद) के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थ सहित)
हरौ इति	=	**अधिहरि** (हरि में)
आत्मनि इति	=	**अध्यात्मम्** (आत्मा में)
गोपि इति	=	**अधिगोपम्** (गोप में)
यहाँ 'अधि' अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ में है।		

2. **'समीप'** अर्थ में विद्यमान 'उप' आदि अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
गङ्गायाः समीपम्	=	**उपगङ्गम्** (गङ्गा नदी के समीप)
नगरस्य समीपम्	=	**उपनगरम्** (नगर के समीप)
कृष्णस्य समीपम्	=	**उपकृष्णम्** (कृष्ण के समीप)
कूलस्य समीपम्	=	**उपकूलम्** (किनारे के समीप)
तटस्य समीपम्	=	**उपतटम्** (तट के समीप)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'उप' यह अव्यय समीप अर्थ में है। जिसका गङ्गा आदि समर्थ सुबन्त पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। समास होने के बाद उपगङ्गम्, उपनगरम् आदि पूरा पद अव्यय हो जाता है।

3. **'समृद्धि'** के अर्थ में अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थसहित)
मद्राणां समृद्धिः	=	**सुमद्रम्** (मद्रदेशवासियों की समृद्धि)
भिक्षाणां समृद्धिः	=	**सुभिक्षम्** (भिक्षाटन की समृद्धि)

4. **व्यृद्धि** (दुर्गति या वृद्धि का अभाव) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

यवनानां व्यृद्धिः	=	**दुर्यवनम्** (यवनों की दुर्गति)
भिक्षाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्भिक्षम्** (भिक्षा का न मिलना)
शकानां व्यृद्धिः	=	**दुःशकम्** (शकों की दुर्गति)
राक्षसाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्राक्षसम्** (राक्षसों की अवनति)

5. **'अर्थाभाव'** के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

मक्षिकाणाम् अभावः	=	**निर्मक्षिकम्** (मक्खियों का अभाव)
प्राणानाम् अभावः	=	**निष्प्राणम्** (प्राणों का अभाव)
विघ्नानाम् अभावः	=	**निर्विघ्नम्** (विघ्नों का अभाव)
मशकानाम् अभावः	=	**निर्मशकम्** (मच्छरों का अभाव)
जनानाम् अभावः	=	**निर्जनम्** (मनुष्यों का अभाव)
दोषाणाम् अभावः	=	**निर्दोषम्** (दोषों का अभाव)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'निर्' आदि अव्ययपदों का 'मक्षिका' आदि समर्थ सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। यहाँ 'निर्' अव्यय का अर्थ है- अर्थाभाव।

6. **अत्यय** (ध्वंस या नाश) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हिमस्य अत्ययः	=	**अतिहिमम्** (हिम का नाश)
रोगस्य अत्ययः	=	**अतिरोगम्** (रोग का नाश)
शीतस्य अत्ययः	=	**अतिशीतम्** (शीतलता का नाश)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' इस अव्यय पद का अर्थ है- अत्यय (नाश) अतः 'अति' इस अव्यय पद के साथ 'हिम' आदि समर्थ सुबन्तों का अव्ययीभाव समास हुआ है।

7. **असम्प्रति** (अनौचित्य) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
निद्रा सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिनिद्रम्** (इस समय नींद उचित नहीं)
स्वप्नः सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिस्वप्नम्** (इस समय स्वप्न उचित नहीं)
कम्बलं सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिकम्बलम्** (इस समय कम्बल उचित नहीं)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' यह अव्यय असम्प्रति अर्थ में है, जिसका 'निद्रा' आदि समर्थ पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

8. **शब्दप्रादुर्भाव** (शब्द का प्रकाश) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हरिशब्दस्य प्रकाशः	=	**इतिहरि** ('हरि' शब्द का प्रकट होना)

विष्णुशब्दस्य प्रकाशः = **इतिविष्णु** ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना)
पाणिनिशब्दस्य प्रकाशः = **इतिपाणिनि** ('पाणिनि' शब्द का प्रकट होना)
ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः = **इतिज्ञानम्** ('ज्ञान' शब्द का प्रकट होना)

9. 'पश्चात्' (पीछे) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

विष्णोः पश्चात् = **अनुविष्णु** (विष्णु के पीछे)
रामस्य पश्चात् = **अनुरामम्** (राम के पीछे)
रथस्य पश्चात् = **अनुरथम्** (रथ के पीछे)
शिष्यस्य पश्चात् = **अनुशिष्यम्** (शिष्य के पीछे)
गोपालस्य पश्चात् = **अनुगोपालम्** (गोपाल के पीछे)

10. 'यथा' के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। 'यथा' के चार अर्थ होते हैं-
(क) योग्यता अथवा लायक या अनुकूलता
(ख) वीप्सा अथवा दुहराया जाना
(ग) पदार्थानतिवृत्ति अथवा पदार्थों की सीमा के बाहर नहीं जाना
(घ) सादृश्य अथवा समानता

(क) योग्यता-

रूपस्य योग्यम् = **अनुरूपम्** (रूप के योग्य)
गुणस्य योग्यम् = **अनुगुणम्** (गुण के योग्य)

(ख) वीप्सा-

अक्षम् अक्षम् प्रति = **प्रत्यक्षम्** (प्रत्यक्ष)
एकम् एकं प्रति = **प्रत्येकम्** (प्रत्येक)
गृहं गृहं प्रति = **प्रतिगृहम्** (घर-घर)
दिनं दिनं प्रति = **प्रतिदिनम्** (प्रतिदिन)
अर्थम् अर्थं प्रति = **प्रत्यर्थम्** (प्रत्येक अर्थ)
जनं जनं प्रति = **प्रतिजनम्** (प्रत्येक जन)
छात्रं छात्रं प्रति = **प्रतिच्छात्रम्** (प्रत्येक छात्र)
दिशं दिशं प्रति = **प्रतिदिशम्** (प्रत्येक दिशा)

(ग) पदार्थानतिवृत्ति-

शक्तिम् अनतिक्रम्य = **यथाशक्ति** (शक्ति के अनुसार)
बलम् अनतिक्रम्य = **यथाबलम्** (बल के अनुसार)
समयम् अनतिक्रम्य = **यथासमयम्** (समय के अनुसार)
बुद्धिम् अनतिक्रम्य = **यथाबुद्धि** (बुद्धि के अनुसार)
ज्ञानम् अनतिक्रम्य = **यथाज्ञानम्** (ज्ञान के अनुसार)

(घ) सादृश्य-

हरेः सादृश्यम् = **सहरि** (हरि की समानता)
रूपस्य सादृश्यम् = **सरूपम्** (रूप की समानता)

11. आनुपूर्व्य (क्रम) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण = **अनुज्येष्ठम्** (ज्येष्ठ के क्रम से)
वर्णस्य आनुपूर्व्येण = **अनुवर्णम्** (वर्ण के क्रमानुसार)

12. यौगपद्य (साथ होना) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

चक्रेण युगपत् = **सचक्रम्** (चक्र के साथ)
हर्षेण युगपत् = **सहर्षम्** (हर्ष के साथ)

13. सादृश्य (जैसा) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव होता है। जैसे-

सदृशः सख्या = **ससखि** (मित्र के जैसा)
सदृशः वर्णेन = **सवर्णम्** (वर्ण के समान)

14. सम्पत्ति के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थसुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

क्षत्राणां सम्पत्तिः = **सक्षत्रम्** (राजाओं की सम्पत्ति)

15. साकल्य (सम्पूर्णता) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

तृणम् अपि अपरित्यज्य = **सतृणम्** (तिनके को भी छोड़े बिना सब खाता है)

16. अन्तवचन (तक) के अर्थ में अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

अग्निग्रन्थपर्यन्तम् = **साग्नि** (अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है)
बालकाण्डपर्यन्तम् = **सबालकाण्डम्** (बालकाण्ड तक)

➢ **आङ्मर्यादाभिविध्योः** अर्थात् मर्यादा और अभिविधि (तक) के अर्थ में 'आङ्' अव्यय पद का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

आ मरणात् = **आमरणम्** (मरने तक)
आ जीवनात् = **आजीवनम्** (जीवन भर)

➢ **नदीभिश्च** (2.1.20) नदी वाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है, और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे-

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = **पञ्चगङ्गम्** (पाँच गङ्गाओं का समाहार)

द्वयोः यमुनयोः समाहारः = **द्वियमुनम्**
(दो यमुनाओं का समाहार)
सप्तानां नर्मदानां समाहारः = **सप्तनर्मदम्**
उपर्युक्त उदाहरणों में 'पञ्च' आदि संख्यावाची पदों का गङ्गा आदि नदीवाचक पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

➢ **अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः (5.4.107)**
अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दों से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। 'टच्' प्रत्यय में 'ट्' और 'च्' का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष बचता है। जैसे-
शरदः समीपम् = **उपशरदम्** (शरद् के समीप)
विपाशं विपाशं प्रति = **प्रतिविपाशम्**
(विपाशा नदी के सम्मुख)

➢ **अनश्च (5.4.108)** - जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में 'अन्' होता है, वह अन्नन्त अव्ययीभाव है। उससे समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
राज्ञः समीपम् = **उपराजम्** (राजा के समीप)

➢ **नपुंसकादन्यतरस्याम् (5.4.109)** - 'अन्' अन्तवाला जो नपुंसकलिङ्ग शब्द है, उस अव्ययीभाव समास के अन्त में विकल्प से 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
चर्मणः समीपम् = **उपचर्मम्** (चर्म के समीप) 'टच्'प्रत्यय हुआ
चर्मणः समीपम् = **उपचर्म** (चर्म के समीप) 'टच्' नहीं हुआ।

2. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष- 'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः'
अर्थात् जिस समास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे- 'गङ्गाजलम् आनय'। यहाँ 'आनय' इस क्रिया पद के साथ 'जलम्' का ही साक्षात् सम्बन्ध है। अतः 'जल' इस उत्तरपद का अर्थ ही प्रधान होने के कारण यहाँ तत्पुरुषसमास है।

तत्पुरुष समास के भेद

तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद होते हैं- 1. समानाधिकरण तत्पुरुष 2. व्यधिकरण तत्पुरुष

1. समानाधिकरण तत्पुरुष- समानाधिकरण को 'समविभक्तिक' भी कह सकते हैं। इस तत्पुरुष समास के पूर्वपद एवं उत्तरपद दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष कर्मधारय समास होता है- **''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः''**

2. व्यधिकरण तत्पुरुष- जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ लगी हों, वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है। वि = विषय और 'अधिकरण' = विभक्ति वाले तत्पुरुष को व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। पूर्वपद में जो विभक्तियाँ लगी होती हैं, उनके आधार पर ही तत्पुरुष के प्रमुख भेद किये जाते हैं। जैसे यदि पूर्वपद में द्वितीया विभक्ति हो तो द्वितीया तत्पुरुष, यदि पूर्व पद में तृतीया विभक्ति लगी हो तो तृतीया तत्पुरुष आदि। इसप्रकार **व्यधिकरण तत्पुरुष के छह भेद किये गये हैं-**
1. द्वितीया तत्पुरुष 2. तृतीया तत्पुरुष 3. चतुर्थी तत्पुरुष 4. पञ्चमी तत्पुरुष 5. षष्ठी तत्पुरुष 6. सप्तमी तत्पुरुष।

तत्पुरुष समास के उपभेद

समानाधिकरण तथा व्यधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इसप्रकार हैं-
(i) नञ् तत्पुरुष समास - अनश्वः, अब्राह्मणः, अनिच्छा आदि।
(ii) प्रादि तत्पुरुष समास - कुपुरुषः, प्राचार्यः आदि।
(iii) उपपद तत्पुरुष समास - कुम्भकारः, धर्मज्ञः आदि।
(iv) अलुक् तत्पुरुष समास - युधिष्ठिरः, सरसिजम्, अभ्यासादागतः आदि।

द्वितीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में हो, ऐसे द्वितीयान्त सुबन्त पद का 'श्रित' आदि शब्दों के साथ द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।
सूत्र- ''द्वितीया श्रित-अतीत-पतित-गत-अत्यस्त-प्राप्त-आपन्नैः'' (2.1.24)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णं श्रितः	**कृष्णश्रितः** (कृष्ण का आश्रय लिया हुआ)
शरणम् आगतः	**शरणागतः** (शरण में आया हुआ)
लोकम् अतीतः	**लोकातीतः** (लोक से परे)
भयम् आपन्नः	**भयापन्नः** (भय को प्राप्त)
रामम् आश्रितः	**रामाश्रितः** (राम के आश्रित)
सुखं प्राप्तः	**सुखप्राप्तः** (सुख को प्राप्त हुआ)
अश्वम् आरूढः	**अश्वारूढः** (घोड़े पर आरूढ़)
स्वर्गं गतः	**स्वर्गगतः** (स्वर्ग को गया हुआ)
दुःखम् अतीतः	**दुःखातीतः** (दुःख को पार किया हुआ)
कूपं पतितः	**कूपपतितः** (कुयें में गिरा हुआ)
ग्रामं गतः	**ग्रामगतः** (गाँव को गया हुआ)
जीवनं प्राप्तः	**जीवनप्राप्तः** (जीवन को प्राप्त किया हुआ)
सुखम् आपन्नः	**सुखापन्नः** (सुख को पाया हुआ)

तृतीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद तृतीया विभक्ति में हो, ऐसे तृतीयान्त सुबन्त पद का तत्कृत (उसके द्वारा किये गए) गुणवाचक शब्द के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' (2.1.30)

जैसे-

शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः** (सरौते से किया गया टुकड़ा)
धान्येन अर्थः = **धान्यार्थः** (अन्न से प्रयोजन)
दानेन अर्थः = **दानार्थः** (दान से प्रयोजन)

➢ तृतीयान्त सुबन्त पदों का 'पूर्व' आदि शब्दों के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''पूर्व-सदृश-समोनार्थ-कलह-निपुण-मिश्र-श्लक्ष्णैः'' (2.1.30)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
मासेन पूर्वः	= **मासपूर्वः** (महीने से पहले)
पित्रा सदृशः	= **पितृसदृशः** (पिता के समान)
मात्रा सदृशः	= **मातृसदृशः** (माता के समान)
भ्रात्रा समः	= **भ्रातृसमः** (भाई के बराबर)
माषेण ऊनम्	= **माषोणम्** (मासा भर कम)
ज्ञानेन हीनः	= **ज्ञानहीनः** (ज्ञान से हीन)
नेत्राभ्यां हीनः	= **नेत्रहीनः** (नेत्रों से रहित)
वाचा कलहः	= **वाक्कलहः** (बातचीत से झगड़ा)
आचारेण निपुणः	= **आचारनिपुणः** (आचार में निपुण)
गुडेन मिश्रः	= **गुडमिश्रः** (गुड़ से मिला हुआ)
आचारेण श्लक्ष्णः	= **आचारश्लक्ष्णः** (आचरण में सहज)
घृतेन पक्वम्	= **घृतपक्वम्** (घी से पकाया हुआ)
पादेन खञ्जः	= **पादखञ्जः** (पैर से लँगड़ा)

➢ कर्ता और करणकारक में तृतीयान्त पद का कृदन्त के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है- **''कर्तृकरणे कृता बहुलम्''** (2.1.32)

जैसे-

हरिणा त्रातः = **हरित्रातः** (हरि के द्वारा रक्षित)
नखैः भिन्नः = **नखभिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
नखैः निर्भिन्नः = **नखनिर्भिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
धर्मेण रक्षितः = **धर्मरक्षितः** (धर्म से रक्षित)
बाणेन विद्धः = **बाणविद्धः** (बाण से घायल)

चतुर्थी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद चतुर्थी विभक्ति में हो तथा चतुर्थ्यन्त पदों का अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि पदों के साथ समास होता है। उसे चतुर्थी तत्पुरुष समास कहते हैं।

''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' (2.1.36)

जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
यूपाय दारु	= **यूपदारु** (यज्ञ के खम्भे के लिए लकड़ी)
कुम्भाय मृत्तिका	= **कुम्भमृत्तिका** (घड़े के लिए मिट्टी)
भूतेभ्यः बलिः	= **भूतबलिः** (जीव के लिए बलि)
गोभ्यः हितम्	= **गोहितम्** (गाय के लिए हितकारी)
ब्राह्मणाय हितम्	= **ब्राह्मणहितम्** (ब्राह्मण के लिए हितकर)
गोभ्यः सुखम्	= **गोसुखम्** (गाय के लिए सुखकारी)
गोभ्यः रक्षितम्	= **गोरक्षितम्** (गाय के लिए रक्षित)
धनाय कामना	= **धनकामना** (धन के लिए इच्छा)

विशेष नियम- अर्थ शब्द के साथ चतुर्थी का नित्यसमास होता है, और अर्थ शब्दान्त शब्द का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है- जैसे-

पुँल्लिङ्ग - द्विजाय अयम् = **द्विजार्थः सूपः** (ब्राह्मण के लिए दाल)
स्त्रीलिङ्ग - द्विजाय इयम् = **द्विजार्था यवागूः** (ब्राह्मण के लिए लप्सी)
नपुंसकलिङ्ग - द्विजाय इदम् = **द्विजार्थं पयः** (ब्राह्मण के लिए दूध)

धनाय इदम् = **धनार्थम्** (धन के लिए)
सुखाय इदम् = **सुखार्थम्** (सुख के लिए)
रक्षाय इदम् = **रक्षार्थम्** (रक्षा के लिए)

पञ्चमी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद पञ्चमी विभक्ति में हो, ऐसे पञ्चम्यन्त पदों का भय आदि शब्दों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है।

''पञ्चमी भयेन'' (2.1.37)

जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
चोरात् भयम्	= **चोरभयम्** (चोर से डरा हुआ)
व्याघ्रात् भयम्	= **व्याघ्रभयम्** (बाघ से डरा हुआ)
सिंहात् भीतः	= **सिंहभीतः** (सिंह से भय)
वृकात् भीतिः	= **वृकभीतिः** (भेड़िये से भय)
सर्पात् भीः	= **सर्पभीः** (सर्प से डर)

राज्ञः भयम् = **राजभयम्** (राजा से डर)

➢ पञ्चम्यन्त शब्दों का 'अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित' आदि पदों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे -

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
सुखात् अपेतः	=	**सुखापेतः** (सुख से रहित)
कल्पनायाः अपोढः	=	**कल्पनापोढः** (कल्पना से शून्य)
बन्धनात् मुक्तः	=	**बन्धनमुक्तः** (बन्धन से मुक्त)
मार्गात् भ्रष्टः	=	**मार्गभ्रष्टः** (मार्ग से भ्रष्ट हुआ)
अश्वात् पतितः	=	**अश्वपतितः** (घोड़े से गिरा हुआ)
वृक्षात् पतितः	=	**वृक्षपतितः** (वृक्ष से गिरा हुआ)
स्वर्गात् पतितः	=	**स्वर्गपतितः** (स्वर्ग से पतित)

षष्ठी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद षष्ठी विभक्ति में हो, ऐसे षष्ठ्यन्त पदों का समर्थ सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''षष्ठी'' (2.2.8)

जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
नराणां पतिः	=	**नरपतिः** (मनुष्यों का स्वामी)
विद्यायाः आलयः	=	**विद्यालयः** (विद्या का घर)
हिमस्य आलयः	=	**हिमालयः** (हिम का घर)
राज्ञः सेवकः	=	**राजसेवकः** (राजा का सेवक)
राज्ञः पुरुषः	=	**राजपुरुषः** (राजा का पुरुष)
राज्ञः कुमारः	=	**राजकुमारः** (राजा का कुमार)
राज्ञः पुत्रः	=	**राजपुत्रः** (राजा का पुत्र)
राज्ञः माता	=	**राजमाता** (राजा की माता)
दशरथस्य पुत्रः	=	**दशरथपुत्रः** (दशरथ का पुत्र)
देवस्य पूजा	=	**देवपूजा** (देव की पूजा)
रामस्य अनुजः	=	**रामानुजः** (राम का भाई)
कृष्णस्य सखा	=	**कृष्णसखः** (कृष्ण का सखा)
नन्दस्य नन्दनः	=	**नन्दनन्दनः** (नन्द का नन्दन)
ईश्वरस्य भक्तः	=	**ईश्वरभक्तः** (ईश्वर का भक्त)
गङ्गायाः जलम्	=	**गङ्गाजलम्** (गङ्गा का जल)
देवस्य मन्दिरम्	=	**देवमन्दिरम्** (देवों का मन्दिर)
राष्ट्रस्य पतिः	=	**राष्ट्रपतिः** (राष्ट्र का स्वामी)
प्रजायाः पतिः	=	**प्रजापतिः** (प्रजा का स्वामी)
सीतायाः पतिः	=	**सीतापतिः** (सीता का पति)
पशूनां पतिः	=	**पशुपतिः** (पशुओं का स्वामी)
पाठस्य शाला	=	**पाठशाला** (पठन का घर)
देवानां भाषा	=	**देवभाषा** (देवों की भाषा)
काल्याः दासः	=	**कालिदासः** (काली का दास)

सप्तमी तत्पुरुष

सूत्र - ''सप्तमी शौण्डैः''

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद सप्तमी विभक्ति में हो, ऐसे सप्तम्यन्त सुबन्तों का शौण्डादिगण में पठित शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
अक्षेषु शौण्डः	=	**अक्षशौण्डः** (पासों में चतुर)
कार्ये कुशलः	=	**कार्यकुशलः** (कार्य में कुशल)
रणे कुशलः	=	**रणकुशलः** (रण में कुशल)
मुनिषु श्रेष्ठः	=	**मुनिश्रेष्ठः** (मुनियों में श्रेष्ठ)
पुरुषेषु उत्तमः	=	**पुरुषोत्तमः** (पुरुषों में श्रेष्ठ)
गुरौ भक्तिः	=	**गुरुभक्तिः** (गुरु में भक्ति)
युद्धे निपुणः	=	**युद्धनिपुणः** (युद्ध में निपुण)
नरेषु उत्तमः	=	**नरोत्तमः** (नरों में श्रेष्ठ)
विद्यायां प्रवीणः	=	**विद्याप्रवीणः** (विद्या में कुशल)

तत्पुरुष समास के उपभेद

(i) नञ् तत्पुरुष समास

सूत्र- ''नञ्'' (2.2.6) 'नञ्' इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ नञ् तत्पुरुष समास होता है। अर्थात् जिस समास का पूर्वपद 'नञ्' हो तथा उत्तरपद कोई संज्ञा या विशेषण हो तो वहाँ नञ् समास होगा।

➢ 'नञ्' के बाद यदि व्यञ्जन वर्ण आते हैं तो 'नञ्' के स्थान पर 'अ' और यदि 'नञ्' के बाद स्वरवर्ण आये तो 'नञ्' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है। जैसे-

न स्वस्थः = **अस्वस्थः** (बीमार)

न अश्वः = **अनश्वः** (घोड़ा नहीं)

नञ् समास के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
न कृतम्	=	**अकृतम्** (जो किया न हो)
न इच्छा	=	**अनिच्छा** (इच्छा न हो)
न आगतम्	=	**अनागतम्** (जो आया न हो)
न गजः	=	**अगजः** (जो गज न हो)
न उक्तः	=	**अनुक्तः** (जो उक्त न हो)
न मोघः	=	**अमोघः** (अव्यर्थ)
न सिद्धः	=	**असिद्धः** (असफल)
न ब्राह्मणः	=	**अब्राह्मणः** (अब्राह्मण)

न ईश्वरः = **अनीश्वरः** (जो ईश्वर न हो)
न अर्थः = **अनर्थः** (अनर्थ)
न उचितः = **अनुचितः** (जो उचित नहीं)

(ii) गति समास या प्रादि तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में कु आदि शब्द, ऊरी आदि गतिसंज्ञक शब्द, प्र आदि शब्द आयें तो इनका समर्थ सुबन्तों के साथ नित्य समास होता है, ऐसे समास को **गति तत्पुरुष** या **प्रादि तत्पुरुष** समास कहते हैं। जैसे-

कुत्सितः पुत्रः = **कुपुत्रः** (बुरा पुत्र)
सुन्दरः देशः = **सुदेशः** (सुन्दर देश)
कुत्सितः पुरुषः = **कुपुरुषः** (निन्दित पुरुष)
कुत्सितः राजा = **कुराजा** (बुरा राजा)
प्रगतः आचार्यः = **प्राचार्यः** (श्रेष्ठ आचार्य)
विरुद्धः पक्षः = **विपक्षः** (जो पक्ष में न हो)
शोभनः पुरुषः = **सुपुरुषः** (सुन्दर पुरुष)
प्रकृष्टो वीरः = **प्रवीरः** (प्रकृष्ट वीर)
ऊरी कृत्वा = **ऊरीकृत्य** (स्वीकार करके)
अशुक्लं शुक्लं कृत्वा = **शुक्लीकृत्य** (सफेद करके)
पटत् पटत् इति कृत्वा = **पटपटाकृत्य** (पटत् पटत् इसप्रकार शब्द करके)

(iii) उपपद तत्पुरुष समास

कृदन्त सुबन्तों के साथ उपपदों का समास ही उपपदसमास कहलाता है। इस समास में पूर्वपद उपपद तथा उत्तरपद कृत् प्रत्ययान्त समर्थ पद होता है। अर्थात् उपपद सुबन्त का तिङ् रहित धातु के साथ समास होता है। जैसे-

कुम्भं करोति इति = **कुम्भकारः** (कुम्हार)
धर्मं जानाति इति = **धर्मज्ञः** (जो धर्म जानता है)
सामं गायति इति = **सामगः** (जो सामवेद को जानता है)
आसने तिष्ठति इति= **आसनस्थः** (जो आसन पर बैठता है)
धनं ददाति इति = **धनदः** (जो धन देता है)
भारं हरति इति = **भारहारः** (भार ढोने वाला, कुली)
दिनं करोति इति = **दिनकरः** (सूर्य)
शं करोति इति = **शङ्करः** (महादेव)
भिक्षां चरति इति = **भिक्षाचरः** (भिखारी)
निशायां चरति इति = **निशाचरः** (रात्रि में विचरण करने वाला, राक्षस)
उरसा गच्छति इति = **उरगः** (छाती के बल चलने वाला, साँप)
विहायसा गच्छति इति = **विहगः** (आकाशमार्ग से चलने वाला, पक्षी)
पङ्के जायते इति = **पङ्कजः** (कमल)
मर्म जानाति इति = **मर्मज्ञः** (मर्म को जानने वाला)
कम्बलं ददाति इति = **कम्बलदः** (कम्बल देने वाला)
प्रभां करोति इति = **प्रभाकरः** (सूर्य)

(iv) अलुक् तत्पुरुष समास

- 'अलुक्' का अर्थ है न लुक् अर्थात् 'लोप' का न होना। जिस समास में विभक्ति का लोप नहीं होता उसे अलुक् समास कहते हैं।
- सामान्यतया समास में सामासिक पदों की विभक्ति का लोप हुआ करता है, किन्तु कुछ शब्दों में समास होने पर भी विभक्ति का लोप (लुक्) नहीं होता, उसे 'अलुक्' तत्पुरुष समास कहते हैं।

अलुक् तत्पुरुष समास के उदाहरण

समासविग्रह	**सामासिक पद** (अर्थ सहित)
आत्मने पदम्	= **आत्मनेपदम्** (अपने लिए पद)
परस्मै पदम्	= **परस्मैपदम्** (दूसरे के लिए पद)
युधि स्थिरः	= **युधिष्ठिरः** (युद्ध में स्थिर)
कृच्छ्रात् आगतः	= **कृच्छ्रादागतः** (कठिनाई से आया हुआ)
अभ्यासात् आगतः	= **अभ्यासादागतः** (अभ्यास से आया हुआ)
सरसि जातम्	= **सरसिजम्** (तालाब में उत्पन्न)
खे चरति	= **खेचरः** (आकाश में विचरण करने वाला पक्षी)
वाचः पतिः	= **वाचस्पतिः** (बृहस्पति)
शरदि जायते	= **शरदिजः** (शरद् में होने वाला)
प्रावृषि जायते	= **प्रावृषिजः** (बरसात में होने वाला)
देवानां प्रियः	= **देवानाम्प्रियः** (मूर्ख)

कर्मधारय समास

तत्पुरुष समास के समानाधिकरण भेद को कर्मधारय समास कहते हैं। अर्थात् समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष, कर्मधारय होता है।

''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' (1.2.42)

तात्पर्य यह है कि पूर्वपद एवं उत्तरपद, दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। जैसे- कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

- कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्वपद विशेषण एवं उत्तरपद विशेष्य होता है। कहीं कहीं दोनों पद विशेष्य होते हैं।

सूत्र- ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' (2.1.57) अर्थात् समान विभक्ति वाले विशेषण का विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है।

कर्मधारय समास के भेद

कर्मधारय समास के कुछ प्रमुख भेद निम्नवत् हैं-

(i) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय

कर्मधारय समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है, तो उसे विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। यथा-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णः सर्पः	=	**कृष्णसर्पः** (काला साँप)
महान् चासौ देवः	=	**महादेवः** (महादेव)
महान् चासौ राजा	=	**महाराजः** (महान् राजा)
महान् चासौ आत्मा	=	**महात्मा** (महान् आत्मा)
श्रेष्ठः पुरुषः	=	**श्रेष्ठपुरुषः** (श्रेष्ठ पुरुष)
महान् चासौ पुरुषः	=	**महापुरुषः** (महान् पुरुष)
महान् चासौ ऋषिः	=	**महर्षिः** (महान् ऋषि)
महान् कविः	=	**महाकविः** (महान् कवि)
महान् चासौ रथी	=	**महारथी** (महान् रथी)
महत् काव्यम्	=	**महाकाव्यम्** (महान् काव्य)
श्वेतं च तत् वस्त्रम्	=	**श्वेतवस्त्रम्** (सफेद वस्त्र)
श्वेतः च असौ अश्वः	=	**श्वेताश्वः** (सफेद घोड़ा)
सुन्दरः च असौ बालकः	=	**सुन्दरबालकः** (सुन्दर बालक)
मधुरं च तत्फलम्	=	**मधुरफलम्** (मधुरफल)
नीलः आकाशः	=	**नीलाकाशः** (नीला आकाश)
रक्तं च तत् उत्पलम्	=	**रक्तोत्पलम्** (लाल कमल)
गौरः बालकः	=	**गौरबालकः** (गोरा बालक)
नीलम् उत्पलम्	=	**नीलोत्पलम्** (नीला कमल)
नीलं कमलम्	=	**नीलकमलम्** (नीलकमल)
प्रियः सखा	=	**प्रियसखः** (प्रिय मित्र)
महती नदी	=	**महानदी** (बड़ी नदी)

(ii) उपमानपूर्वपद कर्मधारय

''उपमानानि सामान्यवचनैः'' (2.1.55) - जब उपमानवाचक शब्द का सामान्यवाचक शब्द के साथ समास होता है, तो उसे उपमानपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं।

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थसहित)
घन इव श्यामः	=	**घनश्यामः** (घनश्याम)
विद्युत् इव चञ्चला	=	**विद्युच्चञ्चला** (बिजली सी चञ्चल)
नवनीतम् इव कोमलम्	=	**नवनीतकोमलम्** (नवनीत के समान कोमल)
चन्द्रः इव उज्ज्वलः	=	**चन्द्रोज्ज्वलः** (चन्द्रमा सा उज्ज्वल)
चन्द्रः इव मुखम्	=	**चन्द्रमुखम्** (चन्द्रमा के समान मुख)
नरः शार्दूल इव	=	**नरशार्दूलः** (नरों में चीते के समान)
पुरुषः सिंह इव	=	**पुरुषसिंहः** (सिंह के समान पुरुष)
नरः सिंह इव	=	**नरसिंहः** (मनुष्य सिंह के समान)
चन्द्र इव आह्लादकः	=	**चन्द्राह्लादकः** (चन्द्र के समान कोमल)
कमलम् इव कोमलम्	=	**कमलकोमलम्** (कमल के समान कोमल)
पुरुषः व्याघ्र इव	=	**पुरुषव्याघ्रः** (व्याघ्र के समान पुरुष)
दुग्धम् इव धवलम्	=	**दुग्धधवलम्** (दूध के समान सफेद)
नीरदः इव श्यामः	=	**नीरदश्यामः** (बादल के समान काला)

(iii) रूपक कर्मधारय

उपमान और उपमेय के एकरूप होने से, उपमान उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
शोक एव अग्निः	=	**शोकाग्निः** (शोकरूपी अग्नि)
विद्या एव धनम्	=	**विद्याधनम्** (विद्यारूपी धन)
मुखमेव कमलम्	=	**मुखकमलम्** (मुखरूपी कमल)
परीक्षा एव पयोधिः	=	**परीक्षापयोधिः**(परीक्षारूपी सागर)

(iv) उभयपद विशेषण कर्मधारय

इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों विशेषण होते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पीतः चासौ कृष्णः	=	**पीतकृष्णः** (पीला और काला)
श्वेतः चासौ कृष्णः	=	**श्वेतकृष्णः** (श्वेत और काला)
चरं च अचरं च	=	**चराचरम्** (चराचर)
पूर्वं सुप्तः पश्चात् उत्थितः	=	**सुप्तोत्थितः** (पहले सोया फिर उठा)
कृतं च अकृतं च	=	**कृताकृतम्** (किया हुआ और न किया हुआ)
शीतं च उष्णम्	=	**शीतोष्णम्** (ठण्डा-गरम)
रक्तश्च पीतश्च	=	**रक्तपीतः** (लाल-पीला)

नोट - परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः (2.426)

द्वन्द्व और तत्पुरुष का लिङ्ग उस समास के बाद वाले पद के समान होता है।

4. द्विगु समास

''संख्यापूर्वो द्विगुः'' (2.1.52) - अर्थात् जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, वह द्विगु समास कहलाता है। यह कर्मधारय समास का उपभेद है, पर अपने प्रकृति वैशिष्ट्य के कारण स्वतन्त्र समास के रूप में स्वीकृत है।

द्विगु समास के उदाहरण-

समास विग्रह	सामासिकपद (अर्थ सहित)
पञ्चानां गवां समाहारः	= **पञ्चगवम्** (पाँच गायों का समूह)
पञ्चानां वटानां समाहारः	= **पञ्चवटी** (पाँच वटों/वृक्षों का समूह)
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	= **पञ्चपात्रम्** (पाँच पात्रों का समूह)
पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः	= **पञ्चामृतम्** (पाँच अमृतों का समूह)
पञ्चानां दिनानां समाहारः	= **पञ्चदिनम्** (पाँच दिनों का समूह)
त्रयाणां लोकानां समाहारः	= **त्रिलोकी** (तीन लोकों का समाहार)
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	= **त्रिभुवनम्** (तीनों भुवनों का समाहार)
चतुर्णां फलानां समाहारः	= **चतुर्फलम्** (चार फलों का समाहार)
अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	= **अष्टाध्यायी** (आठ अध्यायों का समाहार)
त्रयाणां फलानां समाहारः	= **त्रिफला** (तीन फलों का समाहार)
शतानाम् अब्दानां समाहारः	= **शताब्दी** (सौ वर्षों का समूह)
चतुर्णां भुजानां समाहारः	= **चतुर्भुजम्** (चार भुजाओं का समूह)
तिसृणां वेणीनां समाहारः	= **त्रिवेणी** (तीन वेणियों का समूह)
चतुर्णां युगानां समाहारः	= **चतुर्युगम्** (चार युगों का समूह)
सप्तानां शतानां समाहारः	= **सप्तशती** (सात सैकड़ों का समूह)
सप्तानाम् अह्नाम् समाहारः	= **सप्ताहः** (सात अह्नों/दिनों का समाहार)
नवानां रात्रीणां समाहारः	= **नवरात्रम्** (नव रात्रियों का समूह)

5. द्वन्द्व समास

''उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः'' अर्थात् जिस समास में उभयपद (दोनों पद) या सभी पदों की प्रधानता होती है, उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। जैसे- रामश्च कृष्णश्च = **रामकृष्णौ**

यहाँ 'राम' और 'कृष्ण' दोनों पद प्रधान हैं, अतः इसमें द्वन्द्वसमास है।

द्वन्द्व समास के भेद- द्वन्द्व समास के मुख्यतः दो ही भेद होते हैं किन्तु एकशेष को शामिल करके इसके कुल तीन भेद हो जाते हैं-

(i) इतरेतर द्वन्द्व- जब समास में प्रयुक्त होने वाले शब्द के अर्थ अपनी-अपनी प्रधानता अलग-अलग प्रदर्शित करते हैं, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। इसका लिङ्ग निर्धारण उत्तरपद के अनुसार होता है।

जैसे- 'रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ' - यहाँ राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है। अतः यहाँ 'रामलक्ष्मणौ' में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

(ii) समाहार द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में आये हुए पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार अर्थ का भी बोध कराते हैं, उसे 'समाहार द्वन्द्व' कहते हैं। यह समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है।

यथा- पाणिपादम् = पाणी च पादौ च तेषां समाहारः (हाथ और पैर का समूह)

(iii) एकशेष द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है, उसे 'एकशेष द्वन्द्व' कहते हैं। जैसे- दुहिता च दुहिता च = दुहितरौ।

➢यदि समास में पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द हों तो पुँल्लिङ्ग शब्द ही शेष बचेगा। जैसे-

माता च पिता च = **पितरौ**

मयूरी च मयूरः च = **मयूरौ**

द्वन्द्व समास करने वाला सूत्र

''चार्थे द्वन्द्वः'' (2.2.29) इस सूत्र से 'च' (और) के अर्थ में विद्यमान अनेक सुबन्तों का द्वन्द्व समास होता है।

इतरेतर द्वन्द्व समास के उदाहरण

सीता च रामश्च	=	**सीतारामौ** (सीता और राम)
रामः च कृष्णः च	=	**रामकृष्णौ** (राम और कृष्ण)
देवश्च असुरश्च	=	**देवासुरौ** (देवता और असुर)
धर्मश्च अर्थश्च	=	**धर्मार्थौ** (धर्म और अर्थ)
कृष्णश्च अर्जुनश्च	=	**कृष्णार्जुनौ** (कृष्ण और अर्जुन)
वाणी च विनायकश्च	=	**वाणीविनायकौ** (वाणी और विनायक)
पार्वती च परमेश्वरश्च	=	**पार्वतीपरमेश्वरौ** (पार्वती और परमेश्वर महादेव)
सूर्यश्च चन्द्रश्च	=	**सूर्यचन्द्रौ** (सूर्य और चन्द्र)
शिवश्च केशवश्च	=	**शिवकेशवौ** (शिव और केशव)
रामश्च लक्ष्मणश्च	=	**रामलक्ष्मणौ** (राम और लक्ष्मण)
भीमश्च अर्जुनश्च	=	**भीमार्जुनौ** (भीम और अर्जुन)
सज्जनश्च दुर्जनश्च	=	**सज्जनदुर्जनौ** (सज्जन और दुर्जन)
ईशश्च कृष्णश्च	=	**ईशकृष्णौ** (ईश और कृष्ण)

पिता च पुत्रश्च = **पितापुत्रौ** (पिता और पुत्र)
हरिश्च हरश्च = **हरिहरौ** (हरि और हर)
बालश्च वृद्धश्च = **बालवृद्धौ** (बालक और वृद्ध)
नरश्च नारी च = **नरनार्यौ** (नर और नारी)
जाया च पतिश्च = **जायापती/जम्पती/दम्पती** (पति और पत्नी)

नोट- इतरेतर द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों का योग होता है। दो पदों के लिए द्विवचन और दो से अधिक पदों का समास होने पर बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है। जैसे-

☆ हरिश्च हरश्च गुरुश्च = **हरिहरगुरवः**
☆ रामश्च भरतश्च लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्च = **रामभरतलक्ष्मणशत्रुघ्नाः**

यहाँ दो से अधिक पदों का समास हुआ है, अतः बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

समाहार द्वन्द्व के उदाहरण

समास विग्रह	सामासिकपद (अर्थ सहित)
पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	= **पाणिपादम्** (हाथ और पैर का समूह)
रथिकः च अश्वारोही च	= **रथिकाश्वारोहम्** (रथी और घुड़सवार)
भेरी च पटहश्च	= **भेरीपटहम्** (भेरी और पटह का समूह)
अहिश्च नकुलश्च	= **अहिनकुलम्** (साँप और नेवला)
अहश्च रात्रिश्च	= **अहोरात्रम्** (रात और दिन)
रथाश्च अश्वाश्च तेषां समाहारः	= **रथाश्वम्** (रथ और घोड़े)

संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः = **संज्ञापरिभाषम्** (संज्ञा और परिभाषा का समूह)

नोट- जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। समाहार द्वन्द्व में समास के बाद **नपुंसकलिङ्ग एकवचन** का प्रयोग होता है।

एकशेष द्वन्द्व समास के उदाहरण

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
माता च पिता च	= **पितरौ** (माता और पिता)
पुत्रश्च पुत्री च	= **पुत्रौ** (पुत्र और पुत्री)
रामश्च रामश्च	= **रामौ** (दो राम)
हंसश्च हंसी च	= **हंसौ** (हंस और हंसी)
युवा च युवती च	= **युवानौ** (युवक और युवती)
दुहिता च दुहिता च	= **दुहितरौ** (दो पुत्रियाँ)
मयूरी च मयूरः च	= **मयूरौ** (मयूरी और मयूर)
भ्राता च स्वसा च	= **भ्रातरौ** (भाई और बहन)
श्वश्रूः च श्वसुरश्च	= **श्वसुरौ** (सास और ससुर)

द्वन्द्व समास के अन्य उदाहरण

(i) एकः च दश च = **एकादश**
(ii) द्वौ च दश च = **द्वादश**
(iii) त्रयः च दश च = **त्रयोदश**
(iv) अष्टौ च दश च = **अष्टादश**

6. बहुव्रीहि समास

''**अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः**'' अर्थात् जिस समास में सामासिक पदों से भिन्न किसी अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है, उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। अर्थात् बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं।

जैसे- लम्बम् उदरं यस्य सः = **लम्बोदरः**।

यहाँ लम्बम् उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो है लेकिन वे किसी अन्य पद 'गणेश' की विशेषता बता रहे हैं। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है।

बहुव्रीहि समास विधायक सूत्र- अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24) अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पदों का विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है।

बहुव्रीहि समास के भेद-

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि- इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है।

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
पीतम् अम्बरं यस्य सः	= **पीताम्बरः** (श्रीकृष्ण) पीले वस्त्र वाला
लम्बम् उदरं यस्य सः	= **लम्बोदरः** (गणेश) लम्बा है उदर जिसका
नीलः कण्ठः यस्य सः	= **नीलकण्ठः** (शिव) नीला है कण्ठ जिसका
श्वेतम् अम्बरं यस्य सः	= **श्वेताम्बरः** (साधु) सफेद है वस्त्र जिसका
दाम उदरं यस्य सः	= **दामोदरः** (श्रीकृष्ण) रस्सी है उदर पर जिसके
जितानि इन्द्रियाणि येन सः	= **जितेन्द्रियः** (मुनि) जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने
शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा	= **शुक्लाम्बरा** (सरस्वती)

दश आननानि यस्य सः = **दशाननः** (रावण)
चत्वारि आननानि यस्य सः = **चतुराननः** (ब्रह्मा)
दिक् अम्बरं यस्य सः = **दिगम्बरः** (शिव)
प्राप्तम् उदकं यं सः = **प्राप्तोदकः**(जल जिसे प्राप्त है।)
महान् आशयः यस्य सः = **महाशयः** (सभ्य व्यक्ति)
यशः एव धनं यस्य सः = **यशोधनः** (राजा) यश ही है धन जिसका
लब्धा प्रतिष्ठा येन सः = **लब्धप्रतिष्ठः** (विद्वान्)
नीलम् अम्बरं यस्य सः = **नीलाम्बरः** (बलराम)
दिव्यम् अम्बरं यस्य सः = **दिव्याम्बरः** (दिव्य हैं वस्त्र जिसका, वह)
पञ्च आननानि यस्य सः = **पञ्चाननः** (शिव)
नीलं कण्ठं यस्य सः = **नीलकण्ठः** (शिव)
गज इव आननं यस्य सः = **गजाननः** (गणेश)
कमलम् आसनं यस्य सः = **कमलासनः** (ब्रह्मा)
लम्बौ कर्णौ यस्य सः = **लम्बकर्णः** (लम्बे हैं कान जिसके, वह)

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि

इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं। जैसे-

चक्रं पाणौ यस्य सः = **चक्रपाणिः** (विष्णु)
वीणा पाणौ यस्याः सा = **वीणापाणिः** (सरस्वती)
धनुः पाणौ यस्य सः = **धनुष्पाणिः** (श्रीराम)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः = **चन्द्रशेखरः** (शिव)
पीयूषं पाणौ यस्य सः = **पीयूषपाणिः** (वैद्य)
मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा = **मृगनयनी** (स्त्री) (मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके)
शूलं पाणौ यस्य सः = **शूलपाणिः** (शूल है हाथ में जिसके, वह)
शीतिः कण्ठे यस्य सः = **शीतिकण्ठः** (शिव) (नीलिमा है जिसके कण्ठ में, वह)
चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः = **चन्द्रकान्तिः** (चन्द्र की कान्ति के समान कान्ति है जिसकी, वह)
गदा पाणौ यस्य सः = **गदापाणिः** (विष्णु)

(ग) व्यतिहार बहुव्रीहि

युद्ध लड़ाई आदि का ज्ञान कराने वाले सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त पदों में जो समास होता है, उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं। यथा-

☆ केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **केशाकेशि** (बालों को पकड़कर प्रारम्भ होने वाला युद्ध)
☆ हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां प्रवृत्तं युद्धम् = **हस्ताहस्ति** (हाथों से प्रवृत्त हुआ युद्ध)
☆ दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **दण्डादण्डि** (परस्पर लाठियों से मार-मार कर युद्ध में प्रवृत्त हुआ)
☆ मुष्टिभिश्च मुष्टिभिश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **मुष्टामुष्टि** (परस्पर मुक्कों से मार-मार कर यह लड़ाई लड़ी गयी)

(घ) तुल्य योग बहुव्रीहि

जब बहुव्रीहि समास में साथ अर्थ वाले 'सह' का समास होता है, तब तुल्ययोग बहुव्रीहि समास होता है। 'सह' को विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे-

अर्जुनेन सह = **सार्जुनः** (अर्जुन के साथ)
राधिकया सह इति = **सराधिकः** (कृष्ण) राधिका के साथ
भार्यया सह = **सभार्यः** (स्त्री सहित)
कलाभिः समम् = **सकलम्** (कलाओं से युक्त)
सीतया सह = **ससीतः** (राम, सीता के साथ)
पुत्रेण सह = **सपुत्रः** (पुत्र के साथ)
परिवारेण सह = **सपरिवारः** (परिवार के साथ)
अनुजेन सह = **सानुजः** (अनुज के साथ)

बहुव्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरण-

☆ द्वौ वा त्रयो वा = **द्वित्राः** (दो या तीन)
☆ त्रयः वा चत्वारो वा = **त्रिचतुराः** (तीन-चार)
☆ पञ्च वा षट् वा = **पञ्चषाः** (पाँच या छह)
☆ युवतिः जाया यस्य सः = **युवजानिः** (जिसकी स्त्री युवती है, वह)
☆ सीता जाया यस्य सः = **सीताजानिः** (जिसकी स्त्री सीता है, वह राम)
☆ पठितुं कामं यस्य सः = **पठितुकामः** (पढ़ने की इच्छा वाला)
☆ अविद्यमानो पुत्रः यस्य सः = **अपुत्रः** (नहीं है पुत्र जिसके, वह)
☆ चित्रा गावो यस्य सः = **चित्रगुः** (चितकबरी गायों वाला व्यक्ति)

❑❑

अभ्यास प्रश्न (समास प्रकरण)

1. समासः कः?

(A) पदार्थवाचकम् (B) अनेकपदीकरणम्

(C) एकपदीकरणम् (D) सर्ववाक्यम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

2. समासस्य प्रकाराः सन्ति?

(A) त्रयः (B) षट्

(C) पञ्च (D) चत्वारः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

3. समास की प्रक्रिया होती है?

(A) दो वर्णों के बीच

(B) दो पदों के बीच

(C) दो वाक्यों के बीच

(D) एक वर्ण और एक पद के बीच

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

4. लघुसिद्धान्तकौमुदीकारमते समासः कतिधा वर्तते?

(A) पञ्चधा (B) षोढा

(C) सप्तधा (D) चतुर्धा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

5. समासशास्त्रे उपसर्जनं नाम–

(A) द्वितीयानिर्दिष्टम्

(B) प्रथमानिर्दिष्टम्

(C) सप्तमीनिर्दिष्टम्

(D) तृतीयानिर्दिष्टम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–20

6. समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टस्यसंज्ञा भवति–

(A) उपसर्गः (B) अव्ययम्

(C) उपसर्जनम् (D) प्रातिपदिकम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–20

7. उपसर्जनसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रम् अस्ति?

(A) परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः

(B) गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य

(C) अनुपसर्जनात्

(D) एकविभक्ति चाऽपूर्वनिपाते

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–136

8. अविग्रह (जिसका विग्रह न हो) युक्त समास है?

(A) नित्य (B) तत्पुरुष

(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–11

9. परार्थाभिधानरूपा वृत्तिः कतिविधा?

(A) कृदन्तरूपैका

(B) कृत्तद्धितरूपा द्विविधा

(C) कृत्तद्धितसमासरूपा त्रिविधा

(D) कृत्तद्धितसमासैकशेषसनाद्यन्तधातुरूपाः पञ्चविधा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–09

10. 'विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः' कः समासः –

(A) बहुव्रीहिः (B) द्विगुः

(C) केवलः (D) कर्मधारयः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

11. सुबन्त पद के साथ सुबन्त पद के समास को कहते हैं?

(A) सुबसुबा (B) सुपुसुपा

(C) सुप्सुपा (D) सुसुपा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–09

1. (C) 2. (C) 3. (B) 4. (A) 5. (B) 6. (C) 7. (D) 8. (A) 9. (D) 10. (C) 11. (C)

12. 'वागर्थाविव' पदे समासः अस्ति–

(A) सुप्सुपा (B) तत्पुरुषः

(C) बहुव्रीहिः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–14

13. 'नैकः' में कौन-सा समास है?

(A) नञ् तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव

(C) एकशेषद्वन्द्व (D) सुप्सुपा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–13

14. 'भूतपूर्वः' यहाँ समास विधायक सूत्र है?

(A) प्राक्कडारात्समासः (B) कुगतिप्रादयः

(C) सह सुपा (D) उपसर्जनं पूर्वम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–09

15. 'भूतपूर्वः' अस्मिन् पदे समासो वर्तते?

(A) तत्पुरुषः (B) केवलसमासः

(C) बहुव्रीहिः (D) समासो न वर्तते

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–09

16. अव्ययीभाव समास होता है?

(A) न कोऽपि प्रधानं पदं भवति

(B) अन्यपदप्रधानं भवति

(C) पूर्वपदप्रधानं भवति

(D) उत्तरपदप्रधानं भवति

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

17. प्रायः पूर्वपद की प्रधानता वाला समास है–

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

18. अव्ययीभावसंज्ञायाः फलं किम्?

(A) अव्ययसंज्ञा (B) प्रातिपदिकसंज्ञा

(C) सुप् लुक् (D) सुप्प्रत्ययानां प्राप्तिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

19. नित्यनपुंसकलिङ्गैकवचनान्तः समासो भवति?

(A) बहुव्रीहिः (B) द्विगुः

(C) द्वन्द्वः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–23

20. अव्ययीभावसमास की सिद्धि होने पर सम्पूर्ण पद हो जाता है?

(A) पुंलिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग

(C) नपुंसकलिङ्ग (D) उपर्युक्त तीनों

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–23

21. 'अनुरूपम्' पद में समास का नाम है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33

22. 'रूपस्य योग्यम्' इससे बनता है?

(A) यथारूपम् (B) प्रतिरूपम्

(C) अनुरूपम् (D) अतिरूपम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33

23. 'अनुरूपम्' इत्यस्य पदस्य विग्रहः वर्तते?

(A) रूपस्य प्रति (B) रूपस्य योग्यम्

(C) रूपस्य सादृश्यम् (D) रूपस्य पश्चात्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33

24. 'यथारूपम्' पद में समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु

(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–35

25. 'यथाशक्ति' में समास है?

(A) तत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः

(C) अव्ययीभावः (D) द्विगुः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33

26. 'यथाशक्ति' इति समस्तपदस्य विग्रहः भवति–

(A) शक्तिम् अनतिक्रम्य (B) शक्तिं प्रयुज्य

(C) शक्तिः यथा (D) शक्तेः महत्त्वम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33

27. 'अधिहरि' यह समास इस अर्थ में है?

(A) समीप (B) समृद्धि

(C) व्यृद्धि (D) विभक्ति

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–19

12. (A) 13. (D) 14. (C) 15. (B) 16. (C) 17. (A) 18. (A) 19. (D) 20. (C) 21. (A) 22. (C) 23. (B) 24. (A) 25. (C) 26. (A) 27. (D)

28. 'अधिहरि' इत्यत्र कः समासः?

(A) केवलसमासः (B) उपपदसमासः

(C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–21

29. 'हरि शब्दस्य प्रकाशः' का समस्त पद क्या होगा?

(A) अधिहरि (B) इतिहरि

(C) हरिइति (D) अनुहरि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–32

30. 'अधिहरि' इत्यस्य अलौकिकविग्रहः भवति?

(A) अधि + हरि + सु (B) हरि + अधि + ङि

(C) हरि+ङि+अधि+सु (D) हरौ + इति + ङि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–21

31. विभक्ति के अर्थ में अव्ययीभाव का उदाहरण है–

(A) उपकूलम् (B) सतृणम्

(C) दुर्भिक्षम् (D) अधिहरि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–21

32. 'अधिगोपम्' इत्यत्र कः समासः?

(A) उपपदतत्पुरुषः (B) कर्मधारयः

(C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–24

33. 'अधिगोपम्' इत्यत्र अधिपदांशः कस्मिन्नर्थेऽस्ति?

(A) सप्तमीतत्पुरुषः (B) पश्चादर्थेऽव्ययीभावः

(C) विभक्त्यर्थेऽव्ययीभावः (D) सादृश्यार्थेऽव्ययीभावः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–23

34. 'गोः समीपे' में अव्ययीभाव समास कीजिये?

(A) गोरूप (B) उपगौ

(C) उपगु (D) उपगोः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–237

35. 'उपकृष्णम्' इत्यस्य पदस्य विग्रहः वर्तते?

(A) कृष्णस्य सादृश्यम् (B) कृष्णस्य पश्चात्

(C) कृष्णस्य समीपम् (D) कृष्णं प्रति

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–26

36. 'उपकृष्णम्' इत्यत्र समासोऽस्ति?

(A) केवलसमासः (B) तत्पुरुषः

(C) अव्ययीभावः (B) बहुव्रीहिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–26

37. 'उपराजम्' अत्र समासान्तः कः?

(A) टच् (B) अच्

(C) अ (D) अम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–52

38. 'उपराजम्' में कौन-सा समास है?

(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष

(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–52

39. 'उपशरदम्' अत्र कः समासः?

(A) बहुव्रीहिः (B) द्विगुः

(C) अव्ययीभावः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–48

40. 'उपशरदम्' इत्यस्य पदस्य समासविग्रहः अस्ति?

(A) शरदः समीपम् (B) शरदः उपरि

(C) शरदः अनुकूलम् (D) शरदः आधिक्यम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–48

41. 'राज्ञः समीपम्' का समस्तपद है?

(A) उपराजन् (B) राजसमीपम्

(C) उपराजम् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–52

42. विष्णु के बाद का सम्पूर्ण पद है?

(A) उपविष्णुन् (B) अनुविष्णो

(C) अनुविष्णवे (D) अनुविष्णु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28

43. 'अनुविष्णु'– समस्त पद का विग्रह होगा–

(A) अनुविष्णो (B) अनुकर्ता विष्णुम्

(C) विष्णोः पश्चात् (D) विष्णोरनुयायी

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28

28. (D) 29. (B) 30. (C) 31. (D) 32. (D) 33. (C) 34. (C) 35. (C) 36. (C) 37. (A) 38. (C) 39. (C) 40. (A) 41. (C) 42. (D) 43. (C)

44. 'रथस्य पश्चात्' इस विग्रहवाक्य का समास होगा?

(A) रथिपात् (B) पथपश्चात्

(C) अनुरथम् (D) पश्चात् रथेन

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–32

45. 'अनुरथम्' इस अव्ययीभावसमास वाले पद का अस्वपद विग्रह है?

(A) रथस्य अनु (B) अनोः रथः

(C) अनु चासौ रथम् (D) रथस्य पश्चात्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–32

46. 'सुमद्रम्' में कौन-सा समास है?

(A) कर्मधारय (B) बहुव्रीहि

(C) अव्ययीभाव (D) षष्ठीतत्पुरुष

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28

47. 'सुमद्रम्' इत्यस्य समासविग्रहः कः?

(A) मद्राणां समृद्धिः (B) मद्राणां हितम्

(C) मद्रमनतिक्रम्य (D) मद्राणां समीपम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28

48. 'निर्मक्षिकम्' में किस अर्थ में समास है?

(A) अभाव (B) भाव

(C) समुच्चय (D) निर्गमन

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28

49. 'निर्मक्षिकम्' का समासविग्रह होगा–

(A) निर्गता मक्षिका यस्मात् सः

(B) निर्गता मक्षिका यस्मिन् सः

(C) मक्षिकाणाम् अभावः

(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28

50. 'निर्मक्षिकम्' में समास है–

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव

(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28

51. 'निर्मक्षिकम्' अस्य पदस्य अलौकिकविग्रहः भवति?

(A) निर्+मक्षिका + अम् (B) मक्षिका + टा + निर्

(C) मक्षिक + सुँ + निर् (D) मक्षिका + आम् + निर्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–30

52. 'पञ्चगङ्गम्' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं किम्?

(A) संख्यापूर्वो द्विगुः (B) चार्थे द्वन्द्वः

(C) नदीभिश्च (D) अनेकमन्यपदार्थे

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज––42

53. 'पञ्चानां गङ्गानां समाहारः पञ्चगङ्गम्' इत्यत्र कः समासः?

(A) तत्पुरुषः (B) द्विगुः

(C) कर्मधारयः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग),पेज–42-43

54. 'पञ्चगङ्गम्'– यहाँ समास है–

(A) द्विगु (B) तत्पुरुष

(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42

55. 'गङ्गायाः समीपम्' इस अस्वपद विग्रह में अव्ययीभाव समास होता है?

(A) गङ्गासमीपम् (B) समीपगङ्गाम्

(C) उपगङ्गम् (D) सगङ्गम्

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–236

56. 'सप्तगङ्गम्' में समास है?

(A) तत्पुरुषः (B) द्विगुः

(C) अव्ययीभावः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–44

57. 'द्वियमुनम्' किस सूत्र से बनता है?

(A) अव्ययीभावश्च (B) नदीभिश्च

(C) संख्यापूर्वो द्विगुः (D) अव्ययीभावे चाकाले

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42

58. 'द्वियमुनम्' इत्यत्र कः समासः?

(A) द्विगुः (B) द्वन्द्वः

(C) अव्ययीभावः (D) तत्पुरुषः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42

44. (C) 45. (D) 46. (C) 47. (A) 48. (A) 49. (C) 50. (B) 51. (D) 52. (C) 53. (D) 54. (C) 55. (C) 56. (C) 57. (B) 58. (C)

59. 'दुर्यवनम्' में समास है?

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव

(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28

60. 'सतृणम्' यहाँ समास इस अर्थ में है?

(A) समीप (B) साकल्य

(C) समृद्धि (D) विभक्ति

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–36

61. 'सहरि' में कौन-सा समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–36

62. अतिनिद्रम्–

(A) निद्रायाः अत्ययः (B) निद्रायाः आधिक्यम्

(C) निद्रायाः अति (D) निद्रा सम्प्रति न युज्यते

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–33

63. 'प्रतिदिनम्' में समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–34

64. 'प्रत्यक्षम्' में समास है?

(A) नञ् तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव

(C) द्वन्द्व (D) कर्मधारय

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–51

65. प्रत्येकम् –

(A) प्रति एकम् (B) एकम् प्रति एकम्

(C) एकम् एकं प्रति (D) प्रति एक एकम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–34

66. अव्ययीभाव का उदाहरण है?

(A) राजपुरुषः (B) अहिनकुलम्

(C) त्रिमुनि (D) पञ्चवटी

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–411

67. द्वन्द्व में घिसंज्ञक प्रातिपदिक कहाँ होता है?

(A) परम् (B) मध्ये

(C) पूर्वम् (D) अन्त्ये

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–235

68. समास, जिसमें प्रायः उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

69. 'तत्पुरुषः' इति सूत्रमस्ति?

(A) विधि (B) परिभाषा

(C) नियम (D) अधिकार

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–59

70. कर्मधारय समास किस समास का एक भेद है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) बहुव्रीहि (D) द्विगु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–108

71. 'व्यधिकरण तत्पुरुष' समास के कितने भेद हैं?

(A) चार (B) पाँच

(C) छः (D) सात

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका–बाबूराम सक्सेना, पेज–241

72. 'परस्मैपद' में कौन-सा समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) कर्मधारय

(C) तत्पुरुष (D) केवलसमास

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–255

73. 'अलं कुमार्यै' इत्यस्य समस्तं रूपं किम्?

(A) अलङ्कुमारी (B) कुमार्यै अलम्

(C) अलङ्कुमारिः (D) अलङ्कुमारिन्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–174

74. 'सप्तर्षयः' में कौन-सा समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–77

59. (B) 60. (B) 61. (A) 62. (D) 63. (A) 64. (B) 65. (C) 66. (C) 67. (C) 68. (B) 69. (D) 70. (B) 71. (C) 72. (C) 73. (C) 74. (B)

75. 'पञ्च गावो धनं यस्य' इत्यस्य समस्तपदमस्ति?

(A) पञ्चगवधनम् (B) पञ्चगुः

(C) पञ्चगवधनस्य (D) पञ्चगवधनः

स्रोत–समास प्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–78

76. 'गवाक्षः' पद में कौन-सा समास है?

(A) बहुव्रीहिसमास (B) तत्पुरुषसमास

(C) केवलसमास (D) द्वन्द्वसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–249

77. 'पितृतुल्यः' शब्द में कौन समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–70

78. 'जलमग्नः' शब्द में कौन समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–14

79. 'द्व्यङ्गुलम्' इत्यत्र को लौकिकविग्रहः?

(A) द्वयोः अङ्गुल्योः समाहारः (B) द्वे अङ्गुली प्रमाणस्य

(C) द्वे अङ्गुली यस्य (D) द्वि च अङ्गुलिश्च

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–154

80. 'कृष्णाश्रितः' में समास–

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–55

81. 'कष्टापन्नः' समास का विग्रह क्या है?

(A) कष्टम् आपन्नः (B) कष्टेन आपन्नः

(C) कष्टे आपन्नः (D) कष्टाय आपन्नः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–63

82. 'हरित्रातः' पद का समास-विग्रह है?

(A) हरौ त्रातः (B) हरिम् त्रातः

(C) हरिणा त्रातः (D) हरेः त्रातः

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–56

83. अल्पाच्तरम्-इत्यस्य सूत्रस्य उदाहरणम्–

(A) शिवकेशवौ (B) ईशकृष्णौ

(C) मातापितरौ (D) हरिहरौ

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–143

84. 'हरित्रातः' में कौन-सा समास है?

(A) द्वितीया तत्पुरुष (B) तृतीया तत्पुरुष

(C) चतुर्थी तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–56

85. 'नखभिन्नः' का लौकिकविग्रह है?

(A) नखात् भिन्ना (B) नखेभ्यः भिन्नः

(C) नखं भिन्नः (D) नखैः भिन्नः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–66

86. 'नखभिन्नः' में समास है?

(A) तृतीयातत्पुरुष (B) कर्मधारय

(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्वसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–66

87. 'वाग्युद्धम्' समास का विग्रह है–

(A) वाचि युद्धम् (B) वाचे युद्धम्

(C) वाचा युद्धम् (D) वाचो युद्धम्

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–244

88. 'भूतबलिः' इत्यत्र समासः केन सूत्रेण विधीयते?

(A) कर्तृकरणे कृता बहुलम्

(B) चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुख-रक्षितैः

(C) पञ्चमी भयेन

(D) सप्तमी शौण्डैः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–73

89. 'भूतबलिः' पद में कौन-सा समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–73

75. (D) 76. (B) 77. (B) 78. (B) 79. (B) 80. (B) 81. (A) 82. (C) 83. (A) 84. (B) 85. (D) 86. (A) 87. (C) 88. (B) 89. (B)

90. 'द्विजार्था' इत्यस्य समासविग्रहः स्यात्?

(A) द्विजार्थमिदम् (B) द्विजाय अयम्

(C) द्विजाय अर्थः (D) द्विजाय इयम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–74

91. चतुर्थी तत्पुरुषसमास है?

(A) यूपदारु (B) द्विमूर्धः

(C) धवखदिरौ (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–71

92. 'ज्ञानाय इदं ज्ञानार्थम्' में समास है?

(A) द्वितीया तत्पुरुष (B) तृतीया तत्पुरुष

(C) चतुर्थी तत्पुरुष (D) पञ्चमी तत्पुरुष

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–74

93. 'चोरभयम्' पद में समास है?

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–76

94. 'चोराद्भयम्' इति समस्तपदस्य समासविग्रहः भवति–

(A) चौरस्य भयम् (B) चौरेण भयम्

(C) चौरात् भयम् (D) चौराय भयम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–76

95. षष्ठी तत्पुरुष युक्त समास है?

(A) दूरादागतः (B) राजपुरुषः

(C) धान्यार्थः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81

96. 'राजपुरुषः' समास का विग्रह है?

(A) राज्ञा पुरुषः (B) राज्ञः पुरुषः

(C) राजा पुरुषः (D) राजनि पुरुषः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81

97. 'राजहंस' इस पद का विग्रहवाक्य होगा?

(A) राजा इव हंसः (B) हंसानां राजानाम्

(C) हंस एव राजा सः (D) हंसानां राजा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–233

98. 'कृष्णसखः' इत्यत्र समासः–

(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः

(C) बहुव्रीहिः (D) द्विगुः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–165

99. 'राजपुत्रः' में समास है?

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय

(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81

100. 'तत्पुरुषः' में कौन समास है?

(A) कर्मधारय (B) षष्ठीतत्पुरुष

(C) बहुव्रीहि (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81

101. 'सद्गतिः' शब्द में समास है?

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव

(C) बहुव्रीहि (D) द्विगु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–83

102. गङ्गायाः पारम्–

(A) गङ्गपारम् (B) गाङ्गपारम्

(C) गंगोपारम् (D) गङ्गापारम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–45

103. 'अक्षशौण्डः'-अस्य अलौकिकविग्रहः भवति?

(A) अक्ष + सु शौण्ड + सु

(B) अक्ष + सुप् शौण्ड + सु

(C) अक्षेषु शौण्डः

(D) अक्ष + ङि शौण्ड + ङि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–91

90. (D) 91. (A) 92. (C) 93. (A) 94. (C) 95. (B) 96. (B) 97. (D) 98. (B) 99. (A)
100. (B) 101. (A) 102. (D) 103. (B)

104. 'अक्षशौण्डः' इत्यस्य लौकिकविग्रहः अस्ति?

(A) अक्षाणां शौण्डः (B) अक्षेषु शौण्डः

(C) अक्षैः शौण्डः (D) अक्षेभ्यः शौण्डः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–91

105. 'पौर्वशालः' का विग्रह है?

(A) शालायाः पूर्वम् (B) पौर्व एव शालः

(C) पूर्वा शाला यस्य सः (D) पूर्वस्यां शालायां भवः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–102

106. अलुक्समासस्य किम् उदाहरणम्–

(A) वनेचरः (B) अधिहरि

(C) पीताम्बरः (D) अहोरात्रः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–255

107. 'युधिष्ठिर' में कौन-सा समास है?

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) अलुक् (D) कर्मधारय

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–89

108. 'कुपुरुषः' में समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व

(C) गति तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–127

109. 'निष्कौशाम्बिः' में समास है?

(A) गतितत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) अव्ययीभाव (D) केवलसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–141

110. 'निष्कौशाम्बिः' पदस्य समास-विग्रहः अस्ति?

(A) निर्गता कौशाम्बी (B) निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः

(C) अप्राप्ता कौशाम्बी (D) बहिः कौशाम्बि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–141

111. 'गवाम् अक्षि इव' इत्यत्र समस्तपदमस्ति–

(A) गवाक्षी (B) गवाक्षा

(C) गवाक्षम् (D) गवाक्षः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–249

112. नञ्-समासः कः–

(A) अनश्वः (B) कुपुरुषः

(C) कुपुत्रः (D) प्राचार्यः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–123

113. 'अब्राह्मणः' में कौन-सा समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि

(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–122

114. 'अब्राह्मण' में तत्पुरुषसमास है?

(A) तृतीयातत्पुरुष के कारण (B) द्वितीयातत्पुरुष के कारण

(C) नञ्तत्पुरुष के कारण (D) पञ्चमीतत्पुरुष के कारण

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–122

115. निम्नलिखित में से नञ्तत्पुरुष समास कौन सा है?

(A) रोगमुक्तः (B) राजपुरुषः

(C) अभावः (D) पुत्रहितम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–127

116. 'कुपुत्रः' में समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि

(C) कर्मधारय (D) प्रादितत्पुरुष

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–128

117. 'शोभनो राजा' इत्यस्य समस्तं पदं किम्?

(A) सुराजः (B) सुराजा

(D) सुराजी (D) सुराज्ञी

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–133

118. कर्मधारयसंज्ञा भवति–

(A) अव्ययीभावस्य

(B) समानाधिकरणस्य तत्पुरुषस्य

(C) असमानाधिकरणस्य तत्पुरुषस्य

(D) समानाधिकरणस्य बहुव्रीहेः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–108

104. (B) 105. (D) 106. (A) 107. (C) 108. (C) 109. (A) 110. (B) 111. (D) 112. (A) 113. (D)
114. (C) 115. (C) 116. (D) 117. (B) 118. (B)

119. कर्मधारयसमास-विधायकं सूत्रं किम्?

(A) सह सुपा (B) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्

(C) अनेकमन्यपदार्थे (D) अर्धं नपुंसकम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–112

120. 'द्वादश' पद में समास है?

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय

(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–165

121. 'नीलोत्पलम्' में समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु

(C) द्वन्द्व (D) कर्मधारय

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–112

122. 'हरिहरौ' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं किम्?

(A) द्वन्द्वे घि (B) अजाद्यदन्तम्

(C) अल्पाच्तरम् (D) निष्ठा

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–147

123. 'पीताम्बरम्' शब्द में समास है?

(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष

(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–262

124. 'पीतम् अम्बरम् इति पीताम्बरम्' में कौन-सा समास है?

(A) बहुव्रीहिसमास (B) केवलसमास

(C) कर्मधारयसमास (D) तत्पुरुषसमास

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–262

125. 'पीताम्बरम्' का विग्रह है?

(A) पीतं च तत् अम्बरम् (B) पीतम् अम्बरम् यस्य सः

(C) पीतम् अम्बरम् येन सः (D) पीतम् अम्बरं यस्मिन्

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–262

126. 'महान् च असौ राजा' इससे रूप बनता है?

(A) महाराजः (B) महद्राजः

(C) महद्राजा (D) महराजा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–163

127. 'महाराजः' पद में समास है?

(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष

(C) बहुव्रीहि (D) द्विगु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–163

128. 'किंसखा' में कौन-सा समास है?

(A) द्वन्द्व (B) द्विगु

(C) अव्ययीभाव (D) कर्मधारय

स्रोत–किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज–54

129. 'किं राजा' इत्यस्य कः समासविग्रहः?

(A) कुत्सितः राजा (B) किम् राजा

(C) न राजा (D) कः राजा

स्रोत–किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज–55

130. 'घनश्यामः' में कौन-सा समास है?

(A) कर्मधारय (B) अव्ययीभाव

(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–117

131. द्विगुसमासः कः?

(A) अव्ययपूर्वः (B) संख्यापूर्वः

(C) निपातपूर्वः (D) क्रियापूर्वः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–109

132. 'हरिहरौ' शब्द का विग्रह होता है–

(A) हरि च हरौ च (B) हरिश्च हरश्च

(C) हरि च हरौ च (D) हरी च हरौ च

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–147

133. 'त्रिलोकी' पद में समास का नाम है?

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व

(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111

134. 'पञ्चगवम्' में समास है?

(A) कर्मधारय (B) अव्ययीभाव

(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111

119. (B) 120. (D) 121. (D) 122. (A) 123. (A) 124. (C) 125. (A) 126. (A) 127. (A) 128. (D)
129. (A) 130. (A) 131. (B) 132. (B) 133. (A) 134. (C)

135. 'पञ्चगवम्' का विग्रहवाक्य होगा–

(A) पञ्चानां गोवां समाहारः (B) पञ्चानां गवां समाहारः

(C) पञ्चानां गवा समाहारः (D) पञ्चानां गवेतरा समाहारः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–110

136. 'पञ्चगावो धनं यस्य' इत्यस्य समस्तपदमस्ति–

(A) पञ्चगवधनम् (B) पञ्चगुः

(C) पञ्चगोधनम् (D) पञ्चगवधनः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–106

137. पञ्चानां मूलानां समाहारः–

(A) पञ्चमूलम् (B) पञ्चमूल

(C) पञ्चमूला (D) पञ्चमूली

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111

138. 'पञ्चवटी' में समास है?

(A) अव्ययीभावः (B) द्विगुः

(C) द्वन्द्वः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–251

139. द्विगुसमास का उदाहरण है?

(A) द्वित्राः (B) उपकूलम्

(C) पाणिपादम् (D) पञ्चवटी

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–251

140. 'त्रिभुवनम्' इत्यत्र कः समासः?

(A) तत्पुरुष (B) द्विगु

(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111

141. द्विगुसमास का उदाहरण है?

(A) राजा-रानी (B) पीताम्बर

(C) त्रिभुवनम् (D) भूदेव

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111

142. 'नवानां रात्रीणां समाहारः' समस्तपदमस्ति?

(A) नवरात्रः (B) नवरात्रिः

(C) नवरात्रम् (D) नवरात्री

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–161

143. 'पञ्चानां पात्राणां समाहारः' इत्यस्य समस्तपदमस्ति?

(A) पञ्चपात्रः (B) पञ्चपात्री

(C) पञ्चपात्राणि (D) पञ्चपात्रम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111

144. 'पञ्चपात्रम्' इत्यत्र कः समासः?

(A) द्विगुः (B) द्वन्द्वः

(C) तत्पुरुषः (D) कर्मधारयः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111

145. 'सप्तर्षयः' समासविधायकं सूत्रं किम्?

(A) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्

(B) दिक्संख्ये संज्ञायाम्

(C) चार्थे द्वन्द्वः

(D) दिङ्नामान्यन्तराले

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–99

146. 'त्रिवेणी' पद में कौनसा समास है?

(A) द्वन्द्वसमास (B) अव्ययीभावसमास

(C) तत्पुरुषसमास (D) द्विगुसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111

147. निम्नलिखित वर्गों में किस वर्ग में समास का उदाहरण अशुद्ध है?

(A) अव्ययीभाव 1. यथाक्रमम्, उपगङ्गम्

(B) द्विगु 2. पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम्

(C) तत्पुरुष 3. ग्रामगतः, सुखप्राप्तः

(D) द्वन्द्व 4. रामकृष्णौ, पितरौ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42

148. बहुव्रीहि समास में कौन पद प्रधान होता है?

(A) पूर्वपदप्रधानः (B) उत्तरपदप्रधानः

(C) उभयपदप्रधानः (D) अन्यपदप्रधानः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

135. (B) 136. (D) 137. (D) 138. (B) 139. (D) 140. (B) 141. (C) 142. (C) 143. (D) 144. (A) 145. (B) 146. (D) 147. (B) 148. (D)

149. अन्यपद की प्रधानता वाला समास होता है?

(A) द्विगुः (B) द्वन्द्वः

(C) अव्ययीभावः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

150. 'द्विमूर्धः' पद में समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु

(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–209

151. 'पञ्चाननः' में समास है?

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) द्विगु (D) कर्मधारय

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

152. 'चित्रगुः' का विग्रहवाक्य है?

(A) चित्रा चासौ गोः (B) चित्रा गावो यस्य सः

(C) चित्राणां गवां समाहारः (D) चित्रायाः गौः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–198

153. 'रूपवद्भार्यः' पद में समास है?

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व

(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–199

154. 'रूपवती भार्या यस्य' इत्यस्य समस्तपदं भवति–

(A) रूपवतीभार्यः (B) रूपवतीभार्यम्

(C) रूपवद्भार्यः (D) रूपवद्भार्या

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–199

155. 'चक्रपाणिः' में कौन-सा समास है?

(A) द्वन्द्वः (B) द्विगुः

(C) तत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–263

156. ''चक्रं पाणौ यस्य सः'' इत्यस्य समस्तपदं किम्?

(A) चक्रपाणिः (B) चक्रपाणी

(C) पाणिचक्रम् (D) पाणिचक्रिन्

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–263

157. 'चन्द्रशेखरः' में कौन-सा समास है?

(A) समानाधिकरण बहुव्रीहि

(B) व्यधिकरण बहुव्रीहि

(C) तत्पुरुष

(D) द्वन्द्व

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–263

158. 'शशिशेखरः' में समास है?

(A) बहुव्रीहि (B) कर्मधारय

(C) द्वन्द्व (D) नञ् तत्पुरुष

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–263

159. 'स्त्रीप्रमाणः' में समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व

(C) द्विगु (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–202

160. 'सीता जाया यस्य सः' एक शब्द में होगा–

(A) सीताजाया (B) सीतापत्नी

(C) सीताजानिः (D) सीतापतिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–199

161. 'ऊढः रथः येन सः' इत्यस्य समस्तपदं किम्?

(A) ऊढरथः (B) रथोढः

(C) रथेऊढः (D) रथरुढः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–190

162. 'द्वौ पादौ यस्य सः' किसका विग्रह है–

(A) द्विपादः (B) द्विपात्

(C) द्विपद् (D) द्विपदी

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–213

163. 'सुपात्' इत्यत्र कः समासः?

(A) तत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः

(C) द्वन्द्वः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–213

149. (D) 150. (D) 151. (B) 152. (B) 153. (D) 154. (C) 155. (D) 156. (A) 157. (B) 158. (A)
159. (D) 160. (C) 161. (A) 162. (B) 163. (B)

164. 'पीताम्बरः' का विग्रहवाक्य है?

(A) पीतं च तत् अम्बरम् (B) पीतम् अम्बरं यस्य सः

(C) पीतम् अम्बरं येन सः (D) पीतम् अम्बरं यस्मिन्

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–126

165. 'पीताम्बरः' में कौन-सा समास है–

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–126

166. 'लम्बोदरः' उदाहरण है?

(A) बहुव्रीहिसमास का (B) द्वन्द्वसमास का

(C) द्विगुसमास का (D) कर्मधारयसमास का

स्रोत–संस्कृत व्याकरण और रचना (लूसेन्ट)-अरविन्द कुमार,पेज–236

167. 'द्विन्नाः' किसका उदाहरण है?

(A) कर्मधारय का (B) बहुव्रीहि का

(C) द्वन्द्व का (D) अव्ययीभाव का

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–205

168. 'अपुत्रः' में समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) नञ्समास

(C) बहुव्रीहि (D) कर्मधारय

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–196

169. 'नीलकण्ठः' में समास है?

(A) द्विगु (B) कर्मधारय

(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–184

170. 'अपुत्रः'–

(A) न पुत्रः (B) पुत्रस्य अभावः

(C) अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः (D) न पुत्रः यस्य सः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–196

171. उभयपदप्रधानो कः समासः?

(A) बहुव्रीहिः (B) अव्ययीभावः

(C) तत्पुरुषः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02

172. 'पितरौ' इत्यस्य पदस्य विग्रहः?

(A) पिता च कन्या च (B) माता च पिता च

(C) भ्राता च पिता च (D) स्वसा च पिता च

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–142

173. 'चटकौ' में कौन-सा समास है?

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व

(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–260

174. 'शीतोष्णम्' शब्द में क्या समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व

(C) बहुव्रीहि (D) तत्पुरुष

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–827

175. 'पाणिपादम्' में समास है?

(A) इतरेतरद्वन्द्व (B) समाहारद्वन्द्व

(C) एकशेषद्वन्द्व (D) अलुक्तत्पुरुष

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–148

176. 'पाणिपादम्' अस्मिन् पदे समासविग्रहः भवति–

(A) पाणी च पादौ च (B) पाणिः च पादम् च

(C) पाणिना च पादेन च (D) पाणिं च पादौ च

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–148

177. पितरौ ..... समास का उदाहरण है–

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

स्रोत–समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–148

178. 'अहिनकुलम्' इसका समास विधायक सूत्र है?

(A) द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्

(B) विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि

(C) राजदन्तादिषु परम्

(D) येषां च विरोधः शाश्वतिकः

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–818

179. 'अहिनकुलम्' का विग्रह है?

(A) अहिश्च नकुलश्च (B) अहिन् नकुलम्

(C) अहिः नकुलम् (D) अहिश्च नकुलौ च

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–817

164. (B) 165. (B) 166. (A) 167. (B) 168. (C) 169. (C) 170. (C) 171. (D) 172. (B) 173. (B)
174. (B) 175. (B) 176. (A) 177. (B) 178. (D) 179. (A)

180. 'अहिनकुलम्' पद में समास है?

(A) द्वन्द्व (B) बहुव्रीहि

(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–818

181. 'नक्तन्दिवम्' में समास है?

(A) कर्मधारय (B) अव्ययीभाव

(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

स्रोत–किरातार्जुनीयम्-रामसेवक दुबे, पेज–66

182. 'दम्पती' अस्मिन् पदे समास-विग्रहः भवति–

(A) पिता च भ्राता च (B) पिता च पतिश्च

(C) पिता च पुत्रश्च (D) जाया च पतिश्च

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–235

183. 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' इत्यस्य उदाहरणं नास्ति–

(A) सीतारामौ (B) मयूरीकुक्कुटौ

(C) अर्धपिप्पली (D) कुक्कुटमयूर्यौ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–169

184. 'जगतः पितरौ वन्दे' इत्यत्र 'पितरौ' इत्यस्य कोऽर्थः–

(A) पितृद्वयम् (B) माता च पिता च

(C) मातृद्वयम् (D) पितृसमौ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–239

185. 'मातापितरौ' इत्यत्र कः समासः?

(A) कर्मधारयः

(B) अव्ययीभावः

(C) तत्पुरुषः

(D) द्वन्द्वः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–239

186. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(अ) कर्मधारयः	(i) पीताम्बरः
(ब) अव्ययीभावः	(ii) त्रिभुवनम्
(स) द्विगुः	(iii) निर्मक्षिकम्
(द) बहुव्रीहिः	(iv) कृष्णसर्पः

	अ	ब	स	द
(A)	i	iii	ii	`iv
(B)	iii	i	iv	ii
(C)	ii	iii	iv	i
(D)	iv	iii	ii	i

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–30, 115, 111, 191

शुद्धता, सत्यता, सरलता हमारी पहचान

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *

TGT, PGT, UGC-NET/JRF, UP-TET

संस्कृत की समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु

संस्कृतगंगा प्रकाशन की पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करें

सम्पर्क सूत्र 8004545095, 8004545096

180. (A) 181. (C) 182. (D) 183. (A) 184. (B) 185. (D) 186. (D)

14 Unit

काव्यदीपिका
(श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य)

काव्यलक्षण

श्री कान्तिचन्द्रभट्टाचार्य जी ने काव्यदीपिका के प्रथम शिखा में काव्यस्वरूप का वर्णन करते हुए अन्य आचार्यों के काव्य-लक्षण बताए हैं-

आचार्य दण्डी का काव्यलक्षण-

- **'इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदाऽऽवली'** (दण्डी का.-1/10)
  अर्थात् हृदय को आप्यायित करने वाले अर्थों से युक्त पद समूह को काव्य कहते हैं।
  इष्ट अर्थात् अलौकिक चमत्कार जनक होने के कारण सहृदयहृदयाह्लादक जो कविनिबद्ध पदार्थ उनसे व्यवच्छिन्न (अलंकृत) पदावली पद समुदाय को 'काव्य' कहते हैं।
- 'तेरा शत्रु मर गया', 'तेरे घर पुत्र पैदा हुआ' इत्यादि वाक्यों से उत्पन्न हर्ष लोकोत्तर नहीं है, अतः इन वाक्यों में काव्यत्व व्यवहार नहीं होता। अतः लोकोत्तरचमत्कार द्वारा सहृदय (रसिक) के हृदय को आकर्षित करने वाला ही 'वाक्य' काव्य है-

  'रिपुस्ते मृतः' 'पुत्रस्ते जातः' इत्यादिवाक्येन जनितस्य आह्लादस्य न लोकोत्तरत्वमिति न तत्र काव्यत्वप्रसक्तिः। तथा च लोकोत्तरचमत्कारितया सहृदयाकर्षि वाक्यं काव्यमिति फलितम् ।
- जिस वाक्य के सुनने से उत्पन्न विलक्षण चमत्कार सामाजिकों के मन को बलपूर्वक वश में करके अनुरक्त करे, वह वाक्य काव्य कहा जाता है-

  यत् खलु विलक्षणचमत्कारितया बलादिव वशमानीयसामाजिकमनांसि रञ्जयति।

1. **यथा-**
   मानुषीभ्यः कथं नु स्यादस्य रूपस्य सम्भवः।
   न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्॥ (अभि.1)
   ऐसे सुन्दर रूप की उत्पत्ति स्त्री से कैसे हो सकती है? क्योंकि प्रभा से चमकती हुई ज्योति पृथ्वी से उत्पन्न नहीं हो सकती है।
2. **उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।**
   अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः॥ (अभि.4)
   अर्थात् शकुन्तला के विरह की व्यथा से मृगी ने कुश के कवल (ग्रास) को उगल दिया। मयूरी ने अपने नर्तन को बन्द कर दिया। पत्तों के गिराने से दुःख से मानों लतायें आँसू बहा रही हैं।
3. **अयि कठोर! यशः किल ते प्रियं,**
   किमयशो ननु घोरमतः परम् ।
   किमभवद् विपिने हरिणीदृशः,
   कथय नाथ! कथं बत मन्यसे ॥ (उत्तर.3)
   अर्थात् ऐ कठोर हृदय ! राम ! तुम्हें यश प्रिय है, किन्तु इससे बढ़कर अयश और क्या हो सकता है?। वन में, मृगनयनी सीता की क्या दशा हुई? हे नाथ? उसके जीवन के विषय में तुम क्या (मानते हो) हाय! कहो। उपर्युक्त वाक्यों के पढ़ने से ही कोई विलक्षण आनन्द सहृदयों को होता है, अतः ये 'काव्य' कहे जाते हैं।

काव्य-प्रयोजन

काव्यदीपिका के अनुसार काव्य प्रयोजन-

श्री कान्तिचन्द्रभट्टाचार्य काव्यदीपिका की प्रथम शिखा में काव्य का प्रयोजन कहते हैं-

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥2॥ (मम्मटः)
काव्य यश तथा धन के लिये, व्यवहारज्ञान तथा दुःखनाश के लिए, काव्य सुनते पढ़ते ही अलौकिक आनन्दानुभव के लिए और कान्ता के मधुर उपदेशों के समान उपदेश के लिए है।

- आचार्य मम्मट काव्य के छः प्रयोजन बताये हैं जो इस प्रकार हैं-

1. **काव्यं यशसे-** कालिदास आदि के समान यश की प्राप्ति के लिए।
2. **अर्थकृते-** श्रीहर्ष आदि से धावक आदि के समान धन प्राप्ति के लिए।

3. **व्यवहारविदे-** लोकाचार का ज्ञान, अमृतमय उपदेशों द्वारा राम की तरह आचरण करना रावण की तरह न करना इत्यादि सन्मार्ग प्रदर्शन।
4. **शिवेतरक्षतये-** अमङ्गलनाश के लिये।
5. **सद्यः परनिर्वृतये-** परम आनन्द की प्राप्ति के लिये।
6. **कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे-** कान्तासम्मित उपदेश के लिये।

काव्य-भेद

श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य प्रणीत काव्यदीपिका की तृतीय शिखा में काव्य भेद का निरूपण है।

ध्वन्यादिभेदेन काव्यस्य भेदत्रयमाह

काव्यं ध्वनिर्गुणीभूतव्यङ्ग्यं चित्रमिति त्रिधा ॥3.1॥

काव्य ध्वनि, गुणीभूतव्यङ्ग्य और चित्र भेद से तीन प्रकार का होता है-

(1) ध्वनिकाव्य (उत्तमकाव्य)

(2) गुणीभूतव्यङ्ग्य (मध्यमकाव्य)

(3) चित्रकाव्य (अधमकाव्य)

ध्वनि का लक्षण करते हुए आचार्य विश्वनाथ कहते हैं-

(1) ध्वनिकाव्य (उत्तमकाव्य)-

''वाच्यातिशयिनि व्यङ्ग्ये ध्वनिस्तत् काव्यमुत्तमम्।''

वह ध्वनि नामक उत्तम काव्य है जहाँ वाच्य की अपेक्षा अधिक चमत्कारी व्यङ्ग्य हो। ध्वनि आदि के भेद से काव्य के तीन भेद किये गये हैं।

- **यस्मिन् काव्ये व्यङ्ग्ये वाच्यार्थादधिकचमत्कारी, तन्नाम ध्वनिः, तच्च उत्तमं काव्यम्।**

जिस काव्य में व्यङ्ग्यार्थ वाच्यार्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कारी हो वह ध्वनि है, और वही यह उत्तम काव्य होता है।

(2) गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्य (मध्यमकाव्य)-

''अनुत्तमे गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु वाच्यतः।''

वाच्य से व्यङ्ग्य जहाँ अधिक चमत्कारी नहीं होता है उसे गुणीभूतव्यङ्ग्य कहते हैं।

- **व्यङ्ग्ये-व्यङ्ग्यार्थे, वाच्यतः-वाच्यार्थात्, अनुत्तमे-अनधिक चमत्कारिणि सति, गुणीभूतव्यङ्ग्यम्, तच्च मध्यमं काव्यं कथ्यते।**

व्यङ्ग्यार्थ, वाच्यार्थापेक्षया अधिक चमत्कारी न हो तो गुणीभूतव्यङ्ग्य नामक काव्य होता है। यही मध्यमकाव्य है।

यथा-

अत्राऽऽसीत् फणिपाशबन्धनविधिः शक्त्या भवद्देवरे गाढं वक्षसि ताडिते हनुमता द्रोणाद्रिरत्राऽऽहृतः दिव्यैरिन्द्रजिदत्र लक्ष्मणशरैर्लोकान्तरं लम्भितः केनाप्यत्र मृगाक्षि ! राक्षसपतेः कृत्ता च कण्ठाटवी॥

पुष्पकविमान से अयोध्याप्रस्थित भगवान् रामचन्द्र जी सीता को युद्धस्थल दिखा रहे हैं। हे सीता यहाँ पर नागपाश से सब बाँधे गये थे। यहाँ पर तुम्हारे देवर लक्ष्मण को शक्ति द्वारा वक्षस्थल में मारने पर हनुमान् द्वारा द्रोणाचल पर्वत लाया गया था। यहाँ पर दिव्यास्त्रों से लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का वध हुआ था। हे हरिणनयने ! राक्षस राज रावण के कण्ठसमूह को यहाँ पर किसी ने काट डाला है।

(3) चित्रकाव्य (अधमकाव्य) -

''व्यङ्ग्यार्थहीनं काव्यं यत् तत्तु चित्रमिति स्मृतम्''।

जो काव्य व्यङ्ग्यार्थ से हीन हो वह चित्रकाव्य कहा जाता है-

- **चित्रमिति-गुणालङ्कारयुक्तम्, व्यङ्ग्यार्थहीनम्-स्फुटप्रतीयमानव्यङ्ग्यार्थ-रहितम्, तच्च अधमं काव्यमुच्यते।**

गुण और अलङ्कार से युक्त व्यङ्ग्यार्थ से हीन काव्य, अधम काव्य कहा जाता है।

''शब्दचित्रं वाच्यचित्रं द्विविधं तत्प्रकीर्त्तितम्''।

शब्दचित्र और वाच्यचित्र के भेद से चित्रकाव्य दो प्रकार का होता है।

1. शब्दचित्र 2. वाच्यचित्र

1. **शब्दचित्र- 'यत्र वाच्यार्थात् शब्दस्य प्राधान्येन चमत्कारित्वं, तत् शब्दचित्रम्'।**

जहाँ पर वाच्यार्थ की अपेक्षा शब्द की ही अधिक चमत्कारिता हो, वह शब्दचित्र कहा जाता है। जैसे-

कूजत्कुञ्जकुटीरकौशिकघटाघूत्कारवत्कीचक-स्तम्बाऽऽडम्बरमूकमौकुलिकुलः क्रौञ्चावतोऽयं गिरिः। एतस्मिन् प्रचलाकिनां प्रचलतामुद्वेजिताः कूजितै - रुद्वेल्लन्तिपुराणचन्दनतरुस्कन्धेषु कुम्भीनसाः॥

कुञ्जरूपी कुटिया में उल्लुओं के झुण्ड के घूघू शब्द की गूँज से कीचक नामक बाँस के समुदाय में चुपचाप छिपे हुये काकसमूह से व्याप्त यह क्रौञ्चवान् नाम का पर्वत है। इसमें चलते हुये मयूरों के शब्दों से डरे हुये सर्प पुराने चन्दन-वृक्ष की डालियों पर रेंग रहे हैं।

- इसमें ककारानुप्रास बहुत है, अतः सालङ्कार वाक्य होने से यह शब्दचित्र काव्य हुआ।

2. **वाच्यचित्र- ''यत्र शब्दात् वाच्यार्थस्य प्राधान्येन चमत्कारित्वं तद् वाच्यचित्रम्''।**

जहाँ पर वाच्यार्थ ही प्रधानतया चमत्कारी हो, वह वाच्यचित्र कहा जाता है। जैसे -

ते दृष्टिमात्रपतिता अपि कस्य नात्र
क्षोभाय पक्ष्मलदृशामलकाः खलाश्च।
नीचाः सदैव सविलासमलीकलग्ना
ये कालतां कुटिलतामिव न त्यजन्ति॥

स्त्रियों के केश और दुष्टपुरुष, आँख के सामने पड़ते ही किसे क्षोभ नहीं देते? क्योंकि केश और खल सर्वदा नीच हैं। मस्तक, केश तथा झूठ बोलने में प्रवृत्त दुष्टपुरुष है। ये दोनों कुटिलता के समान कालिमा को नहीं छोड़ते।

- यहाँ पर शब्दों के जो अर्थ हैं, वे ही चमत्कारी हैं, इसलिए यह वाच्यचित्र कहा गया।

शब्दशक्ति

- श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य जी ने काव्यदीपिका के 'शब्दार्थ-निरूपण' नामक द्वितीय शिखा में शब्दशक्तियों का विवेचन करते हैं।
- शब्द तीन प्रकार का होता है। जैसा मम्मट ने काव्यप्रकाश में कहा है कि वाचक, लाक्षणिक, व्यञ्जक भेद से साहित्य शास्त्र में तीन प्रकार का शब्द माना गया है-

'स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा' (2.2)

- आचार्य मम्मट का समर्थन करते हुए श्रीकान्तिचन्द्र-भट्टाचार्य ने भी अर्थ के तीन भेद माने हैं- वाच्य, लक्ष्य और व्यङ्ग्य।

'वाच्यादयस्तदर्थाः स्युः मम्मटेन यथोदिताः' (2.2)

- साक्षात् संकेतित अर्थ को बतलाने वाला ही वाचक कहा जाता है।

'साक्षात् सङ्केतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः' (2.3 मम्मटः)

1. **अभिधा शब्दशक्ति-**

साक्षात् संकेतित अर्थ जैसे इन शब्दों की स्वतः शक्ति व्याकरणादिकों के द्वारा नियन्त्रित है, जैसे घट शब्द के उच्चारण से घट अर्थ जानना यह भी अभिधा नामक की शक्ति कही जाती है-

साक्षात् संकेतितस्तु 'अस्मात् शब्दादयमर्थो बोद्धव्यः' इति शब्दस्य स्वाभाविक्य । शक्त्या व्याकरणादिना वा नियन्त्रितः। इयमेव शक्तिः 'अभिधा' इत्युच्यते।
यथा-
गोशब्दोऽभिधयागलकम्बलादिमज्जीव विशेषरूपं,
पाचकशब्दश्च पाककर्तृरूपं चार्थं साक्षात् बोधयति।

2. **लक्षणा शब्दशक्ति-**

मुख्यार्थ के बाध होने पर मुख्यार्थ से सम्बद्ध अन्यार्थ की प्रतीति जिस वृत्ति से होती हो वह लक्षणा नामक शक्ति कही गई है-

मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता॥ (2.4 विश्वनाथः)

- मुख्यार्थ का अन्वयानुपपत्ति के कारण मुख्यार्थ से सम्बद्ध द्वितीय अर्थ रूढि या प्रयोजन रूप कारण के रहने से जिस वृत्ति से प्रतीत होता है वह लक्षणा नाम वृत्ति है।
- रूढि का अर्थ प्रसिद्धि है। जैसे- कलिङ्गः साहसिकः - इस वाक्य में कलिङ्ग शब्द देश विशेष रूप अपने मुख्यार्थ द्वारा साहसिकत्व को असम्भव समझकर उस देश के वासी पुरुषों का बोध कराता है। अतः कलिङ्गपुरुषः साहसिकः यह वाक्य बन जाता है। इस लक्षण में प्रसिद्धि ही मूल है। कलिङ्ग शब्द देश के ही रूप में प्रसिद्ध है।
- 'गङ्गायां घोषः' इस वाक्य में गङ्गा शब्द का मुख्यार्थ प्रवाह है। गंगा के प्रवाह में घोष (अहीर की मड़ई) नहीं रह सकती। अतः गंगापद अपने मुख्यार्थ द्वारा अर्थ बतलाने में असमर्थ होने के कारण सन्निकटवर्तितट का बोध कराता है। अतः गङ्गायां घोषः इस वाक्य का 'गङ्गातटे घोषः' यह अर्थ होता है। यह प्रयोजनवती लक्षणा का उदाहरण है।

उदाहरण-

उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते?
सुजनता प्रथिता भवता परम्।
विदधदीदृशमेव सदा सखे!
सुखितमास्व ततः शरदां शतम्॥

- इस उक्ति से उपकार आदि शब्द अपने मुख्यार्थ से असंबद्ध होकर विपरीत सम्बन्ध से (तूने मेरा बड़ा अपकार किया है, बड़ी दुर्जनता दिखलाया है ऐसा करते हुए तुम दुःखित जीवन बिताओ) यह अर्थ बतला रहे हैं। अपकारातिशय यहाँ पर व्यङ्ग्य है। अतः यह भी प्रयोजनवती लक्षणा का उदाहरण है।

लक्षणा के भेद- लक्षणा चार प्रकार की होती है-

(1) रूढिमूला उपादानलक्षणा	- श्वेतो धावति
(2) रूढिमूला लक्षणलक्षणा	- कुन्ताः प्रविशन्ति
(3) प्रयोजनवती उपादानलक्षणा	- कलिङ्गःसाहसिकः
(4) प्रयोजनवती लक्षणलक्षणा	- उपकृतं बहु तत्र इत्यादि श्लोक

उपादान लक्षणा- अपने अर्थ को बोध कराने के लिए जहाँ पर दूसरे पद का आक्षेप किया जाय, उपादान लक्षणा कहते हैं।

'स्वसिद्धये परार्ऽऽक्षेपेऽसावुपादानलक्षणा' (2.6)

जैसे- 'यष्टयः प्रविशन्ति' इस वाक्य में यष्टि (दण्डा) का स्वतः प्रवेश करना असम्भव है। अतः यष्टि पद से यष्टि सम्बन्धी पुरुष का आक्षेप किया जाता है।

लक्षण लक्षणा- जो लक्षणा वाक्य के अन्वय बोध के लिए स्वार्थ का परित्याग करके भी परार्थ का बोध करावे वह लक्षण लक्षणा कही जाती हैं।

'परार्थमात्रबोधे तु भवेल्लक्षणा' (2.6)

इसे जहत्स्वार्था लक्षणा भी कहते है।

व्यञ्जना शब्दशक्ति- व्यञ्जना से अर्थ बोधक शब्द व्यञ्जक तथा उससे बोध्य अर्थ व्यङ्ग्य कहा जाता है। अभिधा, लक्षणा तथा तात्पर्याख्या वृत्तियाँ जब अपना अपना व्यापार करके विश्रान्त हो जाती हैं, उस समय जिस वृत्ति से अन्यार्थ की प्रतीति होती है, वह व्यञ्जना नाम की शब्द और अर्थ में रहने वाली वृत्ति है।

'सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च' (2.7 विश्वनाथः) अभिधा तथा लक्षणा अपना अर्थ बोध कराके जब शान्त हो गई हो उस अवस्था में जो अन्यार्थ की प्रतीति का प्रत्यायक है वह व्यञ्जना है।

'अभिधायां लक्षणायाञ्च स्वं स्वमर्थे बोधयित्वा विरतायां ययाऽपरोऽर्थो बोध्यते, सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम'।

जैसे-'गंगायां घोषः' इस वाक्य में अभिधा शक्ति ने गंगा पद का प्रवाहरूप अर्थ बतलाया उसके बाद गङ्गा में घोष की अनुपत्ति मूलक लक्षणा द्वारा गङ्गा पद का गंगातट अर्थ हुआ इसके बाद लक्षणोपासना का प्रयोजनभूत जो शीतत्वपावनत्वादि प्रतीति होती है। उस प्रतीति को बताने वाली वृत्ति का नाम व्यञ्जना है।

व्यञ्जना के भेद-

शब्द की भाँति अर्थ भी अर्थान्तर व्यञ्जक होता है। इसलिए शाब्दी व्यञ्जना और आर्थी व्यञ्जना के भेद से व्यञ्जना दो प्रकार की होती है-

'शब्दवदर्थोऽपि अर्थान्तरव्यञ्जकः इति प्रथमतो द्विविधा व्यञ्जना- शाब्दी, आर्थी च।

1. शाब्दी व्यञ्जना -

- शाब्दी व्यञ्जना भी दो प्रकार की होती है- अभिधामूला और लक्षणामूला।

'अभिधालक्षणामूला शब्दस्य व्यञ्जना द्विधा।'

- **अभिधामूला व्यञ्जना-**

संयोगादि की सहायता से अनेकार्थक शब्द के किसी एक अर्थ का निर्णय हो जाने पर जिसके द्वारा अन्य अर्थ का ज्ञान होता है वह अभिधामूला व्यञ्जना कहलाती है।

- **लक्षणामूला व्यञ्जना-**

जिसके लिए लक्षणा का आश्रय लिया जाता है वह प्रयोजन जिस वृत्ति के द्वारा बोधित होता है वह लक्षणामूला व्यञ्जना कहलाती है।

'लक्षणोपास्यते यस्य कृते तत्तु प्रयोजनम् ।' (2.10)
यया प्रत्याच्यते सा स्याद् व्यञ्जना लक्षणाऽऽश्रया॥'

जैसे- 'गङ्गायां घोषः' यहाँ पर प्रवाह-विशेष रूप (वाच्य) अर्थ को बताकर अभिधा शक्ति के और तट रूप (लक्ष्य) अर्थ को बताकर लक्षणा शक्ति के क्षीण हो जाने पर जो शक्ति शीतत्व और पावनत्व का आधिक्यरूप प्रयोजन को बोधित करती है- वह लक्षणामूला व्यञ्जना है।

2. आर्थी व्यञ्जना- वक्ता, बोद्धव्य, वाक्य, काकु और चेष्टा आदि की विशेषता के कारण जो शब्द-शक्ति अन्य अर्थ का बोधन करती है वह आर्थी व्यञ्जना कहलाती है-

वक्तृबोद्धव्यवाक्यानां काकोश्चेष्टाऽऽदिकस्य च।
वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत् साऽर्थसम्भवा॥ (2.11 विश्वनाथः)

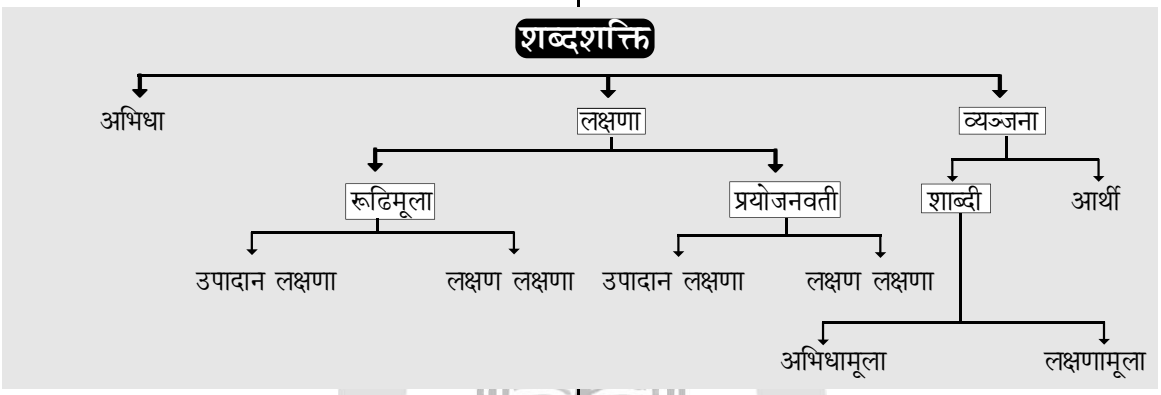
जैसे- 'गतोऽस्तमर्कः' (सूर्य अस्त हो गया) इस वाक्य से यदि बोलने वाला या जिसके प्रति उपर्युक्त वाक्य कहा जा रहा है, कोई आस्तिक ब्राह्मण हो तो, 'यह सन्ध्योपासन का समय है' यह व्यङ्ग्य प्रतीत होगा। यदि इस वाक्य को बोलने वाला या यह वाक्य जिसके प्रति कहा गया है वह किसी ग्वाले का लड़का है तो, 'गौवें इकट्ठी करो, घर लौटेंगे' यह व्यङ्ग्यार्थ प्रतीत होता है। इसी प्रकार और भी अर्थ वक्ता आदि की विशेषता से प्रतीत होते हैं।

- संयोग, विप्रयोग, साहचर्य, विरोधिता, अर्थ, प्रकरण, लिङ्ग, अन्य शब्द की सन्निधि, सामर्थ्य, औचित्य, देश, काल, व्यक्ति और स्वरादिक ये सब शब्दार्थ का अनिश्चय होने पर विशेष ज्ञान के कारण होते हैं। अर्थात् जब कभी किसी अनेकार्थक शब्द के तात्पर्य में संदेह होता है तो संयोगादि ही तात्पर्य के निर्णायक होते हैं।

संयोगादि उदाहरण सहित-

संयोग- सशङ्खचक्रो हरिः (शङ्ख चक्र सहित हरि)
विप्रयोग- फणहीनो नागः (फणरहित नाग)
साहचर्य- रामलक्ष्मणौ (राम और लक्ष्मण)

विरोधिता- रामार्जुनौ (परशुराम और कार्तवीर्य)
अर्थ- स्थाणुं भज भवच्छिदे (संसार से मुक्ति पाने के लिए स्थाणु का भजन करे)
प्रकरण- यथाऽऽज्ञापयति देवः (जो देव की आज्ञा)
लिङ्ग- कपर्दी भीमः (कपर्दधारी भीम)
अन्य शब्द की सन्निधि- स्थलारविन्दश्रियम् (स्थल कमल की श्री को)
सामर्थ्य- मधुना मत्तः कोकिलः (मधु से मत्त कोयल)
औचित्य- गौरेका तु मनस्विनः (मनस्वी पुरुष की एक ही गौ (वाणी) होती है)
देश- भाति गगने चन्द्रः (आकाश में चन्द्र शोभित हो रहा है)
काल- रात्रौ विभावसुः (रात्रि में विभावसु (अग्नि))
व्यक्ति- मित्रं भाति (मित्र शोभित हो रहा है)
स्वरादि- उदात्त आदि स्वर वेद में ही प्रसिद्ध हैं।



काव्य-गुण

श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य जी ने अपने ग्रन्थ **'काव्यदीपिका'** के षष्ठशिखा में आचार्य मम्मट के द्वारा उक्त गुणों के स्वरूप को प्रस्तुत किया है।

- **गुण का स्वरूप** (मम्मट) -
  'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्याऽऽदय इवाऽऽत्मनः।
  उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः ॥'
  जो अङ्गी रस के उत्कर्ष को बढ़ाने वाले और सदा उनके साथ रहने वाले धर्म हैं, वे गुण कहे जाते हैं। अतः जैसे- शौर्यादि गुण आत्मा के गुण है आकार (शरीर के) नहीं वैसे ही माधुर्यादि गुण रस के धर्म हैं, वर्णों के नहीं।
- **गुण के भेद -**
  'माधुर्य्यौजःप्रसादाऽऽख्यास्त्रयस्ते' समुदीरिताः।
  माधुर्य, ओज और प्रसाद तीन प्रकार के गुण होते हैं।
- **माधुर्य गुण का लक्षण -**
  'आह्लादकत्वं माधुर्य्यं चित्तस्य द्रुतिकारणम्।'
  चित्त को द्रवीभूत बनाने वाले आह्लाद (आनन्द) को माधुर्य कहते हैं।
- **'करुणे विप्रलम्भे तत् शान्ते चातिशयान्वितम् ।'**
  वह माधुर्य, करुण , विप्रलम्भ, शृङ्गार तथा शान्त रस में चित्त का द्रवीभाव अधिक पाया जाता है, क्योंकि चित्त अत्यन्त द्रुत हो जाया करता है।
  उदाहरण- तदिदं क्रियतामनन्तरं
  भवता बन्धुजनप्रयोजनम्।
  विधुरां ज्वलनातिसर्जनान्ननु!
  मां प्रापय पत्युरन्तिकम्। (कुमारस.4/32)
  ''मरने के बाद बन्धुजनों का जो प्रयोजन है, वह आप करें और इस मुझ दुःखिया को अग्नि में फेंककर पति के पास पहुँचा दें''।
- **ओज गुण का लक्षण-**
  विश्वनाथ के अनुसार-
  'ओजश्चित्तस्य विस्तारूपं दीप्तत्वमुच्यते ।
  वीरबीभत्सरौद्रेषु क्रमेणाऽऽधिक्यमस्य तु ॥'
  ''चित्त का विस्तार स्वरूप दीप्तत्व ओज कहलाता है। इसकी वीर, बीभत्स और रौद्र रस में अधिकता देखी जाती है।
  यथा- चञ्चद्भुजभ्रमितचण्डगदाऽभिघात,
  सञ्चूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य ॥
  स्त्यानावनद्धघनशोणितशोणपाणि,
  रुत्तंसयिष्यति कचाँस्तव देवि! भीमः॥ (वेणीसं.1/21)
  चञ्चल भुजाओं से घुमायी गई भयंकर गदा के अभिघात से

सुयोधन की टूटी हुई दोनों जङ्घाओं के गाढ़े रक्त से हाथ रंगकर हे देवि द्रौपदी! भीम तुम्हारे केशों को बाँधेगा। यह भीमसेन की द्रौपदी के सम्मुख की गई प्रतिज्ञा है।

- **प्रसाद गुण का लक्षण-**

'चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः।
स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च ॥'

शुष्क इन्धन में अग्निदेव शीघ्रता से व्याप्त हो जाते हैं, उसी प्रकार यदि अर्थ चित्त में बैठ जाया करे तो वह समस्त रस और रचना में प्रसाद नाम से कहा जाता है।

यथा- गृहिणी सचिवः सखी मिथः
प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।
करुणाविमुखेन मृत्युना हरता
त्वां वद किं न मे हृतम्? ॥ (रघु. 8/67)

जैसे- स्त्री, मंत्री, एकान्तमित्र, ललितकला में प्रियाशिष्या रूप तुम्हारा हरण करते हुए करुणा विमुख मृत्यु ने मेरा क्या नहीं हर लिया अर्थात् सर्वस्व हर लिया।

काव्यरीति

रीति का स्वरूप-

श्री कान्तिचन्द्रभट्टाचार्य जी ने **'काव्यदीपिका'** के सप्तमशिखा में **'रीति'** का स्वरूप बतलाये हैं।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

'पदसङ्घटना रीतिरङ्गसंस्थाविशेषवत्।'

जैसे मनुष्य के शरीर में अङ्गों की स्थिति होती है, वैसे काव्य में पदसंघटना को रीति कहते हैं।

वैदर्भी रीति का स्वरूप-

'माधुर्य्यव्यञ्जकैर्वर्णै रचना ललिताऽऽत्मिका।
अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते ॥

माधुर्यव्यञ्जक वर्णों से जो रचना ललित हो, समास रहित या छोटे-छोटे समासों से युक्त हो, उसे वैदर्भी रीति कहते हैं ।

उदाहरण-

तदिदं क्रियतामनन्तरं भवता बन्धुजनप्रयोजनम्।
विधुरां ज्वलनातिसर्जनान्ननु ! मां प्रापय पत्युरन्तिकम्॥
(कुमारस.4/32)

जैसे- मरने के बाद बन्धुजनों का जो प्रयोजन है, वह आप करें और इस मुझ दुःखिया को अग्नि में फेंककर पति के पास पहुँचा दें।

गौडी रीति का स्वरूप-

'ओजः प्रकाशकैर्वर्णैर्बन्ध आडम्बरः पुनः।
समासबहुला गौडी दर्पणे समुदीरिता ॥'

ओज को प्रकाशित करने वाले कठोर वर्णों से बने हुए अधिक बड़े-बड़े समस्त पदों से युक्त आडम्बर को गौडी रीति कहते हैं।

यथा- चञ्चद्भुजभ्रमितचण्डगदाऽभिघात,
सञ्चूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य।
स्त्यानावनद्धघनशोणितशोणपाणि–
रुत्तंसयिष्यति कचाँस्तव देवि! भीमः॥ (वेणीसं.1/21)

जैसे- चञ्चल भुजाओं से घुमायी गई भयंकर गदा के अभिघात से सुयोधन की टूटी हुई दोनों जङ्घाओं के गाढ़े रक्त से हाथ रङ्गकर हे देवि द्रौपदी! भीम तुम्हारे केशों को बाँधेगा। यह भीमसेन की द्रौपदी के सम्मुख की गई प्रतिज्ञा है।

संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम्

UP. TGT, PGT (संस्कृत) के छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तक में हर प्रश्न का महामंथन

आपके शिक्षक बनने का सपना हम करेंगे साकार

TGT प्रश्न मीमांसा

PGT प्रश्न मीमांसा

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करने के लिए हमें कॉल करें 8004545095, 8004545096

अभ्यास प्रश्न (काव्यदीपिका)

1. 'काव्यदीपिका' इत्यस्मिन् शीर्षके 'काव्य' इत्यस्य कोऽर्थः?
(A) कविनिबद्धालौकिकचमत्काराधायकवाक्यसमूहः
(B) कविनिबद्धलौकिकाचमत्काराधायकवाक्यसमूहः
(C) कविनिबद्धालौकिकाचमत्कारधायकवाक्यसमूहः
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका - रामगोविन्द शुक्ल, पेज-2

2. 'काव्यदीपिका' इत्यत्र 'दीपिका' शब्दस्य कोऽर्थः?
(A) काव्यस्य प्रकाशिका
(B) काव्यस्य ज्ञापिका
(C) काव्यस्य आवरणिका
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-2

3. 'मयूख' नामकटीका कस्य ग्रन्थस्य वर्तते?
(A) रसगङ्गाधरस्य (B) काव्यप्रकाशस्य
(C) काव्यदीपिकायाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-1

4. 'मातरं हृदये ध्यात्वा विशदाम्बुजवासिनीम्' पद्यांशेऽस्मिन् 'अम्बुजवासिनीम्' इति पदेन कस्याः देवतायाः बोधः भवति?
(A) सरस्वतीदेवतायाः (B) लक्ष्मीदेवतायाः
(C) पार्वतीदेवतायाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- काव्यदीपिका (1/1)

5. काव्यदीपिकायाः मङ्गलाचरणे ग्रन्थकारः स्तुतिं करोति-
(A) शिवस्य (B) गणेशस्य
(C) सरस्वत्याः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (1/1)

6. काव्यदीपिकायां ग्रन्थकारः कस्याचार्यस्य काव्यप्रयोजनम् अङ्गीकृतवान्?
(A) मम्मटस्य (B) विश्वनाथस्य
(C) दण्डिनः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (1/2)

7. काव्यदीपिकाकारः काव्यस्य कति प्रयोजनानि स्वीकृतवान्?
(A) षट् (B) पञ्च
(C) चत्वारि (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (1/2)

8. काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥
पद्येऽस्मिन् 'काव्यम्' इति पदस्य कोऽर्थः?
(A) कवेः कर्म (B) कवेः निन्दा
(C) कवेः सुखम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (1/2)

9. शिवेतरक्षतये' इत्यस्य कोऽर्थः?
(A) दुरितनिवारणाय (B) अनर्थनिवारणाय
(C) अर्थनिवारणाय (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-2

10. सकलप्रयोजनमौलिभूतं काव्यप्रयोजनं किमस्ति?
(A) सद्यःपरनिवृतये (B) अर्थकृते
(C) यशसे (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-2

11. काव्यदीपिकाकारेण उपदेशः कतिविधः प्रोक्तः?
(A) द्विविधः (B) चतुर्विधः
(C) त्रिविधः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-2

12. त्रिविधेषु शब्देषु (उपदेशेषु) आद्यः वर्तते-
(A) कान्तासम्मितः (B) सुहृत्सम्मितः
(C) प्रभुसम्मितः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-2

13. काव्यं वर्तते-
(A) कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे
(B) प्रभुसम्मिततयोपदेशयुजे
(C) सुहृत्सम्मिततयोपदेशयुजे
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-3

1.A 2.D 3.C 4.A 5.C 6.A 7.A 8.A 9.D 10.A 11.C 12.C 13.A

14. काव्यदीपिका विभक्ता वर्तते-
(A) शिखासु (B) उल्लासेषु
(C) अध्यायेषु (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-1

15. काव्यदीपिकायां रीतिविवेचनं कस्यां शिखायां वर्तते?
(A) सप्तमशिखायाम् (B) अष्टमशिखायाम्
(C) षष्ठशिखायाम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-116

16. काव्यदीपिकायां प्रथमशिखायाः विषयः वर्तते-
(A) काव्यनिरूपणम् (B) काव्यभेदः
(C) गुणस्वरूपम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-7

17. 'काव्यदीपिका' कस्य कृतिः वर्तते?
(A) श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्यस्य
(B) श्रीकृष्णचन्द्रभट्टाचार्यस्य
(C) श्रीचिन्तामणिभट्टस्य
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-1

18. श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण कस्य आचार्यस्य काव्यलक्षणम् अङ्गीकृतम्?
(A) दण्डिनः (B) मम्मटस्य
(C) जगन्नाथस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (1/3)

19. काव्यदीपिकायां शिखाः सन्ति-
(A) दश (B) अष्ट
(C) षट् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- काव्यदीपिका - रामगोविन्दशुक्ल, भू. पेज-2

20. इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली किमस्ति?
(A) काव्यस्य लक्षणम् (B) काव्यस्य प्रयोजनम्
(C) काव्यस्य हेतुः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (1/3)

21. 'यत् खलु.....बलादिव वशमानीय सामाजिकमनांसि रञ्जयति।' अत्र विलुप्तं पदं किम्?
(A) विलक्षणचमत्कारितया
(B) संलक्षणचमत्कारितया
(C) अचमत्कारितया
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- काव्यदीपिका (1/3)

22. श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्यानुसारेण वाक्यस्य लक्षणमस्ति-
(A) अन्वितैकार्थबोधे तु वाक्यं पदसमुच्चयः
(B) पदानां समूहः
(C) अभिहितैकार्थबोधे तु वाक्यं पदसमूहः
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- काव्यदीपिका (2/1)

23. काव्यदीपिकायां मयूखनामकटीका केन लिखिता?
(A) श्रीरामगोविन्दशुक्लेन (B) श्रीभास्करेण
(C) श्रीअरविन्देन (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-26

24. 'अन्वितैकार्थबोधे तु वाक्यं पदसमुच्चयः' इत्यत्र 'अन्वित' इति पदस्य कोऽर्थः?
(A) आकाङ्क्षायोग्यताऽऽसत्तियुक्तेन परस्परान्वितः
(B) आकाङ्क्षायोग्यतानासत्तियुक्तेन परस्परान्वितः
(C) आकाङ्क्षायोग्यताऽसक्तियुक्तेन परस्परान्वितः
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-7

25. 'सुप्तिङन्तं पदं प्राह पाणिनिमुनिसत्तमः' वाक्यमिदं कुतः उद्धृतम्?
(A) काव्यदीपिकायाः (B) रसगङ्गाधरात्
(C) काव्यादर्शात् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (2/1)

26. व्याकरणशास्त्रस्य प्रणेता आचार्यः कः?
(A) पाणिनिः (B) यास्कः
(C) पिङ्गलः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-8

27. 'जननी सुताननं सस्नेहमीक्षते' काव्यदीपिकायां वाक्यमिदं कस्य उदाहरणं वर्तते?
(A) वाक्यस्य (B) काव्यस्य
(C) पद्यस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज- 8

28. श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण शब्दः कतिविधः प्रोक्तः?
(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः
(C) पञ्चविधः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज- 9

14.A 15.A 16.A 17.A 18.A 19.B 20.A 21.A 22.A 23.A 24.A 25.A 26.A 27.A 28.A

29. 'साक्षात् सङ्केतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः' अत्र 'सङ्केतितः' इति शब्दस्य अर्थः वर्तते-
(A) अस्मात् शब्दाद् अयम् अर्थो बोद्धव्यः
(B) अस्मात् वर्णात् अयम् अर्थो बोद्धव्यः
(C) अस्मात् छान्दसः अयम् अर्थो बोद्धव्यः
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (2/3)

30. काव्यदीपिकाकारः कति शक्तयः (वृत्तयः) स्वीकृतवान्?
(A) तिस्रः (B) चतस्रः
(C) पञ्च (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (2/3,4,7)

31. काव्यदीपिकाकारः कां शक्तिं (वृत्तिं) न अङ्गीकृतवान्?
(A) लक्षणाम् (B) व्यञ्जनाम्
(C) तात्पर्याम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- काव्यदीपिका (2/3,4,7)

32. लक्षणायाः अवबोधकः शब्दः कः?
(A) लाक्षणिकः (B) लक्षणा
(C) लक्षणकः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-12

33. 'कलिङ्गः साहसिकः' उदाहरणं वर्तते-
(A) रूढिलक्षणायाः (B) प्रयोजनवतीलक्षणायाः
(C) व्यञ्जनायाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-12

34. लक्षणा प्रमुखरूपेण कतिविधा?
(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) पञ्चविधा (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (2/5)

35. लक्षणायाः भेदौ स्तः-
(A) रूढिमूला (B) प्रयोजनमूला
(C) तात्पर्या (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (2/5)

36. 'स्वसिद्धये पराक्षेपे' का लक्षणा भवति?
(A) उपादानलक्षणा (B) लक्षणलक्षणा
(C) जहत्स्वार्था (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (2/6)

37. 'परार्थमात्रबोधे' का लक्षणा भवति?
(A) उपादानलक्षणा (B) जहत्स्वार्था
(C) लक्षणलक्षणा (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (2/6)

38. उपादानलक्षणायाः नामान्तरं वर्तते-
(A) जहत्स्वार्था (B) अजहत्स्वार्था
(C) तात्पर्या (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (2/6)

39. अभिधायां लक्षणायाञ्च स्वं स्वमर्थं बोधयित्वा विरतायां यया अपरः अर्थः बोध्यते, सा वृत्तिः कथ्यते-
(A) जहत्स्वार्था (B) व्यञ्जना
(C) अजहत्स्वार्था (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-17

40. 'शब्दवदर्थोऽपि अर्थान्तरव्यञ्जकः' इति वाक्यानुसारं व्यञ्जना कतिधा?
(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्विधा (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-17

41. व्यञ्जनायाः भेदौ स्तः-
(A) अभिधामूला (B) लक्षणामूला
(C) तात्पर्यमूला (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-17

42. काव्यदीपिकायां लिङ्गस्य उदाहरणं वर्तते-
(A) कपर्दी भीमः (B) स्थलारविन्दश्रियम्
(C) मधुना मत्तः कोकिलः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज 20

43. काव्यदीपिकायां द्वितीयशिखायाः नाम वर्तते-
(A) काव्यनिरूपणम् (B) शब्दार्थनिरूपणम्
(C) गुणस्वरूपम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-26

44. काव्यदीपिकायां 'रात्रौ विभावसुः' कस्य उदाहरणं वर्तते-
(A) देशस्य (B) कालस्य
(C) सामर्थ्यस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-20

29.A 30.A 31.C 32.A 33.A 34.A 35.D 36.A 37.C 38.B 39.B 40.A 41.D 42.A 43.B 44.B

45. अभिधाशाब्दीव्यञ्जनायाः उदाहरणमस्ति-
(A) कुबेरगुप्तामित्यादयः (B) गङ्गायां घोषः
(C) गतोस्तमर्कः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-26

46. काव्यदीपिकायां 'गौरेका तु मनस्विनः' कस्य उदाहरणं वर्तते?
(A) औचित्यस्य (B) कालस्य
(C) देशस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-20

47. काव्यदीपिकायाम् अर्थनियामकहेतोः देशस्य उदाहरणं वर्तते-
(A) मित्रो भाति (B) रात्रौ विभावसुः
(C) भाति गगने चन्द्रः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-20

48. वक्तृबोद्धव्यवाक्यानां काकोश्चेष्टाऽऽदिकस्य च वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत् साऽर्थसम्भवा॥ इत्यत्र काकुः इत्यस्य अर्थः वर्तते-
(A) ध्वनेर्विकारः (B) विशेषयोगः
(C) बोद्धव्यः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (2/11)

49. काव्यदीपिकायाः तृतीयशिखायाः नाम किम्?
(A) काव्यभेदप्रभेदः (B) गुणस्वरूपः
(C) काव्यनिरूपणम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-50

50. काव्यस्य कति भेदाः सन्ति-
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) द्वे (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (3/1)

51. काव्यदीपिकानुसारेण ध्वनेः लक्षणं किम्?
(A) वाच्यातिशयिनि व्यङ्ग्ये ध्वनिस्तत् काव्यमुत्तमम्
(B) व्यङ्ग्यातिशयिनि वाच्ये ध्वनिस्तत् काव्यमुत्तमम्
(C) वाच्ये ध्वनिस्तत् काव्यमुत्तमम्
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (3/1)

52. काव्यदीपिकायां ध्वनिभेदौ इमौ-
(A) लक्षणामूला (B) अभिधामूला
(C) व्यञ्जनामूला (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका (3/2)

53. लक्षणामूला ध्वनिः केन अन्यनाम्ना प्रसिद्धः?
(A) विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनिना
(B) अविवक्षितवाच्यध्वनिना
(C) अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनिना
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-28

54. यस्मिन् काव्ये वाच्यार्थापेक्षया व्यङ्ग्यार्थो अधिक चमत्कारी। तस्य काव्यस्य नाम किम्?
(A) ध्वनिः (B) मध्यमम्
(C) चित्रम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-27

55. 'त्वामस्मि वच्मि' इति पद्यं कस्य उदाहरणम्?
(A) अर्थान्तरसङ्क्रमितस्य (B) अत्यन्ततिरस्कृतस्य
(C) अभिधामूलायाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-29

56. अविवक्षितवाच्यस्य भेदौ स्तः-
(A) अर्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यः
(B) विवक्षितान्यपरवाच्यः
(C) अत्यन्ततिरस्कृतः
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-28

57. 'अभिधामूला ध्वनिः' इत्यस्य नामान्तरं वर्तते-
(A) अविवक्षितवाच्यः (B) विवक्षितान्यपरवाच्यः
(C) अत्यन्ततिरस्कृतः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-28

58. विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनिः कतिविधः?
(A) चतुर्विधः (B) त्रिविधः
(C) द्विविधः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-29

45. A 46. A 47. C 48. A 49. A 50. A 51. A 52. D 53. B 54. A 55. A 56. D 57. B 58. C

59. लक्षणया.....लक्ष्यः। रिक्तस्थानं पूरयत-

(A) लक्ष्योऽर्थः (B) बोध्योऽर्थः
(C) अवबोध्योऽर्थः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-12

60. न सम्यगनुभूयमानः प्रतीतिक्रमः यस्य तादृशं व्यङ्ग्यं यस्मिन्, सः कः?

(A) असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यः (B) संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यः
(C) अत्यन्ततिरस्कृतः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-31

61. विवृण्वती शैलसुताऽपि भावमङ्गैः फुरद्बालकदम्बकल्पैः।
साचीकृता चारुतरेण तस्थौ मुखेन पर्य्यस्तविलोचनेन॥
इति पद्यं कस्य रसस्य उदाहरणमस्ति?

(A) शृङ्गारस्य (B) हास्यस्य
(C) विश्वबन्धुत्व-भावना (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-35

निर्देशः- अधोलिखितं पद्यं पठित्वा 62-66 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत-

मानुषीभ्यः कथं नु स्यादस्य रूपस्य सम्भवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्॥

62. इदं पद्यं कस्य उदाहरणरूपे स्वीकृतवान् काव्यदीपिकाकारः?

(A) अद्भुतस्य (B) शृङ्गारस्य
(C) वीरस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-41

63. श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्यः इदं पद्यं कस्माद् ग्रन्थात् उद्धृतवान् ?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलात्
(B) रत्नावल्याः
(C) स्वप्नवासवदत्तात्
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

64. अस्मिन् पद्ये अनुभावः वर्तते-

(A) द्रष्टुः (दुष्यन्तस्य) आश्चर्यादिकम्
(B) शकुन्तलायाः रूपादयः
(C) शकुन्तलायाः धैर्यम्
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-42

65. एतत्पद्योक्तरसस्य स्थायीभावः वर्तते-

(A) विस्मयः (B) हासः
(C) रतिः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-42

66. काव्यदीपिकाकारः 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' इति पद्येन कस्याः प्रशंसा कृतवान्?

(A) शकुन्तलायाः
(B) प्रियंवदायाः
(C) अनसूयायाः
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत-काव्यदीपिका-रामगोविन्द शुक्ल, पेज-41

शुद्धता, सत्यता, सरलता हमारी पहचान

Sanskritganga Official
New App Download from Google Play Store
SANSKRIT GANGA
SARWAGYA BHOOSHAN

59. B 60. A 61. A 62. A 63. A 64. A 65. A 66. A

15 Unit अलङ्कार परिचय एवं छन्द परिचय

1. अलङ्कार का सामान्य परिचय

- **'अलम्'** पूर्वक **कृ** धातु से **घञ्** प्रत्यय करने पर **'अलङ्कार'** शब्द बनता है।
- अलङ्कार शब्द की व्युत्पत्ति दो प्रकार से की जाती है-
  (i) **'अलङ्करोति इति अलङ्कारः'** अर्थात् जो आभूषित करता है।
  (ii) **'अलङ्क्रियते अनेन इति अलङ्कारः'** अर्थात् जिसके द्वारा कोई पदार्थ आभूषित होता है।
- अलङ्कार का अर्थ है- **'आभूषण'** जिस प्रकार हार, कुण्डल आदि किसी रमणी की शोभा में वृद्धि करते हैं उसी प्रकार कविता कामिनी सौन्दर्य की वृद्धि करने वाले अनुप्रास, उपमा आदि अलङ्कार हैं।
- अलङ्कार सम्प्रदाय के **प्रवर्तक आचार्य भामह** हैं।
- अलङ्कार सम्प्रदाय के आचार्य काव्य में अलङ्कारों को ही प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं।
- रसवत्, प्रेय, ऊर्जस्विन् और समाहित चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं।

अलङ्कार का लक्षण

आचार्य मम्मट के अनुसार -

उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्।
हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः॥ (का.प्र.-8)

जो अङ्गभूत शब्द तथा अर्थ के द्वारा विद्यमान होने वाले उस अङ्गी मुख्य रस का हार आदि के समान कभी-कभी उपकार करते हैं, वे अनुप्रास, उपमा आदि अलङ्कार होते हैं।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार अलङ्कार -

शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः।
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलङ्कारास्तेऽङ्गदादिवत्॥ (सा.द.10/1)

शोभा को बढ़ाने वाले रस, भाव आदि के उपकारक जो शब्द और अर्थ के अस्थिर धर्म हैं वे अङ्गद (बाजूबन्द) आदि की तरह अलङ्कार कहे जाते हैं।

आचार्य दण्डी के अनुसार अलङ्कार-

'काव्यशोभाकरान् धर्मानलङ्कारान् प्रचक्षते' अर्थात् काव्य के शोभाधायक धर्म को अलङ्कार कहा जाता है।

अलङ्कारों के प्रकार

शब्दालङ्कार, अर्थालङ्कार तथा उभयालङ्कार के भेद से अलङ्कार तीन प्रकार के होते हैं।

- **शब्दालङ्कार-** जो शब्द को अलङ्कृत करे अथवा जो शब्द पर आश्रित होता है अर्थात् जो शब्द के परिवर्तन को सहन नहीं करता है उसे शब्दपरिवृत्यसहत्व शब्दालङ्कार कहा जाता है।
  जैसे- अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति आदि।
- **अर्थालङ्कार-** जो अर्थ को अलङ्कृत करे या अर्थ पर आश्रित हो, अर्थात् शब्द का पर्यायवाची शब्द रख देने पर अलङ्कार बना रहे, अर्थात् शब्दपरिवृत्तिसहत्व अर्थालङ्कार है।
  जैसे- उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि।
- **उभयालङ्कार-** जो शब्द एवम् अर्थ दोनों को अलङ्कृत करे या दोनों पर आश्रित हो, वह उभयालङ्कार है।
  जैसे- श्लेष, पुनरुक्तवदाभास आदि।

अलङ्कारों की संख्या -

भामह ने 38, दण्डी ने 35, उद्भट्ट ने 41, रुद्रट ने 26, मम्मट ने 67, रुय्यक, विश्वनाथ ने 78, जयदेव ने 100, कुवलयानन्द ने 120 अलङ्कार माने हैं।

(1) अनुप्रास अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार- **'वर्णसाम्यमनुप्रासः'** (का.प्र.-9)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।' (सा.द.-10)

वर्णों की समानता अनुप्रास अलङ्कार है। स्वरों की समानता हो या न हो परन्तु व्यञ्जन वर्णों का बार-बार आना ही अनुप्रास अलङ्कार कहलाता है।

उदाहरण- लताकुञ्जं गुञ्जन्मदवदलिपुञ्जं चपलयन्
समालिङ्गन्नङ्गं द्रुततरमनङ्गं प्रबलयन्।
मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्
रजोवृन्दं विन्दन् किरति मकरन्दं दिशि दिशि॥ (सा.द.-8.3)

स्पष्टीकरण- इस उदाहरण में ञ्ज, ङ्ग, न्द, वर्णों की आवृत्ति बार-बार होने से अनुप्रास अलङ्कार है।

अनुप्रास अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

(1) ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम्।। (का.-9/357)

(2) अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः।
अलमलमालि! मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला।।(का.-9/358)

(3) यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।
यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।।(का.-9/359)

(4) वदनं वरवर्णिन्यास्तस्याः सत्यं सुधाकरः।
सुधाकरः क्व नु पुनः कलङ्कविकलो भवेत्।।(का.-9/360)

(5) सितकरकररुचिरविभा विभाकराकार! धरणिधर! कीर्तिः।
पौरुषकमला कमला साऽपि तवैवास्ति नान्यस्य।।(का.-9/361)

(6) भुजङ्गकुण्डली व्यक्तशशिशुभ्रांशुशीतगुः।
जगन्त्यपि सदापायादव्याच्चेतोहरः शिवः।।

(7) आदाय बकुलगन्धानन्धीकुर्वन् पदे पदे भ्रमरान्।
अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः।। (सा.द.-10/3)

(8) दृशा दग्धं मनसिजं जीवयन्ति दृशैव याः।
विरूपाक्षस्य जयिनीस्ताः स्तुमो वामलोचनाः।।(सा.द.-10/5)

(9) उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुव्याधूतचूताङ्कुर।
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः।।(सा.द.-10/9)

(10) केशः काशस्तबकविकासः, कायः प्रकटितकरभविलासः।
चक्षुर्दग्धवराटककल्पं, त्यजति न चेतः काममनल्पम्।।
(सा.द.-10/6)

(11) स्मेरराजीवनयने, नयने किं निमीलिते।
पश्य निर्जितकन्दर्पं कन्दर्पवशगं प्रियम्।। (सा.द.-10/6)

➢ आचार्यों ने अनुप्रास के कुल पाँच भेद किए हैं-
(1) छेकानुप्रास (2) वृत्यनुप्रास (3) श्रुत्यनुप्रास
(4) अन्त्यानुप्रास (5) लाटानुप्रास।

2. यमक अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः यमकम्। (का.प्र.-9)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते॥ (सा.द.10/8)

भिन्न-भिन्न अर्थों वाले सार्थक स्वर-व्यञ्जन समुदाय की उसी क्रम में आवृत्ति होने को यमक कहते हैं।

उदाहरण-नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत्स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः॥
(शिशु. 6.2)

नूतन पलाशों (पर्णों) वाले पलाश अर्थात् ढाख के वन से मुक्त प्रभूत परागचूर्ण से परागत (व्याप्त) कमलोंवाले, मृदुल (कोमल) तथा तान्त (क्लान) लताग्र भागों वाले और कुसुम समूह से सुरभित वसन्त को (भगवान् कृष्ण ने रैवतक पर्वत पर) अपने समक्ष देखा।

स्पष्टीकरण- पलाश-पलाश तथा सुरभिं सुरभिं दोनों ही सार्थक शब्दों के अर्थ भिन्न हैं इसीप्रकार पलाश (पत्र) तथा पलाश (वृक्ष विशेष), सुरभि (सुगन्धित), सुरभि (वसन्त ऋतु)।

यमक के अन्य उदाहरण-

(1) सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।
सन्नारीभरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय।। (का.प्र.-9.362)

(2) विनायमेनो नयताऽसुखादिना विना यमेनोनयता सुखादिना।
महाजनोऽदीयत मानसादरं महाजनोदी यतमानसादरम्।।
(का.प्र.-9/362)

(3) स त्वारम्भरतोऽवश्यमबलं विततारवम्।
सर्वदा रणमानैषीदवानलसमस्थितः।। (का.प्र.-9/363)
सत्त्वारम्भरतोऽवश्यमवलम्बिततारवम्।
सर्वदारणमानैषी दवानलसमस्थितः।। (का.प्र.-9/364)

(4) अनन्तमहिमव्याप्तविश्वां वेधा न वेद याम्।
या च मातेव भजते प्रणते मानवे दयाम्।।(का.प्र.-9/365)

(5) यदानतोऽयदानतो नयात्ययं न यात्ययम्।
शिवेहितां शिवे हितां स्मरामितां स्मरामि ताम्।।(का.प्र.-9/366)

(6) सरस्वति! प्रसादं मे स्थितिं चित्तसरस्वति!।
सर स्वति! कुरु क्षेत्रकुरुक्षेत्रसरस्वति!।। (का.प्र.-9/367)

(7) ससार साकं दर्पेण कन्दर्पेण ससारसा।
शरन्नवाना बिभ्राणा नाविभ्राणा शरन्नवा।।(का.प्र.-9/368)

(8) मधुपराजिपराजित-मानिनीजनमनः सुमनः सुरभि श्रियम्।

अभृत वारितवारिजविप्लवं स्फुटितताम्रतताम्रवणं जगत्।।
(का.प्र.-9/369)

➢ आचार्य मम्मट ने यमक के प्रथम दो भेद किए, पादवृत्तियमक तथा पादभागवृत्ति यमक। कुल मिलाकर यमक के 11 भेद हैं।

3. उपमा अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

'साधर्म्यमुपमा भेदे' (का.प्र.-10)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

'साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः।' (सा.द.10/14)

एक ही वाक्य में दो पदार्थों के वैधर्म्य रहित तथा वाच्य सादृश्य को उपमा कहते हैं।

उदाहरण- मधुरः सुधावदधरः पल्लवतुल्योऽतिपेलवः पाणिः।
चकितमृगलोचनाभ्यां सदृशी चपले च लोचने तस्याः।।

उस नायिका का अधरोष्ठ अमृत के समान मधुर है, पाणि पल्लव के समान अत्यन्त कोमल हैं तथा उसके नेत्रयुगल घबराये हुए हिरन के नेत्र-सरीखे चञ्चल हैं। (सा.द.-10/16)

स्पष्टीकरण- इस उदाहरण में तीन उपमाएँ हैं जिनमें अधर, पाणि, तथा लोचन क्रमशः उपमेय हैं। सुधा, पल्लव, चकितमृगलोचन क्रमशः उपमान हैं। मधुर, अतिपेलव तथा चपल क्रमशः साधारण धर्म हैं। वत्, तुल्य तथा सदृश क्रमशः वाचक शब्द हैं।

उपमा अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. सौरभमम्भोरुहवन्मुखस्य कुम्भाविव स्तनौ पीनौ।
हृदयं मदयति वदनं तव शरदिन्दुर्यथा बाले।।(सा.द.-10/16)
2. मुखमिन्दुर्यथा, पाणिः पल्लवेन समः प्रिये।
वाचः सुधा इवोष्ठस्ते बिम्बतुल्यो, मनोऽश्मवत्।। (सा.द.-10/18)
3. अन्तःपुरीयसि रणेषु सुतीयसि त्वं,
पौरं जनं तव सदा रमणीयते श्रीः।
दृष्टः प्रियाभिरमृतद्युतिदर्शमिन्द्र-
सञ्चारमत्र भुवि सञ्चरसि क्षितीश।। (सा.द.-10/19)
4. चन्द्रायते शुक्लरुचापि हंसो, हंसायते चारुगतेन कान्ता।
कान्तायते स्पर्शसुखेन वारि, वारीयते स्वच्छतया विहायः।।
(सा.द.-10/25)
5. वारिजेनेव सरसी शशिनेव निशीथिनी।
यौवनेनेव वनिता नयेन श्रीर्मनोहरा। (सा.द.-10/25)
6. नेत्रैरिवोत्पलैः पद्मैर्मुखैरिव सरः श्रियः।
पदे पदे विभान्ति स्म चक्रवाकैः स्तनैरिव।। (सा.द.-10/24)
7. स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति।
प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा।। (का.प्र.-10/393)
8. चकितहरिणलोललोचनायाः क्रुधि तरुणारुणतारहारिकान्तिः।
सरसिजमिदमाननं च तस्याः सममिति चेतसि सम्मदं विधत्ते।।
(का.प्र.-10/394)
9. गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत्।
दुरालोकः स समरे निदाघाम्बररत्नवत्।। (का.प्र.-10/397)
10. सविता विधवति विधुरपि सवितरति तथा दिनन्ति यामिन्यः।
यामिनयन्ति दिनानि च सुखदुःखवशीकृते मनसि।। (का.प्र.10/406)

➢ उपमा के चार प्रमुख अङ्ग हैं- उपमेय, उपमान, साधारण धर्म, उपमा वाचक शब्द।

उपमा के भेद-

➢ आचार्य मम्मट ने उपमा अलङ्कार के दो भेद माने हैं-
(1) पूर्णोपमा (2) लुप्तोपमा।

➢ पुनः पूर्णोपमा के छह भेद तथा लुप्तोपमा के 19 भेद को मिलाकर उपमा के कुल 25 भेद हो जाते हैं।

➢ आचार्य विश्वनाथ ने पूर्णोपमा और लुप्तोपमा के भेद से दो प्रकार माने हैं।

➢ पुनः पूर्णोपमा के छह भेद तथा लुप्तोपमा के 21 भेद को मिलाकर उपमा के कुल 27 भेद हो जाते हैं।

4. अनन्वयालङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार -

उपमानोपमेयत्वे एकस्यैवैकवाक्यगे अनन्वयः।
(का॰प्र॰,सूत्र 134)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार -

उपमानोपमेयत्वमेकस्यैव त्वनन्वयः। (सा॰द॰ 10/26)

अनुवाद -

- जहाँ एक वाक्य में एक ही वस्तु उपमान तथा उपमेय दोनों रूप में वर्णित होती है वहाँ अनन्वय अलङ्कार होता है।
- अनन्वय का अर्थ है जिसका सम्बन्ध किसी से न हो। अन्वयेतीति अनन्वयः ।
- उपमान और उपमेय के बीच सम्बन्ध का अभाव अनन्वय है।
- इसमें एक ही वस्तु उपमान और उपमेय दोनों कही जाती है।
- अनन्वय अलङ्कार तभी सम्भव हैं जब वाक्य भी एक ही हो। अर्थात् एक वाक्य में एक ही के उपमान तथा उपमेय दोनों होने पर अनन्वयालङ्कार होता है।

उदाहरण -

राजीवमिव राजीवं जलं जलमिवाजनि ।
चन्द्रश्चन्द्र इवातन्द्रः शरत्समुदयोद्यमे॥ (सा॰द॰ 10.26)

अर्थ- शरद् ऋतु के आरम्भ होने से कमल कमल जैसा- जल जल जैसा तथा चन्द्रमा चन्द्रमा जैसा निर्मल लगने लगा।

स्पष्टीकरण- प्रस्तुत श्लोक में राजीव (कमल) आदि वस्तुओं की उपमान और उपमेय दोनों रूप में कल्पना होने से अनन्वय अलङ्कार है।

अनन्वय अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. न केवलं भाति नितान्तकान्तिर्नितम्बिनी सैव नितम्बिनीव।
यावद्विलासायुधलास्यवासास्त्रे तद्विलासा इव तद्विलासाः।।
(का॰प्र॰ 10.415)
2. गगनं गगनाकारं सागरः सागरः सागरोपमः।
रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव ।।
3. यस्य वाणी स्ववाणीव स्वक्रियेव क्रियाऽमला ।
रूपं स्वमिव रूपं च लोकलोचनलोभनम् ।।
4. इयति प्रपञ्चविषये तीर्थानि कियन्ति सन्ति पुण्यानि ।
परमार्थतो विचारे देवी गङ्गा तु गङ्गेव ।।
5. गङ्गा हृद्या यथा गङ्गा गङ्गा गङ्गेव पावनी ।
हरिणा सदृशो बन्धुर्हरितुल्यः परो हरिः ।।
गुरुवदगुरुराराध्यो गुरुवद्गौरवं गुरोः।। (रसगं॰द्वि॰अ॰पृ॰ 419)
6. रामायमाणः श्रीरामः सीता सीतामनोहरा ।
ममान्तः करणे नित्यं विहरेतां जगद्गुरू।।
7. अम्बरत्यम्बरं यद्वत्समुद्रोऽपि समुद्रति।
विक्रमार्कमहीपाल तथा त्वं विक्रमार्कसि।।
8. एतावति प्रपञ्चेऽस्मिन्सदेवासुरमानुषे।
केनोपमीयतां तज्ज्ञै रामो रामपराक्रमः ।।
9. एतावति प्रपञ्चे सुन्दरमहिलासहस्रभरितेऽपि ।
अनुहरति सुभग ? तस्याः वामार्धं दक्षिणार्धस्य ।।

5. रूपक अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः॥ (का.प्र.सू.-138)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे॥ (सा.द./10)

उपमान तथा उपमेय में अभेद का आरोप करना ही रूपक अलङ्कार है अर्थात् उपमान और उपमेय के भिन्न-भिन्न स्वरूप में प्रकाशित होने पर भी दोनों में अत्यन्त साम्यता को प्रदर्शित करने के लिए काल्पनिक अभेद करना ही रूपक अलङ्कार है।

उदाहरण- आहवे जगदुद्दण्ड! राजमण्डलराहवे।
श्रीनृसिंहमहीपाल! स्वस्त्यस्तु तव बाहवे॥ (सा.द.-10/29)

हे नृसिंह महीपाल! हे पराक्रमी महाराज! संग्राम में प्रचण्डबलशाली राजमण्डल रूपी चन्द्रमा के लिए राहुस्वरूप आप का भुजदण्ड विजयी हो।

स्पष्टीकरण- राजमण्डल शब्द का अभिप्राय 'राजसमूह' और चन्द्रबिम्ब दोनों है। यहाँ पर राजमण्डल (राजसमूह) रूप विषय पर राजमण्डल (चन्द्रबिम्ब) रूप विषयी का आरोप है और जैसा कि यह आरोप वर्ण्य भूपाल के बाहुदण्ड पर राहु के आरोप का निमित्त लग रहा है।

रूपक के अन्य उदाहरण-

1. पद्मोदयदिनाधीशः सदागतिसमीरणः।
भूभृदावलिदम्भोलिरेक एव भवान् भुवि।। (सा.द.-10/29)
2. पान्तु वो जलदश्यामाः शार्ङ्गज्याघातकर्कशाः।
त्रैलोक्यमण्डपस्तम्भाश्चत्वारो हरिबाहवः।। (सा.द.-10/29)
3. मनोजराजस्य सितातपत्रं श्रीखण्डचित्रं हरिदङ्गनायाः।
विराजते व्योमसरःसरोजं कर्पूरपूरप्रभमिन्दुबिम्बम्।। (सा.द.-10/29)
4. रावणावग्रहक्लान्तमितिवागमृतेन सः।
अभिवृष्य मरुत्सस्यं कृष्णमेघस्तिरोदधे।। (सा.द.-10/31)
5. लावण्यमधुभिः पूर्णमास्यमस्या विकस्वरम्।
लोकलोचनरोलम्बकदम्बैः कैर्न पीयते?।। (सा.द.-10/31)
6. यस्य रणान्तः पुरे करे कुर्वतो मण्डलाग्रलताम्।
रससम्मुख्यपि सहसा पराङ्मुखी भवति रिपुसेना।।
(का.प्र.-10/443)

➢ साङ्ग, निरङ्ग तथा परम्परित रूपक के भेद से रूपक अलङ्कार के तीन भेद होते हैं इन तीनों रूपकों के भेद-प्रभेद भी होते हैं।

6. सन्देह अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः (का.प्र. सूत्र-137)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

सन्देहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः (सा.द.-10.35)

अनुवाद- अर्थात् जहाँ उपमेय का उपमान के साथ संशयात्मक ज्ञान होता है वहाँ ससन्देह अलङ्कार होता है।

- सादृश्य के आधार पर उपमान तथा उपमेय की एकरूपता की प्रतीति में होने वाला संशयात्मक ज्ञान ही ससन्देह अलङ्कार है।
- उपमेय (प्रकृति) में उपमान (अन्य) के संशय को सन्देह अलङ्कार कहते हैं। संशय का अर्थ है- अनिश्चय की स्थिति। इसमें संशय का सादृश्यमूलक एवं चमत्कारपूर्ण होना आवश्यक है।

- साहित्यदर्पणकार ने सन्देह के तीन भेद बताएँ हैं- शुद्ध सन्देह, निश्चयगर्भ सन्देह तथा अनिश्चयगर्भ सन्देह **(शुद्धो निश्चगर्भोऽसौ निश्यान्त इति त्रिधा** (सा.द.)
- संशय वास्तविक नहीं अपितु काल्पनिक होता है तथा इसका उद्देश्य चमत्कार उत्पन्न करना होता है।

उदाहरण-

किं तारुण्यतरोरियं रसभरोद्भिन्ना नवा वल्लरी,
वेला प्रोच्छलितस्य किं लहरिका लावण्यवारान्निधेः।
उद्गाढोत्कलिकावतां स्वसमयोपन्यासविश्रम्भिणः
किं साक्षादुपदेशयष्टिरथवा देवस्य शृङ्गारिणः॥

(सा.द.-10.35)

रस की अधिकता के कारण खिली हुई यौवन रूपी वृक्ष की क्या यह नूतन मञ्जरी है? अथवा वेला (समुद्रतट) तक उछलते हुए लावण्य सागर की यह लहर है? या प्रेमीजन के लिए उत्कण्ठित प्रेमियों को प्रेम का पाठ पढ़ाने में उत्सुक कामदेव की उपदेश यष्टि है?

स्पष्टीकरण- इस पद्य में 'कामिनी' उपमेय है, वल्लरी, लहरिका आदि उपमान है। प्रकृत (उपमेय) में अन्य (उपमान) का कवि प्रतिभा द्वारा उत्थापित संशय यहाँ विद्यमान होने से सन्देह अलङ्कार है।

सन्देह अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. इन्दुः किं क्व कलङ्कः सरसिजमेतत्किमम्बु कुत्र गतम्।
ललितसविलासवचनैर्मुखमिति हरिणाक्षि! निश्चितं परतः।।
(का.प्र.-10.420)
2. अस्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चन्द्रो नु कान्तिप्रदः।
शृङ्गारैकरसः स्वयं नु मदनो मासो नु पुष्पाकरः?
वेदाभ्यासजडः कथन्नु विषयव्यावृत्तकौतूहलो
निर्मातुं प्रभवेन्मनोहरमिदं रूपं पुराणो मुनिः।।
(का.प्र.-10.421)
3. स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु क्लिष्टं नु तावत्फलमेव पुण्यम्। असन्निवृत्त्यै तदतीतमेते मनोरथा नाम तटप्रपाताः।
(अभि.शा.-6.10)
4. अयं प्रमत्तमधुपस्त्वन्मुखं वेत्ति पङ्कजम्। (चन्द्रालोक-1.16)
5. पङ्कजं वा सुधांशुर्वेत्यस्माकं तु न निर्णयः।
6. किमिदं लीनालिकुलं कमलं किं वा मुखं सुनीलम्।
इति संशेते लोकस्त्वयि सुतनु सरोवतीर्णायाम्।।
(का.अ. रु.-8.60)
7. अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः
कृशानुः किं? सर्वाः प्रसरति दिशो नैष नियतम् ।
कृतान्तः किं? साक्षान्महिषवहनोऽसाविति चिरं
समालोक्याजौ त्वां विदधति विकल्पान् प्रतिभटाः।।

7. अपह्नुति अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा त्वपह्नुतिः।

(का.प्र.-10.146)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

प्रकृतं प्रतिषिध्यान्यस्थापनं स्यादपह्नुतिः।
गोपनीयं कमप्यर्थं द्योतयित्वा कथञ्चन।
यदि श्लेषणान्यथा वाऽन्यथेत्साप्यपह्नुतिः॥

(सा.द.-10.38/39)

अनुवाद- जहाँ प्रकृत अर्थात् उपमेय का निषेध करके अन्य अर्थात् उपमान की स्थापना की जाय, वहाँ अपह्नुति अलङ्कार होता है।

- अपह्नुति का अर्थ है निषेध, गोपन, छिपाना या वारण।
- इसमें प्रकृत या उपमेय को छिपाकर असत्य सिद्ध करके अप्रकृत या उपमान को ही सत्यरूप से जो स्थापित किया जाता है वह तो अपह्नुति होती है।
- यह अभेदप्रधान अलङ्कार है।
- अपह्नुति के मूल में सादृश्य होता है और इसी सादृश्य के कारण ही इसमें एक पदार्थ का निषेध कर अन्य पदार्थ की स्थापना की जाती हैं।
- इसमें प्रकृत का वास्तविक नहीं अपितु कविकल्पित निषेध होता है

उदाहरण- नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिर्नैताश्च तारा नवफेनभङ्गाः।
नायं शशी कुण्डलितः फणीन्द्रो नाऽसौ कलङ्कः शयितो मुरारिः।

(सा.द. 10/38)

अर्थात् यह आकाशमण्डल नहीं अपितु अम्बुराशि है। ये तारे नहीं बल्कि फेन के नये नये टुकड़े हैं। यह चन्द्रमा नहीं अपितु कुण्डली बाँधकर बैठा फणीन्द्र शेषनाग है (और चन्द्रमा में दृष्टिगोचर होने वाली कालिमा) कलङ्क नहीं अपितु शेषशय्या पर सोये हुए भगवान् विष्णु हैं।

स्पष्टीकरण- यहाँ पहले आकाशमण्डल आदि प्रकृत (उपमेय) का निषेध करके बाद में अप्रकृत (उपमान) अम्बुराशि (समुद्र) आदि की स्थापना करने के कारण अपह्नुति अलङ्कार है।

अपह्नुति अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. इह पुरोऽनिलकम्पितविग्रहा मिलति का न वनस्पतिना लता।
स्मरसि किं सखि कान्तरतोत्सवं नहि घनागमरीतिरुदाहृता।।
(सा.द.-10/38)
2. दशाननकिरीटेभ्यस्तत्क्षणं राक्षसश्रियः ।
मणिव्याजेन पर्यस्ताः पृथिव्यामश्रुबिन्दवः ।। (रघु0 10/5)

3. अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये !
कलङ्को नैवायं विलसति शशाङ्कस्य वपुसि ।
अमुष्येयं मन्ये विगलदमृतस्यन्दशिशिरे
रतिश्रान्ता शेते रजनिरमणी गाढमुरसि ।। (का.प्र. 10/431)
4. बत सखि! कियदेतत् पश्य वर स्मरस्य
प्रियविरहकृशेऽस्मिन् रागिलोके तथा हि ।
उपवनसहकारोद्भासिसम्भृङ्गच्छलेन
प्रतिविशिखमनेनोद्गिरितं कालकूटम् ।। (का. प्र.432)
5. अमुष्मिंल्लावण्यामृतसरसि नूनं मृगदृशः
स्मरः शर्वप्लुष्टः पृथुजघनभागे निपतितः।
यदङ्गाराणां प्रशमपिशुना नाभिकुहरे
शिखा धूमस्येयं परिणमति रोमावलिवपुः।। (का. प्र. 10।433)
अपहनुतिरपहनुत्य किञ्चिदन्यार्थदर्शनम् ।
6. न पञ्चेषुः स्मरस्तस्य सहस्रं पत्रिणामिति। (काव्यादर्श 2/304)
7. चन्दनं चन्द्रिका मन्दो गन्धवाहश्च दक्षिणः
सेयमग्रिमयी सृष्टिः मयि शीता परान् प्रति। (काव्यादर्श 2/305)
8. अमृतस्यन्दिकिरणश्चन्द्रमा नार्मतो मतः
अन्य एवायमर्थात्मा विषनिष्यन्दिदीधितिः।। (काव्यादर्श 2/307)
9. आकुलयति कुचमुकुल चुम्बति बिम्बाधरं दृशौ स्पृशति।
दयिततमः किमधिगतो न हि सहचरि! विभ्रमभ्रमर।।

8. उत्प्रेक्षा अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।। (का.प्र.सू.-136)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।। (सा.द./10)

उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना करना ही उत्प्रेक्षा अलङ्कार है। समेन पद का अर्थ 'उपमानेन' है।

उदाहरण- ऊरुः कुरङ्गकदृशश्चञ्चलचेलाञ्चलो भाति।
सपताकः कनकमयो विजयस्तम्भः स्मरस्येव।।

इस मृगनयनी का ऊरु, जिस पर हवा से हिलता अंशुक लहरा रहा है, ऐसा लगता है मानो कामदेव का वह स्वर्णमय विजयस्तम्भ हो, जिस पर पताका फहरा रही है। (सा.द.-10/42)

स्पष्टीकरण- यह उदाहरण वाच्योत्प्रेक्षा का है यहाँ पर उत्प्रेक्षा वाचक इव शब्द का प्रयोग है। यहाँ ऊरु में विजयस्तम्भ का स्वरूप उत्प्रेक्षित है। इसमें तादात्म्य सम्बन्ध है और स्वरूपोत्प्रेक्षा है। स्तम्भ शब्द जाति वाचक है, अतः यह जाति उत्प्रेक्षा है। गौरत्वादि साधारण धर्म उत्प्रेक्षा के निमित्त हैं।

उत्प्रेक्षा अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. ज्ञाने मौनं, क्षमा शक्तौ, त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव।। (सा.द.-10/42)
2. गङ्गाम्भसि सुरत्राण! तव निःशाननिस्वनः।
स्नातीवारिवधूवर्गगर्भपातनपातकी।। (सा.द.-10/42)
3. सैषा स्थली यत्र विचिन्वता त्वां भ्रष्टं मया नूपुरमेकमुर्व्याम्
अदृश्यत, त्वच्चरणारविन्दविश्लेषदुःखादिव बद्धमौनम्।।
(रघु.-13/23)
4. रावणस्यापि रामास्तो भित्त्वा हृदयमाशुगः।
विवेश भुवमाख्यातुमुरगेभ्य इव प्रियम्।। (सा.द.-10/43)
5. लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।। (मृच्छ.-1/34)

ध्यातव्य अंश-

मन्ये शङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादयः।
उत्प्रेक्षा व्यज्यते शब्दैरिवशब्दोऽपि तादृशः।।

मन्ये, शङ्के, ध्रुवम्, प्रायः आदि शब्दों से उत्प्रेक्षा की प्रतीति होती है और इव शब्द से भी उसकी प्रतीति होती है यद्यपि इव शब्द प्रधानतया उपमा वाचक है परन्तु वह सम्भावना वाचक भी है इसीलिए उसकी गणना उत्प्रेक्षावाचक में भी की जा रही है।

9. अतिशयोक्ति अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

निगीर्याध्यवसानन्तु प्रकृतस्य परेण यत्
प्रस्तुतस्य यदन्यत्वं यद्यर्थोक्तौ च कल्पनम्।
कार्यकारणयोर्यश्च पौर्वापर्यविपर्ययः विज्ञेयातिशयोक्तिः सा।
(का.प्र. 10.152)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते ।
भेदेऽप्यभेदः संबन्धेऽसम्बन्धस्तद्विपर्ययौ।
पौर्वापर्यात्मयः कार्यहेत्वोः सा पञ्चधा ततः।
(सा.द.10/46)

अनुवाद- विषयी (उपमान) के द्वारा विषय (उपमेय) का निगरण करके दोनों में अभेदज्ञान की प्राप्ति को ही अध्यवसाय कहते हैं। इस अध्यवसाय की सिद्धि को ही अतिशयोक्ति कहते हैं।

अतिशय का अर्थ है- अतिशय (बढ़ा-चढ़ाकर) + उक्ति (कथन)। इस अलङ्कार में किसी कथन को बढ़ा चढ़ाकर या सीमा का उल्लंघन कर कहा जाता है।

* इसमें उपमान उपमेय का निगरण (निगल) कर जाता है।
* इसमें उपमान के द्वारा उपमेय का ज्ञान दोनों में अभेदत्व स्थापन द्वारा होता है।

* अतिशयोक्ति अभेदप्रधान अध्यवसायमूलक अलङ्कार है। इसमें विषयी के द्वारा विषय का निगरण होता है।

उदाहरण-कथमुपरि कलापिनः कलापो विलसति तस्य तलेऽष्टमीन्दुखण्डम्।
कुवलययुगलं ततो विलोलं तिलकुसुमं तदधः प्रवालमस्मात्॥
(सा.द. 10/47)

अर्थात् कैसा आश्चर्य है? ऊपर मयूर कलाप है, उसके नीचे अष्टमी का चन्द्रमा विराजमान है, उसके नीचे दो चञ्चल नीलकमल चमक रहे हैं और उसके बाद मूँगे का सौन्दर्य निखर रहा है।

स्पष्टीकरण- इस पद्य में कामिनी के केशपाश, ललाट, नेत्र, नासिका तथा अधरोष्ठ इन उपमेयों का क्रमशः मयूरकलाप, अष्टमीचन्द्र, नीलकमल, तिलपुष्प तथा विद्रुम (मूँगा) इन उपमानों के स्वरूप में भेद रहते हुए भी अभेद का अध्यवसाय हुआ है अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

अतिशयोक्ति अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः।
निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रमस्तव प्रसादस्य पुरस्तु सम्पदः।।
(अभि. शा. 7/30)
2. राकायामकलङ्कं चेदमृतांशोर्भवेद् वपुः।
तस्या मुखं तदा साम्यपराभवमाप्नुयात्।। (का.प्र. 10/452)
3. स वक्तुमखिलान् शक्तो हयग्रीवाश्रितान् गुणान् ।
सोऽम्बुकुम्भैः परच्छेदं ज्ञातुं शक्तो महोदधेः ।।
4. गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य।। (अभि.शा. 1/34)
5. कमलमनम्भसि कमले च कुवलये तानि कनकलतिकायाम्।
सा च सुकुमारसुभगेत्युत्पातपरम्परा केयम्।। (का.प्र. 10/450)
6. अन्यत् सौकुमार्यमन्यैव च कापि वर्तनच्छाया
श्यामा सामान्यप्रजापतेः रेखैव च न भवति। (का. प्र. 10/451)
7. हृदयमधिष्ठितमादौ मालत्याः कुसुमचापबाणेन।
चरमं रमणीवल्लभ! लोचनविषयं त्वया भजता।। (का.प्र.10/453)
8. पश्य नीलोत्पलद्वन्द्वान्निः सरन्ति शिताः शराः।। (कुवलय. 35)
9. दृष्टिस्तृणीकृतजगत्त्रयसत्त्वसारा
धीरोद्धता नमयतीव गतिर्धरित्रीम्।
कौमारकेऽपि गिरिवद् गुरूतां दधानो
वीरो रसः किमयमेत्युत दर्प एव।। (उत्तर. रा. 6/19)
10. पुष्पं प्रवालोपहितं यदि स्यान्मुक्ताफलं वा स्फुटविद्रुमस्थम्।
ततोऽनुकुर्य्याद्विशदस्य तस्यास्ताष्ठपर्यस्तरुचः स्मितस्य।।
(कुमार 1.44)।

10. दीपक अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

सकृद्वृत्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनाम् ।
सैव क्रियासु बह्वीषु कारकास्येति दीपकम्॥ (का.प्र.सू.-155)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

अप्रस्तुतप्रस्तुतयोर्दीपकं तु निगद्यते।
अथ कारकमेकं स्यादनेकासु क्रियासु चेत्॥ (सा.द.-10.48)

अनुवाद- अर्थात् प्रकृत (उपमेय) तथा अप्रकृत (उपमान) रूप वस्तुओं के (क्रियादि रूप) धर्म का एक बार ग्रहण किया जाता है, अथवा अनेक क्रियाओं के होने पर एक ही कारक का ग्रहण किया जाता है वह दीपक अलङ्कार है।

- प्रस्तुत सूत्र में 'प्रकृताप्रकृतात्मनाम्' वाक्य का अभिप्राय है कि प्रकृत-प्राकरणिक (उपमेय) और अप्रकृत-अप्राकरणिक (उपमान) अर्थात् उपमेय और उपमान का जहाँ पर गुण और क्रिया आदि के साथ एक धर्माभिसम्बन्ध बताया जाता है वहाँ दीपक अलङ्कार होता है।
- प्राकरणिक (उपमेय) तथा अप्राकरणिक (उपमान) अर्थात् उपमेय तथा उपमान के क्रियादि धर्म का एक बार ही ग्रहण किया जाता है (उपादीयते), वह एक में स्थित धर्म के द्वारा समस्त वाक्य को प्रकाशित करने के कारण दीपक अलङ्कार होता है।
- इसमें एक वाक्य में अनेक पदार्थों का एकधर्माभिसम्बन्ध होता है।
- दीपक गम्यौपम्यमूलक और सादृश्यमूलक अलङ्कार है।
- 'दीप के समान होने से' अथवा 'दोनों जगह प्रकाशित करने से' दीपक (दीप् + णिच् + ण्वुल् = प्रकाशित करने वाला) अलङ्कार है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार जिस प्रकार देहली में स्थित एक ही दीप घर के अन्दर तथा घर के बाहर प्रकाश कर देता है उसी प्रकार एक ही वाक्य में स्थित साधारण धर्म दोनों उपमेय तथा उपमान वाक्यों को प्रकाशित कर देता है वह दीपक अलङ्कार है।
- दीपक अलङ्कार दो प्रकार का होता है-
(1) कारक दीपक (2) क्रिया दीपक

उदाहरण-

कृपणानां धनं नागानां फणमणिः केसराः सिंहानाम् ।
कुलबालिकानां स्तनाः कुतः स्पृश्यन्तेऽमृतानाम् ॥
(का.प्र.-10.458)

अर्थ- कंजूस व्यक्तियों का धन, सर्पों की नागमणि, सिंहों के केसर (सिंह की अयाल) तथा कुल बालाओं के स्तन को उनके जीवित रहते (अर्थात् मरे बिना) कैसे छुआ जा सकता है?

स्पष्टीकरण- इस पद्य में **'कुलवधूस्तन'** वर्णनीय होने से उपमेय रूप है तथा शेष कृपणधनादि उपमान रूप है तथा **'स्पृश्यन्ते'** स्पर्शन क्रिया साधारण धर्म है। अतः उपमेय तथा उपमान वाक्यों में अनेक कारकों के रहते एक ही क्रिया रूप साधारण धर्म का ग्रहण कर अन्वय किया गया है। इसलिए यह क्रियादीपक अलङ्कार का उदाहरण है।

दूसरे शब्दों में यहाँ **'स्पृश्यन्ते'** एक ही क्रियापद है। उसके साथ कृपण-धन, फणा-मणि, सिंह-केसर (अयाल) और कुल-वधू-स्तन आदि अनेक कारकों का 'सम्बन्ध' होने से यह पद्य 'क्रियादीपक' अलङ्कार का उदाहरण है।

दीपक अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. बलावलेपादधुनापि पूर्ववत् प्रबाध्यते तेन जगज्जिगीषुणा।
   सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।
   (शिशु.-1.72)
2. स्विद्यति कूणति वेल्लति विचलति निमिषति विलोकयति तिर्यक्।
   अन्तर्नन्दति चुम्बितुमिच्छति नवपरिणया वधूः शयने।।
   (का.प्र.-10.459)
3. दूरं समागतवति त्वयि जीवनाथे, भिन्ना मनोभवशरेण तपस्विनी सा।
   उत्तिष्ठति स्वपिति वासगृहं त्वदीयमायाति याति हसति श्वसिति क्षणेन।।
   (सा.द.-10.49)

4.नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्तदण्डः प्रशमयसि विवादं कल्पसे रक्षणाय।
अतनुषु विभवेषु ज्ञातयः सन्तु नाम त्वयि तु परिसमाप्तं बन्धुकृत्यं प्रजानाम्।।
(अभि.शा.-5.8)

5. मेधां बुधाः सुधामिन्दुर्बिभर्त्ति वसुधां भवान्। (चन्द्रा.सुधा.-31)

11. दृष्टान्त अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्। (का.प्र.सू.-154)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्।। (सा.द.10/50)

अर्थ- उपमान, उपमेय उनके विशेषण और साधारण धर्म इन सबका बिम्बप्रतिबिम्ब भाव होने पर दृष्टान्त अलङ्कार होता है।

उदाहरण-

'अविदितगुणापि सत्कविभणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम्।
अनधिगतपरिमलापि हि हरति दृशं मालतीमाला।।' (सा.द.10/50)

श्रेष्ठ कवि की वाणी भले ही अननुभूत गुणों वाली हो, कर्णकुहरों में मधुधारा उड़ेल देती है। मालतीपुष्प की माला भले ही अननुभूत सौरभवाली हो, दृष्टि को चुरा ही लेती है।

स्पष्टीकरण-

(i) इव आदि शब्दों का प्रयोग नहीं है फिर भी मालतीमाला के साथ सत्कवि भणिति का और परिमल के साथ काव्यगुणों का साम्य सादृश्य प्रतीत हो रहा है।

(ii) दृष्टान्त में साधारण धर्म एक ही नहीं है मधुरधारा बरसाना तथा दृष्टि को आकर्षित करना ये दोनों साधारण धर्म परस्पर भिन्न हैं।

(iii) दोनों ही वाक्यार्थों में इन सबका (उपमान-उपमेय तथा साधारण धर्म का) बिम्बप्रतिबिम्बभाव है। एक ही अर्थ का दो शब्दों में अभिधान होना- वस्तुप्रतिवस्तुभाव है तथा दो अर्थों का, दो बार उपादान होना बिम्ब प्रतिबिम्बभाव है।

दृष्टान्त अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्।
   आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः।। (का.-10/456)
2. तवाहवे साहसकर्मशर्मणः करं कृपाणान्तिकमानिनीषतः।
   भटाः परेषां विशरारुतामगुः दधत्यवाते स्थिरतां हि पांसवः।।
   (का.प्र.10/457)
3. त्वयि दृष्टे कुरङ्गाक्ष्याः स्रंसते मदनव्यथा।
   दृष्टानुदयभाजीन्दौ ग्लानिः कुमुदसंहतेः।। (सा.द.-331)
4. वसन्तलेखैकनिबद्धभावं परासु कान्तासु मनः कुतो नः।
   प्रफुल्लमल्लीमधुलम्पटः किं मधुव्रतः काङ्क्षति वल्लिमन्याम्।।
   (सा.द.प्र.-331)

12 व्यतिरेक अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

उपमानाद्यदन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः। (का.प्र. सूत्र-158)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

आधिक्यमुपमेयस्योपमानान्न्यूनताऽथवा व्यतिरेकः।
(सा.द.-10.52)

अनुवाद- उपमान से जो अन्य उपमेय का आधिक्य बताया जाता है, वह व्यतिरेक अलङ्कार है।

- 'अन्यस्य' अर्थात् उपमेय का। 'व्यतिरेकः' अर्थात् आधिक्य।
- जहाँ उपमान से उपमेय का किसी गुण विशेष के द्वारा समुत्कर्ष का वर्णन किया जाता है वहाँ व्यतिरेक अलङ्कार होता है।
- उपमान की अपेक्षा उपमेय की अधिकता या न्यूनता का वर्णन होने पर व्यतिरेक अलङ्कार होता है।
- काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट 'उपमान से उपमेय के व्यतिरेक (आधिक्य)' मात्र को ही व्यतिरेक अलङ्कार मानते हैं।
- व्यतिरेक 48 प्रकार का होता है। (आचार्य विश्वनाथ के अनुसार)

नोट- आचार्य मम्मट प्रतिपादित उपमेयाधिक्य होने पर 24 भेद हैं।

- उपमानोपेक्षयोपमेय-प्रकर्षे सत्यालङ्कारो भवति - 'व्यतिरेकः'।

उदाहरण-

यदुत्तिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षयि तद् धनम्।
तपः षड्भागमक्षय्यंददत्यारण्यका हि नः॥ (अभि.शा.-2/13)

अनुवाद- राजाओं को चारों वर्णों से जो धन 'कर' के रूप में हमें प्राप्त होता है, वह तो नश्वर है परन्तु ये वनवासी तपस्वी तो हमें अपनी तपस्या के छठे हिस्से के रूप में जो दे देते हैं वह कभी नष्ट नहीं हो सकता। अतः वह साधारण कर से बहुमूल्य है।

स्पष्टीकरण- प्रस्तुत पद्य में सामान्य धन (उपमान) की अपेक्षा मुनियों द्वारा दिया जाने वाला धन तप के षड्भाग रूप धन (उपमेय) का आधिक्य बतलाया गया है। अतः व्यतिरेक अलङ्कार है।

व्यतिरेक अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. अकलङ्कं मुखं तस्याः न कलङ्की विधुर्यथा।
2. शैला इवोन्नताः सन्तः किन्तु प्रकृतिकोमलाः। (कुवल.-57)
3. क्षीणः क्षीणोऽपि शशी भूयो भूयोऽभिवर्धते सत्यम् ।
   विरम प्रसीद सुन्दरि! यौवनमनिवर्ति यातं तु।। (का.प्र.-463)
4. असिमात्रसहायस्य प्रभूतारिपराभवे।
   अन्यतुच्छजनस्येव न स्मयोऽस्य महाधृतेः।। (का.प्र.-464)
5. इयं सुनयना दासीकृततामरसश्रिया।
   आननेनाकलङ्केन जयतीन्दुं कलङ्किनम्।। (का.प्र.-466)
6. दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि।
   तस्यामेव रघोः पाड्याः प्रतापं न विषेहिरे।।
   (सा.द. सत्यव्रत सिंह, चतुर्थ परिच्छेद पेज-292)
7. जितेन्द्रियतया सम्यग्विद्यावृद्धनिषेविणः
   अतिगाढगुणस्यास्य नाब्जवद्भङ्गुरा गुणाः।। (का.प्र.-467)
8. अखण्डमण्डलः श्रीमान् पश्यैष पृथिवीपतिः।
   न निशाकरवज्जातु कलावैकल्यमागतः।। (का.प्र.-468)
9. हरवन्न विषमदृष्टिर्हरिवन्न विभो विधूतविततवृषः।
   रविवन्न चातिदुः सहकरतापितभूः कदाचिदसि।। (का.प्र.-469)
10. नित्योदितप्रतापेन त्रियामामीलितप्रभः।
    भास्वताऽनेन भूपेन भास्वानेष विनिर्जितः।। (का.प्र.-470)

13. समासोक्ति अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः। (का.प्र सू. 10/171)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिङ्गविशेषणैः।
व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः॥ (सा.द. 10/।56)

अनुवाद- श्लेषयुक्त विशेषणों द्वारा पर अर्थात् अप्रकृत का कथन 'समासेन संक्षेपेण उक्तिः'। (दो अर्थों का संक्षेप से कथन होने के कारण) समासोक्ति है।

- जिस काव्य में प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत दोनों में समान रूप से अन्वित होने वाले कार्य, लिङ्ग तथा विशेषणों के बल से प्रस्तुत पर अप्रस्तुत के व्यवहार का आरोप किया जाता है, वहाँ पर समासोक्ति नामक अलङ्कार होता है।
- समासोक्ति का अर्थ है- समास (संक्षेप) से उक्ति (कथन)। इसमें संक्षिप्त कथन इस प्रकार का होता है कि केवल प्रस्तुत के वर्णन से ही अप्रस्तुत की प्रतीति हो जाती है।
- अर्थात् एक के वर्णन से दूसरे का बोध कराना ही समासोक्ति है।
- इसमें वर्ण्य वस्तु के व्यवहार का वर्णन वाच्य के रूप में होता है।

उदाहरण-

लब्ध्वा तव बाहुस्पर्शं यस्याः स कोऽप्युल्लासः।
जयलक्ष्मीस्तव विरहे न खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा।
(का प्र-10/435)

तुम्हारे बाहु के स्पर्श को पाकर जिसको वह कुछ अनिर्वचनीय प्रसन्नता होती है वह जयलक्ष्मी तुम्हारे वियोग में प्रसन्न नहीं है, निश्चय ही दुर्बल हो गयी है।

स्पष्टीकरण - यहाँ जयलक्ष्मी शब्द का केवल कान्ता वाचक अर्थ ही नहीं है, अर्थात् विशेषण भी उसके बोधक हैं।

यहाँ 'जयलक्ष्मी' शब्द श्लिष्ट विशेषण होने के कारण न केवल प्रकृत (विशेष्य) नायिका का अपितु अप्रकृत जयलक्ष्मी (युद्ध में विजय) का भी बोधक होने से समासोक्ति है।

समासोक्ति के अन्य उदाहरण-

1. व्याधूय यद्वसनमम्बुजलोचनाया
   वक्षोजयोः कनककुम्भविलासभाजोः।
   आलिङ्गसि प्रसभमङ्गमशेषमस्या
   धन्यस्त्वमेव मलयाचलगन्धवाह।। (सा.द. 10/56)
2. असमाप्तजिगीषस्य स्त्रीचिन्ता का मनस्विनः।
   अनाक्रम्य जगत्कृत्स्नं नो सन्ध्यां भजते रविः।। (सा.द.10/56)
3. विकसितमुखीं रागासङ्गात् गलत्तिमिरावृत्तिं
   दिनकरकरस्पृष्टामैन्द्रीं निरीक्ष्य दिशं पुरः ।
   जरठलवलीपाण्डुच्छायो भृशं कलुषान्तरः
   श्रयति हरितं हन्त प्राचेतसीं तुहिनद्युतिः ।। (सा.द. 10/56)
4. निसर्गसौरभोद्भ्रान्तभृङ्गसङ्गीतशालिनी ।
   उदिते वासराधीशे स्मेराऽजनि सरोजिनी।। (सा.द. 10/56)

5. दन्तप्रभापुष्पचिता पाणिपल्लवशोभिनी
केशपाशालिवृन्देन सुवेषा हरिणेक्षणा।। (सा.द. 10/56)
6. उर्ध्वीकृत्य ग्रीवां चकोरि! किं वा दिदृक्षसे चन्द्रम्।
अयथास्थानस्थापितपञ्जररुद्धं न वेत्सि स्वम्।।
7. पिबन्मधु यथाकामं भ्रमरः फुल्लपङ्कजे।
अप्यसन्नद्धसौरभ्यं पश्य चुम्बति कुड्मलम्।। (काव्यादर्श 2.206)
8. आबध्नास्यलकान्निरस्यसितितमां चोलं रसाकाङ्क्षया-
लङ्काया वशतां तनोषि कुरुषे जङ्घालालाटरक्षतम्।
प्रत्यङ्गं परिमर्दनिर्दयमहो चेतः समालम्बसे
वामानां विषये नृपेन्द्र! भवतः प्रागल्भ्यमत्यद्भुतम्।।
9. परिग्रहबहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य मे ।
समुद्ररसना चोर्वी सखी च युवयोरियम्।। (अभि.शा. 3/17)

14. अप्रस्तुत प्रशंसा

आचार्य मम्मट के अनुसार-

अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया (का॰प्र॰,सू॰/150)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार -

क्वचिद्विशेषःसामान्यात्सामान्यं वा विशेषतः।
कार्यान्निमित्तं कार्यं च हेतोरथ समात्सपम्।।
अप्रस्तुतात्प्रस्तुतं चेद् गम्यते पञ्चधा ततः
(सा॰ द॰ 10/58,59)

अनुवाद- अर्थात् प्रस्तुत अर्थ की प्रतीति कराने वाली जो अप्रस्तुत अर्थ की प्रशंसा या वर्ण है वह ही अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कार है।

- यदि अप्रस्तुत वृत्तान्त के वर्णन से प्रस्तुत वृत्तान्त की प्रतीति हो तो वहाँ अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार होता है।
- इसमें सदा वाच्यार्थ अप्रस्तुतपरक एवं व्यङ्ग्यार्थ प्रस्तुतपरक होता है।
- इसमें सदा दो अर्थों की प्रतीति होती है, एक वाच्यार्थ तथा दूसरा व्यङ्ग्यार्थ ।

उदाहरण -

याताः किन्न मिलन्ति सुन्दरि पुनश्चिन्ता त्वया मत्कृते
नो कार्यं नितरां कृशादसि कथयत्येवं सवाष्पे मयि।
लज्जामन्थरतारकेण निपतत्पीताश्रुणा चक्षुषा
दृष्ट्वा मां हसितेन भाविमरणोत्साहस्तया सूचितः॥
(का॰प्र॰ 10.440)

अर्थ :- हे सुन्दरी ! कार्यवश बाहर गये हुए प्रियजन क्या फिर नहीं मिलते हैं? अतः तुम्हे मेरे लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि तुम तो पहले से ही दुबली हो। मेरे ऐसा कहने पर लज्जा के कारण स्थिर पुतली वाले तथा गिरते हुए आँसू को पी जाने वाले (रोकने वाले) नेत्र से मुझे देखकर नायिका ने हास के द्वारा होने वाले मरण के प्रति उत्साह प्रदर्शित किया।

स्पष्टीकरण :-यहाँ किसी मित्र के द्वारा यात्रा का विचार क्यों छोड़ दिया इस कार्य रूप अर्थ के पूछे जाने पर नायक ने उसके कारण का कथन किया है।

अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार के अन्य उदाहरण -

1. राजन् राजसुता न पाठयति मां देव्योऽपि तूष्णीं स्थिताः
कुब्जे! भोजय मां कुमारसचिवैर्नाद्यापि किं भुज्यते ।
इत्थं नाथ शुकस्तवारिभवने मुक्तोऽध्वगैः पञ्जरात् ।
चित्रस्थानवलोक्य शून्यवलभावेकैकमाभाषते।। (का.प्र.10/441)
2. सुहृद्वधूवाष्पजलप्रमार्जनं करोति वैरप्रतियातनेन यः।
स एव पूज्यः स पुमान् स नीतिमान् सुजीवितं तस्य स भाजनं श्रियः।।
(का.प्र.10/443)
3. येनास्यभ्युदितेन चन्द्र गमितः क्लान्तिं रवौ तत्र ते
युज्येत प्रतिकर्तुमेव न पुनस्तस्यैव पादग्रहः ।
क्षीणेनैतदनुष्ठितं यदि ततः किं लज्जसे नो मना -
गस्त्वेवं जडधामता तु भवतो यद्वह्नेाग्नि विस्फूर्जसे।। (का.प्र.10/445)
4. आदाय वारि परितः सरितां मुखेभ्यः किन्तावदर्जितमनेन दुरर्णवेन।
क्षारीकृतं च वडवादहने हुतं च पातालकुक्षिकुहरे विनिवेशितं च
(का.प्र.10/446)
5. पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहिति ।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः।। (सा.द.10/58)
6. स्वगियं यदि जीवितापहा हृदये किं निहिता न हन्ति माम्।
विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमाश्वरेच्छया।। (सा.द.10/58)
7. मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः ।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्। (अभि.1/26)
8. कातरा येऽप्यशक्ता वा नोत्साहस्तेषु जायते ।
प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते।। (स्वप्न.6/7)

15. अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा॥ (का.प्र.10/109)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

सामान्यं वा विशेषेण विशेषस्तेन वा यदि।
कार्यं च कारणेनेदं कार्येण च समर्थ्यते॥ (सा.द.10/61)

जहाँ विशेष द्वारा सामान्य का अथवा सामान्य द्वारा विशेष का, कारण द्वारा कार्य का अथवा कार्य द्वारा कारण का साधर्म्य

अथवा वैधर्म्य के माध्यम से समर्थन किया जाता है, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार होता है।

उदाहरण- 'बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति।
सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा।।' (सा.द.-10)

बड़ों की सहायता से छोटा आदमी भी कार्य की समाप्ति तक पहुँच जाता है। विशाल सरिता से अन्वित होकर पहाड़ी नदी भी सागर तक पहुँच जाती है।

स्पष्टीकरण- श्लोक का पूर्वार्ध एक सामान्य कथन है कि जिसका समर्थन उत्तरार्ध के विशेष-कथन से किया गया है, दोनों वाक्यों में साधर्म्य भी स्पष्ट है बड़े की सहायता से छोटे की कार्यसिद्धि = महानदी की सहायता से नगापगा की सागर प्राप्ति।

अर्थान्तरन्यास के अन्य उदाहरण-

1. 'यावदर्थपदां वाचमेवमादाय माधवः।
विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।।' (सा.द.-10)
2. 'इत्थमाराध्यमानोऽपि क्लिश्नाति भुवनत्रयम्।
शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः।।'
3. निजदोषावृतमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम्।
पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शंखमपि पीतम्।। (का.प्र.10/479)
4. गुणानामेव दौरत्म्याद् धुरि धुर्यो नियुज्यते।
असञ्जातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गलिः।। (का.प्र.10/181)
5. अहो हि मे बह्वपराद्धमायुषा यदप्रियं वाच्यमिदं मयेदृशम्।
स एव धन्याः सुहृदः पराभवं जगत्यदृष्ट्वैव हि ये क्षयं गताः।।

अर्थान्तरन्यास के भेद-

चार साधर्म्यमूलक तथा चार वैधर्म्यमूलक होने से अर्थान्तरन्यास के आठ भेद होते हैं।

16. विभावना अलंकार

आचार्य मम्मट के अनुसार -

क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना (का.प्र.10/107)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार -

(हेतुरूपक्रियायाः निषेधेऽपि तत्फलप्रकाशनं विभावना।)

विभावना विना हेतुं कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते।
उक्तानुक्तनिमित्तत्वाद् द्विधा सा परिकीर्तिता।। (सा.द.10/66)

कारण का अभाव या निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति का वर्णन होने पर विभावना अलंकार होता है।

* हेतु रूप क्रिया का निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति विभावना अलङ्कार है ।
* विभावना वह अलङ्कार है जिसमें कारण के अभाव में भी कार्य की उत्पत्ति का वर्णन होता है।

विभावना के दो भेद हैं -

(1) उक्तनिमित्ता विभावना (2) अनुक्तनिमित्ता विभावना

उदाहरण-

कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त रुजमलिकुलैरदष्टापि।
परिवर्त्तते स्म नलिनीलहरीभिरलोलिताप्यघूर्णत सा।।

खिली हुई लताओं से ताड़ित न होने पर भी वह (नायिका) पीड़ा को प्राप्त हो रही थी, भ्रमर कुल से न काटे जाने पर भी तड़प रही थी और कमलिनियों से युक्त लहरों के चक्कर में पड़े बिना भी चक्कर खा रही थी। (का.प्र.10.474)

स्पष्टीकरण- यहाँ लताओं की चोट पीड़ा का हेतु हो सकती थी, भ्रमर का काटना तड़पने का और कमलिनियों की लहरों के चक्कर में फँस जाने से चक्कर आने का कारण हो सकता था। परन्तु उन कारणों का निषेध करने पर भी कार्य प्रकाशन किया गया है। इसलिये यह विभावना अलङ्कार का उदाहरण है।

विभावना अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

1. अनायासकृशं मध्यमशङ्कतरले दृशौ ।
अभूषणमनोहारी वपुर्वयसि सुभ्रुवः।। (सा. द. 10/66)
2. अतिरोधतिरोहिता दृशोः श्रीरविभक्तावयं कृशं शरीरम् ।
अपरागपराहतौ प्रियाया प्रतिभातः परिपाण्डुरौ कपोलौ।। (अ.प्र.34)
3. पश्य! लाक्षारसासिक्तं रक्तं त्वच्चरणद्वयम्। (चन्द्रा. सु. 44)
4. असम्भृतं मण्डनमङ्गयष्टेरनासवाख्यं करणं मदस्य।
कामस्य पुष्पव्यतिरिक्तमस्त्रं बाल्यात्परं साथ वयः प्रपेदे।
(अलं.सर्व.पृ.125)
5. अङ्गलेखामकाश्मीरसमालम्भनपिञ्जराम्।
अनलक्तकताम्राभामोष्ठलेखां च बिभ्रतीम्। (अलं.सर्व.पृ.126)
6. यदवधि विलासभवनं यौवनमुदियाय चन्द्रवदनायाः ।
दहनं विनैव तदवधि यूनां हृदयानि दह्यन्ते।। (रसगं.द्वि.आ.पृ.326)

17. विशेषोक्ति अलंकार

आचार्य मम्मट के अनुसार -

विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः। (का.प्र.10/162)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

सति हेतौ फलाभावे विशेषोक्तिस्तथा द्विधा। (सा.द.10.67)

सम्पूर्ण कारणों के होने पर फल का न होना विशेषोक्ति है।

* कारणों के एकत्र होने पर भी कार्य का कथन न करना विशेषोक्ति अलङ्कार है।
* मम्मट के अनुसार विशेषोक्ति के तीन भेद हैं -
(1) उक्त (2) अनुक्त (3) अचिन्त्य

* विश्वनाथ के अनुसार विशेषोक्ति के दो भेद हैं -
(1) उक्तनिमित्ता (2) अनुक्तनिमित्ता

उदाहरण-निद्रानिवृत्तावुदिते द्युरत्ने सखीजने द्वारपदं पराप्ते।
श्लथीकृताश्लेषरसे भुजङ्गे चचाल नालिङ्गनतोऽङ्गना सा॥

अर्थ- निद्रा खुल जाने पर, सूर्य का उदय हो आने पर, सखियों के (शयनकक्ष के) दरवाजे पर आ जाने पर और उपपति (भुजङ्ग) के आलिङ्गन के रस को त्याग देने पर भी वह आलिङ्गन (बाहुपाश) से विचलित नहीं हुई। (का.प्र.-10.475)

विशेषोक्ति के अन्य उदाहरण-

1. कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने ।
नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे।। (का. प्र. 10/476)
2. स एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः।
हरताऽपि तनुं यस्य शम्भुना न बलं हृतम्।। (का॰प्र॰10/477)
3. धनिनोऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि न चञ्चलाः ।
प्रभवोऽप्यप्रमत्तास्ते महामहिमशालिनः ।। (सा॰ द॰ 10/67)
4. उपनिषदः परिपीता गीतापि च हन्त मतिपथं नीता।
तदपि न हा विधुवदना मानससदनाद्बहिर्याति।। (र.द्वि.आ.पृ.331)
5. अनुरागवती संध्या दिवसस्तत्पुरः सरः।
अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः।। (कुवलयानन्द-83)
6. तव वदनामृतरश्मावुदिते कस्मात् परो दयिते ।
सम्भवति स्मरदाहो मनसि तदाहो न जानीमः।। (अलं.समु.20)

18. सङ्कर अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार-

अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु सङ्करः।
एकस्य च ग्रहे न्यायदोषाभावादनिश्चयः॥

(का.प्र.10/207,208)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

अङ्गाङ्गित्वेऽलङ्कृतीनां तद्वदेकाश्रयस्थितौ।
सन्दिग्धत्वे च भवति सङ्करस्त्रिविधः पुनः॥ (सा.द.10/98)

* जहाँ अनेक अलङ्कारों की सापेक्ष स्थिति होती है वहाँ सङ्कर अलङ्कार माना जाता है।
* सङ्कर शब्द का अर्थ है 'मिला हुआ', जिसे पृथक् न किया जा सके। क्षीर-नीर-न्याय से परस्पर मिश्रित अलङ्कार को सङ्कर अलङ्कार कहते हैं।

सङ्कर तीन प्रकार का होता है -
(1) अङ्गाङ्गिभावसङ्कर (2) सन्देहसङ्कर
(3) एकाश्रयानुप्रवेशसङ्कर

उदाहरण-

आत्ते सीमन्तरत्ने मरकतिनि हृते हेमताटङ्कपत्रे
लुप्तायां मेखलायां झटिति मणितुलाकोटियुग्मे गृहीते।
शोणं बिम्बोष्ठकान्त्या त्वदरिमृगदृशामित्वरीणामरण्ये
राजन्! गुञ्जाफलानां स्त्रज इति शबरा नैव हारं हरन्ति॥

(का.प्र..10/571)

हे राजन्! तुम्हारे डर से जङ्गलों में भागती हुई तुम्हारे शत्रुओं की स्त्रियों के मरकतमणियों से विभूषित शिरोमणि को छीन लेने पर स्वर्ण के कर्णाभरण के निकाल देने के बाद तगड़ी के तोड़ लेने पर, मणियों से जटित नूपुरों को ले लेने पर भी कुन्दरु के सदृश ओष्ठ की कान्ति से लाल प्रतीत होने वाले हार को भील घुंघचियों की माला समझ कर नहीं छीन रहे हैं।

स्पष्टीकरण -यहाँ बिम्बोष्ठ की कान्ति से सफेद मोतियों का हार भी लाल प्रतीत हो रहे हैं। अतः यह तद्गुण अलङ्कार है। इस तद्गुण के कारण मोतियों के हार में गुञ्जाफल वाले माला की भ्रान्ति होने से यहाँ भ्रान्तिमान् अलङ्कार हो गया है। और उस भ्रान्तिमान् के कारण 'तद्गुण अलङ्कार' सहृदयों के लिए और भी अधिक चमत्कारजनक हो उठा है। इसलिए दोनों अलङ्कार एक दूसरे के उपकारक होने के कारण यह अङ्गाङ्गिभाव सङ्कर अलङ्कार का उदाहरण है।

सङ्कर अलङ्कार के अन्य उदाहरण -

1. जटाभाभिर्भाभिः करधृतकलङ्काक्षवलयो,
वियोगिव्यापत्तेरिव कलितवैराग्यविशदः।
परिप्रेङ्खित्तारापरिकरकपालाङ्कितततले,
शशी भस्मापाण्डुः पितृवन इव व्योम्नि चरति। (का.प्र.10/572)
2. राजति तटीयमभिहतदानवरासाऽतिपातिसारावनदा ।
गजता च यूथमविरतदानवरा सातिपाति सारा वनदा।।
(का॰प्र॰10/573)
3. यथा गभीरो यथा रत्ननिर्भरो यथा च निर्मलच्छायः ।
तथा किं विधिना एष सरसपानीयो जलनिधिर्न कृतः।।
(का.प्र.10/574)
4 नयनानन्ददायीन्दोर्बिम्बमेतत्प्रसीदति ।
अधुनाऽपि निरुद्धाशमविशीर्णमिदन्तमः (का॰ प्र॰10/575)
5. अनुरागवती सन्ध्या दिवसस्तत्पुरः सरः।
अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः। (सा॰ द॰ 10/98)
6. इदमाभाति गगने भिन्दानं सन्ततं तमः।
अमन्दनयनानन्दकरं मण्डलमैन्दवम्।। (सा॰ द॰ 10/98)
7. कटाक्षेणापीषत्क्षणमपि निरीक्षेत यदि सा
तदानन्दः सान्द्रः स्फुरति पिहिताशेषविषयः।
सरोमाञ्चोदञ्चत्कुचकलशनिर्भिन्नवसनः।
परीरम्भारम्भः क इव भविताम्भारुहदृशः।। (सा॰द॰-10/98)

8. **आकृष्टिवेगविगलद्भुजगेन्द्रभोग**
निर्मोकपट्टपरिवेष्टनयाम्बुराशेः।
मन्थव्यथाव्युपशमार्थमिवाशु यस्य
मन्दाकिनी चिरमवेष्टत पादमूले।।

(सा॰ द॰10/98)

19. संसृष्टि अलङ्कार

आचार्य मम्मट के अनुसार -

सेष्टा संसृष्टिरेतेषां भेदेन यदिह स्थितिः। (का॰प्र॰-10/139)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार -

मिथोऽनपेक्षमेतेषां स्थितः संसृष्टिरुच्यते। (सा॰द॰-10/97)

अर्थ- जहाँ अनेक अलङ्कार परस्पर निरपेक्षरूप से स्थित होते हैं वहाँ संसृष्टि अलङ्कार होता है। दो या अधिक अलङ्कारों की काव्य या वाक्य में परस्पर निरपेक्षरूप से जो स्थिति है वह संसृष्टि मानी जाती है।

- संसृष्टि का अर्थ है संयोग, संसर्ग या मेल।
- इसमें दो या दो से अधिक शब्दालङ्कार या अर्थालङ्कार स्वतन्त्र रूप से मिले हुए होते हैं।
- संसृष्टि मिश्र अलङ्कार है। इसमें अनेक अलङ्कारों का मिश्रण तिलतण्डुलन्याय के आधार पर होता है।

* संसृष्टि अलङ्कार के तीन भेद माने गये हैं-
(1) शब्दालङ्कार संसृष्टि (2) अर्थालङ्कार संसृष्टि
(3) शब्दार्थालङ्कार संसृष्टि

1. शब्दालङ्कार संसृष्टि का उदाहरण -

वदनसौरभलोभपरिभ्रमद्भ्रमरसम्भ्रमसम्भृतशोभया।
चलितया विदधे कलमेखलाकलकलोऽलकलोल-
दृशाऽन्यया।। (का॰प्र॰ 10/568)

अर्थ - अपने मुख की सुगन्धि के लोभ से भ्रमण करते हुए भ्रमरों के भय से और अधिक शोभा को धारण करने वाली भागती हुई, अतएव केशों (के गिरने) से चञ्चल दृष्टि वाली अन्य युवती के भागने से सुन्दर मेखला का मधुर शब्द गूँजने लगा।

स्पष्टीकरण- यहाँ पूर्वार्द्ध में 'मकार' के तथा तृतीय चरण में 'लकार' के अनेक बार प्रयोग के कारण अनुप्रास अलङ्कार है। चतुर्थ चरण में 'लकलो लकालो' की आवृत्ति होने से यमकालङ्कार है। ये दोनों शब्दालङ्कार इस एक श्लोक में परस्पर निरपेक्ष रूप से स्थित है। अतः यहाँ शब्दालङ्कारों की संसृष्टि है।

संसृष्टि अलङ्कार के अन्य उदाहरण-

अर्थालङ्कारसंसृष्टि -

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।। (प्र॰प्रा॰ 10/159)

शब्दार्थालङ्कार संसृष्टि -

स नास्त्यत्र ग्रामे य एनां महमहायमानलावण्याम्।
तरुणानां हृदयलुण्ठाकीं परिष्वक्कमानां निवारयति।। (का.प्र.10/570)
देवः पायादपायान्नः स्मेरेन्दीवरलोचनः।
संसारध्वान्तविध्वंसहंसः कंसनिषूदनः।। (सा॰द॰ 10/97)

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *

1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)
2. शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वास)
3. शुकनासोपदेशः (शीघ्र प्रकाश्य)

सम्पर्क सूत्र- 8004545095, 8004545096

अभ्यास प्रश्न (अलङ्कार परिचय)

1. सत्यर्थे पृथगर्थायाः ..... विनिगद्यते?

(A) अनुप्रासः (B) यमकम्

(C) उपमा (D) व्यतिरेकः

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/08)-शालिग्राम शास्त्री,पेज-280

2. उपमा-अलङ्कारे भवति –

(A) उपमानोपमेययोः स्पष्टं सुन्दरं साम्यम्

(B) गूढं वैकृतिकं साम्यम्

(C) किञ्चित् विचित्रं स्यात् साम्यम्

(D) अस्पष्टं प्राकृतिकं साम्यम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/15)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-292

3. स्वरस्य वैषम्येऽपि यत् शब्दसाम्यं तत्?

(A) यमकम् (B) श्लेषः

(C) अनुप्रासः (D) भाषासमः

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/3)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-275

4. ''अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्''– इत्यत्र शब्दसाम्यपदस्य तात्पर्यमस्ति–

(A) पदसाम्यम् (B) वर्णसाम्यम्

(C) स्वरसाम्यम् (D) व्यञ्जनसाम्यम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/3)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-275

5. 'काव्यशोभाकरान्धर्मानलङ्कारान् प्रचक्षते' किसकी उक्ति है?

(A) दण्डी की (B) भामह की

(C) रुद्रट की (D) भरतमुनि की

स्रोत– काव्यादर्श (2/1) - श्रीरामचन्द्र मिश्र, पेज–74

6. उपकुर्वन्ति तं सन्तं ये ..... जातुचित्। हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः॥ रिक्तस्थानं पूरयतु।

(A) ङ्गहारेण (B) ऽङ्गद्वारेण

(C) ङ्गदानेन (D) ङ्गाङ्गित्वेन

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.87) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज–381

7. अनुप्रासालङ्कारोऽस्ति-

(A) शब्दालङ्कारः (B) अर्थालङ्कारः

(C) उभयालङ्कारः (D) वाक्यालङ्कारः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–404

8. काव्यप्रकाशे कतिधा लाटानुप्रास इष्यते?

(A) द्विधा (B) त्रिधा

(C) चतुर्धा (D) पञ्चधा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–407-409

9. स्वर की विषमता होने पर भी जो शब्द साम्य होता है, वह अलङ्कार है–

(A) अनुप्रास (B) यमक

(C) रूपक (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

10. स्वरवैसादृश्येऽपि ..... सदृशत्वं वर्णसाम्यम्। रसाद्यनुगताः प्रकृष्टो न्यासोऽनुप्रासः॥

(A) व्यञ्जन (B) लक्षण

(C) वर्णन (D) वक्रोक्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

11. रसाद्यनुगतः ..... न्यासोऽनुप्रासः–

(A) प्रकृष्टो (B) समन्वितो

(C) प्रथितो (D) प्रसिद्धो

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

12. असकृद्व्यञ्जनावृत्तौ कोऽलङ्कारः?

(A) सहोक्तिः (B) श्लेषः

(C) अनुप्रासः (D) रूपकम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

13. निम्न में से कौन सा अनुप्रास का भेद नहीं है?

(A) वृत्त्यानुप्रास (B) छेकानुप्रास

(C) मध्यानुप्रास (D) अन्त्यानुप्रास

स्रोत– छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-59

1. (B) **2.** (A) **3.** (C) **4.** (B) **5.** (A) **6.** (B) **7.** (A) **8.** (D) **9.** (A) **10.** (A) **11.** (A) **12.** (C) **13.** (C)

14. छेकानुप्रासः इत्यत्र 'छेकपदस्य' अर्थः कः?
(A) पण्डितः (विदग्धः) (B) मधुरः
(C) कठोरः (D) भेकस्यानुजः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

15. स्वरव्यञ्जन समूह की पुनरावृत्ति से कौन-सा शब्दालङ्कार होता है?
(A) श्लेष (B) अनुप्रास
(C) यमक (D) वक्रोक्ति
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

16. 'लताकुञ्जं गुञ्जन् मदवदलिपुञ्जं चपलयन्' में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) श्लेष
(C) अनुप्रास (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-59

17. 'यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।' 'यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य॥' इस पद्य में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) श्लेष
(C) वक्रोक्ति (D) लाटानुप्रास (शब्दानुप्रासः)
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-407

18. अनुप्रासालङ्कारलक्षणे कस्य वैषम्यम् अपि सम्भवति?
(A) वर्णस्य (B) शब्दस्य
(C) वाक्यस्य (D) स्वरस्य
स्रोत–साहित्यदर्पण (10.3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-275

19. ''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः'' किस अलङ्कार से सम्बन्धित है?
(A) यमक (B) अनुप्रास
(C) रूपक (D) उपमा
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-116)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-409

20. 'नगज नगजा दयिता दयिता विगतं विगतं ललितं' इत्यत्रः कः अलङ्कारः?
(A) यमकम् (B) अनुप्रासः
(C) रूपकम् (D) उपमा

21. 'नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्' अलङ्कार है–
(A) यमकम् (B) श्लेषः
(C) वक्रोक्तिः (D) अन्योक्तिः
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-280

22. 'सुरभिं-सुरभिं सुमनोभरैः' में कौन-सा अलङ्कार है?
(A) श्लेष (B) यमक
(C) उपमा (D) भ्रान्तिमान्
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री,पेज-280

23. ''सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।'' कथन है–
(A) मम्मट (B) विश्वनाथ
(C) राजशेखर (D) कोई नहीं
स्रोत–साहित्यदर्पण (10-8) - शालिग्राम शास्त्री,पेज-280

24. यमकम् इत्यलङ्कारः कदा भवति?
(A) वर्णसमूहस्य आवृत्तौ
(B) व्यञ्जनसमूहस्य आवृत्तौ
(C) स्वरव्यञ्जनसमूहस्यावृत्तौ
(D) आभरणस्य स्त्रीपुरुषयोः सम्बन्धित्वे सति
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री,पेज-280

25. 'शारदा शारदाम्भोजवदना' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?
(A) अनुप्रासः (B) यमकम्
(C) श्लेषः (D) वक्रोक्तिः

26. वाग्भूषणं भूषणम्।
(A) यमकम् (B) अनुप्रासः
(C) उत्प्रेक्षा (D) उपमा
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-16)-तारिणीश झा, पेज-27

27. पूर्णोपमायां कति तत्त्वानि आवश्यकानि?
(A) चत्वारि (B) त्रीणि
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

28. उपमानवययोरलङ्कारयोः व्यवच्छेदकं तत्त्वं किम्?
(A) उपमावाचकोपमानयोर्भेदः
(B) साधारणधर्मोपमेययोर्भेदः
(C) इवादिशब्दोपमेययोर्भेदः
(D) उपमानोपमेययोर्भेदः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

29. किस सम्बन्ध से उपमा अलङ्कार होता है?
(A) कार्यकारणसम्बन्धेन
(B) तादात्म्यसम्बन्धेन
(C) आधाराधेयभावसम्बन्धेन
(D) साधर्म्यसम्बन्धेन
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-124)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

14. (A) **15.** (B) **16.** (C) **17.** (D) **18.** (D) **19.** (A) **20.** (A) **21.** (A) **22.** (B) **23.** (B) **24.** (C) **25.** (B) **26.** (A) **27.** (A) **28.** (D) **29.** (D)

क

30. 'भेदे सति साधर्म्यम्' होता है, इसमें–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

31. 'साधर्म्यमुपमा भेदे' यह किसकी उक्ति है?
(A) जगन्नाथ (B) विश्वनाथ
(C) भामह (D) मम्मट
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.124) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

32. ''दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम्। क्षूद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसा सतीव॥'' इस पद्य में अलङ्कार है?
(A) निदर्शना (B) उत्प्रेक्षा
(C) अर्थान्तरन्यास (D) विभावना
स्रोत–कुमारसम्भवम् (1.12)-सुधाकर मालवीय, पेज-9

33. उपमालङ्कार का प्रयोग कहाँ है?
(A) इन्दुरिन्दुरिव (B) मुखं चन्द्र इव
(C) धनं धर्मस्य कारणम् (D) एतेषु न कुत्रापि
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्रमिश्र, पेज–64

34. 'कमलमिव मनोज्ञं मुखम्' में कौन-सा अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) यमक
(C) रूपक (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्रमिश्र, पेज–66

35. क्यच्-क्यङ् प्रत्ययोगे कोऽलङ्कारो भवति–
(A) दीपकालङ्कारः (B) रूपकालङ्कारः
(C) उत्प्रेक्षालङ्कारः (D) उपमालङ्कारः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-129)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-452

36. उपमानोपमेययोरेव न तु कार्यकारणादिकयोः साधर्म्यं भवतीति तयोरेव समानेन धर्मेण सम्बन्धः कोऽलङ्कारः?
(A) उपमेयोपमा (B) रूपकम्
(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-124)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

37. 'प्रियाऽनुरागस्य मनः समुन्नते न भुजार्चितानां' - कः अलङ्कारः —
(A) मालोपमालङ्कारः (B) लुप्तोपमालङ्कारः
(C) उत्प्रेक्षालङ्कारः (D) काव्यलिङ्गालङ्कारः
स्रोत–रघुवंशम् (3.10)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–79

38. उपमान-उपमेययोः सादृश्यलक्ष्मीः कुत्र उल्लसति?
(A) उत्प्रेक्षायाम् (B) तुल्ययोगितायाम्
(C) उपमायाम् (D) रूपके
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू-135)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

39. 'अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघम्' अस्यां पंक्त्याम् अलङ्कारोऽस्ति–
(A) स्वभावोक्तिः (B) उपमा
(C) यमकः (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)

40. 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः'–इत्यत्र कः अलङ्कारः?
(A) निदर्शना (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) दृष्टान्त
स्रोत– रघुवंशम् (1/4) - श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–4

41. अधोलिखित में अलङ्कार का नाम बतायें?
अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू। कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्॥
(A) उपमा (B) रूपक
(C) अतिशयोक्ति (D) सन्देह
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/21)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-50

42. 'गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत्' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?
(A) लुप्तोपमा (B) तद्धितगा आर्थी पूर्णोपमा
(C) तद्धितगा श्रौती पूर्णोपमा (D) उपमेयोपमा
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-447

43. मम्मटमते त्रिलुप्तोपमा कतिविधा?
(A) त्रिविधा (B) द्विविधा
(C) षड्विधा (D) एकविधा
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-456

44. प्रभामहत्या शिखयेव दीपः त्रिमार्गयेव त्रिदिवस्य मार्गः। संस्कारवत्येव गिरा मनीषी तया स पूतश्च विभूषितश्च॥
(A) मालोपमा (B) उपमा
(C) रूपक (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–कुमारसम्भवम् (1/28) - सुधाकर मालवीय, पेज-17

30. (B) 31. (D) 32. (C) 33. (B) 34. (A) 35. (D) 36. (C) 37. (A) 38. (A) 39. (B) 40. (B)
41. (A) 42. (A) 43. (D) 44. (A)

45. तुल्यादिशब्दैः कीदृशी उपमा अभिधीयते-
(A) शाब्दी (B) पूर्णा
(C) आर्थी (D) लुप्ता
स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–445

46. 'तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्र पदादिवोरगः' इत्यत्र कः अलङ्कारः?
(A) श्लेषानुप्राणित उपमा (B) दृष्टान्तः
(C) रूपकः (D) श्लेषः
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/24) - रामसेवक दुबे, पेज-103

47. 'गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः।
रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव।।'
उपर्युक्त में अलङ्कार का नाम बताइये?
(A) अनन्वयः (B) उपमेयोपमा
(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत– चन्द्रालोक (5.12) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–82

48. उपमेयोपमेयत्वे एकस्यैवैकवाक्यगे।
विभावयत को नामालङ्कार परिकीर्तितः–
(A) उपमा (B) उपमेयोपमा
(C) सहोक्तिः (D) अनन्वयः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.134)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

49. उपमेयस्य समेन सम्भावनम् उत्कटकोटिकसंशयः वा कस्मिन् अलङ्कारे भवति–
(A) विशेषोक्तौ (B) विभावनायाम्
(C) निदर्शनायाम् (D) उत्प्रेक्षायाम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

50. 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' में अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) सन्देह
(C) रूपक (D) अपह्नुति
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

51. 'स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?
(A) यमकम् (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपकम् (D) व्याजस्तुति
स्रोत–कुमारसम्भवम् (1.1) - सुधाकर मालवीय, पेज-01

52. जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना होती है, अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) निदर्शना
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

53. एषु अर्थालङ्कारः कः?
(A) वृत्त्यानुप्रासः (B) यमकम्
(C) छेकानुप्रासः (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-441

54. 'सकलकलं पुरमेतज्जातं सम्प्रति सुधांशुबिम्बमिव' में मम्मट के अनुसार प्रधान अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) श्लेष
(C) अनुप्रास (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-427

55. उत्कृष्ट कवि कल्पना की स्थिति में अलङ्कार होता है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेष
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर,पेज-460

56. प्रकृतस्य समेन यत्सम्भावनं क्रियते तत्र अलङ्कारो भवति–
(A) रूपकम् (B) उत्प्रेक्षा
(C) उपमा (D) ससन्देहः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

57. मन्ये शङ्के ध्रुवमित्यादीनां प्रयोगः कस्मिन् अलङ्कारे भवति–
(A) उत्प्रेक्षालङ्कारे (B) अर्थान्तरन्यासालङ्कारे
(C) दृष्टान्तालङ्कारे (D) विभावनालङ्कारे
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

58. किसी प्रकृत अर्थात् प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत वस्तु रूप में सम्भावना प्रकट करने पर अलङ्कार होता है–
(A) अनुप्रास (B) श्लेष
(C) उत्प्रेक्षा (D) यमक
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

45. (C) 46. (A) 47. (A) 48. (D) 49. (D) 50. (A) 51. (B) 52. (C) 53. (D) 54. (A) 55. (C) 56. (B) 57. (A) 58. (C)

59. 'सैषा स्थली यत्र विचिन्वता त्वां भ्रष्टं मया नूपुर मेकमूर्व्याम्' में अलङ्कार है–

(A) उपमा (B) रूपक

(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेष

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-68

60. 'वियति विसारिणीशष्पपंक्तिमिव आरचयन्तः' इत्यत्र कः अलङ्कारः–

(A) उपमा (B) अर्थान्तरन्यासः

(C) उत्प्रेक्षा (D) विरोधाभासः

स्रोत–कादम्बरी-कथामुखम् - तारिणीश झा, पेज-200

61. वासवदत्तारीत्या 'निस्सरन्तीव प्राणाः' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?

(A) रूपकम् (B) उत्प्रेक्षा

(C) उपमा (D) दीपकम्

स्रोत–वासवदत्ता - जमुना पाठक, पेज–79

62. कालिदासकृतप्रभातवर्णनश्लोकांश 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' इत्यादौ प्रयुक्तोऽलङ्कारोऽस्ति–

(A) उपमा (B) अतिशयोक्ति

(C) उत्प्रेक्षा (D) अप्रस्तुतप्रशंसा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4.2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

63. 'अयमागृहीतकमनीयकङ्कणस्तव मूर्तिमानिव महोत्सवः करः।' इत्यत्र अर्थालङ्कारोऽस्ति-

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा

(C) ससन्देहः (D) भ्रान्तिमान्

स्रोत– उत्तररामचरितम् (1/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–36

64. उत्प्रेक्षालङ्कार इत्यत्र 'उत्प्रेक्षाशब्दस्य' कोऽर्थः?

(A) ऊर्ध्वं प्रेक्षणम्

(B) इदं किं वा तदिति संशयः

(C) सम्भावना

(D) साधारणधर्मः कः इति ऊहनम्

स्रोत– (i) अलङ्कारभूषण - कुन्दन कुमार, पेज–93

(ii) काव्यप्रकाश (सू0-136)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–460

65. रूपकालङ्कारस्य प्रमुखा विशेषता का?

(A) प्रकृताप्रकृतयोः भेदः (B) प्रस्तुताप्रस्तुतयोः वैधर्म्यम्

(C) प्रस्तुताप्रस्तुतयोरभेदः (D) उपमानोपमेययोः निगरणम्

स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–463

66. 'प्रतीपभूपालमृगीदृशां दृशः' इत्यत्र अधोरेखाङ्कितेंऽशे अलङ्कारोऽस्ति?

(A) रूपकम् (B) उत्प्रेक्षा

(C) उपमा (D) अतिशयोक्तिः

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/11) - बद्रीनाथ मालवीय, पेज-33

67. ''अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः कृशानुः किं? सर्वाः प्रसरति दिशो नैष नियतम्'' में अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) सन्देह

(C) उपमा (D) रूपक

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.137) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-462

68. ''किं तारुण्यतरोरियं रसभरोद्भिन्ना नवा वल्लरी''– उपर्युक्त में कौन अलङ्कार है?

(A) भ्रान्तिमान् (B) दीपक

(C) सन्देह (D) विभावना

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-310

69. ''पङ्कजं वा सुधांशुर्वेत्यस्माकं तु न निर्णयः'' उपर्युक्त में कौन अलङ्कार है?

(A) भ्रान्तिमान् (B) सन्देह

(C) दीपक (D) विभावना

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–72

70. ''अयं प्रमत्तमधुपस्त्वन्मुखं वेत्ति पङ्कजम्'' इत्यत्र अलङ्कार अस्ति-

(A) भ्रान्तिमान् (B) अपह्नुतिः

(C) सन्देहः (D) समासोक्तिः

स्रोत– कुवलयानन्द - निरंजन मिश्र, पेज-45

71. कस्यालङ्कारस्य लक्षणे प्रामुख्येन ''स्थाणुर्वा पुरुषो वा'' इति भावो विद्यते–

(A) भ्रान्तिमान् (B) अपह्नुतिः

(C) श्लेषः (D) सन्देहः

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–310

72. .....अभेदो य उपमानोपमेययोः।

(A) तदूपिकम् (B) तत्सामान्यम्

(C) तत्सन्धानम् (D) तद्रूपकम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू0-138)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–463

59. (C) 60. (C) 61. (B) 62. (C) 63. (A) 64. (C) 65. (C) 66. (B) 67. (B) 68. (C) 69. (B) 70. (C) 71. (D) 72. (D)

73. महीतलस्पर्शनिमात्रभिन्नमृद्धं हि राज्यं पदमैन्द्रमाहुः कोऽलङ्कारः?

(A) अतिशयोक्तिः (B) अपह्नुतिः

(C) रूपकम् (D) अर्थान्तरन्यासः

स्रोत– रघुवंश (2/50)-राधावल्लभ त्रिपाठी, पेज–54-55

74. 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः' परिभाषा किस अलङ्कार की है?

(A) रूपक अलङ्कार (B) यमक अलङ्कार

(C) अनुप्रास अलङ्कार (D) उत्प्रेक्षा अलङ्कार

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

75. जहाँ उपमेय एवं उपमान में अभेद प्रदर्शित किया जाता है। वहाँ होता है–

(A) उपमा अलंकार (B) अनुप्रास अलंकार

(C) रूपक अलंकार (D) यमक अलंकार

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

76. रूपकालङ्कारे प्रमुखता अस्ति–

(A) उपमानोपमेययोः सुन्दरसाम्यस्य

(B) उपमानोपमेययोः प्रस्फुटसाम्यस्य

(C) उपमानोपमेययोः अभेदस्य

(D) उपमानोपमेययोः गम्यसाम्यस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

77. उपमेये उपमानस्यारोपो भवति–

(A) उपमायाम् (B) उत्प्रेक्षायाम्

(C) दृष्टान्ते (D) रूपके

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463-464

78. ''राजते मृगलोचना'' अत्र अलङ्कारोऽस्ति–

(A) रूपकम् (B) उत्प्रेक्षा

(C) विभावना (D) उपमा

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–300

79. यत्र निरपह्नवे विषये विषयी आरोप्यते तत्र अलंकारो भवति–

(A) उत्प्रेक्षा (B) अतिशयोक्ति

(C) विभावना (D) रूपकम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (10.28)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–303

80. 'मुखं चन्द्रः' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?

(A) रूपकम् (B) उपमा

(C) अतिशयोक्तिः (D) परिणामः

स्रोत– अलङ्कारभूषण - कुन्दन कुमार, पेज–39

81. ''ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला'' इत्यत्र कः अलङ्कारः भवति–

(A) रूपकालङ्कारः (B) उपमालङ्कारः

(C) अर्थान्तरन्यासालङ्कारः (D) अपह्नुत्यलङ्कारः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.139) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-464

82. 'यशः पयोराशिरभूत् करकल्पतरोस्तव' इत्यत्र अलङ्कारः-

(A) विभावना (B) मीलितम्

(C) विशेषोक्तिः (D) निदर्शना

स्रोत–कुवलयानन्द (श्लोक-82)-भोलाशङ्कर व्यास, पेज–147

83. समस्तवस्तुविषयक तथा एकदेशविवर्ति ये भेद हैं–

(A) उपमालङ्कार के (B) उत्प्रेक्षालङ्कार के

(C) सांगरूपक के (D) निरङ्गरूपक के

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.141) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-466

84. काल्पनिक अभेदारोप होने पर अलङ्कार होता है–

(A) अनुप्रास (B) उत्प्रेक्षा

(C) रूपक (D) उपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

85. न छिपाये गये उपमेय पर उपमान का अभेदारोप होने पर अलङ्कार होता है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) परिसंख्या

(C) रूपक (D) उपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

86. निम्नलिखित में से कौन अर्थालङ्कार है?

(A) श्लेष (B) यमक

(C) वक्रोक्ति (D) रूपक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-441

87. 'ताडिद्गौरी' इत्यत्रालङ्कारः –

(A) उपमा (B) रूपकम्

(C) अनन्वयः (D) लुप्तोपमा

स्रोत–कुवलयानन्द (श्लोक-8)-भोलाशङ्कर व्यास, पेज–5

73. (D) 74. (A) 75. (C) 76. (C) 77. (D) 78. (D) 79. (D) 80. (B) 81. (A) 82. (A) 83. (C) 84. (C) 85. (C) 86. (D) 87. (D)

88. 'त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयम्'-इत्यस्मिन् कः अलङ्कारः?

(A) अनुप्रासः (B) उपमा

(C) विभावना (D) रूपकम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/26)-शिवबालक द्विवेदी, पेज-339

89. 'प्रकृतं प्रतिषिध्यान्यत्स्थापनं' चेत् तदा कोऽलङ्कारः?

(A) असङ्गतिः (B) अपह्नुतिः

(C) विभावना (D) निदर्शना

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू0-145)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–470

90. उपमेय को असत्य सिद्ध कर उपमान को सत्यरूप से स्थापित करने में अलङ्कार होता है–

(A) रूपक (B) व्यतिरेक

(C) निदर्शना (D) अपह्नुति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.145)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-470

91. अपह्नुतौ प्रतिषेधः भवति–

(A) अप्रकृतस्य (B) अप्रस्तुतस्य

(C) प्रकृतस्य (D) उपमानस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.145)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-470

92. प्रस्तुत में अप्रस्तुत का परिस्फुरण होने से अलङ्कार होता है–

(A) समासोक्ति (B) अतिशयोक्ति

(C) विशेषोक्ति (D) विनोक्ति

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-336

93. 'काव्यप्रकाशे परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः' इति कस्यालङ्कारस्य लक्षणम्–

(A) निदर्शनायाः (B) समासोक्तेः

(C) दीपकस्य (D) दृष्टान्तस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.147)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-474

94. 'कामं नृपाः सन्ति सहस्रशोऽन्ये राजन्वतीमाहुरनेन भूमिं। नक्षत्र तारागृहसङ्कुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः॥' उपर्युक्त पदे अलङ्कारः अस्ति–

(A) प्रतिवस्तूपमा (B) अर्थान्तरन्यासः

(C) दृष्टान्तः (D) निदर्शना

स्रोत–कुवलयानन्द - भोलाशङ्कर व्यास, पेज–68

95. मम्मटानुसारम् अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः कतिविधः–

(A) द्विविधः (B) पञ्चविधः

(C) चतुर्विधः (D) दशविधः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.151)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-476

96. अतिशयोक्ति-नामके अलङ्कारे भवति–

(A) उपमानेन उपमेयस्य निगरणम्

(B) उपमानोपमेययोः साधर्म्यम्

(C) उपमेयतः उपमानस्य श्रेष्ठत्वम्

(D) उपमानस्य सम्भावनमुपमेये

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.152)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-483

97. असम्बन्धे सम्बन्धस्य कल्पने कोऽलङ्कारः?

(A) सम्बन्धातिशयोक्तिः (B) असम्बन्धातिशयोक्तिः

(C) असम्भवातिशयोक्तिः (D) सम्भवातिशयोक्तिः

स्रोत–चन्द्रालोक (5.44)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–110-111

98. अध्वसाय की सिद्धि होने पर अलङ्कार होता है?

(A) स्वभावोक्ति (B) रूपक

(C) अतिशयोक्ति (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.46)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–323

99. किस अलङ्कार में उपमान पक्ष उपमेय पक्ष का निगरण कर लेता है–

(A) उपमा (B) रूपक

(C) समासोक्ति (D) अतिशयोक्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.152)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-483

100. सिद्धत्वेऽध्यवसायस्य ..... निगद्यते। समुचित पद से रिक्तस्थान की पूर्ति करें।

(A) अतिशयोक्तिः (B) उत्प्रेक्षा

(C) अपह्नुतिः (D) अप्रस्तुतप्रशंसा

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.46)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–323

101. उपमेयोपमानयोः बिम्बप्रतिबिम्बभावः कस्मिन् अलङ्कारे प्रस्तूयते–

(A) निदर्शनालङ्कारः (B) दीपकालङ्कारः

(C) व्यतिरेकालङ्कारः (D) दृष्टान्तालङ्कारः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.154)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-486

88. (D) 89. (B) 90. (D) 91. (C) 92. (A) 93. (B) 94. (C) 95. (B) 96. (A) 97. (B) 98. (C) 99. (D) 100. (A) 101. (D)

102. ..... पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्–

(A) पर्यायः (B) दृष्टान्तः

(C) विरोधः (D) आक्षेपः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.154)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-486

103. ''त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्। आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः।।'' में अलङ्कार है?

(A) अर्थान्तरन्यास (B) निदर्शना

(C) दृष्टान्त (D) उपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–486

104. ''संसार-विषवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले। काव्यामृत-रसास्वादः सङ्गमः सज्जनैः सह।।'' में अलङ्कार है?

(A) दृष्टान्त (B) उपमा

(C) यमक (D) रूपक

स्रोत–हितोपदेश (मित्र लाभ) श्लोक-146-विश्वनाथ शर्मणा,पेज–115

105. सकृद्वृत्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनाम्। सैव क्रियासु बहूवीषु कारकस्येति दीपकम्।।'' को उद्भावित करने वाला ग्रन्थ है?

(A) रसगङ्गाधर (B) साहित्यदर्पण

(C) काव्यादर्श (D) काव्यप्रकाश

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.155)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-487

106. अप्रस्तुतप्रस्तुतयोरेक धर्माभिसम्बन्धः इति कस्मिन् अलङ्कारे भवति?

(A) अर्थान्तरन्यासः (B) रूपकम्

(C) दीपकम् (D) यमकम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (10/49)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-328

107. ''सकृद्वृत्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनाम्''– यह लक्षण है–

(A) दीपकालङ्कारस्य (B) रूपकालङ्कारस्य

(C) काव्यलिङ्गालङ्कारस्य (D) सङ्करालङ्कारस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.155)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-487

108. व्यतिरेकालङ्कारस्य लक्षणम् अस्ति–

(A) प्रस्तुतोऽप्रस्तुतयोः साम्यम्

(B) उपमानाद् उपमेयस्य व्यतिरेकः

(C) उपमानस्य उपमेयाद् व्यतिरेकः

(D) प्रस्तुताप्रस्तुतयोः वैषम्यम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.158)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-491

109. उपमान की अपेक्षा उपमेय की अधिकता या न्यूनता का वर्णन होने पर अलङ्कार होता है-

(A) भ्रान्तिमान् (B) दृष्टान्त

(C) व्यतिरेक (D) अपह्नुति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.158)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-491

110. उपमानादुपमेयस्य वर्णनं यत्राधिकं भवति तत्र कोऽलङ्कारो विधीयते?

(A) दीपकम् (B) दृष्टान्तः

(C) अर्थान्तरन्यासः (D) व्यतिरेकः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.158)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-491

111. ''दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि। तस्यामेव रघोः पाड्याः प्रतापं न विषेहिरे।।'' इत्यत्र अलङ्कार अस्ति–

(A) रूपकम् (B) समासोक्तिः

(C) व्यतिरेकः (D) अतिशयोक्तिः

स्रोत–साहित्यदर्पण- सत्यव्रत सिंह, पेज-292

112. उपमानोपेक्षयोपमेय-प्रकर्षे सत्यलङ्कारो भवति–

(A) अपह्नुतिः (B) व्यतिरेकः

(C) दृष्टान्तः (D) समासोक्तिः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.158)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-491

113. क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्ति अलङ्कारो भवति?

(A) विपर्ययः (B) विशेषता

(C) विरूपता (D) विभावना

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

114. यत्र हेतुर्विना कार्योत्पत्तिरुच्यते सञ्जायते तत्र अलङ्कारो भवति–

(A) विशेषोक्तिः (B) निदर्शना

(C) विभावना (D) समासोक्तिः

स्रोत–साहित्यदर्पण (10/66)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-350

102. (B) 103. (C) 104. (D) 105. (D) 106. (C) 107. (A) 108. (B) 109. (C) 110. (D) 111. (C) 112. (B) 113. (D) 114. (C)

115. 'कारण के बिना कार्य के होने का वर्णन' होने पर कौन-सा अलङ्कार होता है?

(A) असङ्गत (B) विभावना

(C) विशेषोक्ति (D) व्यतिरेक

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

116. को नाम अलङ्कारो गम्यौपम्यमूलको नास्ति–

(A) निदर्शना (B) प्रतिवस्तूपमा

(C) तुल्ययोगिता (D) विभावना

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-441, 442

117. विभावनाऽलङ्कारः भवति, यत्र–

(A) कारणं बिना कार्यसद्भावः

(B) सत्यपि कारणे कार्यासद्भावः

(C) विषयापह्नवे विषयिबोधः

(D) विषयेऽपगते विषयिबोधः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

118. निम्नलिखित में से किस अलङ्कार युग्म के अलङ्कार सर्वथा विपरीत लक्षण वाले हैं–

(A) उपमा-उत्प्रेक्षा (B) रूपकम्-दीपकम्

(C) काव्यलिङ्गम्-परिसंख्या (D) विभावना-विशेषोक्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161-162)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-499

119. विभावनाविशेषोक्तिरलङ्कारयोः आधारः कः?

(A) सादृश्यभावः (B) असादृश्यभावः

(C) उपमानोपमेयभावः (D) कार्यकारणभावः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161-162)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498,499

120. 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' कस्य अलङ्कारस्य लक्षणम्?

(A) विशेषोक्तेः (B) विभावनायाः

(C) समासोक्तेः (D) वक्रोक्तेः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.162)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

121. किस अलङ्कार में कारण होने पर भी कार्य नहीं होता, इसमें–

(A) विशेषोक्ति (B) समासोक्ति

(C) विभावना (D) व्यतिरेक

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.162) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

122. 'धनिनोऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि न चञ्चलाः' अत्र कोऽलङ्काराः?

(A) विभावना (B) उपमा

(C) विशेषोक्ति (D) रूपकम्

स्रोत–साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-351

123. कारणे उक्ते सति कार्याभावः कस्मिन् अलङ्कारे भवति–

(A) विभावनायाम् (B) विशेषोक्तौ

(C) दृष्टान्ते (D) समासोक्तौ

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.162)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

124. यत्र हेतौ सति अपि फलस्य अभावो कथ्यते तत्र अलङ्कारः भवति–

(A) समासोक्तिः (B) अतिशयोक्तिः

(C) विभावना (D) विशेषोक्तिः

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.67)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–351

125. अर्थान्तरन्यासालङ्कारः कतिविधः?

(A) द्वौ (B) चत्वारः

(C) अष्ट (D) सप्त

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-500

126. समर्थनीयस्य अर्थस्य समर्थने कोऽलङ्कारः?

(A) परिकरः (B) अनुमानम्

(C) काव्यलिङ्गम् (D) अर्थान्तरन्यासः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.164)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-500

127. 'आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां। सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि' कोऽत्रालङ्कारः–

(A) रूपक (B) दृष्टान्तः

(C) निदर्शना (D) अर्थान्तरन्यासः

स्रोत–मेघदूतम् (1/10) - तारिणीश झा, पेज-19

128. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।'' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?

(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा

(C) सन्देहः (D) अर्थान्तरन्यासः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-54-57

115. (B) 116. (D) 117. (A) 118. (D) 119. (D) 120. (A) 121. (A) 122. (C) 123. (B) 124. (D) 125. (B) 126. (D) 127. (D) 128. (D)

129. ''बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति। सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा'' इत्यत्र अलङ्कारो वर्तते-

(A) अर्थान्तरन्यासः (B) रूपकम्

(C) श्लेषः (D) व्यतिरेकः

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–78

130. ''शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य। भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र॥'' अत्र कोऽलङ्कारः?

(A) उपमा (B) अर्थान्तरन्यासः

(C) रूपकम् (D) विभावना

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/16)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-38-39

131. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्''– में अलङ्कार बतलाइये–

(A) उपमा (B) अर्थान्तरन्यास

(C) उत्प्रेक्षा (D) अनुप्रास

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46-47

132. अङ्गाङ्गिसम्बन्धेऽलङ्कृत्योः भवति अलङ्कारः–

(A) संसृष्टिः (B) काव्यसृष्टिः

(C) सङ्करः (D) सालङ्कारता

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.207) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-554

133. अलङ्काराणाम् एकाश्रयानुप्रवेशे कोऽलङ्कारः भवति?

(A) सङ्करः (B) संसृष्टिः

(C) श्लेषः (D) निदर्शना

स्रोत–काव्यप्रकाश -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-554

134. अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु कः अलङ्कारः भवति-

(A) सन्देहालङ्कारः (B) सङ्करालङ्कारः

(C) श्लेषालङ्कारः (D) अतिशयोक्तिरलङ्कारः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.207)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-554

135. संकरः कतिविधिः-

(A) षड्विधः (B) पञ्चविधः

(C) चतुर्विधः (D) त्रिविधः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-554

136. 'सौन्दर्यमलङ्कारः' इति वाक्यं कुत्र विद्यते?

(A) काव्यालङ्कारसूत्रे

(B) व्यक्तिविवेके

(C) अलङ्कारसर्वस्ये

(D) प्रतापरुद्रीये

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-54

137. उपमानाद्यदन्यस्य ..... स एव सः॥

(A) समाख्यानं (B) दोषारोपः

(C) व्यतिरेकः (D) परामर्शः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू0-158)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–491

138. 'हनुमानब्धिमतरत् दुष्करं किं महात्मनाम्'–इति वाक्यं कस्यालङ्कारस्य उदाहरणम्–

(A) उपमालङ्कारस्य (B) दृष्टान्तालङ्कारस्य

(C) दीपकालङ्कारस्य (D) अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य

स्रोत–चन्द्रालोक (5/68)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–133

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *

Sanskritganga Official

New App Download from Google Play Store

129. (A) 130. (B) 131. (B) 132. (C) 133. (A) 134. (B) 135. (D) 136. (A) 137. (C) 138. (D) 139. (A)

2. छन्द परिचय

➢ छन्दशास्त्र को वेदपुरुष का पाद (चरण) माना जाता है-
''छन्दः पादौ तु वेदस्य'' (पाणिनीयशिक्षा-42)

➢ छन्दशास्त्र का प्राचीन नाम छन्दोविचिति, छन्दोऽनुशासन, छन्दोविवृति, छन्दोमान आदि भी है।

➢ प्रथम छन्दशास्त्रकार आचार्य पिङ्गल के नाम पर इस शास्त्र को **'पिङ्गलशास्त्र'** भी कहा जाता है।

➢ आचार्य पिङ्गल को **छन्दशास्त्र का प्रणेता** या प्रवर्तक माना जाता है।

➢ पिङ्गलाचार्य ने छन्दशास्त्र पर **'छन्दःसूत्र'** नामक ग्रन्थ लिखा, जिसमें 8 अध्याय एवं 308 सूत्र हैं।

➢ षड्गुरुशिष्य ने **'सर्वानुक्रमणी'** की टीका में आचार्य पिङ्गल को **पाणिनि का अनुज** कहा है, इससे इनका **समय 600** ईसापूर्व माना जा सकता है।

➢ विदेशी विद्वान् **'छन्दःसूत्र'** का **समय 200 ईसा पूर्व** मानते हैं।

छन्द का लक्षण-(i) चित्ताह्लादकं छन्दः (ii) छन्दयति आह्लादयति इति छन्दः (iii) छन्दांसि छादनात् (निरुक्त)

प्रमुख वैदिक छन्द

क्र.	छन्द	वर्ण	पाद
1.	गायत्री	24	तीन
2.	उष्णिक्	28	तीन
3.	अनुष्टुप्	32	चार
4.	बृहती	36	चार
5.	पङ्क्ति	40	पाँच
6.	त्रिष्टुप्	44	चार
7.	जगती	48	चार

➢ ये सातों छन्द **'सप्तछन्दांसि'** नाम से जाने जाते हैं। इन छन्दों की अक्षर संख्या क्रम से चार-चार बढ़ती जाती है।

➢ याद करने की ट्रिक- **''गाउअबृपंत्रिज''**
अर्थात्- **गा** = गायत्री, **उ** = उष्णिक्, **अ** = अनुष्टुप्, **बृ** = बृहती, **पं** = पङ्क्ति, **त्रि** = त्रिष्टुप्, **ज** = जगती आदि।

प्रमुख लौकिक छन्द

संस्कृतकाव्यों में मुख्य रूप से अनुष्टुप् (श्लोक), उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, शालिनी, वसन्ततिलका, मालिनी, हरिणी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा तथा आर्या छन्द हैं।

➢ **अनुष्टुप्** सबसे छोटा (8×4 = 32 वर्ण) छन्द है तथा **स्रग्धरा** सबसे बड़ा छन्द (21×4 = 84 वर्ण) है।

➢ वाल्मीकिरामायण में 13 छन्दों का, महाभारत में 18 छन्दों का, श्रीमद्भागवतमहापुराण में 25 छन्दों का प्रयोग हुआ है। परवर्ती काव्यों में 50 छन्दों तक का प्रयोग हुआ है।

➢ पिङ्गल के **'छन्दःसूत्र'** पर भट्ट हलायुध ने **'मृतसञ्जीवनी'** टीका लिखी।

➢ **'जानाश्रयी छन्दोविचिति'** नामक सूत्रात्मक ग्रन्थ 600 ई. के आसपास लिखा गया।

➢ भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के दो अध्यायों (15 तथा 16) में एवम् अग्निपुराण के आठ अध्यायों (328 से 335 तक) में भी छन्दों का विवरण दिया गया है।

➢ **'पिङ्गलसूत्र'** की **'यादवप्रकाश'** नामक टीका के अनुसार छन्दशास्त्र भगवान् शङ्कर से देवराज इन्द्र को, इन्द्र से दुश्च्यवन को, दुश्च्यवन से बृहस्पति को, बृहस्पति से माण्डव्य को, माण्डव्य से सैतव को, सैतव से यास्क को, और यास्क से पिङ्गल को प्राप्त हुआ।

पद्य या छन्द के प्रकार

➢ **पद्य के दो भेद होते हैं-**
(i) वृत्तम् (वर्णिक छन्द) (ii) जाति (मात्रिक छन्द)

(i) वृत्तम्- ☆ **''अक्षरैर्गणना यत्र तद् वृत्तम् इति कथ्यते।''** (वृत्तमञ्जरी)
☆ **''वृत्तम् अक्षरसंख्यातम्''** (छन्दोमञ्जरी)
जिस पद्य में अक्षरों की गणना की जाती है वे वृत्त कहे जाते हैं। जैसे- अनुष्टुप् , वंशस्थ, इन्द्रवज्रा, मालिनी आदि।

(ii) जाति- ☆ **''मात्राभिर्गणना यत्र सा जातिरभिधीयते''**
☆ **''जातिर्मात्रा कृता भवेत्''** (छन्दोमञ्जरी)
जिस पद्य में मात्रा की गिनती की जाती है, वे 'जाति छन्द' कहे जाते हैं। जैसे- आर्या छन्द जाति छन्द है। इसके प्रथम और तृतीय पाद में 12 मात्रायें, दूसरे पाद में 18 मात्रा, चतुर्थ पाद में 15 मात्रायें होती हैं।

वृत्तछन्द के प्रकार

➢ वृत्तछन्द तीन प्रकार का होता है-
(i) समवृत्त (ii) अर्धसमवृत्त (iii) विषमवृत्त

(i) समवृत्त- जिस छन्द के चारों पादों में लक्षण समान रूपेण घटित होता है वह समवृत्त छन्द होगा।
जैसे- इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थ, मालिनी, शिखरिणी, हरिणी आदि समवृत्त हैं।

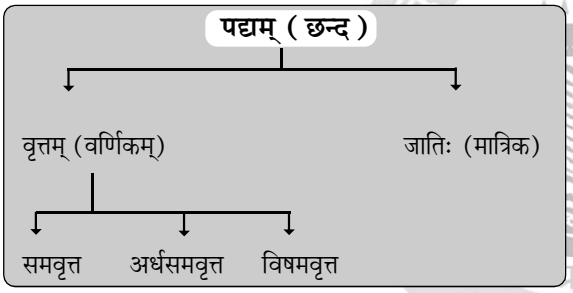
अङ्घ्रयो यस्य चत्वारस्तुल्यलक्षणलक्षिताः।
तच्छन्दःशास्त्रतत्त्वज्ञाः समं वृत्तं प्रचक्षते॥ (वृत्तरत्नाकर)

(ii) अर्धसमवृत्त- यदि छन्द का प्रथमपाद, तृतीयपाद के समान तथा द्वितीयपाद, चतुर्थपाद के समान होवे तो वह वृत्त **'अर्धसमवृत्त'** कहा जाएगा। जैसे- वियोगिनी, पुष्पिताग्रा अर्धसमवृत्त हैं।

प्रथमाङ्घ्रिसमो यस्य तृतीयश्चरणो भवेत्।
द्वितीयस्तुर्यवद् वृत्तं तदर्धसममुच्यते॥ (वृत्तरत्नाकर)

(iii) विषमवृत्त- यदि किसी छन्द के चारों चरण अलग-अलग लक्षण से युक्त होंगे तो वह विषमवृत्त कहा जाएगा। अर्थात् चारों चरणों में अक्षरसंख्या अलग-अलग होगी। जैसे- चतुरूर्ध्व आदि।

''भिन्नचिह्नचतुष्पादं विषमं परिकीर्तितम्'' (छन्दोमञ्जरी)



यति (विराम)- छन्द का गान करते समय किसी निश्चित स्थान पर जिह्वा का विश्रामस्थल यति या विराम कहलाता है। इसे यति, विरति, विराम, विच्छेद इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।
''यतिर्जिह्वेष्टविश्रान्तिः''

यतिस्थान- छन्द में जिन वर्णों में यति होगी, वह छन्द का यतिस्थान कहा जाता है। यतिस्थान को छन्दलक्षण में अब्धि, रस, सूर्य, अश्व, रुद्र आदि शब्दों से सङ्केतित किया जाता है।
जैसे- शार्दूलविक्रीडित छन्द के लक्षण में-

''सूर्याश्वैर्मसजास्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्''

यहाँ सूर्य और अश्व इन दो शब्दों से यतिस्थान को निर्देशित किया गया है। सूर्य द्वादश और अश्व सात प्रसिद्ध हैं अतः 12वें एवं 7वें अक्षर में यति होगी।

- जिन छन्दों के लक्षण में यतिस्थान का निर्देश नहीं होता वहाँ पादान्त में या श्लोक के आधे में यति माननी चाहिए।
  ''यतिः सर्वत्र पादान्ते श्लोकार्धे तु विशेषतः''

छन्द में यतिस्थान बोधक शब्दों की सूची

सं. - संख्याबोधक शब्द	सं. - संख्याबोधक शब्द
एक - ईश्वर, चन्द्र	दो - नेत्र, पक्ष
तीन - गुण, अग्नि	चार - वेद, समुद्र (अब्धि)
पाँच - भूत, बाण	छह - रस, शास्त्र
सात - अश्व, मुनि (ऋषि)	आठ - वसु, नाग
नव - ग्रह, रन्ध्र	दश - दिशा, दोष
ग्यारह - रुद्र, ईश	बारह - सूर्य (आदित्य)

अर्थात् छन्दों के लक्षण में यति या विराम किन वर्णों में होगा, इसको चन्द्र, सूर्य, अश्व, रथ, मुनि, रुद्र, रस आदि शब्दों से बताया जाता है।

जैसे- शिखरिणी छन्द के लक्षण में- **''रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी''**
अर्थात् रस 6 प्रसिद्ध हैं और रुद्र 11 होते हैं तो शिखरिणी छन्द को पढ़ते समय छठवें और 11वें अक्षर में यति (विराम) लेना है।

छन्दशास्त्र में लघु एवं गुरु वर्ण

- व्याकरणशास्त्र में ह्रस्व और दीर्घ वर्णों के स्थान पर छन्दशास्त्र में **लघु** एवं **गुरु** शब्दों का प्रयोग होता है।
- लघु वर्ण एक मात्रा का परिचायक है; जैसे— अ इ उ क च आदि। इसका सांकेतिक रूप खड़ी पाई (।) बताया गया है। व्यञ्जन वर्ण (हलन्त वर्ण) अर्थात् आधे अक्षर छन्दशास्त्र में नहीं गिने जाते हैं।
- गुरु वर्ण दो या दो से अधिक मात्रा का परिचायक है; जैसे- आ, ई, ऊ, का, चा, टा, पा आदि। इसका सांकेतिक रूप अंग्रेजी के (S) वर्ण की तरह होता है।

  लघु = ।, गुरु = S
- छन्दोमञ्जरी में लघु एवं गुरुवर्ण के बारे में कहा गया है कि-

वक्ररेखा गुरोश्चिह्नं सरला च लघोस्तथा।
गुरुरेको गकारस्तु लकारो लघुरेककः॥

छन्दशास्त्र में गुरु वर्ण विचार

सानुस्वारैश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

अर्थात्-

(i) सानुस्वारैः - अनुस्वार युक्त वर्ण गुरु होता है।
जैसे- 'संयम' में 'सं' वर्ण छन्दशास्त्र में गुरु माना जाएगा।

(ii) दीर्घश्च- दीर्घ वर्ण भी छन्दशास्त्र में गुरु माने जाते हैं।
जैसे- 'रामः' में 'रा' दीर्घ है अतः गुरुवर्ण होगा।

(iii) विसर्ग- विसर्गयुक्त वर्ण गुरु माने जाते हैं।

जैसे- 'श्यामः' में 'मः' गुरु वर्ण गिना जाएगा।

(iv) वर्णः संयोगपूर्वश्च- संयुक्तवर्णों के पूर्ववर्ण गुरु माना जाता है। जैसे- कृष्ण में 'ष्ण' इस संयुक्तवर्ण का पूर्ववर्ती वर्ण 'कृ' छन्दशास्त्र में गुरु माना जाएगा।

(v) पादान्तगोऽपि वा - पादान्त में स्थित लघु वर्ण भी विकल्प से गुरु माना जाता है। अर्थात् छन्द के लक्षण के अनुसार यदि पादान्त में लघु वर्ण चाहिए तो लघु; गुरु वर्ण की आवश्यकता हो तो गुरु होगा।

➢ इसप्रकार, अनुस्वार सहित, विसर्ग सहित, दीर्घ, संयुक्तवर्णों के पूर्व में स्थित वर्ण एवं पादान्त वर्णों को गुरु एवं इनके अलावा शेष सभी वर्ण छन्दशास्त्र में लघु वर्ण माने जाते हैं।
ऽ - गुरु वर्ण का चिह्न, । - लघु वर्ण का चिह्न

➢ छन्दों के लक्षण में गुरु वर्ण का बोध कराने के लिए **'गकार'** एवं लघु वर्णों का बोध कराने के लिए **'लकार'** कहा जाता है। जैसे-

(i) इन्द्रवज्रा छन्द के लक्षण में- **''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः''** यहाँ 'गः' का अर्थ गुरु वर्ण है।

(ii) **''रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी''** यहाँ 'लागः' का क्रमशः अर्थ होगा- लघु एवं गुरु।

गणों की संख्या

➢ छन्दशास्त्र में तीन-तीन वर्णों के **आठ वर्णिक गण** होते हैं-

जैसे- 1. यगण, 2. मगण, 3. तगण, 4. रगण,
5. जगण, 6. भगण, 7. नगण, 8. सगण।

➢ चार-चार मात्राओं के **पाँच मात्रिक गण** होते हैं।

(i) सर्वगुरु - ऽऽ (ii) सर्वलघु - ।। (iii) आदिगुरु - ऽ।।
(iv) मध्यगुरु - ।ऽ। (v) अन्तगुरु - ।।ऽ

➢ इसप्रकार 8 वर्णिकगण तथा 5 मात्रिक गणों को मिलाकर **कुल 13 गण छन्दशास्त्र में माने जाते हैं।**

आठ वर्णिक गण

सूत्र- ''यमाताराजभानसलगा''– इस सूत्र में प्रत्येक अक्षर एक-एक गण का प्रतिनिधित्व करता है और लघु एवं गुरु वर्णों की व्यवस्था भी बताता है। जैसे 'य' अक्षर यगण का बोध कराता है और 'यमाता' यह तीन अक्षरों के यगण में लघु गुरु वर्ण को भी सूचित करता है। अर्थात् यमाता = ।ऽऽ = यगण।

गणनाम		गणबोधक शब्द		लघु गुरु चिह्न
1. यगण	-	यमाता	-	।ऽऽ
2. मगण	-	मातारा	-	ऽऽऽ
3. तगण	-	ताराज	-	ऽऽ।
4. रगण	-	राजभा	-	ऽ।ऽ
5. जगण	-	जभान	-	।ऽ।
6. भगण	-	भानस	-	ऽ।।
7. नगण	-	नसल	-	।।।
8. सगण	-	सलगा	-	।।ऽ

➢ गण व्यवस्था जानने के लिए एक श्लोक और भी जानना चाहिए-

आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्॥

भजसा	=	भगण	जगण	सगण
यरता	=	यगण	रगण	तगण
मनौ	=	मगण	नगण	

➢ आदि मध्य और अन्त में क्रमशः गुरु वर्ण आए तो **'भजसा'**।

➢ आदि मध्य और अन्त में क्रमशः लघु वर्ण आये तो- **'यरता'** कहा जाए।

➢ **'मनौ'** में मगण के तीनों वर्ण गुरु एव नगण में तीनों लघुवर्ण होंगे।

भजसा = भगण ऽ।। आदिगुरु **यरता** = यगण ।ऽऽ आदिलघु
जगण ।ऽ। मध्यगुरु रगण ऽ।ऽ मध्यलघु
सगण ।।ऽ अन्तगुरु तगण ऽऽ। अन्तलघु

मनौ = मगण ऽऽऽ सर्वगुरु
नगण ।।। सर्वलघु

➢ गणव्यवस्था के लिए एक श्लोक और भी बहुत प्रसिद्ध है-

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो
भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः
सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥ (छन्दोमञ्जरी)

1.	**मस्त्रिगुरुः**	=	मगण -	ऽऽऽ	त्रिगुरु
2.	**त्रिलघुश्चनकारो**	=	नगण -	।।।	त्रिलघु
3.	**भादिगुरुः**	=	भगण -	ऽ।।	आदिगुरु
4.	**आदिलघुर्यः**	=	यगण -	।ऽऽ	आदिलघु
5.	**जो गुरुमध्यगतः**	=	जगण -	।ऽ।	मध्यगुरु
6.	**रलमध्यः**	=	रगण -	ऽ।ऽ	मध्यलघु
7.	**सोऽन्तगुरुः**	=	सगण -	।।ऽ	अन्तगुरु
8.	**अन्तलघुस्तः**	=	तगण -	ऽऽ।	अन्तलघु

आठ गणों का संक्षिप्त परिचय

गणनाम	स्वरूप	देवता	फल
1. मगण	ऽऽऽ	पृथ्वी	लक्ष्मी
2. यगण	।ऽऽ	जल	वृद्धि
3. रगण	ऽ।ऽ	अग्नि	विनाश
4. सगण	।।ऽ	वायु	देशाटन
5. तगण	ऽऽ।	व्योम	धनापहरण
6. जगण	।ऽ।	सूर्य	रोग
7. भगण	ऽ।।	शशि	यश
8. नगण	।।।	स्वर्ग	सुख

1. अनुष्टुप्

परिचय- अनुष्टुप् के प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं, चारों चरणों में कुल मिलाकर 8×4 = 32 वर्ण होते हैं।

छन्द लक्षण–

श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।

लक्षणार्थ- जिस छन्द के चारों चरणों में पाँचवाँ वर्ण लघु (ह्रस्व), छठवाँ अक्षर गुरु (दीर्घ) हो, पहले और तीसरे चरण में सातवाँ वर्ण दीर्घ (गुरु), तथा दूसरे एवं चौथे चरण में सातवाँ अक्षर ह्रस्व (लघु) हो, उस छन्द को अनुष्टुप् कहते हैं। अनुष्टुप् को ही पद्य या श्लोक भी कहते हैं।

➢ संक्षेप में अनुष्टुप् छन्द को इस तालिका से भी समझ सकते हैं-

वर्ण	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
पाँचवाँ वर्ण	। (लघु)	। (लघु)	। (लघु)	। (लघु)
छठवाँ वर्ण	ऽ (गुरु)	ऽ (गुरु)	ऽ (गुरु)	ऽ (गुरु)
सातवाँ वर्ण	ऽ (गुरु)	। (लघु)	ऽ (गुरु)	। (लघु)

➢ अनुष्टुप् छन्द के प्रत्येक चरण (पाद) में कुल आठ वर्ण होते हैं। पाँचवें, छठवें और सातवें अक्षर के लिए लघु और गुरु का निर्देश किया गया है, शेष अक्षरों के लिए कोई भी नियम नहीं है। चाहे वो लघु रहे या गुरु।

अनुष्टुप् छन्द का उदाहरण

प्रथम चरण - माता शत्रुः पिता वैरी
। ऽ ऽ
द्वितीय चरण - येन बालो न पाठितः।
। ऽ ।
तृतीय चरण - न शोभते सभामध्ये
। ऽ ऽ
चतुर्थ चरण - हंसमध्ये बको यथा।।
। ऽ ।

अधमाः धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः।
। ऽ ऽ । ऽ ।
उत्तमाः मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम्।।
। ऽ ऽ । ऽ ।

स्पष्टीकरण- इस छन्द के प्रत्येक चरण में पाँचवाँ अक्षर लघु, छठवाँ अक्षर गुरु, एवं प्रथम-तृतीय चरण में सातवाँ अक्षर दीर्घ एवं द्वितीय चतुर्थ चरण में सातवाँ अक्षर ह्रस्व (लघु) है, अतः यह अनुष्टुप् छन्द है। प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं, चरणान्त में यति (विराम) है।

अन्य उदाहरण

(1) आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
(2) तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।

2. आर्या छन्द

परिचय - आर्या मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम और तृतीय चरण में बारह-बारह मात्राएँ, द्वितीय चरण में अठारह तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

छन्द लक्षण - यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या।।

लक्षणार्थ - जिस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण में बारह-बारह मात्राएँ, द्वितीय चरण में अठारह मात्राएँ और चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं, वह आर्या छन्द कहलाता है।

प्रथम चरण - 12 मात्रा, **द्वितीय चरण -** 18 मात्रा
तृतीय चरण - 12 मात्रा, **चतुर्थ चरण -** 15 मात्रा

कुल मात्रा - 57 मात्रा

1. **आपरितोषाद् विदुषां** = 12 मात्रा
ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ
न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् । = 18 मात्रा
। ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ
बलवदपि शिक्षितानाम् = 12 मात्रा
। । । । । ऽ । ऽ ऽ
आत्मन्यप्रत्ययं चेतः।। = 15 मात्रा
ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ

2. **अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।**
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति।।

3. **कृष्णः शिशुः सुतो मे बल्लवकुलटाभिराहृतो न गृहे।**
क्षणमपि वसत्यसाविति जगाद गोष्ठ्यां यशोदाऽऽर्या।।

4. **शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य।**
दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः॥

* आर्या छन्द को 'मात्रिक छन्द' के नाम से भी जाना जाता है।
* आर्या छन्द के नव भेद -

पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपला च।
गीत्युपगीत्युद्गीतय आर्यागीतिश्च नवधाऽऽर्या॥

अर्थात् आर्या के नव भेद हैं - (1) पथ्या (2) विपुला (3) चपला (4) मुखचपला (5) जघनचपला (6) गीति (7) उपगीति (8) उद्गीति (9) आर्यागीति।

अन्य उदाहरण-

1. मृगमीनसज्जनानां तृणजलसन्तोषविहितवृत्तीनाम् ।
लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति।।
2. परिचरितव्याः सन्तः यद्यपि कथयन्ति नो सदुपदेशम् ।
यास्त्वेषां स्वैरकथास्ता एव भवन्ति शास्त्राणि।।
3. शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम् ।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः।।

3. इन्द्रवज्रा

परिचय- इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में कुल मिलाकर 11×4 = 44 अक्षर होंगे।

छन्द लक्षण– ''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः''।

शब्दार्थ– स्यात् = होवे, **इन्द्रवज्रा** = इन्द्रवज्रा, **यदि** = यदि, **तौ** = तगण, तगण (दो तगण) **जगौ** = जगण, गुरु, **गः** = गुरु।

लक्षणार्थ- इस प्रकार जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु वर्ण आयें, उसे 'इन्द्रवज्रा' छन्द कहते हैं।

इन्द्रवज्रा =तगण तगण जगण गुरु गुरु = 11 अक्षर
ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

उदाहरण

अर्थो हि कन्या परकीय एव, तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगण तगण जगण गुरु गुरु तगण तगण जगण गुरु गुरु
जातो ममायं विशदः प्रकामं, प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगण तगण जगण गुरु गुरु तगण तगण जगण गुरु गुरु

स्पष्टीकरण- इस छन्द के प्रत्येक चरण में तगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्ण आयें हैं, अतः इसमें इन्द्रवज्रा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण हैं; और पादान्त में यति (विराम) है।

विशेष- जब छन्द के लक्षण में यति (विराम) के लिए कोई निर्देश न हो तो नियमानुसार पादान्त या श्लोकार्ध में यति माननी चाहिए- **''यतिः सर्वत्र पादान्ते श्लोकार्धे तु विशेषतः''।**

इसलिए जिस किसी भी छन्द के लक्षण में यति (विराम) का कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है; उन छन्दों में पादान्त में यति माननी चाहिए। जैसे- इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, वंशस्थ आदि छन्दों में पादान्त में यति होगी; क्योंकि इन छन्दों के लक्षण में यति स्थल या विराम स्थल का कोई निर्देश नहीं है।

अन्य उदाहरण

(1) जीवन्तु मे शत्रुगणाः सदैव। (2) आहारनिद्राभयमैथुनानि।
(3) शास्त्रेषु निष्ठा सहजश्च बोधः।

इन्द्रवज्रा =तगण तगण जगण गुरु गुरु = 11 अक्षर
ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

उदाहरण

अर्थो हि कन्या परकीय एव, तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगण तगण जगण गुरु गुरु तगण तगण जगण गुरु गुरु
जातो ममायं विशदः प्रकामं, प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगण तगण जगण गुरु गुरु तगण तगण जगण गुरु गुरु

स्पष्टीकरण- इस छन्द के प्रत्येक चरण में तगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्ण आयें हैं, अतः इसमें इन्द्रवज्रा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण हैं; और पादान्त में यति (विराम) है।

विशेष- जब छन्द के लक्षण में यति (विराम) के लिए कोई निर्देश न हो तो नियमानुसार पादान्त या श्लोकार्ध में यति माननी चाहिए- **''यतिः सर्वत्र पादान्ते श्लोकार्धे तु विशेषतः''।**

इसलिए जिस किसी भी छन्द के लक्षण में यति (विराम) का कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है; उन छन्दों में पादान्त में यति माननी चाहिए। **जैसे-** इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, वंशस्थ आदि छन्दों में पादान्त में यति होगी; क्योंकि इन छन्दों के लक्षण में यति स्थल या विराम स्थल का कोई निर्देश नहीं है।

अन्य उदाहरण

(1) जीवन्तु मे शत्रुगणाः सदैव। (2) आहारनिद्राभयमैथुनानि।
(3) शास्त्रेषु निष्ठा सहजश्च बोधः।

4. उपेन्द्रवज्रा

परिचय- उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में 11 अक्षर होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में कुल 11×4 = 44 अक्षर होते हैं।

छन्द लक्षण- ''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ'' (वृत्तरत्नाकर)

शब्दार्थ - उपेन्द्रवज्रा = उपेन्द्रवज्रा, **जतजाः** = जगण, तगण, जगण,**ततः** = तदनन्तर,**गौ**= गुरु, गुरु (दो गुरु)

लक्षणार्थ- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरुवर्ण आयें, उसे उपेन्द्रवज्रा कहते हैं। पादान्त (चरणान्त) में यति या विराम होगा।

विशेष- इन्द्रवज्रा छन्द का यदि प्रथमवर्ण लघु कर दिया जाय तो, वही उपेन्द्रवज्रा छन्द हो जाता है। इसीलिए '**छन्दोमञ्जरी**' में इसका लक्षण लिखा है- ''**उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा**''।

उपेन्द्रवज्रा = जगण तगण जगण गुरु गुरु = 11 वर्ण

।ऽ। ऽऽ।।ऽ। ऽ ऽ

उदाहरण

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

।ऽ।ऽ ऽ । ।ऽ । ऽऽ ।ऽ। ऽ ऽ। । ऽ ।ऽऽ

जगण तगण जगण गुरु गुरु जगण तगण जगण गुरु गुरु

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

।ऽ। ऽ ऽ ।।ऽ ।ऽऽ ।ऽ। ऽऽ ।। ऽ।ऽऽ

जगण तगण जगण गुरु गुरु जगण तगण जगण गुरु गुरु

स्पष्टीकरण- इस छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण एवं दो गुरु वर्ण आयें हैं, अतः इसमें उपेन्द्रवज्रा छन्द है; इसके प्रत्येक चरण में 11 अक्षर हैं और पादान्त में यति है।

ध्यान दें- पादान्त में लघु वर्ण भी विकल्प से गुरु माना जाता है, अतएव यहाँ पादान्त वर्ण ह्रस्व (लघु) होते हुए भी गुरु वर्ण गिना गया है।

सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च यः।
वा पादान्ते त्वसौ वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मातृक ऋजुः॥

छन्दशास्त्र में अनुस्वार युक्त वर्ण, विसर्गयुक्त वर्ण, दीर्घवर्ण, तथा संयुक्तवर्णों से पूर्वस्थित ह्रस्व वर्ण भी गुरु (दीर्घ) माने जाते हैं। पादान्त में स्थित ह्रस्व (लघु) वर्ण विकल्प से दीर्घ (गुरु) माने जाते हैं। इनके अलावा सभी वर्ण ह्रस्व अर्थात् लघु गिने जायेंगे।

अन्य उदाहरण

(1) परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः।
(2) सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता।
(3) रजः प्रशान्तं सहिमोऽद्य वायुः।

5. उपजाति

परिचय- उपजाति छन्द के प्रत्येक चरण में भी 11 वर्ण होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में कुल 11×4 = 44 वर्ण होते हैं।

छन्द लक्षण-

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
(वृत्तरत्नाकर 3/30)

शब्दार्थ- जिस छन्द के दो चरण ठीक पूर्व बताये गए (इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के) लक्षण से युक्त हों, उसे उपजाति छन्द कहते हैं। अर्थात् इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के मिश्रण को उपजाति कहते हैं।

➢ अन्यत्र उपजाति छन्द का लक्षण इसप्रकार प्राप्त होता है-

उपेन्द्रवज्राचरणः प्रयाति यत्रेन्द्रवज्रा चरणेन योगम्।
छन्दोविदस्तामुपजातिमाहुः भवन्ति भेदाः बहवस्तदीयाः॥

लक्षणार्थ- जब उपेन्द्रवज्रा का कोई चरण इन्द्रवज्रा छन्द के किसी चरण से संयुक्त होता है, तब छन्दोविद् विद्वान् उसे उपजाति छन्द कहते हैं। इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मिश्रण से 14 प्रकार का उपजाति छन्द हो सकता है। (**इ** = इन्द्रवज्रा, **उ** = उपेन्द्रवज्रा)
(1) उ इ इ इ (2) इ उ इ इ (3) उ उ इ इ (4) इ इ उ इ (5) उ इ उ इ (6) इ उ उ इ (7) उ उ उ इ (8) इ इ इ उ (9) उ इ इ उ (10) इ उ इ उ (11) उ उ इ उ (12) इ इ उ उ (13) उ इ उ उ (14) इ उ उ उ

उदाहरण

न चौरहार्यं न च राजहार्यम् - **(उपेन्द्रवज्रा)**
।ऽ। ऽ ऽ। । ऽ ।ऽ ऽ
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि - **(उपेन्द्रवज्रा)**
।ऽ। ऽ ऽ। । ऽ ।ऽ ऽ
व्यये कृते वर्धत एव नित्यम् - **(उपेन्द्रवज्रा)**
।ऽ। ऽ ऽ। । ऽ ।ऽ ऽ
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् - **(इन्द्रवज्रा)**
ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरण में तीन चरण उपेन्द्रवज्रा के तथा चतुर्थ चरण इन्द्रवज्रा का है। इसप्रकार उपेन्द्रवज्रा और इन्द्रवज्रा छन्द के इस मिश्रण को उपजाति छन्द कहेंगे। यहाँ प्रत्येक पाद में 11 वर्ण हैं तथा पादान्त में यति है।

ध्यान दें- व्यञ्जन वर्ण (हलन्त वर्ण) अर्थात् आधे अक्षर छन्दशास्त्र में नहीं गिने जाते हैं।

अन्य उदाहरण

(1) दानेन भूतानि वशीभवन्ति। (2)वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये।
(3) कर्पूरगौरं करुणावतारम्।

6. वंशस्थ

परिचय- वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में 12 अक्षर होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में कुल 12×4 = 48 अक्षर होते हैं।

छन्द लक्षण

''**जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ**'' (वृत्तरत्नाकर 3/46)

शब्दार्थ–जतौ = जगण (।ऽ।), तगण (ऽऽ।), **जरौ** = जगण (।ऽ।), रगण (ऽ।ऽ)।

तु = तो, **वंशस्थम्** = वंशस्थ छन्द, **उदीरितम्** = कहा जाता है।

लक्षणार्थ- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण, रगण आयें तो उसे वंशस्थ छन्द कहा जाता है। चरणान्त में यति होती है।

वंशस्थ = जगण तगण जगण रगण = 12 अक्षर
।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

उदाहरण

रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये,
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ। ऽ
जगण तगण जगण रगण

स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे ।
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ
जगण तगण जगण रगण

अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे,
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ। ऽ
जगण तगण जगण रगण

त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः ॥
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ
जगण तगण जगण रगण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त छन्द के प्रत्येक चरण में जगण (।ऽ।), तगण (ऽऽ।), जगण (।ऽ।), रगण (ऽ।ऽ) का क्रमशः प्रयोग है, अतः इसमें वंशस्थ छन्द है। प्रत्येक चरण में 12 अक्षर हैं और चरणान्त (पादान्त) में यति है।

अन्य उदाहरण

(1) मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः। (2) श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्। (3) श्रियःपतिः श्रीमति शासितुं जगत्।

7. वसन्ततिलका

परिचय- वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक चरण में 'चौदह' अक्षर होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में कुल मिलाकर 14 x 4 = 56 अक्षर होंगे।

छन्द लक्षण- उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगण भगण जगण जगण गः गः

शब्दार्थ- उक्ता = कहा जाता है, **वसन्ततिलका** = वसन्ततिलका, **तभजा** = तगण, भगण और जगण, **जगौ** = जगण और गुरु, **गः** = गुरु।

लक्षणार्थ- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण (ऽऽ।), भगण (ऽ।।), दो जगण (।ऽ।) और अन्त में दो गुरु वर्ण स्थित हों तो उसे वसन्ततिलका छन्द कहते हैं।

उदाहरण-

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगण भगण जगण जगण ग ग

दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
ऽऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगण भगण जगण जगण ग ग

दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
ऽऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगण भगण जगण जगण ग ग

यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः॥
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगण भगण जगण जगण ग ग

अन्य उदाहरण-

1. एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्,
भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तान् ।
आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान्विकारा–
नम्भो यथा, सलिलमेव हि तत्समस्तम् ।।
2. त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं,
त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे।
इत्यादिभिः प्रियशतैरनुरुध्य मुग्धां,
तामेव शान्तमथवा किमतः परेण।।
3. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि।
4. यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्
आविष्कृतोऽरुणपुरः सर एकतोऽर्कः।
5. शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः।
6. मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति।
7. भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी
दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य।
8. मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम् ।

लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।

9. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।

8. मालिनी

परिचय- मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में कुल 15×4 = 60 वर्ण होंगे।

छन्द लक्षण- ''ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः''।

शब्दार्थ- ननमयय = नगण (।।।), नगण (।।।), मगण (ऽऽऽ), यगण (।ऽऽ), यगण (।ऽऽ), **युतेयम्** = युता + इयम् = से युक्त यह छन्द, **मालिनी** = मालिनी है, **भोगिलोकैः** = अष्ट भोगी (नाग) और सप्त लोक प्रसिद्ध हैं, अतः आठवें और सातवें अक्षर पर यति होगी। अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण तथा यगण आयें तो वह मालिनी छन्द होगा।

➢ भोगी (नाग) 8 प्रसिद्ध हैं, लोक 7 प्रसिद्ध हैं, अतः मालिनी छन्द के 8 वें और 7 वें अक्षर पर यति होगी।

मालिनी- नगण नगण मगण यगण यगण = 15 वर्ण

।।। ।।। ऽऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

उदाहरण

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्।
। । । ।। । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
नगण नगण मगण यगण यगण

मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति
। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
नगण नगण मगण यगण यगण

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
। । । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
नगण नगण मगण यगण यगण

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।
। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
नगण नगण मगण यगण यगण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त छन्द के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण, यगण (ननमयय) आयें हैं। प्रत्येक चरण में 15 वर्ण हैं तथा आठवें और सातवें अक्षर पर यति है, अतः इसमें मालिनी छन्द है।

अन्य उदाहरण

(1) अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहम्--------।
(2) न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्---।
(3) मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः--------।

9. मन्दाक्रान्ता

परिचय- मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में कुल मिलाकर 17×4 = 68 वर्ण होंगे।

छन्द लक्षण- ''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्मभौ नतौ ताद् गुरू चेत्''।

शब्दार्थ- म्भौ = मगण (ऽऽऽ), भगण (ऽ।।), **नतौ** = नगण (।।।), तगण (ऽऽ।), **ताद्** = तगण (ऽऽ।), **गुरू** = गुरु (ऽ), गुरु (ऽ), **चेत्** = यदि आये तो, **मन्दाक्रान्ता** = मन्दाक्रान्ता, **जलधि** = समुद्र चार होते हैं, **षड्** = छह, **अगैः** = अग (पर्वत) 7 होते हैं। इसलिए 4, 6, 7 वर्णों पर यति होगी।

लक्षणार्थ- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में मगण (ऽऽऽ), भगण (ऽ।।), नगण (।।।), तगण (ऽऽ।), तगण (ऽऽ।), गुरु (ऽ), गुरु (ऽ) वर्ण आयें तो मन्दाक्रान्ता छन्द होगा। इस छन्द में चौथे, छठवें, और सातवें अक्षर पर यति होती है।

मन्दाक्रान्ता = 17 वर्ण

मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु
ऽऽऽ ऽ।। ।।। ऽऽ। ऽऽ। ऽ ऽ

उदाहरण

(i) कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
ऽ ऽ ऽ ऽ ।।। ।।ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।
ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

(ii) शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । ।ऽ ऽ । ऽऽ । ऽ ऽ
मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण, गुरु, गुरु (म्भौ नतौ ताद् गुरू) वर्ण आयें हैं तथा जलधि (4), षड् (6), अग = पर्वत (7) इन वर्णों पर यति (विराम) है, अतः यहाँ मन्दाक्रान्ता छन्द है। प्रत्येक चरण में 17 वर्ण हैं।

अन्य उदाहरण

(1) विद्यातीर्थे जगति विबुधाः साधवः सत्यतीर्थे-----।

(2) नन्वात्मानं बहु विगणयन्नात्मनैवावलम्बे-----।

(3) नैतच्चित्रं यदमुदधिश्यामसीमां धरित्रीम्--------।

10. शिखरिणी

परिचय- शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। इसप्रकार चारों चरणों में कुल 17×4 = 68 वर्ण होते हैं।

छन्द लक्षण-''रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी''।

शब्दार्थ- यमनसभ = यगण (।ऽऽ), मगण (ऽऽऽ), नगण (।।।), सगण (।।ऽ), भगण (ऽ।।), **लागः** = लघु (।), गुरु (ऽ), **शिखरिणी** = शिखरिणी छन्द होता है।

रसैः =रस 6 प्रसिद्ध हैं, **रुद्रैः** = लोक में 11 रुद्र प्रसिद्ध हैं।

लक्षणार्थ- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में **यगण, मगण, नगण, सगण, भगण** एक **लघु** एवं एक **गुरु** वर्ण आयें तो शिखरिणी छन्द होगा।

➢ छन्दलक्षण में **'रसैः'** और **'रुद्रैः'** शब्द से यति का निर्देश किया गया है। लोक में कटु मधुर आदि षड् रस प्रसिद्ध हैं तथा 11 रुद्र माने जाते हैं अतः शिखरिणी छन्द के छठवें और ग्यारहवें अक्षर के बाद यति होगी।

शिखरिणी = 17 वर्ण

यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	लघु	गुरु
।ऽऽ	ऽऽऽ	।।।	।।ऽ	ऽ।।	।	ऽ

उदाहरण

समृद्धं सौभाग्यं सकलवसुधात्याः किमपितन्
। ऽऽ ऽ ऽ ऽ ।। । । ।ऽ ऽ । । । ऽ
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

महैश्वर्यं लीलाजनितजगतः खण्डपरशोः।
। ऽ ऽऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ ।। । ऽ
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृतमथ मूर्तं सुमनसां
। ऽ ऽ ऽऽ ऽ । । ।।। ऽऽ । । । ऽ
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

सुधासौन्दर्यं ते सलिलमशिवं नः शमयतु।।
। ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु एवं गुरु **(यमनसभलागः)** वर्ण आयें हैं तथा 6 वें और 11 वें अक्षर के बाद यति है अतः इसमें शिखरिणी छन्द है।

अन्य उदाहरण

(1) यदा किञ्चिज्ञोऽहं गज इव मदान्धः समभवम्।

(2) क्वचित् पृथ्वीशय्यः क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनः।

(3) न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो।

11. हरिणी छन्द

परिचय - हरिणी छन्द के प्रत्येक पाद में 17 वर्ण होते हैं, इस प्रकार चारों चरणों में कुल 17 **X** 4 = 68 वर्ण होते हैं।

छन्द लक्षण - ''रसयुगहयैर्न्सौ म्रौ स्लौ गौ यदा हरिणी तदा'' (वृत्तरत्नाकर 3/96)

''नसमरसला गः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता''
(छन्दोमञ्जरी, द्वितीय स्तबक)

शब्दार्थ -
यदा = जहाँ,
न्सौ = नगण (। । ।) सगण (। । ऽ),
म्रौ = मगण (ऽ ऽ ऽ) रगण (ऽ । ऽ),
स्लौ = सगण (। । ऽ) लघु (।),
गौ = गुरु (ऽ),
रस = रस 6 प्रसिद्ध हैं,
युग = 4 (चार) युग होते हैं,
हयैः = 7 घोड़े प्रसिद्ध हैं,
तदा = वहाँ
हरिणी = हरिणी छन्द होता है।

लक्षणार्थ - जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, सगण, मगण, रगण, सगण और अन्त में लघु और गुरु वर्ण हो उसे 'हरिणी' छन्द कहते हैं। यति 6, 4 और 7 वर्णों पर होती है ।

→ छन्दलक्षण में 'रसयुगहयैः' पद से यति का निर्देश किया गया है। लोक में कटु, मधुर आदि छः रस,सतयुग, द्वापर आदि चार युग और सात घोड़े प्रसिद्ध हैं अतः हरिणी छन्द के छठवें, चौथे और सातवें वर्ण पर यति होती है।

हरिणी - 17 वर्ण

नगण सगण मगण रगण सगण लघु गुरु

।।। ।। ऽ ऽ ऽ ऽ ।ऽ । । ऽ । ऽ

उदाहरण

न समरसनाः काले भोगाश्चलं धनयौवनम् ,

।।। ।।ऽ ऽऽऽ ऽ।ऽ ।। ऽ । ऽ

नगण सगण मगण रगण सगण लघु गुरु

कुरुत सुकृतं यावन्नेयं तनुः प्रविशीर्यते।

।।। ।। ऽ ऽऽऽ ऽ।ऽ ।।ऽ । ऽ

नगण सगण मगण रगण सगण लघु गुरु

किमपि कलना कालस्येयं प्रधावति सत्वरा,

।।। ।।ऽ ऽऽऽ ऽ।ऽ ।।ऽ । ऽ

नगण सगण मगण रगण सगण लघु गुरु

तरुणहरिणी सन्त्रस्तेव प्लवप्रविसारिणी ॥

।।। ।। ऽ ऽऽऽ ऽ।ऽ ।। ऽ । ऽ

नगण सगण मगण रगण सगण लघु गुरु

-सुवृत्ततिलक

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त उदाहरण के प्रत्येक चरण में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु एवं गुरु वर्ण आये हैं तथा 6वें (रस), 4वें (युग) और 7वें (घोड़े) वर्ण पर यति है अतः इसमें हरिणी छन्द है।

अन्य उदाहरण -

1. अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे
   विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
   तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
   मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि।।

   (अभि. 4/19)

2. ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः। (उत्तर. 3/24)
3. स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया। (अभि. 7/24)
4. दलति हृदयं शोकोद्वेगाद्द्विधा तु न भिद्यते
   वहति विकलः कायो मोहं न मुञ्चति चेतनाम्। (उत्तर.3/31)

12. शार्दूलविक्रीडितम्

परिचय- शार्दूलविक्रीडित के प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते हैं; इस प्रकार चारों चरणों में कुल मिलाकर 19×4 = 76 वर्ण होंगे।

छन्द लक्षण-"सूर्याश्वैर्मसजास्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।"

(वृत्तरत्नाकर 3/100)

शब्दार्थ- मसजास्तताः = मगण (ऽऽऽ), सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।), सगण (।।ऽ), तगण (ऽऽ।), तगण (ऽऽ।), **सगुरवः** = ऽ, **शार्दूलविक्रीडितम्** = शार्दूलविक्रीडित छन्द, **सूर्याश्वैः** = सूर्य (12), अश्व (7)

लक्षणार्थ- जब किसी छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण एवं एक गुरु वर्ण आयें तो शार्दूलविक्रीडित छन्द होगा। सूर्य = आदित्य (12), अश्व (7) प्रसिद्ध हैं । अतः 12वें और 7वें अक्षर पर यति होती है।

शार्दूलविक्रीडितम् = 19 वर्ण

मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ऽऽ। ऽऽ। ऽ

उदाहरण

(i) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,

ऽ ऽ ऽ। । ऽ । ऽ । । ।ऽ ऽ ऽ ।ऽ ऽ ।ऽ

मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः चिन्ताजडं दर्शनम्।

ऽ ऽ ऽ । । ऽ ।ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ।ऽ

मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ।ऽ ऽ । ऽ

मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

(ii) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या।

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ। ऽ

(iii) कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी।

ऽ ऽ ऽ । । ऽ ।ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

(iv) या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।

ऽ ऽ ऽ । । ऽ। ऽ।। । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ। ऽ

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण एवं गुरु वर्ण आयें हैं अतः इसमें शार्दूलविक्रीडित छन्द है। प्रत्येक चरण में 19 वर्ण हैं तथा 12वें और 7वें अक्षर पर यति है।

अन्य उदाहरण

(1) शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं----।

(2) यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः।

(3) विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्----।

13. स्रग्धरा

परिचय– स्रग्धरा के प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं। इस प्रकार चारों में कुल मिलाकर 21×4 = 84 वर्ण होंगे।

छन्द लक्षण–म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

(वृत्तरत्नाकर 3/104)

शब्दार्थ- म्रभ्नैः = मगण, रगण, भगण, नगण, **यानां त्रयेण** = तीन यगण, **त्रिमुनियतियुता** = तीन बार सातवें अक्षर पर यति वाला (जहाँ मुनियों - ऋषियों की सात संख्या अभिप्रेत है), **इयं कीर्तिता** = यह स्रग्धरा नामक छन्द कहलाता है।

लक्षणार्थ- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण (ऽ ऽ ऽ), रगण (ऽ।ऽ), भगण (ऽ।।), नगण (।।।) तीन यगण (।ऽऽ) वर्ण हों तथा तीन बार सातवें अक्षर पर यति हो उसे स्रग्धरा छन्द कहते हैं।

स्रग्धरा = 21 वर्ण

मगण	रगण	भगण	
(ऽऽऽ)	(ऽ।ऽ)	(ऽ।।)	
नगण	यगण	यगण	यगण
(।।।)	(।ऽऽ)	(।ऽऽ)	(।ऽऽ)

उदाहरण

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री

ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।

ऽऽऽ ऽ।ऽऽ।।।।। ।ऽ ऽ।ऽ ऽ ।ऽऽ

यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

ऽ ऽ ऽ ऽ ।ऽऽ।।।।।। ऽ ऽ।ऽऽ।ऽऽ

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽऽ ।।। ।।ऽऽ । ऽ ऽ । ऽऽ

अन्य उदाहरण

1. ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम् ।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।

2. पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेषसंवीतजानो–
रन्तः प्राणावरोधव्युपरतसकलज्ञानरुद्धेन्द्रियस्य।
आत्मन्यात्मानमेव व्यपगतकरणं, पश्यतस्तत्त्वदृष्ट्या
शम्भोर्वः पातु शून्येक्षणघटितलयब्रह्मलग्नः समाधिः।।

(मृच्छ.-1/1)

* संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम् *
Sanskritganga Official
New App Download from Google Play Store

अभ्यास प्रश्न (छन्द परिचय)

1. 'छन्दशास्त्र' (छन्दसूत्र) के रचयिता हैं–
(A) पिङ्गलः (B) यास्कः
(C) पाणिनिः (D) लगधः
स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास-बलदेव उपाध्याय,पेज-296

2. 'पिङ्गलछन्दसूत्र' केन रचितमस्ति?
(A) गङ्गादासेन (B) कालिदासेन
(C) पिङ्गलेन (D) षड्गुरुशिष्येण
स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास-बलदेव उपाध्याय,पेज-296

3. एकोनविंशतिः वर्णाः कस्मिन् छन्दसि भवति?
(A) शिखरिण्याम् **(B)** वसन्ततिलकायाम्
(C) उपजातौ **(D)** शार्दूलविक्रीडिते
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

4. वृत्तरत्नाकरस्य कर्ता कः?
(A) भूदारभट्टः (B) मन्दारभट्टः
(C) उदारभट्टः (D) केदारभट्टः
स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास-बलदेव उपाध्याय,पेज-307

5. छन्दः पादौ तु–
(A) इतिहासस्य (B) वेदस्य
(C) शास्त्रस्य (D) पुराणस्य
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-5

6. लौकिकछन्दः भवति–
(A) त्रिविधम् (B) चतुर्विधम्
(C) द्विविधम् (D) पञ्चविधम्
स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज–296

7. छन्दोमयी रचना को कहते हैं–
(A) पद्य (B) गद्य
(C) चम्पू (D) नाटक
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज– 6, 7

8. छन्दसि पादस्य अन्तिमो वर्णः कीदृशः स्वीक्रियते?
(A) प्लुत एव (B) लघुरेव
(C) लघुर्वा दीर्घो वा (D) दीर्घ एव
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

9. मात्रागणे कति कलाः सन्ति?
(A) तिस्रः (B) चतस्रः
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-8

10. वर्णिकछन्देषु गणना भवति–
(A) मात्राणाम् (B) ध्वनीनाम्
(C) वर्णानाम् (D) स्वराणाम्
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11,12

11. कस्मिन् गणे मध्यो गुरुर्भवति?
(A) जगणः (B) भगणः
(C) सगणः (D) मगणः
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-10

12. भगणः कः?
(A) अन्त्यगुरुः (B) आदिगुरुः
(C) मध्यगुरुः (D) आदिलघुः
स्रोत– छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-10

13. छन्दोविचारे कति गणाः सन्ति?
(A) पञ्च (B) षट्
(C) चत्वारः (D) अष्टौ
स्रोत–संस्कृत व्याकरण-प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–528

14. अवसाने कस्य गुरुः?
(A) तगणः (B) मगणः
(C) सगणः (D) नगणः
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-10

15. अधोलिखितेषु नगणः कः?
(A) ।।। (B) ऽऽऽ
(C) ।।ऽ (D) ऽ।।
स्रोत– छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

16. 'अश्नाति' इति शब्दः को गणो भवति?
(A) यगणः (B) तगणः
(C) जगणः (D) मात्रागणः
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

1. (A)	**2. (C)**	**3. (D)**	**4. (D)**	**5. (B)**	**6. (C)**	**7. (A)**	**8. (C)**	**9. (A)**	**10. (C)**
11. (A)	**12. (B)**	**13. (D)**	**14. (C)**	**15. (A)**	**16. (B)**				

17. 'चामुण्डी' इति शब्दे: को गणो भवति?
(A) भूतगणः (B) मगणः
(C) नगणः (D) स्त्रीगणः
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

18. ''तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।
एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा।।'' उपर्युक्ते पद्ये छन्दः स्यात् -
(A) आर्या **(B)** अनुष्टुप्
(C) वंशस्थ **(D)** भुजङ्गप्रयातम्

19. ''वन्दे तां रसभारतीं सुरनुतां श्रीराजराजेश्वरीम्'' चरणेऽस्मिन् कतमं छन्दः वर्तते?
(A) वियोगिनी **(B)** द्रुतविलम्बितम्
(C) शार्दूलविक्रीडितम् **(D)** रथोद्धता

20. निम्नलिखितपंक्तौ छन्दसः नाम किम्? 'मनोरथानामतटप्रपाताः।'
(A) उपेन्द्रवज्रा **(B)** इन्द्रवज्रा
(C) उपजातिः **(D)** शालिनी

21. सप्त-सप्त-सप्तभिश्च वर्णैः यतिः कस्मिन् छन्दसि भवति?
(A) शिखरिणी **(B)** मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् **(D)** स्रग्धरा

22. 'शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।' इत्यस्मिन् श्लोके छन्दः वर्तते-
(A) इन्द्रवज्रा **(B)** उपेन्द्रवज्रा
(C) वंशस्थम् **(D)** उपजातिः

23. ''प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।।'' इति पद्यांशे छन्दोऽस्ति-
(A) वसन्ततिलका **(B)** भुजङ्गप्रयातम्
(C) वंशस्थम् **(D)** द्रुतविलम्बितम्

24. निम्नलिखितपंक्तौ छन्दसः नाम निर्दिशतु-
''असंशयं क्षत्र परिग्रहक्षमा,
यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।''
(A) वंशस्थम् **(B)** द्रुतविलम्बितम्
(C) शालिनी **(D)** वसन्ततिलका

25. 'द्वितीयपादमात्रे यस्मिन् अष्टादशमात्राः भवन्ति' तस्य छन्दसः नाम वर्तते-
(A) मन्दाक्रान्ता **(B)** शार्दूलविक्रीडितम्
(C) आर्या **(D)** शिखरिणी

26. आर्याछन्दसि द्वितीयचरणे मात्राः भवन्ति–
(A) द्वादश **(B)** त्रयोदश
(C) पञ्चदश **(D)** अष्टादश
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-16,17

27. आर्या कस्मिन् छन्दसि अन्तर्भवति–
(A) अर्धसमवृत्ते **(B)** मात्रा
(C) समवृत्ते **(D)** अत्यष्टिः
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-16

28. आर्याप्रथमदलोक्तं लक्षणमुभयोर्दलयोर्भवति चेत् सा–
(A) गीतिः **(B)** उद्गीतिः
(C) उपगीतिः **(D)** चपला
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-18

29. अनुष्टुप्–छन्दसि सर्वत्र लघुः कतमो वर्णः भवति–
(A) षष्ठः **(B)** सप्तमः
(C) पञ्चमः **(D)** अष्टमः
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

30. ''शरदिन्दुसुन्दररुचिश्चेतसि सा मे गिरां देवी।
अपहृत्य तमःसन्ततमर्थानखिलान् प्रकाशयतु।।''
उपर्युक्त पद्य के छन्द का नाम लिखिए–
(A) आर्या **(B)** मालिनी
(C) उपेन्द्रवज्रा **(D)** वंशस्थ
स्रोत–साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा,पेज-100

31. 'इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे' इत्यत्र किं छन्दः?
(A) वसन्ततिलका **(B)** अनुष्टुप्
(C) द्रुतविलम्बितम् **(D)** इन्द्रवज्रा
स्रोत–उत्तररामचरितम् (1.1)

32. 'जगतः पितरौ वन्दे' इत्यत्र किं छन्दः?
(A) उपेन्द्रवज्रा **(B)** मन्दाक्रान्ता
(C) अनुष्टुप् **(D)** आर्या
स्रोत–रघुवंशम् (1/1) - बलवान सिंह यादव, पेज-4

33. 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' इत्यत्र किं छन्दः?
(A) अनुष्टुप् **(B)** वसन्ततिलका
(C) शिखरिणी **(D)** पुष्पिताग्रा
स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/7)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117

17. (B)	**18. (B)**	**19. (C)**	**20. (A)**	**21. (D)**	**22. (D)**	**23. (C)**	**24.** (A)	**25.** (C)	**26. (D)**
27. (B)	**28. (A)**	**29. (C)**	**30. (A)**	**31. (B)**	**32. (C)**	**33. (A)**			

34. उत्तररामचरितम् में कितने छन्दों का प्रयोग हुआ है-

(A) 11 **(B)** 19

(C) 7 **(D)** 15

स्रोत–उत्तररामचरितम्, कपिलदेव द्विवेदी, पेज-515

35. अनुष्टुप्–छन्दसि एकस्मिन् पादे अक्षराणि भवन्ति–

(A) दश **(B)** अष्टौ

(C) नव **(D)** द्वादश

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

36. अनुष्टुप् है–

(A) एक छन्द **(B)** एक अलङ्कार

(C) एक रस **(D)** एक गुण

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

37. यस्य छन्दसः चतुर्षु अष्टवर्णाः भवन्ति तद् अस्ति–

(A) मालिनी **(B)** इन्द्रवज्रा

(C) अनुष्टुप् **(D)** आर्या

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

38. अनुष्टुप् छन्द में कितने वर्ण होते हैं?

(A) 24 **(B)** 32

(C) 28 **(D)** 36

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

39. 'पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः।
गुरुं षष्ठं च जानीयात् शेषेष्वनियमो मतः॥''
उपर्युक्त श्लोक लक्षण है–

(A) अनुष्टुप् का **(B)** इन्द्रवज्रा का

(C) त्रिष्टुप् का **(D)** स्रग्धरा का

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

40. ''भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव'' अस्मिन् चरणे छन्दः विद्यते–

(A) उपेन्द्रवज्रा **(B)** शालिनी

(C) इन्द्रवज्रा **(D)** रथोद्धता

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–249

41. 'तौ जगौ गः'' लक्षणमस्ति–

(A) शार्दूलविक्रीडितछन्दसः **(B)** वंशस्थछन्दसः

(C) इन्द्रवज्राछन्दसः **(D)** मालिनीछन्दसः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

42. ''यत्रैव गङ्गायमुनात्रिवेणीगोदावरीसिन्धुसरस्वती च।
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतोदारकथा प्रसङ्गः॥''
उपर्युक्त श्लोक के छन्द का नाम लिखिए–

(A) इन्द्रवज्रा **(B)** उपेन्द्रवज्रा

(C) मालिनी **(D)** वंशस्थ

स्रोत– छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–19

43. इन्द्रवज्रा छन्द में वर्णों की संख्या होती है –

(A) 32 **(B) 40**

(C) 44 **(D) 48**

स्रोत–अलंकार एवं छन्द - समीर आचार्य, पेज-48

44. इन्द्रवज्रा–छन्दसः लक्षणे अन्ते गुरुः प्रयुज्यते–

(A) द्विवारम् **(B)** त्रिवारम्

(C) एकवारम् **(D)** चतुर्वारम्

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

45. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः
जातो ममायं विशदः प्रकामं, प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥''
इस श्लोक में छन्द है–

(A) उपजाति **(B)** शिखरिणी

(C) इन्द्रवज्रा **(D)** उपेन्द्रवज्रा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

46. ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव'' उपर्युक्त पंक्ति का छन्द क्या है?

(A) इन्द्रवज्रा **(B)** उपेन्द्रवज्रा

(C) आर्या **(D)** वंशस्थ

स्रोत–छन्दः प्रवेशिका - ज्ञानेन्द्रसापकोटा, पेज-34

47. मिश्रितं छन्दो भवति–

(A) उपजाति **(B)** आर्या

(C) इन्द्रवज्रा **(D)** उपेन्द्रवज्रा

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-20

34. (B) 35. (B) 36. (A) 37. (C) 38. (B) 39. (A) 40. (C) 41. (C) 42. (A) 43. (C) 44. (A) 45. (C) 46. (B) 47. (A)

48. ''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।'' यह लक्षण है–

(A) इन्द्रवज्रा का **(B)** उपेन्द्रवज्रा का

(C) वंशस्थ का **(D)** मालिनी का

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-22

49. ''उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्'' उपर्युक्तचरणे छन्दसः नाम अस्ति–

(A) रथोद्धता **(B)** वंशस्थम्

(C) उपेन्द्रवज्रा **(D)** द्रुतविलम्बितम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/30)-कपिलदेव द्विवेदी,पेज–442

50. ।ऽ।, ऽऽ।, ।ऽ।, ऽ।ऽ

निर्दिष्टानि लक्षणचिह्नानि वीक्ष्य छन्दसः नाम चिनुत–

(A) मालिनी **(B)** शिखरिणी

(C) मन्दाक्रान्ता **(D)** वंशस्थ

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-22

51. छन्दस्सु चतुर्दशवर्णात्मकं छन्दः अस्ति–

(A) वसन्ततिलका **(B)** मालिनी

(C) शिखरिणी **(D)** रथोद्धता

स्रोत–अलंकार एवं छन्द - समीर आचार्य, पेज-54

52. 'वसन्ततिलकम्' इत्यस्य छन्दसः एकस्मिन् पादे अक्षर संख्या रिक्तस्थानं प्रपूरयत–

(A) 14 **(B) 12**

(C) 15 **(D) 20**

स्रोत–अलंकार एवं छन्द - समीर आचार्य, पेज-54

53. वसन्ततिलकायाः लक्षणं किम्?

(A) रसभा नयौगः **(B)** भभजां रगौ गः

(C) मयरास्ततगौ गः **(D)** तभजा जगौ गः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-24,25

54. कस्मिन् छन्दसि प्रथमे षड्वर्णाः ह्रस्वाः भवन्ति?

(A) स्रग्धरा **(B)** वसन्ततिलका

(C) उपेन्द्रवज्रा **(D)** मालिनी

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-25

55. 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः' इदं लक्षणमस्ति–

(A) मालिनीछन्दसः **(B)** शालिनीछन्दसः

(C) वंशस्थछन्दसः **(D)** वसन्ततिलकाछन्दसः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-26

56. 'किरातार्जुनीयम्' प्रथमसर्ग के अन्त्य अधोलिखित श्लोक में कौन छन्द है? ''विधिसमयनियोगाद्दीप्ति संहारजिह्मम्।''

(A) उपजाति **(B)** वंशस्थ

(C) वसन्ततिलका **(D)** मालिनी

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/46)-रामसेवक दुबे, पेज-148,153

57. मालिनी-वृत्तस्य लक्षणं किम्?

(A) ररजनमयुतेयं मालिनी षड्भुकाब्भिः।

(B) ययरनमयुतेयं मालिनी सिन्धुरुद्रैः।

(C) ननभततयुतेयं मालिनी लोकसर्पैः।

(D) ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-25

58. यमनसभलागः इति–

(A) मालिन्याम् **(B)** भुजङ्गप्रयाते

(C) शिखरिण्याम् **(D)** प्रहर्षिण्याम्

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-26

59. ''भवभूति महाकवेरिमां निरर्गलतरङ्गिणी'' इति वदन्ति–

(A) स्रग्धरा **(B)** मन्दाक्रान्ता

(C) शिखरिणी **(D)** वसन्ततिलका

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि',पेज-523

60. ''रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी'' इत्यत्र रुद्रैः इति पदेन कस्याः संख्यायाः संकेतं भवति?

(A) 12 (द्वादश) **(B) 11** (एकादश)

(B) 16 (षोडश) **(D) 13** (त्रयोदश)

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-26

61. ''न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।''

(A) मन्दाक्रान्ता **(B)** हरिणी

(C) शिखरिणी **(D)** स्रग्धरा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-115

48. (C) 49. (B) 50. (D) 51. (A) 52. (A) 53. (D) 54. (D) 55. (A) 56. (D) 57. (D)
58. (C) 59. (C) 60. (B) 61. (C)

62. शिखरिणी वृत्ते कति अक्षराणि भवन्ति–

(A) द्वादश **(B)** सप्तदश

(C) ऊनविंशतिः **(D)** विंशतिः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-26

63. 'कलाभ्यां चूडालङ्कृतशशिकलाभ्यां निजतपः' अयं पादः –

(A) प्रहर्षिण्याः **(B)** पञ्चचामरस्य

(C) स्रग्धरायाः **(D)** शिखरिण्याः

स्रोत–वृत्तरत्नाकर - धरानन्दशास्त्री, पेज–141

64. ''नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणीमता'' अस्मिन् लक्षणे 'हयैः' पदस्य तात्पर्यमस्ति–

(A) अश्वैः **(B)** गजैः

(C) चतुर्भिः **(D)** सप्तभिः

स्रोत–वृत्तरत्नाकर - धरानन्दशास्त्री, पेज–143

65. मन्दाक्रान्ता–छन्दसि प्रत्येकस्मिन् चरणे कति वर्णाः निर्दिष्टाः?

(A) पञ्चदश **(B)** त्रयोदश

(C) सप्तदश **(D)** अष्टादश

स्रोत– छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-28

66. एषु सप्तदशवर्णात्मकं किं छन्दः?

(A) इन्द्रवज्रा **(B)** मन्दाक्रान्ता

(C) शालिनी **(D)** वंशस्थ

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-28

67. ''अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्ताम्'' अत्र छन्दः किम्?

(A) विद्युन्माला **(B)** मन्दाक्रान्ता

(C) अनुष्टुप् **(D)** शिखरिणी

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-41)-दयाशंकर शास्त्री, पेज–140

68. 'कश्चित्कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः' अत्र किं छन्दः अस्ति?

(A) मन्दाक्रान्ता **(B)** शिखरिणी

(C) स्रग्धरा **(D)** उपजातिः

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ 1) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-3

69. 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' इत्यादिपद्यस्य वृत्तं किमस्ति?

(A) मन्दाक्रान्ता **(B)** द्रुतविलम्बितम्

(C) उपजातिः **(D)** वसन्ततिलका

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-5) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-11

70. मेघदूते किं छन्दः प्रयुक्तम्?

(A) मालिनी **(B)** मन्दाक्रान्ता

(C) मेघविस्फूर्जिता **(D)** मध्यक्षामा

स्रोत–मेघदूतम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज-41

71. 'शिरः शार्वं स्वर्गात्पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरम्' उक्त पङ्क्ति में छन्द है–

(A) शार्दूलविक्रीडितम् **(B)** मन्दाक्रान्ता

(C) शिखरिणी **(D)** वंशस्थ

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-10) - तारिणीश झा, पेज–18

72. द्वादशे सप्तमे च स्थाने कस्मिन् छन्दसि यतिः जायते? नाम निर्देशं कुरुत–

(A) शार्दूलविक्रीडितम् **(B)** शिखरिणी

(C) मन्दाक्रान्ता **(D)** शालिनी

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

73. 'विद्यानां नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्' इति पद्यांशे किन्नाम छन्दः?

(A) वसन्ततिलका **(B)** शिखरिणी

(C) शार्दूलविक्रीडितम् **(D)** मन्दाक्रान्ता

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-17) - तारिणीश झा, पेज-29,31

74. शार्दूलविक्रीडितस्य लक्षणं किम्?

(A) अर्थकैस्तनयास्तभाः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

(B) सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

(C) लोकाकैः स्यमजस्यताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

(D) वस्मरौर्भयस्तस्तभाः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

62. (B) 63. (D) 64. (D) 65. (C) 66. (B) 67. (B) 68. (A) 69. (A) 70. (B) 71. (C) 72. (A) 73. (C) 74. (B)

75. 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं सम्पृष्टमुत्कण्ठया' में छन्द है–

(A) शिखरिणी **(B)** स्रग्धरा

(C) शार्दूलविक्रीडितम् **(D)** इनमें से कोई नहीं

स्रोत– छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

76. प्रतिपादं एकविंशतिः वर्णात्मकं किं छन्दः?

(A) उपजाति **(B)** वंशस्थ

(C) मालिनी **(D)** स्रग्धरा

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

77. प्रकृति (स्रग्धरा) छन्द के अक्षरों की संख्या होती है–

(A) 36 **(B) 44**

(C) 72 **(D) 84**

स्रोत–वृत्तरत्नाकर (3/103) - धरानन्द शास्त्री,पेज-149

78. चरण में वर्णों की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर इन वर्णिक छन्दों का सही अनुक्रम कौन-सा है?

(A) वसन्ततिलका-मन्दाक्रान्ता-शार्दूलविक्रीडित-इन्द्रवज्रा

(B) मन्दाक्रान्ता-शार्दूलविक्रीडित-इन्द्रवज्रा-वसन्ततिलका

(C) शार्दूलविक्रीडित - इन्द्रवज्रा-वसन्ततिलका-मन्दाक्रान्ता

(D) इन्द्रवज्रा - वसन्ततिलका - मन्दाक्रान्ता - शार्दूलविक्रीडित

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19,24,28,29

79. स्रग्धरा प्रतिपादं कति वर्णयुता भवति–

(A) एकविंशतिवर्णयुता **(B)** एकोनविंशतिवर्णयुता

(C) षोडशवर्णयुता **(D)** पञ्चदशवर्णयुता

स्रोत– छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र,पेज-29

80. हरिणीवृत्ते कति वर्णाः सन्ति?

(A) अष्टादश **(B)** सप्तदश

(C) षोडश **(D)** चतुर्दश

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-27

81. 'नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिः'– इत्यादिपद्ये किं वृत्तम्–

(A) इन्द्रवंशा **(B)** इन्द्रवज्रा

(C) उपेन्द्रवज्रा **(D)** वंशस्थम्

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम् – राजेन्द्र मिश्र पेज–19

82. शिखरिणीछन्दसि प्रतिपादं कतिषु वर्णेषु यतिः भवति–

(A) 12, 5 **(B)** 6, 11

(C) 10, 7 **(D)** 11, 6

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–26

83. प्रतिचरणं त-भ-ज-ज-गणैः गुरुद्वयेन च युतं वृत्तम्?

(A) शार्दूलविक्रीडितम्

(B)वसन्ततिलका

(C) द्रुतविलम्बित

(D) वंशस्थम्

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम् – राजेन्द्र मिश्र, पेज–24

84. द्वितीयपादमात्रे यस्मिन् अष्टादशमात्राः भवन्ति तस्य छन्दसः नाम वर्तते ?

(A) मन्दाक्रान्ता

(B) शार्दूलविक्रीडितम्

(C) आर्या

(D) शिखरिणी

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–466

85. ''ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः'' उपर्युक्त लक्षणे 'भोगि' शब्देन का संख्या सूच्यते?

(A) सप्त **(B)** षड्

(C) अष्ट **(D)** पञ्च

स्रोत- वृत्तरत्नाकर - धरानन्द शास्त्री, पेज-137

86. मन्दाक्रान्ता छन्दसि यतयः भवन्ति–

(A) 4, 6, 7 वर्णोपरि **(B)** 6, 11 वर्णोपरि

(C) 8, 4, 5 वर्णोपरि **(D)** 1, 2, 7 वर्णोपरि

स्रोत- वृत्तरत्नाकर - धरानन्द शास्त्री, पेज-144

87. स्रग्धरा छन्दसि एकस्मिन् पादे कति वर्णाः भवन्ति–

(A) 19 **(B)** 21

(C) 17 **(D)** 15

स्रोत- वृत्तरत्नाकर - धरानन्द शास्त्री पेज-149,150

75. (C)	**76. (D)**	**77. (D)**	**78. (D)**	**79. (A)**	**80. (B)**	**81. (B)**	**82. (B)**	**83. (B)**	**84. (C)**
85. (C)	**86. (A)**	**87. (B)**							

बिहार S-TET

एवं

BPSC के हल प्रश्न-पत्र

1 Bihar S-TET संस्कृत

माध्यमिक (वर्ग 9 से 10) Paper-I TGT

परीक्षा तिथि 9/9/2020

1. वैदिक मन्त्रों के संग्रह को क्या कहा जाता है?
(A) कथा (B) आख्यान
(C) संहिता (D) आख्यायिका
स्रोत- वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव, पेज-44

2. उद्गाता नामक ऋत्विक् का सम्बन्ध किस वेद से है?
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-48

3. ऋग्वेद में 'त्र्यम्बक' किस देवता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है?
(A) रुद्र (B) इन्द्र
(C) विष्णु (D) सविता
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज,138

4. सरमा-पणि-संवाद, ऋग्वेद के किस मण्डल एवं सूक्त में है?
(A) 10/90 (B) 10/95
(C) 10/108 (D) 10/121
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-16

5. आर्चिक एवं गान, किस वेद के दो भाग हैं?
(A) अथर्ववेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) ऋग्वेद
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-49

6. 'कठोपनिषद्' किस वेद से सम्बद्ध है?
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-45

7. वैदिक शब्दों का सही-सही अर्थ बताने वाला वेदाङ्ग कौन-सा है?
(A) शिक्षा (B) कल्प
(C) व्याकरण (D) निरुक्त
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-114

8. ऊष्म-वर्ण के अन्तर्गत कौन-सा वर्ण-समूह आता है?
(A) य,र,ल,व (B) श,ष,स,ह
(C) क्ष,त्र,ज्ञ (D) ङ,ञ,ण,न,म
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-17

9. निम्नलिखित में से कौन रूपक की श्रेणी में नहीं आता है?
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) मेघदूतम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-36

10. चाणक्य की कूटनीति पर आधारित, राजनीति प्रधान नाटक निम्नलिखित में से कौन है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) मुद्राराक्षस (D) मृच्छकटिकम्
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इति. - उमाशङ्कर शर्मा, पेज-507

11. 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः .....' प्रस्तुत पंक्ति की प्रेरणा से किस महान ग्रन्थ की रचना हुई है?
(A) रामायण (B) महाभारत
(C) विष्णुपुराण (D) रामचरितमानस
स्रोत-संस्कृतसाहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-124

12. रामायण के पञ्चम काण्ड को किस नाम से जाना जाता है?
(A) बालकाण्ड (B) अयोध्याकाण्ड
(C) सुन्दरकाण्ड (D) लंकाकाण्ड
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

13. 'महाभारत' के रचयिता कौन है?
(A) महर्षि वाल्मीकि (B) महर्षि वेदव्यास
(C) महर्षि विश्वामित्र (D) महर्षि वशिष्ठ
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-61

1. (C) 2. (B) 3. (A) 4. (C) 5. (C) 6. (C) 7. (D) 8. (B) 9. (C) 10. (C) 11. (A) 12. (C) 13. (B)

14. 'अशीतिः' से किस संख्या का बोध होता है?
(A) 70 (B) 80
(C) 79 (D) 81
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-135

15. 'अयुतम्' से हमारा अभिप्राय होता है -
(A) एक हजार (B) दस हजार
(C) एक लाख (D) दस लाख
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-135

16. पुस्तकालये ..... मित्राणि पठन्ति। रिक्त स्थान की पूर्ति निम्नलिखित में किससे होगी?
(A) त्रयः (B) तिस्रः
(C) त्रीणि (D) इनमें से कोई नहीं

17. 'सार्धनववादनम्' से हमारा अभिप्राय है -
(A) 8:45 बजे (B) 9:00 बजे
(C) 9:15 बजे (D) 9:30 बजे

18. 'सः संकल्पं करोति।' इस कर्त्तृवाच्य के वाक्य का कर्मवाच्य रूप होगा?
(A) तं संकल्पं करोति (B) तेन संकल्पः क्रियते।
(C) तव संकल्पं क्रियते (D) तस्मिन् संकल्पः क्रियते

19. 'उत्कर्षः' का विपरीतार्थक शब्द इनमें से कौन होगा?
(A) अपकर्षः (B) अवकर्षः
(C) अनुकर्षः (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-98

20. 'संस्कृतिः' में कौन-सा उपसर्ग है?
(A) सम् (B) संस्
(C) सु (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- संस्कृत-हिन्दी (शब्दकोश)-शिवराज आप्टे, पेज-1427

21. उपसर्ग-प्रयोग की दृष्टि से इनमें से कौन अपवाद है?
(A) परिश्रमः (B) परिजनः
(C) परिसरः (D) पराभवः

22. अहं चिन्तयामि- इस कर्त्तृवाच्य के वाक्य का भाववाच्य रूप होगा -
(A) मया चिन्त्यते (B) मह्यं चिन्त्यते
(C) मम चिन्त्यते (D) इनमें से कोई नहीं

23. भाववाच्य के वाक्यों में क्रिया सदैव किस रूप में रहती है?
(A) प्रथमपुरुष, एकवचन
(B) प्रथमपुरुष, बहुवचन
(C) उत्तमपुरुष, एकवचन
(D) उत्तमपुरुष, बहुवचन
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-76

24. 'पृथ्वी' का पर्यायवाची, निम्नलिखित में से कौन एक नहीं है?
(A) भू (B) वसुन्धरा
(C) वसुधा (D) आत्मजा
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-94

25. 'कादयोमावसानाः स्पर्शाः' के अन्तर्गत कितने वर्ण आते हैं?
(A) 20 (B) 25
(C) 27 (D) 28
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-8

26. धातु के अन्त में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय को क्या कहते हैं?
(A) तद्धित प्रत्यय (B) कृत् प्रत्यय
(C) ङीप् प्रत्यय (D) ङीन् प्रत्यय
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-65

27. 'विहाय' में किस प्रत्यय का प्रयोग हुआ है?
(A) क्तिन् प्रत्यय (B) तुमुन् प्रत्यय
(C) व्यत् प्रत्यय (D) ल्यप् प्रत्यय
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-66

28. कथ + तुमुन् से निष्पन्न शब्द होगा -
(A) कथितुम् (B) कथयितुम्
(C) कथतुम् (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- प्रत्ययगंगा - सर्वज्ञभूषण, पेज-84

29. निम्नलिखित में से कौन स्त्री-प्रत्यय का अपवाद है?
(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ति (D) यङ्
स्रोत- प्रत्ययगंगा-सर्वज्ञभूषण,पेज-11

14. (B) 15. (B) 16. (C) 17. (D) 18. (B) 19. (A) 20. (A) 21. (D) 22. (A) 23. (A) 24. (D) **25.** (B) **26. (B) 27. (D) 28. (B) 29. (D)**

30. 'वयसि प्रथमे'- इस सूत्र से स्त्रीत्व-विवक्षा में किस प्रत्यय का प्रयोग होता है?
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) टाप् (D) डाप्
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-75

31. 'अहर्निशम्' में कौन-सा समास है?
(A) द्विगु समास (B) द्वन्द्व समास
(C) तत्पुरुष समास (D) अव्ययीभाव समास

32. 'श्वेताम्बरा' में कौन-सा समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-56

33. 'कृष्णाश्रितः' का सामासिक-विग्रह क्या होगा?
(A) कृष्णाः श्रितः (B) कृष्णां श्रितः
(C) कृष्णाय श्रितः (D) कृष्णे श्रितः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-245

34. निम्नलिखित में से कौन क्रिया-विशेषण अव्यय का उदाहरण नहीं है?
(A) प्रातः (B) शनैः
(C) श्वः (D) अथ

35. 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्र से किस विभक्ति का प्रयोग होता है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-235

36. 'भू' धातु के योग में जहाँ से कोई चीज उत्पन्न होती है, उसमें किस विभक्ति का प्रयोग होता है?
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी
स्रोत- कारक प्रकरणम् -राममुनि पाण्डेय, पेज-84

37. 'स्था' धातु लङ्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन का रूप होगा -
(A) अतिष्ठत् (B) अतिष्ठः
(C) अतिष्ठम् (D) अतिष्ठाम्
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-221

38. 'आसीत्' अस् धातु के किस लकार का रूप है?
(A) लट्लकार (B) लृट्लकार
(C) लङ्लकार (D) लोट्लकार
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-235

39. 'वद्' धातु लोट्लकार, मध्यमपुरुष, द्विवचन का रूप निम्नलिखित में से कौन होगा?
(A) वदताम् (B) वदन्तु
(C) वदतम् (D) वदत
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-193

40. 'साधु' शब्द का तृतीया विभक्ति, बहुवचन का रूप होगा -
(A) साधवः (B) साधुना
(C) साधुभिः (D) साधुभ्यः
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-5

41. 'जगति'- जगत् शब्द के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?
(A) प्रथमा विभक्ति, एकवचन
(B) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(C) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
(D) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-61

42. 'गुणिषु' - किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?
(A) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
(B) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
(C) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
(D) सप्तमी विभक्ति, बहुवचन
स्रोत- रूपचन्द्रिका - संजय कुमार जैन, पेज-76

43. 'सूर्य + उदयः = सूर्योदयः' - यहाँ किस सूत्र से सन्धि हुई है?
(A) आद्गुणः (B) वृद्धिरेचि
(C) इकोयणचि (D) एचोऽयवायावः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-27,28

30. (A) 31. (B) 32. (D) 33. (B) 34. (D) 35. (B) 36. (C) 37. (B) 38. (C) 39. (C) 40. (C) 41. (D) 42. (D) 43. (A)

44. 'नयनम्' का सन्धिविच्छेद होगा -
(A) ने + अनम् (B) ने + अयनम्
(C) नै + अनम् (D) नै + अयनम्
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-30

45. 'रामे + अपि = रामेऽपि' - यहाँ किस सूत्र का प्रयोग हुआ है?
(A) एङः पदान्तादति (B) एङि पररुपम्
(C) इको यणचि (D) एचोऽयवायावः
स्रोत- मिशन राजस्थान-सर्वज्ञभूषण,पेज-27

46. 'वा शरि' सूत्र का सम्बन्ध किस सन्धि से है?
(A) स्वर-सन्धि (B) व्यञ्जन-सन्धि
(C) विसर्ग-सन्धि (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-117

47. निम्नलिखित में से कौन नास्तिक-दर्शन का अपवाद है?
(A) बौद्ध-दर्शन (B) वेदान्त-दर्शन
(C) चार्वाक-दर्शन (D) जैन-दर्शन
स्रोत- भारतीयदर्शनसार-सर्वज्ञभूषण,पेज-5

48. 'कठोपनिषद्' के अनुसार, प्रेय-मार्ग किसका प्रतिपादक है?
(A) विद्या (B) अविद्या
(C) दानशीलता (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- कठोपनिषद् - पुष्पा गुप्ता, भू. पेज-(xxxviii)

49. 'कठोपनिषद्' के अनुसार, नचिकेता ने द्वितीय वर के रूप में यमराज से क्या याचना की?
(A) पिता की प्रसन्नता (B) आत्मतत्त्व का ज्ञान
(C) अग्निविद्या (D) श्रेय और प्रेय का ज्ञान
स्रोत- मिशन LT - सर्वज्ञभूषण, पेज-5

50. मेघदूत के अनुसार, यक्ष को कर्त्तव्यहीनता के कारण किसने नगर-निर्वासन की सजा दी?
(A) इन्द्र (B) विष्णु
(C) कुबेर (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत-संस्कृतसाहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-332

51. 'खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशाऽनुसारि यत्' काव्य के किस विधा का बोध कराता है?
(A) गद्यकाव्य (B) गीतिकाव्य
(C) स्तोत्र-काव्य (D) महाकाव्य
स्रोत- संस्कृतसाहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-521

52. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नामक नाटक में किस नायिका को धरोहर के रूप में रखा गया है?
(A) पद्मावती (B) वासवदत्ता
(C) शकुन्तला (D) अवन्तिसुन्दरी
स्रोत- स्वप्नवासवदत्तम् शेषाजशर्मा 'रेम्मी', पेज- भू.-4

53. व्यञ्जन-वर्ण निम्नलिखित में से क्या होते हैं?
(A) अर्द्धमात्रिक (B) एकमात्रिक
(C) द्विमात्रिक (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-8

54. 'माहेश्वर' सूत्र में व्यञ्जन-वर्णों की संख्या कितनी होती है?
(A) 25 (B) 28
(C) 30 (D) 33
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-11

55. 'अच्' प्रत्याहार के वर्ण निम्नलिखित में क्या कहलाते हैं?
(A) स्वर-वर्ण (B) व्यञ्जन-वर्ण
(C) संयुक्त-वर्ण (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-11

56. 'चवर्ग' का उच्चारण स्थान है -
(A) कण्ठ (B) तालु
(C) मूर्धा (D) नासिका
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-15

57. द्विकर्मक धातुओं की संख्या कितनी है?
(A) 10 (B) 12
(C) 14 (D) 16
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-30

58. संस्कृत में लकार कितने प्रकार के होते हैं?
(A) 6 (B) 8
(C) 10 (D) 12
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव, पेज-1

59. 'अष्टाध्यायी' के रचनाकार कौन हैं?
(A) पाणिनि (B) पतञ्जलि
(C) कात्यायन (D) भट्टोजिदीक्षित
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-291

44. (A) 45. (A) 46. (C) 47. (B) 48. (B) 49. (C) 50. (C) 51. (B) 52. (B) 53. (A) 54. (D) 55. (A) 56. (B) 57. (D) 58. (C) 59. (A)

60. आचार्य दण्डी की रचनाओं की विशिष्टता क्या है?
(A) अर्थगौरव (B) उपमा
(C) पदलालित्य (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-289

61. 'असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।' प्रस्तुत पंक्तियाँ कहाँ से उद्धृत है?
(A) कठोपनिषद् (B) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) ईशोपनिषद् (D) छान्दग्योपनिषद्
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव, पेज-185

62. 'शुकनासोपदेश' किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) हर्षचरितम् (B) कादम्बरी
(C) शिवराजविजयः (D) शिशुपालवधम्
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-32

63. महाकवि कालिदास विरचित 'रघुवंशम्' काव्य किस श्रेणी में आता है?
(A) गीतिकाव्य (B) गद्यकाव्य
(C) महाकाव्य (D) रूपक
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-279

64. 'बुद्धचरितम्' के रचनाकार कौन हैं?
(A) श्रीहर्ष (B) भट्टनारायण
(C) भास (D) अश्वघोष
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-279

65. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में अभिज्ञान का सूचक क्या है?
(A) कङ्कन (B) नुपुर
(C) पत्र (D) अँगूठी
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव, भू. पेज-41

66. योग-दर्शन के प्रणेता कौन हैं?
(A) जैमिनी (B) गौतम
(C) शङ्कराचार्य **(D) पतञ्जलि**
स्रोत- भारतीयदर्शनसार - सर्वज्ञभूषण, पेज-5

67. 'काव्यप्रकाश' के रचनाकार निम्नलिखित में कौन हैं?
(A) भामह (B) दण्डी
(C) विश्वनाथ (D) मम्मट
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-278

68. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम पद्य में किस शब्द का प्रयोग हुआ है?
(A) लक्ष्मीः (B) विभुः
(C) शिवः (D) श्रीः
स्रोत- किरातार्जुनीयम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-17

69. दो छन्दों के मिलने से कौन-सा छन्द बनता है?
(A) इन्द्रवज्रा (B) उपेन्द्रवज्रा
(C) उपजाति (D) आर्या
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-173

70. त्रिष्टुप् छन्द में कुल कितने अक्षर होते हैं?
(A) 33 (B) 36
(C) 44 (D) 46
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-23

71. संस्कृत, विशेषकर वैदिक-संस्कृत के ज्ञाता फ्रेडरिक मैक्समूलर मूलरूप से किस देश के रहने वाले थे?
(A) जर्मनी (B) फ्रांस
(C) इंग्लैण्ड (D) इटली
स्रोत- र

72. उपमान की अपेक्षा जहाँ उपमेय का उत्कर्ष दिखाया जाए, वहाँ कौन-सा अलङ्कार होता है?
(A) रूपक (B) उपमा
(C) व्यतिरेक (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत- काव्यप्रकाश (10/सू.158) - विश्वेश्वर, पेज-491

**73. 'धन्या सा स्त्री यां तथा वेत्ति भर्त्ता।
भर्तृस्नेहात्सा हि दग्धाप्यदग्धा॥' - प्रस्तुत पंक्तियाँ किस नायिका के सन्दर्भ में कही गयी है?**
(A) पद्मावती (B) अवन्तिसुन्दरी
(C) वसन्तसेना (D) वासवदत्ता
स्रोत- स्वप्नवासवदत्तम् (1/13)

74. पुराणों की संख्या कुल कितनी है?
(A) 12 (B) 15
(C) 18 (D) 21
स्रोत-संस्कृतसाहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-176

60.(C) 61.(B) 62.(B) 63.(C) 64. (D) 65.(D) 66.(D) 67.(D) 68.(A) 69.(C) 70.(C) 71.(A) 72.(C) 73.(D) 74.(C)

75. निम्नलिखित में से कौन-सा पर्व 'महाभारत' से सम्बद्ध नहीं है?
(A) सभा-पर्व (B) वन-पर्व
(C) कर्ण-पर्व (D) भीम-पर्व
स्रोत-संस्कृतसाहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-118

76. 'सत्कार्यवाद' किस दर्शन का सिद्धान्त है?
(A) न्यायदर्शन (B) वैशेषिकदर्शन
(C) सांख्यदर्शन (D) योगदर्शन
स्रोत- भारतीयदर्शनसार - सर्वज्ञभूषण, पेज-7

77. 'गतिः' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) घञ् (B) क्तिन्
(C) ण्वुल् (D) क्तवतु
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-67

78. 'याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' कहाँ वर्णित है?
(A) मेघदूतम् (B) रघुवंशम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) शिशुपालवधम्
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-154

79. सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा। नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे, विवर्णभावं स स भूमिपालः॥ प्रस्तुत श्लोक में किसके स्वयंवर का वर्णन है?
(A) सीता (B) इन्दुमती
(C) सुलक्षणा (D) शशिमती
स्रोत-संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-215

80. चाणक्य-चन्दनदास का कूटनीतिप्रवण संवाद किस नाटक में वर्णित है?
(A) मृच्छकटिक (B) मुद्राराक्षस
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) उत्तररामचरितम्
स्रोत-संस्कृतसाहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-505

81. सर्वधर्मसम्मेलन का आयोजन कब और कहाँ किया गया?
(A) 1893 ई., शिकागो
(B) 1893 ई., वाशिंगटन
(C) 1895 ई., शिकागो
(D) 1895 ई., वाशिंगटन

82. निम्नलिखित में से किस ग्रन्थ की रचना वरदराज ने की है -
(A) सिद्धान्तकौमुदी (B) लघुसिद्धान्तकौमुदी
(C) अष्टाध्यायी (D) महाभाष्य
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-8

83. सांख्यदर्शन में 'कैवल्य' किसका माना जाता है?
(A) प्रकृति का (B) पुरुष का
(C) अहङ्कार का (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- सांख्यकाकि (का.-68)

84. 'अयं बालकः अस्ति'- इस वाक्य में 'अयम्' कौन-सा विशेषण है?
(A) गुणवाचक (B) परिमाणवाचक
(C) संख्यावाचक **(D) सार्वनामिक**
स्रोत- बृहद अनुवाद चन्द्रिका- चक्रधर नौटियाल, पेज-104

85. रस-सम्प्रदाय का प्रवर्तक किसे माना जाता है?
(A) भरत (B) विश्वनाथ
(C) आनन्दवर्द्धन (D) वामन
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-302

86. ''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि''- काव्य की प्रस्तुत परिभाषा किसने दी है?
(A) विश्वनाथ (B) भामह
(C) मम्मट (D) आनन्दवर्द्धन
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-302

87. सङ्केतग्रह का सम्बन्ध इनमें से किससे होता है?
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- काव्यप्रकाश (2 सू./-11) विश्वेश्वर, पेज-50

88. शङ्कराचार्य से शास्त्रार्थ करने वाले बिहार के प्रकाण्ड विद्वान् का क्या नाम है?
(A) याज्ञवल्क्य (B) कौटिल्य
(C) मण्डनमिश्र (D) वात्स्यायन
स्रोत-संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इति. (दशम खण्ड)-बलदेव उपा., पेज-22

75. (D) 76. (C) 77. (B) 78. (A) 79. (B) 80. (B) 81. (A) 82. (B) 83. (B) 84. (D) 85. (A) 86. (C) 87. (A) 88. (C)

89. राजा जनक की सभा में हुए शास्त्रार्थ (याज्ञवल्क्य के साथ) में किस महिला-विदुषी ने प्रश्नों के सही उत्तर देकर सबको अचम्भित कर दिया-

(A) गार्गी वाचक्नवी (B) भारती
(C) मैत्रेयी (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

90. भर्तृहरि-रचित 'नीतिशतकम्' किस श्रेणी में आता है?

(A) गीतिकाव्य (B) गद्यकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) महाकाव्य

स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-40

91. 'न्यायकुसुमाञ्जलि' की रचना मिथिला के किस प्रसिद्ध विद्वान् ने की?

(A) मण्डनमिश्र (B) उदयनाचार्य
(C) याज्ञवल्क्य (D) बाणभट्ट

स्रोत- भारतीयदर्शनसार - सर्वज्ञभूषण, पेज-37

92. कादम्बरी एवं हर्षचरितम् के प्रणेता बाणभट्ट मूलरूप से कहाँ के रहने वाली थे?

(A) प्रीतिकूट, बिहार (B) सारण, बिहार
(C) उज्जयिनी (D) वाराणसी

स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-12

93. 'तुलनात्मक भाषाविज्ञान' का जन्मदाता किसे माना जाता है?

(A) विलियम जोन्स (B) हेनरी कोलब्रुक
(C) फ्रीड्रिश श्लेगेल (D) अडोल्फ श्लेगेल

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव, पेज-4

94. किस विदेशी संस्कृत-मर्मज्ञ को यूरोप में संस्कृत-साहित्य के प्रचार-प्रसार का श्रेय दिया जाता है?

(A) याकोब ग्रिम (B) रास्क
(C) हेनरी कोलब्रुक (D) फ्रान्त्स बोप

स्रोत- र

95. अष्टाध्यायी में प्रायः कितने सूत्र हैं?

(A) 6000 (B) 5000
(C) 4000 (D) 3000

स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-8

96. महर्षि पतञ्जलि का काल कब निर्धारित किया गया है?

(A) 450 ई.पू. (B) 250 ई.पू.
(C) 150 ई.पू. (D) 100 ई.पू.

स्रोत- व्याकरण महाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, भू. पेज-4

97. 'अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते' कहाँ वर्णित है?

(A) वाल्मीकि-रामायण (B) महाभारत
(C) रघुवंशम् (D) मेघदूतम्

स्रोत- र

98. हितोपदेशः के रचनाकार कौन हैं?

(A) विष्णुशर्मा (B) विष्णुगुप्त
(C) नारायण पण्डित (D) सोमदेव

स्रोत-संस्कृतसाहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-432,433

99. ''चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः''- यह किस कवि की सूक्ति है?

(A) भास (B) कालिदास
(C) भारवि (D) माघ

स्रोत-स्वप्नवासवदत्तम् (1/4)-दिनेश प्रसाद तिवारी, पेज-67

100. 'पापान्निवारयति योजयते हिताय, गुह्यं निगूहति गुणान्प्रकटीकरोति .....'- भर्तृहरि ने इन पंक्तियों में किसका लक्षण प्रस्तुत किया है?

(A) माता (B) पिता
(C) सन्मित्र (D) गुरु

स्रोत- नीतिशतकम् (66) - तारिणीश झा, पेज-107

Sanskritganga Official
New App Download from Google Play Store

89. (A) 90. (C) 91. (B) 92. (A) 93. (A) 94. (C) 95. (C) 96. (C) 97. (A) 98. (C) 99. (A) 100. (C)

2 Bihar S-TET संस्कृत

माध्यमिक (वर्ग 9 से 10) Paper-I TGT

परीक्षा तिथि 11/9/2023

1. अष्टाध्यायी के रचयिता कौन हैं?
(A) पतञ्जलि (B) पाणिनि
(C) कात्यायन (D) वरदराज
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-7

2. 'हलन्त्यम्' सूत्र से किसकी इत् सञ्ज्ञा होती है?
(A) अन्तिम वर्ण की
(B) अन्तिम पद की
(C) अन्तिम व्यञ्जन वर्ण की
(D) अन्तिम स्वर की
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-11

3. लोप सञ्ज्ञा का विधायक सूत्र है -
(A) लोपः शाकल्यस्य (B) तस्य लोपः
(C) अदर्शनं लोपः (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-21

4. 'क' से 'म' तक के वर्णों की सञ्ज्ञा है -
(A) स्पर्श (B) अन्तस्थ
(C) ऊष्म (D) महाप्राण
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-8

5. ''मुखनासिकावचनो .....''- रिक्तस्थान के लिए उचित पद चुनें -
(A) वर्णः (B) अनुनासिकः
(C) प्रयत्नः (D) स्वरः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-19

6. ''तुल्यास्यप्रयत्नं .....''- रिक्तस्थान के लिए उचित पद चुनें -
(A) उच्चारणम् (B) अल्पप्राणम्
(C) स्पर्शम् (D) सवर्णम्
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-19

7. वर्णों की अतिशय समीपता को क्या कहते हैं?
(A) सवर्ण (B) संहिता
(C) समास (D) संयोग
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-25

8. 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' किसे कहते हैं?
(A) रामायण (B) महाभारत
(C) पुराण (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

9. 'आदिकाव्य' किसे कहा जाता है?
(A) रघुवंश (B) रामायण
(C) महाभारत (D) कुमारसम्भव
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

10. 'रामायण' में कितने काण्ड हैं?
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 9
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

11. रामायण में सबसे अधिक प्रयुक्त छन्द हैं -
(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) अनुष्टुप् (D) आर्या
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

12. रामायण में कितने श्लोक हैं?
(A) 12,000 (B) 24,000
(C) 20,000 (D) 40,000
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

13. रामायण के रचयिता कौन हैं?
(A) कालिदास (B) भास
(C) अश्वघोष (D) वाल्मीकि
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

1. (B) 2. (C) 3. (C) 4. (A) 5. (B) 6. (D) 7. (B) 8. (A) 9. (B) 10. (B) 11. (C) 12. (B) 13. (D)

14. रामायण के किस काण्ड में अन्य काण्डों की अपेक्षा अधिक काव्यात्मक वर्णन है?
(A) सुन्दरकाण्ड (B) अयोध्याकाण्ड
(C) अरण्यकाण्ड (D) किष्किन्धाकाण्ड
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-54

15. 'बृहत्त्रयी' में किस महाकाव्य की गणना नहीं होती है?
(A) किरातार्जुनीय (B) शिशुपालवध
(C) नैषधीयचरित (D) रघुवंश
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-55

16. मेघदूत में किस छन्द का प्रयोग है -
(A) अनुष्टुप् (B) हरिणी
(C) मन्दाक्रान्ता (D) शिखरिणी
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-46

17. 'किरातार्जुनीयम्' किस कवि की कृति है?
(A) माघ (B) भारवि
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-25

18. अपनी उपमाओं के लिए प्रसिद्ध कवि हैं -
(A) भारवि (B) माघ
(C) अश्वघोष (D) कालिदास
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-30

19. 'अर्थगौरव' के लिए किस कवि की प्रसिद्धि है?
(A) भारवि (B) कालिदास
(C) भट्टि (D) माघ
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-194

20. 'शिशुपालवध' किस कवि की कृति है?
(A) कालिदास (B) भारवि
(C) माघ (D) भट्टि
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-25

21. यक्ष किसका अनुचर था?
(A) इन्द्र का (B) कुबेर का
(C) विश्वकर्मा का (D) विष्णु का
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-152

22. विरही यक्ष किस पर्वत के आश्रम में दिन बिता रहा था?
(A) रामगिरि (B) नीलगिरि
(C) विन्ध्य (D) चित्रकूट
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-152

23. मेघदूत के प्रथम पद्य 'कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा' में किस प्रकार का मङ्गलाचरण है?
(A) आशीर्वादात्मक (B) वस्तुनिर्देशात्मक
(C) नमस्कारात्मक (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-156

24. 'कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' में कौन-सा अलङ्कार है?
(A) अतिशयोक्ति (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) अर्थान्तरन्यास
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-159

25. 'धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः'- यह किसका विशेषण है?
(A) मेघ (B) यक्ष
(C) नदी (D) आकाश
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-159

26. यक्ष मेघ से कहाँ जाने की प्रार्थना करता है?
(A) इन्द्रपुरी (B) पुष्पपुरी
(C) अलकापुरी (D) स्कन्दपुरी
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-37

27. निम्नलिखित में से कारक का अर्थ क्या नहीं है?
(A) क्रिया-निमित्त (B) क्रियोपकारक
(C) कर्ता से सम्बन्धित (D) क्रिया से अन्वित
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-57

28. 'प्रातिपदिकार्थ' में कौन सी विभक्ति होती है?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-232

14. (A) 15. (D) 16. (C) 17. (B) 18. (D) 19. (A) 20. (C) 21. (B) 22. (A) 23. (B) 24. (D) 25. (A) 26. (C) 27. (C) 28. (A)

29. 'सम्प्रदान कारक' में कौन सी विभक्ति होती है?
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) चतुर्थी (D) सप्तमी
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-235

30. अधिकरण कारक का चिन्ह है -
(A) का, के, की (B) में, पर
(C) के द्वारा (D) को
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-57

31. किस सूत्र से सह के योग में अप्रधान कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है?
(A) कर्तृकरणयोस्तृतीया (B) अपवर्गे तृतीया
(C) हेतौ तृतीया (D) सहयुक्तेऽप्रधाने
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-60

32. 'साधकतमं .....' रिक्तस्थान के लिए उचित पद चुनें -
(A) कर्मम् (B) अपादानम्
(C) करणम् (D) सम्प्रदानम्
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-56

33. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति'- इस उदाहरण में 'तृणं' में किस सूत्र से द्वितीया विभक्ति हुई है?
(A) कर्मणि द्वितीया
(B) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(D) अकथितं च
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-29

34. कादम्बरी की कथा का मूल स्रोत क्या है?
(A) कथासरित्सागर (B) बृहत्कथा
(C) बृहत्कथामञ्जरी (D) बृहत्कथालोकसङ्ग्रह
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-198

35. कादम्बरी के रचनाकार कौन हैं?
(A) सुबन्धु (B) बाणभट्ट
(C) दण्डी (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-198

36. बाणभट्ट को किस राजा ने आश्रय दिया था?
(A) राज्यवर्धन (B) सोमवर्धन
(C) कृष्णवर्धन (D) हर्षवर्धन
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-196

37. तारापीड किसके पिता थे?
(A) वैशम्पायन (B) चन्द्रापीड
(C) तारापीड (D) सूर्यपीड
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-198

38. 'अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः' यह वाक्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) दशकुमारचरित (B) हर्षचरित
(C) कादम्बरी (D) वासवदत्ता
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-199

39. शुकनासोपदेश में लक्ष्मी को कहा गया है -
(A) चञ्चला (B) दुष्टों पर कृपा करने वाली
(C) तृष्णा को बढ़ाने वाली (D) इनमें से सभी
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-33

40. शुकनासोपदेश में क्या वर्णित नहीं है?
(A) लक्ष्मी की चञ्चलता
(B) युवावस्था के दोष
(C) गुरु के उपदेश की महिमा
(D) विन्ध्याटवी-वर्णन
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-32,33

41. शिवराजविजय है एक -
(A) ऐतिहासिक उपन्यास (B) ऐतिहासिक कथा
(C) ऐतिहासिक नाटक (D) आख्यायिका
स्रोत- शिवराजविजय - सर्वज्ञभूषण, पेज-8

42. शिवराजविजय के रचनाकार कौन हैं?
(A) बाणभट्ट
(B) श्रीहर्ष
(C) श्रीअम्बिकादत्तव्यास
(D) दण्डी
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-200

29. (C) 30. (B) 31. (D) 32. (C) 33. (A) 34. (B) 35. (B) 36. (D) 37. (B) 38. (C) 39. (D) 40. (D) 41. (A) 42. (C)

43. श्रीअम्बिकादत्त व्यास का जन्म किस राज्य में हुआ था?
(A) बिहार (B) राजस्थान
(C) उत्तरप्रदेश (D) बंगाल
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-200

44. शिवराजविजय में किस रस की प्रधानता है?
(A) शान्तरस (B) करुणरस
(C) वीररस (D) रौद्ररस
स्रोत- शिवराजविजय - सर्वज्ञभूषण, पेज-8

45. शिवराजविजय का नायक कौन है?
(A) रघुवीर सिंह (B) गौर सिंह
(C) योगीराज (D) शिवाजी
स्रोत- शिवराजविजय - सर्वज्ञभूषण, पेज-8

46. शिवराजविजय का प्रारम्भ किस दृश्य से होता है?
(A) संध्या-वर्णन (B) सूर्योदय-वर्णन
(C) भारत-दुर्दशा वर्णन (D) पर्वत-वर्णन
स्रोत- शिवराजविजय - सर्वज्ञभूषण, पेज-11

47. अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक के रचनाकार कौन हैं?
(A) भारवि (B) कालिदास
(C) माघ (D) भास
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-120

48. संस्कृत का सर्वश्रेष्ठ नाटक कौन है?
(A) मालविकाग्निमित्र (B) अभिज्ञानशाकुन्तल
(C) विक्रमोर्वशीय (D) उत्तररामचरित
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-333

49. अभिज्ञानशाकुन्तल कितने अङ्कों में निबद्ध है?
(A) 5 अङ्कों में (B) 6 अङ्कों में
(C) 7 अङ्कों में (D) 8 अङ्कों में
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-120

50. अभिज्ञानशाकुन्तल का कौन अङ्क सर्वश्रेष्ठ माना जाता है?
(A) प्रथम (B) चतुर्थ
(C) पञ्चम (D) षष्ठ
स्रोत-संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-484

51. शकुन्तला की माता कौन थी?
(A) मेनका (B) रम्भा
(C) उर्वशी (D) सानुमती
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-120

52. शकुन्तला के पिता कौन थे?
(A) विश्वामित्र (B) वसिष्ठ
(C) काश्यप (D) गौतम
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-120

53. 'दुर्वासा का शाप' अभिज्ञानशाकुन्तल के किस अङ्क में वर्णित है?
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-120

54. 'कविताकामिनी हास'- किस कवि को कहा गया है?
(A) कालिदास (B) भास
(C) भारवि (D) माघ
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-31

55. स्वप्नवासवदत्तम् है एक -
(A) महाकाव्य (B) नाटक
(C) गद्यकाव्य (D) नाटिका
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-114

56. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के नायक कौन हैं?
(A) दर्शक (B) उदयन
(C) आरुणि (D) प्रद्योतराज
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-114

57. 'उदयन' किस देश के राजा थे?
(A) अवन्ति (B) मगध
(C) वत्स (D) राजगृह
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-114

58. पद्मावती किस राज्य की राजकुमारी थी?
(A) मगध (B) वैशाली
(C) उज्जयिनी (D) मिथिला
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-115

43. (B) 44. (C) 45. (D) 46. (B) 47. (B) 48. (B) 49. (C) 50. (B) 51. (A) 52. (A) 53. (C) 54. (B) 55. (B) 56. (B) 57. (C) 58. (A)

59. 'उदयन' के प्रधानमन्त्री का नाम क्या था?
(A) यौगन्धरायण (B) पुष्पक
(C) आवर्तक (D) रुमण्वान
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-115

60. किस ग्राम के अग्निदाह में वासवदत्ता जल मरी?
(A) अवन्ति (B) लावाणक
(C) राजगृह (D) चम्पा
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-113

61. ऋग्वेद का प्रथम सूक्त है -
(A) इन्द्रसूक्त (B) अग्निसूक्त
(C) विष्णुसूक्त (D) सूर्यसूक्त
स्रोत- ऋक्-सूक्त-संग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज-55

62. किस देवता को यज्ञ का पुरोहित कहा गया है?
(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) सविता (D) उषा
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-152

63. सविता देव के लिए विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है?
(A) हिरण्याक्षः (B) हिरण्यहस्तः
(C) सुनीथः (D) दिवःदुहितः
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-136

64. कौन देवता अंतरिक्ष लोक से पुनः पुनः आते हुए देवताओं और मनुष्यों को अपने-अपने कार्यों में लगाते हैं-
(A) इन्द्र (B) सविता
(C) अग्नि (D) विष्णु
स्रोत- ऋक्-सूक्त संग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज-106

65. किस देवता के तीन मधुपूर्ण पदों के पराक्रम का वर्णन ऋग्वेद में प्राप्त होता है?
(A) इन्द्र (B) विष्णु
(C) सूर्य (D) रुद्र
स्रोत- वैदिक साहित्य का इति.-पारसनाथ द्विवेदी, पेज-38

66. ''मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा'' - ये विशेषण किस देवता के लिए प्रयुक्त है?
(A) इन्द्र (B) विष्णु
(C) अग्नि (D) पर्जन्य
स्रोत- वैदिक साहित्य का इति.-पारसनाथ द्विवेदी, पेज-38

67. ऋग्वेद का सबसे महान् राष्ट्रीय देवता कौन है?
(A) इन्द्र (B) वरुण
(C) विष्णु (D) अग्नि
स्रोत- ऋक्सूक्तसङ्ग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज-12

68. राम शब्द, द्वितीया विभक्ति, बहुवचन का रूप है-
(A) रामाः (B) रामान्
(C) रामेभ्यः (D) रामैः
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-1

69. 'लतायाम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) तृतीया (B) द्वितीया
(C) षष्ठी (D) सप्तमी
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-11

70. 'साधु' शब्द का पञ्चमी विभक्ति, एकवचन का रूप है -
(A) साधवे (B) साधोः
(C) साधौ (D) साध्वोः
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-5

71. फल शब्द का तृतीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक का रूप किसके अनुसार होता है?
(A) राम (B) लता
(C) मुनि (D) साधु
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-19,20

72. 'गौ' शब्द का षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का रूप है -
(A) गोनाम् (B) गवाणाम्
(C) गाम् (D) गवाम्
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-9

73. 'नद्यै' किस विभक्ति वचन का रूप है?
(A) तृतीया, बहुवचन (B) षष्ठी, द्विवचन
(C) चतुर्थी, एकवचन (D) पञ्चमी, एकवचन
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-13

74. वधू शब्द, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रूप है-
(A) वधूः (B) वध्वाः
(C) वध्वः (D) वध्वा
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-16

59.(A) 60.(B) 61.(B) 62.(A) 63.(D) 64.(B) 65.(B) 66.(B) 67.(A) 68.(B) 69.(D) 70.(B) 71.(A) 72.(D) 73.(C) 74.(C)

75. सबसे प्राचीन वेद कौन है?
(A) यजुर्वेद (B) सामवेद
(C) ऋग्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-21

76. ''वेदोऽखिलो .....'' रिक्तस्थान के लिए उपयुक्त पदं चुनें -
(A) विद्या (B) धर्ममूलम्
(C) प्रमाणम् (D) ज्ञानम्
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव, पेज-3

77. शौनक चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की कितनी शाखाएँ हैं -
(A) 4 (B) 5
(C) 6 (D) 7
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-23

78. पृथ्वी-सूक्त किस वेद में है?
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-60

79. यजुर्वेद के मन्त्रों का संकलन किस ऋत्विक् के लिए किया गया था?
(A) होता (B) अध्वर्यु
(C) उद्गाता (D) ब्रह्मा
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-37

80. सङ्गीत विषयक तत्त्वों का विस्तृत विवेचन किस वेद में है?
(A) अथर्ववेद (B) कृष्ण यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) शुक्ल यजुर्वेद
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव, पेज-87

81. माहेश्वर सूत्रों की संख्या कितनी है?
(A) 10 (B) 12
(C) 13 (D) 14
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-13

82. हल् प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन से वर्ण आते हैं?
(A) व्यञ्जन (B) स्वर
(C) अनुनासिक (D) सवर्ण
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-11

83. 'अच्' का तात्पर्य है -
(A) स्वर वर्ण (B) व्यञ्जन वर्ण
(C) अनुनासिक वर्ण (D) सवर्ण
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-10

84. 'अक्' प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन से वर्ण आते हैं?
(A) अ, इ, उ, ण, ऋ, ऌ, क्
(B) अ, इ, उ, ऋ, ऌ, क्
(C) अ, इ, उ, ऋ, ऌ
(D) अ, इ, उ, ऋ
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-10

85. प्रत्याहार सञ्ज्ञा का विधायक सूत्र है -
(A) आदिरन्त्येन सहेता (B) अदेङ् गुणः
(C) वृद्धिरेचि (D) अणुदित्सवर्णः सहेता
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-21

86. पदविधि किस पद की होती है?
(A) संक्षिप्तता (B) एकपदीभाव
(C) A और B दोनों (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-889

87. समास का क्या अर्थ है?
(A) संक्षिप्तता (B) एकपदीभाव
(C) A और B दोनों (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-887

88. ''कथ्यते ..... इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली'' रिक्तस्थान के लिए उपयुक्त पद चुनें -
(A) नाटकं (B) भाष्यं
(C) काव्यं (D) रूपकं
स्रोत- काव्यप्रकाश - सीताराम दोतोलिया, पेज-51

89. साक्षात् सङ्केतित अर्थ क्या है?
(A) वाच्यार्थ (B) लक्ष्यार्थ
(C) व्यङ्ग्यार्थ (D) तात्पर्यार्थ
स्रोत- काव्यप्रकाश (2/सू.-11)

75. (C) 76. (B) 77. (B) 78. (D) 79. (B) 80. (C) 81. (D) 82. (A) 83. (A) 84. (C) 85. (A) 86. (A) 87. (C) 88. (C) 89. (A)

90. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य के कितने प्रयोजन हैं?
(A) चार (B) छः
(C) पाँच (D) सात
स्रोत- काव्यप्रकाश - विश्वेश्वर, पेज-10

91. उत्तम काव्य में किसकी प्रधानता होती है?
(A) अलङ्कार (B) वाच्यार्थ
(C) व्यङ्ग्यार्थ (D) लक्ष्यार्थ
स्रोत- काव्यप्रकाश - विश्वेश्वर, पेज-28

92. गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य में क्या गौण होता है?
(A) व्यङ्ग्यार्थ (B) वाच्यार्थ
(C) अलङ्कार (D) लक्ष्यार्थ
स्रोत- काव्यप्रकाश - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-28

93. शब्द की स्वाभाविक शक्ति कौन है?
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या
स्रोत- काव्यप्रकाश - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-53

94. काव्य में 'पदसङ्घटना' को क्या कहते हैं?
(A) अलङ्कार (B) रीति
(C) गुण (D) ध्वनि
स्रोत- साहित्यदर्पण (परिच्छेद-9)-सत्यव्रत सिंह, पेज-658

95. निम्नलिखित में कौन शब्दालङ्कार नहीं है?
(A) उपमा (B) अनुप्रास
(C) श्लेष (D) यमक
स्रोत- काव्यप्रकाश (दशम उल्लास)-विश्वेश्वर, पेज-443

96. किस अलङ्कार में स्वरवर्णों में विभिन्नता होने पर भी व्यञ्जन वर्णों में सादृश्य होता है?
(A) यमक (B) रूपक
(C) अनुप्रास (D) उपमा
स्रोत- काव्यप्रकाश - विश्वेश्वर, पेज-404

97. उपमा अलङ्कार के कितने तत्त्व होते हैं?
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत- काव्यप्रकाश - विश्वेश्वर, पेज-443

98. उपमा अलङ्कार में क्या नहीं होता है?
(A) उपमान (B) उपमेय
(C) आरोप (D) सामान्य धर्म
स्रोत- काव्यप्रकाश - विश्वेश्वर, पेज-443

99. उपमेय और उपमान का अभेद वर्णन किस अलङ्कार का वर्ण्य-विषय है?
(A) अनन्वय (B) रूपक
(C) यमक (D) स्वभावोक्ति
स्रोत- काव्यप्रकाश - विश्वेश्वर, पेज-463

100. मन्ये, शङ्के, ध्रुवं, प्रायः, नूनम् एवम् इव किस अलङ्कार के बोधक तत्त्व हैं?
(A) उपमा (B) दृष्टान्तम्
(C) उत्प्रेक्षा (D) रूपकम्
स्रोत- काव्यप्रकाश - विश्वेश्वर, पेज-461

संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम्

UP. TGT, PGT (संस्कृत) के छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तक में हर प्रश्न का महामंथन

आपके शिक्षक बनने का सपना हम करेंगे साकार

TGT प्रश्न मीमांसा

PGT प्रश्न मीमांसा

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करने के लिए हमें कॉल करें 8004545095, 8004545096

90. (B) 91. (C) 92. (A) 93. (A) 94. (B) 95. (A) 96. (C) 97. (C) 98. (C) 99. (B) 100. (C)

3 Bihar S-TET संस्कृत

उच्चमाध्यमिक (वर्ग 11 से 12) Paper-II PGT

परीक्षा तिथि 14/9/2023

1. सुप् प्रत्ययों की संख्या है?
(A) 18 (B) 24
(C) 21 (D) 22
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-65

2. ए, ऐ का उच्चारण स्थान क्या है?
(A) कण्ठोष्ठ (B) कण्ठ
(C) कण्ठतालु (D) दन्तोष्ठ
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-15

3. टवर्ग का उच्चारण स्थान क्या है?
(A) तालु (B) ओष्ठ
(C) मूर्धा (D) दन्त
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-15

4. यण् सन्धि विधायक-सूत्र है?
(A) इग्यणः सम्प्रसारणम् (B) इको यणचि
(C) यणः प्रतिषेधो वाच्यः (D) अणुदित्सवर्णस्य
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-29

5. किस वर्ण की गुण संज्ञा नहीं होती है?
(A) अ (B) ए
(C) ओ (D) औ
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-19

6. वृद्धि सन्धि का उदाहरण कौन है?
(A) उपेन्द्रः (B) गंगौघः
(C) महर्षि (D) मायकः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-190

7. 'वाक् + ईशः = ?' में सन्धि होकर रूप बनता है -
(A) वाकीशः (B) वागीशः
(C) वाकिशः (D) वागिशः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-26

8. महाभारत के लेखक का नाम है -
(A) वाल्मीकि (B) कालिदास
(C) भास (D) वेदव्यास
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-61

9. महाभारत का विभाजन कितने पर्वों में हुआ है?
(A) 15 (B) 17
(C) 18 (D) 20
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-312

10. महाभारत का युद्ध कहाँ हुआ था?
(A) हस्तिनापुर में (B) कुरुक्षेत्र में
(C) अयोध्या में (D) कुसुमपुर में
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (1/1)

11. महाभारत का मूलरूप किस नाम से प्रसिद्ध था?
(A) विजय (B) भारत
(C) जय (D) महाभारत
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-62

12. श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के किस पर्व से संगृहीत है?
(A) सभा पर्व (B) उद्योग पर्व
(C) भीष्म पर्व (D) द्रोण पर्व
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-73

13. महाभारत का सबसे बड़ा पर्व कौन है?
(A) द्रोण पर्व (B) शान्ति पर्व
(C) वन पर्व (D) विराट पर्व
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-64

14. महाभारत के किस पर्व में शकुन्तला का आख्यान उपनिबद्ध है -
(A) आदि पर्व (B) वन पर्व
(C) अनुशासन पर्व (D) शल्य पर्व
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-63

15. मेघदूत एक है -
(A) महाकाव्य (B) गीतिकाव्य
(C) चम्पूकाव्य (D) नाटक
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-36

16. कालिदास ने कितने नाटकों की रचना की है?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 7
स्रोत- संस्कृतसाहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-326

1. (C) 2. (C) 3. (C) 4. (B) 5. (D) 6. (B) 7. (B) 8. (D) 9. (C) 10. (B) 11. (C) 12. (C) 13. (B) 14. (A) 15. (B) 16. (A)

17. ''काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या .....'' रिक्तस्थान के लिए उचित पद चुनें -
(A) मालविका (B) शकुन्तला
(C) मेनका (D) उर्वशी
स्रोत- संस्कृतसाहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-341

18. शिशुपालवध की कथा महाभारत के किस पर्व से संगृहीत है?
(A) वन पर्व (B) आदि पर्व
(C) अनुशासन पर्व (D) सभा पर्व
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-297

19. रघुवंश महाकाव्य के मंगलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की है?
(A) शिव (B) शिव-पार्वती
(C) गौरी (D) सीता-राम
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-209

20. गीतगोविन्द किस कवि की रचना है?
(A) कालिदास (B) भर्तृहरि
(C) अमरुक (D) जयदेव
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-280

21. कालिदास किस भाषा शैली के लिए विख्यात हैं?
(A) व्यंजना प्रधान (B) प्रसादगुणयुक्त
(C) वैदर्भी रीतियुक्त (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-182

22. महाकाल का मन्दिर कहाँ है?
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याचल (D) कुरुक्षेत्र
स्रोत- मेघदूतम् (पूर्वमेघ- 28,38)

23. रघुवंश के वंशानुक्रम का अनुसरण कालिदास ने किस ग्रन्थ के आधार पर किया है?
(A) पद्म पुराण (B) विष्णु पुराण
(C) रामायण (D) महाभारत
स्रोत- रघुवंशम् - श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-8

24. राजा दिलीप की पत्नी का क्या नाम था?
(A) दमयन्ती (B) सुदक्षिणा
(C) कात्यायनी (D) सुप्रभा
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-207

25. ''श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्''- यह पद्यांश किस काव्य से उद्धृत है?
(A) मेघदूत (B) कुमारसम्भव
(C) रघुवंश (D) रामायण
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-215

26. महाराजा दिलीप और उनकी पत्नी किस गौ की सेवा करते थे?
(A) नन्दी (B) तरुणी
(C) हारिणी (D) नन्दिनी
स्रोत- रघुवंशम् - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-4

27. लगातार अर्थ द्योतित होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दों में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-54

28. स्पृहेरीप्सितः सूत्र से स्पृह्यति क्रिया के योग में इच्छित वस्तु में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) चतुर्थी (D) षष्ठी
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-69

29. नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा के योग में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) सप्तमी (D) चतुर्थी
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-76

30. नियमपूर्वक विद्या ग्रहण करने के अर्थ में 'उपदेशक' में कौन-सी विभक्ति होती है -
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-83

31. 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र से कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) पञ्चमी (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) तृतीया
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-101

32. कर्तृवाच्य में किसकी प्रधानता होती है?
(A) क्रिया (B) कर्ता
(C) कर्म (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- विजयी भव-सर्वज्ञभूषण,पेज-75

33. कर्मवाच्य के कर्त्ता में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) प्रथमा
(C) तृतीया (D) चतुर्थी
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-76

34. लक्ष्मी की उत्पत्ति कहाँ से हुई है?
(A) क्षीरसागर से (B) कमलवन से
(C) भूमि से (D) आकाश से
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण,पेज- 79

17. (B) 18. (D) 19. (B) 20. (D) 21. (C) 22. (B) 23. (A) 24. (B) **25.** (C) **26. (D) 27. (B) 28. (C) 29. (D) 30. (C) 31. (C) 32. (B) 33. (C) 34. (A)**

35. शुकनासोपदेश का कलावैशिष्ट्य किस शैली पर आधारित है?
(A) वैदर्भी रीति (B) गौडी रीति
(C) पाञ्चाली रीति (D) इनमें से सभी
स्रोत- शुकनासोपदेश-राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, भू.पेज-1

36. 'न परिचयं रक्षति, नाभिजनमीक्षते, न रूपमालोकयते'- इन पंक्तियों में किसका वर्णन है?
(A) युवावस्था का (B) लक्ष्मी का
(C) मित्र का (D) राज्य का
स्रोत- शुकनासोपदेश - तारिणीश झा,पेज-19

37. दोषों को गुणों में परिवर्तित करने की क्षमता किसमें है?
(A) राजाज्ञा (B) मित्र
(C) पत्नी (D) गुरुवचन
स्रोत- शुकनासोपदेश - माणिक्यलाल शास्त्री, पेज-35

38. शुकनास कौन थे?
(A) राजा (B) गुरु
(C) महामन्त्री (D) वैद्य
स्रोत- शुकनासोपदेश - माणिक्यलाल शास्त्री, पेज-19

39. कुलीन, धैर्यशील और उद्यमी पुरुष को भी कौन दुर्जन बना देती है?
(A) लक्ष्मी (B) कादम्बरी
(C) महाश्वेता (D) इन्द्रजाल
स्रोत- शुकनासोपदेश–माणिक्यलालशास्त्री, भू. पेज-20

40. बाणभट्ट के पुत्र कौन थे?
(A) मयूरभट्ट (B) भूषणभट्ट
(C) कुमारिलभट्ट (D) कुलभूषणभट्ट
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-12

41. किस काव्य में मङ्गलाचरण के लिए श्रीमद्भागवद् की दो सूक्तियों को उद्धृत किया गया है?
(A) कादम्बरी (B) शिवराजविजय
(C) दशकुमारचरित (D) हर्षचरित
स्रोत- शिवराजविजय - रूपनारायण त्रिपाठी, पेज-2

42. शिवराजविजय के मङ्गलाचरण में किसका स्मरण किया गया है?
(A) ब्रह्म और माया (B) पार्वती-परमेश्वर
(C) राम-कृष्ण (D) पञ्चतत्त्व
स्रोत- शिवराजविजय - सर्वज्ञभूषण, पेज-11

43. योगीराज ने किस राजा के शासनकाल में समाधि लगाई थी?
(A) अमरसिंह (B) समुद्रगुप्त
(C) विक्रमादित्य (D) महेन्द्रादित्य
स्रोत- शिवराजविजय - सर्वज्ञभूषण, पेज-13

44. शिवराजविजय के किस निःश्वास में योग-समाधि की व्यावहारिक प्रक्रियाओं का वर्णन है?
(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) तृतीय (D) चतुर्थ
स्रोत- शिवराजविजय-रूपनारायण त्रिपाठी,पेज-17

45. महमूद गजनवी के भारतवर्ष पर आक्रमण का वर्णन किस काव्य में प्राप्त होता है?
(A) वासवदत्ता (B) शिवराजविजय
(C) हर्षचरित (D) दशकुमारचरित
स्रोत- शिवराजविजय - सर्वज्ञभूषण, पेज-13

46. कन्या का अपहरण करने वाले यवन को किसने मार डाला?
(A) गौरसिंह (B) रघुवीरसिंह
(C) ब्रह्मचारीवटु (D) योगीराज
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-33,34

47. महर्षि कण्व के आश्रम का विस्तार किस नदी के किनारे था?
(A) गङ्गा (B) मालिनी
(C) विपाशा (D) सतलुज
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-18

48. दुष्यन्त कहाँ के राजा थे?
(A) हस्तिनापुर (B) कुरुक्षेत्र
(C) सौराष्ट्र (D) उज्जयिनी
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-20

49. अभिज्ञानशाकुन्तल के किस अंक में दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह का प्रसंग वर्णित है?
(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) तृतीय (D) चतुर्थ
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव, भू. पेज-38

50. शकुन्तला और दुष्यन्त ने कैसा विवाह किया था?
(A) ब्रह्म विवाह (B) गान्धर्व विवाह
(C) दैव विवाह (D) प्राजापत्य विवाह
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव, भू. पेज-38

35. (D) 36. (B) 37. (D) 38. (C) 39. (A) 40. (B) 41. (B) 42. (A) 43. (C) 44. (A) 45. (B) 46. (A) 47. (B) 48. (A) 49. (C) 50. (B)

51. 'कालिदासस्य सर्वस्वम् .....' रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त पद चुनें -
(A) नाटकम् (B) अग्निमित्रम्
(C) विक्रमोर्वशीयम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-10

52. शकुन्तला कैसी नायिका है?
(A) धीरा (B) प्रगल्भा
(C) मुग्धा (D) प्रौढ़ा
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-303

53. दुष्यन्त किस प्रकार के नायक हैं?
(A) धीरललित (B) धीरोदात्त
(C) धीरप्रशान्त (D) धीरोद्धत
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-303

54. स्वप्नवासवदत्तम् की नायिका कौन हैं?
(A) पद्मावती (B) वासवदत्ता
(C) वसुन्धरा (D) अङ्गारवती
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-298

55. राजा उदयन के विदूषक का नाम क्या है?
(A) माधव (B) ब्रह्मचारी
(C) वसन्तक (D) संभषक
स्रोत- स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा 'रेग्मी', भू.पेज-16

56. महाराज दर्शक किस देश के राजा थे?
(A) मगध (B) उज्जयिनी
(C) वत्स (D) मिथिला
स्रोत- स्वप्नवासवदत्तम् - दिनेश प्रसाद तिवारी, पेज-65

57. 'प्रद्वेषो बहुमानो वा सङ्कल्पादुपजायते' - यह किसकी उक्ति है?
(A) दर्शक (B) उदयन
(C) यौगन्धरायण (D) वासवदत्ता
स्रोत-स्वप्नवासवदत्तम् (1/7)-शेषराज शर्मा 'रेग्मी', पेज-17,18

58. स्वप्नवासवदत्तम् के नान्दी श्लोक में किस अलङ्कार का प्रयोग है?
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) मुद्रा (D) रूपक
स्रोत-स्वप्नवासवदत्तम् (1/1)-शेषराज शर्मा 'रेग्मी', पेज-3

59. तपस्वियों की उत्सारणा का वर्णन स्वप्नवासवदत्तम् के किस अङ्क में वर्णित है?
(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) तृतीय (D) चतुर्थ
स्रोत- स्वप्नवासवदत्तम् - दिनेश प्रसाद तिवारी, भू.पेज-33

60. यौगन्धरायण ने पद्मावती के पास धरोहर के रूप में किसको रखा -
(A) वासवदत्ता (B) अङ्गारवती
(C) धात्री (D) विजया
स्रोत- स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा 'रेग्मी', भू.पेज-4

61. इन्द्र-सूक्त के ऋषि कौन हैं?
(A) विश्वामित्र (B) मधुच्छन्दा
(C) गृत्समद (D) वामदेव
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-156

62. इन्द्र का शस्त्र क्या है?
(A) वज्र (B) चक्र
(C) गदा (D) त्रिशूल
स्रोत- ऋक्-सूक्त-संग्रह - हरिदत्त शास्त्री, भू.पेज-11

63. इन्द्र का शत्रु कौन है?
(A) बलि (B) पर्वत
(C) वृत्र (D) शुक्र
स्रोत- ऋक्-सूक्त-संग्रह - हरिदत्त शास्त्री, भू.पेज-12

64. निम्नलिखित में कौन उषा का विशेषण है?
(A) पुराणी (B) युवती
(C) मघोनी (D) इनमें से सभी
स्रोत- ऋक्-सूक्त-संग्रह - हरिदत्त शास्त्री, भू.पेज-17,18

65. ऋग्वेद का कौन-सा सूक्त काव्यात्मकता की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट है?
(A) उषस् (B) अग्नि
(C) सूर्य (D) विष्णु

66. सम्पूर्ण संसार का चक्षु कौन है?
(A) उषस् (B) सूर्य
(C) विष्णु (D) इन्द्र
स्रोत- ऋक्-सूक्त-संग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज-147

67. ''..... आत्मा जगतस्तस्थुषश्च''- रिक्तस्थान के लिए उपयुक्त पद चुनें -
(A) वरुणः (B) इन्द्रः
(C) सविता (D) सूर्यः
स्रोत- वैदिकवाङ्मय (1.115) - सर्वज्ञभूषण, पेज-155

68. 'मात्रोः' किस विभक्ति-वचन का रूप है?
(A) प्रथमा, द्विवचन (B) द्वितीया, द्विवचन
(C) षष्ठी, द्विवचन (D) पञ्चमी, एकवचन
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-17

51.(D) 52.(C) 53.(B) 54. (B) 55.(C) 56.(A) 57.(C) 58.(C) 59.(A) 60.(A) 61.(C) 62.(A) 63.(C) 64. (D) 65.(B) 66.(B) 67.(D) 68.(C)

69. 'तत्' शब्द (पुँल्लिङ्ग) का प्रथमा विभक्ति का रूप है-

(A) सा, ते, ताः (B) तत्, ते, तानि
(C) सः, तौ, ते (D) तः, तौ, ते

स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-64

70. इदम् का पुँल्लिङ्ग रूप क्या है?

(A) इदम् (B) अयम्
(C) इयम् (D) इमाः

स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-65

71. 'भविष्यति'- किस लकार का रूप है?

(A) लट्लकार (B) लोट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-91

72. चत्वारि का प्रयोग किस लिंग में होता है?

(A) पुँल्लिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) इनमें से सभी

स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-134

73. ''कक्षायां ..... बालकाः सन्ति''- रिक्तस्थान के लिए उपयुक्त पद चुनें -

(A) त्रयः (B) तिस्रः
(C) त्रीन् (D) त्रीणि

74. गम् धातु, लङ्लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन का रूप होगा -

(A) अगच्छः (B) अगच्छतम्
(C) अगच्छत (D) अगच्छत्

स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-118

75. आयुर्वेद को किस वेद का उपवेद माना जाता है?

(A) ऋग्वेद (B) अथर्ववेद
(C) सामवेद (D) यजुर्वेद

स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-30

76. ऋग्वेद का ब्राह्मण कौन हैं?

(A) शतपथ (B) गोपथ
(C) ताण्ड्य (D) ऐतरेय

स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-23

77. तलवकार आरण्यक किस वेद से सम्बन्धित है?

(A) सामवेद (B) ऋग्वेद
(C) शुक्ल यजुर्वेद (D) कृष्ण यजुर्वेद

स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

78. किस उपनिषद् में समावर्तन संस्कार के अवसर पर गुरु द्वारा शिष्य को प्रदत्त उपदेशों का विवेचन है?

(A) छान्दोग्योपनिषद् (B) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) तैत्तिरीयोपनिषद् (D) ईशोपनिषद्

स्रोत- वैदिकवाङ्मय-सर्वज्ञभूषण,पेज-100

79. उपनिषदों का वर्ण्य-विषय क्या है?

(A) ब्रह्मतत्त्व (B) प्राणविद्या
(C) सृष्टि विज्ञान (D) इनमें से सभी

स्रोत- वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव, पेज-170

80. वेदाङ्ग कितने हैं?

(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-106

81. यथाशक्ति में कौन–सा समास है?

(A) बहुव्रीहि (B) कर्मधारय
(C) तत्पुरुष (D) अव्ययीभाव

स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-46

82. जिस समास में पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता हो उसे क्या कहते हैं?

(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) कर्मधारय

स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-46

83. कौन अव्ययीभाव समास का उदाहरण नहीं है?

(A) अधिहरि (B) प्रतिदिनम्
(C) उपकृष्णम् (D) प्राचार्यः

स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

84. किस समास में उत्तर पद की प्रधानता होती है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-49

69.(C) 70.(B) 71.(C) 72.(C) 73.(A) 74.(C) 75.(A) 76.(D) 77.(A) 78.(C) 79.(A) 80.(C) 81.(D) 82.(C) 83.(D) 84.(B)

85. 'राजपुरुष' में कौन-सा समास है?
(A) पञ्चमी तत्पुरुष (B) द्वितीया तत्पुरुष
(C) चतुर्थी तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-51

86. समानाधिकरण तत्पुरुष को क्या कहते हैं?
(A) एकदेशी (B) उपमित
(C) कर्मधारय (D) उपपद
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

87. 'नीलोत्पलम्' में कौन-सा समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) कर्मधारय
(C) अव्ययीभाव (D) द्विगुसमास
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-53

88. असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य क्या है?
(A) अलङ्कार (B) रस
(C) गुण (D) रीति
स्रोत- काव्यप्रकाश-आचार्यविश्वेश्वर, पेज-94

89. रस के कितने भेद हैं?
(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) आठ
स्रोत- काव्यप्रकाश - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-141

90. शान्त रस का स्थायीभाव क्या है?
(A) शोक (B) उत्साह
(C) निर्वेद (D) क्रोध
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-303

91. शृङ्गार रस का स्थायीभाव क्या है?
(A) विस्मय (B) रति
(C) हास (D) उत्साह
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-303

92. व्यङ्ग्यार्थ से रहित काव्य को क्या कहते हैं?
(A) अत्तम काव्य (B) मध्यम काव्य
(C) चित्र काव्य (D) ध्वनि काव्य
स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्यविश्वेश्वर, पेज-31

93. काव्यदीपिका के रचनाकार कौन हैं?
(A) मम्मटाचार्य (B) आचार्य विश्वनाथ
(C) श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य (D) वामनाचार्य
स्रोत- काव्यदीपिका-परमेश्वरानन्द भू. पेज-1

94. उपमान की अपेक्षा उपमेय का आधिक्य वर्णन होने पर कौन-सा अलङ्कार होता है?
(A) सन्देह (B) अतिशयोक्ति
(C) व्यतिरेक (D) अर्थान्तरन्यास
स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्यविश्वेश्वर, पेज-491

95. किस अलङ्कार में कारणों के बिना ही कार्य की उत्पत्ति का वर्णन होता है?
(A) विशेषोक्ति (B) विभावना
(C) अपह्नुति (D) अर्थान्तरन्यास
स्रोत- काव्यप्रकाश (10/सू.-161)-आचार्यविश्वेश्वर, पेज-498

96. उपमेय का निषेधकरके उपमान की स्थापना किस अलङ्कार में की जाती है?
(A) समासोक्ति (B) अतिशयोक्ति
(C) दीपक (D) अपह्नुति
स्रोत- काव्यप्रकाश (10/सू.-145)-आचार्यविश्वेश्वर, पेज-470

97. मात्राओं की गणना किस छन्द में होती है?
(A) अनुष्टुप् (B) वंशस्थ
(C) उपेन्द्रवज्रा (D) आर्या
स्रोत- मिशन राजस्थान-सर्वज्ञभूषण,पेज-173

98. वृत्त में गणों की संख्या कितनी होती है?
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 5
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-167

99. किस गण के तीनों वर्ण गुरु होते हैं?
(A) मगण (B) यगण
(C) रगण (D) तगण
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-168

100. निम्नलिखित में कौन वर्ण लघु है?
(A) अनुस्वार युक्त ह्रस्व स्वर
(B) एकमात्रिक वर्ण
(C) विसर्ग युक्त व्यञ्जन
(D) पाद के अंत में आने वाला ह्रस्व वर्ण
स्रोत- मिशन राजस्थान-सर्वज्ञभूषण,पेज-174

85. (D) 86. (C) 87. (B) 88. (B) 89. (D) 90. (C) 91. (B) 92. (C) 93. (C) 94. (C) 95. (B) 96. (D) 97. (D) 98. (C) 99. (A) 100. (B)

4 BPSC-TRE-02 संस्कृत
मध्य विद्यालय (वर्ग 6 से 8) जूनियर

परीक्षा तिथि
10/12/2023

निर्देशः- प्रश्नः (1-7) पर्यन्तं प्रश्नाः प्रस्तुतगद्यांश माधारीकृत्य समाधेयाः-

अस्ति दाक्षिणात्ये जनपदे महिलारोप्यं नाम नगरम्। तत्र सकलार्थिकल्पद्रुमः प्रवरमुकुटमणिमरीचिमञ्जरीचर्चितचरणयुगलः, सकलकला- पारङ्गतोऽमरशक्तिर्नाम राजा बभूव। तस्य त्रयः पुत्राः परमदुर्मेधसो बहुशक्तिरुग्रशक्तिरनन्तशक्तिश्चेति नामानो बभूवुः। अथ राजा तान् शास्त्रविमुखान् आलोक्य सचिवान् आहूय प्रोवाच-भोः! ज्ञातमेतद् भवद्भिः यन्ममैते त्रयोऽपि पुत्राः शास्त्रविमुखाविवेकरहिताश्च। तत् एतान् पश्यतो मे महदपि राज्यं न सौख्यमावहति ।

स्रोत- पञ्चतन्त्रम् - बालशास्त्री, पेज-3,4

1. महिलारोप्यं नाम नगरं कस्मिन् जनपदेऽस्ति?
(A) अवन्तिजनपदे (B) मगधजनपदे
(C) दाक्षिणात्यजनपदे (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

2. महिलारोप्यस्य राजा कः आसीत्?
(A) बहुशक्तिः (B) अमरशक्तिः
(C) अनन्तशक्तिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

3. अमरशक्तेः पुत्रस्य नामासीत् -
(A) उग्रशक्तिः (B) बहुशक्तिः
(C) अनन्तशक्तिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

4. राज्ञः त्रयः पुत्राः आसन् -
(A) शास्त्रज्ञाताः (B) शास्त्रविमुखाः
(C) शास्त्रपण्डिताः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

5. राज्ञः कान् आहुतवान् ?
(A) पुत्रान् (B) पण्डितान्
(C) मातृः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

6. चर्चितचरणयुगलः कः आसीत् ?
(A) अनन्तशक्तिः (B) अमरशक्तिः
(C) सचिवाः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

7. प्रोवाच इत्यत्र सन्धिः कः?
(A) गुणसन्धिः (B) यण्सन्धिः
(C) अयादिसन्धिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

निर्देशः- प्रश्नः 8-13 पर्यन्तं प्रश्नाः प्रस्तुतगद्यांशमाधारीकृत्य समाधेयाः -

यद्यपि संसारे बहूनि वस्तूनि सन्ति, परन्तु विद्यैव सर्वश्रेष्ठधनमस्ति। अतएवोच्यते-विद्याधनं सर्वप्रधानम्। विद्यया मनुष्य स्वकीयं कर्तव्यं जानाति। विद्ययैव मनुष्यो जानाति यत् को धर्मः, कोऽधर्मः, किंकर्तव्यम्, किम् अकर्तव्यम्, किं पुण्यम्, किं पापम्, किं कृत्वा लाभो भविष्यति, केन कार्येण वा हानिः भविष्यति। स विद्याप्राप्त्या सन्मार्गम् अनुवर्तितं प्रयतते एवं विद्ययैव मनुष्यो मनुष्योऽस्ति। यो मनुष्यो विद्याहीनोऽस्ति स कर्तव्याकर्तव्यस्य अज्ञानात् पशुवद् आचरति, अतः स पशुरित्यभिधीयते। 'विद्याविहीनः पशुः' इति।

8. मनुष्यः कस्मात् कारणात् पशुवद् आचरति?
(A) कर्तव्यस्य ज्ञानात् (B) अकर्तव्यस्य अज्ञानात्
(C) कर्तव्यस्य अज्ञानात् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

9. पशुवद् कः आचरति?
(A) विद्यासहितपुरुषः (B) विद्यायुक्तमनुष्यः
(C) विद्याहीनमनुष्यः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

10. विद्यैव इत्यत्र कः सन्धिः?
(A) वृद्धिसन्धिः (B) गुणसन्धिः
(C) यण्सन्धिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

1. (C) 2. (B) 3. (D) 4. (B) 5. (E) 6. (B) 7. (A) 8. (D) 9. (C) 10. (A)

11. विद्ययैव मनुष्यो भवति -
(A) पशुः (B) मनुष्यः
(C) अधर्मी (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

12. 'हानिः' -पदस्य पर्यायपदमस्ति -
(A) पापम् (B) अकर्तव्यम्
(C) लाभः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

13. 'विद्यया' पदे विभक्तिरस्ति -
(A) षष्ठी (B) सप्तमी
(C) पञ्चमी (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

निर्देशः- प्रश्नः 14-19 पर्यन्तं प्रश्नाः प्रस्तुतगद्यांशमाधारीकृत्य समाधेयाः -

अस्ति मगधदेशे चम्पकवती नामारण्यानी। तस्यां चिरान्महता स्नेहेन मृगकाकौ निवसतः। स च मृगः स्वेच्छया भ्राम्यन्हृष्टपुष्टाङ्गः केनचिच्छृगालेनावलोकितः। तं दृष्ट्वा शृगालोऽचिन्तयत्- ''आः,कथमेतन्मांसं सुललितं भक्षयामि? भवतु, विश्वासं तावदुत्पादयामि।'' इत्यालोच्योपसृत्याब्रवीत् - ''मित्र! कुशलं ते?'' मृगेणोक्तम्-''कस्त्वम्?'' स ब्रूते - ''क्षुद्रबुद्धिनामा जम्बूकोऽहम् अत्रारण्ये बन्धुहीनो मृतवन्निवसामि। इदानीं त्वां मित्रमासाद्य पुनः सबन्धुर्जीवलोकं प्रविष्टोऽस्मि। अधुना तवानुचरेण मया सर्वथा भवितव्यम्।'' मृगेणोक्तम्- ''एवमस्तु।'' ततः पश्चादस्तं गते सवितरि भगवति मरीचिमालिनि तौ मृगस्य वासभूमिं गतौ। तत्र चम्पकवृक्षशाखायां सुबुद्धिनामा काको मृगस्य चिरमित्रं निवसति। तौ दृष्ट्वा काकोऽवदत्- ''सखे चित्राङ्ग! कोऽयं द्वितीयः?'' मृगो ब्रूते-''जम्बूकोऽयम्, अस्मत्सख्यमिच्छन्नागतः।'' काको ब्रूते- मित्र! अकस्मादागन्तुना सह मैत्री न युक्ताः।

14 . अरण्ये निवसतः-
(A) मृगः (B) काकः
(C) सिंहः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

15. चम्पकवती नामारण्यानी अस्ति-
(A) दाक्षिणात्ये (B) बंगदेशे
(C) मगधदेशे (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

16. 'हृष्टपुष्टाङ्गः' आसीत् -
(A) काकः (B) मृगः
(C) शृगालः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

17. 'क्षुद्रबुद्धिः' आसीत् -
(A)काकः (B) मृगः
(C) शृगालः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

18. ''अकस्मादागन्तुना सह मैत्री न युक्ता'' इति केन कथितम्?
(A) काकेन (B) शृगालेन
(C) मृगेण (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

19. भगवति इत्यस्मिन् पदे विभक्तिरस्ति -
(A) प्रथमा (B) सप्तमी
(C) षष्ठी (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

निर्देश : - प्रश्नः 20-25 पर्यन्तं प्रश्नाः प्रस्तुतगद्यांश-माधारीकृत्य समाधेया :-

कस्यापि राष्ट्रस्य कृते स्वराज्यसदृशमन्यत् भूतं प्रभूतं वैभवं नास्ति। एतेन ध्वन्यते प्रस्फुटं यत् प्रजातन्त्रं शासनमपि तदेवोत्कृष्टं यत्स्वराज्यसंवलितं भवेत्। एष प्रजातन्त्रप्रसङ्गः अन्यत्रापि संस्कृतसाहित्ये दरीदृश्यते । प्रायशः वर्षाणां सहस्रद्वयी व्यतीयाय यदा राजनीतिनिपुणः कौटिल्यापरनामधेयः आचार्यचाणक्यः बभूव। तेन कूटनीति धुरंधरेण एकायत्तं नन्दवंशप्रशासनमुच्छिद्य मौर्यकुलभूषणं चन्द्रगुप्तं राज्यसिंहासने प्रतिष्ठापयामास। महान् राजनीतिज्ञः कौटिल्यः चन्द्रगुप्तस्य कृते साम्राज्यधुरं निर्वोढुमर्थशास्त्रविधं लोकविश्रुतं राजनीतितन्त्रं प्रणिनाय। यत्र प्रजातन्त्रपद्धतिमेवावलम्ब्य राज्यतन्त्रं सञ्चायितव्यमिति सर्वं सुनिपुणं प्रतिपादितम्। शास्त्रमिदं राज्यचक्रसञ्चालनौपयिकान् अर्थान् अनुबध्नाति राजाप्रजाऽनुबन्धिनः समस्तानप्यावश्यकान् विषयान् संस्पृशति। ग्रन्थरत्नमिदमवलोक्य पाश्चात्या अपि नीतिविशारदा विस्मिता भवन्ति यद्भारतेऽपि ईदृशा नीतिनिपुणाः पण्डिताः समजायन्तः।

20. आचार्यचाणक्यस्य अपरं नाम किमासीत् ?
(A) चन्द्रगुप्तः (B) नन्दः
(C) कौटिल्यः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

21. 'अर्थशास्त्रं' विरचितम् -
(A) चाणक्येन (B) कौटिल्येन
(C) चन्द्रगुप्तेन (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

22. मौर्यकुलभूषणमस्ति -
(A) चन्द्रगुप्तः (B) चाणक्यः
(C) नन्दः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

11. (B) 12. (E) 13. (E) 14. (D) 15. (C) 16. (B) 17. (C) 18. (A) 19. (B) 20. (C) 21. (D) 22. (A)

23. राजा प्रजाऽनुबन्धिनः समस्तानप्यावश्यकान् विषयान् संस्पृशति -
(A) गुप्तशास्त्रम् (B) नन्दशास्त्रम्
(C) अर्थशास्त्रम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

24. सञ्चालयितव्यमित्यत्र प्रत्ययः कः?
(A) क्तवतु (B) तव्यत्
(C) क्त (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

25. 'बभूव' इत्यत्र धातोऽस्ति -
(A) भूव (B) भूः
(C) बभू (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

26. 'धनुष्टंकारः' पदस्य सन्धिविच्छेदोऽस्ति
(A) धनुः + टकारः (B) धनुश् + टंकारः
(C) धनुस् + टंकारः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-42

27. 'सुध्युपास्य' इत्यत्र कः सन्धिः?
(A) वृद्धिसन्धिः (B) गुणसन्धिः
(C) यण्सन्धिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-29

28. 'तत् + नाम' इत्यत्र सन्धिपदमस्ति--
(A) तद्नाम (B) तन्नाम
(C) तन्नाम (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-40

29. 'विष्णुः + त्राता' इत्यत्र सन्धिपदमस्ति--
(A) विष्णुष्त्राता (B) विष्णुस्त्राता
(C) विष्णुश्त्राता (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-42

30. 'उत् + डयनम्' इत्यत्र सन्धिपदमस्ति--
(A) उडडयनम् (B) उद्डयनम्
(C) उड्डयनम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-36

31. 'गृहपतिः' पदस्य समासविग्रहः स्यात् --
(A) गृहे पतिः (B) गृहाणां पतिः
(C) गृहस्य पतिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-51

32. 'राज्ञः पुरुषः' इत्यस्य समस्तपदमस्ति--
(A) राजपुरुषः (B) राज्ञपुरुषः
(C) राजन्पुरुषः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-51

33. 'शताब्दी' - पदे समासोऽस्ति-
(A) द्विगुः (B) अव्ययीभावः
(C) द्वन्द्वः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-54

34. 'क्रूरकर्माः' पदे समासोऽस्ति-
(A) द्वन्द्वः (B) बहुव्रीहिः
(C) अव्ययीभावः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

35. 'दिवारात्रम्' पदस्य समासविग्रहः स्यात्--
(A)दिवां च रात्रिः च तयो समाहारः
(B) दिवां च रात्रीश्च तयोः समाहारः
(C) दिवा च रात्रीणां च तयो समाहारः
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्तः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-भैमी व्याख्या (भाग-4), पेज-160

36. 'वदत्' - पदे प्रकृति-प्रत्ययौ स्तः -
(A) वद् + शानच् (B) ब्रू + शानच्
(C) वद् + शतृ (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-

37. 'कारकः' पदे प्रत्ययोऽस्ति-
(A) तृच् (B) ण्वुल्
(C) क्यप् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-57

23. (C) 24. (B) **25.** (E) **26. (C) 27. (C) 28. (B) 29. (B) 30. (C) 31. (C) 32. (A) 33. (A) 34. (B) 35. (E) 36. (C) 37. (B)**

38. भाववाचकसंज्ञाविज्ञापयितुं प्रत्ययः प्रयुज्यते--
(A) शानच् (B) शतृ
(C) त्व (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-73

39. धातुना विशेषणं निर्मातुं धातुना सह प्रत्ययः प्रयुज्यते-
(A) शानच् (B) शतृ
(C) मतुप् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-71

40. 'जडता' - पदे प्रत्ययोऽस्ति--
(A) क्तवतु (B) क्त
(C) तमप् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत-संस्कृत हिन्दी शब्दकोश-वामन शिवराम आप्टे, पेज-436

41. अव्ययानि भवन्ति--
(A) त्रिषु वचनेषु विभिन्नानि
(B) त्रिषु लिङ्गेषु विभिन्नानि
(C) त्रिषु लिङ्गेषु सदृशानि
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-84

42. असंगत-युग्ममस्ति-
(A) नायकः-भूतपूर्वः (B) पितरौ-पाणिपादम्
(C) चोरभयम् - करणीयः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

43. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशाः गिरः।' इत्यत्र खलु अव्ययस्य अर्थोऽस्ति-
(A) निश्चयः (B) अनुनयः
(C) विनिग्रहः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- किरातार्जुनीयम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-177

44. 'आवां भ्रमावः।' इत्यस्य कर्मवाच्यमस्ति-
(A) वयं भ्रम्यते (B) आवाभ्यां भ्रम्य
(C) आवां भ्रम्यते (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

45. 'मम मित्रं चलचित्रं पश्यति' इत्यस्य कर्मवाच्यमस्ति-
(A) मया मित्रेण चलचित्रं दृश्यते
(B) मम मित्रेण चलचित्रं दृश्यते
(C) मया मित्रेण चलचित्रः दृश्यते
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

46. ते मम मित्राः सन्ति इत्यस्य शुद्धरूपं भवेत्--
(A) ते मम मित्राणि सन्ति
(B) तानि मया मित्रेण सन्ति
(C) तानि मया मित्रः सन्ति
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

47. राधा मात्रे सदृशो अस्ति - रेखांकिते शुद्धरूपं भवेत्-
(A) मातृः (B) मात्र
(C) मातरः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

48. कर्मवाच्ये कर्म भवति-
(A) तृतीयाविभक्तौ (B) द्वितीयाविभक्तौ
(C) प्रथमाविभक्तौ (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-76

49. 'श्रु' -धातोः लङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य द्विवचनमस्ति-
(A) अशृणवः (B) अशृणुतम्
(C) अशृणोषि (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-129

50. 'अस्' - धातोः विधिलिङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य बहुवचनमस्ति-
(A) स्यात् (B) स्यात
(C) आसन् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-132

51. 'ब्रू' -धातोः लट्लकारे प्रथमपुरुषस्य बहुवचनमस्ति-
(A) वदन्ति (B) आहु
(C) आहुः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-139

38. (C) 39. (D) 40. (E) 41. (C) 42. (D) 43. (A) 44. (E) 45. (B) 46. (A) 47. (E) 48. (C) 49. (B) 50. (B) 51. (C)

52. 'हन्'- धातोः लोट्लकारे मध्यमपुरुषस्य एकवचनमस्ति-
(A) जहि (B) हन्सि
(C) जहिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-131

53. 'इष्' -धातोः लङ्लकारे प्रथमपुरुषस्य एकवचनमस्ति-
(A) एच्छत् (B) इच्छत्
(C) ऐच्छत (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-133

54. 'पति' -शब्दस्य चतुर्थी एकवचनस्य रूपमस्ति--
(A) पतये (B) पत्ये
(C) तत्यौ (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-97

55. 'अहन्' -शब्दस्य सप्तमीबहुवचने रूपमस्ति-
(A) अहषु (B) अहष्षु
(C) अहसु (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- रूपचन्द्रिका - संजय कुमार जैन, पेज-128

56. 'एनं' कस्य शब्दस्य रूपमस्ति?
(A) इदम् (B) युष्मद्
(C) सर्व (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-118

57. (७३) इत्यस्य कृते संख्यापदमस्ति--
(A) त्रिसप्ततिः (B) त्रयः सप्तति
(C) त्रयष्सप्तति (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-135

58. 'स्थितः' पदे प्रत्ययः कः?
(A) तल् (B) घञ्
(C) क्त (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-221

59. पूर्वरूपविधायकं सूत्रमस्ति--
(A) एङि पररूपम् (B) एङः पदान्तादति
(C) पूर्वत्रासिद्धम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-30

60. माहेश्वरसूत्रेषु अन्तस्थवर्णानां क्रमः कः?
(A) य् व् र् ल् (B) य् र् ल् व्
(C) य् र् व् ल् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-10

61. 'विष्णुः वैकुण्ठमावसति' इत्यत्र वैकुण्ठे द्वितीयाविधायकसूत्रमस्ति-
(A) अभिनिविशश्च (B) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(C) उपान्वध्याङ्वसः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-59

62. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) लता गीतं श्रृण्वती नृत्यति
(B) लता गीतं श्रृण्वन्ती नृत्यंति
(C) लता गीतं श्रृण्वन्ती नृत्यति
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

63. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) शिष्यं व्याकरणं बोधयति
(B) शिष्याय व्याकरणौ बोधयति
(C) शिष्याय व्याकरणः बोधयति
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

64. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) बालकः अध्यापकेन पुस्तकं पठति
(B) बालकेन अध्यापकं पुस्तकं पठति
(C) बालकोऽध्यापकात् पुस्तकं पठति
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-62

65. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) श्वेतोऽश्वो धावति (B) श्वेतो अश्वः धावति
(C) श्वेतं अश्वं धावति (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

52. (A) 53. (E) 54. (B) 55. (E) 56. (A) 57. (A) 58. (C) 59. (B) 60. (A) 61. (C) 62. (A) 63. (A) 64. (C) 65. (A)

66. ''अहं शुचिः जलं पेयम्'' - अस्य वाक्यस्य शुद्धरूपमस्ति-
(A) मया शुचि जलः पेयम्
(B) मया शुचि जलं पेयम्
(C) अहं शुचि जलं पेयम्
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

67. ''अध्ययनात् पराजयते'' - अस्मिन् वाक्ये 'अध्ययनात्' इत्यत्र पञ्चमीविभक्तेः कारणमस्ति-
(A) वारणार्थानामीप्सितः (B) आख्यातोपयोगे
(C) ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-236

68. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) तण्डुलै ओदनं पचति
(B) तण्डुलेन ओदनं पचति
(C) तण्डुलान् ओदनं पचति
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-58

69. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) यागेन याति (B) यागाय याति
(C) यागात् याति (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-235

70. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) हरेः ईर्ष्यति (B) हरिणा ईर्ष्यति
(C) हरौ ईर्ष्यति (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-69

71. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) कति बालिकाः पठतः (B) कति जनाः पठन्ति
(C) कति जना पठति (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

72. शुद्धं शब्दं चिनुत -
(A) अक्षिणैः (B) दाराः
(C) अक्षी (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

73. ''स ताः पश्यति'' वाक्यस्य कर्मवाच्यं भवति
(A) तेन तं दृश्यध्वे (B) तेन तां दृश्यध्वे
(C) तेन तां दृश्यन्ते (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

74. ''रामेण रावणः अहन्यत'' - वाक्यस्य कर्तृवाच्ये भवति
(A) रामः रावणम् अहन्येत् (B) रामः रावणम् अहन्
(C) रामेण रावणम् अहन् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

75. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) दम्पती पुत्राय इच्छति (B) दम्पती पुत्रं इच्छति
(C) दम्पती पुत्रं इच्छतः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

76. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) मया पाठः पठनीयः (B) अस्माभिः पाठाः पठनीयाः
(C) अहं पाठः पठनीयः **(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः**
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

77. ''गवा तृणानि भक्ष्यन्ते'' - वाक्यस्य कर्तृवाच्यं भवति-
(A) गवां तृणानि भक्ष्यन्ते (B) गौः तृणानि भक्षयति
(C) गाव तृणानि भक्षयति (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

78. शुद्धवाक्यं चिनुत -
(A) अह्ना अनुवाकोऽधीतः
(B) अह्नस्य अनुवाकोऽधीतः
(C) अह्नात् अनुवाकोऽधीतः
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-235

79. ''सः मह्यं धनम् अददात्'' - वाक्यस्य कर्मवाच्यं भवति-
(A) तेन मह्यं धनम् अदीयत
(B) तस्मै मह्यं धनं अदीयत्
(C) तेन मह्यं धनं अदीयत्
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

80. ''वयं सर्वे स्वप्स्यामः'' - वाक्यस्य भाववाच्यं भवति-
(A) वयं सर्वे स्वप्यते
(B) अस्मभ्यः सर्वेः स्वप्यते
(C) अस्माभिः सर्वैः सुप्यते
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
(E) न कोऽपि उपयुक्तः

66. (B) 67. (E) 68. (C) 69. (B) 69. (B) 70. (E) 71. (B) 72. (B) 73. (E) 74. (B) 75. (C) 76. (D) 77. (B) 78. (A) 79. (A) 80. (C)

5 BPSC-TRE-02 संस्कृत
माध्यमिक (वर्ग 9 से 10) TGT

परीक्षा तिथि
8/12/2023

1. माहेश्वराणि सूत्राणि कति प्रकारकाणि सन्ति?
(A) 12 (B) 13
(C) 14 (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-10

2. 'हयवरट्' इत्यत्र हकारादिषु अकारग्रहणं किमर्थम्?
(A) इत्सञ्ज्ञार्थम् (B) उच्चारणार्थः
(C) प्रत्याहारनिर्माणार्थः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- सन्धिप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-2

3. सूत्राणि कति प्रकारकाणि?
(A) दश (B) अष्ट
(C) षट् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-8

4. लोपसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किम् ?
(A) तस्य लोपः (B) अदर्शनं लोपः
(C) हलन्त्यम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-21

5. 'शकारस्य' उच्चारणस्थानं किम् ?
(A) दन्ताः (B) कण्ठः
(C) तालु (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-15

6. इकारस्य कति भेदाः?
(A) द्वादश (B) षोडश
(C) अष्टादश (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-15

7. ऊष्मवर्णानाम् आभ्यन्तरप्रयत्नं किम् ?
(A) ईषत्स्पृष्टम् (B) ईषद्विवृतम्
(C) विवृतम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-17

8. खर्वर्णानां बाह्यप्रयत्नाः के?
(A) संवारा नादा घोषाश्च
(B) विवारा नादा घोषाश्च
(C) विवाराः श्वासा अघोषाश्च
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-17

9. बाह्यप्रयत्नाः कतिविधाः?
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) एकादश (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-17

10. 'गव्यूतिः' इत्यत्र सन्धिः केन सूत्रेण?
(A) एचोऽयवायावः (B) वान्तो यि प्रत्यये
(C) अध्वपरिमाणे च (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-193

11. 'गङ्गोदकम्' इत्यत्र सन्धिः केन सूत्रेण?
(A) अदेङ् गुणः (B) आद्गुणः
(C) इको गुणवृद्धी (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-183

12. 'पित्राज्ञा' इति शब्दस्य सन्धिविच्छेदं कुरुत -
(A) पितृ + आज्ञा (B) पित्र + आज्ञा
(C) पित् + राज्ञा (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-189

13. 'कामिनी + उदयः' इत्यत्र कः सन्धिः भविष्यति?
(A) गुणसन्धिः (B) यण्सन्धिः
(C) वृद्धिसन्धिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- मिशन LT - सर्वज्ञभूषण, पेज-115

14. 'वागर्थौ + इव' इत्यत्र सन्धिपदं चिनुत -
(A) वागर्थविव (B) वागर्थाविव
(C) वागर्थौ इव (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- मिशन LT - सर्वज्ञभूषण, पेज-122

1. (C) 2. (B) 3. (C) 4. (B) 5. (C) 6. (C) 7. (B) 8. (C) 9. (C) 10. (C) 11. (B) 12. (A) 13. (B) 14. (B)

15. 'वसन्तर्तुः' इत्यत्र सन्धिविच्छेदः कः?
(A) वसन् + तर्तुः (B) वसन्त + ऋतुः
(C) वसन्त + रितुः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- मिशन LT - सर्वज्ञभूषण, पेज-114

16. 'अक्षौहिणी' इत्यत्र कः सन्धिः?
(A) वृद्धिसन्धिः (B) दीर्घसन्धिः
(C) पूर्वरूपसन्धिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-33

17. 'उपैधते' इत्यत्र केन सूत्रेण वृद्धिसन्धिः?
(A) वृद्धिरेचि (B) एत्येधत्यूठ्सु
(C) वृद्धिरादैच् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-189

18. 'गवेन्द्रः' इति शब्दस्य सन्धिविच्छेदं किम् ?
(A) गो + इन्द्रः (B) गवो + इन्द्रः
(C) गवे + इन्द्रः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-195

19. 'वागीशः' इत्यत्र सन्धिः केन सूत्रेण?
(A) झलां जशोऽन्ते (B) झलां जश् झशि
(C) खरि च (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-36

20. 'हरी रम्यः' इत्यत्र सन्धिविच्छेदं किम् ?
(A) हरी + रम्यः (B) हरिर् + रम्यः
(C) हरि + रम्यः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-45

21. आचार्यवरदराजानुसारेण समासः कति प्रकारकः?
(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-46

22. तत्पुरुषः कीदृशः समासः?
(A) प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः
(B) प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः
(C) प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानः
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-49

23. कति वृत्तयः सन्ति?
(A) चतस्रः (B) पञ्च
(C) षट् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-890

24. 'भूतपूर्वः' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं किम् ?
(A) सह सुपा (B) शेषो बहुव्रीहिः
(C) तत्पुरुषः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-243

25. 'पञ्चगङ्गम्' इत्यत्र कः समासः?
(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः
(C) द्वन्द्वः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-49

26. 'पञ्चगवम्' इति पदे कः समासः?
(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः
(C) द्वन्द्वः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-929

27. 'शाकप्रियः पार्थिवः' अस्य वाक्यस्य समस्तपदं किम्?
(A) शाकप्रियपार्थिवः (B) शाकपार्थिवः
(C) शाकप्रियो पार्थिवः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत-लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या-चतुर्थभाग), पेज-102

28. 'अपुत्रः' इत्यत्र कः समासः?
(A) नञ् तत्पुरुषः (B) द्वन्द्वः
(C) बहुव्रीहिः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-56

29. चार्थाः कतिविधाः?
(A) एकम् (B) द्वे
(C) चत्वारः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-969

30. 'दन्तानां राजानः' अस्य वाक्यस्य समस्तपदं किम् ?
(A) दन्तराजानः (B) दन्तराजानौ
(C) राजदन्ताः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-251

31. संस्कृतभाषायां कारकाणि कति?
(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-57

15. (B) 16. (A) 17. (B) 18. (A) 19. (A) 20. (B) 21. (B) 22. (B) 23. (B) 24. (A) 25. (A)
26. (B) 27. (B) 28. (C) 29. (C) 30. (C) 31. (B)

32. 'द्रोणो व्रीहिः' इति कस्य उदाहरणं वर्तते?
(A) प्रातिपदिकार्थमात्रस्य (B) वचनमात्रस्य
(C) परिमाणमात्रस्य (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-58

33. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' इति कस्य सूत्रस्य उदाहरणम् ?
(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(B) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- व्याकरणप्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-180

34. 'ग्रामम् अजां हरति' इति वाक्यस्य कर्मवाच्ये परिवर्तनं किम् ?
(A) ग्रामः अजा ह्रियते (B) ग्रामम् अजा ह्रियते
(C) ग्रामम् अजां ह्रियते (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतव्याकरणप्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज-189

35. 'शतं जयति देवदत्तम्' अस्य वाक्यस्य कर्मवाच्ये परिवर्तनं किम् ?
(A) शतं जीयते देवदत्तः (B) शतं जयते देवदत्तः
(C) शतं जयति देवदत्तः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत-वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-2)-गोविन्दाचार्य, पेज-198

36. 'व्याकरणे रुचिः' इति वाक्ये कीदृशः आधारः?
(A) अभिव्यापकः (B) वैषयिकः
(C) औपश्लेषिकः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम, पेज-215

37. 'मातृ'- शब्दस्य द्वितीयाबहुवचने शुद्धं रूपं किम् ?
(A) मातुः (B) मातॄन्
(C) मातॄः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-117

38. 'अदस्' - शब्दस्य स्त्रीलिङ्गे द्वितीयाबहुवचने शुद्धं रूपं किम् ?
(A) अमूः (B) अमूनि
(C) अमून् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-121

39. लभ्-धातोः लोट्लकारस्य उत्तमपुरुषस्य बहुवचने शुद्धं रूपं किम् ?
(A) लभामहे (B) लब्धास्महे
(C) लभामहै (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-130

40. 'शये' इति रूपं शीङ्धातोः कस्य लकारस्य?
(A) लट्लकारस्य (B) लोट्लकारस्य
(C) लिट्लकारस्य (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-276

41. ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति?
(A) 5 (B) 7
(C) 10 (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-10

42. प्रसिद्धतमम् 'अग्निसूक्तम्' कस्मिन् वेदे पठितमस्ति?
(A) यजुर्वेदे (B) अथर्ववेदे
(C) ऋग्वेदे (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-11

43. अथर्ववेदस्य मुख्यः प्रतिपाद्यो विषयोऽस्ति -
(A) विज्ञानम् (B) कर्मविज्ञानम्
(C) आयुर्वेदविज्ञानम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव, पेज-105

44. वेदाङ्गानां कति सङ्ख्या?
(A) 5 (B) 7
(C) 6 (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-106

45. 'वाक्यपदीयम्' कस्य रचना अस्ति?
(A) पाणिनेः (B) कात्यायनस्य
(C) भर्तृहरेः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-292

46. अथर्ववेदस्य ब्राह्मणग्रन्थोऽस्ति -
(A) गोपथब्राह्मणम् (B) शतपथब्राह्मणम्
(C) षड्विंशब्राह्मणम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः
स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-61

32. (C) 33. (C) 34. (B) 35. (A) 36. (B) 37. (C) 38. (A) 39. (C) 40. (A) 41. (C) 42. (C) 43. (C) 44. (C) 45. (C) 46. (A)

47. 'ईशावास्योपनिषदः' सम्बन्धः केन वेदेन सह अस्ति?

(A) ऋग्वेदः (B) अथर्ववेदः

(C) शुक्लयजुर्वेदः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-39

48. प्रसिद्धः यमनचिकेतासम्वादः कस्मिन् उपनिषदि पठितोऽस्ति?

(A) ईशावास्योपनिषद् (B) प्रश्नोपनिषद्

(C) कठोपनिषद् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-101

49. शुक्लयजुर्वेदे कति अध्यायाः सन्ति?

(A) 30 (B) 19

(C) 40 (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

स्रोत- वैदिकवाङ्मय - सर्वज्ञभूषण, पेज-39

50. 'रम्या रामायणी कथा' एतत् कस्य कवेः वचनमस्ति?

(A) कालिदासस्य (B) भर्तृहरेः

(C) त्रिविक्रमभट्टस्य (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

स्रोत- नलचम्पू (1/11)-रामनाथ त्रिपाठी, पेज-12

51. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नामकं नाटकं कस्य महाकवेः रचना अस्ति?

(A) भर्तृहरेः (B) बाणस्य

(C) महाकविभासस्य (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-279

52. 'मेघदूतम्' अस्ति -

(A) महाकाव्यम् (B) गीतिकाव्यम्

(C) नीतिकाव्यम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-280

53. रघुवंशमहाकाव्ये 'वंशवर्णनविषयः' प्रतिपादितोऽस्ति-

(A) चन्द्रकुलोद्भवानां नृपाणाम्

(B) रघुकुलोद्भवानां नृपाणाम्

(C) महाकाव्यानाम्

(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-206

54. कालिदासविरचितानि नाटकानि सन्ति -

(A) त्रीणि (B) चत्वारि

(C) पञ्च (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव, पेज-137

55. 'शुकनासोपदेशः' कस्य रचना अस्ति?

(A) महाकविबाणभट्टस्य

(B) कालिदासस्य

(C) भवभूतेः

(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इति.-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-399

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा (56-60) कोष्ठाङ्कितानाम् अधोलिखितानां प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखित-

अस्माकं वैदिकसंस्कृतिः यज्ञिया अस्ति। यज्ञशब्दस्य महर्षिपाणिनिना देवपूजासङ्गतिकरणदानम् इति एते त्रयोऽर्थाः प्रतिपादिताः। कल्पसूत्रेषु गृहस्थेभ्यः प्रतिदिनं पञ्चमहायज्ञान् कर्तुमादिष्टमस्ति। ते च महायज्ञाः सन्ति। ब्रह्मयज्ञः-देवयज्ञः-पितृयज्ञः-बलिवैश्वदेवयज्ञः-अतिथियज्ञः एते सन्ति। देवयज्ञम् एव अग्निहोत्रमुच्यते। 'देवो दानाद् वा' इति यास्केन पठितम् अस्ति। बलिवैश्वदेवयज्ञे प्राणिभ्यो अन्नं प्रदीयते। अतिथियज्ञे गृहे समागतानां विदुषाम् अथवा सर्वेषां सम्माननं कर्तव्यं भवति।

56. अस्माकं संस्कृतिः कीदृशी अस्ति?

(A) परकीया (B) स्वकीया

(C) यज्ञिया (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

57. 'यज्ञ' शब्दस्य पाणिनिना कति अर्थाः प्रतिपादिताः?

(A) चत्वारः (B) पञ्च

(C) त्रयः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

58. महायज्ञाः कतिविधाः भवन्ति?

(A) चत्वारः (B) पञ्च

(C) षट् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

59. बलिवैश्वदेवयज्ञे किं किं प्रदीयते?

(A) स्वाहाकारः (B) देवपूजनम्

(C) प्राणिभ्यो अन्नम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

47. (C) 48. (C) 49. (C) 50. (C) 51. (C) 52. (B) 53. (B) 54. (A) 55. (A) 56. (C) 57. (C) 58. (B) 59. (C)

60. यास्केन देवपदस्य परिभाषा स्वीकृता -

(A) यज्ञकरणम् (B) स्वाहाकारोच्चारणम्

(C) देवो दानाद् वा (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा (61-64) कोष्ठाङ्कितानाम् अधोलिखितानां प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखित-

युज्-धातोः घञि प्रत्यये कृते योगशब्दो निष्पन्नो भवति। परमात्मना सह आत्मनः सम्मिलनमेव योगः। योगस्य अष्टौ अङ्गानि सन्ति। योगशिक्षणस्य अनिवार्यता सर्वेषां कृते उपयोगिनी भवति। योगेन स्वास्थ्यं समीचीनं भवति। योगस्य आवश्यकता शिक्षायाम् अनिवार्यरूपेण भवेत् येन च सर्वेषां स्वास्थ्यं जायेत। विश्वस्मिन् जगति योगदिवसस्य आयोजनं जूनमासस्य (21) एकविंशतितारिकायाम् आयोज्यते।

61. 'योग' शब्दे कः प्रत्ययो अस्ति?

(A) अच्प्रत्ययः (B) णिच्प्रत्ययः

(C) घञ्प्रत्ययः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

62. योगेन को लाभो जायते?

(A) अल्पलाभः (B) सुखप्रदायकः

(C) स्वास्थ्यं समीचीनम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

63. 'योगदिवसस्य' आयोजनं कदा भवति?

(A) फरवरीमासे (B) मार्चमासे

(C) जूनमासे (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

64. योगो भवति -

(A) दुःखप्रदायकः

(B) सुखप्रदायकः

(C) परमात्मना सह आत्मसम्मिलनम्

(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

निर्देशः-अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा (65-71) कोष्ठाङ्कितानाम् अधोलिखितानां प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखित-

संस्कृते वाङ्मये जीवनदर्शनं प्रतिपदं द्रष्टुं शक्यते। साधव एव परोपकारिणो भवन्ति। जिजीविषा न केवलं मानवेषु लभ्यते, सा तु सकलेष्वपि जीवेषु संदृश्यते। मानवजीवनस्य विश्लेषणं दर्शनेनैव भवति। वस्तुतः जीवनं तु परोपकारिणामेव प्रशस्यतरं भवति। स्वार्थपराणां जीवनं न मन्यते जगति। संस्कृतवाङ्मये धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष इति पुरुषार्थचतुष्टयं वर्णितमस्ति। अधुना संसारे सर्वत्र कलहमयं वातावरणं दृश्यते च परस्परं युयुत्सा। मात्स्यन्यायेन जीवितुम् इच्छन्ति केचन। वस्तुतः 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इत्यस्य परिपालनेनैव सर्वत्र शान्ति- सम्भवितुं शक्यते इति अस्माकं सर्वेषां चिन्तनं भवति।

65. परोपकारिणो जनाः के भवन्ति?

(A) असाधवः (B) अल्पमतयः

(C) साधवः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

66. सर्वेषु अपि जीवेषु किं दृश्यते?

(A) चिकीर्षा (B) बुभुक्षा

(C) जिजीविषा (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

67. केषां जीवनं श्रेष्ठं भवति?

(A) धनिकजनानाम् (B) विदुषाम्

(C) परोपकारिणाम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

68. पुरुषार्थाः कतिविधाः भवन्ति?

(A) पञ्च (B) षड्

(C) चत्वारः (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

69. अधुना संसारे वातावरणं दृश्यते -

(A) सौहार्दपूर्णम् (B) सांमनस्यम्

(C) कलहमयम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

70. मानवजीवनस्य साफल्यं केन उपायेन भवितुं शक्यते?

(A) धनेन (B) बलेन

(C) दर्शनेन (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

71. अधुना कथं जीवितुम् इच्छन्ति सर्वे?

(A) शान्त्या (B) भक्त्या

(C) मात्स्यन्यायेन (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा (72-80) कोष्ठाङ्कितानाम् अधोलिखितानां प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखित-

संस्कृतभाषेयं देववाणी अस्ति। अस्यामेव भाषायां विश्वस्य प्राचीनतमाः ग्रन्थाः वेदाः उपलभ्यन्ते। वेदेषु राष्ट्रधर्मो विश्वधर्मश्च विस्तरेण प्रतिपादितोऽस्ति। अथर्ववेदे प्रजातान्त्रिकस्य राज्यस्य उल्लेखः प्राप्यते। ज्ञानमार्गेण च अमृतत्त्वं प्राप्तुं शक्यते। देशे समाजे च उच्च-नीचत्वभावनां विहाय एव सर्वविधा उन्नतिः कर्तुं शक्यते। परोपकारेण एव पुण्यफलावाप्तिः। परपीडनेन च पापम् एव। बौद्ध-महाकविः अश्वघोषः बौद्धजनप्रियां प्राकृतभाषां परित्यज्य 'बुद्धचरितम्' संस्कृते एव व्यरचयत्। जर्मनीदेशे सर्वेषु पुस्तकालयेषु इन्डोलाजी (Indology) भारतीयविद्या-सम्बद्धः प्रकोष्ठोऽस्ति। सर्वेऽपि पृथिवीपुत्रा नीरोगा बलिनश्च स्युः इति वयं सर्वेऽपि कामयामहे।

60.(C) 61.(C) 62.(C) 63.(C) 64. (C) 65.(C) 66.(C) 67.(C) 68.(C) 69.(C) 70.(C) 71.(C)

72. विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा का अस्ति?
(A) प्राकृतम् (B) तमिलम्
(C) संस्कृतम् (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

73. राष्ट्रधर्मस्य विशदं विवेचनं लभ्यते -
(A) आरण्यकग्रन्थेषु (B) ब्राह्मणग्रन्थेषु
(C) वेदेषु (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

74. अथर्ववेदे कस्य राज्यस्य उल्लेखः प्राप्यते?
(A) गणतन्त्रस्य (B) एकराट्राज्यस्य
(C) प्रजातान्त्रिकस्य (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

75. 'अमृतत्त्वम्' केन उपायेन उपलभ्यते?
(A) कर्मणा (B) त्यागेन
(C) ज्ञानमार्गेण (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

76. देशे सर्वविधा उन्नतिः कथं भवितुं शक्यते?
(A) मैत्रीदृष्ट्या
(B) आर्थिकदृष्ट्या
(C) उच्च-नीचत्वभावनां विहाय
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

77. पुण्यं प्राप्तुं शक्यते -
(A) विश्वबंधुभावनया (B) विश्वमैत्रीभावनया
(C) परोपकारेण (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

78. पापं कथम् उत्पद्यते?
(A) परोपकारेण (B) अहिंसया
(C) परपीडनेन (D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

79. 'बुद्धचरितम्' कस्यां भाषायां प्रणिबद्धम् अस्ति?
(A) वैदिकीभाषायाम्
(B) प्राकृतभाषायाम्
(C) संस्कृतभाषायाम्
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

80. पृथिवीपुत्राणां कृते वयं सर्वे किं किं कामयामहे?
(A) सुखिनो भवन्तु
(B) परोपकारिणो भवन्तु
(C) नीरोगा बलिनो भवन्तु
(D) एकाधिकविकल्पा उपयुक्ताः

संस्कृतगङ्गा प्रकाशनम्-शुद्धं सत्यं सरलम्

UP. TGT, PGT (संस्कृत) के छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तक में हर प्रश्न का महामंथन

आपके शिक्षक बनने का सपना हम करेंगे साकार

TGT प्रश्न मीमांसा

PGT प्रश्न मीमांसा

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करने के लिए हमें कॉल करें 8004545095, 8004545096

72. (C) 73. (C) 74. (C) 75. (C) 76. (C) 77. (C) 78. (C) 79. (C) 80. (C)

6 BPSC-TRE-02 संस्कृत
उच्चमाध्यमिक (वर्ग 11 से 12) PGT

परीक्षा तिथि
15/12/2023

1. अधोऽङ्कितेषु आदिकाव्यं किमस्ति?
(A) महाभारतम् (B) रामायणम्
(C) पुराणम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

2. रामायणे अयोध्याकाण्डादनन्तरं कतमः काण्डोऽस्ति?
(A) किष्किन्धाकाण्डः (B) अरण्यकाण्डः
(C) सुन्दरकाण्डः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

3. अधोऽङ्कितेषु कस्य गणना अष्टादशपुराणेषु न भवति?
(A) अग्निपुराणम् (B) कल्किपुराणम्
(C) सनत्कुमारपुराणम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-85

4. पुराणलक्षणं कतिविधम् ?
(A) पञ्चविधम् (B) द्विविधम्
(C) एकविधम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-85

5. अधोऽङ्कितेषु महाभारतस्य पर्व नास्ति?
(A) सौप्तिकपर्व (B) भौमिकपर्व
(C) अनादिपर्व (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-312

6. अधोऽङ्कितेषु महाभारतस्य कतमं प्रसिद्धं संस्करणं नास्ति?
(A) औदीच्यसंस्करणम्
(B) दाक्षिणात्यसंस्करणम्
(C) उत्कलप्रान्तीयसंस्करणम्
(D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति
स्रोत-संस्कृत सा॰का इति॰ - बलदेव उपाध्याय, पेज-25

7. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' इत्यस्य उपजीव्यं किमस्ति?
(A) महाभारतम् (B) रामायणम्
(C) विष्णुपुराणम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-297

8. 'नैषधीयचरितम्' इत्यस्य उपजीव्यं किमस्ति?
(A) गरुडपुराणम् (B) रामायणम्
(C) केदारखण्डपुराणम् (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-297

9. अधोऽङ्कितेषु कस्य गणना महाकाव्येषु न भवति?
(A) सौन्दरनन्दम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) हर्षचरितम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-280

10. महाकविकालिदासेन कति महाकाव्यानि प्रणीतानि?
(A) द्वे (B) त्रीणि
(C) चत्वारि (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृत सा॰ का इति॰ - उमाशङ्कर शर्मा, पेज-208

11. अधोऽङ्कितेषु गीतिकाव्यं नास्ति?
(A) ऋतुसंहारम् (B) गीतगोविन्दम्
(C) कादम्बरी (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-280

12. 'वैराग्यशतकम्' इत्यस्य लेखकः कोऽस्ति?
(A) वासुदेवः (B) भर्तृहरिः
(C) श्रीहर्षः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-280

13. 'दशकुमारचरितम्' इत्यस्य गद्यकाव्यस्य को लेखकः?
(A) दण्डी (B) सुबन्धुः
(C) धनपालः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-280

1. (B) 2. (B) 3. (D) 4. (A) 5. (D) 6. (D) 7. (A) 8. (D) 9. (C) 10. (A) 11. (C) 12. (B) 13. (A)

14. 'कादम्बरी' इत्यस्य को लेखकः?
(A) सुबन्धुः (B) कालिदासः
(C) माघः (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-280

15. गद्यपद्यमयं काव्यं किमुच्यते?
(A) चम्पू (B) स्तोत्रम्
(C) नाटकम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृत सा॰ का इति॰- उमाशङ्कर, पेज-414

16. महाकविकालिदासेन कति नाटकानि प्रणीतानि?
(A) द्वे (B) चत्वारि
(C) त्रीणि (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृत सा॰ का इति॰- उमाशङ्कर, पेज-119

17. 'मृच्छकटिकम्' इत्यस्य को लेखकः?
(A) भासः (B) शूद्रकः
(C) विशाखदत्तः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-279

18. 'नलचम्पू' इत्यस्य को लेखकः?
(A) त्रिविक्रमभट्टः (B) सोमदेवः
(C) भोजः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-281

19. अधोऽङ्कितेषु को नास्ति स्तोत्रकाव्यस्य लेखकः?
(A) मयूरभट्टः (B) बाणभट्टः
(C) त्रिविक्रमभट्टः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृत सा॰ का इति॰- उमाशङ्कर, पेज-415

20. 'आनन्दलहरी' इत्यस्य स्तोत्रकाव्यस्य को लेखकः?
(A) पुष्पदन्तः (B) आदिशङ्कराचार्यः
(C) अश्वघोषः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- संस्कृत सा॰ का इति॰- उमाशङ्कर, पेज-365

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 21-25 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्य उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत -
एकदा दरिद्रेभ्यः दातुं कम्बलाः नृपेण चाणक्याय समर्पिताः चाणक्यस्य उटजं नगराद् बहिः आसीत्। केचन चौराः कम्बलान् अपहर्तुं चिन्तितवन्तः। ते रात्रौ चाणक्यस्य उटजं प्राविशन् । तत्र अतीव शैत्यम् आसीत्। चाणक्यः कटे सुप्तः आसीत्। पार्श्वे कम्बलानां राशिः आसीत्। चौराणाम् आश्चर्यम्। चाणक्यः कम्बलं विना निद्रां करोति। चौराः चौरकर्म न अकुर्वन्। ते चाणक्यं प्रबोधितवन्तः। चौराः-चाणक्य महोदय! पार्श्वे काम्बलानां राशिः। शीतकालोऽपि वर्तते। तथापि त्वं किमर्थं भूमौ शयनं करोषि? चाणक्यः उक्तवान्-कम्बलाः दरिद्रेभ्यः दानाय नृपेण दत्ताः। श्वः प्रभाते वितरणं करिष्यामि। तेषाम् उपयोगाय नास्ति ममाधिकारः। अहं विरक्तः सदा तृप्तः। इति श्रुत्वा चौराणां लज्जा उत्पन्ना। अन्येषां वस्तुनाम् उपयोगेन अधर्मः भवति।

21. 'चाणक्य उक्तवान्' इत्यत्र 'उक्तवान्' इत्यस्मिन् पदे को धातुः? कश्च प्रत्ययः?
(A) उक्त + वान् (B) वच् + क्तवतु
(C) ऊच् + क्तवतु (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

22. ''ते रात्रौ चाणक्यस्य उटजं प्राविशन् ।'' इत्यत्र 'उटजम्' इत्यस्य कोऽर्थः?
(A) प्रासादः (B) पर्णशाला
(C) महाशाला (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

23. ''कम्बलाः दरिद्रेभ्यः दानाय ..... दत्ताः ।'' इत्यस्मिन् वाक्ये रिक्तस्थाने स्थापनाय उचितं शब्दं चिनुत ।
(A) भोजेन (B) चाणक्येन
(C) नृपेण (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

24. ''अहं विरक्तः सदा तृप्तः'' इति कस्य कथनमस्ति?
(A) चाणक्यस्य (B) नृपस्य
(C) चौरस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

25. चाणक्यस्य उटजं कुत्रासीत् ?
(A) गङ्गायाः समीपे (B) अरण्ये
(C) राजधान्याम् (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 26-30 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्य उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत-
संस्कृतभाषा भारतवर्षस्य संस्कारभाषा। एतस्याः अनेकासु विशेषतासु इयम् अन्यतमा विशेषता यत् अस्याः वाङ्मये विद्यमानाः सूक्तयः अभ्युदयाय प्रेरयन्ति। अतएव वयं भारत-प्रशासनस्य विभिन्नेषु विभागेषु आदर्शवाक्यरूपेण एतासां प्रयोगं पश्यामः।

यदि वयं भारतशासनस्य राजचिह्नं पश्यामः, तत्र 'सत्यमेव जयते' इत्येषः संस्कृतपद्यांशः लिखितः अस्ति। एतत् भारतशासनस्य राजचिह्नमस्ति। जीवनबीमानिगमस्य चित्रे द्वयोः हस्तयोः मध्ये एकः दीपः अस्ति। अथः च 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' इति लिखितम्। श्रीमद्भगवद्गीतायाः अयं पद्यांशः अस्य शोभा द्विगुणयति। भारतीयवायुसेनायाः चिह्ने विमानं वर्तते। तत्र लिखितं वायुसेनायाः आदर्शवाक्यं 'नभः स्पृशं दीप्तम्'। लोकसभाध्यक्षस्य आसनस्योपरि अपि सर्वोच्चस्थाने उल्लिखितम् अस्ति-'धर्मचक्रप्रवर्तनाय' इति संस्कृत-वाक्यम् । लोकसभायाः केन्द्रीयसभातलस्य भित्तिकायां 'अयं निजः परो वेति' सुप्रसिद्धः संस्कृत-श्लोकः लिखितः अस्ति। डाक-तार-विभागस्य ध्येयवाक्यम् - 'अहर्निशं सेवामहे' अतीव उपयुक्तमस्ति। यतः अस्य विभागस्य कार्यं दिने रात्रौ च निरन्तरं चलति। पश्यत इदं राष्ट्रीयशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् इत्यस्य ध्येयवाक्यं - 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' संस्कृतभाषायाम् एव अस्ति।

14. (D) 15. (A) 16. (C) 17. (B) 18. (A) 19. (C) 20. (B) 21. (B) 22. (B) 23. (C) 24. (A) 25. (D)

अन्ये चापि बहवः भारतशासनस्य विभागाः सन्ति येषु संस्कृते आदर्शवाक्यानि स्वीकृतानि सन्ति। एतेन सुस्पष्टं भवति यत् संस्कृतभाषा भारतस्य जीवनभूता। अतः भारते भाति भारती।

26. 'अहर्निशं सेवामहे' इति कस्य ध्येयवाक्यम् अस्ति?
(A) हरियाणा प्रान्तस्य
(B) पुलिसप्रशासनस्य
(C) भारतीय-डाक-तार-विभागस्य
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

27. 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' इति कस्य ध्येयवाक्यमस्ति?
(A) भारतीय-सैन्य-संघटनस्य
(B) बिहारप्रशासनिकसेवाया
(C) जीवनबीमानिगमस्य
(D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति

28. ''आदर्श-वाक्य-रूपेण एतासां प्रयोगं पश्यामः।'' इत्यत्र 'एतासाम्' इत्यस्मिन् पदे का विभक्तिः? किं वचनम्? कः शब्दः? कश्च लिङ्गः?
(A) एतद् + स्त्रीलिङ्गः, षष्ठीविभक्तिः, बहुवचनम्
(B) एतद् + पुंलिङ्गः, षष्ठीविभक्तिः, बहुवचनम्
(C) एतद् + नपुंसकलिङ्गः, षष्ठीविभक्तिः, बहुवचनम्
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

29. अधोऽङ्कितेषु भारतशासनस्य राजचिह्नं किमस्ति?
(A) धर्मचक्रप्रवर्तनाय (B) सत्यमेव जयते
(C) सत्यमेव विजयते (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

30. अधोलिखितेषु भारतीयवायुसेनायाः आदर्शवाक्यं किमस्ति?
(A) वायुः स्पर्शं दीप्तम् (B) व्योमः स्पर्शं दीप्तम्
(C) नभः स्पृर्शं दीप्तम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 31-35 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्य उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत-

यदा कश्चिच्चित्तवृत्तीनवरुध्य समाधिस्थो भूत्वा परमात्मनः साक्षात्करोति, सा समाध्यवस्था योग उच्यते। कठोपनिषदनुसारं यदा पञ्चज्ञानेन्द्रियैः सहितमन्तःकरणस्याखिलमपि क्रियाकलापमवरुध्यते सा शान्तावस्था 'योगः' इति कथ्यते। श्रीमद्भगवद्गीतायां योगस्य व्यवहारिकं पक्षमुद्घाटयन् प्रतिपादितमस्ति यत्- कर्मसु कौशलं योगो भवति यद्वा जीवनयात्रायाम्मानसिकोद्वेगजनकेष्वाकस्मिकरूपेण उपस्थितेषु सुखदुःखावेगावसादात्मकेषु झञ्झावातेष्वविचलितरूपेण समत्वस्थितिर्योग उच्यते।

अनेन प्रकारेण योगस्य उद्देश्यद्वयमस्तः-पारमार्थिको व्यवहारिकश्चेति। यदा मानव इन्द्रियाणि नियम्य आत्मनः परमात्मनश्च साक्षात्करोति तदा स दुःखत्रयाद्विमुच्य पूर्णानन्दावस्थायां वर्तमानो मोक्षं प्राप्नोति। एतत्पारमार्थिकमुद्देश्यमस्ति योगस्य। द्वितीयञ्च व्यवहारिकमुद्देश्यमस्ति यदा मानवो योगाभ्यासेन जितेन्द्रियत्वमाप्नोति तदा स सुखदुःखादिभिर्द्वन्द्वैरभिहन्यमानोऽपि समावस्थायां वर्तमानः फलाकांक्षाधिकारचिन्तारहितः स्वकर्त्तव्यकर्मसु व्यापृतो भवति।

31. 'समत्वस्थितिर्योगः' इति कुत्र प्रतिपादितम् ?
(A) योगदर्शने (B) श्रीमद्भगवद्गीतायाम्
(C) कठोपनिषदि (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

32. योगस्य व्यवहारिकं पक्षं कुत्र प्रतिपादितम् ?
(A) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (B) कठोपनिषदि
(C) योगदर्शने (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

33. योगस्य उद्देश्यमस्ति-
(A) पारमार्थिकः (B) व्यवहारिकः
(C) सामाजिकः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

34. 'अनेन प्रकारेण योगस्य' इत्यत्र 'अनेन' इति सिद्धयति-
(A) इदम् + नपुंसकलिङ्ग + तृतीयाविभक्तिः + बहुवचनम्
(B) इदम् +पुंलिङ्ग + तृतीयाविभक्तिः + बहुवचनम्
(C) इदम् + पुंलिङ्ग + तृतीयाविभक्तिः +एकवचनम्
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

35. ''सा समाध्यवस्था योग उच्यते'' इत्यत्र 'समाध्यवस्था' इत्यस्मिन् पदे का सन्धिः?
(A) गुणसन्धिः (B) हल्सन्धिः
(C) विसर्गसन्धिः (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति

निर्देशः - अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 36-40 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्य उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत-

एवम्प्रकारेण योग आध्यात्मिकमनुशासनमस्ति। योगाभ्यासेन आत्मना सह अन्तःकरणचतुष्टयसहितं शरीरस्य सामञ्जस्यं जायते। योगाभ्यासेन व्यक्तिगतचेतनायाः सामञ्जस्यं सार्वभौमिकचेतनया सह भवति। एषा सामञ्जस्यअवस्था एव मुक्तिः, मोक्षः, कैवल्यं, निर्वाणमित्यादिभिर्विविधाभिरुपाधिभिर्व्यसह्वियते।

समकालीना अनुसन्धातारः प्रमाणयन्ति यद्योगे न केवलं शारीरिकं सौष्ठवमेव सम्पादयति, अपितु विविधानि दुःसाध्यानि शारीरिकमानसिकरोगाणि निराकृत्य, रोगप्रतिरोधकक्षमतामाश्चर्यजनरूपेण संवर्ध्य महदुपकरोति मानवजातेः।

योगशब्दस्य व्युत्पत्तिः- पाणिनीयधातुपाठानुसारं √'युज्' धातुना सह 'घञ्' प्रत्यये सति 'योगः' शब्दो निष्पद्यते। 'युज्' इति धातुस्त्रिष्वर्थेषु विद्यते पाणिनीयधातुपाठे- 1. 'युज् समाधौ', 2. 'युजिर् योगे', 3. 'युज् संयमनेति' च। योगदर्शनसन्दर्भे समाध्यर्थकयुज्धातुना 'योगः'

26. (C) 27. (D) 28. (A) 29. (B) 30. (C) 31. (B) 32. (A) 33. (D) 34. (C) 35. (D)

शब्दो निष्पन्नो भविष्यति। अस्मिन् विषये योगदर्शनस्य प्रथमो भाष्यकारो महर्षिव्यासः प्रमाणम्। स योगशब्दस्यार्थः समाधिः करोति। तद्यथा ''योगः समाधिः स च सार्वभौमचित्तस्य धर्मः''। 4. परमधुना मनीषिणो 'युजिर् योगे', 'युज् संयमने' इत्येताभ्यां धातुभ्यामपि योगशब्दस्य निष्पत्तिं स्वीकुर्वन्ति।

36.पाणिनीयधातुपाठे '√युज्' धातुः कति अर्थेषु वर्तते?
(A) त्रिषु (B) द्वयोः
(C) चतुर्षु (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

37.''योगः समाधिः'' इति कस्य कथनम् ?
(A) कठोपनिषदः (B) महर्षिदयानन्दस्य
(C) महर्षिव्यासस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

38. साम्प्रतं मनीषिणः केन धातुना 'योगः' इत्यस्य शब्दस्य निष्पत्तिं स्वीकुर्वन्ति?
(A) युजिर् योगे (B) युज् समाधौ
(C) युज् संयमने (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

39. अधोऽङ्कितेषु योगेन किं सिध्यति?
(A) व्यक्तिगतचेतनायाः सामञ्जस्यं सार्वभौमिकचेतनया सह भवति
(B) मोक्षः
(C) रोगप्रतिरोधकक्षमताया विकासः
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

40. ''योगाभ्यासेन आत्मना सह अन्तःकरणचतुष्टयसहितम् .....।'' इत्यत्र 'अन्तःकरणचतुष्टयम्' इत्यस्य कोऽर्थः?
(A) हृदयस्य कोष्ठकचतुष्टयम्
(B) मन-बुद्धि-चित्त-अहङ्कारः
(C) हस्तौ पादौ च
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

41. 'ज्येष्ठः' इत्यस्य विग्रहो भवति-
(A) प्रशस्य + इष्ठन् (B) जि + इष्ठन्
(C) जृञ् + यिष्ठन् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-पारिजात शब्दकोश - ईश्वरचन्द्र, पेज-325

42. 'श्रेष्ठः' इत्यस्य विग्रहो भवति
(A) श्रेयस् + इष्ठन् (B) श्रीञ् + ष्ठः
(C) श्रे + स्तः (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति
स्रोत- पारिजात शब्दकोश - ईश्वरचन्द्र, पेज-938

43. 'हरि' इत्यस्य इकारान्तपुंलिङ्गशब्दस्य सप्तम्यां विभक्तौ द्विवचने किं रूपं भवति?
(A) हरौ (B) हरयोः
(C) हर्योः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- विजयीभव - सर्वज्ञभूषण, पेज-115

44. नकारान्त-पुंलिङ्ग-'आत्मन्' इत्यस्य प्रथमायां विभक्तौ एकवचने किं रूपं भवति?
(A) आत्मन् (B) आत्मा
(C) आत्माः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-28

45. ऋकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-'मातृ' इत्यस्य शब्दस्य तृतीयायां विभक्तौ एकवचने किं रूपं भवति?
(A) मात्रा (B) मातरा
(C) मात्रया (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-119

46. 'तद्' इति सर्वनामशब्दस्य स्त्रीलिङ्गे द्वितीयायां विभक्तौ बहुवचने किं रूपं भवति?
(A) ताम् (B) तान्
(C) ताः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-124

47. 'किम्' इति सर्वनामशब्दस्य स्त्रीलिङ्गे सप्तम्यां विभक्तौ द्विवचने किं रूपं भवति?
(A) कयोः (B) काभ्याम्
(C) कस्योः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-127

48. 'इदम्' इति सर्वनामशब्दस्य तृतीयायां विभक्तौ नपुंसकलिङ्गे बहुवचने किं रूपं भवति?
(A) इदमेभिः (B) एभिः
(C) आभिः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-122

49. 'एक' इति सर्वनामशब्दस्य पुंलिङ्गे पञ्चम्यां विभक्तौ द्विवचने किं रूपं भवति?
(A) एकाभ्याम् (B) एकस्माभ्यः
(C) एकस्माभ्याम् (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति
स्रोत- विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-134

36. (A) 37. (C) 38. (D) 39. (D) 40. (B) 41. (A) 42. (D) 43. (C) 44. (B) 45. (A) 46. (C) 47. (A) 48. (B) 49. (D)

50. 'चतुर्' इति सर्वनामशब्दस्य स्त्रीलिङ्गे प्रथमायां विभक्तौ एकवचने किं रूपं भवति?
(A) चत्वारि (B) चतस्रः
(C) चत्वारः (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-80

51. 'अष्टन्' इति सर्वनामशब्दस्य स्त्रीलिङ्गे तृतीयायां विभक्तौ बहुवचने किं रूपं भवति?
(A) अष्टाभिः (B) अष्टभिः
(C) अष्टेभिः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-81

52. 'कीदृशः' इत्यस्मिन् पदे किमस्ति उपपदम् ? को धातुः? कश्च प्रत्ययः ?
(A) कीञ् + दृश् + कञ्
(B) किम् + दृश् + कञ्
(C) कि + दृश् + क्विन्
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- पारिजात शब्दकोष - ईश्वरचन्द्र, पेज-225

53. प्रत्याहारसूत्राणि कति सन्ति ?
(A) चतुर्दश (B) द्वादश
(C) त्रयोदश (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-10

54. 'य', 'व', 'र', 'ल' इत्येतेषां वर्णानां ग्रहणं कस्मिन् प्रत्याहारे भवति ?
(A) जश् (B) झर्
(C) खर् (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-13

55. 'अट्' प्रत्याहारे कति वर्णाः सन्ति?
(A) एकादश (B) द्वादश
(C) त्रयोदश (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-12

56. 'ए, ओ' इत्येतौ वर्णौ कस्मिन् प्रत्याहारे स्तः?
(A) एङ् (B) ऐच्
(C) एच् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-13

57. अधोऽङ्कितेषु 'शर्' प्रत्याहारे कस्य वर्णस्य ग्रहणं न भवति ?
(A) य (B) ख
(C) स (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-रूपचन्द्रिका - सुखराम, पेज-81

58. अधोऽङ्कितेषु 'वश्' प्रत्याहारे कस्य वर्णस्य ग्रहणं भवति?
(A) य (B) ञ
(C) ह (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-13

59. 'झय्' प्रत्याहारे कति वर्णाः सन्ति?
(A) त्रयोदश (B) एकविंशति
(C) एकोनविंशति (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-14

60. कस्मिन् प्रत्याहारे सर्वेषां वर्णानां ग्रहणं भवति ?
(A) अल् (B) हल्
(C) रल् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-13

61. अधोऽङ्कितेषु कस्य वर्णस्य तालु इति उच्चारणस्थानमस्ति?
(A) ञ (B) झ
(C) व (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-15

62. अधोऽङ्कितेषु कस्य वर्णस्य मूर्धा इति उच्चारण स्थानमस्ति?
(A) औ (B) ङ
(C) ष (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-15

63. 'नर्तकी' इत्यत्र कतमः स्त्री-प्रत्ययः अस्ति?
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-208

64. अधोऽङ्कितेषु कतमः स्त्रीप्रत्ययो नास्ति ?
(A) ऊङ् (B) ति
(C) नि (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-विजयी भव - सर्वज्ञभूषण, पेज-74

65. 'कार्यम्' इत्यत्र को धातुः? कः प्रत्ययः? कश्च लिङ्गः?
(A) कृ + णिच् = कारि + यत् + नपुंसकलिङ्गः
(B) कृ + णिच् = कारि + यम् + पुंलिङ्गः
(C) कृ + णिच् = कारि + म् + नपुंसकलिङ्गः
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-

50. (D) 51. (D) 52. (B) 53. (A) 54. (D) 55. (C) 56. (A) 57. (D) 58. (B) 59. (D) 60. (A) 61. (D) 62. (C) 63. (B) 64. (C) 65. (A)

66. अधोऽङ्कितेषु कतमो लकार आशिषि वर्तते?
(A) विधिलिङ् (B) आशीर्लिङ्
(C) लोट् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-400

67. अधोऽङ्कितेषु कस्य लकारस्य प्रयोगो भूतकाले भवति?
(A) लिट् (B) लङ्
(C) लुङ् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-391,406,413

68. 'यथाशक्ति' इत्यत्र कतमः समासः ?
(A) अव्ययीभावः (B) तृतीया-तत्पुरुषः
(C) द्विगुः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-संस्कृतव्याकरणम्-सर्वज्ञभूषण, पेज-244

69. अधोऽङ्कितेषु अच्सन्धेरुदाहरणम् अस्ति-
(A) साधुश्चलति (B) संस्करोति
(C) कस्मिंश्चित् (D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति
स्रोत-

70. 'सत्यं वद' अस्मिन् पदे कतमा सन्धिरस्ति?
(A) अच्सन्धिः (B) विसर्गसन्धिः
(C) हल्सन्धिः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-संस्कृतव्याकरणम्-सर्वज्ञभूषण, पेज-202

71. 'आप कहाँ ठहरते हैं?' अस्य वाक्यस्य भाववाच्ये कः अनुवादो भविष्यति ?
(A) भवद्भिः क्व स्थीयन्ते?
(B) भवद्भिः क्व स्थीयते?
(C) त्वया क्व तिष्ठीयते?
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

72. 'वे दो लड़कियाँ विद्यालय में नहीं थीं।' अस्य वाक्यस्य कर्त्तृवाच्ये कः अनुवादो भविष्यति?
(A) ते बाले विद्यालये न आस्ताम् ।
(B) तौ बालौ विद्यालये न आस्ताम् ।
(C) ताः बालाः विद्यालये न आस्ताम् ।
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

73. 'आज दही के साथ चावल खाने की इच्छा है।' अस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादो भविष्यति-
(A) अद्य दधिना सह ओदनं भोक्तुमिच्छामि ।
(B) अद्य दध्या सह ओदनान् भोक्तुमिच्छामि।
(C) अद्य दध्ना सह ओदनान् भोक्तुम् इच्छामि।
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

74. 'आप जैसे विद्वान् ही भारत की शोभा हैं।' अस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादो भविष्यति-
(A) भवादृशः विपश्चितः एव भारतस्य शोभाः सन्ति।
(B) भवादृशाः विपश्चितः एव भारतस्य शोभाः सन्ति ।
(C) भवादृक्षाः विपश्चितः एव भारतस्य शोभाः सन्ति।
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

75. 'इस गुरुकुल का आचार्य कौन है?' अस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादो भविष्यति-
(A) अस्य गुरुकुलस्य कतमोऽस्ति आचार्यः?
(B) अस्मिन् गुरुकुलस्य कोऽस्ति आचार्यः?
(C) अस्य गुरुकुलस्य आचार्यः कोऽस्ति?
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

76. 'गाँव के चारों ओर वन है।' अस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादो भविष्यति-
(A) ग्रामं परितः वनमस्ति(B) ग्रामस्य परितः वनमस्ति
(C) ग्रामम् अभितः वनमस्ति (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत - रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव, पेज-11

77. 'देवेन्द्र पलङ्ग पर सोता है।' अस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादो भविष्यति ?
(A) देवेन्द्रः पर्यङ्के अधिशेते।
(B) देवेन्द्रः पर्यङ्के अधिशेरते।
(C) देवेन्द्रः पर्यङ्कम् अधिशेरते।
(D) उपर्युक्तेषु किमपि नास्ति

78. अधोऽङ्कितेषु शुद्धं वाक्यं कतमोऽस्ति ?
(A) बालः विद्यालयं गच्छति (B) बालं विद्यालयं गमयति
(C) बालः विद्यालये गच्छति(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

79. 'राजा सेवकों के साथ वन में गया।' अस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादो भविष्यति -
(A) राजा सेवकैः सह वनं जगाम ।
(B) सेवकाः राज्ञा सह वनं जग्मुः ।
(C) राजा सेवकानां सह वनं जगाम ।
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

80. अधोऽङ्कितेषु शुद्धं वाक्यं कतमोऽस्ति ?
(A) मम क्षेत्रं ग्रामात् दूरं वर्तते ।
(B) मम क्षेत्रं ग्रामात् दूरे वर्तते ।
(C) मम क्षेत्रं ग्रामात् दूरेण वर्तते ।
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

66.(D) 67.(D) 68.(A) 69.(D) 70.(C) 71.(B) 72.(A) 73.(C) 74.(D) 75.(C) 76.(A) 77.(D) 78. (D) 79.(A) 80.(D)

7 BPSC-TRE-02 संस्कृत
माध्यमिक (वर्ग 9 से 10) TGT

परीक्षा तिथि
26/08/2023

1. यौवनप्रभवं तमः कीदृशो भवति?
(A) अरत्नालोकोच्छेद्यम् (B) अहङ्कारजन्यः
(C) मोहजन्यः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- शुकनासोपदेश-माणिक्यलाल शास्त्री, पेज-23

2. अधोलिखितेषु शुकनासोपदेशानुसारं का अनर्थपरम्परा नास्ति?
(A) अभिनवयौवनत्वम्
(B) अमानुषशक्तित्वम्
(C) अप्रतिमरूपत्वम्
(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति
स्रोत- शुकनासोपदेश-माणिक्यलाल शास्त्री, पेज-27

3. कं ब्रह्मापि रञ्जयितुम् असमर्थः? नीतिशतकमधिकृत्य उत्तरं लिखत।
(A) मोहग्रस्तं जनम्
(B) अज्ञानोपहितं जनम्
(C) क्रोधं भुजङ्गम् इव नरम्
(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-233

4. 'नीतिशतकम्' इत्यनुसारं किं विभूषणम् अस्ति-अपण्डितानाम्?
(A) ज्ञानम् (B) मौनम्
(C) अध्ययनम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड-सर्वज्ञभूषण,पेज-236

5. अधोऽङ्कितेषु भगवद्गीता-अनुसारम् आत्मनो विशेषणं नास्ति
(A) अच्छेद्यः (B) अनित्यः
(C) अदाह्यः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता-2/24

6. अधोऽङ्कितेषु भगवद्गीता-अनुसारम् आत्मनो विशेषणमस्ति -
(A) अजः (B) अशाश्वतः
(C) व्यक्तः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (2/20)-जयदयाल गोयन्दका, पेज-44

7. यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
.....सोऽमृतत्वाय कल्पते॥
अस्मिन् श्लोके निम्नाङ्कितेषु किमस्ति पदपूर्त्यर्थकं वाक्यांशम्? भगवद्गीतानुसारमुत्तरयत।
(A) कथं स पुरुषः पार्थ! (B) विनाशमव्ययस्यास्य
(C) समदुःखसुखं धीरं (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (2/15)

8. बुद्धचरिततृतीयसर्गस्य किं नाम?
(A) अन्तःपुरविलापः (B) संवेगोत्पत्तिः
(C) अन्तःपुरविहारः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-89

9. ''बहिः प्रयाणाय चकार बुद्धिमन्तर्गृहे नाग इवावरुद्धः।'' इत्यत्र 'नाग' इत्यस्य कोऽर्थः?
(A) सर्पः (B) पर्वतः
(C) हस्तिः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-93

10. ''कोटरसम्भवापि मधुकरी पुष्करमधुकमेव अभिलषति'' अभिज्ञानशाकुन्तले चतुर्थेऽङ्के कस्येदं कथनम् ?
(A) कण्वस्य (B) प्रियंवदायाः
(C) अनसूयायाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - सुधाकर मालवीय, पेज-271

11. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' अभिज्ञानशाकुन्तले चतुर्थेऽङ्के कस्येदं कथनम्?
(A) शार्ङ्गरवस्य
(B) ऋषिकुमारस्य
(C) अनसूयायाः
(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति
स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

12. अभिज्ञानशाकुन्तले नाटके कति अङ्काः सन्ति?
(A) 8 (B) 7
(C) 6 (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-101

1. (A) **2.** (D) **3.** (D) **4.** (B) **5.** (B) **6.** (A) **7.** (C) **8.** (B) **9.** (C) **10.** (B) **11.** (D) **12.** (B)

13. 'स्वप्नवासवदत्तम्' इति नाटके कति अङ्काः सन्ति?
(A) 5 (B) 8
(C) 6 (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-95

14. ''इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्। महीमेकातपत्राङ्कां राजसिंहः प्रशास्तु नः॥'' इति भरतवाक्यं कस्मिन्नाटकेऽस्ति?
(A) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' इति नाटके
(B) 'उत्तररामचरितम्' इति नाटके
(C) 'मुद्राराक्षसम्' इति नाटके
(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-98

15. मेघदूतानुसारं यक्षेण शापानन्तरमेकवर्षपर्यन्तं कुत्र निवासः कृतः?
(A) हिमालयाश्रमेषु (B) रामगिर्याश्रमेषु
(C) विन्ध्याश्रमेषु (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-136

16. 'मेघदूतम्' कीदृशं काव्यमस्ति?
(A) महाकाव्यम् (B) रूपकम्
(C) खण्डकाव्यम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-132

17. कठोपनिषदनुसारं मनसस्तु परा का भवति?
(A) तन्मात्रा
(B) इन्द्रियाणि
(C) आत्मा
(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति
स्रोत- कठोपनिषद् (1/3/10)

18. कठोपनिषदनुसारम् अर्थेभ्यः परं किम्भवति?
(A) मनः (B) तन्मात्रा
(C) चक्षुः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- कठोपनिषद्- (1/3/10)

19. 'मेघदूतम्' इत्यनुसारं सन्तप्तानां कः शरणमसि?
(A) मेघः/पयोदः (B) यक्षेश्वरः
(C) धनपतिः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-141

20. ''सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि'' इत्यत्र 'विप्रयोगे' इत्यस्य कोऽर्थः?
(A) विशिष्टप्रयोगे (B) अनुयोगे
(C) वियोगे (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-143

21. नीतिशतकानुसारं कः सुखतरम् आराध्यते?
(A) अज्ञः (B) विशेषज्ञः
(C) कृषकः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-233

22. 'दण्डनीतिरेका विद्या' इति के स्वीकुर्वन्ति?
(A) मानवाः (B) औशनसाः
(C) बार्हस्पत्याः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-273

23. कौटिल्यमते कति विद्याः सन्ति?
(A) द्वे (B) तिस्रः
(C) चतस्रः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-276

24. बार्हस्पत्या अधोऽङ्कितासु कां विद्यां स्वीकुर्वन्ति? कौटिल्य-अर्थशास्त्रानुसारमुत्तरयत-
(A) आन्वीक्षिकीम्
(B) त्रयीम्
(C) सांख्यम्
(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-275

25. उत्तररामचरिते कति अङ्काः सन्ति?
(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत-लक्ष्य झारखण्ड- सर्वज्ञभूषण, पेज-202

26. उत्तररामचरितस्य तृतीयोऽङ्कः केन नाम्ना प्रसिद्धः?
(A) चित्रदर्शनम् (B) छाया
(C) पञ्चवटीप्रवेशः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-207

27. ''त्वमेव ननु कल्याणि! सञ्जीवय जगत्पतिम्। प्रियस्पर्शो हि पाणिस्ते तत्रैष निरतो जनः॥'' उत्तररामचरितस्य तृतीयेऽङ्के कस्येदं कथनम्?
(A) सीतायाः (B) तमसायाः
(C) मुरलायाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
स्रोत- उत्तररामचरितम् - कपिलेदव द्विवेदी, पेज-176

13. (C) **14.** (D) **15.** (B) **16.** (C) **17.** (D) **18.** (A) **19.** (A) **20.** (C) **21.** (B) **22.** (B) **23.** (C)
24. (D) **25.** (C) **26.** (B) **27.** (B)

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 28-32 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत-

ग्राम्यजीवनं सुव्यवस्थितं भवति। ग्रामे प्रायेण सर्वे स्वस्थाः भवन्ति। वनेषु नगरेषु च तथा जीवनं न भवति। वस्तुतः ग्रामाः वननगरयोः मध्ये सन्ति। ग्रामीणाः जनाः प्रायेण कृषीवलाः भवन्ति। ते च प्रातःकालात् सायं यावत् क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति। क्षेत्राणि परितः वारिणा पूर्णा कुल्याः भवन्ति। कृषकाः क्षेत्राणि हलेन कर्षन्ति। कुल्याजलेन तानि सिञ्चन्ति, तत्र बीजानि वपन्ति च।

स्रोत- संस्कृतभारती (कक्षा-8), पेज-34

28. ग्राम्यजीवनं कथं भवति?
(A) दुष्करम् (B) व्ययसाध्यम्
(C) सुव्यवस्थितम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

29. ग्रामीणाः जनाः प्रायेण कीदृशाः भवन्ति?
(A) सर्वे स्वस्थाः (B) रुग्णाः
(C) निष्कपटाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

30. के प्रातःकालात् सायं यावत् क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति?
(A) नागरिकाः (B) ग्रामीणाः
(C) कृषकाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

31. 'कृषीवलाः' शब्दस्य कोऽर्थः?
(A) गोपालाः (B) व्यवसायिकाः
(C) कृषकाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

32. एतस्य गद्यखण्डस्य समुचितं शीर्षकं किम् ?
(A) ग्राम्यजीवनम् (B) कृषीवलाः
(C) नागरिकाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः
(E) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 33-37 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत-

संस्कृतभाषायाः व्याकरणशास्त्रे पाणिनिर्महान् वैयाकरण अभवत्। अस्य पितुर्नाम पणिनः मातुश्च नाम दाक्षी आसीत्। तस्मादेव दाक्षीपुत्रः पाणिनिः कथ्यते छन्दशास्त्रस्य रचयिता पिंगलः पाणिनेः अनुजः आसीत्। अतः छन्दशास्त्रं 'पिंगलशास्त्रम्' इत्युच्यते। पाणिनिः खिष्टाब्दात् पञ्चशतवर्षपूर्वम् (500 ई. पू.) अजायत्। तस्य जन्म शालातुरग्रामे अभवत्, तस्माद् अयं शालातुरीयः अपि उच्यते। शालातुरग्रामस्यैव नाम सम्प्रति लाहौर इति जातम्।

33. कस्मिन् ग्रामे पाणिनिः अजायत्?
(A) शालापुरः (B) शिवपुरः
(C) शालातुरः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

34. पाणिनेर्मातुर्नाम किम्?
(A) गोणिका (B) दाक्षायणी
(C) दाक्षी (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

35. पाणिनेः जन्म कदा अभवत्?
(A) 200 ई. पू.
(B) 50 ई. पू.
(C) 300 ई. पू.
(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति

36. पाणिनिः कस्य शास्त्रस्य ज्ञाता आसीत्?
(A) छन्दशास्त्रस्य (B) व्याकरणशास्त्रस्य
(C) पिंगलशास्त्रस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

37. छन्दशास्त्रस्य रचनाकारः कः आसीत्?
(A) पाणिनिः (B) पिंगलः
(C) कात्यायनः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 38-42 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत-

अस्माकं प्रदेशस्य राजधानी लखनऊ-नगरमस्ति। तद् नगरं निकषा नैमिषारण्यं प्राचीनं तीर्थस्थलम् अतीव प्रसिद्धम् अस्ति। तत्र पुरा एकस्मिन् आश्रमे ऋषयः, मुनयः, कवयः, छात्राश्च निवसन्ति आश्रमे। आश्रमस्य विशालपरिसरे अश्वत्थ-वट-निम्बाशोकवृक्षाणां गहना छाया भवन्ति स्म। तत्र फलशालिनः आम्राऽमलक-पनस-पेरुवृक्षाः अपि विपुलाः आसन्। एभिः वृक्षैः तत्र पर्यावरणम् अत्यन्तं शुद्धमासीत्, येन शीतलाः वायवः मन्दं मन्दं निरन्तरं वहन्ति स्म। काले काले च मेघः वर्षति स्म।

स्रोत- संस्कृतभारती (कक्षा-8), पेज-12

38. 'अश्वत्थ' इति पदस्य कोऽर्थः?
(A) पारावत (B) पीपल
(C) नयग्रोध (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

39. लखनऊ-नगरं कस्य प्रदेशस्य राजधानी आसीत्?
(A) आन्ध्रप्रदेशस्य (B) राजस्थानस्य
(C) उत्तरप्रदेशस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

40. आश्रमस्य परिसरे कस्य वृक्षः नास्ति?
(A) आमलकः (B) खर्जूरः
(C) पनसः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

41. काले काले मेघः कुत्र वर्षति स्म?
(A) आश्रमे (B) वने
(C) लखनऊनगरे (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

42. 'निकषा' इति पदस्य कोऽर्थः?
(A) परितः (B) समीपः
(C) अग्रे (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

28. (C) **29.** (A) **30.** (C) **31.** (C) **32.** (A) **33.** (C) **34.** (C) **35.** (D) **36.** (B) **37.** (B) **38.** (B) **39.** (C) **40.** (B) **41.** (A) **42.** (B)

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 43-48 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत-

प्रकृतिः सर्वेषां प्राणिनां संरक्षणाय यतते। इयं सर्वान् पुष्णाति विविधैः प्रकारैः, तर्पयति च सुखसाधनैः। पृथिवी, जलं, तेजो, वायुः आकाशश्चास्याः प्रमुखानि तत्त्वानि। तान्येव मिलित्वा पृथक्तया वाऽस्माकं पर्यावरणं रचयन्ति। आव्रियते परितः समन्तात् लोकोऽनेनेति पर्यावरणम्। यथा जातशिशुः मातृगर्भे सुरक्षितस्तिष्ठति तथैव मानवः पर्यावरणकुक्षौ परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सांसारिकं जीवनसुखं, सद्विचारं सत्यसङ्कल्पं माङ्गलिकसामग्रीञ्च ददाति। प्रकृति कोपैः आतङ्कितो जनः किं कर्त्तुं प्रभवति? जलप्लावनैः, अग्निभयैः, भूकम्पैः, वात्याचक्रैः, उल्कापातादिभिश्च सन्तप्तस्य मानवस्य क्व मङ्गलम्?

43. प्रकृतेः प्रमुखानि तत्त्वानि कति सन्ति?
(A) 5 (B) 6
(C) 7 (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

44. परिष्कृतं प्रदूषणरहितञ्च पर्यावरणम् अस्मभ्यं किं ददाति?
(A) सद्विचारम् (B) सत्यसङ्कल्पम्
(C) माङ्गलिकसामग्रीम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

45. अधोऽङ्कितेषु प्रकृतेः किं प्रमुखतत्त्वं नास्ति?
(A) वायुः (B) वनम्
(C) जलम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

46.प्रकृतिः किं करोति?
(A) विविधैः प्रकारैः सर्वान् पुष्णाति
(B) विविधैः प्रकारैः सर्वान् पाठयति
(C) विविधैः प्रकारैः सर्वान् मारयति
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

47. अधोऽङ्कितेषु कस्य उपयोगः पर्यावरणस्य निर्माणे न भवति?
(A) जलस्य (B) वायोः
(C) दुर्गस्य (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

48. मानवः पर्यावरणकुक्षौ तथैव सुरक्षितो भवति यथा
(A) मातृगर्भे शिशुः
(B) पितृसमीपे शिशुः
(C) पर्वतगुफायां नरः
(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

निर्देशः-अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 49-54 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत-

प्रकृतिरस्माभिः रक्षणीया। तेन च पर्यावरणं रक्षितं भवति। प्राचीनकाले लोकमङ्गलशंसिनः ऋषयो वने निवसन्ति स्म। यतो हि वने एव सुरक्षितं पर्यावरणमुपलभ्यते स्म। विविधाः विहगाः कलकूजितैस्तत्र श्रोत्ररसायनं ददति। सरितो गिरिनिर्झराश्च अमृतस्वादु निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति। वृक्षा लताश्च फलानि पुष्पाणि इन्धनकाष्ठानि च बाहुल्येन समुपहरन्ति। शीतलमन्दसुगन्धवनपवना औषधकल्पं प्राणवायुं वितरन्ति। 'धर्मो रक्षति रक्षितः' इत्यार्षवचनम्। पर्यावरणरक्षणमपि धर्मस्यैवाङ्गमस्ति ऋषयःप्रतिपादितवन्तः। तत एव वापीकूपतडागादिनिर्माणं देवायतनविश्रामगृहादिस्थापनञ्च धर्मसिद्धेः स्रोतोरूपेणाङ्गीकृतम्।

49. ''शीतलमन्दसुगन्धवनपवना औषधकल्पं प्राणवायुं वितरन्ति'' इत्यत्र 'औषधकल्पम्' इति पदं कस्य विशेषणम्?
(A) लतानाम्
(B) वनस्पतीनाम्
(C) पृथिव्याः
(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति

50. 'गिरिनिर्झराः' इत्यस्य कोऽर्थः?
(A) पर्वतानां प्रपातः (B) पर्वतानां सरितः
(C) पर्वतानां मार्गाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

51. प्राचीनकाले ऋषयः कुत्र निवसन्ति स्म?
(A) गुरुकुलेषु (B) आश्रमेषु
(C) वनेषु (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

52. पर्यावरणं कस्य अङ्गमस्ति?
(A) पुण्यस्य (B) धर्मस्य
(C) स्वच्छतायाः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

53. ''विविधाः विहगाः'' इत्यत्र 'विहगाः' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?
(A) खेचराः (B) खगाः
(C) पक्षिणः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

54. प्रकृतेः रक्षणेन कस्य रक्षा भवति?
(A) पर्यावरणस्य (B) भूमेः
(C) वनानाम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

43. (A) **44.** (D) **45.** (B) **46.** (A) **47.** (C) **48.** (A) **49.** (D) **50.** (A) **51.** (C) **52.** (B) **53.** (D) **54.** (A)

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानां (55-60) विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत।

चाणक्यः प्राचीनभारतस्य निर्भीको दूरदर्शी राजनीतिज्ञः शास्त्रज्ञो विद्वान् आसीत्। तस्य पितृप्रदत्तं नाम विष्णुगुप्त आसीत्। अयमेव 'कौटिल्यः' इति प्रसिद्ध आसीत्। केषाञ्चिद् विदुषामिदमपि मतमस्ति यद् राजनीतिशास्त्रे कुटिलनीतेः प्रतिष्ठापनाय तस्याः स्वजीवने उपयोगाय च अयं 'कौटिल्यः' इत्यपि कथ्यते। चणकनामकस्य कस्यचित् आचार्यस्य पुत्रत्वात् 'चाणक्यः' इति नाम्ना स प्रसिद्धो जातः। नन्दानां राज्यकालः शतवर्षाणि पर्यन्तमासीत्। तेषु अन्तिमेषु द्वादशवर्षेषु एतेन सुमाल्यादीनाम् अष्टनन्दानां संहारः कारितस्तथा च चन्द्रगुप्तमौर्यः नृपत्वेन राजसिंहासने स्थापितः। एतेन भारतीय-शासन-व्यवस्थायाः प्रामाणिक-तत्त्वानां वर्णनेन युक्तं 'अर्थशास्त्रम्' इति अतिमहत्त्वपूर्णो ग्रन्थो रचितः।

55. चणकस्य पुत्रः क आसीत्?

(A) कणादः (B) शौनकः
(C) कौटिल्यः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

56. अर्थशास्त्रस्य को लेखकः?

(A) कौटिल्यः (B) शौनकः
(C) कणादः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

57. चाणक्येन कति नन्दानां संहारः कारितः?

(A) 10 (B) 18
(C) 8 (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

58. चाणक्यस्य पितृप्रदत्तं नाम किमासीत्?

(A) विष्णुगुप्तः (B) कौटिल्यः
(C) धर्मगुप्तः (D) उपर्युक्तेष एकस्मादधिकः

59. नन्दानां राज्यकालः कति वर्षाणि पर्यन्तमासीत्?

(A) 95 (B) 80
(C) 100 (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

60. चाणक्येन नन्दानां संहारं कृत्वा को राजा नियुक्तः?

(A) चन्द्रगुप्तमौर्यः (B) समुद्रगुप्तमौर्यः
(C) शौर्यगुप्तमौर्यः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

61. स्वरस्य कति भेदाः?

(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- विजयीभव-सर्वज्ञभूषण - पेज - 7

62. माहेश्वरसूत्राणि कति प्रकाराणि सन्ति?

(A) 14 (B) 10
(C) 13 (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- विजयीभव - सर्वज्ञभूषण - पेज-10

63. संस्कृतभाषायां लिङ्गस्य कति प्रकाराणि सन्ति?

(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- विजयीभव - सर्वज्ञभूषण, पेज-23

64. 'अष्टाध्यायी' कस्य कृतिः?

(A) कात्यायनः (B) पाणिनिः
(C) पतञ्जलिः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- विजयीभव - सर्वज्ञभूषण, पेज-139

65. संयुक्तस्वरस्य कति प्रकाराणि?

(A) अ इ उ ण (B) अ ऋ ऌ
(C) ए ओ ऐ औ (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- विजयीभव - सर्वज्ञभूषण, पेज-7

66. संस्कृतभाषायां कति कारकाणि भवन्ति?

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- विजयीभव - सर्वज्ञभूषण, पेज-57

67. 'किम्' इति सर्वनामशब्दस्य नपुंसकलिङ्ग-द्वितीयाविभक्तौ बहुवचने किं रूपं भवति?

(A) किम् (B) कान्
(C) कानि (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-127

68. 'एकादशन्' इत्यस्य नपुंसकलिङ्गे प्रथमाविभक्तौ बहुवचने किं रूपं भवति?

(A) एकादशानि
(B) एकादशाणि
(C) एकादशान्
(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति

स्रोत- बृहच्छब्दकुसुमाकरः- हरेकान्त मिश्र, पेज- 85

69. 'सर्व + ऐक्यम्' इत्यत्र का सन्धिर्भविष्यति?

(A) सर्वेक्यम् (B) सर्वा एक्यम्
(C) सर्वैक्यम् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- विजयीभव-सर्वज्ञभूषण - पेज 29

55. (C) **56.** (A) **57.** (C) **58.** (A) **59.** (C) **60.** (A) **61.** (B) **62.** (A) **63.** (A) **64.** (B) **65.** (C) **66.** (B) **67.** (C) **68.** (D) **69.** (C)

70. 'यद्यपि' इत्यस्य सन्धिच्छेदो भविष्यति-

(A) यद् + यपि (B) यद् + इद् + पि

(C) यदि + अपि (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- विजयीभव-सर्वज्ञभूषण - पेज - 29

71. 'सच्चिदानन्दः' इत्यस्य सन्धिच्छेदो भविष्यति-

(A) सच् + चिदा + नन्दः (B) सत् + चित् + आनन्दः

(C) सत् + चिदा + नन्दः (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- सन्धिप्रकरणम् -राममुनि पाण्डेय, पेज-45

72. 'आगत्य' इत्यस्य सन्धिच्छेदो भविष्यति-

(A) आ + गम् + ल्यप् (B) आम् + गम् + य

(C) आ + ग + तुक् + यत् (D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- नर्मदे हर- सर्वज्ञभूषण पेज - 173

73. 'एतादृशः' इत्यस्मिन् पदे किम् उपपदम्, को धातुः, कश्च प्रत्ययः?

(A) इदम् + दृश् + किन्

(B) एता + दृंह + कञ्

(C) एतद् + दृश् + क्स

(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति

74. वह गाँव में निर्धनों को अपने हाथों से दान दे रहा है। अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादो भविष्यति-

(A) स ग्रामे निर्धनान् स्वहस्तात् दानं ददाति।

(B) स ग्रामे निर्धनाय स्वहस्तात् दानं ददाति।

(C) स ग्रामे निर्धनेभ्यः स्वहस्ताभ्यां दानं ददासि।

(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति

स्रोत- कारक-प्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज-65

75. 'विश्वामित्र राजा दशरथ के पास गया।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादो भविष्यति -

(A) विश्वामित्रः राजस्य दशरथस्य समीपे जगाम।

(B) विश्वामित्रः राज्ञः दशरथस्य समीपे जगाम।

(C) विश्वामित्रः! राज्ञां दशरथे समीपे जगाम।

(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

76. 'राम ने बाण से बाली को मारा।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादो भविष्यति-

(A) रामेण बाणेन बालिं हन्ति।

(B) रामः बाणात् बालिं मारयति।

(C) रामः बाणेन बालिं जघान।

(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- कारक-प्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज-56

77. 'लता को लड्डू अच्छे लगते हैं।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादो भविष्यति-

(A) लतायै मोदकाः रोचन्ते।

(B) लतां मोदकाः रोचन्ते।

(C) लतान् मोदकाः रोचन्ते

(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- कारक-प्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज-66

78. 'प्राणिमात्र का भला हो।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादो भविष्यति-

(A) प्राणिमात्राय भद्रं भूयात्

(B) सर्वे सन्तु निरामया।

(C) प्राणिमात्रस्य भद्रं भूयात्।

(D) उपर्युक्तेषु एकस्मतादधिकः

79. 'सब सैनिकों में वीरेन्द्र शूरवीर है।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादो भविष्यति-

(A) सर्वेषु सैनिकेषु वीरेन्द्रः शूरवीरतमो विद्यते।

(B) सर्वात् सैनिकात् वीरेन्द्रःशूरवीरतमो विद्यते।

(C) सर्वेषां सैनिकानां वीरेन्द्रः शूरवीरतमो विद्यते।

(D) उपर्युक्तेषु एकस्मादधिकः

स्रोत- कारक-प्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज-101

80. 'बालक प्रातःकाल विद्यालय को जाते हैं।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादो भविष्यति-

(A) बालकः प्रातःकाले विद्यालयाय गच्छन्ति।

(B) बालकः प्रातःकाले विद्यालयं गच्छन्ति।

(C) बालकः प्रातःकाले विद्यालये गच्छन्ति।

(D) उपर्युक्तेषु किञ्चन अपि नास्ति

70. (C) **71.** (B) **72.** (A) **73.** (D) **74.** (D) **75.** (B) **76.** (C) **77.** (A) **78.** (A) **79.** (D) **80.** (D)

8 BPSC-TRE-02 संस्कृत
उच्चमाध्यमिक (वर्ग 11 से 12) PGT

परीक्षा तिथि
26/08/2023

1. ''इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्'' इस उक्ति से सम्बद्ध ग्रन्थ है?
(A) महाभारत (B) रामायण
(C) ऋग्वेद (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

2. 'पुराणं पञ्चलक्षणम्' में एक है -
(A) वंश (B) प्रतिसर्ग
(C) मन्वन्तर (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-85

3. 'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार दशरथ के पुत्रेष्टियज्ञ में पुरोहित थे-
(A) वसिष्ठ मुनि (B) ऋष्यशृङ्ग
(C) विश्वामित्र मुनि (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- मिशन LT - सर्वज्ञभूषण, पेज-302

4. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह किसकी उक्ति है?
(A) युधिष्ठिर (B) द्रौपदी
(C) दुर्योधन (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-205

5. ''याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'' इसमें 'अधिगुण' शब्द से किसका बोध होता है?
(A) मेघ (B) यक्ष
(C) कुबेर (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-154

6. ''एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः'' यह सूक्ति किस काव्य में उपलब्ध है?
(A) किरातार्जुनीय (B) रघुवंश
(C) कुमारसम्भव (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-184

7. 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः' यह सूक्ति है -
(A) अभिज्ञानशाकुन्तल (B) उत्तररामचरित
(C) स्वप्नवासवदत्त (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-117

8. 'रामायण' के किस काण्ड में अहल्याशाप-विमोचन वृत्तान्त है?
(A) अयोध्याकाण्ड (B) बालकाण्ड
(C) अरण्यकाण्ड (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- मिशन LT - सर्वज्ञभूषण, पेज-302

9. 'कथासरित्सागर' के रचयिता हैं -
(A) पण्डित सोमदेव (B) क्षेमेन्द्र
(C) नारायण पण्डित (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-47

10. आर्षकाव्य है -
(A) रघुवंश (B) उत्तररामचरित
(C) रामायण (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-52

निर्देश- (प्रश्न सं. 11-15) निम्नलिखित अपठित गद्यांश के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

को न जानाति कवीन्द्ररवीन्द्रस्य नाम। सः न केवलं बङ्गप्रदेशस्य अपितु विश्वस्य प्रसिद्धः कविः आसीत्। अनेन विरचितः 'गीताञ्जलिः' इति कवितासङ्ग्रहः अतिप्रसिद्धः। अस्य कवितासङ्ग्रहस्य कृते कविरेषः परमसम्मानितं नोबेलपुरस्कारं प्राप्तवान्। अस्माकं राष्ट्रियगानस्य रचयिता अपि रवीन्द्रः एव। महापुरुषोऽयं विश्वभारतीनामकं विश्वविद्यालयम् अपि अस्थापयत्। एतादृशानां महापुरुषाणां जन्मदात्री भारतभूमिः वस्तुतः धन्या एव।

11. 'प्राप्तवान्' इस क्रियापद का कौन-सा कर्ता पद अनुच्छेद में प्रयुक्त है?
(A) अस्य (B) कविः
(C) महापुरुषः (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

12. 'स्थापितवान्' इस अर्थ में अनुच्छेद में कौन-सा पद प्रयुक्त हुआ है?
(A) प्राप्तवान् (B) अस्थापयत्
(C) सङ्ग्रहः (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

13. ''सः न ..... कविः'' यहाँ कवि का विशेषण पद क्या है?
(A) प्रसिद्धः (B) विश्वस्य
(C) केवलम् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

1. (A) **2.** (D) **3.** (B) **4.** (D) **5.** (A) **6.** (C) **7.** (C) **8.** (B) **9.** (A) **10.** (C) **11.** (B) **12.** (B) **13.** (A)

14. ''एतादृशानां महापुरुषाणां जन्मदात्री भारतभूमिः वस्तुतः धन्या एव।'' इस पंक्ति में अव्ययपद कौन-सा है?
(A) धन्या (B) एतादृशानाम्
(C) एव (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

15. 'नः' इस पद के लिए गद्यांश में कौन-सा पद प्रयुक्त है?
(A) न (B) अनेन
(C) अस्माकम् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

निर्देश- (प्रश्न सं. 16-20) निम्नलिखित अपठित गद्यांश के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अद्यत्वे समाजे धनस्य वर्चस्वं सर्वत्र दृश्यते। यः जनः धनी भवति, तस्मिन् एव सर्वे गुणाः दृश्यन्ते, स एव बुद्धिमान्, गुणवान्, कुशलः, दर्शनीयः च मन्यते। दृश्यते एव जनाः धनवन्तं नरम् एव मुख्यातिथिरूपेण निमन्त्रितं कुर्वन्ति, न तु गुणवन्तं जनम्। निर्धनः जनः यदि गुणवान् अपि भवति तथापि सम्माननीयः न भवति परं धनी जनः गुणहीनः भूत्वा अपि सम्माननं लभते। धनस्य बलेन जनाः शिक्षाम् अपि क्रीणन्ति उपाधिं च प्राप्नुवन्ति यद्यपि तेषां समीपे ज्ञानं न भवति। निर्धनः जनः बुद्धिमान् भूत्वा अपि धनाभावे शिक्षां प्राप्तुं न शक्नोति। सत्यम् एव उक्तम् - ''सर्वे गुणाः काञ्चनम् आश्रयन्ति।'' परन्तु यथा विद्वान् आत्मनि तुष्टः भवति तथा धनी नैव।

16. 'निर्धनः' इस विशेषणपद का विशेष्य क्या है?
(A) गुणवान् (B) जनः
(C) सम्माननीयः (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

17. 'तुष्टः' इस पद में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) तुष् + क्त (B) तुष् + टः
(C) तुष् + घञ् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

18. 'क्रीणन्ति' इस क्रियापद का कर्तृपद क्या है?
(A) गुणहीनः (B) ज्ञानी
(C) जनाः (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

19. 'प्रभावः' इस अर्थ में यहाँ कौन-सा पद प्रयुक्त है?
(A) वर्चस्वम् (B) बुद्धिमान्
(C) गुणवन्तम् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

20. इस गद्यांश के लिए समुचित शीर्षक है -
(A) धनस्य वर्चस्वम् (B) धनाभावे शिक्षा
(C) धनवान् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

21. 'चतुर्विंशतिसाहस्त्रीसंहिता' किसे कहते हैं?
(A) रामायण (B) महाभारत
(C) योगवसिष्ठ (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- मिशन LT - सर्वज्ञभूषण, पेज-301

22. पुराणों की संख्या कितनी है?
(A) 29 (B) 20
(C) 17 (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-85

23. पौराणिक काल गणना के अनुसार सत्ययुग में कितने वर्ष होते हैं?
(A) 12 लाख 96 हजार
(B) 17 लाख 28 हजार
(C) 12 लाख 20 हजार
(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- पुराण-विमर्श-बलदेव उपाध्याय, पेज-299

24. लघुत्रयी क्या है?
(A) रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् , मेघदूतम्
(B) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(C) रघुवंशम्, मेघदूतम्, शिशुपालवधम्
(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-55

25. 'मृच्छकटिकम्' के प्रथम अङ्क का शीर्षक क्या है?
(A) व्यवहार (B) सन्धि-विच्छेद
(C) संहार (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-185

26. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के लेखक कौन हैं?
(A) कालिदास (B) भास
(C) भवभूति (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-113

27. 'रामायणचम्पू' के लेखक कौन हैं?
(A) भोज (B) सोड्ढल
(C) हरिश्चन्द्र (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज- 281

28. 'महाभारत' के किस पर्व के अन्तर्गत श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को उपदेश दिया गया?
(A) सभा (B) विराट
(C) उद्योग (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- मिशन LT - सर्वज्ञभूषण, पेज-309

14. (C) **15.** (C) **16.** (B) **17.** (A) **18.** (C) **19.** (A) **20.** (A) **21.** (A) **22.** (D) **23.** (B) **24.** (A) **25.** (D) **26.** (B) **27.** (A) **28.** (D)

29. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में इन्द्र के सारथि का क्या नाम वर्णित है?
(A) कर्णपूरक (B) आर्यक
(C) मातलि (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-123

30. उदयन और सागरिका किस नाटक के नायक-नायिका हैं?
(A) प्रियदर्शिका (B) मृच्छकटिकम्
(C) मुद्राराक्षस (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-45

31. निम्नलिखित में भर्तृहरि की रचना नहीं है -
(A) नीतिशतकम् (B) अमरुकशतकम्
(C) शृङ्गारशतकम् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-27

32. बृहत्त्रयी में किसकी गणना नहीं की जाती है?
(A) शिशुपालवधम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-55

33. ''आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु'' मन्त्रांश किस उपनिषद् से उद्धृत है?
(A) कठोपनिषद् (B) प्रश्नोपनिषद्
(C) मुण्डकोपनिषद् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-87

34. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' में प्रेरित किया गया है-
(A) आत्मज्ञान के लिए
(B) शब्दज्ञान के लिए
(C) पार्थिव सफलता के लिए
(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-87

35. ''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः'' श्लोकांश में किसके स्वरूप का वर्णन किया गया है?
(A) जीव (B) इन्द्रियों
(C) आत्मा (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-101

36. 'श्रीमद्भगवद्गीता' का विभाजन किया गया है-
(A) सर्गों में (B) पर्वों में
(C) अध्यायों में (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-92

37. ''श्रीमद्भगवद्गीता'' में कुल श्लोक संख्या है-
(A) 600 (B) 700
(C) 800 (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-92

38. 'मृच्छकटिकम्' का नायक किस कोटि का है?
(A) धीरोदात्त (B) धीरप्रशान्त
(C) धीरललित (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-185

39. 'नीतिशतकम्' के अनुसार ''ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि नरं न रञ्जयति'' सूक्ति किसके विषय में कही गयी है?
(A) मूर्ख (B) दुर्जन
(C) मिथ्यावादी (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड -सर्वज्ञभूषण, पेज-252

40. ''इयं संवर्धनवारिधारा तृष्णाविषवल्लीनाम्'' कथन द्वारा किसके स्वरूप को निरूपित किया गया है?
(A) लक्ष्मी (B) सरस्वती
(C) दुर्गा (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- सप्तगङ्गम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-80

41. 'अर्थशास्त्र' में औपनिषदिक अधिकरण के नाम से प्रसिद्ध अधिकरण है-
(A) बारहवाँ अधिकरण
(B) तेरहवाँ अधिकरण
(C) चौदहवाँ अधिकरण
(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड-सर्वज्ञभूषण, पेज-272

42. कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' कितने तरंग में विभक्त है?
(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-228

43. प्रतीकात्मक नाटक है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-268

44. 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य में तारकासुरवध की कथा का वर्णन किस सर्ग में किया गया है?
(A) 15 (B) 16
(C) 17 (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-182

29. (C) **30.** (D) **31.** (B) **32.** (D) **33.** (A) **34.** (A) **35.** (C) **36.** (C) **37.** (B) **38.** (B) **39.** (A)
40. (A) **41.** (C) **42.** (D) **43.** (D) **44.** (C)

45. ''आषाढस्य प्रथम दिवसे'' श्लोकांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) नैषधीयचरितम् (B) मेघदूतम्
(C) रघुवंशम् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-156

46. ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना से ओतप्रोत संस्कृति है -
(A) चीन की संस्कृति (B) भारतीय संस्कृति
(C) अमेरिकन संस्कृति (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

47. ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'' यह उक्ति किस स्मृति में वर्णित है?
(A) मनुस्मृति (B) याज्ञवल्क्यस्मृति
(C) नारदस्मृति (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- मनुस्मृति (3/56)

48. ''अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः, चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥'' यह श्लोक किस ग्रन्थ से लिया गया है?
(A) रामायण (B) महाभारत
(C) मनुस्मृति (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- नर्मदे हर - सर्वज्ञभूषण, पेज-369

49. ''ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः, ऊरू यदस्य तद् वैश्यः पदभ्यां शूद्रोऽजायत् ।'' यह मन्त्र 'ऋग्वेद' के किस सूक्त से है?
(A) अग्निसूक्त (B) अक्षसूक्त
(C) प्रजापतिसूक्त (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- पुरुषसूक्त- (ऋ. 10/90/12)

50. ''सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।'' यह किस काव्य का लक्षण है?
(A) गद्यकाव्य (B) नाटक
(C) महाकाव्य (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- साहित्यदर्पण - (6/315)

51. 'अर्थगौरव' के लिए कौन कवि प्रसिद्ध हैं?
(A) कालिदास (B) भारवि
(C) माघ (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-197

52. 'कठोपनिषद्' किस वेद से सम्बद्ध है?
(A) कृष्णयजुर्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) सामवेद (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-91

53. ''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'' यह वाक्य किस उपनिषद् से है?
(A) केनोपनिषद् (B) प्रश्नोपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-87

54. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' यह किस नाटक का श्लोकांश है?
(A) मृच्छकटिकम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) वेणीसंहारम् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-135

55. ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) रघुवंश (B) कुमारसम्भव
(C) मेघदूत (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-184

56. ''मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता'' यह उक्ति किस महाकवि की है?
(A) कालिदास (B) भास
(C) श्रीहर्ष (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- नैषधीयचरितम् (9/8)

57. ''कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।'' - यह उक्ति 'स्वप्नवासवदत्तम्' के किस अङ्क से उद्धृत है?
(A) प्रथम (B) चतुर्थ
(C) षष्ठ (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-322

58. ''न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः'' यह मन्त्र किस उपनिषद् से उद्धृत है?
(A) ऐतरेय उपनिषद् (B) प्रश्नोपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- मिशन LT - सर्वज्ञभूषण, पेज-9

59. कौटिल्य ने कितने प्रकार के दुर्गों का उल्लेख किया है?
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- कौटिल्य-अर्थशास्त्र-वाचस्पति गैरोला, पेज-85

60. कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' के अनुसार अमात्य का गुण नहीं है?
(A) प्रगल्भ (B) समर्थ
(C) राष्ट्रद्रोही (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- कौटिल्य अर्थशास्त्र-वाचस्पति गैरोला, पेज-23

45. (B)	**46.** (B)	**47.** (A)	**48.** (C)	**49.** (D)	**50.** (C)	**51.** (B)	**52.** (A)	**53.** (C)	**54.** (B)	**55.** (B)
56. (C)	**57.** (C)	**58.** (C)	**59.** (C)	**60.** (C)						

61. सञ्ज्ञा-विधायक सूत्र है-
(A) झलां जश् झशि (B) वृद्धिरादैच्
(C) हशि च (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- सन्धिप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज- 25

62. 'अक्ष + ऊहिनी' सन्धि में रूप होता है
(A) अक्षोहिनी (B) अक्षौहिनी
(C) अक्षौहिणी (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- सन्धिप्रकरणम् -राममुनि पाण्डेय, पेज- 27

63. 'पाणिपादम्' इस पद में समासविग्रह होता है-
(A) पाणिः च पादं च (B) पाणि च पादौ च
(C) पाणी च पादौ च (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- समासप्रकरणम् -राममुनि पाण्डेय, पेज-104

64. 'शिक्षक' में प्रत्यय है
(A) ठक् (B) ण्वुल्
(C) वुन् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- संस्कृत व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-305

65. 'ख फ छ ठ .....त व्' रिक्तस्थान की पूर्ति है-
(A) ट च थ (B) थ ट च
(C) ट च त (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- सन्धिप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-1

66. माहेश्वरसूत्र में कौन-सा वर्ण दो बार लिखा गया है?
(A) ण (B) ह
(C) य (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- सन्धिप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-1

67. 'शिवो वन्द्यः' किस सन्धि का उदाहरण है?
(A) विसर्जनीयस्य सः (B) खरि च
(C) हशि च (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- सन्धिप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-67

68. 'मुनित्रय' कौन है?
(A) पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि
(B) पाणिनि, शौनक, कात्यायन
(C) पाणिनि, शौनक, पिप्पलाद
(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-55

69. 'गौरी' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) ङीप् (B) ङीन्
(C) ङीष् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत-संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-212

70. 'वृद्धिरादैच्' सूत्र अष्टाध्यायी के किस अध्याय में है?
(A) 6-1-88 (B) 6-1-89
(C) 7-1-1 (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- अष्टाध्यायी - (1/1/1)

71. संस्कृत भाषा को किस वर्ग में सम्मिलित किया जाता है?
(A) शतम् (B) केंतुम्
(C) एकाक्षरी (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लक्ष्य झारखण्ड - सर्वज्ञभूषण, पेज-9

72. अयादि सन्धि-विधायक सूत्र है -
(A) आद्गुणः (B) वृद्धिरादैच्
(C) अकः सवर्णे दीर्घः (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- विजयी भव -सर्वज्ञभूषण, पेज-30

73. समस्तपद में प्रातिपदिक संज्ञा-विधायक सूत्र है?
(A) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्
(B) ङ्याप्प्रातिपदिकात्
(C) कृत्तद्धितसमासाश्च
(D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज-131

74. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए:
(A) सेनापतये अकथयत् (B) सेनापतिम् अकथयत्
(C) सेनापति अकथयत् (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक

75. लकार कितने प्रकार के होते हैं?
(A) सात (B) आठ
(C) नौ (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-धरानन्द शास्त्री, पेज-337

76. वैदिक संस्कृत भाषा में मूल ध्वनियाँ हैं -
(A) 52 (B) 26
(C) 21 (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- भाषा-विज्ञान-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-147

77. 'शिवोऽर्च्यः' का सन्धि-विच्छेद् है-
(A) शिवस् + अर्च्यः (B) शिवो + अर्च
(C) शिव + अर्च्यः (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भाग-1)-भैमी व्याख्या, पेज-145

78. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है-
(A) कर्णस्य बधिरः। (B) कर्णेन बधिरः।
(C) कर्णात् बधिरः। (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- कारक-प्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-61

79. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र किस विभक्ति का है?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- कारक-प्रकरणम् -राममुनि पाण्डेय, पेज-54

80. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है?
(A) भगवानाय नमः। (B) भगवते नमः।
(C) भगवताय नमः। (D) उपर्युक्त में से एक से अधिक
स्रोत- कारक-प्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-76

61. (B)	**62.** (C)	**63.** (C)	**64.** (C)	**65.** (D)	**66.** (B)	**67.** (C)	**68.** (A)	**69.** (C)	**70.** (D)	**71.** (A)
72. (D)	**73.** (C)	**74.** (D)	**75.** (D)	**76.** (A)	**77.** (A)	**78.** (B)	**79.** (B)	**80.** (B)		